तिलिस्मफिरङ्ग ॥

अर्थात्

طلسم فرنگ

अंगरेज़ों के अपूर्व कौतुक

जिसको

डाक्टरश्रीकरीसाहब की अंगरेज़ी पुस्तक से पण्डित मोतीलाल मुतरज्जिम मुहकमागवर्नमेण्ट पंजाबने बुद्धिमान्मनुष्यों के पढ़ने और प्रसन्न होने के लिये फ़ारसी में उल्थाकिया और सन्१८६८ई० में उक्तमहाशयमुतरज्जिमसाहब ने अपनीओर से इस ग्रन्थ के तर्जुमा करनेका हक़ इसयंत्राध्यक्ष मुंशीनवलकिशोरसाहब को कृपाकिया फ़िर इसके हक़ मिलने के पीछे पूर्वोक्त यंत्राध्यक्षने इस फ़ारसीउल्थाको निजव्ययसेबैकुण्ठवासी पण्डितप्यारेलालजी से देवनागरी भाषा में तर्जुमाकराया ॥

वही

पहलीबार

स्थानलखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने में छपा

मई सन १८८६ ई०

विज्ञापन ॥

इसमहीने अर्थात् मई सन् १८८६ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें वेंचने के लिये तय्यारहैं उनमें से कुछ इस सूचीपत्रमें लिखी हैं और उनका मोलभी बहुत किफायत से घटाके नियत हुआहै औरव्यापारियोंके लिये और भी सस्तीहोंगी जिनको व्यापारकीइच्छाहो वह मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ामलखनऊ हज़रतगंज के पतेसेख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
संस्कृत व भाषाटीका तथा संस्कृतही टीका सहित की पुस्तकें	सज्जनसरोजभास्कर	भगवतीगी०संस्कृतटी०स० ब्रताके
	लीलावतीसंस्कृत	हंसराजनिदान
	माधवनिदान	शार्ङ्गधरसंहिता
	मुहूर्त्तचक्रदीपिका	बृहत्संहिता
लघुसिद्धांत कौमुदी	मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक	अवधयात्रा
सिद्धान्तचंद्रिका	शीघ्रबोधसटीक	परमार्थसार
समासचक्र	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	सामुद्रिक
रूपावली	मुहूर्त्तगणपति	रघुवंश
निर्णयसिंधु	मुहूर्त्तदीपक	**संस्कृतउर्दूटीकास०**
संध्योपासन पंचमहायज्ञ	बृहज्जातक सटीक	महिम्नस्तोत्र
संग्रहशिरोमणि	लघुजातक भाषाटीकास०	विष्णुसहस्रनाम
मार्कंडेयपराण मूल	षटपंचाशिका	शिवसहस्रनाम
दुर्गापाठमूल व सटीक	जातकालंकारसटीक	**भाषाइतिहास**
श्रीविष्णुभागवत	होरामकरन्द	महाभारत काशीनरेशकी
श्रीमद्भागवतदशमस्कं-	जातकाभरण	पर्व पर्व भी मिलसक्ती हैं
ध भाषाटीका सहित	पाराशरी संस्कृत भाषा टीका सहित	**तुलसीकृतरामायण**
अपराधभंजनस्तोत्र	लग्नचंद्रिका	रामा०तु०कृ०टी०रामचरण
कायस्थकुलभास्कर	अमरकोषप्रथमकांड	रामा०तु०कृ०टी०शुकदेव
कायस्थविनोद	अमरकोषतीनोंकांड	रामायणमोटेअक्षरोंकी
कर्मविपाकसंहिता	गीतगोविन्द आदर्श	मय हरएककांड भी हैं
सदाचारप्रकाश	कथाश्रीसत्यनारायण	
सुधामंदाकिनी		

3/4273

तिलिस्मफिरङ्ग का सूचीपत्र ॥

तिलिस्मफिरङ्ग ॥

طلسم فرنگ

प्रथम भाग ॥

प्रथमपत्र ॥

मेरेप्यारेमित्र

मैं आपकी शुद्धविनय को प्रसन्नता से स्वीकार करता हूं और प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अवकाश पाने पर आप को पत्र लिखाकरूंगा और उन पत्रों में जीवाकर्षण का वृत्तांत लिखाकरूंगा इसविद्या में बहुत लोगों ने खोज किया है और उस खोज के मुख्य परिणाम लिखे हैं परन्तु हर प्रकारके मनुष्यों ने उन परिणामों के लिये बहुतसे सन्देह किये हैं वरन यहांतक हुआ है कि बहुधा मनुष्य यह संशय करते हैं कि इस विषय में खोजही न करना चाहिये परन्तु जो पत्र मैं आपको लिखूंगा उनमें आप को समझाऊंगा कि जो सन्देह लोग करते हैं वह वास्तव में कुछ मूल नहीं रखते ॥

इस विद्याका विवाद बहुत बिस्तारसे है और उसकीशाखा बहुत और अन्य २ हैं इसलिये मैंने उचित समझा है कि इस विद्याका हाल अपने पत्रों में वर्णन करूंगा क्योंकि इस क्रममें

इतना सुभीताहै किजब पत्र लिखनेका अवकाश मिला हरएक शाखाका वृत्तान्त अलग२हर२पत्रमें लिखाजासक्ताहै—कई मनुष्य ऐसे बुद्धिहीन होते हैं कि जोबात उनके साम्हने किसी विद्याके विषय में कीजावे उसपर जानबूझकर संदेह करते हैं जो आप का स्वभाव भी ऐसा संशययुक्त होता तो निश्चय जानिये कि मैं इसविषयमें आपको कुछभी न लिखता वास्तवमें जोआपकी प्रकृति ऐसीहोती तो इसविषयमें लिखना समयका वृथाखोना होता परन्तु ईश्वरकी कृपासे आपके स्वभाव में सचबातके खोजनेका अति अनुरागहै और उसकेसाथ यहगुणहै कि अन्धों की तरह हरबातको मुख्यकरके ऐसीबात को जो अचम्भादेनेवाली मालूमहोती है शोच विचार बिना नहीं मानलेतेहो इसलिये फिर कहताहूं कि मैं इनपत्रों के लिखने का इरादा सच्ची खुशीसे करताहूं हरविद्याके बिवाद में यह बात अति अवश्य है कि खोजनेवाले तनमन से सच्चीबात के खोजकरने में यत्नकरें और कई प्रचलित रीतोंको जो विद्याके बिवाद में माननीय हैं मानें जो यहबातनहीं तो विद्याके बिवादमें बुद्धिलड़ानावृथाहै॥

कईस्वभाव ऐसे होते हैं चाहे स्वीकारके योग्य साक्षी मिले परन्तु वह ऐसीबातें जो वास्तव में सत्य हैं शोचविचार बिना नहींमानते और उनके अंगीकार न करने का केवल यह कारण बताते हैं कि वहबातें झूठी या न निश्चयकरने के योग्य मालूम होती हैं या यहकि असम्भवित हैं या यहकारण बताते हैं कि यहबातें क्यों होती हैं कभी यह कारण बतायाजाता है कि जो विचार या विषय किसी अन्यविद्याके पहलेसे उनकी समझ में आये हैं यहबातें उनके बिरुद्ध मालूमहोती हैं कभी यह कारण कि जो बातें हमको अपने धर्म्मकी पुस्तकों से माननेकेलायक मालूमहुई हैं उनके विपरीतहैं या उनके परिणाम उनसे बिरुद्ध

निकलते हैं और कभी यहकारण बताते हैं कि यहबातें ऐसी हैं कि उनसे स्वभाव बिगड़ते हैं ऐसे मनुष्योंके स्वभावकी इलाज कुछदेर में होसक्ती है जबतक ऐसे झूठ और अमाननीय विचार ऐसे स्वभावोंमें जमेरहेंगे तबतक पदार्त्थविद्यामें अनुवादकरना वृथाहै चाहे मेरीमति यहहै कि ऐसे संदेहोंका स्वभावमें होना एकप्रकारका गुणहै इसलिये कि जोकुछ कोईकहे शोचे विचारें बिना उसकोमानलेना बुद्धिकीहीनताहै परन्तु जोकि यहसंदेह उत्तम विचार बिना समझमें नहींआते बरनकई झूठेविचार स्वभावमें जमजाते हैं इसलिये केवल विवादसे इन संशयों को दूर करना कठिनहै परन्तु समय अतिप्रबलहै ज्यों २ समय बीतता जाता है मनुष्यों के दृढ़ पक्षपात मुख्यकरके उन विषयों के जो वास्तवमें ठीकहों धीरे२ नष्टहोतेजातेहैं इसवास्ते कि जो वहबातें जिनकेलिये हमकोपक्षपातहै वास्तवमेंठीकहोंतो अवश्य समय२ पर होतेरहेंगे जब होतेरहेंगे तो अवश्य उनको माननापड़ेगा॥

ध्यान कीजिये कि जब कोपरनेकिस ने पहिले अपनी यह अनुमति फिरंगिस्तान में प्रकट की कि पृथ्वी घूमती है और आकाश नहीं घूमता तो क्या २ संदेह उसपर हुये लोग कहते थे कि यह वचन बिल्कुल झूठ और वृथा है क्योंकि हम अपनी आंखोंसे रोज देखते हैं कि सूर्य्य और आकाश चलते हैं तो अपनी आंखोंसे जोदेखें उसको न मानें और कोपरनेकिस के वाक्य को मानें यह क्योंकर होसक्ता है सिवाय इसके यह संदेह हुआ कि धर्म्म की पुस्तकों में आकाश का घूमना लिखा है तो पृथ्वी के घूमने को मानना धर्म्मकी पुस्तकों के विरुद्ध है परन्तु देखिये कि समय के बीतने पर क्या प्रभावहुआ इससमय में फिरंगिस्तान में आकाश के घूमनेका किसी को निश्चय नहीं है प्रारंभ में इसपर बहुत संदेह हुये कि पृथ्वी गोलहै परन्तु समय बीतने

के उपरांत यह स्वीकार योग्य बात मानी गई मुख्य करके जब नईदुनियां मालूमहुई तो इसबात में कोई संदेह नहीं रहा पहले बड़े २ बुद्धिमान् इस वचन को नहीं मानतेथे वह कहतेथे कि जो इस बातकोमानें तो इसका परिणाम यहमानना पड़ेगा कि हमारे पैरोंकेनीचे ऐसेलोग बसते हैं कि जिनकेशिर नीचेकी ओर बायु में लटकते हैं और इसी प्रकार वृक्षोंकी जड़ें पृथ्वीमें ऊपर की ओर जमीहुई हैं और उनकी चोटियां नीचे की ओर बायु में लटकती हैं सो यहबात असंभवित है परन्तु यह सब संदेह नष्टहोगये हैं समयका ऐसाप्रभावहै--जरा कलम्बस का वृत्तांत देखिये जिस मनुष्यने पहले नईदुनियां को मालूमकिया आपजानते हैं कि जबवह पहली बेर इसबड़े सफर में गया किन्तु तबतक कि जब दोबरस के पीछे वह नईदुनियांसे वहांका सोना जहाजोंपर लादकर लौटआया लोगउसको मक्कार और धोखेबाज़ कहते थे यहबात अति सुगमतासे विचार में आसक्ती है कि जो दशा कलम्बस की प्रारम्भ में हुई तो पहले वैसीही दशा उस मनुष्यकी होती है जो जीवाकर्षण विद्याके विषय मेंबिवादकरे और जोबातें इसविद्यासे सम्बन्ध रखती हैं उनको वर्णनकरे उस मनुष्यको लोग अवश्य छली कहेंगे और उसके लिये कटुवचन कहेंगे परन्तु संदेह नहीं है कि जो बात समयके प्रारम्भसे होतीचली आईहै वही इस विषय मेंभीहोगी अर्थात् ज्यूं२ समय बीतता जावेगा लोगोंको मालूमहोता जायेगा कि जो बातें जीवाकर्षण विद्या के विषय में वर्णन कीजाती हैं बिल्कुलठीक और मानने के योग्य हैं॥

मैंने ऊपर वर्णनकिया है कि जिनलोगों की समझ में ऐसे विचार जमगये हैं और उनके स्वभाव में पक्षपात स्थिरहोगये हैं उनसे विवाद करना वृथा है परन्तु बहुत ऐसेभी हैं कि उनके

मनों में दृढ़ पक्षपात नहीं है वरन उनके समझमें जीवाकर्षण विद्याका निश्चय इसकारण नहींहोता कि उन्होंने इसविद्याके विषय में अच्छी तरह से ध्यान और विचार न लगाया ऐसे मनुष्यों को मैं समझा सक्ताहूं कि जो संशय लोग बहुधा करते हैं वहबेमूल हैं अब मैं उनसंदेहों का वर्णन करताहूं जो इस विद्यापर कियेजाते हैं॥

प्रथम संदेहयहहै कि जो बातें जीवाकर्षण विद्याके विषयमें वर्णनकीजाती हैं वह साक्षात् निश्चय के योग्य नहीं और असम्भवितहैं इसलिये इसविषय में खोज करना कुछ अवश्यनहीं यहबात कहनी ऐसी है कि जो बात सूचित करने के योग्य है उसको सूचित कियेबिना पहलेही मानलेना है और प्रकट है कि इसबात के कहने से कि जीवाकर्षण विद्या की बातें नहीं होसक्तीं यह परिणाम निकलता है कि मानो हमजानते हैं कि कौनचीज़ होसक्ती और कौन नहीं होसक्ती है परन्तु जो बड़े २ विद्वान् हैं और प्रतिघड़ी और क्षण अपनीसम्पूर्णआयुर्दा विद्या के खोज में खर्च करते हैं वह खूब जानते हैं कि ईश्वर की शक्ति की कुछ संख्या नहीं है बड़े २ विद्वान् ज्ञानवान् उस शक्ति में ऐसे हैं कि जैसे कोईलड़का समुद्र के किनारे छोटे२कंकड़ इकट्ठे करे जो समुद्र उसके पैरोंकेपास बहताहै उसका हाल वह कुछ भीनहीं जानता कोईऐसी आवश्यक बातें हैं जिनको हम असम्भवित जानते हैं जैसे यह बात नहीं होसक्ती कि दो और दो चारसे कम या ज़ियादहहों और यहबात नहीं होसक्ती कि एक चीज़ जीती या मरीहुई एक नियमित समय में दो स्थान में हो खोजने पर यह बात मालूम होगी कि जो बातें जीवाकर्षण विद्या से सम्बन्ध रखती हैं दृष्टान्तों में असम्भवित नहीं हैं यह बात अवश्य है कि जीवाकर्षण विद्या के मूल बहुत कठिन हैं

अर्थात् यहबात अतिकठिन है कि उनके होनेका कारण वर्णन कियाजावे हम यहबातभी नहीं कहसक्ते कि रांगको सोना नहीं बनासक्ते क्योंकि इनधातों का मुख्यमूल हमको नहीं मालूम है हम उनको विषम या कई चीज़ों का मिलाहुआ केवल इस-लिये कहते हैं कि हम उनको समसुचित नहीं करसक्ते हैं परंतु जो यहभी सुचितहो कि यह वस्तु विषमहै और कभी मिलीहुई नहीं तौभी यह बात विचार में आसक्ती है कि उनके भागोंकी युक्तिऐसीहै कि उसकेकारण एक चीज़रांग और एकचीज़ सोना है परन्तु ऊपरलिखेहुये भाग वास्तवमें एकही हैं और होसक्ता है कि रांग को इसतरह बदलकर सोना बनासकें कि उनके भागों की बनावटको एकही रीतिपर उलटसकें परन्तु जो यह नहीं कहसक्ते हैं कि रांगकासोना नहीं बनसक्ता तौभी इससमय में कोई ऐसामनुष्य नहींहुआहै जो सोना बनानेका दावारखता हो और अधिकइससे यह कोईनहीं कहसक्ताहै कि सब आदमी इसतरहपर सोना बनासक्ते हैं इसीतरहचाहे आकर्षण विद्या के फूल ऐसेहैं कि न केवल इसके अच्छे करने वाले बराबर उनको पैदा करचुके हैं और पैदा करसक्ते हैं वरन उनका वर्णन इस तरहपर कियागयाहै कि सबमनुष्य जो उनकापैदाकरना चाहें जब चाहें पैदाकरसक्ते हैं—

सो इस कल्पित कारणपर कि जीवाकर्षण विद्या का ठीक होना निश्चय के योग्य नहीं और वह फूल उपज नहीं सक्ते उन फूलों को न मानना बुद्धिके विरुद्ध है वास्तव में उनका अनहोना समझना केवल यही अर्थ रखता है कि उनके होने का कारण मालूम नहीं होता और लोग समझते हैं किकारण के मालूम न होने के कारण उनकोखोज न करके बिल्कुल न मानना चाहिये वास्तवमें दूसरासंदेह जो लोग करतेहैं यही है

कि उनके होनेका कारण क्याहै संदेहीकहताहै कि जबतक देव के माननेकेयोग्य रीतोंको खण्डन न करो तबतक तुम आकर्षण विद्याके जीवाकर्षणविद्याके मूलोंके होनेको क्योंकर वर्णन करसकेहो और जोकि सदा इनसंदेहोंका पूरा उत्तर संदेहीकोनहीं मिलता इसलिये वह अपनेमनमें ठानलेताहै कि इन मूलों को मानना नहींचाहिये और पूर्वोक्त मूलखोजनेकेयोग्यहीनहीं है॥

परन्तु ध्यानकीजिये कि इस संशय के करने में यह बात समझ आतीहै कि मानो हम ईश्वर की शक्ति को सम्पूर्ण रीति जानते हैं और यह बात कि मानो जिस मनुष्य को कोई बात मालूमहुई उसे उचितहै कि उसके होनेका कारण बतादे नहीं तो वहबात निश्चयके योग्यनहींहै आपको यहबात समझानी कि यहप्रमाण यथार्थ नहीं है क्याहै प्रकटहै कि जबकिसीबात का कारण मालूम कियाजाता है तो पहले उसबातका वर्तमान होना अवश्य मानना चाहिये तथाच ज्योतिष विद्या की बातें ऐसीथीं कि जिनकाकारण मालूम नहींहोताथा परन्तु प्राचीन बुद्धिमान और गणकोंने उनबातोंको ठीक समझकर और स्वीकारयोग्य जानकर उनकी उत्पत्ति का कारण मालूमकिया और उस ज्योतिषविद्या की सम्पूर्णरीतें मालूम कीं जिससे उन बातोंके होनेकेकारण मालूमहुये और उनकीखोजका यह परिणामहुआ कि ज्योतिषविद्याकी बहुतसीबातें अतिशुद्धतासे मालूमहुई हैं और जो बातें आगे होनेवालीहोती हैं उनके होनेका समय बराबर और शुद्धताकेसाथहोनेसे पहले बतायाजासक्ता है किन्तु वास्तवमें रोज़का बतायाजाताहै एक घूमनेवाले सितारे की गति में अन्तर पायाजाता था और उसके अन्तर का कारण नहीं मालूम होताथा परन्तु अन्तरकाहोना मानकर जब उसकाकारण ढूंढागया तोएकछोटासितारा और उसके निकट

मालूमहुआ यदि पहलेही उसकी गति में अन्तर होनेको नहीं मानाजाता तो यहपरिणाम क्योंकर मालूमहोता निदान किसी बातके सबब मालूम करनेकेलिये यहबात अवश्यहै कि पहले उसबात का होना मानाजावे इसीतरह जीवाकर्षण विद्या को पहले ठीक समझना चाहिये और फिर उसके होनेका कारण मालूमकरना चाहिये न यहकि सबब मालूम न होनेसे उनको बिल्कुल न मानाजावे जैसा और विद्याओं में जैसे ज्योतिष औ अन्य पदार्थविद्याकी शाखाओंमें होताहै वैसाही इसविद्या के विवादमेंभी होनाचाहिये ऐसानहीं चाहिये कि जिसबातका सबब हमको मालूमहुआ उसको इसकारण दैवीशक्तिकी रीतों के विपरीत समझलें तथाच आगेआपको मालूमहोगा कि जीवा- कर्षणविद्या में कोई ऐसीबात नहींहै कि जिनको हम दैवीशक्ति के विरुद्धसमझें औरयहभी होसक्ताहै कि इसके मूलोंकेकारणों के मालूमकरनेमें प्रायः और कोईनवीन दैवीशक्तिकीरीतें मालूम हों परन्तु इसबातके मालूमकरनेके लिये यहबात अवश्यहै कि पहले उनमूलों को मानने के योग्य समझना चाहिये निश्चयहै कि इनमूलों के होनेका कारण प्रसिद्ध दैवीशक्ति से मालूमहो- सके और जहांतक मेरीबुद्धि पहुंचती है कोई सबब मालूमनहीं होता कि जो प्रसिद्ध दैवीशक्ति की रीतें हैं उससे किसी प्रकार की विरुद्धताहो यदि प्रकट में विपरीतता मालूमभी हो तौभी ऐसीही दशाहोगी जैसा ज्योतिषविद्यामेंहुआ अर्थात् उसविद्या के आरम्भ में बहुतसे मूल प्रसिद्धरीतों के बिपरीत मालूमहोतेथे परन्तु फिर यहबात जातीरही एकबड़े ज्योतिषीने जिसकानाम गैलेल्यूथा एक दूरबीन बहुतबड़ी बनाई और जब उसदूरबीन के द्वारा उसने आकाश की ओरदेखा तो वृहस्पतिग्रह के गिर्द उसके चार चन्द्रमा देखे परन्तु जब उसने इसबात को वर्णन

किया कि वृहस्पति के गिर्द चार चन्द्रमा हैं और अपने साथी विद्वानों से कहा कि उनको दूरबीन के द्वारादेखो तो उन्होंने देखने से इन्कार किया परन्तु उनके न देखने से वह चन्द्रमा कुछ नष्टनहींहोगये और न कुछ उनकी गतिमेंअन्तरपड़ा इसी तरह जो लोग जीवाकर्षण विद्या के मूलों को खोज न करना चाहें और उनको न देखें तो इस कारण उसके मूलोंके होने में कुछ अन्तर नहीं पड़सक्ता ॥

इसके सिवाय ध्यानकरनाचाहिये कि जो बातें लोग मानने के लायक़ मानचुके हैं जैसे ज्योतिष विद्या और उनकी सामग्रियां और कारण किसी को क्या मालूम है चाहे ज्योतिष विद्या के मूल लोग खूब समझते हैं और कई दैवी शक्ति की माननेकेयोग्यरीतें मानीगई हैं वह उनपर ठीक आतीहैं परन्तु थोड़ेविचारसे मालूम होगा कि बास्तव में उनके कारण और मुख्य मूल मालूम नहीं होसक्के हैं हर एक मनुष्य जानता है कि ज्योतिषविद्या की मुख्यरीति खिंचावटकी रीतिपर है ध्यान करना चाहिये कि यहरीति इसतरह पर मानीहुई है कि सर्व मूलकी बस्तुओं में परस्पर खिंचावट है और यहरीति इसतरह पर चलती है कि जितना उन बस्तुओं की मुटाई में अन्तर है उतनाही आकर्षण की शक्तिमें अन्तरहै और जितनीही लम्बाई बढ़तीहै उतनीही आकर्षणशक्ति क़म होतीजातीहै यदि इसबात को मान ले तो जो बातें ज्योतिष विद्या में हैं उनके होने का हेतु मालूम होजाता है और जो कि सम्पूर्ण मूलों का कारण इसरीति के माननेसे मालूम होजाता है बरन सम्पूर्ण कार्य्यों का नियमित समयपर होजाना उसरीतिके द्वाराहोने से पहले बताया जासक्ताहै तो योग्य प्रमाणहै कि वहरीति ठीकहै परंतु क्या आपके विचार में परस्पर आकर्षण शक्ति का मूल इस

रीति से मालूम होजाता है कहिये कि दोमूलकी वस्तु परस्पर क्यों खिंचावट रखती हैं क्या कारण है कि जो इस क्रिया की युक्ति का हिसाब ऊपर वर्णनकियागया वह हिसाब दैवने स्थिर रक्खा है इसका उत्तर यहीहै कि दो मूलकी वस्तु परस्पर यह खिंचावट रखती हैं परन्तु प्रकट है कि इसउत्तरसे केवल आकर्षणशक्तिका होना पायाजाताहै परन्तु उस आकर्षणशक्तिके होने का सबब नहीं पायाजाता है जो रीति आकर्षणके बलकी पूरी पाईजाती है उसके मानने में जो विचित्रता होतीहै उनकाहोना समझा जासक्ता है परन्तु आकर्षण शक्ति के होने का कारण बिल्कुल मालूम नहीं होता और इस शक्ति का विस्तार और अनुमान मालूम होता है परन्तु इसका मुख्य मूल विदित नहीं होता और यही बचन दैवी सम्पूर्ण रीतों पर जैसे पूर्णआकर्षण शक्तिविद्या और उष्णता और ज्योतिआदिकी युक्तियोंपर ठीक आताहै इसीतरह अवश्य है कि जीवाकर्षण विद्या के मुख्यमूल हम कभी भी मालूम नहीं करसकेंगे परन्तु निश्चय है कि जो विचार और यत्नके साथ खोजकियाजावेगा और उचितरीति से निश्चय करेंगे तो ऐसी रीति अवश्य मालूम होजावेगी जिससे हम समझ सकेंगे कि वह दशायें किसतरहपर होती हैं परन्तु जैसाज्योतिष बिद्या और अन्यविद्याओंमें उनदशाओं का मुख्य मूल मालूम नहींहोता वैसाही इस विद्याकीभी दशाओंका मूल मालूमनहींहोता और कुछ इसबातका शोचनहींहै कि जो प्रसिद्ध रीतें और विद्याओं में मानने के योग्य मानीगई हैं उन रीतों से जीवाकर्षण विद्याकीरीतें विपरीत होंगी ॥

तीसरा संशय बहुधा यहकियाजाताहै जीवाकर्षण का प्रभाव केवल डरपोक और क्षीणांग मनुष्यों और मुख्यकर स्त्रियों पर देखाजाता है और ऐसे लोगोंके वर्णनपर निश्चय नहीं होसक्ता

है जो यहबात ठीकभीहो तो उसके उत्तरमें यहकहना चाहिये कि जो यहलक्षण अतिरक्षा और विचारसे देखेजावें और ठीक मालूमहों तो यहसंदेह ठीकनहींहै बहुतसी दशायें वैद्यकविद्या में इसतरहकी मालूमहुईहैं और यहप्रमाण केवल इतनीबातके लिये काममें लायागया कि उनदशाओंका मालूमकरना बहुत कठिनहै परन्तु यहबातनहीं मानीजासक्ती मुख्यकरके वैद्यनहीं मानेंगे कि यहकठिनता सुगमनहींहोसक्ती और कठिनकाहोना केवल इसलिये काममें लानाचाहिये कि मूलोंकेहोनेके खोजमें अधिक रक्षाकीजावे सिवायइसके किसी मुख्यबातका क्षीणांग और डरपोक मनुष्यों में पायाजाना कुछ यह प्रमाण नहीं कि वह सच्चीबातें और मूलोंके सदृशनहीं हैं सो उनमूलोंको मालूम करना और उनपर विचार करना चाहिये और मालूम करना चाहिये कि आपुस में और दूसरे मूलों से कहांतक अनुकूल होतेहैं बहुत उनमें ऐसेहैं कि रोगीके वर्णन या रोगीके सच्च या झूंठे होनेपर नहीं और रोगी की या उसमनुष्य की गवाही पर जिसपर क्रिया की जावे नहीं जैसे जब हाथ पैर और सम्पूर्ण शरीर ऐसा अकड़ जाता है कि मनुष्य हिल नहींसक्ता और बड़ी ऐंठन पैदाहोजातीहै तो उसदशामें उसक्रियाके करनेवाले की गवाही क्या दरकार है—परन्तु वास्तव में यह संदेह बेमूल है सम्भवहै कि प्रारम्भ में जीवाकर्षण विद्या का प्रभाव कई रूपों में ऐसे मनुष्यों पर प्रकटहुआहो जो क्षीणांगहों इसवास्ते कि जो लोग इसप्रकार के होते हैं उनपर जीवाकर्षण विद्या का प्रभाव जल्दी और अधिक होता है जो लोग इसक्रिया के प्रभाव को देखते हैं वह जानते हैं कि उसका प्रभाव बहुत आरोग्य मनुष्योंपर रोज होताहै और मर्दों पर ऐसाही पूरा और बाखूबी होता है जैसा स्त्रियों पर सो यह संशय बेमूलहै॥

चौथा संदेह बहुधा ऐसेलोग जिनसे ऐसी आशा नहींहोती यह किया करते हैं कि जिस मनुष्यपर जीवाकर्षण क्रिया की जातीहै वहजानबूझकर उसकेप्रभाव अपनेमें प्रकटकरता है इस क्रियाकेकर्त्ता छलरूपहोतेहैं और देखनेवाले बुद्धिहीन मैंनेबहुधा ऐसी तोहमतें लगतीहुई सुनीहैं और उन तोहमतों का कारण सिवाय इसके और कुछनहीं बताया जाताहै कि जो इस क्रिया के प्रभाव देखेजातेहैं बहुत विचित्र और नये २ होतेहैं कईदिन हुये कि एकअच्छे पढ़ेलिखे मनुष्यने एक मनुष्यपर ऐसीक्रिया होतेदेखी वह जानताथा कि कर्त्ता विश्वासित और सच्चा मनुष्य है परन्तु उसने मुझसे कहा कि निस्सन्देह इसकर्त्ताने धर्त्ता को कुछ लोभदेकर ऐसेप्रभाव प्रकट करादिये होंगे निदान अच्छे लिखेपढ़े मनुष्य भी ऐसी२ वार्त्ता करते हैं ऐसे बचनों के उत्तर में केवल मैं यह कहसक्ता हूं कि जो लोग और सम्पूर्ण व्यवहारों में सच्चे और बिश्वासयुक्त समझे जातेहैं उनको केवल इस विषय में इसवास्ते पाखण्डी समझना कि इसक्रिया के प्रभाव अद्भुत होतेहैं न्यायके विरुद्धहै यदि हम उनलक्षणोंका कारण न समझें या अपनी बुद्धिमें उनकाहोना असंभवित मालूमकरें और इसवास्ते सच्चीक्रिया करनेवालों को मक्कारबतावें तो यह बात बहुत अनुचितहै निस्सन्देह ऐसे मनुष्योंकी साक्षीको जो बुरेहैं खण्डन करना चाहिये और न माननाचाहिये किन्तु सर्व मनुष्योंकी साक्षीकोअच्छीतरह छाननाचाहिये पर उनलोगोंपर छलका विचारकरना जिनको हमजानतेहैं कि उनपर अपराध नहींलगसक्ता अति अनीति औरदुश्शीलताहै॥

सिवाय इसके विचार करना चाहिये कि बहुतसी बातें ऐसी हैं कि वह बनीहुई नहींहोसक्ती जैसे नाड़ीकी तीक्ष्णगति और उसका तीक्ष्णगति की दशामें निर्बल होजाना रोशनीका नेत्र

पर प्रभाव न होना पुतली का स्थिर होजाना उस क्रिया के अन्तर में नेत्रकी दशा का बदलना दूसरे के शब्द का कर्त्ता के सिवाय कानपर बिल्कुल प्रभाव न होना कई दशाओंमें शरीर पर कुछ भी दुःख मालूम न होना और जोड़ों में बहुत ऐंठन का होजाना और सिवायइसके और बहुतसे प्रभाव इसक्रिया के ऐसेहैं कि वह जान बूझकर कोई बनानहीं सक्ता और यह सर्व्व प्रभाव इस क्रिया के देखे जासक्ते हैं सिवाय इसके जो मानाजावे कि यह बातें जानबूझकर और बनावटसे की जाती हैं तो हर एकछोटे से लड़के और लड़की के आधीन ऐसा अभ्यास दैवीशक्ति के अनुकर्ण अर्थात् नकलकरने का मानना पड़ेगा जिसका मानना जीवाकर्षण क्रियाके लक्षणोंके मानने से अधिक कठिन है इसके सिवाय जब बुद्धिमान इसक्रिया के प्रभाव के मालूम करने को एकान्त स्थलमें उसका खोजकरते हैं वहां बनावट का क्या आवश्यकता है और कुछ कारण बनावट का नहींहोता मैंने एकान्त में बहुत अच्छे प्रभाव इस क्रिया के देखे हैं बरन ऐसे मनुष्यों पर जिनको मैं किसीसबब से सच्चाई के मार्ग्ग से फेर नहींसक्ता था मैंने आपही ऐसे प्रभाव प्रकट किये हैं सो कोई कारण नहीं है कि उनकर्त्ताओं पर छल या धोखेका सन्देह कियाजावे बहुधा ऐसाहोताहै कि यह क्रिया पीड़ाके दूरकरनेकेलिये कीजातीहै और ऐसीदशाओं मे जहां २०—५०—१०० किन्तु ५०० बेरएक मनुष्य पर क्रिया करनी पड़तीहै तो कईलक्षण ऐसेप्रकटहोतेहैं कि न उनकेप्रकट करनेकी इच्छा होतीहै और न उनके उपजनेकी आशा होतीहै कर्त्ता धर्त्ता दोनों ऐसे चिह्नको देखकर आश्चर्य मानतेहैं बहुत दशायें ऐसीहैं कि उस क्रियाके चिह्न प्रकट होनेकेलिये बीस पचास सौ पांच सौ दिनों तक क्रिया करनी पड़ती है और

प्रभाव प्रकट नहीं होता सो प्रकटहै कि जो छल और धोखा होता तो ऐसी बातें नहीं होसक्तीं ॥

इन चिह्नोंकेठीक और सच्चे होनेकी साक्षी इसतरहसेप्राप्त होसक्तीहै कि जब किसी मनुष्यपर पहलेही यहक्रियाकी जाय अथवा आपही यह क्रिया करे वा किसी कर्त्ताको करतेदेखे तो उस क्रियाके सम्पूर्ण क्रियाओं को रक्षा और विचार पूर्वक देखे आपदेखेंगेकि जब इसक्रियाकेकारण नींद आनेलगतीहैतोआंखें बदल जातीहैं धीरे २ मुखकाडौल बदल जाताहै आवाज़ बदल जातीहै सबढंग सोने वालेका विरुद्ध होजाताहै जिस मनुष्य पर यहक्रियाहोतीहै वह सोता होताहै तौ भी शब्द सुनताहै और बातोंका उत्तर देताहै जब फिर जागताहै तो उसकोउससोनेका कुछ भी हाल मालूम नहीं होताहै सोने में बोलताहै ऐसी बातें मुख्य करके किसी दूसरे मनुष्य पर जब यह क्रिया की जावे और यह चिह्न प्रकटहों कभी भी छल छिद्रकी नहीं होसक्तीं और सिवाय दूसरे आदमीके जिस मनुष्यको हम अच्छीतरह जानतेहों उसपर धोखेका विचार होसक्ता है परन्तु यह सन्देह कि सब मकरहै कुछ मूल नहीं रखता है ऐसे सन्देह बहुतसी विद्याओंके लिये प्रारम्भसे होते रहेहैं ॥

निस्सन्देह यह बात होसक्तीहै कि इस विद्याके अभ्यासों में धोखा देनेकी इच्छा कीजावे मुख्य जब उस मनुष्यको जिसपर क्रिया कीजातीहै कुछरुपयेके मिलनेकी आशाहो या वह चाहता हो कि लोगोंको आश्चर्य्य दिलायें यह बात ऐसीही होसक्तीहै कि एक सैर करने वाला आदमी एक दूरके देशका झूठाहाल वर्णन करनेलगे परन्तु ऐसेधोखा देनेकी इच्छा वहलोग तुरन्त मालूम कर लेतेहैं जिन्हों ने इस विद्या में अच्छा खोज कियाहै और मुख्य करके जब हजारोंबेर ऐसीक्रिया हमारे घरोंमें होती

हैं जहां न धोखादेने न रुपया लेनेका प्रयोजन होताहै तो यह धोखा देनेका सन्देह झूठा है पर हां जो मनुष्य इस क्रिया के करनेमें छलकरें उनके छलको पकड़ना चाहिये और उनके धोखे को प्रकट करना चाहिये परन्तु जो बातें वास्तवमें ठीकहैं उन को खोजे बिना अविश्वासित न समझना चाहिये ॥

इसकेसिवाय शोचना चाहिये कि मिसमरके समयसे आज तक बहुत लोगोंने आकर्षणकी क्रियाके होतेदेखाहै और जो२ चिह्न उपजते उन्हों ने देखेहैं उनको लिखाहै देखने वालों से ऐसे लोग बहुत जियादहहैं जिनके ऊपर क्रियाके चिह्न प्रकट हुयेहैं और उनमेंसे बहुत ऐसेहैं कि उनके लिये किसीतरहका अपराध नहीं लगसक्ता था सो इसबात का विश्वास करना कि सब इस क्रियाके कर्त्ता धोखा देनेवालेथे और सब देखने वाले बुद्धिहीनथे कठिन बातहै मुख्य करके इस बातका भी ध्यानरहे कि हर कर्त्ता ने अपनी क्रियाकी रीति विस्तार से वर्णन कीहै और इच्छा कीहै कि उनके परीक्षा की बार २ क्रिया करने को आजमाया जावे यह बातभी शोचनेके योग्यहैकि इस क्रियाके कर्त्ताओं में बहुधा ऐसे मनुष्यभी थे कि जिनको कुछ प्रयोजन धोखा देनेका न था सोमैं तुरन्त कह सक्ताहूं कि ऐसे २ विचार इस बात के वास्ते पूरे हैं कि सच्चे और शुद्ध मन और खोजने वाले मनुष्यों की समझसे यह विचार उड़ादें कि मकर बहुधा किया जाता है और बहुधा ऐसा होताहै परन्तु धोखा देनेका मानना वृथा नहींहै परन्तु यह कुछ इसी विद्याके वास्ते मुख्य नहींहै और विद्याओंमेंभी यहहै और कोई विद्या ऐसी नहीं है जिसमें छल और अयोग्य मनुष्योंकी दगाबाज़ीका सन्देहनहींहै परंतुवास्तवमें इस जीवाकर्षणविद्याकी क्रियापर विश्वास करना इतना अप्रमाणिक नहींहै जितना इस बातका विश्वास करना

कि शुरू से आजतक सब मक्कार और सर्व कर्त्ता बुद्धिहीन होते चले आयेहैं और वास्तव में आश्चर्यकी बात यह है कि अच्छा स्वभाव और बहुतयोग्य मनुष्य जीवाकर्षण क्रियाके चिह्नोंको अति ग्लानिके साथ अप्रमाणिककहते हैं और समझ े हैं कि जो मनुष्य उनपर विश्वास करते हैं बुद्धिहीन हैं और विचित्र और अद्भुत बातों के निश्चय करलेने की प्रीतिरखते हैं जिनका यह वाक्य है वह आप तो शोच विचार करें कि इस बात के निश्चय करनेके लिये कहांतक निर्बलविश्वासहोनाचाहिये कि सबधारक सदामक्कारीही करतेरहेहैं और इससेअधिक यह किऐसेमनुष्यों को जो विद्याके खोजमें बहुत प्रीतिकरतेहैं और बड़े बुद्धिमान हैं इस तरह पर धोखा देतेरहेहैं कि उनकाछल सदा चलता रहाहै और कभी उनका धोखापकड़ा नहींगया इसजगहपर यहबात लिखनी उचितहै कि जीवाकर्षण विद्या के सम्पूर्ण चिह्न किसी चिह्नके सिवाय लोगोंपर अपने आप किसी बनीहुई तरकीबके सिवाय पैदा होजातेहैं जैसे कई रोगोंमें कईपट्ठोंका अपने आप अकड़जाना बहुधा देखा जाता है यही बात जो इसमें रीति के विपरीततेज़ी पैदाहोनेकेविषयमें कहीजासक्तीहै किसीसमय अपने आप मनुष्यकी यह दशाहे जाती है कि एक मुख्य समय तक उसको बिल्कुल मूर्च्छा रहतीहै और कुछशब्द सुनानहीं जाता प्रकाशका नेत्र पर प्रभाव नहींहोता नाकसे कुछ सूंघानहींजाता अर्थात् घ्राणशक्ति नष्ट होजातीहै स्वादनहीं रहता किन्तु दुःख भी मालूम नहीं होता सोने और जागनेकी दशा अपनेआपहो जातीहै और जो विचित्रता लक्षण सोने जागनेमें प्रकटहोते हैं वह दिखाई देतेहैं जैसे अंधेरेमें बन्द आंखोंके साथ चलना और रक्षापूर्वक चलना अंधेरेमें बन्दआंखोंके साथलिखना औरअच्छा लिखना ऐसीबस्तुओंको जो जागनेपरनहींमिलसक्तीहैं या लेना

और देखलेना और यादरखना और इसीतरह—और उनसबसे अधिक यह कि गुप्त वस्तुके दर्शनका प्रभाव भी जिसपर सन्देही जन ठोकरखाते हैं अर्थात्इस प्रभावको देखकर अविश्वासी उनके मनमें आजाती है और उनकी बुद्धिको अचंभा होता है अपने आप पैदा होजाता है आगे मैं बहुत दृष्टान्त लिखूंगा जिनसे सूचित होगाकि गुप्तपदार्थ दर्शनको दशाभी अपने आप अवश्य पैदा ह जाया करतो हैं और इन्द्रिय वैकल्य और गुरु इन्द्रिय वैकल्य का आप से उपजना अति प्रसिद्ध है और जीवाकर्षण क्रिया में यहदशा सबसेबड़ीहै बिचार करनेकीबात है किजब यहदशायेंअपने आप होती हैं तो इस विषयमें संदेह करना कि यह चिह्न बनावट से उत्पन्नहोसक्तेहैं झूंठहै और जब विश्वासित और ऐसेमनुष्यजिन्हेंहमजानतेहैं इनचिह्नोंकेहोने की गवाहीदें तो उनको या उनके धारकों को कुछका अपराध लगाना न्यायसे बाहरहै बरन क्यायहबात बुद्धिमानीकी नहीं है कि अपने आप पैदाहोजानेसे उक्तचिह्नोंको बनावटसे पैदा करनेकी आशाहोसक्ती है निदान मैं यहपरिणाम निकालताहूं कि मक्कारी के अपराधको छोड़ना पड़ेगा कदाचित् यह संदेह स्थिर भी रहे तो कई लोगों के लिये वह अपराध लगासक्ता है और ऐसे परीक्षित विषयों के लिये जो एकान्तमें रक्षापूर्व्वक कीजातीहैं कभीनहीं लगसक्ता ॥

पांचवां संदेह यह कियाजाता है कि जब इनचिह्नोंको एक खुलीहुई सभामें पैदाकरनेकी इच्छा कीजातीहै तो बहुधाचूक जातीहै जोमनुष्य चूकतेहुये देखतेहैं तुरन्त कूदकर यहपरिणाम निकालतेहैं कि यहसम्पूर्णक्रिया बेमूलहै और जोमनुष्य चूकता है उसपर बहुधा छल और धोखेका अपराध लगाते हैं मुख्य यह है कि जो मनुष्य पूरेभरोसेसे बहुत बड़े और महान चिह

को बहुत लोगोंकी सभामें उपजानेका दावा करताहै एक ऐसे विषयको करताहै जिसका करना उसे उचितनहींहै और जिन देखनेवालोंको निराशाहोतीहै उनकाक्रोध ऐसेमनुष्यपर उचित है मुख्य करके उसदशामें कि सक्रियाका कर्त्ता रुपये लोभ से उक्तचिह्नोंके दिखानेका दावाकरे कई मनुष्य बुद्धिकीहीनतासे ऐसा दावा करलेते हैं परन्तु निश्चय करके ऐसे मनुष्य के चूकजाने से यह परिणाम निकाललेना कि जब यह चिह्न वास्तवमें होजातेहैं तो छलसे होतेहैं माननेसेदूरहैं क्योंकि जो इसक्रियाका कर्त्ता वास्तवमें धोखा देनेवालाहो तो अपने धोखे केसँभालनेके वास्तेभी जिस कामकी उसने प्रतिज्ञाकीथी उसके उपजानेमें न चूकेगा चाहे उक्तचिह्नों के होनेकेपीछे जो परीक्षा उनके सच या झूंठहोनेके वास्ते कीजावे उसकापरिणाम उसके लिये उपयोगी न हो सकतो यह है कि बहुधा चूकजाने से एक प्रकारका सबूत इसबातका है कि जो चिह्न वास्तवमें सचहोते हैं वह नि करके सत्यहैं ॥

यहबातबिल्कुलमाननेसेदूरहै कि जबलक्षणोंके प्रकट होनेमें चूकहोतो यह परिणाम निकालाजावे कि जिन बातोंका होना लिखाहै वह झूठहैं एकउपाय बहुतसुगम ऐसाहै कि जो सिक्केको यहांतक पिघलायाजावे कि बहुत लाल होजावे तो उसमें इस तरहउंगली डुबोई जासक्तीहै कि जलती नहींहै यदि कोईमनुष्य यहक्रियाहानि उठाने बिना न करसके तो उससे यह बात सिद्ध नहींहोसक्तीहै कि को भी इसक्रियाको सुगमतापूर्वक नहींकरसक्ताहै क्योंकि जो यहक्रिया सहस्त्रबेर की जावे और पूरीनहो तो यही परिणाम निकल सक्ताहै कि जो मनुष्य यहक्रिया करते हैं उनको इसक्रिया का उपाय अच्छी तरह मालूम नहीं है और जो नियम इसक्रिया के पूरेहोने के वास्तेहैं उनको या वह लोग

जान नहीं या उनसे वहशर्त पूरी नहीं होती हैं औरजो एकबेर ऐसी क्रिया अच्छी तरह होजावे तो सैकड़ों बार के चूकनेपर प्रबलहै यहीबात जीवाकर्षण क्रियामें है यहक्रिया अपने आप ऐसीहै कि इसमें चूकने के बहुत से कारण हैं और ऐसे हैं कि उनमेंसे बहुत अच्छीतरह समझेनहींजाते वास्तवमें यहकारण इतने बहुतहैं कि जो मनुष्य रक्षापूर्बक उनचिह्नोंको देखता है वह ऐसी दुर्बुद्धि नहीं करता है कि सदा सिद्धि का पूरा दावा करे या वायदा करे मुख्य करके बड़े चिह्नोंके लिये तो अवश्य इस प्रकार का वायदा नहीं कर सक्ताहै परन्तु मैं इस विषय का वृत्तान्त बिस्तार से और पत्रमें लिखूंगा ॥

——※——

दूसरा पत्र ॥

इसपत्र के प्रारम्भ में मैं यह लिखना चाहताहूं कि आकर्षण क्रियाके चूक जा के कारण क्याहैं मुख्य उस दशामें कि जब उक्त क्रिया बहुत लोगों की सभा में कीजातीहै और मैं सिद्ध करूंगा कि जो ऐसी चूकसे कुछभी सूचित होता है तो यही विदित होता है किपूर्बोक्त क्रिया मुख्य सच्ची और ठीकहै ॥

हिले इसबातका बिचार रहनाचाहिये कि क्रियाके धारण करनेवालेका स्वभाव प्रतिसमय एकसा नहीं रहता सोजोकुछ प्रभाव आज धारक पर सुगमता से होसक्ता है शायद कल उ-सका होना कठिन और नहीं तो बहुतही मुश्किल मालूम हो मनुष्योंकी नसोंके प्रबन्ध का प्रतिसमय बदलनेकी दशामें हो-ना ऐसी अप्रमाण बातहै कि इस विषय में वाक्यों के बढ़ानेकी कुछ आवश्यकता नहींहै किसी कविसे तो पूछिये कि क्या श-ब्दोंका पिरोना तुकबांधना उसको हरसमय सुगमही मालूम

होताहै किसी अच्छे बुद्धिमान बाचाल से पूछिये कि क्या उसकी मुखरता सदा एकही उत्तम रीतिपर होतीहै कईसमय ऐसे हो-ते हैं कि उसकी बातचीत बुरी और निर्बल होतीहै कि उसके नाममेंअन्तरपड़जाताहै आप अपनेमनसे पूंछिये कि क्याकिसी काम करनेके वास्ते आपका स्वभाव एकतरहपर विद्यमान रह-ताहै हरमनुष्य की प्रकृति बदलती रहतीहै कभी चतुर कभीमुर-झाईहुई होतीहै यहीदशा हर एक घरमें होतीहै कि एक मनुष्य कास्वभाव किसी समय कैसाही होताहै और किसीसमय कैसा है जो यहबातें ठीकनहीं तो क्या कारणहै कि एकसीप्रकृति प्रशं-सा के योग्य गिनीजाती है जिन शक्तियों का हमारे शरीरकी नाड़ियों परऔर शरीरपर प्रभाव होताहै उनकी संख्या बहुतहै और हमको उनशक्तियोंके होनेसे इतना अज्ञानहै कि हम उनके प्रभाव को रोक नहींसक्ते हैं जो बात हम सब लोगोंकेलिये ठीक आतीहै वह आकर्षणके क्रिया करने वालोंपरभी सत्य होती है और यहभी होसक्ताहै किआज धारकोंकास्वभाव खिलाहोऔर उसका मन क्रियाके होनेपर प्रसन्नहो कल उसकाचित्तमुरझाया हो और वह उसक्रियाके होनेपर प्रसन्न न हो एकसमय उसपर कोई प्रभाव प्रकट होताहै दूसरे समय होसक्ताहै किवह चिह्न प्रकट न हो किन्तु कोई और चिह्न प्रकटहो जिसमनुष्यको इस क्रियाकी परीक्षा है वह ये बातें खूब जानताहै परन्तु इस क्रिया का कर्त्ता इस भरोसेपर कि बहुधा उसकी क्रिया चलगई है भूल से किसी मुख्य समय पर किसी ऐसे मुख्य प्रभावके पैदा करने का दावा करताहै जो कभीपहिले उसने एकही बेर पैदा किया हो और वहभी कभी एकान्तस्थल में विदित हुआ हो इसतरह बहुधा ऐसाहोताहै कि जो परीक्षा बहुधा एकान्त में पूरी उतरी हो वह बहुत लोगोंकी सभामें पूरीनहींहोती जब कर्त्ताने पहिले

धारकपर क्रियाकी थी तो ऐसा समय था कि जब कोई तीसरा मनुष्य न था और बुद्धिकी हीनता से इस बातका दावा करता है कि जो चिह्न पहले पैदा हुयेथे वही बहुत लोगोंकी सभा में पैदा करदूंगा चाहे उसको समझना चाहिये कि सब लोगों की सभा में धारक के और पास बहुत लोग देखने की इच्छा से इकट्ठे होते हैं और यह आकर्षण क्रिया मुख्य करके एक बस्तु है तो जाननाचाहिये कि मनुष्योंके समूहका जोउसके औरपास इकट्ठाहोता है उसके ऊपर एक प्रबल प्रभाव होताहै और प्रकट हो कि यह बात इस आकर्षणक्रियामें निश्चितहै कि कर्त्ता और धारक के सिवाय और मनुष्योंके आकर्षण का प्रभाव धारक के स्वभावमें विघ्न कर्त्ताहै यह प्रभाव ऐसाहोता है कि धारकको जो आकर्षणकी क्रियाके चिह्नोंके प्रकट करनेकी शक्ति प्राप्तहोतीहै वह किसी समयमें कुंठित होजाती है बहुधा ऐसा होता है कि धारकको बड़ा दुःखहोता है किन्तु वह रोगी होजाता है निदान मेरी मतिमें धारकके गिर्द बहुत मनुष्योंके इकट्ठे होनेसेसिवाय चूकनेके और किसी बातकी आशा रखनी बुद्धिकी हीनताहै जो किसी समय न चूकजावे तो उससे केवलयहसिद्धहै कि कईधारकों पर इस क्रियाका प्रभाव कमहोताहै यानहींहोता है सिवाय इसके यह बातभी शोचने के योग्यहै कि देखनेवालोंकी प्रकृति का वरन मुख्य उन मनुष्योंके स्वभावका जोधारकके अतिनिकट होतेहैं क्याढंगहै देखनेवालोंकाध्यान बिल्कुलधारककीओरजमा होताहै और जोयह बात ठीकहो किएक मनुष्यका दूसरे मनुष्य पर प्रभाव होताहै तोअवश्यकरके देखनेवालोंका प्रभावधारक पर होगा जैसे बहुधा बहुत लोगोंकी सभामें हुआ करताहैयदि कई देखने वालों के मनमें यहबात खूबजमीहुईहै किकर्त्ताछलीहै तो इसबातके समझने के कारणसे धारकपर अवश्य बुराप्रभाव

होताहै मुख्यकरके उसदशामें किधारक का स्वभाव अधिकतर प्रभावके धारण करने वालाहो यह बातकि देखने वालोंकी प्रकृति में यह विचार या किसी कारण या अकारण से ठीक हो एकबात अलग है कि उसपर देखनेवालों की प्रकृतिका प्रभाव का होना या न होना नहीं घटता बहुधा ऐसा होता है कि जो एक ऐसा मनुष्य वर्त्तमान हो तो धारक की प्रकाशमान दशा नष्ट होजाती है क्योंकि यह बात योंभी होतीहै कि कोई ऐसा मनुष्य विद्यमान हो जिसकी आकर्षणशक्ति का प्रभाव धारक पर कारकके बलसे अधिकहो चाहे उसकीप्रकृतिमें इसतरहका बिचारभी न हो इसलिये कि कर्त्ताकाप्रभाव उस अन्यमनुष्यके अधिकबलवान्प्रभावसे बंधहोजाताहै जिनमनुष्योंनेजीवाकर्षण विद्याके विषयमें किताबें लिखीहैं उन्हों ने यह सब बातें लिखी हैं किन्तु हरबुद्धिमान कारककोचाहिये कि सिवायउनचिह्नोंके जो उससमयपरसंयोगिक उत्पन्नहों और चिह्नोंके प्रकट करने कादावा न करे एककर्त्ता ने लिखाहै कि एकबेर एकमनुष्य एक बहुतमनुष्योंकी सभामें एकधारकको देखनेगया जिसको क्रिया केअन्तर्गत गुप्तबस्तुदर्शनकाबल प्राप्तहोताथा परन्तु जब देखने कोगयातो अपनेमनमेंअच्छीतरहसे इस बातका निश्चय करके गयाकिधारकबिल्कुल मक्कारहै परन्तु इस मनुष्यने अपने इस विश्वासकावृत्तान्त किसी विद्यमानमनुष्यमेंसे वर्णन नहींकिया जब इसमनुष्यको धारककेसाथ संयोगकरायागया तो धारकने कहा कि तुम्हारेमनमें यह निश्चयहै कि मैं धोखा देने वालाहूं और जबतक यह विश्वास तुमको रहेगा उसके बुरे प्रभाव के कारणमेरी गुप्तवस्तु दर्शनकी शक्ति कभी कुछ कामन करेगी उससमयउस संदेही मनुष्य को अचंभा हुआ कि धारक ने मेरे जीकीबात मालूमकरली और उसे निश्चयहुआ कि धोखेसे इस

क्रियाके परिणाम नहींउपजते उससमय वह उसमकानमें चला गया और जब लौटआया पहिला विचार उसकानष्टहुआ था और केवल इस क्रिया के सम्पूर्ण चिह्नदेखे और उसको उनके वास्तव में विद्यमान होनेका निश्चय हुआ बरन उस दिनसे उसने आपभी इस क्रियाका अभ्यास करना आरम्भकिया और कुछ समयके उपरान्त बहुत प्रसिद्ध इस क्रियाका करने वाला बनगया॥

मुझे मालूम हुआहै कि एक स्त्री पर जिसकी प्रकृति इस आकर्षण शक्तिको अति स्वीकार करतीथी एक मुख्य मनुष्य के होनेपर कारककी क्रियाका कुछ प्रभाव नहीं होताथा और एक और स्त्रीको भीमैं जानताहूं कि सदैव काल जब केवल वह आप और एक कारक होतो उसपर इस क्रियाका प्रभाव सुगमता और प्रसन्नता पूर्वक होताहै यदि सिवाय कारकके कोई दूसरा मनुष्य वर्त्तमान हो तोउसको बहुत दुःख होताहै॥

जब एक मनुष्यका यह प्रभावहोताहै तो प्रकटहै कि जिन धारकोंकी प्रकृति बहुतक्षीणहै उनपर एकमनुष्योंकासमूह अति बलवान् प्रभाव कर्त्ताहोगा मुख्य करके उसदशा में कि देखने वालों की प्रकृति का जमाव धारक की ओर हो और प्रकट है कि देखनै वालों में से बहुत से मनुष्य बहुतही क्रियाधारक के निकटहोतेहैं और बहुतसे उनमेंसे न केवल अपनेमनमें निश्चय रखतेहैं कि धारक धोखादेने वाला है बरन जिह्वा से उसको पाखण्डो कहते हैं निदान जो इस आकर्षण शक्ति की क्रिया वास्तव में सचहै तो ऐसीदशा में धारक की प्रकृति में अवश्य दुःखपैदाहोना चाहिये और होताहै—और बहुतलोगोंकीसभा में ऐसे कारणोंसे बहुतलोग चूकजाते हैं एक पक्काप्रमाण इस बातकाहै कि धारकक्रिया के अन्तर्गत अन्य मनुष्य के विचारों

में संयुक्त होजाताहै और वहविचार उससेमालूम होजातहैं॥

सिवाय इसकारण के औरभी इनक्रियाके चूकजानेके कारण बहुतसेहैं जैसे एककारणयहहै कि बहुधा लोगोंको यहनिश्चय अशुद्धहै कि जबक्रिया की जातीहै तो हरदरजे में सदा एकही से चिह्न प्रकटहोतेहैं अर्थात् जो हमने एकधारक पर क्रिया की अन्य २ रीतिमें जैसे जागने और सोनेके अन्य २ रीतियों में बड़े २ चिह्न जो ऐसी २ दशामें उत्पन्न होतेहैं होतेदेखे हैं विचारहोताहै कि जो और धारकों पर आवश्यक चिह्न इसी भांति के साथ प्रकटहोंगे यह सनकी अशुद्ध समझहै और इस अशुद्ध विचार का परिणाम यह है कि बहुत मनुष्य जिन्होंने गुप्तपदार्थ दर्शनके सदृश शक्ति का प्राकट्य किसीमुख्यधारक में किसी मुख्य दशा में देखाहै या सुनाहै यहबात नहींसमझ सक्ते कि वह प्रकटहोनेकी दशा किसीदूसरे धारक में न पाई जावे लोग कहते हैं और शोर मचाकर कहतेहैं कि जो हमने पहिले देखाहै वह दिखादो कारक बुद्धिकी हीनता से उसके दिखानेमें यत्न करताहै परन्तु धारकऐसाहै कि पहिले धारकों से उसपर न्यून चिह्न प्रकट होतेहैं या प्रायःधारकक्रिया को और दशामेंहोता है सो देखनेवालों और कारक ने निर्बुद्धि से जो चिह्नों के देखनेकी आशाकर रक्खी थी वहपूरी नहींहोती वास्तव में तो यहबात कुछ भी नहीं जैसा मैंने अभी समझाया इसके कारण ठीकहैं परन्तु इस बातको पकड़लेतेहैं और कहते हैं कि देखो इससमय इस क्रिया के चिह्न क्यों प्रकट न हुये भाई वास्तव में कुछ प्रभाव प्रकट होताही नहीं है और कोई कारक प्रकटमें कोई चिह्न दिखादेता है तो धोखा देता है यह वाक्य झूठ है वास्तव में केवल इतनीही बात सिद्धहोती है कि देखनेवालोंको जो यहआशाथी कि हरक्रियाके कारकसे एकही

से चिह्न देखेंगे वह उनकी ना समझी थी और कारक ने जो देखनेवालों की आशापूरी करनी चाही थी वह उसकी भूलथी चाहिये यह कि हरक्रिया के समय उसीक्रियाके चिह्न अपनी तौरपर अन्यकारकोंके विरुद्धदेखे क्योंकि जो कईरीतें हरक्रिया के चिह्नोंमें एकहैं परन्तु उनकेखंडों में कईबेर और कई प्रकार का अन्तर पड़जाताहै जब अन्य २ धारकोंपर क्रिया कीजातीहै तो अन्य२ चिह्न प्रकटहोतेहैं जैसे किसीपर सोने और जागने की दशा किसी तरह उत्पन्नहोतीहै और किसीपर किसी भांति की किन्तु एकही मुख्यदशा के चिह्नों में बहुत अन्तर पड़ताहै जैसे कई धारक ऐसेहोते हैं कि जब उनपर प्रकाशमान दशा अर्थात् परोक्षदर्शी दशाहोतीहै उससमय में सिवाय कारक के शब्द के और किसीकानाद नहीं सुनतेहैं कई ऐसेहोतेहैं कि हर शब्द सुनतेहैं किन्तु बहुधा उनकी श्रवणशक्ति तीक्ष्ण होजाती है कईधारक ऐसेहोतेहैं कि कारककीही बातका व उस मनुष्य की बात का जिसको कारक उसकेसाथ संयोगकरादे उत्तरदेते हैं कई ऐसेहोते हैं कि हरकिसी की बातका जवाबदेतेहैं किसी धारक को अपने शरीरका चेत रहताहै किसीको नहीं रहताहै कई धारकों के लिये यहबात अवश्य है कि जिस वस्तुको वह परोक्षदर्शित्वदशासेदशादेखें वहउनकेशरीरमें चिमटजावे किसी के वास्ते यह बात आवश्यक नहीं है कई धारक अपने शरीरके भीतरका हाल सबका सब ज्योंका त्यों देखलेते हैं और दूसरों के भी शरीर की भी दशा देखलेतेहैं किसीको ऐसीदशा दिखाई नहींदेती किसीकी मानसीदृष्टि दूरीपर काम करतीहै किसी की नहींकरती किसीको यह शक्तिहोती है कि बन्दखत और संदूक के अन्दर बन्दकिये हुये खत पढ़लेतेहैं किसीको यह शक्ति नहीं होतीहै परन्तु यह बलहोताहै कि हमारे जीकीबात मालूमकर

लेते हैं और मनकी बात मालूम करलेना एक ऐसी बातहै कि जान बूझकर उन धारकों से न होसके जो बन्दखत पढ़लेते हैं एकही प्रभावके प्रकटहोनेमें इतने अन्तर संक्षेपसे वर्णनकिये गये आगे और बहुतसे प्रमाण इसविषय में लिखेजायेंगे परंतु यहवर्णन इसबात के सूचित के लिये पूराहै कि सम्पूर्णधारकों में एकही से परिणामों के प्रकटहोने की आशारखनी व्यर्थ है जबबुद्धिकी हीनता से ऐसी आशाकर लीजाती हैं कि बुद्धि से उनका बांधना उचितनहीं और वह आशा पूरीनहींहोती हैं तो इसकारण धारकों के लिये पाखंड का अपराधलगाना दुर्बुद्धि है यह समझना चाहिये कि ऐसी उम्मैदों के पूरा न होने के सबबसे यहबातसिद्धहोतीहै कि जिनमूलोंका हम खोजलगाना चाहतेहैं उनको हम नहीं जानते सिवाय इसके एक और भी चूकजानेकाकारणहै और वहयहहै कि देखनेवाले और कारक इसबातको नहींजानते कि पक्के खोजकेवास्ते कौन २ रीतेंठीक हैं और खोजकी कहांतक हद्द है जैसे संकल्प कीजिये कि एक कारक एक धारक पर क्रिया करता है और जो कोई नियमित चिह्न गुप्तवस्तु दर्शन की शक्तिके हैं वह प्रकट होते हैं देखने वाले कहते हैं कि हम धारक के गुप्त बस्तु दर्शन की शक्ति की परीक्षा लेनी चाहते हैं और बहुधा अपनी समझ में यह आशा करते हैं कि वास्तव में गुप्त दर्शक इस परीक्षा में पूरा नहीं उतरेगा जैसे संकल्प कीजिये कि एक धारक में गुप्त दर्शनकी शक्ति इस प्रकारकी पाई जाती है कि जो कुछ उसकी पीठके पीछे होरहा उसको बन्द आंखोंसे जान जाता है या कोई लेख किसी संदूक में बन्दहै उसको ऐसी दशामें पढ़लेता है जो देखनेवाले संदेही होतेहैं वह अपने वाक्यके अनुकूल उस शक्ति की परीक्षा करनेके लिये यहहुज्जत करते हैं कि धारक के नेत्र

केवल बन्दही न हों किन्तु उनपर पट्टी बांधनी चाहिये और न केवल एकपट्टी बांधनी चाहिये वरनपट्टीभी दोहरी तेहरी बांधनी चाहिये और कपोलों की हड्डी और पट्टीके बीचमें रुईके टुकड़े रख कर पट्टी बांधते हैं वरन रुईके नीचे प्रायः कोई कठोर वस्तु आंखोंके ऊपर रख देतेहैं अब आप ध्यान कीजिये कि सब प्रबंध इस निश्चय से किया जाताहै कि धारक इस बातका वहाना करताहै कि आंखें बंदहैं परन्तु वास्तव में धोखेसे वह अपनी आंखोंको खोलकर काममें लाताहै यहभी आप विचारें कि प्रायः पहले कभी धारक पर इस रीतिसे क्रियाकी परीक्षा नहींकीगई है और सिवाय इसके इसपरभी ध्यानकीजिये कि धारकके गिर्द वहुत से मनुष्य खड़े होते हैं जिनको थोड़ा बहुत सब को यही निश्चयहै कि कारक दम्भीहै और जो उसपर पाखण्डके सूचित करनेको तय्यारहैं जो वास्तवमें आकर्षण शक्तिकी क्रिया सत्य है तो ऐसी बातोंसे कारककी प्रकृतिमें बहुतहानि होतीहै मुख्य करके उस दशामें उसका स्वभाव बहुत महीन और प्रभाव के स्वीकार करने वालाहो परन्तु कारक चाहे निर्बुद्धिसे इस भरोसे पर कि उसको क्रियाके ठीक होनेका विश्वासहै देखने वाले जो मार्ग धारककी शक्तिकी परीक्षा करनेके वास्ते बतातेहैं उसको अंगीकार कर लेताहै परन्तु परीक्षा कीजाती है तो क्रिया चूक जातीहै तथाच हर मनुष्यइसक्रियाके खण्डोंको खूबही जानता है पहलेही जान सक्ताहै कि ऐसी दशा में धारक ऐसी अच्छी तरह पढ़ या देख नहींसक्ता जैसेपहले पढ़यादेख सक्ताथा परंतु जहांतक मुझे खबरहै मैंअच्छी तरह जानताहूं कि किसी कारक ने जो इस क्रियाके खण्डों को अच्छी तरह जानताहै कभी यह दावा नहीं किया है कि ऐसी दशाओं में क्रिया अच्छीतरह हो जातीहै इसके बिरुद्ध यहबात प्रकटहै कि ऐसे अयोग्य प्रबंध

से जो दुःख धारकको होताहै और उसपर जो प्रभाव लोगों के अविश्वास होता है वह अति हानिकर है सिवाय इसके ध्यान कीजिये किकारकको इसबातकीआशा करनेकाक्यादावा है कि धारक एक कठोर वस्तु और तीनि रूमाल और रुईके टुकड़ेके आरपार देख सकेगा यद्यपि उसने इस तरहसे पहले परीक्षा नहीं कीहै और संदेही जनोंका क्याहक़ इस बातका है कि जो शर्तें वह नियत करें और उन शर्तों के मुआफिक क्रिया पूरीहो अर्थात् शक्ति उन शर्तों की पाबंद रहे तबही उनको चिह्नोंके प्रकट होनेकी सत्यता में निश्चयहो नहीं तो न हो प्रकटहै कि दोनों कर्त्ता और देखनेवाले विचारमें भूल करतेहैं कारकतो इस कारणसे कि उसेमालूमहै कि उसके धारक बंद आंखोंसे वास्तव में चीज़ोंको देख लेतेहैं समझ लेताहै कि पट्टियां आंखोंपर बांध लेनेसे उसकी अवलोकन शक्तिमें कुछ हानि न होगी और देखने वाले इस बातको भूल जातेहैं कि चाहे इस क्रियाकी शर्तें बदल सक्तीहैं परन्तु जबतक इस क्रियाकी पूरी रीतोंको न जानें शर्तों का इस तरह पर बदल देना सुगम है कि क्रियाके पूर्णहोने में हानि होजावै दोनों कारक और धारक भूलमें हैं चाहिये कि जैसा आकस्मिक चिह्न प्रकट होता है उसको अच्छी तरह से देखें और फिर उसमें शर्तें लगावें और देखेंकि कौनसी शर्त मुख्य और कौनसी अमुख्य है परन्तु जो कई शर्तोंके मुवाफिक कई चिह्न न उपजें तो किसी मनुष्य को इस बातके कहने का हक़ नहींहै कि किसी और शर्तके मुवाफिक भी जो अनुकूल हों वह चिह्न प्रकट न होसकेंगे यह बात समझने से कि जब तक आंखों पर पट्टी नबांधी जावे यह बात पूरी नहीं मालूम होसक्ती है कि धारक अपनी आंखों को काममें लाता है कि नहीं ऐसी बातहै किजिससे इस शर्तके साम्हने करनेवालेकी बुद्धि हीनता

सूचित होतीहै और मालूम होता है कि वह विद्या के खोजऔर इसक्रियाकी परीक्षाको नहींजानता प्रकटहै कि जो बात अति सुगमहै कि जिस वस्तुके धारकको दिखाई देनेकी परीक्षा की जावैवहऐसी जगह रखदीजावे किधारककी आंखवहां न पहुंच सके और इसरीतिसे धारकको वहदुःख न होगा जोजीवाकर्षण क्रियाकी परीक्षामें कभी धारक को होनी न चाहिये ॥

निदान जो ऐसी दशाओं में क्रिया नहोवे तो इस चूकजानेसे कुछभी सूचित नहीं होताहै किन्तु अचंभेकी बात तो यहहै कि ऐसे बुरे प्रबंधोंके होनेपर भी कई धारकोंकी गुप्त पदार्थ दर्शन की शक्तिमें कुछअन्तर नहीं पड़ताहै परन्तु शक्तिमें हानिनहो तो यही सूचित होताहै कि कई धारक ऐसे होतेहैं कि उनपर कई ऐसी चीज़ोंका प्रभाव हानि दायक नहीं होताहै जो कई दूसरों पर बुरा प्रभाव रखतीहै ॥

किसी समय यह संदेह किया जाता है कि जो जीवा कर्षण क्रियाके चूक जानेके लिये इतने कारणहैं तोइसक्रिया का पूर्ण उतरना असंभवितहै तो इसका उत्तर यहहै कि वास्तवमें बहुत लोगोंके मध्य यह क्रियाकीजावे तोयहसंदेह उस दशामें बहुधा ठीक आताहै और जो कुछ मैंने ऊपर वर्णन कियाहै वह ऐसी क्रियाकेलिये लिखा गयाहै जो सभाके मध्य कीजावे परन्तु जो एकान्तमें यह क्रिया कीजावे तो जो बड़े २ चूकने के कारण हैं उनसे हमको छुट्टी मिलती है परन्तु एकान्तमें भी कई कारण चूक जानेके होतेहैं कि उनमें से कई आकस्मिक हेतुहैं जिनपर हमारा अधिकार नहीं परन्तु प्रकटहै कि चूक जाना कुछ इसी क्रियाके खोजके वास्ते नहीं है ऐसा विद्या का कोई खोज नहीं जिसमें मनुष्य नचूके मुख्यकरके किजबऐसाखोजहो जो मनुष्य की रगोंके आधीनहो सबसे उत्तम प्रमाण एकान्त में क्रिया के

पूरा उतरने का यहहै कि जब ऐसे मनुष्य भी जिन को विद्या के खोजका अभ्यास नहीं है और मन जमाकर ठीक बात को निश्चयकरने की इच्छासे एकान्त में दशा के अनुसार क्रिया करतेहैं तो क्रियापूरी उतरतीहै जितना अभ्यास मुझे हुआहै उससे मैं यह परिणाम निकालताहूं कि कोई मनुष्य जो धीर्य और दृढ़ता के साथ जीवाकर्षण की क्रिया को बरतेगा अवश्य करके और निश्चय करके चाहे शीघ्र व बिलम्ब में उक्त क्रिया बडे २ मूलोंके विषय में साक्षी प्राप्तकरलेना बहुधा लोगों को जो यहविचारहै कि जीवाकर्षणक्रिया या दैवीविद्या की किसी और शाखाको अभ्यासके बाज़ारके सिरेपर जापहुँचनाचाहिये सो झूठहै क्योंकि क्रिया के प्रभाव मुख्यकरके ऐसेहैं कि इस तरह की परीक्षा उनके शरीर के प्रतिकूल हैं॥

एक और प्रकार की चूक इसतरह पर वर्णन की जातीहै कि कोई सन्देहीजन किसीधारक परक्रियाकी परीक्षा करताहै और परीक्षा के उपरान्त अपना निश्चय इसतरह पर प्रकट करताहै कि धारक दम्भीहै कभी ऐसाहोता है कि जो कुछ वह परीक्षा करताहै उसकाहाल विस्तार मे प्रसिद्ध करता है परंतु जब उसके वर्णनको हम जांचतेहैं तो मालूम होताहै कि जिस बातकी वह परीक्षा करता है वह उस बातकोही नहीं जानता और जो मुख्यशक्ति उस धारक में बताई गई है जिसकी वह परीक्षा करता है वहही उसे मालूम नहीं किन्तु जो सुगम से सुगमरीतें परीक्षा करने के लिये नियत हैं उनकोही वह नहीं जानता-कईशर्तें ऐसीहैं कि कईपरिणामोंके पैदाहोनेके लिये उनकाधारणा अतिआवश्यक है परन्तु वह अपनी बे परवाईसे उनको धारणा नहींकरता है वह धारक के साथ ऐसेलोगोंको मिलनेदेताहै कि जिनकेमिलनेसे उसकीशक्ति सब नष्टहोजाती

है कदाचित् कि वह क्रिया की शर्त्तों का ध्यानरखता तो ऐसा
पंयोग न होनेदेता एकचीज़ के बदले वह दूसरीचीजको काम
में लाताहै और यहआशा रखताहै कि जो परिणाम पहलेहुआ
था वही ऐसी दशामेंभी प्राप्तहोता चाहे इसआशाके रखने का
उसेअधिकार नहींहै निदान वह धारककी दशाको बहुत बुरा
करदेताहै और उसकेखराबहोनेमेंअधिकताइसतरहहोतीहै कि
पाखंडकाअपराध उसेलगाताहै और जब उसकेमनकेअनुकूल
चिह्न प्रकट नहीं होते तो बेचारे अप्रसन्न धारकको पाखंडका
अपराध लगाताहै चाहे वह आपही पाखंडीहै क्योंकि उसने
हँसीके लायक अपने हठसे इसबातको अंगीकार किया जिसके
अधिकार करने की उसको शक्ति नहींथी बहुत से दृष्टान्त इस
प्रकार के आकर्षण क्रियाकी चूकके खोजकरनेके प्रारम्भ और
अन्तके वर्णन में से निकालकर लिखेजासक्तेहैंपरन्तुऐसे दृष्टांतों
का लिखना विरोध और ईर्षा मानाजावेगा इसलिये न लिख-
ना उत्तमहै न्याय और निजबिवेक यह बात बताताहै कि जो
मनुष्य किसी विषय में अपनी अनुमति देनीचाहे उसको इतना
ज्ञान तो अवश्य चाहिये कि जिनलोगोंने उसविषयको अच्छी
तरह बरताहै उन्होंने क्या२ वृत्तान्त लिखेहैं और यहज्ञान उस
दशा में मुख्यकरके बहुत अवश्यहै कि जब उस मतिसे किसी
मनुष्यके नाममें बट्टालगताहो चाहे वहमनुष्य कैसाही क्षुद्रहो॥
छठासन्देह यह कियाजाताहै जोबुद्धिमान्निपुणजनहैंऔर
जो वैद्यकविद्या में पूर्णता रखतेहैं वह इस आकर्षण की क्रिया
के चिह्नोंका सत्यहोना नहीं मानतेहैं सन्देहीजन कहते हैं कि
यहलोग इतनी प्रवीणता रखतेहैं कि इस विषय में अपनीमति
पूरीदेकर निर्णयकरदें सोजब यहलोग इनचिह्नोंको ठीकहोना
मान लेंगे तो हम भी मानलेंगे इस सन्देहका यह उत्तरहै कि

इससे केवल हर नईवस्तुकेलिये पक्षपातका होना पायाजाता है कोई भी ऐसी बड़ी सचबात संसार में है जिसके प्रारम्भ में समय के विद्वानों ने मानलिया था तथाच जब ज्योतिष विद्या नईबातें प्रकट कीगईं तो उनको किसने मानाथा जब यहबात प्रसिद्धहुई कि एक नई दुनिया निश्चित हुईहै चाहे यहबातपृथ्वी के गोलहोनेका परिणाम था किसीने भी इसबातपरविश्वास न किया किन्तुपहलेयहबात प्रकट कीगईथी कि पृथ्वीगोलहै तो उसकोभी किसीने नहीं मानाथा न किसीने [१] फलेगिस्टन के वचनकोमानाथा।जिस समयमें वह प्रकटकियागयाथाउससमय और कोई वचन उससे उत्तम नहींथा न [१] ज्यूलोजीके मूलोंको किसीने मानाथा इसीतरह जब धुयेंके जहाज़ चलने शुरू हुये तो किसी को विश्वास नहीं होताथा न किसी को यह निश्चय होताथा कि धुयेंकी गाड़ियां लोहे की सड़क पर चलसकेंगीन [२] गासकी रोशनीका किसीको विश्वासथा न [३] पैकन साहबकी बुद्धिमानी का न [४] न्यूटनसाहब की निपुणता का निदान जो विद्वानोंके समूहके अधिकारी किसी समयमें होतेहैं वह नई वस्तुसे ग्लानि रखतेहैं क्योंकि उनकी आयु अधिक होतीहै और जोबातेंबर्सोंसे उनकीसमझमेंजमीहुई हैं वह निकलनहींसक्ती हैं

---

१ फलोगिष्टन का यह वाक्यहै कि संसार में कितनी चीजेंहैं उसकी बनावट में उष्णता मिलतीहै ।

(१)ज्योलाजी वहविद्याहै जिसमें पृथ्वी नीचेके वृत्तांतका वर्णनहै ॥

(२) गासकीरोशनी वहहै कि तेल या किसीऔर चीज़को धुवांबनाकर जलाते हैं लण्डन में यहरोशनी सड़कोंपर रहतीहै और आजकल कलकत्तेमेंभीहै ॥

(३) पैकनसाहब एक बडेबुद्धिमान इंगलिस्तान में हुये जिन्होंने बुद्धिमानीका यहमूल सिखायाथा कि परीक्षा पहिले करनीचाहिये फिरपरिणाम निकालनेचाहिये ॥

(४) न्यूटनसाहब वह बुद्धिमानथे जिन्होंने यह सिखायाथा कि संसारमें हर मून के पदार्थों में परस्पर आकर्षण होता है ॥

यहबातप्रसिद्धहै कि हारवीसाहबने [१] जबफुदकनेवालीनाड़ियों के लहूका प्रकार निकाला उससमयमें जो वैद्य चालीस बर्षसे अधिक आयु रखताथा उसबातको सचनहीं मानताथा वास्तव में यहहै कि जोलोग अबतक हारवीसाहब और न्यूटनसाहबके समय में छोटी उमरकेथे उनकेवास्ते यहबात रक्खीगईथी कि उनबुद्धिमानों को निश्चयकीहुई बातोंको स्वीकारकरें और वह बातें ऐसीथीं कि जो इससमय में कोईमनुष्य उनको न माने तो उसको निर्बुद्धि कहेंगे क़याफ़ा नामी [२] विद्या जैसा उसको गाल साहबने प्रचलितकिया था अबतक उसपक्षपात औरव्यर्थवाद से निकलहीरहाहै जो हरचीज़ के वास्ते संसार में मानो बर्त्तमानहोताहै ज्योलो जी की यहदशाहै कि जो लोग एकसमय में इसविद्याके अतिविरोधीथे अर्थात् पादरी लोग वहीमनुष्य अब उसविद्याको धर्म्मके बिवादोंमें काममें लातेहैं यहपरिणाम उनके परिश्रमका है जो उससमय में जब ज्योलोजी की विद्या पहलेही प्रकटहुईथी छोटीउमर के थे ॥

निदान विद्वानों को जो आकर्षण विद्या की ओर विरोध है जो वह शत्रुता उतनीभी कि जितनी वह समझी जाती है तबभी उसकेलिये यही कहसक्ते हैं कि संसार के प्रारम्भसे सबविद्याओं के लिये ऐसाहोता आयाहै और जैसा ऊपर लिखीहुई विद्याओं की सत्यता में ऐसे कारण से कुछहानि न हुई इसीतरह इस विद्याकी सत्यता में अन्तर पड़ने का प्रमाण नहीं है परन्तु सत्य यहहै कि जैसालोग इस विरोधको समझते हैं उतना विरोध विद्वानों को इस विद्याके लिये नहीं है बहुतसे विद्वान् जो

---

१ हारवीसाहब इंगलिस्तान में एक वैद्य थे जिन्होंने यहबात मालूम कीथी कि शरीरमें लहू चलताहै ॥

२ क़याफ़ा वहविद्याहै कि हाथपांवसे शुभअशुभ शकुनबतातेहैं प्रायःसामुद्रिकहै ॥

बैद्यक और बुद्धिमानी और अन्य विद्याओं में बहुत अच्छाबोध रखते हैं जीवाकर्षणविद्या के सच्चेहोने का निश्चय रखते हैं जो समाचार लिखने वाले कुछ समय पहले इस विद्या से विरोध रखतेथे अब इस विद्या के विषय में ऐसी श्रेष्ठतासे बिवाद करतेहैं जैसा और व्यवहारों में बिवाद करते हैं किन्तु हम यहांतक कहसक्ते हैं कि हरसमूह के बहुधा समझदार आदमी इसबातको मानते हैं कि जीवाकर्षण क्रिया की विद्या बास्तव में सत्य है अन्तर इतना है किसीका विश्वास कम और किसीका अधिकहै बहुत मनुष्य अब यह तो मानते हैं आकर्षणस्वाप—आकर्षणकी ऐंठन और बिभागित ज्ञान औरकई और चिह्नभीउपज आतेहैं परंतु जो बड़ेचिह्न जैसे विचारका संयोग और गुप्तपदार्थ दर्शन आदि हैं उनका मानना उनकी प्रकृति स्वीकार नहीं करती है परन्तु जोकि सम्पूर्णछोटे और बड़ेचिह्नोंकेलियेगवाही एकसी है मुझे मजबूत भरोसाहै कि थोड़ेसे समयके उपरांत बड़े चिह्नों को भी लोग माननेलगेंगे॥

एक कारण इसबात का कि लोग छोटे चिह्नोंको मानतेहैं और बड़ोंकोनहीं मानतेहैं यहहै कि लोग अपनेजीमें यहविचार करलेते हैं कि छोटे चिह्नों के उत्पन्न होने का कारण तो हम बतासक्तेहैं परन्तु बड़े चिह्नोंके प्रकट होनेका कारण नहींबता सक्ते हैं यहबात वास्तव में यहहै कि वहलोग अपने मनमेंकोई ऐसा विचार करलेते हैं कि अपनो मन समझौती उस विचार से छोटे चिह्नों के प्रकट होनेका कारण समझलेते हैं परंतुवह विचार बड़े चिह्नों के प्रकट होनेके कारण के समझने के वास्ते पूरानहीं होता है परन्तु इस विषय में मैं आपको वहबात याद दिलाताहूं जो पहले पत्र में मैं पहिले लिख आयाहूं अर्थात् वास्तव में किसीबात के लिये यह बताना कि किसतरह और

किसलिये होतीहै असम्भवितहै यह लोग खोजनेबिना यहबात मानलेते हैं कि जीवाकर्षण विद्या के चिह्न मूल और प्रसिद्ध विद्याओं की रीतिको बिपरीत हैं परन्तु सदा यहरीति उचितहै कि किसीबात कोभी खोज बिना न मानलिया जावे यह रीति जैसी आकर्षणकी क्रिया के लिये ठीक है वैसीही और विद्याओं के लियेभी ठीक है॥

सिवायइसके इस बातपर विचार करना चाहिये कि विद्वान् जीवाकर्षण विद्या से इसलिये विरोध रखते हैं कि उन्होंनेकभी इसविद्या की ओर ध्यान नहीं किया है और इनलोगों की भी यहीदशा है जैसी उनके वड़ों की थी जिन्होंने कोपरनेकिस पर दुर्वचन कहेथे और गैलील्यू को क़ैद करादिया था ऐसी दशामें उनलोगों की मति उतनी प्रतिष्ठा के योग्य नहीं है जितनीउन विद्याओं में कि जिनके लिये उनको पूरा ध्यान रहा है किसी मनुष्य को कैसीही विद्या और निपुणता उसकीहो यहहक़नहींहै कि खोजने विना किसी विद्या के लिये पूरी मतिदे और जो बिवाद अभ्यासबिना इसबातके सिद्ध करनेके वास्ते कियाजावे कि अमुक कार्य्य होसक्ता है तो तुरन्त अच्छे पूरे अभ्यासी मनुष्य के छूजानेसे ढहजाताहै चाहेवह अभ्यासबुद्धिहीन मनुष्यही करबैठाहो निदान यह बात मानने के योग्य नहींहै कि बिद्वानों की मतिसे जीवाकर्षणविद्या का शुद्धकाया अशुद्धहोना जांचाजावे जबतक कि उन्होंने इसविद्या के लिये पूराध्यान न कियाहो और जो साक्षी इसविद्या की सत्यता के लिये प्राप्तहो उसको उन्होंने अच्छी तरह न जांचाहो मैं बहुत मनुष्यों को जानता हूं जो पहले संदेही थे वरन उनको पूरा विरोध इस जीवाकर्षण विद्यासेथा परन्तु जबउन्होंने चाहेकिसी के उपदेश से वा अपनी प्रीतिसे इसविद्या के लिये अच्छीतरह खोजकिया

तो उनको मालूमहुआ कि दैवीपदार्थ और ठीकबात का सामना उनसेनहीं होसक्ताथा मैं किसी ऐसे मनुष्यको भी नहींजानताहूं कि जिसने इसविद्या के लिये पूराखोज किया है और फिर भी यह पक्षपात उसमें स्थिर रहे हों॥

बहुधा लोगों की बरन ऐसे मनुष्यों की जो कुछ बिद्या भी रखते हैं यह सर्व प्रकार से अनुमतिहै कि जीवाकर्षण बिद्या के चिह्न जिनको वह छोटा कहतेहैं वास्तवमें उपजतेहैं परन्तु और दूसरे चिह्न जिनको वह बड़े कहतेहैं सब बेमूलहैं इसका यह उत्तर है कि कई वर्ष और कई बर्ष क्या बरन कई महीने या कई सप्ताह हुये कि जिन चिह्नों को यह लोग अब मानते हैं उन्हीं को बिना बिचारे कहते थे कि झूठेहैं जो गवाही इस बात के लिये कि अकड़न, आकर्षण स्वाप और दुःख का न मालूम होना आकर्षणबिद्यासे वा हाथोंके हिलाने से या दृष्टि को जमा कर देखने से उत्पन्न होजाता है पहले प्राप्तथी वही अबभी है परन्तु मैंने बहुत मनुष्योंको जो अब इन चिह्नोंको सत्यमानतेहैं पहलेभी बहुत भरोसे से कहते सुनाहै कि यह बातें बिल्कुल झूठ और पाषंडकी हैं मैंने लोगोंको कहते सुनाहै कि यह बिचार कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य पर ऐसाप्रभाव प्रकट करसके कि एक मुख्य नींद की दशा होजावे अर्थात् जाग्रत स्वप्न की दशाउपजे केवल बुद्धिहीन मनुष्यों के समझमें आने के योग्यहै परन्तु अब यह दशा रोज़ आपही होती रहतीहै और उपाय से भी पैदा की जातीहै अब वह मनुष्य जो पहले अपनी मति ऐसी दिया करते थे जैसी ऊपर लिखी गई एक और ही जबान बदलते हैं वह कहतेहैं कि भाई यहबातें तो अच्छी तरह जानते थे किसी मनुष्य को उनके लिये संशय नहीं होसक्ताहै यहबातें कुछ नवीन नहीं हैं हमकोतो कभी उनके लिये संदेह नहींथा जो यह बचन उनका

ठीकहै तो बड़े आश्चर्य की बातहै कि लोग उनकी मतिको इस तरह पर क्यों समझ लेते हैं किन्तु यह क्यों बिचार कर लेतेहैं कि उन्होंने अपनी मतिको इस तरह प्रकट कियाहै कि यहसब बातें वाहियातहैं सचबात तो यहहै कि सदा ऐसा होता आया है और इस बातका कुछ प्रचारही होगयाहै कि जब कोई चीज़ मालूम होतीहै तो उसपर यहदशा होतीहै कि पहले लोग उसको ग्लानिसेबुराकहतेहैं और फिर पाषंडकाअपराध उसपरलगता है और जब वह सिद्ध होजातीहै तोफिर यह कहाजाताहै कियह बातकुछ नबीन नहींहै और वास्तवमें इस बचनका कुछ मूलभी है ईश्वरकी शक्तिमें ऐसेमूलकमहैं जो नयेहैं और सचपूछोजीवाकर्षणबिद्याके मूल अलग२ कुछनये नहींहैं जो इसमें संदेहनहीं कि बहुधा यहमूल देखेगये होंगे पर भूलगये थे तथा न्यूटन के समयसे पहिले हज़ारों मनुष्यों ने सेब को पृथ्वीपर गिरते देखा था परन्तु कभी किसीतरह का बिचार उससे पहले किसी को इसबात पर न आया जबकुछ ऐसी बातनई होतीहै तो संदेही मनुष्य को इस कारण कि प्रकटमें बिश्वास योग नहीं होताहै अचंभा होताहै और वह घबराजाताहै और घबराहटके कारण थोड़ाभीबिचारके वहयहनहींशोचताहै कि ऐसीबातकभीपहिले भी अपने आप या किसी और तौर पर हुईथी कि नहीं सो वह तुरन्त उनको अस्वीकारकरताहै और जबकभी संयोगसे अपनी बुद्धिके गवाही के कारण उसबात को मानना पड़ताहै तो वह थोड़ाठंढा होजाताहै अबवह मनुष्य वहबात अंगीकार करताहै जो उसको पहिलेही स्वीकार करना चाहियेथा वहखोज करता है और परीक्षा करताहै औरशोच बिचार करताहै औरपरिणाम यह होताहै कि उसे केवल यहीनहीं मालूमहोताहै कि वहचीज़ नई नहींहै किन्तु यह मालूम होताहै कि पुरानी है और किसी

न किसी दशामें पहिले से मालूम थी अब उसको मालूम होता है कि पहिले जोशमें जो मैंने इनमूलों को वह कपड़े पहनादिये थे जो उनपर सजे न थे और जबवह उनको उनकीमुख्यदशामें देखताहै तो आश्चर्य करके मालम करताहै कि वह तो पुरानी चीजें थीं और मैं उनको अच्छी तरह जानता था परन्तु उनको भूलगया था इसतरह का बिचार बहुत लोगोंकी समझमेंआता है यहां तक कि जो लोग जीवाकर्षण बिद्या से भागते हैं मुझे उनपर यह आशा होतीहै कि ऐसेही बिचार उनके जीमें है और ऐसा कभी होताहै कि यह आशा मेरी झूठीहो ॥

परन्तु यहबात भूलनी न चाहिये कि यह संदेही मनुष्य समयतक उनहीं चिह्नों के सत्य होने से इन्कार करताथा और उनकेलिये हँसा करता था जिनको वह अब मानता है उसको इन्कार इस कारण से था कि जिसदृष्टि से खोज बिना उनको देखताथा उसदृष्टिमें उसे प्रकटमें यहचिह्न ऐसेमालूम होतेथे कि निश्चयके योग्यथे अब उसको वह चिह्न केवल बिश्वासयोग्यही नहीं मालूमहोते हैं बरन सच्चेमालूमहोतेहैं और उसीके वचनानुसार समयके जानेहुयेहैं पहले उसने ऐसे मनुष्योंकी साक्षी जो अच्छे और योग्यथे और इन मूलों के लिये खोजकरतेहैं प्रायः उसकेलिये अधिकयोग्यथा बिल्कुल न माना था और अविवेकपनसे उनको पाषण्ड का अपराध लगाया था अब उसको मालूमहुआ कि वह केवल उसपाषण्डके अपराधसे छुटेहुये नथे बरन जो कुछ उनका वर्णनथा बहुतठीक था परन्तु सन्देही मनुष्य यहांतक चलकर ठहरजाताहै वह इनचिह्नोंको मानताहै कि आकर्षणकी क्रियासे स्वप्न जाग्रत अवस्थाअवश्य उत्पन्नहोतीहै और धारकको दुःखका प्रभावनहीं होताहै परन्तु जिसतरह वह पहले छोटे चिह्नों को न मानताथा उसी तरह

अब उन चिह्नों को नहीं मानताहै जिनको बहुधा बड़े चिह्न आकर्षणक्रियाके कहतेहैं जैसे विचारसंयोग और परोक्षदर्शित्व को नहीं मानताहै और इन्द्रियों के संयोग स्वाद और घ्राण के संयोगको नहीं मानताहै और कारक को जो धारक की इच्छा और उसकी नानाप्रकार की शक्तिपर अधिकार होताहै उस अधिकार को नहीं मानताहै और गुप्तदर्शन के सम्पूर्ण दशाओं को नहीं मानताहै संक्षेपयहहै कि जिसमूलमें वह पहले फँसा हुआथा वही मूल अब दूसरी बेर जान बूझ कर अविवेकता से करताहै और उनबातोंको नहीं मानताहै जिनकेलिये बड़े और निपुण मनुष्योंकी साक्षीहै किन्तु वैसीही गवाही है कि जिसके कारण उसने लाचार छोटे चिह्नोंका ठीकहोना अंगीकारकिया है और जिनलोगोंने इनचिह्नोंको होतेदेखाहै उनकेलियेदम्भ का अपराध लगाता केवल इसकारण कि उसने फिर इनचिह्नों के लिये यहअनुमति बनाईहै कि इनचिह्नों का होना विश्वास योग्य नहींहै और उनकापैदा मानाजावे तो जो ईश्वरकी शक्ति की रीतें पूरीहैं यह चिह्न उनसे संयुक्त न होंगे परन्तु जो वह अपने मनको इसबातपर लगावेगा कि इनबड़े चिह्नोंके विषय मेंभी अच्छीतरह खोज करें तो उसको मालूम होगा कि जिस तरह छोटे चिह्नोंको माननापड़ा उसीतरह उनबड़े चिह्नोंको भी मानना पड़ेगा और जिसतरह खोजकेपीछे मालूम हुआथा कि छोटेचिह्न कुछ नईचीज़ नहींहैं इसीतरह वह जानेगा कि बड़ेचिह्न भी कुछ नईचीज़ नहीं हैं उस को मालूमहोगा कि यह अपनेआप भी और २ तरह भी बहुधा उत्पन्न होतेहैं और वास्तवमें यह अवश्य होतेहैं चाहे यहनहीं मालूम होसक्ता कि उनके होनेका कारणक्याहै और उनचिह्नों के देखनेवालों पर भी वैसाही निश्चय करनाचाहिये जैसा उनपर कियागया था

जिन्हों ने छोटे चिह्न को देखा था और उसको मानते थे ॥

यहबातप्रकटहै कि जितनीकोई वर्णनकीहुईबात आश्चर्य-दायक और अविश्वास योग्य मालूम होतीहो उतनाहीअधिक रक्षासे उससाक्षीको जांचना चाहिये जो उसकेलिये दीगईहो निस्सन्देह कोईबात बिना खोजके उचित मानलेनी न चाहिये और जीवाकर्षण विद्या के विषयमें भी वही रीति जारी रहनी चाहिये जिसका ध्यान अन्य विद्याओं में रहताहै परन्तु बिना खोज न मानना और बात है और बिना खोजके ऐसे मूलों को खंडनकरदेना जिनके लिये योग्यसाक्षी प्राप्तहै परन्तु प्रकटमें आश्चर्य दायक मालूमहोतेहैं और बातहै ॥

परन्तु इसअनुवाद के सिवाय मैं आपसे पूछताहूं कि जिन चिह्नोंको बड़ाकहते हैं वह वास्तवमें बड़ेहैं क्या उनचिह्नों से जिन्हेंछोटेकहतेहैं यहबड़ेचिह्नअधिकविचित्रहैं और क्या छोटे चिह्नोंके उत्पन्न होनेको बतादेना बड़े चिह्नों की उत्पत्ति के कारण बतानेसेसुगमहै मेरा तो यहउत्तरहै कि नहीं मेरेविचारमें आकर्षणस्वाप का उत्पन्नहोना और धारकको दुःखका प्रभाव नहोना ऐसीही आश्चर्यदायक बातहै जैसाविचार संयोग और परोक्षदर्शित्व की शक्तिका उत्पन्नहोनाहै और जिसतरह प्रथम के चिह्नोंके उपजने का कारण ईश्वरकी शक्तिकी किसीरीतिसे मालूम नहींहोता उसीप्रकार द्वितीय चिह्नोंके होनेका कारण नहीं मालूमहोताहै इन छोटेचिह्नों के उपजनेसे यहबात सिद्ध होतीहै कि कोईमूल मनुष्यके शरीरमें ऐसाहै कि उसकाप्रभाव दूसरे मनुष्यपर होताहै और यहमूल प्रसिद्धमूल जैसे उष्णता और अलक्टरस्टी अर्थात् विद्युताकर्षण और परिपूर्णआकर्षण से विरुद्ध है यह बात जब मानीगई तो दूरी जो चीज है उसका कछ मूल नहीं तथाच उष्णता और अलक्टरस्टी और परिपूर्ण

आकर्षण में दूरी कुछबात नहींहै जिसतरह उष्णता और अल-क्टरस्टी परिपूर्ण आकर्षण के मूलके प्रभावको दूरी में होतेहुये मानतेहैं इसीतरह जीवाकर्षण के प्रभाव को होतेहुयेभी मान-सक्तेहैं और जो उनमूलोंके प्रभावहोने का कोईकारण हमबता सक्ते हैं तो जीवाकर्षणके मूलके पैदाहोनेका कारण बतासकेंगे॥

संदेही आकर्षणस्वाप का होना मानताहै बरन यहांतक वह आप पैदाकरदेताहै और उसका धारकनींदमें योग्यतासे उसके साथ बातचीत करताहै प्रायः अकस्मात् यह प्रश्न होताहै कि धारक कितनीदेर तक सोवेगा और धारक तुरन्त उत्तर देताहै किदश या पन्द्रह या चालीस मिनटतक सोऊंगा और परीक्षा पर मालूमहोताहै कि जो समय उसनेबतायाथा ठीकथा इसके सिवाय यहबातहै कि कारक धारकको आज्ञादेताहै कि घंटेभर या आधघंटे या पावघंटे सोना और धारक वास्तवमें उतनीही देरतक सोताहै यहांतक कि एकपल का भी अन्तरनहीं होताहै निदान जिनचिह्नोंको बड़ाकहतेहैं सदा इसदशामें होतेरहतेहैं कारक अपने मुखमें एकटिकिया रखलेताहै उसदशामें कि धा-रक उसेदेख नहींसक्ताहै तुरन्त सोनेवाला मुँह ऐसाहिलाता है कि मानो कोईबस्तु चबाताहै या चखताहै वास्तवमें उसके मुख में कुछ नहींहोताहै जब उससेपूछतेहैं कि क्याखातेहोतोकहता है कि टिकियाखाताहूं यहस्वादके संयोगकीदशाहै पहले दृष्टांत में कारकका अधिकार धारक की अधिकरण शक्ति पर सूचित होताहै अर्थात् जिस समय तक कारक धारक को सोनेके लिये आज्ञा देताहै उतनीही देरतक वह सोताहै इसकेसिवाय धारक अकस्मात् कहनेलगताहै कि मैं अमुक मनुष्यको देखताहूंकिसी कमरेकाहाल वर्णन करनेलगताहै जिसको उसने प्रायः कभी पहिले नहीं देखा था और जिस मनुष्यको वह देखता है उसके

पहिनाव को बहुत ठीक बताताहै और ठीक२ बतादेताहै कि वह किसकाममेंगयाहै यह परोक्षदर्शित्व की शक्तिकी सिद्धिहै जिसे सरोज देखते हैं मैं इस जगह यहनहीं बताताहूं कि यहबात क्योंकर होतीहै परन्तु जोबातसत्यहै उसका केवलवर्णनकरताहूं इसी तरह सम्पूर्ण चिह्नों के दृष्टान्त में देसक्ताहूं और जो इन चिह्नोंकेवास्ते उसीतरहकी साक्षी है जिसतरह छोटे चिह्नों के लिये है तो निस्सन्देह जब अच्छी तरह देखाजावे तो इन बड़े चिह्नों के होनेमें भी कुछ संदेह नहीं होसक्ताहै ॥

सिवाय इसके जब हम इस बातको याद रक्खेंगे कि जीवाकर्षणकी हरक्रियाअपनेआप रोज आकर्षणक्रियाबिनाहोतीरहती है तो हमको निश्चय करना चाहिये कि कुछ समय के उपरांत संदेही मनुष्यों को जैसा कईचिह्नों के उपजने का निश्चय होगयाहै वैसाही सम्पूर्ण उन मूलोंके उत्पन्न होने का निश्चय होजावेगा जो वास्तवमें उत्पन्न होतेहैं क्योंकि वास्तव में इन पिछले चिह्नोंके उपजनेका कारण समझना पहले चिह्नों से अधिकतरकठिन नहींहै ॥

क्या यह विचार करना माननेके लायकहै क्या समझना संभवितभीहै कि जिन कारकों और धारकोंके वर्णनोंको हमने छोटेचिह्नोंकेलियेठीकपायाहै वहलोग उन दूसरेचिह्नोंकेलिये जो पहलेके चिह्नों के साथ होते हैं या उनके पीछे उपजते हैं अकस्मात् सत्य मार्गको छोड़कर असत्य मार्ग की ओर मुड़ जातेहैं मैंतो बहुतहठसे यही कहताहूं कि ऐसानहीं होसक्ताहै ॥

सचयहहै कि जिसमनुष्यने एकबेर आकर्षणस्वापकाउत्पन्न होना मानलियाहै उसको विदित होगा कि जो बचनेकी जगह उसे पहले मिलीथी अब वहभी उसके अधिकारसे जातीरही है और जोकि शयन और जागरणअपनेआपहोताहै किसी मनुष्य

को जीवाकर्षण की क्रिया के द्वारा आकर्षण स्वापके उत्पन्न होने में संदेह नहीं होसक्ता है ॥

जो सोना सच्चीबातहै तो उसके चिह्नभी ठीकहैं तथाच एक प्रभाव उसका यहहै कि धारकको बटाहुआ या दूनाज्ञान प्राप्त होजाताहै और यह प्रभाव एक मुख्यदशामें हर धारकपर जिस पर क्रिया कीजाती है प्रकट होताहै वास्तव में यह प्रभाव बड़ा आश्चर्य्य उत्पन्न करता है बड़े अचंभे की बातहै कि एक मनुष्यको सुनने और सूंघनेकी शक्तिभी प्राप्त है और घंटों तक विचार भी करतारहै और बोलताभी रहै और अपनी नियमित दशामें सोने के समयके कार्य्यों की कुछभी संज्ञा न रहै और जोकि यह बातें साक्षात् देखनेवाले अवलोकनकरतेहैं इसलिये सिवाय निश्चय करने के उनको इलाज नहीं होता जो आंखोंसे साफ दिखाई न दे तो कुछ आश्चर्य न होता कि लोग उनका निश्चय न करते अब कि बटेहुये ज्ञानका होना मानाजावे तो यहबात असंभवितहै कि कोई दम्भी क्रिया के अन्तर्गत किसी को ऐसी संथा पढ़ासके कि उसकाप्रभावशयनकी अवस्थामें स्थिर रहै और कोई यह न कहै कि छल और पाषण्ड सोनेकी दशामें सिखायाजाताहै तो उसके यह अर्थ होतेहैं कि स्वप्न एक सच्ची चीज है और बटाहुआ ज्ञान भी पैदा होजाता है हम ऊपर लिख चुकेहैं कि जब इन बातोंके सच होने का विश्वास कियाजावे तो क्या परिणाम निकलता है निदान मैं यह परिणाम निकालताहूं कि जो बड़े चिह्न अपने आप प्रकट होजाते हैं और उनके उपायसे पैदा होजाने के लिये वैसीही निश्चय योग्य साक्षी प्राप्तहै जो छोटे चिह्नोंके लियेहै तो यह बात मानने से दूरहै कि पहले चिह्नों को न मानें और दूसरे चिह्नों को मानलें और कुछ समय बीतने के उपरांत यह बातहोजायगी कि चाहेविद्वान् औरवैद्य कईमूलोंको अबमानते

हैं और कइयोंको नहीं मानतेहैं परन्तु आगे सम्पूर्ण पूरे फूलों को मानजावेंगे ॥

जीवाकर्षण विद्याकी शाखाओं के खोजने के लिये अब यह भी हानिहै कि विद्वानोंके संकोच और संसारी मनुष्योंकी अनुमतिकी प्रतिष्ठा के कारण बहुत मनुष्य अपनी मुख्य इच्छा को प्रकट नहीं करते हैं जब तक कि विद्वान् धनवान् बलवान् मनुष्य इस विद्या से विरोध रक्खेंगे बहुत मनुष्य जिन के स्वभाव में संसारका संकोच अधिकहै यातो इस विद्याकी ओर ध्यानही न करेंगे याजो ध्यान करनेके भी हैं तो लोकापवाद या हँसी होनेके डरसे अपने निश्चयको प्रकटनकरेंगे बहुतसे वैद्य भी ऐसेहैं कि वह केवल इस आकर्षणकी क्रियाके सत्य होने को ही नहीं मानते वरन जहां रोगकी चिकित्साके लिये यह क्रिया काममें आती है वहां इसको गुप्त रीतिसे काममें लाते हैं परन्तु कुछ तो संसारके संकोच से और कुछइसभयसे कि जो बड़ेवैद्यहैं वह इसबात को नापसन्द करेंगे अपने निश्चयको प्रकट नहीं करतेहैं यद्यपि मुझे खेदहै कि ऐसा संकोच मनुष्यों को होताहै क्योंकि संकोच के कारण उनका असाहस प्रकट होताहै परन्तु यहबातऐसीप्रसिद्धहै और बहुधामनुष्योंको इसतरफ ऐसाध्यान है कि मैं उन लोगोंको जिनको इस संकोचकानिबंधहै बुरा नहीं कह सक्ताहूं परन्तु इन लोगों को यह समझना चाहिये कि उनकी मति बुरीहै और अग्र शोची से परेहैं जो मनुष्य अपने विश्वासको आवश्यकतापर साफ वर्णन करदे उसकी वह लोग जो उसे जानतेहैं प्रतिष्ठाही करतेहैं इस विचारसे कि वह बात सच वर्णन करताहै चाहे यह बातहै कि प्रायः थोड़े समय के लिये कई मनुष्य उसे बुरा भला भी कहेंगे जैसा संसारके हर व्यवहारमें सच्चाई बहुत अच्छी बातहै उसी तरह इस विद्या में

भी सबसे अच्छी मति सत्यताहै यदि सम्पूर्ण वैद्य जो आकर्षण की क्रियाके मूलोंको सच्चा समझतेहैं और उनको मानतेहैं इकट्ठे होकर अपने निश्चयको प्रकट करदें तो प्रायः उनको इसबात के मालूमहोने से आश्चर्य होगा कि वहतो केवल छायाही से डरतेथे और उनकी संख्या और बल इकट्ठा होकर इतनाहै कि किसीको उनके भयकी आवश्यकता नहीं ॥

लोगइसविद्याके खोजकेलिये वैद्योंसे आशारखतेहैं क्योंकि वैद्योंको ऐसेखोजका केवल समयही नहींमिलता किन्तु उनकी शिक्षा ऐसी होती है कि यह खोज वह बहुत अच्छीतरहसे कर सक्ते हैं और जोकि यहबातकहनी अभी असम्भव है कि आकर्षण की क्रिया का काम किसतरहपर होसक्ताहै परन्तु अबभी उसका काम में लायाजाना शारीरक अर्थात् जर्राही और वैद्यक की क्रिया में प्रकट है और इस समयमें यह बहुतउपयोगी है इस विवाद को मैं फिर विस्तारसे दृढ़करूंगा परन्तु यहां इतनी बात लिखेदेताहूं कि आकर्षणकीक्रिया अपनेआप ऐसी है कि उसकाप्रभाव नाड़ियोंपर बहुतहोता है इसी कारण उसके बर्त्तानेसे उन रोगोंको जो नाड़ियोंसे सबन्धितहैं बहुधा लाभहोसक्ताहै जैसे अर्द्धाङ्गऐंठन और उन्मादरोग आदि और हिन्दुस्तान में डाक्टर असडैलसाहबने और फ्रांसदेशमें अन्य कारकोंने बहुत परीक्षाओं से यहबात अच्छीतरह सिद्धकरदी है कि आकर्षण की क्रिया से ऐसी मूर्च्छा उत्पन्न होजाती है कि सथियेकाकाम बिनादुःखके होसक्ताहै ॥

मैं इसबातको खूब जानताहूं कि विद्याकाखोज उचित रीति पर यों होताहै कि पहले किसी मूल या दैवीरीतों और परिणाम का खोजकियाजावे और फिर विद्याका बर्त्ताव कियाजावे क्योंकि उनरीतों और परिणामों के अवलोकन के कारण उस

विद्याका काममेंआना अच्छीतरह मालूमहोसक्ताहै और विदित होसक्ता है कि इसका बर्त्ताव किसतरह सुगमता और निश्चय के साथ होसक्ताहै और इसबात की भी आशा होसक्ती है कि जो कारण मालूम होजावे कि यहबर्त्ताव क्यों ठीक हुआ और फिर नये बर्त्ताव के मालूम करनेके लिये मानो एक सड़क बन जातीहै इसमें तो संदेह नहीं कि कई किन्तु बहुत मनुष्य इस क्रियाका विद्याकीरीतोंसे खोजकरेंगे परन्तु जबतक यह बात हो इसक्रिया को वैद्यक और जर्राहीके काममेंलानेमें छोड़ने की आवश्यकता नहींहै वास्तवमें आकर्षणकीक्रिया का आरोग्यता देनेवाला बड़ाप्रत्यक्ष प्रभावहै और जो कारकनिपुणहो तो इस क्रियासेउत्तमरक्षापूर्वकचिकित्साहोसक्तीहैमुख्यउनरोगोंमें जहां और उपाय ने कामनहीं कियाहै इसक्रिया का न करना बहुतही बुरीबात हैइन परीक्षाओं से केवल यहीबात मालूम होगी कि बहुत रोगियों को दुःखोंसे छुट्टी मिलेगी वरन बहुतसे मूल मालूम होकर इकट्ठे होजावेंगे कि जब इसविद्या का प्रारम्भहोने लगे तो यहमूल उससमय कामआवे ॥

निदान इन कारणोंसे बहुतलोग इसविद्या में वैद्योंसेशिक्षा की आशा रखते हैं और आजकल लोगों की प्रकृति को इस विद्याकीओर ऐसी खिंचावट और झुकाव है कि थोड़ेही समय में हरवैद्य को चाहे तो आपही इस क्रिया का अभ्यास करना पड़ैगा चाहे यहहोगा किआप देखाकरेंगे और परीक्षित कारकों से काम लिया करेंगे क्योंकि वैद्यों को बहुधा इतना अवकाश नहींहोता है कि जो क्रिया करनी अवश्य हो उसको सदा वह आपही किया करें मुझे अच्छी तरहसे निश्चय है कि जिस तरह कि दाइयां और सींगी लगाने वाले और हम्मामी और २ प्रकार के पेशेवाले हैं जो वैद्य के नीचे काम करते हैं इसी तरह

से वहलोग जिनके स्वभावको इसतरफ झुकाव होगा ऐसेवाले कारक होजावेंगे ॥

आगे के पत्रमें में और प्रकार के संदेहों का वर्णन करूंगा और वह संशय ऐसेहैं कि उनका मूलधर्म्म और शीलपर ठहराया जाता है॥

तीसरा पत्र॥

अब मैं एक मुख्य प्रकार के सन्देहों का वर्णन करता हूं जिसका अभाव कई मनुष्यों के ध्यानकरने के योग्यहै और वह सन्देहधर्म और शीलके विचारोंपर घटित होते हैं॥

पहिलीबात इस सन्देहकेलिये मैं यह कहनी चाहताहूं कि यह संशय जो कियाजाता है क्रिया वे चिह्नों के ठीक होने के लिये नहीं कियाजाता है किन्तु उन परिणामोंके लिये होता है जो उनसंशयोंके मानने से सन्देही मनुष्यकी समझ में निकलते हैं किन्तु कईमनुष्य यहांतक कहते हैं कि जो कि यह परिणाम अवश्य उपजते हैं चिह्नही सच नहीं होसक्ते परन्तु जहां तक मुझे परीक्षा हुई है मैंने यह बात बहुत देखी है कि सन्देही को अनुमान के परिणामों के माननेकी फिकरहै और उनपरिणामों के माननेको उसकाजी नहीं चाहताहै परन्तु उत्पन्न होनेसे वास्तव में इन्कार नहीं इस सन्देहका उत्तर पहिले तो यहहै कि किसी बस्तु के होनेको इस कारण न मानना कि उसके होनेसे ऐसेपरिणाम निकलतेहैं जिनसे हमको रुचिनहीं बुद्धिके विपरीतहै यदि यहबात सूचित होसके कि कई परिणाम कई बातों के मानने से अवश्य उत्पन्न होते हैं और मन्तक अर्थात् न्याय से यहबात सिद्धहोसके कि वह परिणाम प्रसिद्ध छोटेहैं तो हम यह कहसक्ते हैं कि उन बातों का मानना भूल था यदि किसी

वर्णन कि हुये आकर्षण के मूलसे न्याय संयुक्त प्रमाणों से यह आवश्यक प्रमाण निकले कि दो और दो पांच होते हैं तो इस वर्णन की हुई बातको स्वीकार न करना चाहिये परन्तु आपको प्रकट होगा कि किसी आकर्षण के मूलसे ऐसा परिणाम नहीं निकल सक्ताहै कदाचित् किसी आकर्षण के मूल के मानने से यह यह प्रमाण निकले कि भलाई और बुरा एकसी चीजें हैं अर्थात् न भलाईभलाई और न बुराई बुराईहै या यह सार निकले कि उसकेकारण यह होसक्ता है कि मनुष्य दण्डके भयविना कोई अपराध करे तो हमको लाचार होकर उस मूलको इस कारण खण्डन करदेना चाहिये किकोई कोई भूल उसबातके मानने में ऐसीथी जिसको हम नहीं जानते परन्तु उस मूलके खण्डन करनेसे पहले यह बात अति आवश्यक है कि यह बात सूचित होजावे कि ऐसा परिणाम अवश्य उपजताहै मेरी मति में यह बात सिद्ध नहीं होसक्तीहै॥

और वह परिणाम जो संदेही जनके अनुमान में इसक्रिया के चिह्नोंसे उत्पन्न होतेहैं वास्तवमें झूठे न हों व शीलसे प्रतिकूल न हों वरन केवल ऐसेहों कि हमको आपहीसे पसन्द नहींहैं तो ऐसी दशा में हम को यह उचित नहीं है कि उन परिणामों के उत्पन्न हो के कारण आप उक्त मूलोंको खण्डन करदें चाहे यह भी सिद्धहो कि वह परिणाम अवश्य उपजतेहैं॥

निदान जो भूल मालूम न होसके तो मूलों को अंगीकार करना चाहिये और जिस तरह होसके उनको अच्छी तरहपर काममें लाना चाहिये और मुख्य बात यह है कि जो लोग यह संदेह करते हैं उनकी वार्त्तामें आपही जितनी भूलें होसक्ती हैं इकट्ठी हैं जो परिणाम उनके अनुमानमें निकलने वाले हैं उक्त मूलों आवश्‍क [illegible]

संदेही जनों को सम्पूर्ण प्रकारकेकारणों परसंशय नहींहै केवल इसलिये कि जो मुख्य विचार उनके हैं उन विचारों से वह परिणाम चलगहैं॥

लोग संशयकरतेहैं किजो आकर्षणकी क्रियाकेमूल सत्यहों तो इससे यह परिणाम निकलेगा कि एकमनुष्यका प्रभावदूसरे मनुष्य या अन्य मनुष्यों पर इस प्रकार का होताहै जो ईश्वर को कृपा करना अंगीकार न था पहिला उत्तर तो उसका यह है कि जो इसक्रिया के मूलठीक होंतो ईश्वर ने आवश्यक प्रभाव मनुष्य को दियेहैं और दूसरा उत्तर यहहै कि जो ईश्वर ने यह प्रभाव मनुष्य को वास्तवमें कृपा कियाहै तो प्रत्यक्ष परिणाम यह निकलता है कि जिस तरह ईश्वर ने और शक्तियां मनुष्य के उपयोग निमित्त कृपाकी हैं उसी प्रकार यह प्रभाव भी भला के लिये कृपा कियाहै तथाच इसक्रिया का यह लाभ प्रकट है कि जो मनुष्य को कोई शरीर का दुःख होता है तो इसक्रिया के द्वारा दूर होजाता है तीसरा उत्तर यहहै कि ईश्वर के कार्य और ईश्वरके बचनके सिवाय औरकोई द्वारा इसबातके मालूम करने का नहीं है कि ईश्वर कीइच्छा क्याहै सो जो वास्तवमें आकर्षण की क्रिया ठीकहो तो तो परमेश्वर का कार्य इसक्रिया के अनुकूल हैऔर उसपरमात्माकेवाक्यमें निश्चय करके इस बिषय के लिये कहीं साफ तौर से सैन नहींहै चौथा उत्तर यहहै कि जिस तरह संसार में बहुत से उत्तम मूल और शक्तियां फैली हुईहैं और वह जगह २ प्रकाशमान हैं इसी तरह यह भी उसी प्रकार का मूलहै कदाचित् यहशक्ति कईदशाओं में हानिदायक भी हो तो ऐसीहीदशा और शक्तियोंमेंभी है तथाच अलक्टरस्टी से मृत्यु कारक विजली उत्पन्नहोतीहै और आगजलादेती है यह दोनों मूल अर्थात् अलक्टरस्टी और आग इन दशाओं में हानि

कारक मालूमहोतेहैं परन्तु किसीको उनके उत्पन्न करनेवालेकी बुद्धिमानी और श्रेष्ठतामें संदेहनहींहै निदान हमको उचित है कि यहीरीति आकर्षणकी क्रियापर भी लगावें और याद रक्खें कि केवल मनुष्योंका वर्णनही ऐसा है कि इस क्रिया से हानि होतीहै पर हानिका होना सिद्धनहीं ॥

दूसरा संदेह यह कियाजाताहै कि केवल यहीबात नहीं है कि परमेश्वरको मनुष्यके लिये ऐसी शक्तिका कृपा करना स्वीकारथा बरनबहुत बुरेकामों के वास्ते यह क्रियाकी जासक्ती है इसकाउत्तर यहहै कि संसारमें हमकिसी शक्तिको नहींजानते हैं जो मनुष्य के बुरे स्वभाव के कारण बुरीतरह पर काममें न आसके हमको यह शक्ति है कि गुणकारक औषधियोंको विष बनावें सब जानतेहैं कि बहुतसेमनुष्य ऐसे हुयेहैं जिन्होंने यथा शक्ति बुराई करना नहीं छोड़ा बारूदका अच्छा बर्त्ताव यह है कि पहाड़ों को उससे उड़ातेहैं उसका प्रत्यक्ष बर्त्तावयहहै कि मनुष्यके प्राणको उसके द्वारा नष्ट करतेहैं हम यह नहीं कहते हैं किआकर्षणकी क्रिया बुरे तोरपर काममें नहीं आसक्ती परंतु ध्यान तो कीजिये कि यह प्रमाण क्रिया के सत्य होने में हानि नहीं पहुंचाता परन्तु उसके बुरीतरहपर काममेंलानेका जोभय है उस भय के होनेसे क्रियाका सत्य होना पाया जाताहै सिवाय इसके जिन चीजोंके बुरी तरहपर काममें लाने का भय है उनकी ओरसे निश्चिन्त होने और उनकी हानियों से बचने के लिये सबसे उत्तम मार्ग यही है कि जहां तक होसके उनके बर्त्तावसे जानकारीपैदाहो जोएकहीमनुष्य संसारमें क्लोरो[१]फोर्म का काममें लाना जानताहो तो यहबात सुगमहुई कि वह औरों

१ क्लोरोफोर्म वहचीज है जो हस्पतालों में रोगियों को सुंघाकर और बेहोश करके जर्राही का काम उनपर करते हैं ॥

को इस तरहपर मूर्च्छित करदेता कि लोग उसपर संदेह भी न करते और वहमूर्च्छित करके जबचाहता लोगोंका मालछीन लेता था और किसी प्रकारकी बाधा उनको पहुंचाता और जो हर मनुष्य क्लोरोफोर्मके गुणको जानता तो यह बात न होसक्ती हर दशामें पिस्तौलसे मारदेनेसे कठिनतर होता चाहेपिस्तौल से मारनाभी छिप नहीं सक्ता क्योंकि हर मनुष्य बारूदकेबुरे बर्त्तावको अच्छी तरह जानताहै ॥

प्रकटहै कि जो मनुष्य क्लोरोफोर्मकेद्वारा बेहोशकरके किसी का माल लेना चाहे उसको अपने शिकारके पास होना चाहिये और जो मनुष्य पिस्तौलसे मारताहै वहदूरसे छिपकरमारसक्ता है निदान किसी बस्तुके बुरे बर्त्तावके योग्य होनेसे यह प्रमाण नहीं निकलसक्ता कि वह वास्तवमें बर्त्तमाननहींहै या उसको काममें नहीं लाना चाहिये और उसके बुरी बर्त्ताव की हानि के बचनेके लिये उसे छोंड़ना चाहिये इस जगहपर मैं इतनी बात और कहनीचाहताहूं कि जो मैं इस बातसे इन्कारनहीं करता कि आकर्षणकी क्रियाको बुरे तौरपर काममें लाई जासक्ती है परन्तु जानना चाहिये कि यह बात ऐसी सुगम नहीं है जैसा लोगविचारकरतेहैं यहबात तो सचहै कि जो काम बुरे नहीं हैं और जो अपने आप अच्छे हैं उनमें धारक कारक की आज्ञा किसी बहाने बिना मानलेता है परन्तु यह आज्ञा का पालन अनियमित नहीं है क्योंकि यह बात दृढ़ कीहुई है और अच्छी तरह देखीहुईहै कि सर्व्वप्रकार से धारककी बुद्धि विचार उस आकर्षणस्वाप के समय उत्तम और दृढ़ होजाते हैं और सर्व्व प्रकार से हर वस्तु के लिये जो झूठी या बुरी या कमीनी हो धारक की ओरसे ग्लानि प्रकटहोतीहै बहुधा ऐसाहोताहै कि हमारे अर्थात् कारक का यत्न इसविषय में निष्फलहोताहै कि

धारक कोईभेद की बात जो उसको स्वप्नकी दशामें मालूम हुई हो प्रकटकरदे या जो निश्चय उसपर किसीने किया हो उसको तोड़दे और सर्वप्रकार से साधारण जाग्रत अवस्था में वह उस बातको भूलभी जाताहै यदि कोईमनुष्य इस विषय में यत्न करे कि धारक से कोई बुरा काम कराया जाय तो जल्दी मालूम होजावेगा कि उसको इस बात का होश है कि क्या २ बातें शील की रीतिसे उचित हैं और बहुधा उसको यह चेतना साधारण जाग्रत अवस्था से आकर्षणस्वाप की दशा में अधिक रहता है जब किसी पर क्रिया कीजातीहै तो बहुधा बरनप्रायः सम्पूर्ण दशाओं में ऐसा होता है कि धारक के मुखपर अधिक शृंगार पाया जाता है और उसके विचार अधिक श्रेष्ठ प्रकट होतेहैं शयन जागरण की दशा मुख्य निद्रा की अवस्था नहीं है वरन एक ऐसी दशा है कि उसमें प्रकट की अवलोकन शक्तिबंद होजाती है और मनमें केवल जाग्रत अवस्थाही नहीं रहती बरन बुद्धिमानी समझ और शील में अधिक ज्ञानी रहता है यहांतक कि देखनेवालेको आश्चर्य होताहै धारक की वाचालता उसकी स्वाभाविक बातचीतसे बहुतठीक और उत्तम होती है और कारक की उतनीही आधीनता होती है कि जहां तक शील और उचित कार्य्यों में हानि न हो इसी वास्ते कहताहूं कि कभी२ इसरीतिसे हानि नहींहोती निदान इसबात का भय है कि आकर्षणकी क्रियाका वर्त्ताव बुराहोसकेगा उनलोगों की समझ में जो क्रियाके चिह्नों से और इसबात से कि आकर्षण स्वापमें धारककी प्रकृति देवतोंकीसी होतीहै अच्छीतरह नहीं जानतेहैं उचितसे बहुत अधिकहै और जिनका स्वभाव अतिश्रेष्ठ है उनमें अधिक प्रकटहोता है परन्तु न्यून अधिक हरधारक के स्वभावका शोधनहोजाताहै और यह तो मैं पहलेही कहचुका हूं

कि इसक्रियाके बुरेफलके बुरेहोना भय कुछइसविद्यामें हानि-
दायक नहीं ॥

तीसरासंदेह--मैंने बहुत मनुष्योंको यहकहतेसुना है कि जो
परोक्षदर्शित्व के मूलोंके सत्यमाना जावे तो इससे सिद्ध होगा
कि परोक्षदर्शकको सम्पूर्ण प्रकारका ज्ञानप्राप्तहै जोकि यहबात
नहींहोसक्ती इसलिये परोक्षदर्शित्वकी शक्तिही वास्तवमें सत्य
नहीं होसक्ती है ॥

इसका उत्तर पहले तो यहहै कि चाहै हमदेखतेहैं कि धारक
को दूरकाहाल दिखाई देता है और सैकड़ों धारकोंमें यहबात
देखतेहैं तो परोक्षदर्शित्वकी शक्तिके होनेमें संदेहनहीं होसक्ताहै
लाचार जो वार्त्ता संदेही करते हैं उसके ठीक होने में हमको
संदेहकरना पड़ता है अब आपकहिये कि दूरसे किसी वस्तु के
दिखाई देनेसे क्या अवश्यकरके यहबात निकलतीहै कि जिस
को यह शक्तिप्राप्तहै वह सर्वज्ञहोताहै मैं तो यह उत्तरदेताहूं कि
नहीं तथाच लार्ड[१] रूससाहबकी दूरबीन के काम में लानेसे
सम्पूर्ण विद्या पैदानहींहोती है परोक्षदर्शक अपने प्रकटकी अव-
लोकनशक्ति अर्थात् नेत्रोंसे नहीं देखता है वरन हृदयके ज्ञान
के द्वारा नियमित प्रकाशके वसीले बिना देखताहै अर्थात् प्रकट
का प्रकाश आंखोंके बन्दहोनेके कारण भीतर प्रवेशनहीं करता
या इसीतरह किसीदीवार या दूसरी अंधेरी चीज़के बीचमें होने
से काममें नहींआती यहबात सुगमता से समझ में आसक्ती है
कि रूपया रंग नेत्रमें प्रकट के प्रकाश बिना पैदा होजावे जैसे
हमजानते हैं कि यहबल इसतरहभी पैदाहोजाता है कि आंखों

१लार्ड रूस साहबने इंगलिस्तानमें एक ऐसी दूरबीनबनाईहै किआजतक संसार
भरमें ऐसी शक्ति किसी दूरबीनमें न थी और चन्द्रमाकाहाल उससे स्पष्टविदित होता
है और आकाशकी वस्तुभी अन्य दूरबीनों से बहुत साफहोकर दिखाई देते हैं ॥

के ढेलोंको अँधेरेमें दबायाजावे या आंखकीरगें दबाईजावें तथाच वायुके रूपोंके दिखाईदेनेका भी बहुधा यहीकारणहोताहै परोक्षदर्शी वास्तव में मुख्य वस्तुओं को देखता है और किसी ऐसे अनुमान से देखता है कि इसबात की आवश्यकता बिना कि आंखके ढेलेके भीतर या आंखकी रगमें प्रकाश कोपतक उजियाला पहुंचावे मुख्य प्रकाश स्थलतक प्रकाश का प्रभाव उपजाता है आगे लिखाजावेगा कि इन ज्योतिके वसीलोंके लिये क्या२बातें हमको मालूम होसक्तीहैं परन्तु उनवसीलोंको मूल कुछहीहो उनकेद्वारा हमको सर्वज्ञान नहीं होसक्ता॥

और जोकि बहुतचीज़ोंको ध्यानसे देखनेमें जो हमारी खुली हुई आंखोंके सामने आती है भूल होजाती है तो अवश्य है कि ऐसी भूलहोनेका उसदशामें अधिकसंदेहहै कि जब और ज्योति के वसीले काममें लायेजावें जो कदाचित् सबचीजोंके देख लेने की शक्तिभीहोजावे तोभी उसशक्तिसे बुद्धिभ्रमबिना नहीं रहती परन्तु याद रखना चाहिये कि परोक्षदर्शी को ऐसी शक्ति सब चीज़ों के देखने की नहीं होती वास्तव में परोक्षदर्शित्व शक्ति प्रत्यक्ष निबन्धित और अन्योन्य प्रकारपर होती है किसी आकर्षणकी क्रिया के कारकके स्वप्नमें भी यह बात नहीं आई है कि उसके परोक्षदर्शी धारकोंको सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है ऐसा परिणाम निकलताहुआ उसीमनुष्य के विचारमें होता है जिसने कभी उक्तक्रिया के चिह्न उत्पन्न होतेहुये नहीं देखे हैं वास्तव में यह बात है कि परोक्षदर्शक बहुत मोटी भूलें करते हैं और बड़ी कठिनता उनके सामने आती है जैसे परोक्ष दर्शकों को अपनी आंखकी ज्योति की शक्तिपर बीतेहुये वृत्तांतों के प्रभाव और उनप्रभावों में जो मुख्य परोक्षदर्शित्व की दशामें वर्त्तमान अवस्था से उपजते हैं बिवेक नहीं होता इसका कारण यहहै

कि दोनों दशाओं में जो चिह्न पैदाहोते हैं मनकी ज्योतिपर होतेहैं और दोनोंबराबरही प्रभाव करतेहैं इसीतरह जो चिह्न शिक्षा और विचार के मालूम करने के द्वाराहोतेहैं उनमें और उन चिह्नोंमें जोमूलकी दूरीचीजें हैं विवेक नहींहोता और उन सबमें बिवेक करना हमारा कामहै और यहबात भूलना नहीं चाहिये कि जबप्रकट की चीजें विद्यमान नहीं हैं तोहम परोक्ष- दर्शक के बर्णन को झूठ न समझलें क्योंकि जो हम अच्छी तरह परीक्षा करें तो मालूम होगा कि परोक्षदर्शक का बर्णन ठीक था और हमाराविचार भूल पर था और हमारे झूठ समझ लेने का यह कारण होता है कि जो बिचार हमारे समझ में पहिले से जमे हुयेहैं वह बहका देतेहैं परन्तु यहबात ठीकहै कि आकर्षण के कारक को परोक्षदर्शक के सर्वज्ञान प्राप्त होने का बिचार भी नहीं आताहै ॥

चौथा संदेह यहहै कि जो लोग आकर्षणकी क्रिया के मूलों कोमानतेहैं वह कहतेहैं कि यहक्रिया जादूहै और धर्मकी पुस्त- कों मना है इसका उत्तर पहिले तोयहहै कियह संशयपहिले वैद्यक ज्योतिष और रसायन विद्याओं के लिये होता रहाहै अर्थात् जो लोग मूर्ख थे वह अपने से अधिक बुद्धिमानों को जादूगर कहा करते थे दूसरे यह कि जो जादू के यह अर्थहैं कि रीति के बिपरीत चिह्न उत्पन्न होते हैं जो आकर्षणकी क्रिया जोईश्वर की रचनाके अनुसार है इस अपराध से बचा है कई मनुष्यों का आवश्यक बचन है कि आकर्षण की क्रिया के चिह्न दैवीरीति के बाहर हैं और भूत प्रेतों की रचना से उत्पन्न होते हैं परन्तु जबतक मैं यह चिह्न उसमनुष्य के बिना पैदा न कर सकूं और जबतक चिह्नों को उस मनुष्य की सहायता और संयोग बिना पैदा करसकूं मुझे यहबात उचितहै कि इन चिह्नों

को कोई दैवी रीतिकी रचनाके अनुसार समझूं जो मैं बुद्धिमानी से आपसे कहूं कि मुझे शैतान बिलअलज़बूब से कोई सम्बन्ध और उनके साथकुछ संयोग नहींहै तो आप समझेंगे कि आपको बनाताहूं परन्तु ऐसे २ विचार खेद है कि मनुष्यों ‥ इतने फैले हुयेहैं किजो मेरे विचार को अवकाश दिया जावे तो मेरीसमझ में यहबात है कि जिन मनुष्यों को धर्म्म की पुस्तकों में बुरा लिखाहुआ है जब वह मनुष्यथे जो ईश्वर रचित विद्या को बुरे प्रयोजन के लिये काम में लातेथे जो धोखा देनेवाले और पा खंडीथ जो लोगों को शकुन कहने का बहाना करके छलते थे और परमेश्वर कृपाकरे आप ईश्वरहु नेका दावा करतेथे किसी दशा में मैं यहबात नहीं मानसक्ताहूं कि जो लोग परमेश्वरकी बनावट के लिये खोजकरते हैं और जो कुछ विचित्रता देखते हैं उनको परमेश्वर की शक्ति और श्रेष्ठता की ओर झुकाते हैं और सिवायइसके अपनी विद्या को अच्छीनियतसे अच्छे मतल‾ के लिये काममें लातेहैं उनके लिये यहवचन ठीक होसक्ता है कि निषेध की हुई कलाओंको काममें लातेहैं जब मैं कई आकर्षण की क्रिया के चिह्नों का वृत्तांत बिस्तारसे लिखूंगा तो आपको प्रकट होगा कि इस आकर्षण क्रिया के द्वारा बहुतसी ऐसी बातेंछनजाती हैं जिनको पहले समयमें समझते थे कि शैतान के सबब से होती हैं जैसे भूत प्रेत आदिक॥

एक संशय बहुधा बहुत शुद्ध और प्रतिष्ठा योग्य मनुष्य आकर्षण क्रियाकी सत्यता और उसके काममें लाने के विषयमें यह किया कर` हैं कि उक्तक्रिया के कारण नास्तिकपन पैदा होजाता है मेरी समझमें तो यहबात कभी नहीं आती कि इस क्रिया के द्वारा नास्तिकपन उपजे इस क्रियामें यह शक्ति है कि उसके द्वारा हमको मालूम है कि मनुष्यका मूल हम बहुतही

थोड़ा जानते हैं और इसीक्रिया के द्वारा ईश्वर के उत्तम विचित्रता उपजाने वाले कार्य्य प्रसिद्ध होते हैं सो मालूम होता है कि जो संदेही नास्तिकपन का शब्द कानमें लाते हैं उसकेअर्थ साफ़ २ नहीं समझते हैं प्रायः उनका यह प्रयोजन मालूम होताहै कि इस क्रिया और विद्या से प्राणों का नाश मानना पड़ता है सो इस नास्तिकपनके संदेहके साथ दहरियापन (जो समय को परमेश्वर माने) का संदेह संयुक्त कियाजाता है परन्तु समझना चाहिये कि इस सन्देहका करना कि इस क्रियाके करने से प्राणके नाशको मानना पड़ताहै एक सिद्धप्रमाण इसबातकाहै कि सन्देही क्रियाके चिह्नों को नहीं जानते इसलिये कि उन चिह्नोंसे यह परिणाम नहीं निकलसक्ताहै किन्तु उसके विरुद्ध परिणाम निकलताहै मैंने बार २ धर्मिष्ठ मनुष्यों को इन चिह्नों को देखकर यहकहते सुनाहै कि परोक्ष दर्शित्व के प्रभाव में हमदेखते हैं कि शरीर से बोलताजीव अलग काम करताहै और शरीर के कार्य से जीवका काम बिल्कुल अलग होजाताहै और यहबात क्याअच्छी सिद्धकरनेवाली इसविषय कीहै कि मूल और जीवमें अथाह अन्तरहै निदान जो मनुष्य परोक्ष दर्शित्व का प्रभाव उत्पन्न होतेहुये देखते हैं उनका बहुधा यह बचन होताहै और कभी उनके विचार में भी यह बात नहीं आती कि इस क्रियासे एक प्रमाणजीवन नष्टहोने का प्राप्त होताहै यह विचार केवल उनमनुष्यों के मनोंमें उत्पन्न होताहै जो इस क्रियाके मूलोंको नहींजानते और जिनको इनमूलों के लिये अशुद्ध विचार हैं निदान इस बिचार से उनको भय होजाताहै और दृढ़तापूर्वक इसविषय में दृष्टिनहीं करसक्ते हैं कि जो यह बात उनको प्राप्तहोती तो वह जल्दी मालूम करलेते कि जो बातें उनकी समझ में इन मूलों के लिये जमीहैं वह बिल्कुल

झूठ हैं आप ध्यानकीजिये कि बुद्धिका प्रकटकी इन्द्रियों के सिवाय पैदाहोना प्राणके न नष्ट होनेके लिये क्योंकर सन्देह पैदाकरसक्ताहै परन्तु वास्तव यहहै कि इसबात से सिद्ध होताहै कि बोलते जीवको बुद्धि और मालूम करने की शक्तिके पैदाकरने में प्रकट के मूलपर इतना सहारा नहीं है जैसा हमारे विचार में पहिलेथा और यहबात निस्सन्देह इसबातकी प्रमाण नहीं होसक्ती है कि जीव अमर नहीं है सिवाय इसके दहरियेपन का शब्द जो संदेही काममें लाताहै यहशब्द ऐसा निरर्थहै कि कभी कोई मनुष्य अच्छीतरह नहीं समझा सकाहै कि इसके अर्थ वास्तव में क्याहैं और यह बातकुछ आश्चर्यकी नहीं है क्योंकि जो बड़े भारी विद्वान् से पूछा जावे किमूल का वर्णन क्याहै तो वह नहींबतासकेगा आप समझें तोकि सिवाय मूलके गुणके और कुछ हम मूलके लिये क्याजानतेहैं जैसेहम कहतेहैं किमूल वह वस्तुहै जो जगह को रोकतीहै और किसी बस्तुके प्रवेशकोरोकतीहै और उसमें बोझहोताहै औरमिलावट की खिंचावट और रसायनीखिचावटहोतीहै और इसीतरहकई स्वभाव ऐसेही और उसमें होतेहैं तोयह मालूमकरें किकोईबस्तु ऐसीहै जो इन स्वभावों से अलगहो यह शोचिये कि कोई ऐसे जौहर अर्थात् सारका वर्णन कीजिये कि क्या २ मूल किनकों का समूहहै किजिनके स्वभाव नियत होतेहैं और जोकिनके बहुतही छोटेहैं या मूलके बल अंकोंके बिंदुओंका जोमानो रेखाहै जिनमें से कईशक्तियां खिँचावट और ग्लानिके मुख्यदूरियोंतक फैलतीहैं क्या सोखने शक्ति खिँचावटका बलनहींहै क्यासंयोग और जुड़नेका बल आकर्षणशक्ति नहींहै क्या यहनहीं होसक्ता कि गर्मी और रोशनी केवल आकर्षण शक्ति और अलक्टरस्टी की खिँचावट औरकी शक्तिसे नहीं बना हुआ है क्या यह नहीं

होसक्ता कि उष्णता और प्रकाश केवल आकर्षण शक्तिसे बनी हुई हों सो बाकी क्या रहता है जो इन शक्तियों के विद्यमान होने से हमारे स्वभावपर ऐसाही प्रभाव उत्पन्न हुआहो जैसा मूल के कारण उत्पन्न होताहै तो क्या यह बात बिचारमें नहीं आसक्ती कि मूल किन्तु मूलकास्वभाव कि केवल इनकोही हम जानते हैं इसशक्तियों के इकट्ठाहोनेका परिणामहो यदि ऐसे२ प्रश्न आपकरें तो उनका उत्तर सुगमता पूर्वकनहीं मिलसक्ता है इतनीबात अवश्यहै कि मूल अपनेस्वभावसे अलग हमारी समझमें नहींआसक्ताहै और केवल इतनीही बात हमको मूल के लिये मालूमहै सो इससमय में विद्या का झुकाव इस ओर नहींहै कि मनुष्य में अनष्ट शरीर के होने से इन्कारहो किन्तु इसओरहै कि अपने आप मूलको एकशक्ति या बहुतसीशक्तियों का समूह समझते हैं निश्चय करके इसबातसे अनष्टके विचार को हानिनहीं पहुंचतीहै बरन यहबात उसविचार की सहायक है सिवाय इसके आप ध्यानकरें कि जब मूली शब्दका बिवर्ण नहींकरसक्ते हैं तो अमूल के वस्तु का वर्णन क्योंकर करसक्तेहैं जबतक हम यह न जानें कि मूल क्यावस्तुहै हम यह क्योंकर जानसक्तेहैं कि मूलनहीं क्या है बरन यह कहना चाहिये कि किसवस्तुको मूल नहींकहतेहैं सो जो कि मूल और अमूल विस्तु का वर्णन नहींहोसक्ता है इसलिये इसका बिवादही न करना चाहिये सिवाय इसके संकल्प कीजिये कि हम इस वचन को धारणाकरलें कि मूल का वर्णन यहहै कि वह जगह रोकता है और फिर यहचाहें कि इसीवर्णनके अनुसार अमूल का वर्णन करें तो यहबात सुगमनहींहै जरा आपतो ऐसीचीज़ का विचार करें जो जगह को न रोके कुछ विचारमें आताहै मैं तो मानता हूं कि मेरी समझ में ऐसी कोईचीज़ ऐसी नहींआती है॥

इन सब विचारों के विशेष इस संसार में हम मूल के लिये केवल यहबात जानतेहैं कि वह नाश नहीं होसक्ताहै सो इसके अर्थ यहहैं कि मूल अमर है एकमूल के कणको भी हम नाश नहींकरसक्ते हैं केवल इतनाही हमको अधिकार है कि उसकी सूरत और जगह बदलसक्ते हैं जैसे अग्निकुण्ड में जो कोयले जातेहैं वह मूलकेरूप से नष्ट नहींहोजाते हैं किन्तु कोयले के रूपका नाशहोजाताहै मूलरूप उनका यह शेषरहता है कि राख और धुवाँ और हवा बाकीरहतीहै जो हमयह अनुमानकरें कि जीव किसीप्रकार के मूलसे बनाहुआहै और जगह रोकता है तो इसअनुमान से उसके अमरहोने में कुछ हानि उत्पन्न नहीं होती बरन ऐसे अनुमानसे उसका प्राचीन होना विदितहोता है क्योंकि जहांतक हमको ज्ञान प्राप्त है हम केवल मूलही के लिये यहबात कहसक्तेहैं कि वह नष्टहोनेके योग्यनहींहै अर्थात् प्राचीनहै और यह तो मैं पहिलेही कहचुकाहूं कि मेरी समझ में कोई ऐसीचीज़ नहींआसक्तीहै कि जो जगह न रोके अब आप ध्यानकीजिये कि प्राण के प्रभाव आपको क्यामालूमहैं हमारी समझ में अच्छीतरह कोई ऐसी चीज़नहीं आसक्तीहै जो बेमूल हो और अन्तको यहबात है कि इसजीवनमें हमको प्राणऔर बोलते जीवका ज्ञान इसीतरह पर है कि हम उसको प्रकट के मूलकेसाथ संयुक्त देखतेहैं इसजीवनमें हमारी समझमें भी यह बात नहीं आसक्ती है कि विचार ब्रह्माण्ड बिना पैदाहोसके ॥

परन्तु वास्तव में दहरयापनका बधन जिसकेलिये सन्देह कियाजाताहै यहहै कि विचारकेलिये सिवा इसके नहींजानतेहैं कि ब्रह्माण्ड के विचार का यह काम है और इसलिये हमको किसी और वस्तु जैसी प्राण और बोलते जीव का मानलेना उचितनहींहै क्योंकि विचार के उत्पन्नहोने का कारण बताने के

लिये ऐसीवस्तु मानलेना उचितनहींहै यहवचन कई उनमनुष्यों
काहै जिन्होंने जोवाकर्षणविद्याको देखाहै परंतु यहवचनउनका
इसविद्याके देखनेसे नहीं होता किसीतरह पर लोगोंने यहअनु-
मानकरलियाहै कि इसवाक्यसे प्राणके प्राचीन होनेसे इन्कार
निकलताहै—परन्तु मैं इस वचनको वहांतक नहीं मानताहूं कि
एकविचार करनेवाले अंगको शरीरसे अलग न मानूं यहबात तो
सचहै कि हमऐसे अंगकाहोना सिद्ध नहींकरसक्तेहैं परन्तु यह
भी तो हम सिद्धनहींकरसक्तेहैं कि ऐसाअंग वास्तव में नहींहै
सम्भवहै कि ऐसी कोईवस्तु वास्तवमेंहो और वह भेजेको हथि-
यार की तरह विचार और मालूमकरने के लिये काममें लाता
हो और हमारा निजज्ञानकहताहै कि यह अनुमानसत्य है इसके
विरुद्ध यह भी होसक्ताहै कि ऐसीवस्तु कोईनहो चाहे यहबात
सिद्धनहीं होसक्तीहै परन्तु इनदोनोंमें से कोई अनुमान किया
जावे जीवन का रहना और विचार और हिस अर्थात् मनुष्य
का सनातन से होना दोनों अनुमानपर रक्षितहै मेरी समझमें
तो यह बात आतीहै कि ईश्वर ने मनुष्यको यहबुद्धि कृपानहीं
कीहै कि अपनीबुद्धि से इसबार्त्ता को कि कोईअंग चिन्ताकरने
वाला शरीर से है या नहींहै पूराकरे इस संसार के जीवन में
यहबात कभी पूरी नहीं होसक्ती है परन्तु मैं मानताहूं कि एक
अलग प्राण या बोलतेजीव के विद्यमान होनेके अनुमानको
हम सिद्ध नहीं करसक्ते हैं यहबात भी अच्छीतरह प्रकट है कि
हमको एक निजकाज्ञान ऐसाप्राप्तहै जिससे ऐसेअंग के विद्य-
मान होनेकी हमको ख़बर होती है और इस ज्ञान की गवाही
बिल्कुल खण्डन नहींहोसक्ती है हम यह समझतेहैं कि भेजेको
इसवस्तु का हथियार ईश्वर ने नियत किया और इसलिये इस
हथियार के नियतकरने में कोई चूकनहीं है परन्तु मुझे ऐसा

अनुमान लाचार धारणाकरना पड़ताहै मेरी समझ में यहबात नहींआतीहै कि इस अनुमानके विरु अनुमान धारणाकरना प्राणोंके प्राचीन होने कुछ भी सम्बन्ध रखता है और प्राणों का पुरानाहोना दोनों अनुमान पर बराबर है समझ में आता है और खोज की हुई यह बात है कि जो इसविषय में कुछ भी सम्बन्धहै तो यह है कि जिनलोगों का यह वचन है कि प्राण एक अलगचीज़है उनकेवचनको दृढ़करताहै यहबात तो मनुष्य के ज्ञानसे बाहरहै कि प्राण मूलसेहैं या अमूल परन्तु हरदशा में यह सिद्धहोताहै कि प्राचीनहैं और नष्ट नहीं होसक्ते॥

अब मैं उससन्देह का वर्णन करताहूं जो हरओर उसदशा में हमारे साम्हने कियाजाताहै कि जबहम मनुष्यके शरीरपर आकर्षणकी क्रियाको उपजाकर दिखातेहैं जैसे जब हम जोड़में ऐंठन याहृदयके हिलनेमें जल्दी पैदा करदेतेहैं या दुःख या और किसीबाहरके प्रभावका मालूमकरनाखोदेतेहैं यायहबातउपजा देतेहैं कि आंखकी पुतलीको प्रभाव न हो या पुतली न हिले या धारकोंकी जिह्वामें हकलापन पैदाहोजावे या धारककी इच्छा के विपरीत उसकेपट्ठे सिकुड़जावें या इसीतरह और इसीप्रकार के चिह्न प्रकटकरें तथा च यह सम्पूर्ण चिह्न मैंने उपजते हुये देखेहैं और उनमें से बहुतसे मैंने पैदाकियेहैं और यह सम्पूर्ण चिह्न ऐसे हैं कि जो कि ी धारक का स्वभाव अच्छे स्वभाव स्वीकार करनेवालाहो तो सुगमतासे उसपर होसक्ते हैं बहुधा मनुष्य जो इनचिह्नों को पैदा होतेहुये देखते हैं और उनको मानतेहैं यहबात कहते हैं कि यह चिह्न कुविचार के कारण उत्पन्नहोतेहैं इसविचारके मुख्य अर्थ का जैसा वह वर्णनकरते हैं मालूमकरना सुगमनहीं है क्या उनलोगों का यह प्रयोजन है कि यह बातें अनुमान की हैं और मुख्य नहीं और आश्चर्य

यह है कि यही प्रयोजन बहुधा उन मनुष्यों का होता है यद्यपि उन्होंने इनचिह्नों को उपजते भी देखाहै और उनको मान भी लियाहै प्रकटमें ऐसा मालूमहोताहै कि इनलोगोंको यह बिबेक नहींहोताहै कि विचार के द्वारा क्या चिह्न प्रकट होताहै और कौनवस्तु अनुमानकी और मुख्यनहींहै जो वस्तु विचारके द्वारा उत्पन्नहोतीहै उसको वह अज्ञानसे अनुमानकी हुई जान लेते परन्तु निश्चयकरके किसीजोड़का अकड़जाना एक मुख्य बातहै इसीतरहआंखकीपुतलीका स्थिरहोजानाऔर काम बन्द होजा-नानाड़ीमें तेजीकाआजाना असलीबातें हैं चाहेइनके उपजने का कुछही कारणहो क्ष वर्णन ऐसे लिखेगयेहैंकि बुरेविचारके द्वारा इसआकर्षण कियाबिना मृत्युआगईहैक्या इन दशाओं में मृत्यु अनुमानिकथी क्याजोलोग मरगयेथे वह केवल अपने अनुमान से अपने आपको मुर्दा समझलेतेथे यदि ऐसे संदेही इस बातका विवेककरें कि मुख्य क्या वस्तुहै और उसके होनेका क्या का-रणहै तो उनकोप्रकटहोगा कि जो चिह्न ऊपरलिखेगये मुख्य हैं जो उनका जीचाहे तो वहसमझलें कि यहचिह्न बुरे विचार केकारण पैदाहोते हैं परन्तु इसकारण उनके मुख्यहोनेमेंहानि नहीं होसक्ती वास्तवमें जो मनुष्य यह संशयकरते हैं और कुछ समझ रखते हैं यहीप्रयोजनरखते हैं कि यहचिह्न बुरेविचारों सेउपजते हैं--तात्पर्य्य उनका यहहै कि यहचिह्न किसी बाहर कीशक्तिके बलसेउत्पन्ननहीं होते किन्तुयह चिह्नधारककेबोलते जीवकेकार्यके परिणामहैं और उसकार्यको विचारना कामकहते हैं मुझे इस अनुमानके लिये कुछसंदेह नहीं है जो यहअनुमान सम्पूर्ण मूलोंकेलिये ठीकहो और साफ़२ अर्थ इस अनुमान के वर्णन कियेजावें भलाआप वार्त्ताके लियेसंकल्प करलीजियेकि सम्पूर्ण मूलोंकेलिये यहअनुमान ठीक आताहै और अब हमइस

अनुमानका वर्णनकरतेहैं किक्याहै अर्थयहहै कि जिसमनुष्यपर क्रियाकीजातीहै उसका बोलताजीव कईशयनोंके कारण उच्चाट होकरशरीर पर उलटकर प्रभावकरता है और पूर्वोक्त सम्पूर्ण चिह्न सिवायस्वप्नाकर्षण और अन्यचिह्नोंके पैदाकरताहै जो अब इसवर्णनको आप मानलें और संक्षेपकेलिये इसक्रिया का नाम विचाररखलें तो प्रकटहै किजो विचारऐसेचिह्नोंका उप-जानेवालाहै तोयहविचार शक्तिएकऐसीवस्तुहै जिसकेलियेबहुत बुद्धिमानीसे खोजकरनाचाहिये इसअनुमानपर प्रकटहोगा कि अबतक विचारकीशक्तिसे हमअज्ञान रहे हैं और हमको चाहिये कि तुरन्त उसकी शक्तिके कार्यका ज्ञान प्राप्त करलें कि उसके कार्योंकी रीतें मालूमहों और ऐसे बलवान् कर्त्ताके कार्यसेलाभ उठायें तौभी इसअनुमानपर इनचिह्नों का मुख्यहोना सिद्ध है जो इनमूलोंके उपजनेका कारण इस अनुमान पर वर्णनकिया जावे तो इसअनुमान के धारण करनेकेलिये जिसमें एकप्रभाव बाहरका मानाजाताहै यह मूल कम आश्चर्य देनेवाले नहींहो-जाते हैं यहबातआप सुगमतापूर्वक मालूम करलेंगे कि यहांतक पहुँचकर इनमूलों के प्रकटहोने का कारण किसी अनुमानपर वर्णनकरलेना एकऐसीबातहै जो मूलकेमूल होनेपर कुछप्रभाव नहींरखता अबतक संदेह तो मूलके लिये होतारहा है और मैं इसअनुमानके माननेको जो विचारको उक्तमूलों का उत्पन्नकरने वाला मानताहै तैयारहूं परन्तु जिन लोगोंका यह अनुमान है वह समझावें कि सम्पूर्ण मूलोंपर यह अनुमान ठीक आताहै परन्तु वास्तवमें यहबातहै कि रक्षा और ध्यान से खोज किया जाताहै तो मालूमहोताहै कि यहअनुमान सम्पूर्णमूलोंपर ठीक नहींआताहै नाड़ीका तीक्ष्णवेग और आंखकी पुतलीका स्थिर होजाना ऐसी चीज़ें हैं जिनपर हमारा कदाचित् वश नहीं है

धारककाविचार वैसाही उच्चाटकियाजावे वह अपनेशरीरमें यह
चिह्न इस आकर्षण क्रिया बिना अपनेआप पैदानहींकरसक्ता
है और धारक उसपर यह और अन्य चिह्न इसतरह पैदाकर
सक्ताहै कि उसके विचारपर कोई काम न पहुँचे मैं इसबातकी
गवाही देताहूं कि आकर्षणकी क्रियाकाकारक किसीमनुष्यपर
ऐसीदशामें अमल करलेताहै कि धारक दूसरे कमरे या दूसरे
मकानमें हो या सैकड़ोंगज कारकसे दूरहो और जानताभी न
हो कि किसतरहकी क्रिया उसपर होनेवालीहै ऐसीदशामें यह
बात होजातीहै कि जोकि धारक अपने नियमितकार्यमें लगाहै
उसपर आकर्षण की क्रिया के चिह्न प्रकट होजाते हैं और
जिनलोगोंकी प्रकृति अच्छीप्रभाव अंगीकार करनेवालीहै उन
पर यहप्रभाव इसतरहपर भी पैदाहोजाताहै कि धारकने कभी
उनको पहले देखा भी न हो ऐसी जगह मेरा यह वचनहै कि
विचारकेकार्यकाप्रवेश नहींहै इसकेसिवाय कि धारककाविचार
अतिकरके किसी मुख्यकाममें जमाहुआहै कारकको ऐसाअधि-
कारहै कि उसपर ऐसेचिह्न उभरजावें जो उसविषयसे जिसपर
धारककाविचार जमाहुआहै कुछभी उससेसम्बन्ध न रखतेहों
और यहभी इसतरहपर होसक्ताहै कि धारकको क्रियाके होने
की खबरभी न हुईहो तथाच ऐसा होताहै कि उस दशामें कि
धारक बहुतही ध्यानसे कारक जो उनके पीछे या दूर खड़ाहो
बहुत ध्यानसे बातें कररहाहो उसके मुखसे आधावचन निक-
लतेहुये रुकजावे और इसी प्रकार सैकड़ों अन्य२ दशाओं में
कारकका इसतरहपर प्रभावहोजाताहै इनबातोंसेयहपरिणाम
निकलताहै कि विचारमें सम्पूर्ण चिह्नों के कारणोंका कारण
मालूम न होसक्ताहै बरन किसी बाहरकी शक्तिको मानना प-
ड़ताहै और जब ऐसी शक्तिको मान लिया तो फिर विचार की

कुछ आवश्यकता नहीं परन्तु जोकि आकर्षण क्रियाके सम्पूर्ण मूल उत्पन्न होसक्ते हैं और किन्तु ऐसी दशामें कि कारक और धारक एक जगह न हों और उनमें दूरीहो परन्तु यह मेरा प्रयोजन नहींहै कि विचार से जिसका वर्णन ऊपर कियागया बहुत क्रियाके चिह्न पैदा नहीं होसक्ते हैं पर सबनहीं पैदाहो-सक्ते हैं इसके बिरुद्ध मुझेमालूमहै कि बलवान् विचारडालने से आकर्षणकी क्रियाकाप्रभाव जल्दी और अधिक प्रबलहोसक्ता है तथाच कारककी इच्छा जब दृढ़तापूर्वक प्रकट कीजातीहै तो उसकाउपाय कुछ२ इस कारणसे होताहै परन्तु जोकि कारक की इच्छासे कहनेबिना भी प्रभाव होजाता है इसलिये विचार पर प्रभावहोना आकर्षणकी प्रभावके वास्ते अवश्यनहींहै नि-दान मालूम होताहै कि यह संशय संदेही मनुष्य अच्छी तरह समझकर नहींकरते हैं और जब इससंदेहके अर्थ समझतेभीहैं तो केवल उनका प्रयोजन यहहोताहै कि आकर्षणके चिह्नोंके प्रकट होनेका कारण एक ऐसे अनुमानपर वर्णन करते हैं जो प्रमाणपूर्वक इसप्रयोजनके लिये पूरेनहीं यद्यपि किसी समय यह होसक्ताहै कि कईचिह्नोंके उपजनेका कारण इसअनुमान पर वर्णन होसक्ताहै या यह कि आकर्षण शक्तिके बलके साथ विचार का प्रभाव होताहै परन्तु इस अनुमानपर किसी वाह्य शक्तिका प्रभाव नहींमानाजाताहै पर जो किसी वाह्यशक्ति का प्रभाव न मानाजावे तो इसअनुमानकीजड़ मजबूतनहीं कदा-चित् यहबातमानीभीजावे कि कईविचारके चिह्न उच्चाटहोने से पैदाहोते हैं आप यह तो कहिये कि विचार क्योंकर उच्चाट होजाताहै इसका क्याकारणहै कि आकर्षणकी क्रियाकेहोनेसे विचारपर ऐसाबलवान् प्रभाव होताहै और ऐसे अन्य२ चिहन उपजते हैं इसका क्याका

शरीरपर कईचिह्न जैसे गर्मी सर्दी या बिजलीकेवेगसेमालूम होते हैं निदान जिसतरहपर चाहिये देखिये यही बात मालूम होगी कि किसीवाह्यबलका धारकपर प्रभावहोताहै और यह बात कि इस वाह्य शक्ति का प्रभाव विचार संयोग या उसके बिना होताहै कुछ ध्यानके योग्यनहीं ऐसी वार्त्तामें यहीहोताहै कि इसबातके सिलसिले में एक और कड़ी बढ़ती है और उस सिलसिलेका एकशिरातो वाह्यशक्ति और दूसराशिरा वे चिह्न होंगे जो पैदाहोते हैं इसकी कुछ परवाह नहीं कि इससिल-सिलेके बीचमें कितनी कड़ियांहैं ॥

एक और संदेह ऐसा है कि चाहे वह बहुत किया जाताहै परन्तु मेरीसमझमें और सब संशयोंसे अति निर्बलहै और वह संदेह यह है कि आकर्षण के चिह्न किसी कामके नहीं हैं इस-लिये उनका खोजकरना निरर्थकहै—बहुधा मनुष्य मुझसे पूछते हैं कि तुम ऐसीचीज़ोंकी ओर क्यों ध्यानकरते हो जिनसे सिवाय शैरके और कुछप्रयोजननहींहै और यहपूछते हैं कि लाभ क्याहै—इसका उत्तर यह है कि यह प्रश्न और विद्याओं के लियेभी बहुधा कियागयाहै यहीप्रश्नके लिये भी कियागया है और जो अब ऐसाप्रश्न उनविद्याओंके लिये करना निरर्थमा-लूमहोताहै तो उसका कारण यहीहै किबहुत समयके बीतनेसे सूचितहुआहै कि उन विद्याओंके बहुत लाभहैं कदाचित् बहुत समयके बीतनेसे यहबात मालूमभी न होती तबभी हमपरउ-चितहै कि केवल विद्या और सच्चीबातके मालूम करनेको इन सब विद्या और उनकी शाखाओंको पढ़ें ईश्वरकीशक्ति में कोई ऐसामूल नहीं कि उसका लाभ कुछ न हो चाहे उसके लाभ हमको मालूम नहों प्रायः उसमूलको आगे किसी अन्यविद्या की शाखासे संबंध होना सिद्धहो और निश्चयहै कि जल्दीही

या सैकड़ों वर्षके उपरांत उसके वर्तने से लाभहो तो जो न
मूलोंका अच्छीतरह खोज न किया जावे तो यह सच्चे लाभ
हम नष्टकरदेंगे सिवाय इसके इसबात के दृष्टांत बहुत हैं कि
कईमूल जो तुच्छ और नाचीज़ मालूम होतेहैं जब हमारी वि-
द्याकीवृद्धि होतीहै अकस्मात् प्रतिष्ठा पालेते हैं तथाच धुवें में
लचकहोना बहुतसमय से मालूमथा परन्तु वाटसाहब की बुद्धि
से धुवेंकीकल इसी स्वभाव से बनी जब बरफ और पानी
और भाफ के स्वभाव की गर्मी से मालूम हुये तो गुप्त उष्णता
का हाल मालूम हुआ और निश्चय करके वाट साहब ने
इस हालके मालूम होनेके कारण धुवें से यहलाभ पाया कि
धुवेंकीकल तय्यारकी—वृहस्पति के चन्द्रमाओंके ग्रहणकाहाल
मालूमहोना जहाज चलने के लिये अवश्यहै--यह एक सीधीही
सी बात समयसे मालूमथी कि एक बिजलीकी लहर एकतारके
जारीरहनेका मार्गहो और रुकजावे तो एक और दूसरी लहर
छिपीहुई तारमें पैदाहोतीहै या सुई आकर्षणपर प्रभाव करतीहै
इनदिनों इसी मूलसे तारबर्क़ी बनाईगई तथाच इसी बिजली
की लहरकेस्वभावसे हम बनावटका प्रबल आकर्षण बनासक्ते
हैं जबकलोरायन [१] पत्थरावके सतके प्रभावकी परीक्षाकी गई
तो और चीज़ोंमें जो इस उपाय से उत्पन्नहुईं एक ऐसी लचक
दार बहतीहुई चीज़ पैदाहुई कि जिसमें एकप्रकारकी सुगन्धहै
और वायु में उड़जातीहै बीसवर्ष पर्य्यन्त इस पतली चीज़ का
कुछलाभ न हुआ सिवाय इसके कि कईरीतें मालूम हुईं प-
रन्तु समयतक किसी को उसके काम में लानेका विचार भी न
हुआ परन्तु उसचीजमें बहुतसे गुण प्रतिष्ठा के योग्यथे जब डा-
क्टर सपसनसाहब ने अच्छी तरह रक्षापूर्वक खोजकिया तो

१ कलोरायन एक फैलीहुई हवाईचीजहै जिसका रंग सब्ज़होताहै॥

उससे क्लोर्डफोर्ड पैदाहुआ और अब वहचीज़ सर्थिये और दाई के वास्ते अवश्य है जो लेपग[1] और सुबरा जिन्होंने अलग २ क्लोर्डफोर्म को मालूम किया कलोरायन और शराब के सतके स्वभाव की सम्पूर्ण बातें खोजतें तो यह बात सन् १८३०ई०में मालूम होजाती कि मनुष्य के शरीरपर जर्राही काम इस तरह होसक्ताहै और उसको कुछ भी दुःखनहो परन्तु उनकेकम ध्यान के सबब मनुष्य को इस अमोल वस्तु के लिये और पन्द्रहवर्ष पर्यन्त बाट देखना पड़ा॥

इसबात के याददिलाने को आपको कुछ आवश्यकता नहीं है कि इसआकर्षण क्रिया के द्वारा जर्राहीका कामबिना दुःख होसक्ताहै और वैद्य इसक्रियाकी ओर ध्यानकरते और उचित कार्यकरते तो यहबात पन्द्रहवर्ष पहिले मालूम होती और वास्तवमें यहबातहै कि क्लोर्डफोर्म के निश्चय होनेसे पहिले आकर्षणकी क्रियाका बर्त्तव इसप्रयोजनके लिये कईवर्ष से होताथा आजकल डाक्टर इसडैलसाहब हिन्दुस्तान में इस क्रियाका बर्त्ताव जर्राहि के लियेकिया और सर्वदाउनका काम पूराहोताहै इंगलिस्तान में अब तक आकर्षण दशाके उपजाने की शक्ति उतनी नहीं पहुंचीहै कि क्रिया में चूकनहो परन्तु इंगलिस्तान में भी आकर्षण की क्रियाका बर्त्ताव जर्राही की क्रिया के लिये बहुधा क्लोर्डफोर्म छोड़कर करतेहैं सो प्रकटहुआ कि चाहे कोई विद्याकामूल प्रकट में तुच्छ मालूम होताहो परन्तु उसके अन्दर बड़ाईहै और सम्भवहै कि किसी समय उसका बर्त्ताव हो सके परन्तु आकर्षणकी क्रियाका बर्त्ताव तो अब भी होताहै अर्थात् दुःख और रोगकोदूरकरनेकेलिये काममें आताहै पर जो संकल्पकरो कि अबतक इसकाम में न आता तब भी इसबात के

---

१ बुद्धिमानोंके नामहैं॥

लिये प्रमाणही होता कि इस विद्या के मूलोंकोही न ढूंढ़ाजावे क्योंकि इसका प्रबल प्रमाण है कि उसके लाभ आजही या कल या एकवर्ष या सौवर्ष के उपरान्त मालूम होजावें आगे आपको मालूमहोगा कि इस क्रियाका बर्त्ताव और तरहपर भी होताहै और बढ़नेकी आशाहै निदान यह सन्देह तुच्छ है और जो लोग यह संशय करतेहैं उनको ईश्वरीय शक्ति के मूलोंका अच्छा ज्ञान नहीं अन्त में यह सन्देह होता है कि आकर्षण क्रियाके मूल ऐसेप्रत्यक्ष प्रकटहैं और ऐसेविचित्र काम के हैं जो वास्तव में इनका होनाहोता तो समय से संसार में जो मनुष्य उनको जानते और बहुत कामोंमें बर्त्तायेजाते यह सन्देह ऐसा है कि उसके सुननेसे अचम्भा होताहै जो उसको मानाजावे तो सूचितहो कि जोचीज़ अबतक मालूम नहींहुई या जो मालूम हो चुकी और वह काममें नहींआई वह तुच्छहै परन्तु आप देखिये कि इतिहास की पुस्तक से क्या मालूम होता है पहिले तो यह बात मालूमहोतीहै कि हरसमय में नई २ बातें ऐसी मालूमहुई हैं कि उनके लाभ और सीधेपन से लोगों को आश्चर्य हुआ है परन्तु जबतक मालूमहोतीं या तो किसी को मालूम न थीं या लोग उनको भूलगये थे और उनसे अचेत थे आप कहिये कि इसका क्या कारण है कि फरंगिस्तान में बारूद रोजरपेकनहीं को पहिले मालूमहुई चाहे उसका चीनमें हजारबरस से पहिले प्रचारथा इसका क्या कारणहै कि नई दुनियां को कलम्बसही ने पहिले मालूम किया और उसके समय से पहिले कोई उसदेश को न जानता था बरन आप विचार तो कीजिये कि लोगों ने आप कलम्बस परही यह सन्देह क्या नहीं किया था कि वास्तव में जोऐसी दुनियां होती तो क्या एक छोटे से मल्लाह के वास्ते अबतक मालूम करना छोड़ा जाता क्या फरंकीन

साहब[१]के समयसे पहिले बिजली नथी या कुतुबनुमाके बननेसे पहिले आकर्षणशक्ति संसार में नथी इसका क्या कारणहै कि लोग सदा रोजसेबको वृक्ष से पृथ्वीपर गिरते देखते हैं परन्तु न्यूटन साहब के सिवाय किसीको यह विचारनहुआ कि उसके धरतीपर गिरने का क्या कारण है और सेबके मालूम होने आकाश के सितारों के घूमने की रीतें निकालीगई संसार में मनुष्य देखा करते थे कि कोयले आग में जलते थे इसका क्या कारणहै कि एक हज़ार बरसपीछे इनकोयलों के जलने के स्वभावसे गासकी रोशनी निकालीगई इसका क्या कारणहै कि धुवेंके जोरसे जहाजरानी एक मुख्य समय में कीगई और उस समय से पहिले धुवेंकी शक्तिको इस तरहपर काममें लानेका किसी को विचार भी नहुआ निदान इसका क्या कारणहै कि हर नई चीज़ जो मालूमहुई एक मुख्यसमय में निश्चितहुई उस समयसे पहिले किसीको मालूम न हुई कारण यहहै कि किसी ईश्वरीय शक्तिके समझने और मालूम करने के लिये लोगोंकी बुद्धि तय्यार होनी चाहिये सो यही बात आकर्षण की क्रिया पर ठीकआतीहै परन्तु आप विचारकरें तो यह सन्देहसार्थकभी ठीकनहींहै क्योंकि आकर्षण विद्याके हाल सनातन से मालूम थे बरन रोगोंकी चिकित्सा और बुरेमतलबों के लिये बर्त्तेगयेथे परन्तु जो इस क्रियाका विद्याकी रीतोंपर कोई बर्त्ताव करताथा तो विद्वान् क्रियाकरतेथे तथाच मिसर और हिन्दुस्तानके मध्य धर्मपर चलनेवाले समूहों में इसका प्रचार था पर जोकि वह अपनी विद्याको छिपाते थे इसलिये संसार में यहविद्या एक समयकेपीछेनष्टहोगईथी फिरइसविद्याके फिरमालूम करने की

[१] फरंक्लीन साहब नईदुनियां के देशमें एक बड़े बुद्धिमान हुयेहैं जिन्होंने आकाश से बिजली उतारीथी॥

आवश्यकताहुई और मिसमरने उसको मालूम किया खेदयहहै
कि कई विषय में मिसमरने इस क्रियाका बर्त्ताव विद्याकीरीतों
के अनुसार नहींकिया और इसलिये लोगोंको उसकीविद्या और
क्रिया के लिये ईर्षाहुई तथाच हर नईबात के लिये संसार में
पक्षपात होताआया है और निश्चयहै कि होतारहेगा अभी इस
विद्याकी बाल्य अवस्थाहै पर मैं प्रसन्नतासे कहताहूं कि दिन२
इसकी वृद्धिहै यहबात कि सैकड़ोंबरस पहिले यह क्रिया अच्छी
तरह क्योंनफैली कुछ यहप्रमाणनहींहोसक्ता कि यहविद्याझूंठी
हैजो कोई यह कहै कि जो बुद्धिमान् विद्वान् हैं उन्हों ने इस
विद्या के लिये कोई बातें मालूम नहीं कीं इसका यह उत्तर है
कि ऐसेलोगोंने अबतक इस विद्याकी ओर ध्याननहींकियाहै॥

अब मैंने उन सम्पूर्ण सन्देहोंके लिये जो इस विद्याकेलिये
किये जातेहैं वार्त्ता करलीहै और निश्चय है कि मैंने सिद्ध कर
दियाहै कि यह संदेह तुच्छ हैं और ऐसेही हैं कि जैसे हरनई
विद्या के लिये संसार में सदासे होते चलेआये हैं परन्तु अन्य
विद्याओंकेलिये अनयह सन्देह इसलिये छूटगयेहैं कि समयके
बीतनेसे मालूम होगयाहै कि उन विद्याओं के लिये ऐसेसन्देह
नहींहोसक्तेहैं सो संशयनहीं होसक्ता है कि जब इसविद्याका भी
अच्छीतरह खोजकियाजावेगा तो जो सन्देह इसपर किये जाते
हैं अपनेआप तुच्छ समझे जावेंगे अबतक इसविद्या और क्रिया
को ऐसेही मनुष्य जानतेहैं जो दूसरी विद्या अच्छी नहींजानते
तो इसबातका यह कारण है कि विद्वानों को इसका ध्याननहीं
परन्तु यह न ध्यानकरना उनका अब समय तक नहीं रहसक्ता
है क्योंकि जो विद्वान् उसकी ओर ध्यान न करेंगे तो उनलोगों
से पीछे रह जावेंगे जिनको ध्यान है जो वैद्य अभी जवानहैं वह
भी इसविद्याको प्राचीनपक्षपात को छोड़करकरेंगे और थोड़ेही

समय में यह बात होजावेगी कि जिस तरह इसके न जानने से वैद्यक विद्यामें हानि समझी जातीहै इसीतरहमें उनको ज्ञान न होगा तो हानि समझीजावेगी॥

अब जो संदेहोंकी सफाई होगई तो विद्याके खण्डोंके विवाद कासमयहै और में अबयहहाल लिखूंगा कि आकर्षणकी विद्याके उपाय क्याहैं और फिर लिखूंगा कि उनउपायोंसे कौन२ चिह्न प्रकट होतेहैं और पहिले छोटे और फिर बड़े चिह्नों का हाल लिखूंगा इस वर्णनमें जो जो कुछ मैंने देखाहै और आपकियाहै उसका भी हाल लिखूंगा और अन्य इस क्रिया के कारकों का वृत्तान्त वर्णनकरूंगा इसके पीछेमें यह लिखूंगा कि इनचिह्नों के उपजने का क्या कारण समझा जाताहै और इन चिह्नोंके उत्पन्न होनेमें क्या २ रीतें मालूम होतीहैं निस्संदेह उस व्यवहार में अनुमान ही अनुमान होगा परन्तु अनुमान करने में कुछ हानि नहींहै इसलिये कि क्रियाके मूलों का उपजना सिद्ध होना चाहिये और यह मूल अवश्य वर्त्तमान ही रहेंगे चाहें हम उनके उत्पन्न होने का कारण वर्णन करसकें वा न करसकें या जिसतरह चाहें वर्णन करदें॥

चौथा पत्र॥

अबमैं इस क्रियाकी युक्ति बताताहूं और इस पत्रमें समझाऊंगा कि जब यह क्रिया किसी मनुष्यपरकी जातीहै तो उस मनुष्यपर क्या क्या चिह्नप्रकट होते हैं॥

युक्तियहहै कि आप पांचचार मनुष्योंको बिठाइये और उन से कहिये कि अपनेहाथ इसतरहपर रखिये कि हथेलियां ऊपर की ओरहों फिर अपने दहने हाथकी उंगलियों के सिरोंको पहुंचे

से नीचे की ओर घुमा दीजिये और उंगलियां चाहे बराबर रखिये चाहे इसतरह पर कि एक दूसरे के पीछेहों परन्तु धारक के शरीरको छूना न चाहिये और जितना होसके धारकके शरीर के निकट तर रहें कईवेर दुबारा तिबारा इस तरह अपनी उंगलियोंको हिला दीजिये इसयुक्ति से निश्चयहै कि उन मनुष्यों मेंसे एक या अधिक पर एक मुख्य प्रभाव इससे मालूम होगा परन्तु यह चिह्न अन्य २ मनुष्यों पर नाना प्रकार के होते हैं किसीको थोड़ी गर्मी किसीको थोड़ी शर्दी मालूम होगी किसी के शरीर पर ऐसा प्रभाव होगा कि मानो कोई सुई चुभोता है किसी को गुदगुदी भी मालूम होगी कोई ऐसा मालूम करेगा मानो उसका शरीर शून्य होगयाहै जिनको यह प्रभाव मालूम होवे उनपरयह क्रिया होसक्तीहै और जोबड़े चिह्न इस क्रिया के होतेहैं उनपर अच्छी तरह प्रकट होंगे यहांतक कि जो उनकी आंखें भी बांधी जावें तौभी उन चिह्नों में अन्तर नहीं पड़ता परन्तु किसी समय आंखोंके बांधनेसे धारक की प्रकृति मुरझा जातीहै यह सब बातें मैंने आपकी हैं और इस अमल को होते देखाहै और अन्य धारकों ने इसकावर्णन विस्तारसे कियाहै॥

जब कोईमनुष्य ऐसा मालूमहो कि जिसपर इस क्रिया के कुछ २ चिह्न प्रकटहों तोआप उसपरयह क्रियाकरें कि अपने दोनोंहाथ धारक के मुखपर और शिर परसे उसके पेट तक वरन पांवतक उतारें परन्तु सदायह विचार रखना चाहिये कि उसके शरीरको छूना न चाहिये परन्तु जहांतक होसके उसके शरीरके अति निकटरहें दूसरीयुक्ति यहभीहै कि शिर औरमुख औरपेटकेबदले कारकअपनेहाथ धारककेपहलूकी ओरसे उतारे परन्तु यह अवश्यहै कि इस क्रिया करने के समय कारक का स्वभाव अपने काम पर खूब जमाहो और उसकी इच्छा स्थिर

हो और किसी प्रकार का शोर गुल उस मकान में न हो जहां क्रिया कीजाती हो और जिस मनुष्यपर क्रिया कीजावे वह हर प्रकारपर धारककी क्रिया होनेपर अपने मनको जमाये कारक को उचितहै कि धारकपर जमके देखतारहे और धारक कारक की आंखोंकी ओर इसीतरह देखतारहै कुछ समयतक हाथोंको धारकके निकट इसतरह लेजाना चाहिये जो ऐसा कियाजावे गा तो धारक क्रियाके चिह्न प्रकट होंगे अर्थात् जैसा ऊपर वर्णन कियागया गर्मी या सर्दी या गुदगुदी या शून्य कोई न कोई इन चिह्नोंमेंसे प्रकट होंगे जब यह चिह्न अच्छे प्रकटहों तो निश्चयहै कि जिस मनुष्य पर क्रिया प्रकट कीगईहै उसपर और बड़े२ चिह्न अच्छी तरह प्रकटहोंगे अर्थात् धारक पर अच्छीतरह अमल होगा निश्चयहै कि जो धारकके स्वभाव में धैर्यहो और वह अपने मनको जमा रक्खे और कारक बलवान् और आरोग्यभी हो तो कैसाही मनुष्यहो उसपर उसकी क्रिया चल जायेगी परन्तु किसी समय पर ऐसा होताहै कि प्रारंभमें धारक पर यह क्रिया कठिनता से चलतीहै परन्तु पीछे२ उस पर यह क्रिया अच्छी तरह चल जातीहै कभी ऐसा भी होताहै कि पहली वेर धारकपर क्रियाका कुछ प्रभाव नहींहोता किन्तु बराबर क्रिया की गईहै और प्रभाव नहीं हुआहै परन्तु कारक को चाहिये कि हिम्मत न हारे जो वह अपनी इच्छापर स्थिर और दृढ़ रहेगा तो उसकी क्रियाके चलजानेकी दिन२ आशा होती जावेगी और बहुधा तो ऐसा होताहै कि पांचचार मिनट मेंही धारक पर चिह्नप्रकट होजाते हैं ॥

एक और युक्ति यहहै कि आप उस मनुष्य के सामने पास होकर बैठिये जिसपर आप अमल करना चाहतेहैं और उसके अंगूठों को अपने अंगूठों और उङ्गलियों में पकड़ लीजिये और

नरम २ उंगली दबाइये और जमकर उसकी आंखों की ओर देखिये और अपना सम्पूर्णमनउसकीआंखोंकी ओरजमादीजिये और उसको भी कहिये कि वह भी ऐसा करे यह युक्ति इस विषयमें अच्छीहै कि इसमें धारक प्रारम्भमें इतना नहीं थकताहै जितना पहली युक्तिमें दीन होजाता है क्योंकि शिर से पांवतक हाथोंका गुजारना कुछ कठिनहै परन्तु जब अभ्यासहो जाताहै तो यह युक्ति भी कठिनता बिना होसक्तीहै मैं यह बात नहीं कह सक्ताहूं किइनदोनों युक्तियोंसेकौनसी उत्तमहै कभी २ दोनों युक्तियों में मनुष्य चूक जाताहै और बहुधा दोनों चल जातीहैं उत्तम होकि दोनों युक्तियों को मिलालें अर्थात् कभी एक बरतें कभी दूसरी दो बातें अवश्य हैं एक यह कि धारक प्रसन्नहो कि क्रियाका प्रभावहोजावे और जो कुछइसका अमल हो उसे होनेदे परन्तु यह बातबहुत अवश्यहै किउसको क्रियाके होजानेमें विश्वासभीहो परन्तु जोमनुष्यऐसेस्वभावकेहैं कि उन परक्रियासुगमतासे होसके उनमेंयहबातभीकुछ अवश्यनहींहै ॥

दूसरे यह बात कि धारक का मन बहुत जमाव के साथ क्रिया करनेमें जमे ॥

प्रकटहै कि इसबातके प्राप्त होनेके लिये अवश्य है कि जिस जगह यह क्रिया कीजावे वहां कुछ शोर न हो जो कहीं बाज़ार या गलीमें भी यह गुलहोतो दोनों कारक और धारकका ध्यान भटकजाता है या कोईस्त्रीचले और उसके कपड़ेकी आवाज हो या बहुत मनुष्य बैठेहों और आपुस में कानों में बातेंकरें तब भी विचार भटकजाता है यह अमल एक दो मिनट में भी होताहै और कभी अधिक समय भी दरकार होता है यहां तक कि एक घंटेसे भी अधिक परन्तु जितना अधिक अभ्यास हो उतनाही क्रिया के चलजानेके लिये समय दरकार है ॥

बहुधा ऐसा होता है कि कारक और धारक बहुत निकट न हों केवल यहीबात हो कि कारक धारक की ओर धारक कारक की ओर दृष्टि जमाकर देखें तो क्रियाका प्रभाव होजाताहै मैंने ल्यूससाहब को देखाहै कि पांच मिनट के समय में दूरसे जमकर देखने और दृढ़इच्छा से एक समूह के समूहपर ऐसा अमल करलेते हैं कि कभी सौमेंसे पांचपर कभी बीसपर कभी पच्चीसपर प्रभाव होजाता है उक्तसाहबइसयुक्ति को बहुतपसन्द करतेहैंपरन्तु इनसाहबको इसक्रियाकरनेमेंविचित्र बलप्राप्तहै॥

तीसरी युक्तियहहै कि जिस मनुष्यपर क्रियाकरनी स्वीकार हो उसके हाथ में कोईचीज़ देदो औ उसको कहो कि उसचीज़ की तरफ दृष्टिजमाकर देखतारहे इसयुक्तिसे उसपर क्रियाका प्रभाव होजाता है—एक और युक्ति यहहै कि कोईवस्तु धारक को आंखों के सामने आंखसे ऊंची रक्खीजावे और उसकोकहा जावे कि उसको ओर देखतारहे इसयुक्ति और दूसरी युक्तिका जो अभी वर्णनकी गई ऐसा प्रभाव होताहै कि धारकको मूर्च्छा से बचाना कठिन है॥

अबमैंने क्रिया की युक्ति और क्रिया के सर्वचिह्नों का सर्व प्रकारसे वर्णन जो साधारण होते हैं करदिया निस्सन्देह जो चिह्न लिखेगये बहुत प्रकट नहींहैं इसलिये बहुत मनुष्य यह बात कहने को तय्यार होजाते हैं कि यह चिह्न केवल इस लिये मालूम होजाते हैं कि क्रिया के समय बिल्कुल शून्यता होती और धारक का स्वभाव घटाहुआ होता है इसलिये ऐसी क्रिया से और ऐसी परीक्षा से कुछ क्रिया का ठीक होना सिद्ध नहीं होता परन्तु जो यहवचन सचभी हो तो केवल उनचिहनों के लिये ठीक आसक्ताहैजो बहुत कमप्रकट होते हों जब यहचिह्न अच्छीतरह प्रकट होतेहैं तो फिर किसीतरहका

सन्देहउनके लिये नहींहोसक्ताहैऔर यहभी नहीं कि वहचिह्न और किसीतरह उत्पन्न हो सकें सिवाय इसके कि चाहे धारक के शरीरपर या स्वभाव परकिसीप्रकार का प्रभावहो ॥

यदि यही युक्तियां समय तक कीजावें तो और भी अधिक तर विचित्र चिह्न उत्पन्नहोतेहैं अब मैं इनविचित्र चिह्नों का वर्णनकरूंगा परन्तु क्रियाकी युक्तिकावर्णन और अधिक अवश्य नहीं इस लिये कि जीवाकर्षण विद्या के जितने चिहन पैदा होतेहैं सब उन युक्तियों हीं से होतेहैं जो ऊपर वर्णन की गईं प्रथमही प्रभाव यह होताहै कि आंखोंके पलक मिचने लगते हैं और झुकेजाते हैं जो पलक खुली भी रहें तो बहुत दशाओं में मानो आंखोंके ऊपर परदासा आजाताहै और जिसमनुष्य पर यहक्रिया कीजातीहै उसकी दृष्टिसे कारक का मुख और और चीज़ें छिपजातीहैं फिर नींदसी आनेलगतीहै और थोड़ीसी देर के पीछे अकस्मात् चेत जातारहताहै और जब वह मनुष्यजागताहै तो उसको कुछ इसबात का चेत नहीं होता कि जब वह सोयाथा उस समयको कितना समय हुआ और सोनेमें क्या २ हुआ सारीदशा जो उसपर होतीहै मानो एकधोईतख्तीहै परंतु जब वह जागताहै तो बहुधा अकस्मात् जागता है और गहरा श्वासलेकर जागताहै और कहताहै किमैं बहुत मीठीनींद में था परन्तु यहहोश उसको नहींहोता कि पांचमिनट तक सोया या पांचघंटे तक इसलिये जानना चाहिये कि यह मनुष्य थोड़ा या बहुत आकर्षण के स्वप्नमें था अब इस शयन का वर्णन मैं विस्तारके साथ करताहूं और पहले इस सोनेका वर्णन मैं इस लिये करताहूं कि आकर्षण की क्रिया का पहिला प्रभाव यही होताहै कि जो चिह्न प्रारम्भमें जैसेगर्मी या शर्दीआदि होतेहैं उसके उपरांत तुरन्तही नींदआजाती है ॥

मुझको इसबात की खबर है कि बहुतसे सुंदर चिह्न जीवाकर्षण विद्या के ऐसी दशामें उपजते हैं कि जब धारक होश में हो परन्तु यह चिह्न तब उत्पन्न होतेहैं कि जब क्रिया मुख्य रीति पर की जावे और नींद का पैदा करना इस युक्ति से प्राप्त होता है जो ऊपर वर्णन की गई और इस निद्रा की दशा में भी वही चिह्न उत्पन्न होजातेहैं किन्तु यह सम्पूर्णचिहनहोशमें भी प्रकट होसकेहैं यदि केवल इसरीति पर क्रिया की जावे कि धारक का चेत स्थिर रहे जब स्वप्न के चिह्न वर्णन कर चुकुंगा तो होशके चिह्न भी वर्णन किये जावेंगे॥

मैंने अभी ऊपर वर्णन किया है कि जब धारक सोने के पीछे जागता है तो उसको कुछचेत इसबात का नहीं होताहै कि नींद में क्या २ हुआ परन्तु केवल इस कारण से कि उसको नींद के वृत्तान्त स्मरण नहीं हैं यहनहीं विचारना चाहिये कि वास्तव में सोनेवाला बिल्कुल अचेत होकर सोता है उसकी बेहोशी ऐसी दशामें केवल नियमित जाग्रत अवस्था के सामने कही जाती है वास्तवमें यहबातहै कि सोनेवाला स्वप्नावस्था में कुछ शोच रहाहो या देख रहाहो या बोल रहाहो यही बात है जिसके कारण आकर्षण स्वाप ऐसे तमाशे कीजगहहै अबहम इसनिद्रा का हाल विस्तारसे वर्णन करते हैं॥

पहले यहकि यह निद्राकी दशा ऐसीहैकि मानो निद्रामें जागना और यहनिद्राऐसी होतीहै कि सोनेवाला आराम से और बिना विघ्न सोताहै अर्थात् जो नियमित दशा जागने की होती है और उसके चिह्न होतेहैं वह इस निद्रा में विघ्न नहीं डालते परन्तु जो कारक सोने वाले से बात चीत करे तो सोने वाला उत्तरदेताहै और उत्तरभी चैतन्यता और योग्यताके साथदेताहै॥ बहुधा यहहोताहै कि वह हरबातमें सन्देहरखताहै और बहुधा

उसकी जिह्वापर यहशब्द होतेहैं कि मुझको नहीं मालूमहै इस सन्देहका कारण यह मालूम होताहै कि जबतक वह अपने मनमें अच्छीतरह निश्चय न करे तबतक वह किसी वस्तुके होने की प्रतिज्ञा याने होनेका इन्कार नहीं करना चाहताहै यदि कारक चाहे तो उठेगा और चलेगा और जैसी मुख्यदशा उस पर उस समय हो उसके अनुसार न्यून या अधिक बचाव और रक्षासे चलेगा और उस चलनेपर भी उसकी आंखे बन्दहोंगी या जो खुलीभी होंगी तो पुतली ऊपरकीओर फिरीहोगी और प्रकाश का प्रभाव आंखों पर न होगा निदान उसकी दशा ऐसी होतीहै कि वह वर्त्तमान बस्तुओं का ऐसे किसी संबन्ध से होशरखताहै जो साधारण निद्राकी दशामें प्राप्त नहींहोता इसबातका वर्णन पीछे कियाजावेगा कि यह प्रभाव क्योंकर उत्पन्न होताहै प्रायःइसकारण कि सुनने या सूंघनेकी शक्तिऐसी तेजहोजातीहै जो जो साधारण नहींहोतीहैया यह कि उसको गुप्तरीति से धारण करनेकी शक्ति किसी तरहकी प्राप्तहोतीहै या यह कि यह दोनोंकारण मिलेहुये हैं इस जगह में केवल इतनाही वर्णन करताहूं कि यह चिह्न नानप्रकार के हैं और एकही मनुष्य में नानाप्रकार की दशाओं में ऐसे नानाप्रकारके पायेजातेहैं कि निश्चय होताहै कि दोनों कारण सत्यआतेहोंगे परन्तु किसीसमय यह सम्पूर्ण प्रकारसे सिद्धहोताहै कि प्रकट की इन्द्रियां बिलकुल अकारथ होजातीहैं और बहुधा जो मनुष्योंकी अपनेआप ऐसी दशाहोतीहै कि सोते हुये जागते हैं तो इस दशाके जो वर्णन हैं उनसे यह परिणाम निकलताहै कि अवश्य करके प्रकटकी इन्द्रियां उसदशामें निरर्थ होती हैं जिस मनुष्यने ऐसी आकस्मिक दशादेखीहै और उसके उपरांत वह दशादेखीहै जो आकर्षणकी क्रियासे उत्पन्नहोतीहै उसको कभी

सन्देह नहींहोता कि दोनों मुख्य और कृत्रिमदशायें मुख्यकरके एकहैं मुझे अबतक यह बात मालूम नहीं हुईहै कि किसी ऐसे मनुष्यको देखाहो जिसपर अपने आप यहजागनेकीदशाहोतीहै परन्तु मैंने ऐसी दशाके वर्णन बहुधा मनुष्योंसे सुनेहैं जिन्होंने अपनी आंखोंसे ऐसे मनुष्य देखे हैं और जिन्होंने आकर्षण के सोने जागनेको देखकर सदा मानाहै कि दोनोंदशाओं में कुछ भी अन्तर नहीं है इतनी बात कहनी अवश्यहै कि ऐसीदशा कि मनुष्यको सोने जागने में हो बहुधाहोतीहै और बहुतमनुष्यों ने ऐसी दशालोगों पर देखीहै इससे सिद्धहै कि कोई दैवीशक्ति इस प्रकारकी मनुष्यमें फैलीहुईहै कि उसका प्रभाव मनुष्यकी प्रकृतिकी एक मुख्यदशामें उत्पन्न होताहै—संभवहै कि इससब का प्रभाव उससमय होताहै कि जब मनुष्यकी प्रकृतिऐसी हलकीहो किउसपर तुरन्त बहुत चीज़ोंकाप्रभाव होजाताहैबहुधा यह प्रभाव उससमय उत्पन्न होताहै किजब मनुष्य निद्रामेंहो परन्तु यह पूरीरीति नहींहै इसलिये कि जिन मनुष्योंपर यह दशा होतीहै उनपर यह दशा दिनमें भी होतीहै परन्तु यहबात अवश्यहै कि स्वप्नावस्थामें इस दशाके होनेकी अधिक आशाहै संकल्प करो कि पहिली स्वप्न जाग्रत अवस्था किसीने न देखीहो और पहिले बनावटकी दशादेखीहो तोइस सबबसे कि अवश्य ऐसी दशाका उत्पन्न करना किसी मुख्य लक्षणपरघटितहोगा हम यह प्रमाण निकालसक्ते हैं कि कभी २ जब ऐसाप्रभावअपने आप उपजे ऐसी दशा अपने आपभीउत्पन्न होजावेगीइसी तरह जब हम जानतेहैं कि यह बात ईश्वरकी रचीहुई सनातन से चली आतीहै तोहमको यहभी आशाहोसक्ती है किकभीहम ऐसी दशा बनी हुईभी पैदाकरसकेंगे जैसा कि साधारण निद्रा नींद लानेवालीचीज़ों से और छींक छींक लानेवाली चीज़ों से

और कैकैवाली चीजों से उपजती है बास्तव में बुद्धि अचम्भे में होती है कि जिनलोगों ने ईश्वरीय रचना का सोना जागना देखाहै और जो उसका उपजना मानते हैं वह इसबातको क्यों नहीं निश्चयकरतेकि ऐसी दशा कृत्रिमभी पैदा होसक्तीहै और अधिक आश्चर्य की बात यहहै कि बहुत बुद्धिमान् मनुष्य इस विषय में संदेहकरते हैं ॥

मेरे विचार में केवल यह बात आती है कि इन लोगों ने नाहक और अनुचित रीतिसे अपने आपको ऐसे विचारोंसेडरा रक्खा है कि जो आकर्षण के स्वप्न की बातें मानलें तो उससे परिणाम ऐसे निकलेंगे जो धर्म्म और शील के विरुद्ध हों या यह कारण है कि जो विचार बिद्या और ईश्वरीय रचना के उनकी समझ में जमगये उनको भय है कि आकर्षण के लक्षणों के परिणाम उनसे विरुद्ध हैं और जब उनकी समझ में यहबातें जमगईं तो उनकी बुद्धियोंपर इतनापरदा पड़जाता है किचाहे उसकी साक्षी प्राप्तहो परन्तु वह गवाही उनकी बुद्धि में नहीं आती और न इतनीबुद्धि उन में रहती है कि पक्षपात रहित विचार करें खोजकरें कि जो परिणाम उनके विचार में निकलनेवाले हैं वह वास्तव में उत्पन्न होनेवाले हैं या नहीं ॥

जब धारक सोता है तो कभी कभी सर्बदा नहीं उसकीऐसी दशाहोती है कि उसकी श्रवणशक्ति अतितीक्ष्ण होजाती है यहां तक कि आश्चर्य्य होता है कि ऐसी तेज़ी क्योंकर आगई निस्संदेह ऐसाहोता है कि जो मनुष्य अन्धेहोते हैं उनकी श्रवण शक्ति ऐसीदशा में सूंघने स्वादुलेने सुनने की शक्तियां उनके काम में न आवें अर्थात् कोईबस्तु उनके बहुत पास न हो और उनके हाथतक न पहुंचे तो उनका सबका ध्यान श्रवणशक्तिकी ओर झुकजाता है तो सम्भव है कि आकर्षण के स्वप्न में भीऐ-

साही होताहो—अभी मैं इसेनहीं जानता हूं कि जबमुख्य स्वप्न और जाग्रत अवस्था उपजती है तो उसदशा मेंभी श्रवणशक्ति पर कुछ प्रभाव होता है या नहीं परन्तु मुझको आशा है कि जैसे आकर्षण के स्वप्न में कभी यह शक्ति तेज़ और कभी सुस्त होजाती है ऐसीही दशा उस मुख्यदशा में होतीहोगी निस्सं-देह ऐसे वृत्तांतों का वर्णन लिखाहुआ है कि जिस मनुष्य पर अपनेआप ऐसीदशा होतीहै तोकैसाही गुलशोर कियाजावे उस मनुष्य को ख़बर नहींहोती और कई वृत्तांतों का ऐसा वर्णनहै कि जब बहुत ज़ियादह शोर कियागया तो सोने वाला अक-स्मात् और डरकर जागउठा चाहे जबतक थोड़ा गुलहुआ त-बतक उसको कुछ ख़बर भी नहीं हुई आकर्षण की निद्रा में तो बहुधा ऐसा होता है कि जो सोने वालेके कानके पास बहुत ज़ोरसे शोर मचाया जावे या बड़ा घंटा बजाया जावे तो वह नहीं सुनता है और मुझको निश्चय है कि यह दशा हर एक कारक जब चाहे पैदा कर सक्ता है॥

जबधारक अच्छीतरहसो जाताहै यहांतक किप्रश्नोंकोउत्तर जागजाने के बिना देसक्ता है तो सदा उसका मुख और शब्द विचित्रता से बदल जाता है जब पहिलेही सोने लगता है तो प्रायः उसकी प्रकृति भारी २ और सुस्त मालूम होती है जैसा कोई थकाहुआ बैठना चाहे परन्तु बैठ नहींसक्ता या जैसाकोई शराब के नशेमें हो या कहीं ऐसे मकान में बैठाहो जहां बहुत मनुष्यों के कारण वायु खराब होगई हो और ऐसी बुरी वायु का प्रभाव होता है परन्तु जब उससे बातकी जातीहै तो सदा उसका मुख प्रकाश मान होजाता है और यद्यपि उसकी आंखें बंद होती हैं परन्तु उसके मुख से ऐसा होश पाया जाता है कि मानों वहआंखोंसे देखरहाहै वास्तवमें सम्पूर्ण रीतिसेऐसी

सुन्दरताका ऐसाडौलपैदा होजाता है कि जब ऊंची निद्रा की दशा होती है तो उससे मुख्य जाग्रत अवस्था को कुछ संबंध नहीं होता है ऐसा मालूम होता है कि जो २ छोटे बिचार और इच्छामें मनुष्य के स्वभाव में होते हैं वह आकर्षण के स्वप्न में बिल्कुल नाश होजाती हैं और जो बुद्धि के बिचार और बड़ी इच्छा स्वभाव में होती हैं वह प्रकट होजाती हैं मुख्य करके यहबात शुद्ध बुद्धि और उत्तम स्वभाव वाली स्त्रियोंमें पाई जाती है और जो पुरुष ऐसीही प्रकृतिके होतेहैं उनमेंभी पाई जाती है जो दशा यें आकर्षण के कारण ऊंचीहैं उनमें धारक का मुख बहुतसुंदर और प्रीतियुत दिखाईदेताहै यहांतक कि जो सौंदर्य्य उससमय मुखका होताहै वह संसारभर में नहींपायाजाता है और उसका स्वर्गके देवतोंकेसदृश रूपहोता है शब्द की यह दशाहै कि मैंने कभी किसीमनुष्यका शब्दसाधारण मुख्यनिद्रा में नहींदेखाहै और उसकेमुख्य शब्दसे बदला नहींहोता है जहां तक मुझकोपरीक्षाहुईहै उसका शब्द बहुत नरम मालूमहोताहै जैसे मुखकीसुंदरता बहुतसुंदरहोतीहै उतनाहींशब्द बहुतउत्तम होताहै और मुख्य करके जब सोनेवाला अपने मरेहुये मित्रों औरबांधवों का वर्णन करताहै तो उसके शब्दमें एकचोट और दुःख पायाजाता है जो दशायें आकर्षण के स्वप्नकी सबसेऊंची होती हैं उनमें आवाज़ का ढंग बिल्कुल नया होजाता है और बिल्कुल उस मुख की सुंदरता स्वर्ग के बासियों के अनुसार प्रकाशमान हैं मैंने जो हाल यह लिखा वह लिखा है जो मैंने बहुधा अपनी आंखोंदेखाहै और मैं कहसक्ताहूं कि बहुधा यह दशाहोती है कि जो हम एक मनुष्य को उसके मुख्य रूप में देखें और फिर आकर्षण की दशा में देखें तो अवश्य करके दो अलग मनुष्य मालम होते हैं और ऐसी दशाहोना कछ आश्चर्य

नहीं इसलिये कि सोनेवाले की चेतना और ज्ञान इसक्रिया की दशा में मुख्यदशा के ज्ञान और संज्ञासे सर्बत्र विरुद्धहोता है वास्तव में आकर्षण की दशा में सोनेवाला चाहे कोई दूसरा मनुष्य नहीं बनजाता है परन्तु इतनातो अवश्य होता है कि अपने जीनेकी दूसरी सूरत में होता है और यह स्वरूप मुख्य रूपसे उत्तम होता है॥

बहुधा ऐसाहोता है कि इसरीति में यहबातें भी हैं किजब सोनेवाला जागता है तो उसको इसबात का ज्ञान नहींहोता कि स्वप्नावस्था में मैंने क्या सूंघा या क्या चक्खा या क्या सु-नाया क्या बोला परन्तु जब उसको फिर सुला दो तो केवल एकही गत स्वप्न का वृत्तान्त याद नहीं आता बरन प्रारम्भ से जितनी बेर उसपर इस स्वप्नकी दशा बीती है वहसब उसको स्मरण होआती है निस्सन्देह ऐसाहोता है कि कई बातें बहुत ठीक और कई अच्छी तरह सत्यतापूर्व्वक याद नहींहोतीं प-रन्तु सब जानते हैं कि मुख्यदशा में भी मनुष्य को सब बीती हुईबातें बहुत ठीक २ यादनहीं रहती हैं बास्तव में यह कहना चाहिये कि जिस मनुष्य को आकर्षण का स्वप्नआता हैउसका जीना दो प्रकार का होता है एक मानों आकर्षण की जीवन अर्थात् वह जीवन जो आकर्षण के स्वप्न में बीतता है और दू-सरा मुख्य जैसे सम्पूर्ण मनुष्यों का जीवन होता है इसलिये कहते हैं कि ऐसा मनुष्य दो प्रकार का ज्ञान रखता है किवह दोनों ज्ञान परस्पर अलग २ हैं एक आकर्षण का ज्ञान दूसरा मुख्य--निस्सन्देह नाना प्रकारके सोनेवालों को भांति २ का स्मरण प्राप्त रहता है जैसा कि संसार में भांति २ के मनुष्यों की स्मरण शक्ति नानाप्रकार की होती है परन्तु सदैवकाल यह बात नहींहोती है कि आकर्षण के स्वप्न में धारक अपनी मुख्य

दशासे बिल्कुल अलग होजावे चाहे यहदशा भी उसकी हो कि जागने के उपरांत उसको अपनी आकर्षण दशा का कुछभीज्ञान न रहे इसके विरुद्ध ऐसा होता है कि आकर्षण निद्रा में धारक बहुत शुद्धता पूर्वक अपनी मुख्य दशा के बिषयों में बात चीत करता है आश्चर्य्य की बात है कि धारक को इसतरहपर आदमियों के या और चीज़ों के न मिलने में अति कठिनता मालूम होतीहै यहतो होता है कि वह उनका पता और चिह्नबताता है परन्तु यातो उसका जी नहीं चाहता कि नाम बताइे या उससे नाम बताया नहीं जाता है जो तुम नाम बतादो तो वह मानता है परन्तु वह चाहताहै कि आप नाम नहींबतावे बहुधा ऐसाहोताहै कि सोनेवाला अपने आपको भूलजात है और अपना नामनहींबतासक्ता और अपना नाम किसी और के नाम से बहुधा कारक के नामसे बताता है चाहे और सब विषयों में वह अतिशुद्धता पूर्वक वार्त्ताकरता है—बहुधा यह होता है कि कारक और दूसरे मनुष्यों को अशुद्धनाम बताता है परन्तु इतनी बात अवश्य है कि जब किसी मनुष्य का कोई मुख्य नाम बताता है तो जितनी बेर पूछाजावे उस मनुष्य का वही नाम बतावेगा॥

यहदशा जो दूनीज्ञान की वर्णन की गईहै अपने आप भी उपजती है और बहुत मनुष्य बरसोंतक ऐसी दशा में जिये हैं कि कभी उनको एकप्रकार का ज्ञान और कभी दूसरी प्रकार का प्राप्तरहा है एक दशा में दूसरी दशा का ज्ञाननहीं रहता जो कुछ उनको एक दशा में सिखाया गया है दूसरी दशा में भूलजाते हैं और बच्चों की तरह उनको वहबातें सिखाई जानी अवश्य होती हैं यहीबात कभी २ आकर्षण की निद्रावस्था में

लिखना और पढ़ना वह बातें उसका आकर्षणकी स्वप्नावस्थामें बच्चोंकीतरह सिखानीपड़ती हैं परन्तु यहबातें सर्वदा नहींहोती हैं और बलात्कारसे ऐसीबातोंके उपजाने की आशा नहींहोती॥

यह दूना ज्ञान कम या ज़ियादह आकर्षण की क्रिया का आश्चर्य दायक प्रभाव है और जाकि यहबात सुगमतासे देखी जा सक्ती है तो जो हमको धारक की सत्यता में निश्चय हो तो जिन मनुष्यों को इसविद्या के सत्यहोने में संदेह है परन्तु खोजने की अभिलाषा रखते हैं उनको उचित है कि इस विचित्र प्रभाव के उपजने की सत्यता देखलें कि उनको आकर्षण की क्रिया में विश्वासहो प्रकट है कि जो हम धारक को हरबात में निश्चय करके झूठ समझलें तो मुख्य ज्ञानकी दशाकेलियेभी कुछठीक बात मालूम नहीं होसक्ती॥

यद्यपि धारक की आंखें बन्दहोती हैं परन्तु किसी बस्तुकी ओर उसका ध्यान लगायाजावे तोवह इसतरहपर उसकोवार्त्ता करता है कि मानों वह उसको देखता है बहुधा सोनेवाला उनके देखने के लिये यत्न करताहुआ मालूम होता है परन्तु उसकी आंखें और भी अधिक दृढ़ता पूर्बक बन्द होतीजाती हैं परन्तु बहुधा सोनेवाला उसबस्तुको हाथ में लेकर टटोलताहै और चाहेतो इसकारण कि उसकी स्पर्शन शक्ति तीक्ष्णहोजातीहै चाहे किसी और कारणसे उसकी इसतरहपर वार्त्ता करताहै कि मानों उसको आंखोंसे देखरहा है कभी ऐसा होताहै कि उसबस्तु को अपने माथे या शिर के ऊपर या पीठपर रख लेता है और तब उनका हाल वर्णन करता है प्रायः जो वह ऐसा न करे और कारक उस वस्तुको धारक की बन्दआंखोंके सामने रक्खे तो वह वर्णन नहीं करसक्ता है धारक इसतरह बातें करता है कि मैं इसबस्तु को देखरहाहूं और उसके अनु-

मानसे ऐसामालूम होताहै कि जो आंखकीज्योतिकी नाड़ियां छिपी हैं उनके बर्त्तने में प्रयत्न करता है बहुधा यह प्रयत्न उ-सका काममें आताहै कभी २ मुख्यछोटी स्वप्नावस्था में ऐसा भी होता है कि उसको इसकाम में कठिनता होती है मुख्य करके इस प्रभाव के प्रकट होने के प्रारम्भ में परोक्ष दर्शित्व पायाजाता है और परोक्ष दर्शित्व वह लक्षण है जो आकर्षण की स्वप्नावस्था की बड़ी दशाओं में उपजता है जिस दशा का मैं अब वर्णन कररहा हूं इसमें यहबात अवश्य है कि जो बस्तु देखने के लिये रक्खीहो वहपास किन्तु धारक के शरीरसे मि-लीहो परोक्षदर्शक का वर्णन इतना विस्तारसे है और उसके रूप इतनेबहुत हैं कि मैं उनका वर्णन अलग करूंगा और यह लक्षण जैसा कि ऊपर वर्णन कियागया आकर्षण के स्वप्न की बड़ीदशा में उपजता है छोटी और बड़ी दशा में इतनाअन्तरहै कि बड़े में परोक्षदर्शित्व के लक्षण और विचार का संयोगपाया जाता है और छोटेमें यहबात नहीं पाईजाती है और बड़ीसेबड़ी वह दशा है कि जब मनुष्यों की इन्द्रियों की शक्ति बिल्कुल जातीरहे परन्तु इस बहुतबड़ी दशाको कभीअबतक मैंने अपनी आंखों नहींदेखा है बहुधा ऐसाहोता है किजब धारकपरक्रिया कीजावे तो उसपर अकस्मात् बड़ी दशा होती है और छोटी दशाकेचिह्न उसमेंनहीं पायेजाते चाहे प्रारम्भमें छोटीदशाभी उसपर बलवान् हुईहो बहुतसे बड़ीदशा के लक्षण ऐसेभी पाये जाते हैं जो छोटी दशाओंसे संबंधित हैं परन्तु हां उनपर लोगों को उसदशामें ध्याननहींहोता क्योंकि जो परोक्षदर्शन की दशा और विचार संयोग के लक्षण बहुत अच्छीतरह प्रकट होते हैं उनपर ध्यान जमाहोता है जैसाकि मैंने ऊपर वर्णन किया इन दशाओं का वर्णन अलगकिया जावेगा और परोक्षदर्शित्व की

दशा को मैंतो प्रकाशित दशा भी कहाकरूंगा मैंने परोक्षद-
र्शित्व दशाका तो कुछ २ वर्णनकिया है अब मैं उन लक्षणोंका
वर्णनकरताहूं जो परोक्षदर्शित्व दशा विना प्रकटहुये हैं यद्यपि
वहलक्षण प्रकाशित दशामेंभी प्रकटहोते हैं तो जैसा मैंने परोक्ष
दर्शनावस्था को प्रकाशित दशा ठहराया है ऐसाही जबपरोक्ष-
दर्शनकेलक्षण प्रकट नहों उसदशा को अन्धकार दशालिखूंगा ॥

बहुधा ऐसा होता है कि कारक के शब्दके सिवाय धारक
किसी का शब्द नहींसुनता है परन्तु यहबात सदानहीं होतीहै
मैंने बहुतसे मनुष्य जिनपर क्रियाकीगई है ऐसेदेखे हैं कि जो
विद्यमान मनुष्यों में से कोईबातकरे उसको वह उत्तर देते हैं
चाहे वह धारक के शरीरसे मिले न हों या जानकर उसको
धारकसे संयोग न करायाहो—कईबेर ऐसी दशा में यहहोता है
कि चाहेतो आप चाहे कारक की इच्छासे चाहे इसतरह पर कि
कारक धारकपर प्रसिद्ध युक्तिसे फिर क्रिया करे धारक छोटी
दशासे बड़ीदशाको बदलजाताहै और कारकके शब्दके सिवाय
और किसी का शब्दनहीं सुनता किन्तु एकदशामैंने एक मनुष्य
पर ऐसीदेखीहै कि जब धारक अपने प्रकाश मान दशा में आ-
गया तो वह कारकका शब्दनहीं सुनताथा परन्तु उसदशामें कि
धारकने अपनेमुखको धारकको उंगलियोंकेशिरों से लगायाऔर
उंगलियोंके शिरोंकेद्वारा धारकसे बातेंकीं थोड़ीसी देरके पीछे
धारक चौंकपड़ा और फिर उससे प्रश्न कियेगये तो पहिले की
तरह अच्छीतरह उत्तर देतारहा इस धारककी यह दशाथी कि
कोईमनुष्य उससे कोईप्रश्न नहींकरताथा परन्तु वह अपनेआप
बहुतसी बातोंका वर्णन करताथा जो उसको दिखाई देती थीं
और चाहे उसके कानमें बहुत शोरकिया गया और तपंचा भी
उसके कानकेपास छोड़ागया परन्तु उसे कुछ मालूम न हुआ

और जो वर्णन वह कररहाथा बराबर यहकहतारहा और किसी प्रकारकी हानि उसकी वार्त्ता में न हुई इस धारककी दशाथी कि जो मनुष्य चाहता था उससे बातचीत करताथा तथाच मैं एक दो घंटेतक बराबर वार्त्ता करता रहा—कईदशाओं में जो इस धारककी दशामें मिलानहोताहै तो यहबात अवश्यहोतीहै कि चाहे उस मनुष्यका शरीर जो धारक से वार्त्ता करनीचाहै धारकके शरीरसे छुवानाचाहिये चाहे कारक उस मनुष्य और धारक में मनका संयोग नियतकरदे नहीं तो धारक उसमनुष्य की बात नहींसुनता न उसको उत्तरदेताहै कईधारकों की यह दशाहोतीहै कि जो हम उनसे बातचीत करनीचाहैं तो हमको उनकेशिर या पेटसे बातकरनी चाहिये इन दशाओंके खण्डोंमें बहुत अन्तर है ॥

बहुधा ऐसाहोताहै कि चाहे धारक हरएक मनुष्य की बात सुनताहै और हरएकको उत्तरदेताहै परन्तु कारकको अधिकार है कि जबचाहै मुखसे कहकर वा अपनेजीमें कहकर तुरन्त यह बात नष्टकरदे सो ऐसा भी होताहै कि जबहम किसी नये मनुष्यपर यहक्रिया कररहेहैं और गलीमें शोरहोरहाहै तो हम उसको आज्ञा देसक्तेहैं कि वह शोर और गुल नहींसुने और इससे आकर्षणका स्वप्न जल्दी पैदा होसक्ताहै परन्तु यहबात तबहीं होसक्तीहै कि जब हमको प्रारम्भ में धारककी इन्द्रियों पर अधिकार प्राप्त होजावे आगे मैं वर्णन करूंगा कि यह अधिकार धारकपर ऐसी दशा में भी होसक्ताहै कि जब उसपर स्वप्नकी दशा न आवे किन्तु जागतारहै ॥

बहुधा ऐसाहोताहै कि सोनेवालेको दुःखनहीं मालूम होता अर्थात् जिसतरह उसको शब्द सुननेको चेतनहीं रहता उसी तरह जो उसके शरीरको छुवाजाय या और किसी प्रकारका

स्पर्श उसके शरीरपर कियाजावे तो उसको मालूम नहींहोता जो यहबात अपनेआप नहीं पैदाहोजावे चाहे बहुधा मनुष्योंमें ऐसीदशा अपनेआप उपजतीहै तो कारककी इच्छासे चाहे वह कहे या न कहे यहबात पैदाहोसक्तीहै बहुत कारक जो आकर्षणसे स्वप्न पैदाकरसक्ते हैं इस हालको नहीं जानते और इस सबबसे उनको यह विचार होताहै कि उनका धारक दुःखसे बेखबरनहीं बनाया जासक्ताहै मेरी बुद्धिमें अबयहबातमानीहुईहै कि जैसे इस बातकी और रीतियां हैं कि मनुष्य को दुःख से बेखबर बनावें उनमें यहरीति सबसे अच्छी है और ऐसीहै कि उसमें किसी प्रकारकी हानि नहीं जो आकर्षण की क्रिया से अज्ञान उत्पन्न होताहै उसका यहहालहै कि होशआने के पीछे कुछ अप्रसन्नताके लक्षण उत्पन्न नहींहोते इसके विरुद्ध जितने धारक मैंने देखे हैं उनको जाननेके पीछे पहिलेसे उत्तम पायाहै कभी२ ऐसाभी हुआहै कि जब सोनेवाला जागा तो वह अप्रसन्न मालूमहुआ किन्तु निद्रावस्था में उसको दुःखहुआहै और ऐसाभी हुआहै कि उसको स्वप्नसे जगाना कठिन मालूम हुआहै परन्तु यह सर्व परिणाम कारक के अनभ्यास से उत्पन्न होतेहैं अर्थात् उसने बुद्धिकी हीनतासे ऐसीदशा उपजाईहै कि जिस पर उसको अधिकार नहींरहा ऐसीदशा केवल उससमय होती है कि जब अभ्यासहीन कारक केवल कौतुक देखने को आकर्षणस्वाप उत्पन्न करते हैं उनको क्रिया के चलजाने की आशा नहीं होतीहै तो उसके चलजाने के कारण आश्चर्य होताहै बरन कुछ डरजातेहैं और जबवह सोनेवालेको जगानाचाहते हैं और देखते हैं कि वह कुछभी उनकीबात नहीं सुनता औरनहीं जागता तो फिर वह कारक डरते हैं और घबड़ाते हैं यहउनकी प्रकृति कीदशा विचार संयोगकी ओर धारकपर बदल जातीहै

और उससमय धारकको दुःखहोताहै किन्तु उसको ऐंठन उत्पन्न होजातीहै इससे कारक और भी अधिक भयमान होताहै और धारककी चेष्टा बिगड़ती जातीहै जब अधिक बुरीदशा होतीहै तो डाक्टरसाहब बुलाये जातेहैं जो डाक्टरसाहब भी ऐसे इस विषय के अनभ्यासी होतेहैं और जो कुछ विचार वह इसविषय में करतेहैं कि सोनेवाला जागजावे उनविचारोंसे केवल हानि- हीहोजातीहै जब कभी ऐसीदशा हो तो दोतीनबातें यादरखनी चाहिये सबसे अच्छीबात तो यहहै कि जबतक कोई अभ्यास वान् कारक समयपर न आवे तबतक कभी यहक्रिया किसीपर न करनी चाहिये कदाचित् जोकीभीजावे तो यहबात याद रखनी चाहिये कि आकर्षणका स्वप्न जो होता है सर्वदा उप- योगी होताहै और दूसरे यह कि जो जगाने की रीति ठीक मालूम नहो तो जल्दी और घबराहट के जो विचार जगानेका कियाजावेगा उससे हानिहोगी और ठीक जगानेकी रीतियहहै कि जिस युक्ति से क्रिया कीगईहै उसके विरुद्ध क्रिया करनी चाहिये अर्थात् क्रिया करनेका उपाय यहहै कि शिरसे और चेहरेसे पेटतक हाथ धारकके शरीरसे उतारेजावें और अमलके उतारने की रीतियहहै कि पेटसे मुख और शिरकी ओर उल्टी तरहपर हाथ उतारेजावें कारक को उचितहै कि अपने जीको अपने आधीनरक्खे और उल्टी युक्तिकरे किसी मनुष्यको हाथ न लगानेदे क्योंकि आकर्षणका बुराप्रभाव अतिहानिकरताहै दूसरे यह कि जो कारक उल्टी युक्तिसे अमल न उतारसके तो सबसे अच्छीरीति यहहै कि सोनेवालेको उस समयतक सोनेदे कि जबतक वह अपने आपजगे कदाचित् यहक्रिया कीजावे और सोनेवाले से कुछ छेड़ानजावे तो इसक्रिया में कुछ हानि नहीं कभी२ ऐसाहोताहै कि सोनेवाला तीन याचार या बारह

या चौबीस बरन अड़तालीस घंटेतक सोताहै परन्तु जो उसको बिनाछेड़े सोनेदें तो ऐसा कभी होताहै कि एक या दोघंटेसे अधिक सोवे जिनदशाओं में स्वप्नावस्था देरतक रहतीहै उनमें छेड़छाड़ और दूसरी युक्तिकीजाती है यहबात बहुतबुरीहै इसमें छेड़छाड़ न करनीचाहिये सबसे अच्छीरीति यहहै कि नाड़ीको देखें और श्वासको अवलोक न करें तो मालूमहोगा कि सोनेवाले को कुछ दुःखनहींहै और किसीप्रकार की हानि उसको नहीं पहुंचीहै और निश्चयहोगा कि जैसे साधारण निद्रा हानिदायक नहींहोती और अनुचित समयतक स्थिर नहींरहती वैसेही आकर्षणका स्वप्न न हानिदायकहै न समयतक रहताहै॥

परन्तु हां मैं इसबातका वर्णन कर रहा था कि धारक की दशा ऐसीही होसक्तीहै कि उसको दुःखका चेतनहीं होता और मैंने वर्णन कियाथा कि जहांतक यहबात स्वीकारहो यह आकर्षणकी क्रियाका करना सबसे उत्तममार्गहै वास्तवमें इसक्रिया में कुछ भी हानि नहीं और धारक को अधिकारहै कि जबतक उसकी इच्छाहै तबतक यहअचैतन्यतारहे और दूसरीबेर क्रिया करने की आवश्यकता नहीं होती मैं बेशोचे यहबात कहताहूं कि जो धारक अभ्यासवान हो तो कुछभी हानि नहीं होती परन्तु एक कठिनता होती है कि हम सदा निद्रा उपजा नहीं सक्ते हैं और जब कोई दुःख किसी पर अकस्मात् पहुँचे तो इतना समय नहीं होता कि देरतक क्रिया कीजावे परन्तु जो अभ्यासवान् कारकहो और इस क्रियाका प्रचार बहुतहो तो अकस्मात् निद्रा पैदा होसकेगी यहबात अवश्यहै कि इंगलिस्तानके मनुष्योंपर यहक्रिया इतनीजल्दी नहींचलतीहै जितनी जल्दी और देशके मनुष्योंपर चलती है डाक्टर असडेल साहब कलकत्ते में बहुत मनुष्योंपर क्रियाकरते हैं वह कभी निष्फल

नहीं होती परन्तु कभी २ फरंगिस्तान के मनुष्यों पर अमल नहींचलता और इस मार्ग से उक्त डाक्टरसाहब ने जर्राही के बहुतसे काम इसतरहपर किये हैं कि उनकोदुःखनहीं होता-- उक्त डाक्टरसाहब की सहायताके लिये बहुत से हिन्दुस्तानी कारकहैं और यह सहायक क्रियाकरते हैं और कभी नहींचूकते इंगलिस्तानमें इतनी सिद्धि नहींहोती॥

इनदिनों हमको इस क्रियामें अच्छीशक्ति प्राप्तनहीं है परंतु हमको उचित है कि हर मनुष्य पर उसकी परीक्षा लें हमको चाहिये कि पुरानी बीमारियां और प्रसूतके कुछ समय पहिले रोगिनी और गर्भवती स्त्रियोंपर इस क्रियाको करतेरहें कि जब आवश्यकताहो तुरन्त अमल चलजावे यह बात होसक्ती है कि आरोग्य मनुष्योंको उपदेशकियाजावे कि यहक्रिया अपनेऊपर होनेदिया करें कि आवश्यकतापर कामआवे और इनसबबातों के विशेष यहबात होसक्तीहै कि ज्यों२ इस विद्यामें बहुतखोज होताजावे ऐसामार्ग मालूम होताजावे जिससे हमारीआकर्षण शक्तिका बल दिन२ बढ़ताजावे यहांतक कि जब जी चाहे उस समय इस क्रिया का प्रभाव होजावे--कई कारकों के खोज से मालूमहोताहै कि यह आकर्षणशक्ति का बल अधिक प्राप्तहोना कुछविचारी नहींहै--बरन उत्तम यहमालूमहोताहै कि जबछोटी उमरके बच्चेहों उनपर इसक्रियाका कियाजाना प्रारम्भ किया जाता कि ज्यों २ उनकीआयु बढ़तीजावे वह इसयोग्य रहें कि उनपर क्रियाहोसके हम बच्चों को इसलिये तैरना सिखाते हैं कि सययपर जलकी हानि से बचेरहें इसीप्रकार इसक्रिया का प्रभाव उनपर होतारहे तो बहुत अच्छीबातहो कि जब आ-वश्यकताहो तो उक्तक्रियाकामआवे यदि एकबार उनपर अमल होजावे तो फिर उसकाप्रभाव सुगमतासे स्थिररखसक्ते हैं जो

हम ऐसाकरें तो केवल यही बात प्राप्त न होगी कि जिनपर यहक्रिया कीजातीहै उनको लाभहोतारहै बरन जब इसक्रिया कीअधिकता होजावेगी और बहुतधारक होजावेंगे तो बहुतसी बातें और अधिक इसविद्याकी मालूमहोतीजावें और इसविद्या की बहुतवृद्धि होगी अगलेपत्रमें भी मैं आकर्षणक्रियाके लक्षणों कावर्णन करूंगा ॥ ——*——

पांचवां पत्र ॥

सोनेवाला बहुधा इसविषय में कारकके वश में होता है कि कबतक सोवे कारक को अधिकार है कि धारक के सोनेका समय नियतकरदे चाहे थोड़ा चाहे बहुत और जो धारक उस समयतक सोनेकीप्रतिज्ञाकरे तो बराबर उससमयतक सोवेगा यहांतक कि पलकाअन्तर न पड़ेगा जब वहसमय पूराहोजावे-गा तो सोनेवाला अकस्मात् जागपड़ेगा और तुरन्तही क्रिया का प्रभाव किसी उपायबिना जातारहता है इस में कारकका अधिकार प्रकटहैमुख्य उसदशामें जब धारकको कुछदुःखहो या जरोंही क्रियाकाकरना उसपरचाहें परन्तु जो कारक कोईसमय नियतनकरे तोसोनेवाला अपनेआप जागजाताहै परकोईबहुत देरतक और कोई थोड़ीदेरतक सोताहै नियमकीबात यहहै कि घंटे दोघंटेतक सोते हैं किसीसमय मुख्य करके उसदशा में कि सोनेवाले से बहुतसे प्रश्न कियेजावें और उसको उत्तर देने में बहुत प्रयत्न करनापड़े धारक कहताहै कि मैं थकगयाहूं और कहताहै कि मुझे जगादो ऐसीदशामें सबसेउत्तम यहबातहै कि उसकी प्रसन्नता करदें और उसको थकावेंनहीं क्योंकि अधिक परिश्रमसे उसको हानिपहुँचतीहै सोनेवालेको यहशक्ति प्राप्त होती है कि जब उससे पूछाजावे कि कबतक सोता रहेगा वह

ठीक समय बतादेताहै और यहशक्ति उसको दोनों दशाओं में प्राप्तहोतीहै अर्थात् उनदशाओंमें कि चाहे कारकनिद्राकासमय नियतकरदे या न करदे जो थोड़ो २ देरकेपीछे उससे पूछाजावे कि अब कितनीदेर बाक़ीरहीहै तो जितनीदेर बाक़ी रहीहोगी ठीक२ बतादेगा यह आकर्षणकी क्रियाका प्रभाव अतिप्रकटहै इसलिये कि इसशक्तिकी प्राप्तिमें हमको भविष्यत् अवलोकन के लक्षण प्रकटहोते हैं मुख्यकरके उसदशामें कारक के सोनेके लिये कोई मुख्यसमय नियत न कियाहो कईधारक ऐसे होते हैं कि उनको सिवाय उसके और भविष्यत् अवलोकन की शक्ति प्राप्त नहीं होती यदि नानाप्रकारके सोनेवालों से पूछाजावे कि तुम क्योंकर जानतेहो कि इतनासमय सोनेका शेषरहगया है तो एक अन्यमार्ग इसके जानने का बताते हैं परन्तु बहुधा यहकहते हैं कि हमको मिनटोंकी संख्या कि जितने समयतक हमको सोनाहै आंखोंके सामने दिखाईदेतीहै और उसके द्वारा हम जानजाते हैं जब मैं परोक्षदर्शित्व का वर्णन करूंगा उसमें एक धारकके वर्णनका बिस्तार जिसपर मैंने आप क्रियाकीथी लिखूंगा जो २ वह कहताजाताथा मैं लिखता जाताथा बहुधा ऐसाहोताहै कि जब पहलीहीबेर किसी मनुष्यपर आकर्षणका स्वप्न पैदा कियाजावे और अधिकतर उसदशा में कि कईबेर उसपर यह क्रिया होचुकीहै तो जो उससे पूछाजावे कि सबसे उत्तम रीति और युक्ति तुमपर क्रिया करनेकी कौनसी है तो वह बतादेता है और यह भी बतादेता है कि जब क्रिया हो जावेगी तो कौन २ शक्ति उसको प्राप्तहोगी और कब मुख्य २ लक्षणप्रकटहोंगे धारक ठीक२ बतादेताहै कि कोई मुख्यलक्षण उपजने के लिये कितनी बेर उसपर क्रियाकरनी चाहिये और यह भी कि उक्त क्रियाओं में एकबार या दोबार या दो दिनमें

इसीतरह कितने २ समय के उपरान्त करनी चाहिये यह भी एक भविष्यत् वाक्य का लक्षण है और बड़ीदशा में यहहाल होताहै कि धारक कई वृत्तान्त पहलेही कहदेता है जैसे वह बतादेताहै कि कोईरोग उसको कबहोगा और कबतक रहेगा परन्तु यहभी परोक्षदर्शित्वावस्थामें वर्णन कियाजावेगा ॥

यद्यपि सर्वप्रकार से धारक को जागने के पीछे निद्रावस्था का वृत्तान्त याद नहींरहता परन्तु यहबात सदा नहींहोती है किसीको कुछ २ और किसीको सब हाल याद रहताहै परन्तु उसदशामेंभी धारकको अपनेआप निद्राकाहाल याद न रहता हो कारक को अधिकार है कि उसकोनिद्रा के अन्तर्गत आज्ञा दे कि चाहे सब या थोड़ासाहाल यादरक्खे तो जबवह जागेगा तो इसआज्ञा के अनुकूल सब या थोड़ाहाल उसको यादरहेगा मैंने यह वर्णन उस जगह करदियाहै जो दूने ज्ञान का वर्णन कियाथा यहां फिर इसलिये लिखाजाताहै कि इससे कारकका अधिकार धारकपर सूचितहोताहै आकर्षणक्रियाकी परीक्षामें यहबात बहुधा सम्बन्धित होतीहै कि धारकको अधिकारदिया जावे कि स्वप्नावस्था में जो कुछहुआहै उसमें से कई बातें याद रक्खे और निश्चय है कि उन दशाओं में जिनमें धारक अपने आप स्वप्नकाहाल याद रखताहै जो कारक चाहै तो यहअधि- कार उसकोप्राप्तहोगा कि धारकको सब या जितनाचाहै उतना भूलजावे यह बात भी प्राप्त होनी उचित मालूम होती है मैं इसबात का वर्णन करचुकाहूं कि जब धारक सोता है उस को भविष्यत् स्वप्नों से एक संयोग होता है और उनका वृत्तान्त अपनी स्मरणशक्ति के अनुसारयादरखताहै निश्चयहै कि जिन मनुष्योंपर स्वप्न जाग्रतअवस्था आकर्षणक्रिया के बिना होती है उनको ऐसी पहलेकी दशाकाहाल यादरहताहोगा परन्तु सूक्ष्म-

को अच्छी तरह मालूम नहींहै कि यह बात अच्छी तरह मालूम हुईहै या नहीं ॥

यह बात जोकि धारककी पाई जातीहै कि जागनेके पीछे किसीको सब और किसीको थोड़ा हाल नींदका याद रहता है या भूलजाताहै दूने ज्ञानका परिणामहै परन्तु यहबात उसबिषयसे बिल्कुल अलगहै कि कारककी आज्ञासे धारकका स्मरण सबनष्ट होजावे आगेमैंइस बातका वर्णन करूंगा कि धारककी स्मरण शक्ति सबकारकके अधिकारमें होतीहै तथाच कारक को अधिकारहै कि जो बातधारक बिना कारककी इच्छा याद रक्खेउसकोअपनी इच्छासे भुलावे कारकयहांतक भुलासक्ताहै कि धारक केवलयहबातभूलजाताहै कि पहलेके स्वप्नोंमें क्या २ हुआथा बरनयहांतकउसकोविस्मरणहोताहै कि उसपर कुछभी पहले आकर्षणकी क्रियाहुईही न थी और कभीपहले सो याही नहीं सोनेवालाबहुधा अपने आप अपना नामभी भूल जाता है जो अपने आप न भूलजावे तोकारककोअधिकार है कि अपनी इच्छासे भुलादे यहएक और सिद्ध प्रमाण इस बातका है कि कारकको अपनेधारक पर अधिकार होताहै ॥

एक और प्रमाण कारकके अधिकारका यहहै कि जो चाहै तो धारक पर यह दशा उपजावे कि धारक न अपना हाथ न टांगहिलासके न बोलसके न उठ सके और न बैठसके कारकको अधिकारहै कि धारककी यहदशाहो कि जब कारकचाहे धारक केहाथ पैर अकड़जावै और जबचाहे यहऐंठन जातीरहै निदान कारक को धारककी रगरगपर और हर पट्ठेपर जो हिलसके पूर्ण अधिकार होताहै ॥

कारक धारकमें यह बात पैदाकर सक्ताहै किजो बातकारक करे और जिस तरहका शब्द उसकाहो धारक उसकीपरीनकल

उतारदे यदि कारक अरबी या तुरकी या अंगरेजी बोले और बोले भी इस तरह कि बहुत जल्दीसे तो चाहे धारक इनभाषा-ओंमेंसे जानता भी नहो वैसीही भाषा बोलता जावेगा और ऐसीठीक नकल करेगा कि सुनने वालोंको बहुधा कुछभी विवेक न होगा यदि कारक हँसताहै तो धारक भी तुरन्त हँसताहै यदि कारक किसी तरह हिलेतो वैसाही धारक भी हिलताहै और वह उसदशामेंही हिलताहै कि जबउसकी आंखेंबंदहोतीहैं और कारकभी उसकेपीछे खड़ाहोताहै कि जहांउसकी आंखेंखुलीभी होतीं तोभी उसकोदेख नहींसक्ता जबसोनेवालाजागजावे और इससेकहा जावे कि कारककीनकलकरे औरउसको शोचविचार के लिये समयभी दिया जावे तौभी उससेनकल नहींहोसक्ती॥

बहुधा ऐसा होताहै कि धारक निद्रा अवस्थामें कारक के सिवाय और किसीकी आवाज नहींसुनताहै या जोहिलाया भी जावे तो उसकोखबर नहीं होती परन्तु कारकको अधिकारहै कि यह बात अपनी इच्छा से दूरकरे और किसी मनुष्य के साथ धारकका संयोगकरदे बहुधा यह बात इस तरह पैदाहोतीहै कि कारक किसी मनुष्यका हाथ धारकके हाथसे मिलावे कईदशा-ओंमें ऐसा होता है कि कारकको धारकसे इसबातके कहने की आवश्यकता होतीहै कि अमुक मनुष्य के साथ बात करो और आज्ञामानो और जब यहबातकही जातीहै तो फिर उसमनुष्यमें और धारक में वैसाही संयोग होजाताहै जैसा कारकके साथ पहलेथा बहुधा ऐसाहोताहै कि जबइस अन्यमनुष्यके साथ सं-योगहोगयाहोतो फिर इसबातकी आवश्यकता होतीहै कि वह कारकको धारक सौंपदे नहीं तोकारककेसाथ संयोग नहींहोता जबएक मनुष्यसे दूसरेकीओर धारक इसतरहपर बदलदिया-जाताहै तो वह चौंक पड़ताहै जाग नहीं जाता॥

कारकको अधिकारहै कि धारकके विचार और इच्छा और उसकी प्रकृति के झुकावको प्रकाशित और उच्चाटनकरदे और यह बात भी कई रीतियोंसे होतीहै चाहे कारक सामुद्रिकविद्या से यहबातकरे वा केवल अपनी इच्छाके प्रकट करने सामुद्रिक विद्याका पीछे वर्णन किया जावेगा कारकको अधिकार है कि धारकको प्रसन्न वा उदास और उदार वा कृपण वा अहंकारी वा स्थिरचित्त वा वीर वा डरपोक वा निराश वा ढीठ जैसाचाहेकरे चाहे यहलक्षण उपजावे कि धारक गानेलगे या रोनेलगे या नाचनेलगे या बंदूक चलानेलगे या मछलीका शिकारकरनेलगे यानिमाज़पढ़नेलगे या उपदेश कहे या विद्याका विवाद करे यह सबबातें कारक धारककी इच्छासे कर सक्ताहै तथाच मैंने इन बातों को होते बहुधा देखा है बरन आप उपजाईहैं मैंनेएक धारकको इस क्रियाके विषय शिक्षा देते और आरोग्यताकोभी सुनाहै मैंने कई धारकों के मुख से बहुत अच्छी निमाज़ और काव्य युक्त वर्णन सुनेहैं और विचित्र यहहै कि जब वह जागे वैसा वर्णन उनसे न होसका आगेवर्णन कियाजावेगा कि यह सब बातें उस दशामें भी उत्पन्न होसक्ती हैं कि जब धारक पर निद्रावस्था न हो बरन जाग्रतहो मैंनेभी इन परीक्षाओंमें देखा है और दूसरे लोगोंसे भी सुनाहै कि इन दशाओं में धारक का शब्द और उसका स्वरूप बहुत अच्छा होता है और जो कुछ कहना चाहता या शरीर से किया चाहताहै वह पूरी तरह से करताहै अहंकार, नम्रता, भय, कृपा, दीनता, चिन्ता और जो२ विचार उसके मनमें आतेहैं औरउन विचारोंके कारण उसका शरीर हिलताहै और डौलसे वह विचार प्रकट होते हैं ऐसी उत्तमतासे पूरेहोते हैं कि तसवीर खींचनेवालोंको चाहिये कि उनको ध्यान और विचार से देखें कि उसी रीतिसे अपनी तस॰

वीरोंको बनावें और विचित्रता यह है कि यह सब रीतें उन मनुष्यों में भी देखीहैं जो मूर्ख हैं और जो उनको जगाकर उनसे फिर करनेको कहे तो वह बातें कभी उनसे नहीं होती हैं मैंपहिले वर्णन कर चुकाहूं और अब फिर कहताहूं कि जो धारक उत्तम बुद्धि रखते हैं उनकी रीतें आकर्षण के स्वप्नमें उत्तम तर होजाती हैं और सिवाय इसके जो उनके उत्तम विचारोंको जान बूझकर उच्चाटकिया जावेतो मुखकी सुन्दरता और शरीरके हिलने और स्वरूपमेंऐसी विचित्रता और सफ़ाई और गुरुत्व पाया जाताहै कि आजतक बड़े २ तसबीर खींचने वालोंमें से किसीने ऐसा अलंकार और सुन्दरता न खींची न किसीकी समझमें यह सौंदर्य आतेहैं जो सब तसवीर खींचने वाले जानते जैसा कोई २ जानते हैं कि आकर्षण के लक्षण तसवीर खींचने वालोंके वास्ते ईश्वरकी प्रेरणाहै तो वह घंटों तक उनको देखते रहते और उनकी प्रति उतारते निश्चयहै कि कई मुसव्विर जो पूर्व समय में नामी थे उन्होंने ऐसा किया हो हर तरह जो बड़ी २ पुस्तकें देखी जातीहैं तो मालूम होता है कि ऐसीही आकर्षण क्रिया की बातें हैं चाहे वह पूरी प्रतियां नहीं मुझको निश्चय है कि जिस तरह अब बड़े २ मुसव्विर जोड़ों की शकलों के खींचने के लिये नग्न शरीर को देख कर प्रति उतारते हैं उसी प्रकार अलंकारकी प्रति उतारने के लिये आकर्षण क्रियाके प्रकटहुये लक्षणोंको देखा करेंगे तथाच मेरे ज्ञानमें एक बेर ऐसा हुआ कि एक जगह एक आकर्षणकी क्रिया कारक एक धारक परक्रियाकररहाथा और एक प्रसिद्धचित्रकार जिसको मूर्त्तोंके बनानेका अच्छागुण था वह मौजूदथा उसने जोधारकके मुखका सौंदर्य देखा तोकारकसे यह सम्मतकी कि एकनियमित समयपर आगेको फिर

क्रिया करे किएक बहुतप्रसिद्ध मुसव्विर उसको देखकर उसके अनुसार मूर्ति खींचे अब तक उसकी यह इच्छा इसकारणपूरी नहीं हुई कि मसव्विर और दूसरे लोग जो आने वाले थे वह बहुत दूर रहतेहैं मैंने एक स्त्री पर जिसकी चौदह पन्द्रह वर्ष की आयुथी यह क्रिया होतेदेखी उस लड़की के माता पिता धनहीन थे जब उसपर क्रियाके चिह्न प्रकट हुये तोउसकेमुख की बनावटऐसीसुन्दर मालूम होतीथी कि मैंउसका वर्णननहीं कर सक्ता संसारमें ऐसी सुन्दरता नहीं जोहोतीहोगी तो स्वर्ग में होतीहोगी यह सुन्दरता अधिक करके उस समयप्रकट हुई कि जब उसके शुद्ध बिचार उठायेगये और कुछगानाशुरूहुआ और उसके मुखपर ऐसा प्रकाशमान रूपथा किदेखना तोक्या मेरेबिचारमें कभी नहीं आया था जो सामुद्रिक विद्या की रीति सेशिर और भेजे बड़े बिचारोंके स्थानहैं वह इसस्त्रीके शिरऔर भेजे में अच्छी तरह प्रकट थे और जो २ स्थान नीचे के स्थान में हैं वह कम प्रकटहुये॥

निदान इन आकर्षणके लक्षणों में विशेषता यहहै कि बहुत सच्चे चिह्न होतेहैं और आश्चर्यहै कि उनके सच्चे होनेकोबहुत लोग जो पहिली बेरही उन्हें देखतेहैं इस बात का प्रमाण जानतेहैं कि यह चिह्न मुख्य करके बनेहुये होतेहैं यदिधारक शिक्षा पाया न हो तो चाहे निद्रावस्था में उसके डौल और रीतोंसे अलंकार और वृद्धि पाईजाती है कुछ न कुछ बात ऐसी बाक़ी रहतीहै कि उसका कुपढ़ होना सूचित होता है जब ऐसे मनुष्यपर क्रियाकीजातीहै कि जो शिक्षा पायाहो तो ऐसेसुन्दर और अच्छे चिह्न प्रकटहोतेहैं किसब देखनेवाले प्रसन्नहोतेहैं॥

एक बात ध्यान करने के योग्य है कि आकर्षण स्वप्न की

हैजितने मनुष्यों पर मैंने क्रिया होतदेखी है मैंने देखा है कि उनके मुख प्रकाशमान होजाते हैं और जैसा रागगायाबजाया जाता है वैसाही उनका डौल बदल जाताहै जो नाचकाबाजा होतो धारक नाचने लगता है कदाचित् धारक शिक्षापायेहुये समूह में से हो तो उसके नाचनेमें एक सुन्दरता पाईजाती है यदि शिक्षा पाया न हो तो अक्खड़पन होताहै मैंने यहलक्षण दोनों समूहों अर्थात् सीखेहुये और न सीखेहुये पर देखाहै चाहे मुख्यदशामें उन्होंनेनाचनानहीं सीखाथायदिऐसेमनुष्यहों कि उनको वास्तव में कुछ गानविद्या का ब्यसनभी न हो तौ भी आकर्षण के स्वप्न में यहलक्षण उनके प्रकट होते हैं ल्यूससाहबकी परीक्षाओं मेंसे यहभी मालूम होताहै कि जिन मनुष्यों पर पहिलेहीक्रिया की जावे जो रागभी साथही गाया और बाजा बजाया जावे तो आकर्षण निद्रा सुगमता से उपजसक्ती है तथाच यहबात लिखी चलीआती है कि जादूगर सदाराग को अपनी क्रियाका एकखण्ड समझते हैं जब जादूगर यह चाहताथा कि अपने धारक को रूप दिखावे अर्थात् आकर्षण का स्वप्न जाग्रत अवस्थामें प्राप्त करे तो सदा राग और धूनी देना अपनी क्रियामें एक उसका खंड समझताथा॥

केवल इतनीही बातनहींहै कि जिस २ तरहके बिचारधारक के मनमें उठाये जाते हैं उनके अनुसारही उसके शरीरकाडौल और क्रिया हर तरह पर होजाती हैऐसीही जैसी मुख्य होनी चाहिये बरन यह सच्चापन हर बात पर जोकुछ वह मुंहसे कहे ठीक आता है यदि उससे ऐसे प्रश्न किये जावें जिनको वह निश्चय करके ऐसा समझता है कि जो कुछ वह देखरहा है और जो कुछ उस पर होरहा है उससे बाहर है तो वह सदा उन प्रश्नों के उत्तर देने से इन्कार करता है देखनेवाला बहुधा

न जानकर और उसके मतलबों को न समझने के सबब से भी ऐसे २ प्रश्न करता है जिससे सोने वाला बहक जावे परन्तु स्वप्नमें जितनीबातें विचित्र प्रकटहोतीहैं उनमें बड़ीबात यह है कि बहुधा सोनेवाला तक़रारकेसाथ ऐसेशब्द मुंहसेकहताहै— कि मैं ठीकर नहींजानताहूं—मैंनिश्चयकरके नहींकहसक्ताहूं — चाहै यहबातहो या न हो—मैं देखनहींसक्ताहूं—जोकुछ मैं जानता या देखता नहींहूं वहबात मुझे कहनी न चाहिये—और जब एकबार सोनेवाला किसीचीज़को देखताहै या जानलेताहै तो वह उसपर स्थिररहता है या सच्चापन जो धारकमेंहोता है उससे जो परीक्षायें उचित रीतिसे कीजावें तो बड़ालाभ है॥

मुझको सर्वदा इसबातका संदेहरहाहै किजब आकर्षणकी क्रिया रुपयेके लोभपर कीजावे तो धोखाहोताहै और मुझे निश्चयहै कि ऐसीदशायेंभी हुईहैं कि कई दशाओं में ऐसे धारक जिनपर वास्तवकरके आकर्षणके लक्षणप्रकटहोतेहैं धोखादेने के अपराधीहुयेहैं यहबातइसतरहहोसक्तीहै कि संकल्पकीजिये कि एकमनुष्यऐसाहै जिसपर वास्तवमें आकर्षणकीक्रियाहोती है परन्तु यह मनुष्य लोभी है और अपनी शक्तिका जो उसको आकर्षण की क्रियासे प्राप्तहुई है घमण्डरखता है अब संकल्प कीजिये कि इसमनुष्य पर बहुत मनुष्यों की सभामें क्रियाकीजावे और यह भी मानिये कि मुख्यस्थान पर उसको मालूम हो कि जो जो आकर्षण की शक्तियां उसको प्राप्तहोती थीं वह उससमय कम होनेकोहैं और यहबात इसप्रकारसे होसक्ती है कि उससमय से पहिलेकईबेर उसपर क्रिया होचुकीहो और अधिक परिश्रम के कारण अब वहथकगयाहो तो ऐसीदशामें वहबातें प्रकट मेंएक तो यह कि उसके घमंडमें अन्तर पड़ताहै

संकल्प कीजिये कि उस मनुष्यको सच्चाई और अपने बड़प्पन का भी संकोच कम है तो होसक्ता है कि ऐसा मनुष्य अपनी कमशक्ति का धोखेसे बदलाकरदेने का यत्नकरेगा मुझे तो आप निश्चयहै कि कभी २ ऐसा हुआ है कि कई धारकों ने जिनके आकर्षण की शक्तियों का सर्व्वप्रकार से कुछ सन्देह नहींहोता किसी समय में जब वह बहुत थकगये हैं या किसी संयोगसे उनकी दशा पहले से मध्यम होगई है इसविषय में यत्न किया है कि धोखे ही से क्रिया के चूक जाने को छिपायें निस्सन्देह ऐसीदशा में यह तो निश्चय होसक्ताहै कि ऐसेमनुष्योंको मुख्य आकर्षण शक्ति किसी समयमें प्राप्तहोती है औरउन्होंने केवल इसवास्ते अधर्म्मी की कि रुपये के पहुंचने में कमी नहो और इस सर्व्व मनुष्यों की सभा में अनादर न हो परन्तु जो साक्षी आकर्षण क्रिया के विषय में धोखादेने की पाई जावे उसको मैं योग्य गवाही नहीं समझताहूं सबसे अच्छी यहबात है कि जिस गवाही पर कुछ भी सन्देह हो उस साक्षी को न गिननाचाहिये जोहमको मालूमकरनाहै तो बहुतसाक्षियां ऐसीमिलेंगी जिनपर कुछ भी संशय नहींहोसक्ता और मैं उसपरीक्षा की हुई बातोंपर सदा सदेह रखताहूं जिनमें कारकक्रिया करनेका पेशारखते हैं और वह धारकों को मज़दूरी दियाकरते हैं यह वर्णन जो मैंनेकियेपरोक्षदर्शित्वकीदशामें मुख्यकरके ठीकआतेहैं॥

परन्तु मैंने इसस्थानपरभी उनको इसलिये वर्णनकियाहैकि छोटी दशापरभी यहवर्णन ठीकआतेहैं जब मैं बड़ी अवस्थाओं का वर्णनकरूंगा तो यहबातसंक्षेपकरके फिर वर्णनकरूंगा॥

अभी मैंने यहबात विस्तार से नहीं वर्णनकीहै कि कारक को नयेमनुष्यपर पहिलेही क्रियाकरनेमें कठिनता मालूमहोती है और जब कईबेर एकमनुष्यपर क्रिया कीजातीहै तो सुगमता

होतीहै बहुधा ऐसा होताहै और मुझको मुख्य इसकी परीक्षा हुईहै कि धारकपर पहिलीबेर क्रियाहुई तो चाहे बड़ी देर तक और अति परिश्रम से क्रियाकीगई घंटे दोघंटे तक क्रिया का प्रभाव न हुआ परन्तु जब धारक पर बराबर क्रिया कीगई तो कभी एक दो दिनकी क्रिया के उपरान्त और एक सप्ताह और कभी एक महीने के पीछे कभी एक मिनट कभी आधा बरन चौथाई मिनटमें धारकको बहुत गहरी निद्रा आगई है बरनकई धारकों की यहदशा होजातीहै कि केवल एकहीदृष्टिके देखनेमें उनको मूर्च्छाकी अवस्था होतीहै बहुतधारक निस्सन्देह ऐसेहैं उनको ऐसे प्रभावके अंगीकार करने का पद प्राप्त नहीं होता परन्तु इसमें संदेह नहीं कि सबपर अभ्यासके कारण और बहुत क्रियाकरने के द्वारा पहिली क्रिया से प्रभाव होने में सुगमता होजातीहै॥

यह बात बहुधा होतीहै कि जिनपर सुगमता और धीरे २ क्रियाकी जातीहै उनपर आकर्षणकी क्रियाके लक्षणबहुतअच्छी तरह प्रकटहोते हैं हर दशामें जोपहली क्रियामें चूक जावे या अपनी मनकी इच्छानुकूल क्रिया न हो तोहमकोमनसेहारना न चाहिये बहुतसे ऐसेउपाय लिखे हुये हैं कि जिनमें सौबेरक्रिया करने में भी प्रभाव नहीं हुआहै परन्तु जब एकबेर होगया तो बहुत कामदिया और क्रियाके उत्तमोत्तम चिह्न प्रकटहुये जहां तक मुझको परीक्षा हुईहै उससे मुझको निश्चयहै कि हरमनुष्य को हर जनपर क्रिया करदेनेकी शक्ति प्राप्तहै चाहेयहबलनाना प्रकारके मनुष्यों में नाना प्रकारका होताहै और यहभी मुझको निश्चयहै कि हरमनुष्यपरजोक्रियाको धारणवालाहै हरकारक का जो धीर्यवान् और परिश्रमहो क्रिया होसक्तीहै यहबातभी याद रखनी चाहिये कि आकर्षणकी क्रिया के कारणदुःखकेदूर

करने या रोगके दूर करनेकेलिये धारकपर निद्राकापैदाकरना अवश्य नहींहै यह परिणाम और और बहुतसेसुन्दर आकर्षण के लक्षण उसदशामें भी प्राप्तहोतेहैं जबधारकको निद्रा न आवे वरन वह होशमेंहो और जगा रहे ॥

इसबातका आगे बिस्तारपूर्वक वर्णनकियाजावेगा किकारक का आवश्यक बचन यहहोना चाहिये कि धीर्य परिश्रम इस क्रियामें बहुत काम देगा यह बातें आकर्षण की क्रियाके लिये बड़ी सहायता देनेवाली हैं ॥

यहबात मालूम होतीहै कि जिन लोगोंका कोईस्वभावअति प्रबलहोताहै उसका प्रभाव निर्बल प्रकृति वालेपर बहुत जल्दी होताहै जैसेजिसका स्वभाव तीक्ष्णपैत्तिकहो उसकाप्रभाव उस मनुष्यपर किजिसकीप्रकृतिरक्तकीकफकी औरझुकीहोवहजल्दी होताहै जिस मनुष्यका शिरबड़ा हो और स्वभाव सेंचालाकीहो उसको सुगमता से क्रिया करलेने का अभ्यास होता है यदि धारक की बुद्धि प्रबल और स्वभाव चालाक होतोचाहे उसपर क्रियाका होना कठिन नहीं होता परन्तु क्लिष्ट अवश्य होता है क्योंकि स्वभावका जमाव क्रियाके प्रभाव होनेकेलिये अवश्य है और धारकका बिल्कुल कारक के अधिकार में होना जो क्रिया के प्रभाव होने के लिये उचितहै स्वभाव की चालाकी के सबबसे नहीं होता जब सर्वजनों की सभामें ऐसे मनुष्यों पर परीक्षा की जाती है जिनपर पहले क्रिया नहींहुई तो धारकों को यह बात नहीं होती कि बिल्कुल धारककी इच्छापर अपने स्वभावको छोड़ें प्रायः उनकी इच्छा होतीहै कि आपही आक- र्षणके चिह्नों की विचित्रता देखें प्रायः बहुत से मनुष्यों के सामने क्रिया होनेके कारण उनके स्वभाव में घबराहट पैदा होजातीहै उनको यहभयहोताहै कि लोगउनको हँसेंगे या यह

सन्देह होता है कि क्रियाके हो जाने के कारण बहुत से भेद मालूम करलिये जावेंगे और ऐसे २ बिचारोंसेवह क्रियाके होने का सामना यथा शक्ति आप करते हैं निदान वह इस बात को नहीं जानते कि अपने स्वभावको सर्व प्रकारसे कारककी इच्छा पर छोड़ देना चाहिये और अपने स्वभावको अपने अधिकार में रखते हैं यहएक इसबात का प्रमाण है कि जब यह क्रिया एकान्तमेंकीजाती हैतो बहुधा उनदशाओंसे कि जबबहुतमनुष्यों की सभामेंकीजातीहै अच्छीतरह चलजातीहैइसबातकाप्रमाण कि अनपढ़ मनुष्योंपर बहुधा आकर्षणकी क्रिया सर्वजन सभा में उनलोगोंसे जो पढ़ेहुयेहैं औरविद्या रखतेहैं अधिकचलजाती है यह है कि अनपढ़ मनुष्यों के स्वभाव कमचालाक होते हैं इसलिये उनका स्वभाव कारकके वश में अधिकहोता है ॥

मैं यह बात वर्णन कर चुकाहूं किफरंगिस्तानके मनुष्यों से हिन्दुस्तान के मनुष्यों का स्वभाव आकर्षण की क्रिया को अधिक अंगीकार करता है उस दशामेंभी कि जबकारक हिन्दुस्तानीहों यह बात स्वभाव पर घटितहोती है मालूम होता है कि हब्शी बहुत बलवान् क्रिया करनेवाले होतेहैं और यह भी कि हब्शियोंका स्वभाव आकर्षणक्रियाअधिक अंगीकारकरता है तथाच हब्श और पश्चिमी हिन्दुस्तानमें इसीकारण बहुत जादूहोताहै और ल्यूस साहब कोजोहब्शीहैंइसक्रियाके उत्पन्न करनेका बिचित्र अभ्यासहैइनसाहब कोऐसीशक्तिप्राप्त है कि शायद किसीकोहोतीहै औरयह साहबवड़े योग्यहैं इनको केवल इस बिद्याका व्यसन है और बहुत उत्तम मनुष्य हैं और जो लोग केवल ठीक हालके मालूम करनेकी इच्छा रखतेहैं उनको यथा शक्ति आपखोजकरनेके लिये बहुत सहायता देते हैं और उनको इसविद्यामें अतियोग्यताप्राप्त ॥

जब कारक को यह शक्ति प्राप्त होजावे कि धारक पर स्वप्न की दशा सुगमता से और थोड़े समयमें पैदा करसके तो बहुधा उसको यह शक्ति होजाती है कि प्रसिद्ध युक्ति बिना केवल इच्छा से बिना कहेहुये क्रिया पैदा करदे तथाच मैंने आप ऐसा किया है सो एक मनुष्य बातोंमें खूब लगाथा और मैं भी अच्छी तरह बातें कर रहाथा उससे अनुमान दोगज की दूरी पर एक ओर को बैठाथा मैंनेअपने जीमें उसपर अमल करनेकाइरादा किया और २५ पलके समयमें उसको अच्छीतरह गहरी नींद आगई मैंने उसको अपने जीमें यह आज्ञादी कि एकघंटेतक सोवे सो वह इतनेहीसमयतक सोया और जबवह जगातो मैंनेउससेपूछा कि आप अच्छी तरह सोये तो उसने कहा कि हां अच्छी तरह सोया परन्तुआपने मुझसेकहाभीनहीं कि हम क्रियाकरना चाहतेहैं निदान इस क्रियाके करनेमें बहुधा यहबात अवश्य नहीं है कि धारकको कारककी इच्छाका ज्ञानहो या नहो यहहाल जो मैंने वर्णनकिया इसमें तो यहबातहै कि कारक और धारक दोनों एक कमरेमें निकट बैठेथे परन्तु यहबात भी अवश्यनहीं है मैंने बहुधा इसतरह पर क्रियाहोते देखी है कि कारक एक कमरेमें और धारक दूसरे कमरेमें एक ऊपरकी मंजिलमें है और एकनीचे की मंज़िल में और धारक को कभी कारक के इरादे से पहिले खबरहुई है और कभी नहींहुई वास्तव में यह है कि जिन धारकों के स्वभावों ने इस क्रिया को अंगीकार किया है उनपर प्रभावहोने में दूरीसे कुछ अन्तर नहीं पड़ता यहप्रभाव जिसकामूल हमको मालूम नहीं है किसी दूरीपर प्रकाशकी तरह दौड़जाताहै बहुतसे हाल ऐसे लिखेहुये हैं कि जिनमें कारक और धारक में बहुत दूरीहै तथाच मैं दृष्टान्तसे एकबेरका हाल लिखताहूं कि उसकी सबबातें विस्तारसे मुझे

मालूमहैं और मुख्य मेरेघरके एकमनुष्यपर वहबातें हुई हैं ॥

कि नवम्बर या दिसम्बर सन् १८५०ई० में एक दिन सन्ध्या के समय मेरे घरमें जिवनार थी और उस समय पचास मनुष्यों के अनुमान स्त्री पुरुष वर्त्तमान थे ल्यूससाहब भी वहां थे उन्होंने एकसमूह के समूहपर यहक्रियाकी और कई मनुष्यों पर प्रभावहुआ तथाच जिनपर प्रभाव हुआ था उनमें से एक स्त्री मेरे घर की थी इनपर कईबेर पहिले यह आकर्षणक्रिया होचुकी थी और उनका स्वभाव इसक्रिया को बहुत अंगीकार करताहै जब उनपर यह क्रियाहोतीहै तो उनकीआंखें बन्दहो-जातीहैं और उनको अपने जोड़ोंपरअधिकार नहींरहता औरऱ् भी कुछ लक्षण होते हैं जो उनको अच्छीतरह मालूम होते हैं ल्यूससाहबको यहबात नहीं कही गईथी कि इसस्त्रीपर क्रिया का प्रभाव कुछ कठिनहुआ इसलिये उक्त साहब ने कुछउपाय उसप्रभाव के कमकरनेके लिये न किया अन्त उसका यहहुआ कि धारक को शिरपीड़ा उत्पन्न हुई यहरोग उनको योंभी बहुधा रहताहै इस जगहपर उन्होंने शिरपीड़ा के होने का यह कारण वर्णनकिया कि क्रिया का प्रभाव उनपरसे हटायानहीं गया और यह शिरपीड़ा दूसरेदिन तक रही दूसरेदिन पढ़ाने के पीछे मैं ल्यूससाहब से मिला उक्त साहबने पूछा कि अमुक अर्थात् जिस स्त्री का मैं वर्णनकररहाहूं किसतरह है मैंने सब हालकहा और यह भी कहदिया कि उनके समझमें शिरपीड़ा के होनेका क्या कारण है उक्त साहब ने कहा कुछ विचार न करो मैं आज किसीसमय उनकी ओर ध्यानकरूंगा और उन की शिरपीड़ा दूर करदूंगा मैंने उनसे कहा कि अवश्य ऐसा कीजियेगा क्योंकि मैं जानता था कि ऐसा होसक्ता है और मैं उक्तसाहब के पास से किसीओर चलागया पांचबजे शाम को

मैं अपने घरआया उससमय मुझको ल्यूससाहब के साथ जो वार्त्ताहुई थी बिल्कुल भूलगई थी परन्तु दरवाजे पर पहुँचतेही उस स्त्री ने मुझसे कहा कि जब तुम घरमें न थे मेरेऊपर आकर्षणकी क्रियाहुई मैंने कहा किसने यह अमल किया उन्होंने कहा किसीने नहीं मैं बाजा बजारही थी साढ़ेतीनबजे के अनुमान मुझको ऐसामालूम हुआ कि मानो मुझपर अतिबलवान आकर्षण की क्रिया होरहीहै मेरे हाथ और बाज़ू सुन्नहोगये मैं बाजा न बज़ासकी और वह सम्पूर्ण लक्षण जो इसक्रियामें होतेहैं प्रकटहोनेलगे निदान मैं लाचारहोकर पलँगपरसोगई औरथोड़े समयतक आकर्षणकी निद्रामें सोतीरही जबमैं जागीतो मेरे शिर कीपीड़ा जातीरहीथी मैंने पूछा कि तुमने किसीसेयहबात उस समय कही थी उन्होंने उत्तरदिया कि उससमययहां कोई न था परंतु जब मैं जागी तो अमुक स्त्री जोरातको यहां आईथीउससे मैंने कहाथा और यहभी कहदियाथा कि मुझको निश्चय है कि ल्यूससाहब मुझपरक्रिया कररहेहैं मैंनेतबकहा कि ल्यूससाहब ने क्रिया करनेकी तो प्रतिज्ञा की थी परन्तु मुझे यह नहीं मालूम कि उन्होंनेक्रियाकी यानहीं संध्याको मैं ल्यूससाहबसेफिर एक सभामें मिला मैंने उनसे डाक्टर केमिंगसाहब के सामने पूछा कि आपने वह प्रतिज्ञाकीथी वह पूरीकी या नहीं उन्हों ने कहा हां तब डाक्टर साहबनेकहा कि किससमय उन्होंने उत्तर दिया किसाढ़े तीनबजे इसलिये कि उससेपहले समयनहींमिला और मैं अपने मकानपर साढ़ेतीनबजे आयाथा उसीसमयक्रिया की थी यह दृष्टान्त ऐसाहै किइसमें कुछसंदेह नहींहोसक्ता यह क्रिया संयोगसे की गईहै किधारकको पहले कारककेइच्छाका ज्ञान न था संयोगसे मेरे घरकोलौट जानेसे पहले एकस्त्रीवहां पहुंचगई और धारकने उससे उक्तवृत्तान्त वर्णनकिया औरमैंने

जो पीछे ल्यूससाहबसे बार्त्ताकी तो वहभी एक मनुष्यके सामने की तो पूरी गवाहीहै मेरेमकान और ल्यूससाहबके घरमेंछःसौ गज़की दूरीहै ल्यूससाहबने औरभी दोबेर इसस्त्रीपर इससेभी अधिक दूरीसे उस स्त्रीके जानने बिना क्रिया क्रीहै निदान इस दृष्टांत और और दृष्टान्तोंसे मालूम होताहै कि इस क्रियाकेप्र-भाव होनेमें दूरी कुछ बात नहीं है मुख्य करके उसदशामें कि धारकका स्वभाव सुगमतासे प्रभाव अंगीकारकरे प्रायःयहबात सम्भवित हो कि थोड़े या वहुत दूरके सबब प्रभाव कम या जि-यादह होताहो जब हम पहलीबेर ऐसी बातसुनतेहैं कि मनका झुकाव इस ओर होता है कि उसको निश्चय न करें परन्तु जब हम बराबर ऐसा होते हुये देखते हैं तो हमको लाचार होकर मानना पड़ता है और स्वभाव में यहबात जमजाती है कि कुछ न कुछ दैवीशक्ति ने ऐसा रक्खाहोगा कि जिससेयह प्रभाव हुआ और हमको उचित है कि इसके कारणके खोज करने में परिश्रम करें ॥

केवल यही नहीं होता है कि कारक की इच्छाके न मालूम होनेसे धारक को नींद आजावे वरन जो २ आकर्षण के लक्षण इच्छा से उत्पन्न होते हैं वह सर्व लक्षण उस दशा में उपजते हैं कि जब कारक की इच्छाका ज्ञान न हो तथाच कारककीइच्छा के प्रकट हुये बिना धारकपर यह लक्षण होते हैं कि कारक के पास आजावे या जहां वह चाहे वहां बैठजावे और २ कामजो कारक चाहे करने लगे इसके खण्डोंकी फिर वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है केवल यह बात कहनी बहुत है कि जो२ चिह्न कारककी जानी हुई इच्छा से उत्पन्न होतेहैं वह सब न जानी हुई इच्छा से उपजते हैं और यह बात उस दशा में भी होतीहै कि जब धारक निद्रावस्थामें भी न हो वरन जगाहो ॥

एक विचित्र प्रभाव यह है कि धारक को कारक की इच्छा-नुसार कारक की ओर एक खिंचावट होती है कि धारक को एक ऐसी इच्छा कारक के पास जाने की होती है कि वह उसको रोकनहीं सक्ता है जो कोई और मनुष्य उसको रोकना चाहे तो उसपर प्रबल होने के लिये अति परिश्रम करता है जो उससे पूछाजावे कि उसको यह इच्छा क्यों हुई है तो वह यही कहसक्ता है कि मैं कारक की ओर खिंचा जाताहूं कई यह कहते हैं कि कुछ प्रकाशके सूत ऐसे होते हैं कि वह कारक को ओर धीरे २ खैंचे लिये जाते हैं यह खिंचावट बहुत दूरी से भी होतीहै मैंने सुनाहै कि एक कारकने एक धारकको सौगज़ की दूरीसे अपनी ओर इसतरह खींचा और धारक उसकीओर खिंचतागया जबतक कि एक दीवारतक पहुंचा और आगे दी-वारकी आड़ के होनेसे वह न जासक्ताथा इस धारक को एक बड़ा बलवान् मनुष्य रोकताथा परन्तु वह न रुकताथा यहबात उसदशा में भी होसक्ती है कि जब धारक जागताभीहो ॥

किसी समय ऐसा होता है कि जब धारकपरसे क्रिया का प्रभाव हटजाता है तो उसको अपनी मुख्यदशा में भी कारक के साथप्रीति स्थिररहती है मुझको ऐसे व्यवहार के अपने आंखोंसे देखनेका कोईअवसर नहीं मिलाहै परन्तु मैं जानता हूं कि इसमें संदेह नहीं कि ऐसाहोता है ॥

और एकबातका वर्णन करताहूं कि कारक धारकको क्रिया के अन्तर्गत किसीप्रकार की आज्ञादे और वह उसके पूराकरने की प्रतिज्ञाकरे तो जबवह जागेगा अवश्य उसेपूराकरेगा चाहे वहकाम कैसाही वृथा और बुराहो—जैसेकिसी कारकने किसी धारक को आज्ञादीहो कि अमुक समय में अमुक मनुष्यके पास जाकर उससे अमुकबात कहना तो जबवह समय निकट पहुं-

वेगा वहमनुष्य उस मनुष्य की ओर जावेगा जो कोई मार्ग में उसको जानकर रोके तो कभीनहीं रुकेगा और जो बात कहनी है अवश्य कहआवेगा जो कोई उससे पूछे कि तूने यहकामक्यों किया तो यही उत्तर देता है कि रुकनहीं सक्ता बहुधा उसको इस कारण दुःखहोता है कि जो बुरीबात कहता है लोग उस पर हँसते हैं तो इसबात की रक्षाउचित है कि इसप्रकार की आज्ञाउसको न दीजावे नहींतो स्वप्नकीदशा में ऐसी प्रतिज्ञाका पालन वह नहीं करेगा यह बहुधा होता है॥

यहशक्ति जो कारक को प्राप्त है कि मुख्यदशा में धारक उसकी आज्ञा को पूराकरे जो उसको अच्छीतरह काम में लायाजावे तो बहुत लाभकी बात है मैंने एक मनुष्यको देखा जिससे ल्यूससाहबने आकर्षणके स्वप्नमें यहप्रतिज्ञा करालीथी कि तेज़शराबें न पियूंगा और इसप्रतिज्ञा के कियेहुयेको चार महीनेसे अधिक होचुकेथे और इससमयमें उसने कभी मद्य न पीथी न कुछ भी इच्छा उसकी ऐसी मालूम होतीथी कि वह अपनी प्रतिज्ञा को तोड़दे मुझको यहबात मालूम नहीं है कि उसको अपनी प्रतिज्ञा करनेकाहाल मालूमथा या नहीं परन्तु मालूमहोना या न होना कुछ अवश्यनहीं जो उसको बतायाभी न जावे कि उसने ऐसीप्रतिज्ञाकीथी और उसको प्रतिज्ञाकरने का हाल मालूमभी न हो तबभी इच्छा उसकी दूरही होजातीहै ल्यूससाहबने मुझसे कहाहै कि उन्होंने इसतरह बहुत मनुष्यों की शराबपीनेकी बुरीआदतें छुड़ादीहैं जो परीक्षा मुझको हुईहै उससे मुझेभरोसा है कि जो आकर्षण स्वापमें प्रतिज्ञाकीजातीहै सदाऐसीप्रतिज्ञाओंसे जोमुख्यदशामेंकीजावें अधिकतरहोतीहैं॥

अब मैं आकर्षणकीक्रिया के छोटे लक्षण वर्णन करचुका अब बड़े लक्षणोंका वर्णन किया जावेगा धारककी यहदशा होतीहै

कि कारक के विचार और कामोंका संयोग होजाता है बरन जोकिसी और मनुष्यकेसाथ उसकोसंयोग करायाजावे तो उसके साथ भी यहीबात होतीहै इसकाहाल आगेके पत्रमें लिखाजा-वेगा केवल इसजगह यही वर्णन कियाजाता है कि इनबड़े लक्षणोंका होना ऐसेही प्रकार की गवाहीपर सूचित है जैसे छोटे लक्षणोंके विषयमें वर्णनकियागया बहुधा यहसाक्षी अति निश्चय योग्यहोती है और बड़े लक्षणों के मूलोंका मालूम करनाभी ऐसाही कठिन है जैसे छोटे लक्षणों का मेरीसमझमें यहबात आती है कि दोनों लक्षण कि मुख्य दैवीशक्ति के का-रणपर घटित हैं जो हम अच्छीतरह खोजकरें तो विचारसंयोग और परोक्षदर्शित्व में वास्तव करके कुछ सिद्धि नहीं है बहुधा देखाजाता है कि अपनेआप यह लक्षण लोगों में प्रकट होते हैं निश्चय है कि पुराने लोगों को इसका हाल अच्छी तरह मा-लूम था परन्तु इस कारण कि कोई २ मनुष्य जानतेथे और उसको प्रकट नहीं करतेथे या बुरीतरह उसको काम में लातेथे या केवल निज प्रयोजनसे उन को छुपारखतेथे इसलिये समय तकयहविद्या संसारसेजाती रही और फरंगिस्तान में फिरइसके प्रकट होनेकी आवश्यकता हुई और बड़े२ बुद्धिमानोंकोमिली ॥

छठांपत्र ॥

अबमैं आकर्षण की क्रिया के बड़े लक्षण वर्णन करता हूं और उक्त लक्षण विचार संयोग और गुप्त दर्शन दो हैं पहले वर्णन होचुकाहै कि यह लक्षण छोटों से कुछ मिलेहुये हैं और वास्तव में यह है कि जो दोनों प्रकार के लक्षण अर्थात् छोटे और बड़े एकही कारण पर घटित होते हैं इसलिये एक को

छोटा और एकको बड़ा कहना ठीक नहीं है परन्तु जो विचार संयोग और गुप्तदर्शन के परिणाम मुख्य प्रकार के हैं और ऐसे हैं कि जो हम यहबात न जानते कि वास्तवमें उत्पन्नहोने के दैविक हेतु हैं तो उनको सिद्धता समझते इसलिये उन लक्षणों के विरुद्ध जिनका इस से पहले वर्णन होचुका हम इन लक्षणों को बड़ाकहते हैं परन्तु अच्छीतरह समझनाचाहियेकि बड़े लक्षणों का मूल बड़ों के चिह्नोंसे अलग नहीं है केवलपद में दोनों के अन्तर है ॥

पहले मैं विचार संयोग का वर्णन करता हूं जो हालपहले लिखागया है उससे मालूम हो कि यह आकर्षण का प्रभाव प्रारम्भ में इसतरहसे प्रकटहोता है कि धारक कारककी इच्छा का अनुवर्ति होता है परन्तु ज्यों २ क्रियाकी दशा बढ़तीहै यह प्रभाव एक मुख्यरूप पाता है यहांतक आकर्षण स्वप्नकीमुख्य दशा का प्रभाव प्रकट होताहै सोनेवाले को यह शक्ति प्राप्त होती है कि जो प्रभाव कारक के शरीर पर हो या जो विचार उसकी समझमें आवे उसमें संयुक्त होजाता है वरन केवल यह बात कारक के लियेही नहींहोती किन्तु और लोगोंके लियेभी जिसकेसाथउसकाशरीर छुवादियाहो या जिसके साथ उसको संयोगदिलायागयाहो उसको इसतरह का संयोग प्राप्तहोताहै यह लक्षण सोनेवाले पर ऐसी तेज़ीसे प्रकट होते हैं कि मानों उसके शरीरपर उनका प्रभाव होता है वास्तव करके इनदोनों दशाओं में कुछविवेक मालूम नहींहोता सोनेवाले पर बिल्कुल हरतरह वैसाही प्रभाव होता है जैसे कि उसदशा में होता कि मुख्य उसके शरीरपर प्रारम्भ में वह चिह्न प्रकट यद्यपि वास्तवमें वह उन लोगोंपर होते हैं और सोनेवाला केवलविचार संयोगकेकारण उनको मालूमकरताहै धारककी यहदशाहोतीहै

कि जिसमनुष्यपर वह लक्षण उत्पन्नहोतेहैं उस मनुष्यका एक खण्ड बनजाता है और एकप्रभाव दोनों पर प्रकट होता है॥

तथाच एक स्वाद का संयोग होता है कि जो कारक और कोई मनुष्य जिसका धारक से संयोगहो कोईचीज खानेकी या पीनेकी अपने मुखमेंले तो ऐसा होता है कि सोने वाला तुरन्त अपने मुखको इसतरह चलाने लगता है कि जैसा वह आप खा या पीरहाहै जो कारककेमुखमें रोटी या संगतरा या मिठाई या पानी या मद्य या दूध या और कोई वस्तुहो तो जब सोने वालेसे पूछाजावेगा कि तुम क्याखारहेहो तो जो चीज़ कारक उस समय खा या पी रहाहोगा वहीवह अपने मुखमें बतावेगा यदि कारक के मुख में कोई स्वादिष्ठ वस्तु या कड़वी हो तो धारक के मुखसे कड़वी या बुरास्वाद मालूम होजाता है चाहे उसकी आंखें बंदहोती हैं और चाहेकारक उसकी पीठके पीछे खड़ाहो जहां उसकी आंखें खुलीभी रहैं तौभी उसको वह देख नहींसक्ता बहुतविस्तार कुछ अवश्यनहीं केवल यहबात कहनी बहुत है कि इसबात की परीक्षा इतने बेरहुई है कि मैं अच्छी तरह जानताहूं कि यहबात इसीतरहहोतीहै इसकेसिवाय जिस मनुष्यने कभी यहबातें होतेदेखी हैं उनको इसके होनेमें कभी कुछभी संदेह नहीं होसक्ता क्योंकि धारक के मुख के डौल से साफ़ मालूमहोता है और मुखके डौलकेसिवाय वह जिह्वासे साफ २ वर्णन करता है परन्तु जैसे अन्यलक्षण नानाप्रकारके धारकों में अन्य २ प्रकारसे होते हैं उसी तरह इस लक्षणकी भी दशा है कि नाना प्रकार के धारकों में अन्य २ प्रकार का पायाजाता है परन्तु जब धारक पर आकर्षण क्रिया बहुत की जाती है उसमें बहुधा यह लक्षण प्रकट होते हैं॥

दूसराघ्राण संयोग यदिकारक या और कोईमनुष्यजिसको

धारकके साथ संयोग दियाजावे गुलाबसुंघे तो धारकके मुखसे प्रसन्नता मालूम होती है यदि कारक हींग सूंघे तोधारक के मुखसे ग्लानि प्रकटहोती है जैसे कोई तीक्ष्ण वस्तुजैसे मिरच सूंघे तो वह उसकी तेज़ी बताता है जहांतक स्वाद का संयोग पूरा होता है उतनाहीं घ्राण संयोग भी पूरा होताहै परन्तु मुझको इसबातकी परीक्षा नहींहुई है कि एक धारक को दोनों अर्थात् स्वाद और घ्राण के संयोग की प्राप्तिहोती है या नहीं प्रायः दोनोंका संयोग प्राप्तहो परन्तु मुझको परीक्षा नहींहुईहै निस्सन्देह ऐसाहोसक्ताहै कि जो कारकचाहे तो धारककीशक्ति इनदोनों बातों में नष्टहोजावे॥

तीसरा त्वचा संयोग यदि कारक किसीसे हाथ मिलावे तो धारक तुरन्त किसी कल्पित हाथसे हाथ मिलाता है यदि कारक के हाथमें सुई चुभाईजावे तो धारक अपनाहाथ हटालेताहै और उसी जगहको मलने लगता है और दुःखका वर्णन करताहै जिस तरह चाहो इसत्वचा के संयोग की परीक्षालो सब बातें पूरी उतरेंगी कभी कारकों को धोखा नहीं हुआहै बहुतसी उत्तमोत्तम परीक्षायें इस तरहपर होसक्ती हैं और मैंने अपनी आंखों बहुतसी बातें देखी हैं और आपभी आजमाई हैं॥

मैं यहबात ठीकनहीं कहसक्ता हूं कि इसप्रकार का संयोग दृष्टि में होता है कि नहीं सम्भव है कि आंखों का बन्दहोना और पुतलीका फिराहोना और प्रकाशसे प्रभावित न होना जो बातें आकर्षण के स्वप्न में उत्पन्न होती हैं इस बात का कारणहै कि इस विषय में परीक्षा नहीं कीजाती ऐसा मालूम होताहै कि चाहे मनकेनेत्र खुलेहोते हैं परन्तु सोनेवालेके देखने की प्रकट की इन्द्रियां सबरुकी होती हैं और जो बातें स्वाद संयोग घ्राण संयोग और त्वचा संयोगके लिये ऊपर वर्णनकी

गईं वह संयोग केवल इसतरहसे उपजते हैं कि जो कारक की प्रकट की इन्द्रियोंपर लक्षण उपजते हैं वह विचार संयोग के कारण धारकपर प्रभाव करते हैं खोजने के लायक यहबात है कि जो कुछ कारक वाहर की ज्योति शक्तिसे देखता है धारक मनकी आंखसे देखसक्ता है कि नहीं यदि धारक गुप्तदर्शन की दशामेंहो तो निस्संदेह देखसक्ता है क्योंकि चाहे उसकी आंखें बन्द होती हैं परन्तु जो चीज़ें उसकेचौफेर होती हैं उनकोवह देखता है परन्तु जिन संयोगों के लक्षणों का बर्णन हुआ वह संयोग गुप्त दर्शन की दशा में घटित नहीं और हमको अवश्य है कि मुख्य गुप्त दर्शनकी दशामें और उनलक्षणों में जो विचार संयोग से उत्पन्न होतेहैं विबेक रक्खें और समझें हर तरह मेरी अनुमति यहहै कि जैसीदशा नेत्रकी स्वप्न के आकर्षण में होती है उसके सवव से दृष्टि के संयोग के लिये परीक्षा लेने में पूरे परिणाम न निकलेंगे॥

श्रवणके विषयमें मैंने परीक्षा होतीहुई नहींदेखीहै मैं पहिले वर्णन कर चुकाहूं कि धारक कारकके या उस मनुष्यके शब्दके सिवायजिसको उसके साथ संयोगदिलायागयाहो और कोई शब्दनहीं सुनताहै क्या धारक वहबातें सुनताहै जो धारकको कोईकहै मुझेसन्देहनहीं है कि बहुधा ऐसी बातें धारक सुनताहै और इसीकारण जो बातें उससे गुप्त रक्खीजाती हैं उनकोवह जानजाताहै इसबातकी परीक्षा करनेपर ध्यानरखनाचाहिये॥

बहुधा धारक को आकर्षण का संयोग होताहै अर्थात् जैसी खिँचावट कारकके मनमें या और मनुष्य के मन में जिसको धारक के साथ संयोगदियाहो पैदाहो वैसीही खिँचावट धारक के मनमें भी उपजती है इसबातकी परीक्षा मुझको अच्छीतरह नहीं हुईहै क्योंकि यहबात कठिनहै कि जब जीचाहे तबकोसच्ची

खिँचावट मनमें उत्पन्नकीजावे इसकारण इसविषय में जो परी
क्षा होतीहै वह अकस्मात् होजातीहै मैंने देखाहै कि जब कारक
मुसकराताहै या हँसताहै तो धारक भी मुसकराने या हँसने
लगताहै और मैंने यह भी बहुधा देखाहै कि जब कारकका मन
या उसको किसीप्रकारका भयहोताहै तो धारकपर भी यहदशा
होतीहै और उसको दुःखहोताहै तथाच मैं पहले वर्णनकरचुका
हूं कि जब कोई अनभ्यासी मनुष्य केवल मन बहलाने आक-
र्षणकी क्रियाकर बैठता है और अमल चलजाता है और फिर
वह घबराता है तो धारक को बहुत दुःख होताहै बहुधा ऐसे
मनुष्य यह करते हैं कि उन्होंने किसी कारकको जो क्रियाकरते
देखीहै उसकी वह नकलकरते हैं और पूरेउतरते हैं परन्तु जो २
रक्षायें अभ्यसित कारक जानता है या जो २ काम उसने किये हैं
उसका विचार नहीं रखते धारक मुख्य उस दशामें कि कम
उमरहो या कोई कमउमर स्त्री हो मूर्च्छित होजाताहै और जो
कुछ उसका मा या बाप या और कोई बन्धु उसकोकहै वहनहीं
सुनताहै यह अज्ञानबन्धु इसबात से कि इसतरहकाबहरापनएक
आकर्षण स्वप्नका स्वभावहै घबराजाते हैं और जोकि कभी उ-
न्होंने पहलेऐसीदशानहीं देखीहोतीहै और यह नहीं जानते कि
उक्तस्वप्नगुणदायक है हानिकारकनहींहै यहलोग उसमनुष्यसे
जिसने क्रियाकीथीकहते हैं कि इसकोअच्छाकरो और वहभी न
जाननेके कारण कि क्याकरूं घबराजाताहै फिर वह धारक के
बांधव हाथपकड़लेते हैं और इसबातसे अज्ञानहोते हैं किउनका
अपना आकर्षण का प्रभाव कारक के प्रभाव का बुरा होता है
परिणाम यह होता है कि धारक को दुःख होता है यह दुःख
धारक के मुखसे प्रतीत होता है और आश्चर्य्य यहहै कि वा-
स्तव में उसको इतनादुःख नहींहोता जितना उसके मुखसेउस

दशा में प्रकट होता है तथाच जागने के पीछे जो वह वर्णन करता है तो मालूम होता है कि ब स्तव में उसको इतनादुःख नहींहोता जितना लोगोंको प्रकट में मालूम होता है इसदुःख के प्रकट होनेके कारण यह बांधव और भी बहुत डरते हैं और उसको पुकारते हैं और जब धारक नहीं बोलता तो वह रोने लगते हैं कारक को बुराभलाकहतेहैं और निन्दासे उसेलाददेते हैं निदान कारक अतिदुःखी होकर आकर्षणकी क्रियाकेप्रभाव को दूर करनेकी इच्छा करता है प्रायः ऐसी दशा में कि जब और लोगोंका शरीर धारक से छुआहुआ है कारक धारक का हाथ पकड़लेता है और जोंकि कारक का स्वभाव आपही दुःखी होता है इसलिये संयोग के कारण धारक की प्रकृति और भी अधिक दुःखीहोजाती है और बिगड़ जाती है थोड़ीदेर तक यह दशा रहती है जो मनुष्य पास खड़ेहोते हैं उनकी ओरसे वृथा और हानिदायक छेड़छाड़ होतीहै क्योंकि कोई भी उन में से उसदुःख के दूरकरनेको मुख्यरीति नहींजानताहै और बिचारा धारक निर्बुद्धि और मूर्खमनुष्योंकेहाथोंमें पड़कर दुःखउठाताहै उसको मूर्च्छाकीदशा होजातीहै बरन एँठनकीदशा पहुँचजाती है इसपीड़ा की दशाको और अधिक वर्णनकरने से दुःखहोताहै प्रयोजनयहहै कि जब डाक्टरसाहब तो बुलायेजातेहैं बहुतबुरी दशाहोजातीहै मुख्य करके उसदशा में कि जब डाक्टरसाहब उनलोगोंमें से हों जो जान बूझकर आकर्षण के स्वप्न देखनेसे ग्लानिकरतेहों और उसके मूलोंके जाननेसे उनको इन्काररहा हो उससमय जब आश्चर्य काम नहींकरता तो डाक्टर साहब अचम्भा करतेहैं कि हमने इस विद्याके मूलोंके मालूम करने में क्यों ध्यान न किया धारक के बांधव भी उससमय समझते हैं कि डाक्टरसाहब ने बड़ीभूलकी अर्थात् जो चिहन अतिविचित्र

इसविद्या के हैं उनकीओर से उन्होंने अज्ञानतापूर्व्वक आंखें बन्दकरलीं परन्तु जो उनको पहले इस विद्या के कुछ सन्देह था तो अबजातारहताहै और निश्चयहै कि अब डाक्टरसाहब का संशय भी दूरहोजाता है परन्तु आश्चर्य्य की बात है कि ऐसीदशाओं में भी कि जब इसबातके थोड़ासा ज्ञान भी पूरा होता तो धारक का दुःख ठहरजाता मैंने बहुतसे वैद्योंकोयही परिणाम निकालते सुनाहै कि आकर्षणकी क्रिया एकभयानक है और यह परिणाम निकाल कर वह इस विद्या को ओर से अपनीआंखें पहले विरोधकी तरह बन्दकरलेते हैं यहबात सच है कि आकर्षण की विद्या एकभय की चीज़है परन्तु सचयहहै या उसके खोजमें कुछभयनहीं है भय केवल उसके जानने के कारणहै और भय उनदशाओं में है कि अनभ्यासी लोग क्रिया करें जो लोग अभ्यास रखतेहैं उनकी क्रियाकरने मे मैंने एक बेर भी ऐसाहाल नहींदेखाहै जिसमें धारक को दुःखहो परन्तु जब अनभ्यासी कारक क्रिया करते हैं तो मैंने बहुतसी दशायें ऐसीदुःखकी देखीहैं जिनका ऊपर वर्णनकियागया और दोनों कारक और धारककी जिह्वाओंसे उस दुःख का वर्णन सुनाहै परन्तु जब यहक्रिया विधिपूर्वक की गईहै और कारक अपनी क्रियाकी युक्तिको अच्छीतरह जानताहै तो धारकसे सदा यह बात सुनीहै कि उसे कुछ दुःखनहींहुआ बरन जगनेके उपरांत पहलेसे सर्व्वदा उसका मन प्रसन्न होताहै और बहुतदशाओं में ऐसाहोताहै कि जो धारक की आरोग्यता में कुछ अन्तर था या कोई रोग उसे था तो वहरोग नष्ट होजाता है और उसका स्वभाव ठीक होगयाहै—मेरा यह प्रयोजननहींहै कि आकर्षण की क्रिया कभी हानिदायक नहींहोसक्ती क्योंकि मुझको ऐसी परीक्षा नहीं है जिससे मैं यह परिणाम निकालसकूं परन्तु

यहबात मैं कहसक्ताहूं कि जितनी परीक्षा मैंने अन्यकारकों की देखीहैं और कारकोंको की हैं उन में मैंने सर्वदा यहबात देखी है कि चाहे धारक निर्बल प्रकृति का रखतेथे और उन को बीमारियांभी थीं और वहरोग ऐसे कि जिनका सम्बन्ध मन से है और जिन बीमारियों में परिश्रम अधिक पड़ता है निश्चय करके हानिदायक होताहै तो उनपर मैंने आकर्षण की क्रिया और आकर्षण के स्वप्न का प्रभाव मुख्यकरके यह देखा है कि धारकको सर्वदा आराम हुआ है और कभी रोगी को दुःखनहीं हुआ बरन उसका स्वभाव बहुधा चालाक होगया है जहांतक मुझको अभ्यासहुआहै मैं आकर्षण की निद्राको नियमित मुख्य नींदसे अधिकतर उपयोगी समझताहूं निस्सन्देह मैं इसप्रकार की क्रिया का वर्णन नहीं करता हूं जिस में बहुत बलवान् लक्षण विदितहों जैसे जब धारकको बहुतही हँसाया जावे या बहुतहीकठोर आकर्षण कियेजावें यहक्रिया इसप्रकारकी है कि सदा उनसे अरुचि रखताहूं और उसक्रियाको भी नहींचाहता जिसमें झूंठे और कठोरलक्षण उत्पन्नकियेजावें जैसे ऐसालक्षण कि जब धारक की समझ में यहबात बैठाईजावे कि वह तबाह होगया था यह कि धारक अपने आपको एक जंगली जानवर समझे यहबात तो नहीं है कि ऐसोबातों के मनमें बैठानेसे धारकको सदा दुःखहोताहै परन्तु जिन धारकों के स्वभाव बहुत छोटेहोतेहैं और जिनके स्वभावोंपर अतिसुगमता और तेज़ी से प्रभाव होजाता है सन्देह है कि उन को हानिहो ऐसी परीक्षा मुख्यकरके उसदशा में निषेध कीगईहै कि जब सर्व्वजन सभा केवल तमाशा देखनेका ऐसी परीक्षा कीजावे यदि किसीप्रकार से ऐसीपरीक्षा उचितहै तो केवल उसदशामें कि एकान्तमें इस प्रयोजनसे कीजावे कि जो बातेंठीकहैं और जो परिणामउत्पन्न

होसक्के हैं उनको मालूमकियाजावे कि इसविद्याके खोजलगाने में वृद्धिहो और उनपरिणामोंमें लाभ दायक कार्य कियेजावें॥

मेरे विचारसे आकर्षण के लक्षणों का सभामें विदितकरना कभी भी अच्छानहीं है इसबात के अनुचित होने के विषय में मैंने बहुतसे कारण वर्णनकियेहैं और एक प्रमाणयहहै कि इन सुन्दर और अद्भुत लक्षणोंका केवल इसलिये उत्पन्नकरना कि लोगोंको आश्चर्य्य और तमाशा मालूमहो ऐसीबात है कि जो ईश्वर की शक्ति ने हमको नेक कामकेलिये कृपा की है उनको बुरीतरहपर काममें लाना बुराहै यहविद्या कुछ खेल की चीज़ नहींहै वास्तवमें यहविद्याशुद्ध औरपवित्रहै इसविद्यामें प्रतिष्ठा॰ पूर्वक खोज करना चाहिये और उसपर केवल इसलिये क्रिया करना कि उनलोगों को जो केवल तमाशा समझते हैं या एक नई बातकोदेखकर हँसदेतेहैं दिल्लगीहो कारकके लिये और विद्या के अर्थभी अप्रतिष्ठा का कारणहै वास्तव में यहबात है कि इस विद्या की क्रिया केवल एकान्त में चाहिये कारण एक यहीहै कि जैसे एकबड़े मकानमें सभाइकट्ठी होनेपर यहक्रिया कीजावे तो सिवाय उनमनुष्यों के जो धारक के निकटहोते हैं और मनुष्य क्रिया के लक्षणोंको देखनहींसक्के हैं न उनकेठीक होनेका विवेक करसक्के हैं अर्थात् जो साक्षी धारक के मुख के डौलसे मिलतीहै वह दूरीसे देखीनहींजासक्कीहै मैंने बहुत ऐसे मनुष्य देखेहैं कि जो क्रियाकी सभा से लौटआतेहैं तो उनको भरोसा इसक्रिया के विषय में नहींहुआ चाहे एकान्तमें क्रिया कीगई तो पांचमिनट के समय में उनको पूरा भरोसा होगया क्योंकि जोर चिह्न उत्पन्नहुये उन्होंने अपनीआंखों देखलिये॥

मैंने यहवर्णन विचार संयोग के अनुवाद में इसलियेकिया कि किसीसमय विचारसंयोग लक्षण ऐसेहोतेहैं कि धारक को

उनसे पीड़ाहोतीहै मुख्यकरके उसदशामें कि कारक मूर्ख और अनभ्यासी हो मैं अब फिर वहीबात दूसरीबार वर्णन करता हूं जो पहले कहचुकाहूं कि जब ऐसे संयोग होतेहैं तो सबसे अच्छीयुक्तियहहै कि सोनेवालेसे छेड़छाड़ न कीजावे और जब तक वह सोवे उसेसोनेदे यदि कारक की प्रकृति स्थिररहे और दुःखीनहोतो उसेसर्वप्रकार से अधिकारहै कि उलटीयुक्तिकरके अर्थात् हाथोंकोनीचे की तरफ़ के बदले ऊपर की तरफ़लाकर धारकको जगादे परन्तु इसरीति का ध्यान रखना चाहिये कि ऐसीक्रिया किसी अभ्यास कियेहुये कारक के विद्यमान बिना कभी न कीजावे॥

अब मैं फिर विचार संयोगकी ओर ध्यानदेताहूं और आकर्षण संयोगका वर्णनकरता हूं मैं अब यह भी वर्णन करूंगा कि जो लोग धारक के निकट खड़ेहोते हैं उनका प्रभाव धारकपर बहुतहोता है बहुतसे सोनेवाले ऐसे हैं कि और खिचावटों के संयोग होने के लिये इसबात की आवश्यकता नहींहोतीहै कि उनको उनमनुष्यों के साथ संयोग दिलाया जावे जैसे संदेही और खोटे और पक्षकरनेवाले मनुष्योंके वर्त्तमानहोने के कारण धारकपर अप्रसन्न बरन दुःखदेनेवाले लक्षण उत्पन्नहोतेहैं इस के विरुद्ध जो अच्छे और योग्य मनुष्य विद्यमानहों तो प्रसन्न करनेवाला लक्षण धारक के मुखपर विदित होता है सबसे अधिक यहबातहै कि धारक के निकट नानाप्रकार के मनुष्यों काहो कि जिनके उससमय विचारहो इसबातका कारणहोता है कि धारकका स्वभाव दुःखी होजाताहै और कुछ तो उसका कारण यहहोताहै कि हरएक के विचार के साथ उसकोसंयोग होताहै और कुछ यह कि हरएक मनुष्यकी आकर्षणशक्तिनाना भांति उसपर प्रभाव करतीहै तथाच सभामें क्रिया के चूकजाने

का यह एक बड़ाकारण है ऐसा जमाव जहां तक होसके नहीं करना चाहिये यह बात कारकों के भाग्यमानी की होतीहै कि बहुतसे कारक ऐसेहोते हैं कि उनपर नानाप्रकार के मनुष्योंके जमावसे बहुत प्रभाव नहींहोताहै परन्तु कई धारक ऐसे तेज होते हैं कि जो एक मनुष्यभी किसी मुख्यस्वभाव का उससमय वर्तमानहो तो उनको मालूम होजाता है और जो २ बातें उस मनुष्यके मनमें उससमयफिररहीहैं उनकोमालूमहोजाती हैं॥

अब मैं इसवर्णन को छोड़कर इसबात को कहूंगा कि जब धारक सोता है तोजिस मनुष्य को उसकेसाथ संयोगदिलाया जावे उसके मनके विचार पढ़लेताहै यहबात उसविषय से अलगहै कि धारक को कारक या और संयोगिक मनुष्यों के आकर्षण से संयोग होताहै अब इसबात का वर्णन करूंगा. वह एक गुप्तदर्शन है जिसहम गुप्त दर्शन बिचार संयोग के कारण कहसके हैं या उसको अन्य मनुष्यों के विचार के मालूमकरने की शक्ति कहसके हैं आगे देखाजावेगा कि यह एक विचित्र प्रभाव आकर्षण क्रियाका है परन्तु उसके वर्णनकरने से पहलेमैं इतनी बात कहनी उचित समझताहूं कि बहुतमनुष्य जोगुप्तदर्शनकी शक्तिके होनेको मानना नहींचाहते हैं चाहे गुप्तदर्शनके सूचित होनेको आंखोंसे देखते हैं यह कहदेते हैं कि गुप्तदर्शन वास्तव में नहींहै ऐसे मनुष्यों से पूछनाचाहिये कि क्या वह इसबात को कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्यके मनमें अन्दर और शरीर के आरपार देखले इसबात से कुछकम आश्चर्यकी बात समझते हैं कि एकपत्थरकी दीवार के आरपार देखलेमेरेविचारमें अन्य मनुष्योंके विचारों से इसतरह मालूमकरलेना उसप्रकारके गुप्तदर्शन से कि दूरसे किसी स्थूलकी चीजको देखाजावे बड़ेआश्चर्य देनेवाली बातहै गुप्तदर्शन की दशामें तो हम यहविचार कर

सके हैं कि कोईमनुष्य बहुत महीनचोज़ इसविषय का आशय बनजाती है कि जिसके द्वारा हमतक वस्तुओं का रूप या स्वभावका कुछचिह्न पहुंचजावे परन्तु यहबात क्योंकर मालूम होसक्ती है कि अमुक मनुष्य के मन में अमुक विचार है चाहै उसविचारका वर्णन भी नहींकिया सो मालूम हुआ कि जो मनुष्य विचार के मालूम करनेकी शक्तिको मानते हैं और गुप्तदर्शनकी शक्तिको नहींमानते मानों कड़ाहीमें से सीधे आग में पड़जातेहैं एक बिषयका जो प्रकटमें होनेकाकारण नहींमालूम होसक्ता उसका कारण एकदूसरे ऐसे विषयसे उत्पन्न करते हैं जो पहले विषयसे अधिकतर समझमें आनेकेयोग्य नहींहैं परंतु वास्तवमें दोनोंलक्षण अर्थात् विचारके मालूमकरनेकी शक्ति और गुप्तदर्शन शक्तिठीक हैं और जहां हमको मालूम होसक्ता है दोनों मुख्यकरके एकही कारणपर घटितहैं विचार मालूम करने की शक्ति की वार्त्ता के उपरान्त गुप्तदर्शन की शक्तिका वर्णन करूंगा ॥

विचारके मालूम करनेकी शक्ति नानाप्रकार के स्वरूपों से प्रकट होतीहै यदि धारकको किसी मनुष्य के साथ संयोग दिलायाजाय तो बहुधा बहुत ठीकतौरसे जो कुछ उसमनुष्य के मनमें फिरताहै उसको मालूम होजाताहै यदि उस मनुष्य के मनमें किसी मित्र का विचारहै जो उस समय कहीं दूरहै या उसको अपने घरका या अपने मकानका या किसी औरवस्तु का विचारहै तो धारक को जो २ विचार उस मनुष्य के जीमें जिस २ तरह से फिरताहै मालूम होजाता है और धारक इस विस्तार और सत्यतासे वर्णन करताहै कि सबको अतिआश्चर्य मालूम होताहै बरन उससे अधिक यह होताहै कि धारक को उस मनुष्यके जिससे उसे संयोग दिलायागया उससमयकेही

विचार मालूम नहींहोते हैं बरन उसके गत समय के विचार मालूमहोजाते हैं अर्थात् उसके स्मरणमें संयुक्त होजाता है और धारक उनबातों को वर्णन करताहै जो उससमय वर्तमाननहीं होतीं बरन उस मनुष्य को जिसके साथ उसे संयोग है केवल उस समय बुद्धिहीनता में किन्तु उससे अधिक यहबात है कि धारक वहबातें मालूम करलेताहै जो कभी उसमनुष्यको मालूम नथीं परन्तु उससमय भूलगया है बहुधा ऐसा होता है कि वह मनुष्य धारकके वर्णनों को झूठ बताता है परन्तु धारक अपने वर्णनके ठीकहोने में तकरार करताहै कि जबतक वह शोचता है या खोज करताहै तो उसे मालूम होताहै कि वास्तव में धारक ठीककहता है और वास्तवमें वह आप उसबात को भूलगयाथा हम सबजानते हैं कि किसी समय ऐसाहोता है कि हमको कई बातें भूलजातीहैं और फिर यादआजाती हैं इसदशामें यहबात मालूम होतीहै कि सोनेवाला हमारे गत विचारों में संयुक्त होजाताहै और विचार भी ऐसे कि उससमय हम उनको भूल गयेहोतेहैं जो और कुछनहीं तो यहबात तो उनलोगों को अवश्य माननी पड़ेगी जिनको यह विचारहै कि गुप्तदर्शन विचार संयोगसे प्राप्तहोताहै परन्तु जो हमको गुप्तदर्शन के संभवित होनेमें निश्चयहो तो गुप्तदर्शन विचार संयोग बिना और या विचार संयोग समेत में विवेक करना अति कठिन है जैसे एक धारक एक मनुष्यके विनय के अनुसार किसी मुख्यस्थान का वर्णन करताहै जो २ चीज़ें उसमकान में रक्खीहैं जैसेमेज और कुरसी पलँग फर्श और और मन्दिरके अलंकार की वस्तुओं को बताताहै और जैसा वह कहताजाता है उसमन्दिरका मालिक बिचारकरता जाताहै और देखता जाताहै कि हां जब मैं अपने मकान से बाहर आया था तो यह सबचीज़ें इस युक्तिसे उस में

रक्खी होतीथीं परन्तु वर्णन करते २ धारक किसी मुख्यचित्र अर्थात् किसी मनुष्य या कुत्ते या घोड़ेकी मूर्त्तिका वर्णन करता है और किसी दूसरी वस्तु के लिहाज़से उसका स्थान किसी तरहपर वर्णन करताहै मालिक उसके वर्णनको अशुद्ध वताता है परन्तु सोनेवाला अपने वर्णनपर स्थिर है इसीतरह मकान का मालिक अपने वचनपर स्थिररहता है और तकरारकेपीछे धारक अपने वचनको और मकानका मालिक अपने वचन को ठीक मानताहै परन्तु जब मकान का मालिक अपने घर लौट आताहै तो उसको मालूम हुआ कि वास्तव में मुझ से भूलहुई और सोनेवाले का वचन ठीकथा अब उसको याद आताहै कि किसी मुख्यसमय तक वहमूर्त्ति उसस्थानपर रक्खीहुईथी जो उसकी समझ मेंथा फिर चाहे उसने आप वा किसी अन्य मनुष्यने उसस्थान को बदलकर उसजगह रखदिया था जो सोने वालेने वर्णनकियाथा परन्तु वह इसवातको उससमय भूलगया था ऐसीबातें बहुधा होतीहैं इसके दोकारण होसक्तेहैं—पहले तो यह कि सोनेवाला कहताहै कि मैं उसदूसरे मनुष्यकेबिचार को पढ़रहाहूं और यहबात वास्तवमें होतीहै वरन उनदशाओं मेंभी कि जब वह विचार करताहै कि मैं सीधा उनवस्तुओं की ओर देखरहाहूं सो यह होसक्ताहै कि सोनेवाला वास्तवमें उस मनुष्यके गतविचारों को पढ़रहा है और किसीतरह से जो हम को मालूम नहीं होसक्ताहै उसको यहवात मालूम होजाती है कि अमकाविचार उसमनुष्य का अशुद्धहै--या यह कारणहै कि जब सोनेवालेसे कहाजाताहै कि अमुकमन्दिर का हालबताओ तो उसमकान का निशान पूछनेवालेकी समझमें पाकर उसके चिह्नपर चलाजाताहै जबतक कि गुप्तदर्शनकी शक्तिसे उस मकानको अपने अन्दर की आंखों से देखने लगताहै इसबात में

संदेह नहींहोसक्ताहै कि ऐसीबात बहुधाहोतीहै और आगेदेखा
जावेगा कि परीक्षा इसतरहपर होसक्तीहै कि यहबातसूचितहो-
जावे परन्तु मेरीयहभीअनुमतिहै कि कईदशाओंमेंपहलाकारण
ठीकआताहै और कईदशाओंमें एक प्रकारके बिचार का पढ़ना
बहुधा इसतरहपर होताहै कि एकबंद पत्र या कोई मोहरकिया
लिफाफा हो या कोईमोहरकिया सन्दूक़हो उसपत्रके मतलबको
धारकपढ़लेयाजो कुछलिये या मोहर किये सन्दूक़ में हो मालूम
करले कईधारक तो ऐसेहोतेहैं कि जो कोईमनुष्य ऐसावर्त्तमानहो
जो पत्रके अर्थ या सन्दूक़के अन्दरकी चीज़ें जानताहो और उसके
साथसंयोग दिलायाजाय तो सबबातें मालूम करलतहैं जो यह
बातनहो तो मालूम नहीं करसक्ते परन्तु कईरूपों में यहहोताहै
कि उसमनुष्य को धारकके शरीर के साथ छूना अवश्य नहींहै
केवल यहबात बहुत होतीहै कि वहमनुष्य उसस्थान पर वर्त्त-
मानहो और किसीसमय ऐसा होताहै कि कई धारकों को तो
गुप्तदर्शन की शक्ति प्राप्तहोतीहै परन्तु कभी २ यह शक्ति थोड़े
समयके लिये जातीरहतीहै और केवल विचारोंके पढ़लेने की
शक्ति प्राप्तहोतीहै इसवर्णन से प्रकटहोगा कि जब धारक को
केवल विचारके पढ़लेनेकी शक्तिहै तो ऐसा अभ्यास उससमय
सिद्धहोगा कि जब कोईमनुष्य उसस्थानपर वृत्तान्तका जानने
वाला विद्यमानहो यदि ऐसामनुष्य वर्तमाननहो तो इसअभ्या-
समें चूकहोगी इस सबबातों का विचार परीक्षाके समयरखना
उचितहै नहीं तो सिवाय परिश्रम उठानेके और कुछ परिणाम
न होगा जब एकधारक एकप्रकारका जो विचार संयोगसे गुप्त
वस्तुओं को देखताहै एक समयमें गुप्तवस्तुओंकोनहींदेखसक्ता
और फिर किसी ऐसेमनुष्यके आनेके पीछे जो उनचीजोंके हाल
को जानताहो उनको देखनेलगताहै तो देखने वालोंको विचा

रहोताहै कि कुछ मिलावट होती है चाहे जो हमको सब नाना-भांति के रूप इस क्रियाके मालूमहोवें तो इस के बदले कि हम धारकपर संदेहकरें एक क्रियाके ठीकहोनेकी सिद्धि और धार-ककी सच्चाई मालूमहोतीहै जो मनुष्य ऐसीदशायें देखें जिनमें विचारके पढ़ने से गुप्तवस्तुओं के अवलोकनका कारण मिलता है उनको इसबातका विचार रखना चाहिये कि यही कारण सब दशाओं पर ठीक नहींआता है बहुधा ऐसा होता है जैसा मैंने ऊपर वर्णनकिया कि जिस व्यवहार में धारकके वर्णनको किसी विचार या विद्यमान वस्तु के लिये अशुद्ध समझते हैं वास्तव में उसका वर्णन ठीक होताहै परन्तु यहभीबहुधा हो-ताहै कि धारक के वर्णन को झूठ समझलेते हैं और फिर कोई ऐसी रीति नहीं होती जिससे उसके वर्णन की सत्यता मा-लूम कीजावे सच यहहै कि दोनों तरफ़ों में बहुत से कारण झूठहोने के ऐसे होते हैं कि उनका खोजना अति कठिनहै जैसे यहबात होसक्तीहै कि सोनेवाला वास्तव में किसी गत वृत्तांत का वर्णन कररहाहो और उसकी समझमें यहबात हो कि वह बात अबभीहै गत और वर्तमान वृत्तान्तों के लक्षण उसके मन पर एकही तरह की तेज़ी के साथ उत्पन्न होतेहैं क्योंकि दोनों लक्षण परस्पर संयोगिक और मनके लक्षण हैं इसकारण उस को उनमें तुरंत विवेक नहीं होता और निश्चय है कि हमको मालूमहो कि वह किस समय का वर्णन कररहा है तो उसका वर्णन ठीक मालूमहो इसबातका रक्षापूर्वक ध्यानरखनाचाहि-ये और परीक्षाओंका प्रबंध इनबातों को ध्यानरख कर करना चाहिये —यह भी होसक्ताहै कि धारकके विचारपर और मनु-ष्योंके विचारसे प्रभावहो--धारकपर संयोग विचार का इतना तीक्ष्ण प्रभाव होताहै कि जो कोई मनुष्य कोईसैन प्रत्यक्षकरे

या कोई प्रश्न समझानेकी तरह सैनपूर्वक कियाजावे तो धारक पर उसका प्रभाव ऐसाही होजाताहै जैसा कि प्रश्न करनेवाले के विचार और स्मरणसे होताहै और यह सबबातें इकट्ठीहोकर धारकके विचारको दुःखीकरदेतीहैं इसलिये उचितहै किप्रश्नोंकी समझौती और सैनेंभी काममें न लाईजावें बरन धारकको अपने आपही जो कुछकहै कहनेदें परन्तु सब दशाओंमें बरन भूलनहीं होतीहै बहुत धारक ऐसेहोते हैं कि नानाप्रकार के प्रभाव जो उनपरहोते हैं उनमें विवेक करसक्ते हैं और जिनबातों की सैन उनकोहोतीहै उनको अंगीकार नहींकरते हैं और यहबात ऐसी दशा में भी होसक्तीहै कि धारकको गत और वर्तमान समयके वृत्तान्तोंके विवेककरने की शक्ति प्राप्तनहो हां कईऐसे भी होते हैं कि वहगत और वर्तमान समय में भी विवेक करसक्ते हैं प्रकटहै कि इसप्रकारकेधारक अन्य सर्वधारकोंसेउत्तमहोते हैं ॥

बहुधा ऐसा होता है कि पहले की परीक्षाओं में कारक को आकर्षण के लक्षणोंके प्रकटहोने के कारण ऐसाआश्चर्य और प्रसन्नता मालूम होती है कि वह अज्ञानता से उस अचंभे में अपने विचार धारक की समझ में विचार संयोगसे उत्पन्नकर-देताहै परन्तु जब कईबेर वहक्रिया करचुकताहै तो उसकामन स्थिर होजाताहै और फिर उसको केवल इसीबात की इच्छा होतीहै कि जो कुछ धारककहै सुनतारहै तथाच धारककोसैन नहीं कीजाती और जो लक्षण उसपर विदितहोते हैं उनका प्राकट्य स्पष्टहोताहै और किसी तरह की गूढ़ता उसके वर्णन में नहींहोती और धीरे २ धारक की शक्ति बढ़तीजाती है और अभ्यास से यह बात होतीहै कि जो प्रारम्भ में उससे बहुत भूलें होती हैं और उसके वर्णन में उलझावट होतीहै तोधीरे२ यह वह बुराइयां दूरहोजाती हैं ॥

जब मैं केवल गुप्तदर्शन का हाललिखूंगा तो ऐसी बातोंको और विस्तारसे वर्णन करूंगा ॥

बहुधा ऐसाहोता है कि धारकको कारक या और संयोगिक मनुष्य के शरीर के साथ संयोग होजाता है जो कुछ शरीर का दुःख कारक को होवे उसका प्रभाव धारक के शरीर पर होजाताहै और बरन ऐसाहोताहै कि जो जोड़ कारक के शरीर का रोगीहो उसका हाल धारक को मालूम होजाता है धारक बतादेताहै कि कारक के शिरमें पीड़ाहै या पसुली में दुःख है या श्वासलेने में उसको कठिनता होतीहै धारक यहबात बता देताहै कि कारक के भेजे या फेफड़े या कलेजे या पक्काशय में अमुक प्रकार की हानि है और बहुत दशाओं में उसका वर्णन ठीक होताहै ॥

इस जगह मैं इस बातका वर्णन नहीं करताहूं कि धारक इन सब जोड़ोंकी दशाओं को स्पष्ट आंखोंसे देखताहै इसबात का वर्णन गुप्तदर्शनके प्रकरण में कियाजावेगा यहां केवल यह वर्णन कियाजाताहै कि धारक को एकप्रकारकी समझकी बुद्धि रोग और उसकी शान्ति के मालूम करनेकी प्राप्त होतीहै ॥

यहसमझकी शक्ति उसदशा मेंभी कामदेतीहै कि जिसमनुष्यकाहाल मालूम करनाहो और वहदूरीपरहो परन्तु जोकिसी तरह धारकमें और उसमें संयोग उपजाया जावे इससंयोग के उपजानेको यहबात बहुतहै किउस मनुष्यके केश या और कोई वस्तु जो उसकेपासरहीहो या कोई नवीनलेख उसका धारकके पासरक्खाजावे उसबस्तुकी सहायतासे धारकको उस अविद्यमानमनुष्यके साथ एक संयोग उपजता है और यहबात प्राप्त होजातीहै कि मानोंवह मनुष्य धारकके पास वर्त्तमानहै और फिर जो कुछ धारक उसकेलिये वर्णन करताहै ठीकहोता है ॥

कहतेहैं कि जिनधारकों को शरीरकी दशाके मालूम करने की शक्तिहोतीहै उनको यहबलभी होताहै कि जो उपाय उचित हो बतादेतेहैं मेरीरीति है कि जिसबातकी मुझे अच्छीतरह परीक्षा नहींहुईहै उसकेलिये कोईबात पूरेतौरपर वर्णननहीं करताहूं इसलिये मैं यह नहीं कहूंगा कि ऐसी बात असंभवित है या कभीनहीं हुईहै परन्तु मैं यहबात कहसक्ताहूं कि धारक इस तरहसे चिकित्सा बतासक्ताहै कि कभी उसीप्रकारका रोग जो उसको होगयाहो और उसकीचिकित्सा उसनेदेखीहो तो वही चिकित्सा बतादेताहै या यह कि वैद्यसे उसने कभी कुछसीखा हो तो बतासक्ता है कई दशायें ऐसीहोती हैं कि धारकको जो कई इलाज बतायेजावें तो उनमें से वह इलाज चुनलेताहै जो उक्त रोगकेलिये उचितहोता है परन्तु ऐसेबिषयों की मुझे पूरी परीक्षानहींहुई निश्चयहै कि धारक इसकारण उचितचिकित्सा बतादेता है कि जो मनुष्य कई प्रकार के इलाज उसको समझाताहै वह आप उनमें से किसी मुख्य इलाजको सबसे उत्तम समझताहै और धारकको जो उसमनुष्यकेसाथ विचार संयोग होताहै इसीकारण वह उसी इलाजको चुनलेताहै ॥

जो कुछ ऊपर वर्णन कियागया उससे मालूम होगा कि धारकको अन्य मनुष्योंके स्वभावके मालूमकरने की शक्तिहोती है वह गुप्त दर्शनका एकप्रकार है परन्तु इस में इतनासमझना चाहिये कि यहगुप्तदर्शन पूरानहीं है अर्थात् धारक गुप्तवस्तुओं को आंखोंसे नहींदेखताहै वरन उनवस्तुओं का विचार या रूप जो और मनुष्योंकी समझमें होताहै उन अन्य मनुष्योंसे धारक की समझमें बदलजाताहै कईमनुष्य ऐसेहैं कि कहते हैं कि बस गुप्तदर्शन भी यहीहै और गुप्तदर्शन प्रत्यक्ष कोईवस्तु नही परन्तु आगे आपको मालमहोगा कि प्रत्यक्ष गुप्तदर्शन और अन्य

मनुष्यों के विचारोंके मालूम करनेकी शक्ति दो जुदीचीजेंहैं यह भी आपको आगेमालूमहोगा कि प्रत्यक्ष गुप्तदर्शन और अन्य मनुष्यों के विचार मालूम करने को शक्ति एकही बात अर्थात् मालूम करनेकी शक्तिपर घटितहैं परन्तु सर्वदा यहध्यान रखनाचाहिये कि यह दोनोंबातें एक नहीं हैं और दोनोंको इकट्ठा न करलेना चाहिये॥

संसारी लोगोंमें इसप्रकारका संयोग या इच्छा अपनेआप बहुत होतीहै कोई मनुष्य ऐसा नहींहै जिसे कुछ न कुछ ऐसी इच्छा किसी मुख्यवस्तुकी ओरनहो यद्यपि बहुतसीबातें ऐसी हैं कि जिनके कारण सर्वप्रकारसे रोज़२ उनका प्राकट्य नहीं होता हरएक मनुष्य ने इस प्रकार के दृष्टान्त बहुधा सुनेहोंगे मेरेघराने में एक स्त्री वर्णन कियाकरतीथी कि उसकी माताकी रीतिथी कि जब कोई उसका बांधव मरजाता था तो उसको पहलेही ख़बर होजाती थी यह स्त्री कईबार इंगलिस्तान से हिन्दुस्तानको जाती रहतीथी कईबेर ऐसा संयोगहुआ कि जहाज़पर समुद्र में चलते २ उसने कहा कि मुझे निश्चयहै कि अमुक मनुष्य मरगया और जब बन्दरपर पहुंची तो सदा उसके मरनेकी ख़बरमिली बहुधा ऐसा भी होताहै कि मरतेहुये आदमी को आंखों से मरते देखते हैं परन्तु इसका वर्णन गुप्त दर्शनके प्रकरण में कियाजावेगा॥

स्विटज़रलैंड में एक प्रसिद्ध मनुष्य था उसकी यह दशाथी कि कभी२ जो कोईमनुष्य उसकेपास बैठाहो तो कुछउसकेगत वृत्तांत होते थे वह सब वर्णन करदेता था यह एकइसबात का प्रमाण है कि कई मनुष्यों को अन्य मनुष्योंके विचारोंकीशक्ति अपनेआप आकर्षण क्रिया बिनाप्राप्त होजातीहै॥

इच्छा ऐसीवस्तु होतीहै कि जो दोमनुष्य अकस्मात् पहली

बेर मिलजावें तो उनमें परस्पर अतिप्रीति होजाती है इसबात का कारण दोनोंमेंसे कोई वर्णन नहींकरसक्ताहै परन्तु दोनोंकी इच्छा बलवान् मालूमहोतीहै सो मालूमहुआ कि कभी २ जो दो मनुष्यों को पहलीही दृष्टिमें प्रीति होजाती है यहबात कुछ विचारी नहीं बरन मुख्यहै किन्तु यहबात तो सबजानते हैं कि कईमनुष्य ऐसेहोतेहैं कि समयतक इकट्ठेरहकर लड़पड़तेहैं और अलगहोजातेहैं परन्तु जबअलगहोजातेहैं तोदोनोंशोकवान्रहते हैं और अन्तको लाचारहोकर फिरइकट्ठे होजातेहैं और फिरलड़ पड़ते हैं और फिरअलगहोकर और दुःखीहोकर मुरझाजातेहैं॥

जिसतरह मनुष्योंमें इच्छाहोतीहै उसीप्रकार कठिनग्लानि भी होतीहै हरएक मनुष्यने देखाहोगा कि किसी मुख्य मनुष्य को किसी मुख्यमनुष्यसे ऐसीग्लानि होतीहै कि जन्मभर दूर नहींहोती जो उससेवह कारण पूछाजावे तो नहीं बतासक्ता है वास्तवमें कोई कारणभी नहींहोता किन्तु वहइसग्लानिको दूर करनाचाहताहै परन्तुदूरनहींहोसक्ती परन्तु आकर्षणकी क्रिया में इसतरहकीग्लानि बहुत बलवान् होतीहै कईदशाओंमें धारक किसी मुख्यमनुष्यकारहना नहींसहसक्ता जो उसपर आकर्षण की क्रिया न हो तो कुछभीग्लानि उससेनहींहोती-केवल जीवघा- रियों या निर्जीवोंके लिये इसप्रकारकी ग्लानि बहुत स्पष्टरीति से प्रकटहोतीहै तथाच बहुतमनुष्य ऐसेहोते हैं कि उनको बिल्ली या कुत्ते या चूहेया मेढ़कया बकरें देखनेकी इच्छा नहींहोती बरन यहां तकहोताहै कि जो यहजानवर छिपेभीहों तोभी उनकोइनकाहोना मालूम होजाताहै जो उस जगहसे उनको अलग न कियाजावे तो मन बिगड़जाताहै बरन मूर्च्छा या ऐंठनकी दशा होजातीहै कई मनुष्यों को ऐसी चीज़ों से ग्लानि होतीहै कि बहुधा और लोगोंको उनकाकुछभी प्रभावनहींहोता बरनउनसेप्रीतिरखतेहैं

जैसे कई मनुष्योंको गुलाब के फूल या सेव या नाशपाती या खरबूज़ा या लाखबत्ती या राल या नमक या रोटीकी रुचिनहीं होती और ग्लानिभी ऐसीहोतीहै कि समझानेसे या उसमनुष्य के आप इच्छाकरनेसे दूर नहींहोतीहै कहतेहैं कि इनचीज़ोंकी गन्ध असह्यहोती है परन्तु बहुधा ऐसा होताहै कि गन्ध वहां पहुंचती भी नहीं परन्तु उनवस्तुओं के मकान में वर्त्तमानहोने सेग्लानिका प्रभावहोताहै चाहे वह चीज इतनीदूरहो कि दृष्टि न पड़े न उसकी गन्ध आसके एक बड़े आकर्षण की क्रिया के कारकको परीक्षाहुईहै कि इसप्रकार की ग्लानि और आकर्षण क्रियामें परस्पर बहुत संयोग है अर्थात् जिन मनुष्यों को इस प्रकार की ग्लानियां होतीहैं उनपर आकर्षणक्रिया का जल्दी और तेजहोताहै इनवर्णनों से यह परिणाम निकलसक्ताहै कि मनुष्यों और जीवधारियों और निर्जीववस्तुओंमें कुछप्रकारकी ऐसीवस्तुहै कि उसका प्रभाव मुख्य मनुष्यों पर होता है और प्रभाव भी नानाप्रकार का नानाभांति के मनुष्यों पर होता है निश्चयहै कि वह वहीवस्तुहै कि जिसके कारण आकर्षणक्रिया का प्रभाव मनुष्यों पर होता है और आकर्षण का स्वप्न और अन्य आकर्षण के लक्षण प्रकट होतेहैं॥

अब जोमैं अन्य मनुष्योंके विचार ज्ञान और विचारसंयोग और सम्बन्ध सहित गुप्तज्ञान का वर्णन करचुकाहूं तो आगे के पत्रमें प्रत्यक्ष गुप्तज्ञानका वर्णनकरूंगा ऊपर वर्णनकरचुका हूं कि यह प्रत्यक्ष गुप्तदर्शन के लक्षण चाहे मूल हमकोउनका मालूम नहींहोता ऐसीदशामें भी उत्पन्न होतेहैं कि जब कारक को उनके प्रकटहोने की आशानहींहोती अर्थात् उसदशामें कि वह अन्य लक्षणोंके अवलोकन और उत्पन्नकरनेकी ओर ध्यान किये मुझे निश्चय है कि गुप्त दर्शन की दशा अपने आप भी

बहुधा उपजतीहै और उसकाकारण लोगोंने बहुधा यहसमझ लियाहै कि वह केवल विचार है या आकस्मिक बात है पर इसके उपजने का कारण कुछही हो इसबात के होने में कुछ सन्देहनहींहै और इसकाखोज हमको रक्षापूर्वक करना उचित है और यहबात कहना कि केवल विचार से यहबात उत्पन्न होजातीहै भूलहै बहुत मनुष्य जब आकर्षण क्रिया का वर्णन सुनतेहैं तो वह समझजातहैं कि वास्तव में आकर्षणकी क्रिया गुप्तदर्शन की शक्ति के उत्पन्न करने की युक्तिको कहतेहैं परन्तु यहबात समझलेनाभूलहै गुप्तदर्शन केवल एकलक्षण आकर्षण क्रिया के अन्य चिह्नोंमें से है कई मनुष्य ऐसेहोते हैं कि जब गुप्तदर्शन का वर्णन उनके साम्हने होतो वह भविष्यत् दर्शन के अर्थ समझलेते हैं परन्तु जानना चाहिये कि जो भविष्यत् दर्शन कभी हुआ भी न होता तो प्रत्यक्ष गुप्त दर्शन जो मुख्य गुप्तवस्तु के देखलेने से सम्बन्धित है वास्तव में सत्यहै इस बातकी वार्त्ता आगे के पत्रमें लिखीजावेगी॥

सातवां पत्र॥

जिन बुद्धिमानों ने उड़ायल में पुस्तकें मक़नातीस हैवानीकीनिस्बत निर्माण कीहैं उन्होंने भी गुप्त दर्शनका हाललिखाहै मैं गुप्तदर्शन उसको कहताहूं कि आंखों की सहायता बिना धारक दूरकी और अवर्त्तमान वस्तुओं को देखे इस पत्र में यह वर्णन होगा कि गुप्तदर्शनके क्या२ रूपहैं और आमिलान अमल मक़नातीस हैवानीने क्या २ स्वरूप लिखे हैं और मैंने अपनी आंखोंसे क्या२ स्वरूप देखेहैं॥

पहिला गुप्त दर्शनका स्वरूप यहहै कि यद्यपि धारककी आंखेंबंद होतीहैं परन्तु वह कारक के हाथ को साफ़ देखताहै

यह आकर्षणके क्रियाका प्रभाव प्रारंभमें कि जब आकर्षण की निद्रा उत्पन्न कीजातीहै प्रकट होता है सोनेवाला अपने आप इसबातके विना कि उसे मालूम कियाजाव कहताहै कि मैं इस बातको देखताहूं और बहुधायह भी वर्णन करताहै कि मुझको उंगलियोंमें से प्रकाश दिखाई देताहै जे बंदहाथआंखोंके सामने हो या शिर के पासएक तरफ़ या शिरके ऊपर या शिरके पीछे हो तो इनसर्व दशाओंमें धारक उसको देख सक्ता है और यह बात खोजलेनी किवह बाहरके नेत्रों से नहीं देखलेता बहुत सुगमता पूर्वक इसबातके सिवा भी मालूम होसक्तीहै कि धारक के नेत्र बांधदिये जावें आंखों का बांधना बहुधा अनुचित है क्योंकि धारकको दुःख होताहै और जो गुप्त ज्ञानकी शक्ति उसको प्राप्त होती है उस में कमी होजाती है सच यह है कि आंखों पर पट्टी बांधेविना आंखें दोतरह पर अपने आप बंदहो जातीहैं तथाच उन दशाओं में कि जबनिद्रा जागरण अपनेआप आकर्षण क्रिया बिनाहोता है सदैव काल यह बातदेखी जाती है कि आंखकी पुतली बिल्कुल स्थिर होतीहै और उसपर प्रकाश का कुछभी प्रभाव नहीं होता यहबात आंखों को जोर के साथ खोलदेने से मालूम होतीहै और बहुधा ऐसा होताहै कि पुतली केवल स्थिरही नहीं होतीहै बरन ऊपरकी ओर उलटी होतीहै यहांतक कि जो आंखोंको ज़ोरसे खोलाभी जावे तो भी पुतली दिखाईनहीं देती इसके सिवा हमयह बात सदा करसक्ते हैं कि हाथको शिरकेऊपर या पीछेरक्खें और प्रकटहै किकिसीमनुष्य के नेत्र में यहबल नहीं है कि जो वस्तु शिरके पीछे रक्खी हो उसको देखसके क्योंकि मनुष्य की आंख को यह शक्ति सनातनसे प्राप्त नहींहै पहिले २ सोने वाला हाथके देखने के लिये बहुत यत्न करता है चाहे उसकी आंखेंबंद होती हैं परन्तु आंखों

की ओर देखने से मालूम होता है कि सोनेवाला उनके काममें लानेके लिये बहुत प्रयत्न करताहै उसके स्वरूपसे ऐसा मालूम होता है कि वह अपने सन्मुख देख रहा है चाहे हाथ शिर की पीठ की ओर है कि सोने वाले की हृदयकी आंखके स्वरूप के मालूम करने के लिये परिश्रम करता है और प्रारंभमें जबसोने वाला हाथका वर्णन करता है तो उसको धुंधला दिखता हुआ बताता है परन्तु धीरे २ जब बड़ा स्वप्नप्राप्त होताहै तो अँधेरा नष्टहोजाता है और हाथसाफ़ २ मुख्य रंगमें दिखाई देताहै पहिले२हाथका रंगभूरासा मालूम होताहै ॥

जब सोने वाले की निद्रा एक मुख्य अवस्था को पहुंचतीहै तो बहुधा ऐसाहोताहै तो जोकोईचीज़ें उसकीपीठकीओर रक्खी हों वह उनको देखने लगता है ऐसा कि जो उसकी आंखें खुली भी होतीं तो गर्दन मोड़ने के बिनामुख्य दशा में ऐसे स्थानपर वह नहीं देखसक्ता था और सोनेवाला अपनी आंखोंकेसाम्हने या नीचेकी ओर अपने घुटनोंकी तरफ़ प्रतिसमय देखताहुआ मालूमहोताहै और उनवस्तुओं का वर्णन करताजाता है परंतु याद रखनाचाहिये कि उसकी आंखें बिल्कुल् दृढ़तापूर्वक बन्द होतीहैं यदि कमरे में कुछभी काम कियाजावे और जितना जी चाहे उसको छिपाकर करें तो जो सोनेवाले का ध्यान किसी दूसरीओर न जायेगा तो वह तुरन्त बतादेगा कि अमुकमनुष्य ने अमुक कार्य किया मैंने यहबात और कारकके हाथका देखनाभी बहुतसे धारकों में देखाहै निदान यहकि आकर्षण क्रिया के लक्षण रोज़ २ प्रकटहोते हैं ॥

इस वर्णन से प्रकट है कि प्रकट की देखनेवाली आंखों के काममें लाये बिना धारक वस्तुओं को स्पष्ट देखता है इस सच्ची बातकेठीकहोने में कुछसन्देह नहीं है और इसका कारण भी

मालूमहोनाऐसाकठिनहैकि जैसेगुप्तदर्शनकेअन्यरूपोंकेकारणों का मालूमकरना क्लिष्टहै प्रश्न उत्तरके योग्य यहहै कि जो चीज़ सोनेवाला बन्दआंखों से देखताहै उसका स्वरूप किसकेद्वारा भेजेतक पहुंचता है इसमें तो कभी सन्देह नहीं होसक्ताहै कि जबतक ब्रह्मांड में प्रभाव नहीं होता तबतक किसी वस्तु को धारक देख नहींसक्ताहै परन्तु यहबताइये कि वह किस प्रकार का प्रभावहै जो ब्रह्मांड तक प्रकटकी इन्द्रियां बिना पहुंचसक्ता है प्रकटकी ज्योति तो काममें आतीही नहीं क्योंकि आंखें बन्द होतीहैं और बहुधा ऐसाभीहोताहै कि बंदपलकोंपरभी वस्तुओं काप्रकाश नहींपड़ता और सिवाइसके पुतली उस समयमें इस योग्य नहींहोती कि प्रकाश का प्रभाव उसपर हो--सो यहबात हमको अवश्य माननीपड़ेगी कि शरीरोंमें कोई ऐसाप्रभावहै जो आंखोंके बिना ब्रह्मांडतक पैठजावे अचंभेकी बात यहहै कि जब सोनेवाला किसी वस्तुको स्पष्ट नहीं देखसक्ताहै तो साफ़देखनें के लिये उसके माथे पर या शिर के ऊपर या शिर की पीठपर उसवस्तुकोरखलेताहैऔरइससंबन्धसेउसकोसाफ़२देखसक्ताहै इससे मालूमहुआ कि यह सारांश गर्मीकीतरह खोपड़ी के अन्दरसे जाकर ब्रह्माण्डतक पैठजाताहै और निश्चयहै कि जब धारक ऐसी वस्तुओंको देखताहै जो उसके शिरसे छुईहुई नहीं होती तो उनवस्तुओंसे भी यहसार खोपड़ीपर गिरकर उसके अन्दर चलाजाताहै ॥

कई मनुष्य जो इस बातको मानते हैं कि धारक की प्रकट कीआंखें काममें नहीं आतीहैं ऐसा विचार करते हैं कि धारक वस्तुओंको इसकारण देखसक्ताहै कि उसको अन्य इन्द्रियां बहुत तेजहोजाती हैं और अंधे आदमियोंका दृष्टान्त देतेहैं कि बहुधा अंधेमनुष्य बहुत चीज़ोंकाहोना इसकारण से कि उनको

सूंघने स्पर्श करने और सुनने की इन्द्रियां तेजहोती हैं मालूम करलेतेहैं बरन बहुतसो चीज़ोंमें बचकर चलते हैं यहलोग यह भी दृष्टान्त देतेहैं कि जिन मनुष्योंपर निद्रा जागरण की दशा अपनेआप आजातीहै उनको वर्त्तमानिक वस्तु इसतरहसे मा॰ लूम होजाती है कि इनवस्तुओं के कारण वायु में कुछ प्रेरणा होजातीहै और जो विपर्यय वायुमें होताहै वह उनकोइसलिये जल्दीमालूम होजाताहै कि उनकी स्पर्श शक्तिबहुत तीक्ष्णहोती है परन्तु यहबात कहनी कि स्पर्श शक्ति अति तीक्ष्ण होजातीहै केवल कल्पितही नहीं है बरन एक ऐसी बात है कि सिद्ध होने के योग्य है उसको बेप्रमाण पहिलेही मानलेना अवश्य है जो अवश्य नहीं तो सम्भवित है कि जिन लोगों को स्वप्न जाग्रत अवस्था होतीहै उस समय में उनपर ऐसे लक्षण प्रतीतहोते हैं जो मुख्यदशा में उनपर किसी नेकभीनहीं देखे और स्पर्शशक्ति का तीक्ष्णहोना जो प्रमाण मानाजाता है सो उनका तेज़ हो॰ जाना कभी सिद्ध नहींहुआ॥

जिस श्रवण शक्तिकी यहबात है कि इसकेबदले कि आक॰ र्षण क्रियाके कारण इस शक्तिको तेज़ीपैदा हो बहुधा यहबात देखीजातीहै कि धारक सिवाय कारकके या उसमनुष्य के जि॰ सकेसाथ उसको संयोग दिलाया गयाहो और किसीका कुछ शब्दसुनताही नहीं और घ्राण शक्तिकीयहदशाहै कि केवल यही बात नहीं होती है कि बहुधा उनवस्तुओं में जो धारक देखता है कुछ गंधहो नहीं हो तो बरन धारक उनका रंग और उनका रूप बताताहै और बहुधा यहबात बताता है कि उनमें से कुछ प्रकाश निकलता हुआ दिखाईदेता है आवश्यक विषय घ्राण शक्तिसे सम्बन्ध नहीं रखते और जो कोई मनुष्य अपने मनमें समझले कि घ्राण शक्तिके तेजहोने से स्वरूप रंग सफाई या

चीज़ोंकी स्याही आकर्षणके निद्रावस्थामें मालूम होजातीहै तो मानो यहबात जाननी है कि आकर्षणकी क्रियाके कारण एक शक्तिका काम दूसरी शक्तिको बदलजाताहै सो जो इसबातको माने तो यह औरभी अधिकविचित्र आकर्षणकेप्रभावकाहोगा॥

यहस्थान इसबातकी वार्त्ताकानहींहै कि उससारका मुख्य मूलक्या है जिसके कारण हृदयकी अवलोकन शक्ति काम में आतीहै परन्तु एकबात का वर्णन मैं इसजगह करूंगा और वह यहहै कि जो२ चीज़ें सोनेवाला देखता है उनमें से उसको एक प्रकारका प्रकाश निकलताहुआ मालूमहोता है तथाच धारक बताताहै कि कारक के हाथमेंसे प्रकाश निकलताहुआ दिखाई देताहै इसकारण सिद्धहोता है कि सबवस्तुओंमेंसे कुछ न कुछ चीज़ निकलतीहै नाम उसका जोहमचाहें रखलें और रीशनाबेकसाहबने जो परीक्षायें आकर्षण क्रिया के सिवाकी हैं उनमें से उन्होंने मालूमकिया है कि सम्पूर्ण मूलकी चीज़ों में से एक मुख्य प्रकारकासार निकलकर सम्पूर्ण संसार में फैलाहुआ है और बहुधा मनुष्योंमें पैठता है और इससार का प्रभाव मुख्य करके उन मनुष्योंपर अधिकहोता है कि जिनको स्वप्न जाग्रत अवस्था अपने आप उपजतीहै रीशनबेकसाहबने जो परिणाम अपने खोजसे पाये हैं उनकीसिद्धि आकर्षणकी क्रिया से भी होती है क्योंकि धारकको चीज़ों में से प्रकाश निकलताहुआ दिखाई देता है॥

जब बहुतसे धारकोंपर अलग२प्रभाव अर्थात् गुप्त दर्शनावस्थाका उत्पन्न होजाना देखाजाता है तो हमको निरुपाय मानना पड़ता है कि कोई नवीन मार्ग ऐसा है जिस के द्वारा धारकके हृदयके ज्ञानपर प्रभाव होताहै सो जो२ गुप्तज्ञानकी दशाके लक्षण अधिक बिचित्र होते हैं उनको देखने से हमको

सूंघने स्पर्श करने और सुनने की इन्द्रियां तेजहोती हैं मालूम करलेतेहैं बरन बहुतसी चीज़ोंमें बचकर चलते हैं यहलोग यह भी दृष्टान्त देतेहैं कि जिन मनुष्योंपर निद्रा जागरण की दशा अपनेआप आजातीहै उनको वर्तमानिक वस्तु इसतरहसे मा-लूम होजाती है कि इनवस्तुओं के कारण वायु में कुछ प्रेरणा होजातीहै और जो विपर्यय वायुमें होताहै वह उनकोइसलिये जल्दीमालूम होजाताहै कि उनकी स्पर्श शक्तिबहुत तीक्ष्णहोती है परन्तु यहबात कहनी कि स्पर्श शक्ति अति तीक्ष्ण होजातीहै केवल कल्पितही नहीं है बरन एक ऐसी बात है कि सिद्ध होने के योग्य है उसको बेप्रमाण पहिलेही मानलेना अवश्य है जो अवश्य नहीं तो सम्भवित है कि जिन लोगों को स्वप्न जाग्रत अवस्था होतीहै उस समय में उनपर ऐसे लक्षण प्रतीतहोते हैं जो मुख्यदशा में उनपर किसी नेकभीनहीं देखे और स्पर्शशक्ति का तीक्ष्णहोना जो प्रमाण मानाजाता है सो उनका तेज़ हो-जाना कभी सिद्ध नहींहुआ ॥

जिस श्रवण शक्तिकी यहबात है कि इसकेबदले कि आक-र्षण क्रियाके कारण इस शक्तिको तेज़ीपैदा हो बहुधा यहबात देखीजातीहै कि धारक सिवाय कारकके या उसमनुष्य के जि-सकेसाथ उसको संयोग दिलाया गयाहो और किसीका कुछ शब्दसुनताही नहीं और घ्राण शक्तिकीयहदशाहै कि केवल यही बात नहीं होती है कि बहुधा उनवस्तुओं में जो धारक देखता है कुछ गंधहो नहीं हो तो बरन धारक उनका रंग और उनका रूप बताताहै और बहुधा यहबात बताता है कि उनमें से कुछ प्रकाश निकलता हुआ दिखाईदेता है आवश्यक विषय घ्राण शक्तिसे सम्बन्ध नहीं रखते और जो कोई मनुष्य अपने मनमें समझले कि घ्राण शक्तिके तेजहोने से स्वरूप रंग सफाई या

चीज़ोंकी स्याही आकर्षणके निद्रावस्थामें मालूम होजातीहै तो मानो यहबात जाननी है कि आकर्षणकी क्रियाके कारण एक शक्तिका काम दूसरी शक्तिको बदलजाताहै सो जो इसबातको माने तो यह औरभी अधिकविचित्र आकर्षणकेप्रभावकाहोगा॥

यहस्थान इसबातकी वार्त्ताकानहींहै कि उससारका मुख्य मूलक्या है जिसके कारण हृदयकी अवलोकन शक्ति काम में आतीहै परन्तु एकबात का वर्णन मैं इसजगह करूंगा और वह यहहै कि जो२ चीजें सोनेवाला देखता है उनमें से उसको एक प्रकारका प्रकाश निकलताहुआ मालूमहोता है तथाच धारक बतलाताहै कि कारक के हाथमेंसे प्रकाश निकलताहुआदिखाई देताहै इसकारण सिद्धहोता है कि सबवस्तुओंमेंसे कुछ न कुछ चीज़ निकलतीहै नाम उसका जोहमचाहें रखलें और रीशनाबेकसाहबने जो परीक्षायें आकर्षण क्रिया के सिवाकी हैं उनमें से उन्होंने मालूमकिया है कि सम्पूर्ण मूलकी चीज़ों में से एक मुख्य प्रकारकासार निकलकर सम्पूर्ण संसार में फैलाहुआ है और बहुधा मनुष्योंमें पैठता है और इससार का प्रभाव मुख्य करके उन मनुष्योंपर अधिकहोता है कि जिनको स्वप्न जाग्रत अवस्था अपने आप उपजतीहै रीशनबेकसाहबने जो परिणाम अपने खोजसे पाये हैं उनकीसिद्धि आकर्षणकी क्रिया से भी होती है क्योंकि धारकको चीज़ों में से प्रकाश निकलताहुआ दिखाई देता है॥

जब बहुतसे धारकोंपर अलग२प्रभाव अर्थात् गुप्त दर्शनावस्थाका उत्पन्न होजाना देखाजाता है तो हमको निरुपाय मानना पड़ता है कि कोई नवीन मार्ग ऐसा है जिस के द्वारा धारकके हृदयके ज्ञानपर प्रभाव होताहै सो जो२ गुप्तज्ञानकी दशाके लक्षण अधिक बिचित्र होते हैं उनको देखने से हमको

अचम्भा नहींहोता जब हम देखते हैं कि मनुष्य किसीवस्तुको पीठकेपीछे देखसक्ताहै और ऐसी दशामें देखसक्ता है कि उस को आंखें अच्छीतरह बन्दहोती हैं ऐसीदशामें कि जबवह उस वस्तुको अपने शिर के ऊपर रखलेताहै तो सूम हमबात मान जातेहैं कि कोई रीति ऐसीहै जिसकेद्वारा उसके हृदय के ज्ञान पर प्रभावहोताहै और वहरीतिऐसीहै कि उसकाप्रभाव मनुष्य के मुख्य दशामें नहींहोता या जो होता भी होगा तो प्रकटकी इन्द्रियोंपर जो प्रभाव होताहै वह ऐसा प्रबल होताहै कि जो प्रभाव हृदयके ज्ञानपर होताहै वह दबजाताहै ऐसीदशामें यह बात सुगमता से हमारी समझमें आतीहै कि जब आकर्षणकी क्रिया किसी धारक पर कीजाती है तो यहबात कुछ मूलनहीं रखती कि जिस वस्तु को वह देखे वह दूरहो या निकट यह बातभी सुगमतासे बुद्धिमें आजातीहै कि यहसार इसप्रकारका है कि सम्पूर्ण संसार में सूर्यके प्रकाश और उष्णता के सदृश सुगमतासे दौड़जाताहै और उष्णता के सदृश सर्व वस्तुओं में यहांतक कि ईंटों की दीवारों में भी पहुँच जाता है रीशननेक साहब ने इससार का नाम उद्रायल रक्खाहै इससार का यह हालहै कि सूर्यके प्रकाशसे उसकीगति कुछकमहै और गरमी के कारण पूरीचीज़ों में प्रवेशकरलेताहै और दूसरा गुप्तज्ञान का स्वरूपयहहै कि जो किसीचीज़को काग़ज़में लपेटकररक्खें या सन्दूक़में बन्दकरदें तो धारक उसकोदेखलेताहै मैंने बहुधा देखाहै कि कोईचीज काग़ज़ में लिपटी रक्खीहुई या लोह या पीतल के सन्दूक में बन्द रक्खीहुई है और धारक ने उसको अच्छीतरह बतादिया यहांतक कि जो उसमें किसीतरह की दरार आगईहै या कुछ खुरदरापनहै या किसीप्रकार का चिह्न है तो उसने साफ़२ उसकापता बतादियाहै मैंने यहभी देखाहै

कि कोईपत्र मोहर कियेहुये सन्दूकमें बन्द कियाहुआ रक्खा है और धारक ने सिरनामा और डाककी मोहर बरन उस पत्रका आशय स्पष्टरीति से पढ़दिया है मेजरबिकली साहब ने एकसौ चालीस मनुष्योंपर इसतरहकीक्रियाकी है कि कोई लेख संदूक में बन्दकरके रखदियाहै और धारकने उस लेखको पढ़दिया है इनमनुष्यों मेंसे इतने मनुष्य ऐसेहैं कि उनपर आकर्षणकीनिद्रा नहींआती बरन निद्रा उत्पन्नहोने बिनावहलेख पढ़देतेहैं मेजरबिकलीसाहब यहक्रिया कियाकरते हैं कि किसी मनुष्य से कह देते हैं कि जो उसके मनमें आवे वह लिखकर एक संदूक में बन्द करदे फिर धारकको सैन करते हैं तो वह तुरन्त उसलेखको पढ़ देता है कभी २ भूलभी होजाती है इंगलिस्तान में बहुतसे लेख छोटे२चीजोंमें बन्द कीहुई बिकीहैं बहुधा ऐसाहोताहै कि लोग दुकानोंमेंसे ऐसीचीजें मोल लातेहैं औरफिर धारकोंसे पढ़वाते हैं प्रकटहै कि उन मोललेनेवालोंको आपभी नहींमालूमहोताकि उनमेंक्या लेखहै सो मालूमहुआ कि जो धारक उसको पढ़लेता है उसको बिचार संयोग से यह शक्ति नहींहोती बरन गुप्तज्ञान के द्वारा वह लेख पढ़ लेता है परन्तु यह बात कहनी अवश्य है कि सब धारक ऐसे नहीं होतेहैं कि उनको इस प्रकार के लेखों के पढ़ने की शक्ति प्राप्त हो कई ऐसेभी होतेहैं कि वह ऐसे लेख नहीं पढ़सके हैं कभी ऐसाभी होता है कि किसीसमय धारक पढ़सक्ता है और कभी नहीं पढ़सक्ता है मैं प्रारम्भ में बर्णनकरचुका हूं कि धारक के आकर्षण की किन २ शक्तियों से हानि उत्पन्नहोती है वही कारण ऐसेसमयमेंभी बिघ्न करतेहैं तीसरे यह कि कई कारक सेऐहैं कि उनके धारकों को यह शक्ति प्राप्त होती है और कई ऐसे होते हैं कि उनके धारकों को यह बल नहीं होता तथाच मेजरबिकली साहब को इस क्रिया में अति

अभ्यास है कि उनके धारक बंदकियेहुये लेख बहुधा पढ़ लेते हैं कई कारक ऐसे हैं कि उनके धारक ऐसे लेख नहीं पढ़ सक्के हैं परन्तु वह कारक ऐसे ही अन्य विचित्र लक्षण किन्तु इस से अधिक अपने धारकों पर उत्पन्न कर देतेहैं तो जो किसी मुख्य धारक में यह शक्ति न पाई जावे या किसी मुख्य समय किसी मुख्य धारकसे ऐसा लेख न पढ़ाजावे या जो कोई मुख्यकारक अपने धारकों में ऐसाप्रभाव उपजा न सके तो इसबात से यह बात समझी नहीं जासक्की कि इस प्रकारकी शक्ति किसी धारक को नहीं होती या यह कि किसी कारकको ऐसे प्रभाव के उप-जानेका अधिकार नहींहै मैं ऊपर वर्णन कर चुकाहूं कि कईगुप्त ज्ञानी ऐसेहोतेहैं कि जबतक कोई ऐसामनुष्य वर्त्तमान नहो जो उस लेखको जानता हो जिसका पढ़ाना स्वीकार हो या उस चीजको जानता हो जिसका धारक को दिखाना स्वीकारहै तो वह न पढ़सक्केहैं न देख सक्के हैं जो ऐसे गुप्त ज्ञानी होते हैं वह केवल संयोगकेकारणपढ़ या देखसक्केहैं इसजगह मैं इतनाहाल और लिखताहूं कि कई गुप्त ज्ञानी ऐसे होते हैं कि किसी समय वह प्रत्यक्ष गुप्त दर्शन के कारण पढ़ या देख सक्केहैं और समय संयोगके कारण और किसीसमय न प्रत्यक्ष गुप्तदर्शनकी शक्ति उनमें होतीहै न संयोगके कारण यह शक्ति उनको प्राप्तहोतीहै अर्थात् किसी समय गुप्त दर्शन की शक्ति ही उनको कभी नहीं होती तो मालूमहुआ कि जो किसी समयपर परोक्षदर्शित्व का प्रभाव उत्पन्न न हो तो यह नहीं कहना चाहिये कि यहशक्ति कभीकिसीको प्राप्त नहींहोती वरन जो बहुतकहैं तो यहकहसक्के हैंकि जिसस्थान यामुख्यमनुष्यमें यहशक्ति पाईनहींजाती उसमें कोई चूक पड़गई है जो कुछ पहले मैं इस विषयमें कहचुकाहूं कि बहुधा धोखा देनेका लोगोंको संदेह होताहै उससे अधिक

परोक्षदर्शित्व अवस्था के व्यवहार में कुछ कहना अवश्य नहींहै यहबात कहनी वहुतहै कि यह वात बहुत सुगमहै कि धोखा न होसके जो मैंने मेजरविकलीसाहबकी रीति वर्णनकी वहरीति भरोसा देनेवालीहै परन्तु सदा यह बात याद रखनी चाहिये कि जो किसी धारक के गिर्द बहुत से लोग इकट्ठे होजावें और उनमें से कई ऐसेही भी हों कि जिनकी समझ में उसकी तरफसे धोखादेनेका विचार जमाहो तोउनका प्रभाव मुख्य ऐसी दशा में कि संदेहीजन कारकसे बलवान्हों धारकपर ऐसा होजाताहै कि जोशक्तियांउसमेंहोती हैं उनमेंअन्तर पड़जाताहै॥

और एक गुप्तदर्शित्व का स्वरूप यहहै कि जिस मकान में धारकहो उसके ऊपर या नीचे या पहलू में जो दूसरा मकान हो उसमें जो चीज़ें हों वह देखलेताहै यह बात बहुत होती है और कोई उपाय उसके उपजाने के लिये बहुधा अवश्य नहीं होता धारक अपने आप कहनेलगता है कि अमुक मन्दिर में अमुक २ वस्तु देखताहूं यह प्रभाव ऐसाहै कि इसमें कारकके साथ विचार संयोग नहीं पायाजाता क्योंकि यातो कारक उसमन्दिर को नहीं जानता या जो जानताहै तो धारकऐसी२ चीज़ोंका वर्णन करताहै कि कारकको उनकी ख़बर नहीं होती जैसे उससमय के पीछे कि जब कारकको किसी चीज़की ख़बर थी उसवस्तु में अन्तर पड़गयाहो इसबातकी मुझे आप भी परीक्षा हुई है॥

बहुधा ऐसा होताहै कि जिस मन्दिरका गुप्तवस्तुका ज्ञानी वर्णन करताहै कारक उसको जानताहै और जो वर्णन धारक करताहै उसको कारक झूठ वताता है परन्तु बहुधा धारक का वर्णन ठीक निकलताहै क्योंकि जब कारक ने उस मकान को देखाथा उससमय के पीछे चीज़ें कुछ बदलगईहों बहुत दृष्टान्त

देने कुछ अवश्य नहीं प्रयोजन यहहै कि ऐसीबातें बहुधाहोती हैं और ऐसीबातों का होना एक बड़ासिद्ध प्रमाण इसबात का है कि धारक संयोग विचार के कारण वहबातें नहीं बताताहै परन्तु जो कुछ हृदयके ज्ञानसे देखताहै उसका वर्णन करताहै परन्तु यहबात याद रखनीचाहिये कि सम्पूर्ण धारकों को यह शक्ति प्राप्त नहींहोती है और जिनको प्राप्त भी होतीहै उनको प्रतिसमय और सर्व्वदा एकही तरहपर नहींहोती॥

एक और गुप्तदर्शन का रूप यहहै कि जिसमकानमें धारक होताहै उससे किसी अलग मकानको मानों हृदय के ज्ञान से देखताहै मैंने यहबात बहुत देखीहै और मुझको भरोसाहै कि धारकको कारकके साथ विचार संयोग नहींहोता वरन विचार संयोगबिना देखताहै- पहले तो यह कि धारक इसतरह वर्णन करता है कि जैसे कोई पहली बेर किसी वस्तु को देखे धारक थोड़ी२सी चीज़ोंका वर्णन करताहै और बहुधा जबतक उस- को सैन न कीजावे मुख्य उसवस्तुका वर्णन नहींकरता जिसकी ओर उस समय कारक का विचार होताहै--दूसरे यह कि जो मनुष्य उस मकान में हों और जो कुछ वह कररहे हों सबका हाल वर्णन करताहै और कारक न तो उनमनुष्यों को जानता है और न यहजानताहै कि वह क्याकररहेहैं--तथाच एकगुप्त- दर्शकने मेराघर ढूंढ़लिया मेरेघरका हाल कभी उसने नहींसुना था और न उसको उस मकान का पता बतायागया था पहले उसने सीढ़ियां गिनीं फिर वह एक कमरेमें पहुंचा और जो२ चीज़ें वहां रक्खीहुईथीं जैसेमेज और कुरसी कपड़ेआदि अका वर्णन किया उस मकान के एक कमरे में एकखंभा था उसने वह भी बताया फिर एक कमरे में पहुंचा तो जो२मकान की सजावट का सामान जैसे तसवीरें आदि वहां रक्खा था उन

सबको बताया उसने यहभी बताया कि एक पुरुष एक मुख्य स्थानपर खड़ाहै फिर उसनेकहा कि एक स्त्री पलँगपर बैठीहै और एक नईकिताब पढ़रहीहै फिर जो मैं अपने मकानपरगया तो यहहाल ठीकपाया और यहबात भी हुईहै कि एकबेर और एक स्त्रीपर ल्यूससाहबने क्रियाकी और अकस्मात् उसकोगुप्त-दर्शन की दशा प्राप्तहोगई उस स्त्रीने मेरेघर का हाल वर्णन करना शुरूकिया कि एक कमरे में एकस्त्री और एकपुरुषहै जो पोशाक स्त्री पहनेहुई थी वह वर्णनकी और कहा कि और कई मनुष्य और वह स्त्री पलंगपर बैठेहुयेहैं और एकपुरुष मेजपास खड़ाहुआ है और मेजकेऊपर एकहाथ टेकेहुयेहै और उसकीएक हाथकी छोटीउंगलीमेंएकछल्लाहै और एक और पुरुषसे जोछोटे डीलका और कालेबालहैं बातेंकररहाहै जब मालूमकियागया तो विदितहुआ कि जब का वर्णन धारकने कियाथा उससमय यह सबबातें ठीकथीं केवल इतनी भूलनिकली कि उसमनुष्यके दहने हाथकीउँगलीमें छल्लाथा और धारकने बायेंहाथमें वर्णन कियाथा ऐसीभूलें धारक बहुधाकियाकरतेहैं कईधारक ऐसेहोते हैं कि सर्वदा दाहनेको बायां और बायेंकोदहना और दक्षिण कोउत्तर और उत्तरकोदक्षिण और पूर्वकोपश्चिम और पश्चिम को पूर्वबतातेहैं इससे यहबात सिद्धहै कि धारक जो कुछवर्णन करतेहैं उनमें कारकके साथ उनको संयोग विचार नहींहोता क्योंकि जो यहबातहोती तो जो कारक दिशाठीकजानता धा-रकभी ठीकबताते एक और कारकक्केवर्णनों में दिशाके बतानेमें भूलहुई तो मैं पहिले पहिल बहुत अचम्भेमेंहुआ परन्तु जबमैंने उसकी सबबातें मिलाईं तो मालूमहुआ कि इस तरहकी भूल वह सदा कियाकरता है जैसे उसने मुझसेकहा कि तुम्हारे घर में आतशखाना पूर्वकीओर है और वहघरकादरवाजा पश्चिम

की ओरहै चाहे मेरे घरका दरवाजा पूर्वकीओर आतशखाना पश्चिम की तरफहै और जब मैंने उसको कहा कि तुम इसमें भूलकरतेहो और जो दिशा ठीकथी वहबताई तो उसने न माना और कहा कि तुम बुद्धिअहमक़ बनातेहो मैं इसबातका कारण नहीं बतासक्ताहूं कि ऐसीभूलें धारक क्यों किया करतेहैं परन्तु यहबात यादरखनी चाहिये कि यह कुछ सर्वरीति नहींहै कि सबही धारक ऐसी भूलकरें कोई भूलकरताहै कोईनहीं॥

एक और गुप्तदर्शनकारूप यहहै कि धारक कारककी इच्छा से और बहुधा अपने आप भी दूर२ देशोंकी सैरकरताहै और उनस्थानों और देशोंका और जो मनुष्य वहांहैं उनका हाल वर्णनकरताहै किसीसमय तो यहबात इसकारणसे होतीहै कि कारककेसाथ धारकको विचार संयोग होताहै परन्तु बहुत से रूप ऐसेहैं कि विचार संयोग कभी भी नहींहोता जैसे धारक उनदेशोंके स्थानोंकी सैरकरताहै तो कारकको मालूम नहींहोते न और किसी मनुष्यको जो वहां वर्त्तमान होतेहैं उन स्थानों की खबर होतीहै इसकेसिवाय जब उन देशोंका वर्णन करताहै तो ऐसेखण्ड और बदलीहुई चीज़ोंका वर्णन करताहै जो किसी को भी विद्यमान मनुष्यों से ज्ञाननहीं होता कि धारक मानों जीहीजीमें उसदेश को जाता है पहले पहल तो उसको ऐसा मालूमहोताहै कि मैंवायु में तैररहाहूं और किसी मुख्यस्थानमें नहीं और थोड़ी देरके पीछे वहकहताहै कि अबमैं वहांपहुंचगया जिस जगहका वहनाम बताताहै वहजगह अधिक करके पहि-लीहीजगहहोतीहै जो उसको इसवायुकी यात्रामेंमिलतीहैपरन्तु यहबात चाहे सदा होती हो चाहे न होती हो किसी न किसी प्रकारसे उसकी समझमेंयहबात आजातीहै कि कौनसीबातठीक है जहांजाताहै जो किसी रके शहरमें भेजागयाहो और मख्य

मन्दिर उसे न बताया गयाहो तो वह उस शहरको यातो इस प्रकार से देखताहै कि जैसे वायु में से चिड़िया देखे या किसी गली या कूचे या बाज़ारमें पहुंचजाताहै और उसका हाल वर्णन करने लगता है और वृक्ष मकान देवालय हम्माम और लोग जो चलते फिरते हैं सबका वृत्तान्त बताताहै और अति प्रसन्नहोताहै और जो दुबारा तिबारा उसी शहर में भेजाजावे तो सबहाल ठीकबताताहै केवल इतना अन्तर पहिले वर्णन से होताहै कि मनुष्यों की दशामें अन्तर होता है क्योंकि मनुष्य एकही प्रकारके उसको नहीं मिलसक्के तथाच मैंने एक धारक को इसीतरह एक शहर को भेजा वहां जो २ मकान बाज़ार और इमारतेंथीं उन सबकाहाल उसने वर्णनकिया और उसके वर्णन से मुझको मालूम होता भया कि अब अमुक स्थान का वर्णन करता है और हालवर्णन करते २ वह कहनेलगा कि एक मनुष्य एक दरवाजे में खड़ाहुआ है और उस दरवाजे में से लोगआते जाते हैं और कहने लगा कि मैं जानताहूं यह मनुष्य द्वारपाल है उस दरवाजे के अंदर उसने एक कमरेमें कई मेजें बिछी हुई देखीं और बहुत से मनुष्य भोजन करते देखे एक दिन मैंने उसको एक और शहरमें भेजा वहांके लोग दाढ़ी और मूछें रखते हैं धारक को मूछें और दाढ़ियां देखकर बड़ा अचम्भा हुआ और जिस२ तरहकी जिसकी दाढ़ी मूछथी उनके डौल और तरह वर्णन की ॥

इस धारक ने अपने आप और देशों की सैरकी है और उन स्थानोंका हाल इस विस्तारसे वर्णन कियाहै कि जो मुझे देखने का संयोगहो तो मैं तुरन्त पहिचानलूं और इस धारक के अवलोकनका वृत्तान्त इस पुस्तकके दूसरे भागमें लिखाजावेगा ॥

बहुधा ऐसा होता है यद्यपि धारक उन वस्तुओं का हाल

अच्छीतरह वर्णन करताहै जो उसी कमरेमेंहों जहांवहआपहैया
दूसरे कमरेमें हैं याउसी कमरेमें हों जहांवहहै परन्तु दूरदेशोंकी
सैर सिवायइस बातके कि नईदशा उस में उपजे नहींकरसक्ताहै
यहनईदशातो अपनेआप बहुधा उपज आतीहै जोअपने आप न
होतोप्रसिद्ध युक्ति अर्थात् हाथोंको ऊपर लेजाने सेया कारक
कीइच्छासे यहदशा उत्पन्न होजातीहै यहनई दशाअर्थात्सैर
करनेकी दशा जब पैदा होजातीहै तो धारकका रूप कुछ और
होजाताहै जैसे एक धारकको मैंने देखा कि पहली प्रकाशमान
दशामें जोकाम उसकी पीठके पीछेहोता या दूसरे कमरेमें होता
उसका हाल बता देताथा और जब कोई मनुष्य शरीरके साथ
छुवा हुआहो तो उसके शरीरकी दशाठीक २ बतादेता था और
एक बात उसमें यहथी कि कोई उससे किसी तरहका प्रश्न करे
उसको सुन लेताथा और उत्तर देताथा परन्तु बहुधा मैंने देखा
कि यह धारक अपने आप एक नई दशामें चला जाताथा इस
नई दशा में वह कोई शब्द भी नहीं सुनताथा यहांतक कि जो
धारक भी उससे बोलता था तो जब तक उसकी उंगलियों के
सिरोंसेअपनामुहँ न लगावे तबतक कारककीभी बातनहींसुनता
था परन्तु जोकोई मनुष्य और भी कारकके सिवाय उसकीउंग-
लियोंके द्वारा उससे बात करताथा तो वह सुन लेता था परन्तु
जबकभी कोई मनुष्य इसयुक्तिसे उससे बातकरताथा तो धारक
सर्वदा चौंक पड़ता था और जब उसकी नई दशा होती थी तो
केवल यही बात नहीं मालूम होती थी कि जहां चाहो उसे भेज
दो वरन वह अपने आप किसी बहुत दूरके देशोंमें पहुंचाहोता
था और वहांकी सैर करता था ऐसी दशामें वह कहता था कि
अब मैं अमुक स्थान में चलागया जो कारककी आज्ञा से भेजा
जाताथा तो कहताथा कि अबमुझे अमुक स्थानमें लेगये जो थक

जाताथा कि अबमुझे लौटालेचलो और धारक थोड़ीसी युक्ति से उसे लौटालाताथा जब वहपहली दशामें आजाताथा तो जोकुछ उसने सैरकी थी उसका हाल उसे याद रहताथा इस धारकका नाममैं (क) रक्खूंगा और उसकी सैरकाहाल इसपुस्तकके दूसरे भागमें वर्णन करूंगा॥

एक गुप्तदर्शन का रूप यह है कि जिस मनुष्य को कारक कहें उसको धारक देखता है कई दशायें ऐसी होतीहैं कि जिस मनुष्यके देखनेकेलिये उसकोकहाजावे उसको धारककिसीमुख्य स्थानमेंनहींदेखताहै वरन अपनेसदृश वायुमेंतैरताहुआदेखताहै और उस मनुष्यका मुख डील डौल रंग बाल आंखें बहुतठीक बताताहै और यह सब बातें उसदशामेंभी बताताहै कि धारकने आप कभी उस मनुष्यको न देखाहो कई दशाओं में धारक उस मनुष्यको उस मकानमें या बाज़ार में या किसी और स्थान में देखता है और जो कुछ वह कर रहा हो उसका हाल वर्णन करता है ऐसा होसक्ता है कि धारकचाहे तो उसको उसदशामें देखे जिसमें वह मनुष्यहो चाहे किसी पहली दशामें देखे गुप्त दर्शक जिस मनुष्य को देखता है यातो उससे इच्छा होती है या ग्लानि होजाती है यदि वह मनुष्य बहुत दूरीपरहो और मालूम करनेवाले को मुख्यस्थान उसके रहनेका मालूम नहो तो धारक के वर्णनसे मालूम होसक्ता है और यह बात बहुधा देखीजाती है कि जिस मनुष्यको धारक जानताहै और उसका नाम जानता है उसका नाम नहींलेता है वरन केवल उसका पता बतादेता है प्रकट है कि जिन मनुष्यों या स्थानोंका नाम हम नहीं जानते हैं तो धारकसे उनका नाम मालूम नहीं हो-सक्ता केवल उनका हालही मालूम करता है इसतरह आक-र्षण की क्रिया की परीक्षायें अति आश्चर्य्य उपजाती हैं और

हज़ार तरहसे यह नानाभांति के लक्षण प्रकट होसक्ते हैं इस किताब के द्वितीयभाग में विस्तारसे उनकाहाल वर्णन किया जावेगा ॥

कईगुप्तदर्शक ऐसेहोते हैं कि जिनमनुष्यों को वह देखते हैं उनकेसाथ उनको विचार संयोग होजाता है अर्थात् उस मनुष्य के विचार के मालूम करलेने में और उसका गत वृत्तान्त वरन जो कुछ उनको इच्छायें होती हैं वहभी मालूम करलेतेहैं (क) को इस विषय में अतिज्ञान है इसके वृत्तान्त दूसरे भाग में लिखे जावेंगे ॥

यहज्ञान के उस रूपमेंही प्रकट नहींहोता है कि जब कारक उस मनुष्यका नाम बतावे जिसका वह देखना चाहताहै वरन उस दशा में भी यहज्ञान प्रकट होता है कि कोई वस्तु उस मनुष्य को जैसे बाल या छल्ला या लेख उसके हाथ का धारक के हाथ में रखदियाजावे यहज्ञान (क) में बहुत है और मुझ को बहुत परीक्षा हुईहै कि जो किसी मनुष्य के बाल या उसका लेख (क) के हाथ में रखदिया जावे तो (क) बहुत सुगमतासे उस मनुष्यका हाल वर्णन करने लगता है दूसरेभाग में दृष्टांत लिखेजावेंगे इसजगह में इतनाही वर्णन करूंगा कि (क) क्या युक्ति करता है और इसयुक्तिसे क्या परिणाम निकलता है बहुधा (क) यहकरता है कि बालको या लेखको अपने हाथ में दबालेता है यदि वह मनुष्य उसे तुरन्त दिखाई न दे उसवस्तु अर्थात् बाल या लेखको अपने शिरकेऊपर रखलेता है और कहता है कि अब मैंने इस वस्तु को अपनी आंखों के सामने रखलिया चाहे उसकी आंखें बिल्कुल बन्दहोती हैं जब यह युक्ति करचुकता है तो उस मनुष्यको देखनेलगता है और जो कुछ वह कररहाहो उसकाहाल वर्णन करने लगता है

बहुधा ऐसाहोताहै कि जो कुछ वहमनुष्यकररहाहो वहमालूम होजाता है कभी ऐसाहोता है कि वहहाल मालूम होता है जो वह मनुष्य उससमय कररहाथा जब उसने वह काग़ज़ जो(क) के हाथ में होता है लिखाथा कभी ऐसाहोता है कि किसीपहले समय का हाल मालूम होता है सो इसबातका ध्यान रखना चाहिये क्योंकि जो इसबातकाध्यान न रहे तो विचार होसक्ताहै कि (क) भूल कररहा है चाहे वह कुछभी भूल न करता हो—

बहुधा ऐसाहोता है कि (क) उस मनुष्य का सम्पूर्ण व्यतीत वृतांत बर्तमान समयतक का वर्णन करताहै तथाच एकमनुष्य एक और मनुष्य समेत इंगलिस्तान से नई दुनियां में गयाथा और दोनों एकशहर में थे उनकाहाल (क) ने जो वर्णन किया उसको उन मनुष्योंने इंगलिस्तान के आनेपर बहुत लोगोंकी सभा में पूछकर निश्चयकिया और मनुष्योंका वृत्तांत भी(क) ने इसतरह वर्णनकिया है तथाच उनका वर्णन दूसरे भाग में किया जावेगा (क) की यहदशा है कि जिन मनुष्यों को वह इसतरह देखता है उनके विचार मालूम करलेता है परन्तु अधिक अश्वर्य्य की यहबात है कि वह उनके साथ वार्त्ताकरताहै और किन्तु वह उसको उत्तर देते हैं परन्तु उत्तरदेना अनुमान से मालूम होता है क्योंकि (क) की वार्त्ता के डौलसे मालूम होजाता है कि कोई मनुष्य उत्तर देता है उस उत्तर के प्रत्युत्तर में वह आप फिर कुछ कहता है परन्तु उन लोगों के उत्तर सिवाय धारक के और मनुष्यों के कानतक नहीं पहुंचतेहैं और (क) उनके साथ बात भी इसतरह करताहै कि मानो परस्पर बहुप्रीति है जैसे वहकभी२ उनलोगोंको झिड़कता है कि तुमने अपने मित्रों या बांधवों को पत्र क्यों नहीं लिखे और जो कुछ वह बहाने करते हैं उनको ध्यानसे सुनता हुआ मालूम होत

है या तो उनके बहानोंकोमानताहै यानहींमानता (क)तकरार करके कहता है कि मैं उनलोगोंसे बातचीत कररहाहूं और यह भी वर्णन करताहै कि मैं उनकी समझमें अपना बिचार डाल सकाहूं बरन ऐसाकर सक्ताहूं कि वह अच्छी तरह देखने लगें एक मनुष्य का लेख (क) के हाथमें था उसने जब उस मनुष्य को देखा तो उससे कहाकि अमुक समय जब तुम बीमारथे तो तुम्हें अपनी स्त्री दिखाई दी थी इस तरह पर कि मानो वह तुम्हारे देखने के लिये आई थी यहबात (क) ने इस तरह पर वर्णनकी कि मानो उसमनुष्यने उसको अभीबनाईथी और फिर मालूमहुआ कि वास्तव में उस मनुष्यको उसकी स्त्री इसतरह परदिखाईदीथी जिसतरह (क)ने वर्णनकियाथा (क)नेऔरभी बातें बिस्तारसे कहीथीं जिनका वर्णन बिस्तार से दूसरे भाग में कियाजावेगा जिसमनुष्यको ऐसीदशा में (क) देखताहै या उसकोओर उसे प्रीति होजातीहै या उसमें ग्लानि होजाती है और जो कोई बुरी या कमीनी चीज़देखै तो उसको अतिग्लानि होतीहै एकबेर (क) ने एक चुराईहुई घड़ी और चोर का पता लगाया और यह चोर पक्का चोर नहींथा अर्थात् सदा चोरी न करताथा उसने उसचोरको साफ२ कहदिया कि तेरे मनमें अमुक२विचार और अमुक२भयहै और उसचोरको चोरी करने और मक्कारीकेलिये बहुत धमकाया और कहा कि मैं जानताहूं कि तुझको अपने कियेका डरहै और तेरी इच्छा है कि घड़ीको लौटादूं और यह कहदूं कि मैंने एकजगह उसको पड़ापायाथा फिर (क) अकस्मात् उस चोर से इस तरह कहने लगा कि तुमने घड़ी लेली तुम जानतेहो कि तुमने चुराई और यहबात (क) ने अति क्रोध और टीप टापसे कही परन्तु यह बात (क) ने उसपर किया होनेकी खबर घडीके मालिकके पास पहुंचने

से पहले कही थी और चोरने घड़ी लौटादीथी और कहा था कि मैंने पड़ी हुई पाई थी दूसरे भागमें इसका वर्णन विस्तार से किया जावेगा (क)ने बहुधा चुरायाहुआ माल पैदाकर दिया है इस तरह पर किया तो मालके साथ या मालिक के साथ किसी तरह उसको संयोगदिलायागया इसी तरहसे (क) ने बहुतसे बहुमूल्य खोयेहुये काग़ज़ पैदाकर दियेहैं और एक और गुप्तदर्शकने रुईकेपन्द्रह गट्ठोंका जो एक जहाजसे चुराये गयेथे पता लगादिया और एक दूसरे शहर में एक और जहाज में रक्खा हुआ बताया जब ढूंढ़गये तो वह गट्ठे मिले इस बातकी साक्षी जहाजके कप्तानने की और उक्त कप्तान इस गुप्त दर्शक के द्वारा बड़ी हानिसे बचगया मैंने आप(क)का बहुतसे काग़ज़ और चीजें उसके हाथमें रखकर परीक्षा की है और विचित्र २ लक्षण देखे हैं कई दृष्टान्त दूसरे भागमें लिखे जावेंगे॥

एक और आश्चर्यकी बात यहहै कि जिन स्थानोंमें धारक मानो मनही मन में जाते हैं वहां का समय बतादेते हैं (क) बहुत शुद्धतासे समय बतानाहै औरकईगुप्त दर्शक पूछनेपर यह कहतेहैं कि हम सूर्य्य को देख कर समय बतादेते हैं और जब इस तरहसे समय बताया जाताहै तो अनुमानसेही बतायाजाता होगा जैसा कि हम सूर्य्यको देखकर समयका अनुमान करलेते हैं परन्तु (क) यह कहता है कि मैं उसी मनुष्य की जिसको मैं देखरहाहूं घड़ीको देखकर समय बताताहूं और दिनमेंघड़ी२ में उससे समय पूछा जाताहै तो कमी बेशी अनुसार बताता है सो जो दोनों समयकी घड़ियां सच हों अर्थात् उस जगहकी जहां धारक वर्त्तमान है और उस जगह की जहां की वह सैर कर रहाहै तो दोनों जगहकी भूगोलकी लंबाईमें जो अन्तरहो वह मालूम होसक्ताहै किसी २ समय (क) की परीक्षा बहुत और

धीर्यके साथकीहै दूसरे भागमें विस्तारसे वर्णन कियाजावेगा॥

जब गुप्त दर्शक के हाथ में किसी मनुष्य के केश या लेख रक्खाजावे तो केवल वह ऐसेमनुष्यों कोहीनहीं देखता जिनका हाल हम पूछते हैं यानहीं पूछतेहैं बरन इस रीतिसे ऐसे मनुष्योंको भी देखताहै जो जीते नहीं हैं एक गुप्त दर्शक जिसका लाम नाम रक्खूंगाबहुधा प्रायः संयोग विचार द्वारा मेरे कहने से और जब मैंने उनका नाम बताया ऐसे मनुष्यों का वृत्तान्त वर्णन कियाहै कि वह समयसे मरचुकेहैं और लाम उनको जीने पर जानता भी नथा बहुधा वह मनुष्य उस को हमारी तरह अर्थात् जीते दिखाई देते थे परन्तु उसने अपनेभाईको जो पांच बरससे मरगयाथा जबदेखा तो उसको हमारी तरह न बताया वरनबिल्कुलविरुद्धबताया (क)कोभी मरेहुयेमनुष्योंके देखनेका अभ्यासहै परन्तु जब उनका वर्णन करताहै तोउनके लियेमुर्दे काशब्द नहींवर्णनकरताहै बरन यह कहता है कि ढके हुये हैं॥

एकबेर (क) क्रियाके अन्तर्गत दूर देशमें सैरके लिये मानो जीहीजीमें जाता था मार्ग में अपने आप कुछ उस को ऐसा विचार आगया कि उस मकानके बदले जहां उसको जानाथा और दूसरे मकानमें चलागया और इस मकान में इसने एक स्त्री देखी कि वह फिर ढकीहुई मालूम हुई जबउसको मालूम होगया कि वह स्त्री ढकीहुईहै तो उसने कुछ भय नहीं किया परन्तु पहले देखके उसको कुछ भयसा हुआ (क) मरे हुये मनुष्यों को देखकर कभी नहीं डरता है और बहुधा और गुप्त दर्शक भी मरेहुये मनुष्यों को देखकर नहीं डरते हैं परन्तु उनको देखकर प्रसन्न होते हैं लामको जब उसका मरा भाई दिखाई देता है तो वह प्रसन्न होता है परन्तु भाईके मरेहुने

के देखनेका व्यसनहै दोनों मनुष्योंकेस्वभाव मरेहुये मनुष्योंके देखनेसेकुछबदलजातेहैं परन्तु ऐसेमनुष्योंकेलिये यह दोनोंमुरदे का शब्द जिह्वापरनहींलाते बरनबड़े एवपंचकीबातचीत करतेहैं जबतक कि कोई मुख्य शब्द शोच कर उत्पन्न करलेते हैं ॥

गुप्तदर्शक केवल मुरदा आदमियों कोही नहीं देखते बरन पहले समय के मनुष्यों को देखते हैं और जो वृत्तान्त उन से संबंध रखते हैं उनका वर्णन करते हैं मैंने बहुतसे दृष्टान्त ऐसे देखेहैं कि ऐसे मनुष्योंका वर्णन कियाहै कि जिनका इतिहास की पुस्तकमें वर्णनहै मैं उनका हाल पीछे लिखूंगा इस जगह पर केवल इतना कहताहूं कि जहांतक गुप्तदर्शक के वर्णनका खोज होसका तो उसका वर्णन ठीकहुआ जैसे एक गुप्त दर्शक ने एक छल्लेका हाल तीनसौ वर्षतक बराबर बताया और सत्तर वा अस्सी वर्षतक जो उसका हाल मालूम कियागया तो गुप्त दर्शकका हाल ठीक मालूम हुआ (क) ने जो ढकी हुई स्त्री देखी थी जिसका वर्णन मैंने ऊपर किया उस स्त्रीके वस्त्र और जिस मकान में वहथी वहांका असबाब इस डौलका था कि तीन सौ वर्ष पहले उसका प्रचार था इस स्त्रीके साथ जो२ वृत्तान्त संबंध रखते थे उनमें से बहुत से (क) ने वर्णन किये और जब उससे पूछा गया कि वह स्त्री मरी क्यों कर थी तो उसने कुछ चौंक कर कहा कि किसीने उसका शिर काटडाला दूसरे भाग में विस्तारसे वृत्तान्त लिखा जावेगा मुझे अच्छी तरह निश्चय है कि बहुतसे प्रकाशयुत गुप्तदर्शकों के द्वारा बहुत से ऐतिहासिक वृत्तान्त कि जिनका अब संदेह है ठीक ठीक मालूम होजावेंगे बरन उनकी लिखी हुई साक्षी प्राप्तहोगी ॥

यह गत वृत्तान्तोंके मालूमकरनेका अभ्यास वास्तवमें अति विचित्र और उपयोगीहै मानों इससे यहबात मालूम होतीहै

कि चीज़ कभी हो व्यतीत हुईहै या संसार में वर्त्तमान रही है किसी न किसी प्रकारका ऐसा लक्षण छोड़जातीहै कि मनुष्य के हृ.के नेत्रोंपर उसका प्रभाव होताहै मुख्यकरके उस दशामें कि प्रकटकी इन्द्रियोंके द्वारा जो प्रभाव ब्रह्माण्ड को पहुंचते हैं उनसे वहलक्षण न दबजावें जो हृदयके ज्ञानपर होतेहैं बहुधा बुद्धिमानों को इसभांतिका विचार हुआहै और इसका विस्तार से आगे वर्णन किया जावेगा ॥

गुप्तदर्शकको एक और शक्ति प्राप्तहोतीहै कि अपने शरीर के अन्तर और बाह्य की बनावट देखलेताहै बहुधा मनुष्यों ने मनुष्य के शरीर जो विचित्र वस्तुहैं उनको अति विस्तार से वर्णन कियाहै परन्तु गुप्तदर्शक जो सुगम और अर्थयुक्त वार्त्ता में इन विचित्र वस्तुओं का हाल वर्णन करताहै जितना उसके वचन मनपर बैठजाते हैं उससे आधा भी वैद्यों के विस्तारपूर्वक वर्णन से प्रभाव नहीं होताहै यद्यपि गुप्तदर्शक शारीरक विद्या को कुछ भी नहींजानता परन्तु इस अज्ञान के होनेपर भी पट्ठों हड्डियों रगों ब्रह्माण्ड फ़फ़ड़े और अन्य जोड़ों और नाड़ियों के भागों और सम्पूर्ण जोड़ों की बनावट का वर्णन इसशुद्धता और विस्तारसे कहताहै कि अतिचतुर शारीरकके जाननेवाला उसके वर्णनमें दीनहोजाताहै यह गुप्तदर्शक शरीरके जोड़ और नाड़ियोंके बहुतपर्वों और उनकीविचित्र बनावटोंको देखलेता है और हरचीज़ उसको साफ़ दिखाई देतीहै कई गुप्तदर्शक प्रारम्भ में ऐसी विचित्रता को देखकर डरजाते हैं परन्तु धीरे २ यहभय जाता रहताहै और वह उनवस्तुओं को देखकर प्रसन्न होतेहैं परन्तु सब गुप्तदर्शनोंको यहशक्ति नहींहोती इससमय में बहुत प्रकारकी परीक्षायें इसभांतिके मनुष्योंपर कीजातीहैं जो अनपढ़ होतेहैं या जिनकी शिक्षा अच्छी नहीं होतीहै इसलिये उन

में वाचालता अच्छी नहींहोतीहै क्योंकि मुझे सन्देह नहींहै कि जव अच्छेचतुर और समझदार मनुष्योंपर ऐसी क्रिया हुआकरेगी तो उससे अतिलाभ होगा यहवात सुगमतापूर्वक समझ में आतीहै कि जव गुप्तदर्शक अपने शरीरकी वस्तु और स्वरूप इसतरह अच्छीभांति देखलेताहै तो जो किसी जोड़में कुछहानि हो तो वहभी मालूम करलेताहै और वास्तव में यहबातें उसे सुगमता से मालूम होतीहैं और जो वृत्तान्त वह वर्णन करताहै उसका वैद्य अर्थात् जो मनुष्य बीमारी में उसका इलाज करताहै उसके वर्णन को मानताहै गुप्तदर्शक को ऐसे रूपों में यह शक्तिभी होतीहै कि जिसमनुष्यकेसाथ उसको संयोग दिलाया गयाहो उसके शरीरका हाल भी वर्णन करताहै और सम्पूर्ण जोड़ों की वनावट और जो कुछ उनमें हानिहोतीहै कहदेताहै और मुझे भली भांति निश्चयहै कि कईदशाओं में कि वैद्य को अच्छीतरह रोगप्रतीतनहींहोता तो जोकुछ गुप्तदर्शकनेनिश्चय कियाहै वह विचारकरनेपर ठीक और सत्यमालूम होतीहै ॥

जिस गुप्तदर्शकको यहशक्ति प्राप्तहोतीहै वह ऐसी बातें उस दशामें भी मालूम करसक्ताहै कि जिसमनुष्यका वृत्तान्त उससे पूछाजावे वहदूरहो अर्थात् उसमनुष्यके केश यालेख गुप्तदर्शक के हाथ में रखदीजावे तो उसको सबहाल मालूम होजाताहै मैंने यहबात दोनोंतरह अति विस्तार और शुद्धतापूर्वक होते देखीहैं जो वैद्य रोगीका इलाज करनेवाला होताहै और उस अनुमति रोगकेलिये होतीहै गुप्तदर्शककी मतिभी उसीके अनुकूल होतीहै वरन कईवातें वैद्यसे बढ़कर वताताहै और फिर वैद्यकी मतिभी उसके अनुकूल होतीहै जहांपर मैंने विचार संयोगकी वार्त्ताकीहै उसजगह लिखाहै कि जो इलाज गुप्तदर्शक वताताहै बहुधा वह इलाजहोताहै जिसकी उसको परीक्षा हो-

तीहै जो उसने किसीवैद्यसे सीखाहै परन्तु जोगुप्तदर्शक इलाज बताने वालेहैं उनमें हरमुख्य गुप्तदर्शक सर्वदा एकही प्रकार की चिकित्साबतातेहैं अर्थात् जोकि मुख्यगुप्तदर्शक आकर्षणका इलाज बताताहै तो सर्वदा यहीबताताहै और भांतिका इलाज कभी नहीं बताताहै इसीप्रकार और इलाजोंका भी यही हाल है१ परन्तु मालूम होताहै कि कई गुप्तदर्शकोंको कुछस्वभावज शक्ति ऐसे इलाजके बतानेकी होतीहै कि जो किसी को मालूम नहीं होती परन्तु मुझको ऐसेइलाज बतातेहुये देखने का अवकाश नहींमिलाहै ॥

बड़ेखेद की बात है कि कई बुद्धिहीन मनुष्य केवल रुपये के लोभसे गुप्तदर्शकों से रोगोंके निदान और उपाय पूछतेहैं और लोगोंको बतातेहैं यहरीति बन्दहोनी चाहिये परन्तु जो अच्छे वैद्यको भाग्यसे अच्छा गुप्तदर्शक मिलजावे तो उसकोउचितहै कि रोगके पहिचानने में गुप्तदर्शकसे सहायताले मुझको अति प्रसन्नताहै कि कई प्रसिद्ध वैद्योंकी यहीरीतिहै ॥

अब मैं यह पत्रपूर्ण करताहूं और आगेके पत्रमें गुप्तदर्शन के अन्यरूप वर्णनकरूंगा॥

आठवांपत्र ॥

अब मैं आकर्षण क्रिया के एक ऐसे प्रभावका वर्णन करताहूं जो कई मनुष्योंकी समझ में अति विचित्रहै वरन जब इस क्रियाका वर्णन होताहै तो बहुधालोग उसीसे अर्थ समझते हैं यह वह लक्षणहै कि गुप्तदर्शकको भविष्यत् वृत्तकथनकी शक्ति प्राप्त होतीहै ॥

१ फरिंगिस्तान में तीनप्रकारके इलाज होतेहैं एक प्रकारके वैद्य ऐसे होतेहैं कि वह केवल पानीही से हररोग की चिकित्सा करते हैं और एक साधारण वैद्य जो औषधियां देतेहैं और एक प्रकारके वैद्य ऐसे होतेहैं कि वहस्वभाव रोगका इलाज छोड़देतेहैं और दवा इतनी थोड़ी देतेहैं कि अनुमान में नहीं आती यहां तक कि रत्तीका करोड़वां हिस्सा ॥

कल्पना कीजिये कि भविष्यत् वाक्य की शक्ति प्राप्त नहीं होतीहै परन्तु इसबात की साक्षी तो वहुतहै कि गत और वर्त्तमान वृत्तांतोंका वर्णन गुप्तदर्शक करदेताहै और संकल्प कीजिये भविष्यत् वाक्य के दृष्टान्तों का वर्णन लोगोंने लिखाहै उसमें कुछ समझ में भूल रही है तो भी गत और वर्त्तमान समय के वृत्तान्तोंके निश्चय करनेके विषयमें तो इसकारण सन्देह नहीं होसका इस दूसरीशक्तिका प्रमाण अलगहै यहवार्त्ता मैंने इसलियेकीहै कि वहुत मनुष्य असंभवित भविष्यत् वाक्यको इस वातका प्रमाण मानते हैं कि गुप्तदर्शन और आन्तरीय वस्तु दर्शन और गत वृत्तान्तभाषणकी दशाभी नहीं होसक्तीहै मेरी मति इस विषयमें सम्मति नहीं करती कि यह पिछले लक्षण किसीतौरपर भविष्यत् वाक्य या भविष्यत् अवलोकनकेलक्षण के उपजने पर घटितहैं इसके विरुद्ध जव गुप्तदर्शन और गत वृत्तांतोंके देखनेका अच्छी तरह सिद्धहोगया तोभविष्यत् अवलोकनभी होसक्ता है जो किसी तरह से जिसको हम नहीं समझ सके हैं यह वात पैदा होती है कि गत और वर्त्तमान वृत्तांत मालूम होजाते हैं तो क्या यह नहीं होसक्ता कि भविष्यत् वृत्तांत मालूमहोसकें यदिगत वृत्तान्तोंके कुछलक्षण पीछे रहजाते हैं तो क्या यह संभव नहीं है कि भविष्यत् वृत्तांतों का चमत्कार पहले पड़ता जावे जो कोई कहे कि यहवात भविष्यत् वृत्तांतों के लिये अनुमानमें नहीं आसक्ती तो इसका उत्तर यहहै कि जो हमको गत वृत्तांतों के लिये परीक्षासेप्रमाणमात्र नहीं होता तोलोग उनकेलिये भी ऐसीही वार्त्ताकर सक्ते थे चाहे समझ में आसके या न आसके दोनों लक्षणों के उपजने के कारण को समझना कठिन है ॥

ऊपर वर्णन होचुकाहै कि वहुत से धारक पहले बतादेतेहैं

कि हमको इतनी देरतक सोना है और जो कई बार बराबर उनसे पूछाजावे तो हर वेर ठीक समय बताते हैं मैं यह नहीं कहताहूं कि इस विषय में धारक कभी भी भूल नहीं करते हैं बहुत से प्रसिद्ध कार्य्य जिन का ऊपर वर्णन होचुका जिनके कारण उनके वर्णन में भूलहोती है और वहुतसे अविदित विषयभी हैं जिनसे इसतरहकी भूलहोसक्ती है परन्तु जिन धारकों को यहशक्ति प्राप्तहोती है वह प्रायः कभीचूकते हैं तथाच एक मनुष्यपर जो क्रिया की गई तो ३५ वेर की क्रिया में ३१ बेर धारकने ठीकसमय अपने जागनेका बताया कईवेर की निद्रामें एक निद्रा में तीनचार वेर और सब निद्राओं में हर निद्रा में एकबेरसे अधिकउससे पूछागयाथा बाक़ीचारवेरोंमें तोधारकसे जागनेका हालही न पूछागया और दोबेरमें कुछ विघ्नहोगया॥

भविष्यत् वाक्य के रूप नानाप्रकारके होतेहैं कईधारक तो कारककी घड़ीसे समय बतादेतेहैं चाहेघड़ी उनको दिखाईनहीं जाती और अपने विचारके प्रमाणसे बताते हैं जैसे कईकहते हैं कि मैं आठबजेतक सोऊंगा कई कहते हैं कि मैं नवबजेपर जब ३४मिनट बीतेंगे तो जागूंगा कईघंटा और मिनटोंकी संख्या बतातेहैं तथाच एकधारकको मैंएकघंटेतक सुलाया करताथा जब उससे एकबेरपूछागया कि तुमकबतकसोवोगे तोउसनेकहा५३ मिनट और सोऊंगा और जबमैंने २१ मिनट पीछे अपनी घड़ी को देखकर पूंछा कि अब कितनी देरतक सोवोगे तो उसने ३२ मिनट बताये फिर जो साढ़े चौदह उपरांतमैंने उससे पूंछाकि अब और कितनीदेर सोवोगे तो उसने कहा कि १८ नहींसाढ़े १७ मिनट और सोनाबाक़ी है मालूम होताहै कि दोनों समय बतानेकी रीतें इसबातपर घटितहैं कि धारकको समय किस दशामें दिखाई देताहै जो धारक प्रथम रीतिसे जागनेका समय

बतातेहैं वह घंटोंको यातो किसी कल्पित अनुमानसे देखलेतेहैं या अपनी प्रकाशमान दशा को कारककी घड़ीमें देखलेतेहैं मैं जानताहूं कि कईधारक कहतेहैं कि हमको किसीप्रकारकी घड़ी सेसमयमालूम होताहै और हम अपनेजीमें जानजातेहैं कि जब हमको जागनाहोगा उस समय घड़ीकी सुइयां अमुकस्थानपर होंगी एकधारकने समय बतानेका यंत्र अतिविस्तारसे वर्णन किया उसका वर्णन नीचेलिखागया (वाक्य) मैंएक प्रकारका अनुमानिक समय देखताहूं उसका रूप यहहै कि एक घड़ीसी है और मेरीआंखोंके साम्हने दाहने हाथसे बायेंहाथकी ओर चलतीहै और उसघड़ी पर कुछ चिह्नहैं जो चिह्न पहलेबायें हाथकी ओरसे मेरीआंखोंसे गुप्तथे घड़ीके चलनेके कारणदाहने हाथको आतेजाते हैं जब दाहने हाथकी तरफ़ घड़ी चलती है तो चिह्न गुप्तहोतेजातेहैं परन्तुमुझको घड़ीके दोनोंसिरेदिखाई नहींदेते यह धारक वहुत समझदारथा और उस कल्पितसमय केयंत्रको बहुत घूमनेवाले फीतेसे मिलताहुआ बताताथा और कहताथा किएक फीतेका टुकड़ा सीधामेरे साम्हनेरहताहै और आगे चलताजाताहै और इस घड़ीमें दरजे बनेहुयेहैं अर्थात् चिह्नहैं और हरनिशानसे एक मिनट मालूम होताहै हरदशवें मिनटपर चिह्न अधिक लंबा और गहराहोताहै कि सुगमता से मालूमहो परन्तु यह बात कुछ अवश्यनहींहै कि यह चिह्न सदैवकाल अधिक प्रकटहो जबमैं और बातोंमें प्रवृत्तहोताहूं तो प्रति समय इसयंत्रकी ओर ध्याननहीं देताहूं परन्तु मुझको सदा यह विचार रहताहै कि यह यंत्र मेरे साथ है जब कोई मुझसे पूछताहै कि कितनीदेर सोनाबाक़ीहै तो मैं इस यंत्रकी ओरदेखताहूं और वह समय तुरंत मालूम होजाताहै जोचिह्न इसयंत्रमेंहैं उनपर अंकनहीं लिखेहुयेहैं परन्तुमैं ६० चिह्नतक

अपनेबायें हाथकी ओरदेखसक्ताहूं जो सीधाचिह्न मेरीआंखोंके साम्हनेहै उसकोमैं जानताहूं कि यह वर्तमान समयहै औरजब कुछ अपने बायेंकी ओरदेखताहूं तो मुझको मालूम होजाताहै कि जबमैं जागूंगा तब अमुकचिह्न मेरेआंखोंके साम्हने होगा मैं यह अच्छीतरह जानताहूं कि जो चिह्नमेरे दाहनी ओरको जातेहैं वह समय व्यतीत होताजाताहै और जो बाईंओर हैं वह भविष्यकालको बतातेहैं जब एक बेर मुझसे पूछाजाताहै और मैं कोई मुख्यसमय नियत करदेताहूं तो जो समय दाहनीओर कोजाताहै मुझे यादरहताहै और जबफिरमुझसे पूछताहै तोमैं देखलेताहूं कि उस समयसे दाहनी ओर कितने चिह्नगयेहैं और उनको पहलेके नियमित समयसेकमकरके जितनासोनेका समय बाक़ीरहताहै बतादेताहूं यह धारकने सम्पूर्ण बर्णनइस तरह और इसयुक्तिसेकिया जिसतरह यहांलिखाहुआहै क्योंकि जब वहवर्णनकरताथा मैं लिखताजाताथा और जब तक वह यह वर्णनकरतारहा था मैंने उससे कोईप्रश्न न कियाथा जितनीबेर मैंने इसमनुष्य पर कियाकीउनमें आधीबेरमें मैंने उसेआज्ञादी कि३०या४० ४५ ५०५५ या६० मिनटतकसोवे और बाक़ीमें मैंने उसको कहा कि अपने सोनेकासमय आपनियतकरदे तथा उसने अपने अनुमानिक यंत्रको देखकर समय नियत किये उनका विस्तार यहहै ७ ८ १२ १४ १५ २० २२ ३४ ३५ ४० ४१ ४३ ४६ ५० और ५२ सो मालूमहुआ कि जोसमय मैंने नियत कियेथे धारकने उनकी पैरवी नहींकी और इस बातका कि उसने ६० मिनटसे अधिक समय नहीं नियतकिया एक कारण यह मालूम होताहै कि वह जानताथा कि मुझेभी और उसेभी अवकाशकमहै और यह बिचार उसको शयनकी दशामें रहताथा और जो समय मैंने नियत किये उनसे वह

समय विरुद्धथे जो वह आप नियत करताथा और जो कि समय नियत करनेसे पहले धारक सदा अपने अनुमानिक यंत्रकी ओर देखलिया करताथा इससे सिद्धहै कि वह जो समय नियत करताथा तो आप अपनी इच्छासे नियत करताथा मेरीओरसे उसको कुछ सैननहीं होतीथी परन्तु जो यहभी मानाजावे कि मेरीओरसे उसे सैनहोतीथी तोभी यह बात अतिविचित्रहै कि जब उससे जागनेका समय पूंछा जाताथा तो वह अपने अनुमानिक समय पर एक भविष्यत्काल देखताथा और जानताथा कि अब वह समय वर्त्तमानकालमेंसंयुक्त होताजावेगा और फिर वीतताजावेगा मुझको मालूमनहींहै कि इसप्रकारकीयुक्ति अन्य धारकों पर क्रिया करनेकी दशामेंभी प्रकटहुईहै या नहीं मेरीक्रियामें लाभकीबातयहहै कि धारक अतिचतुर औरअच्छा शोक्षित मनुष्यथा और जो२ लक्षण उसपरहोतेथे और जो२ कुछ उसको मालूमहोताथा उसके वर्णनकी शक्ति उसको भले प्रकारप्राप्त थी परंतु मुझको सन्देह नहीं है कि जो अच्छीतरह खोज कियाजावे तो इस विषय में विचित्र परिणाम मालूम होंगे--इसधारकने जो२ दोबेर सोनेका समयनियत कियाथा उनमेंप्रतिज्ञा पूरीनहींहुईथी अर्थात् नियमितसमयसे१५ मिनट तक धारक सोतारहाथा पहली बेर में मैंने एक प्रकारकी विरुद्धता उसके मुख और डौल में देखी परन्तु जबतक वहनहींजगा तबतक मुझको यहबात नहीं मालूमहुई कि जो समय उसने नियतकिया उससे बहुत देरतक वह सोतारहा—दूसरे दिन उसको बहुत ध्यानसे देखतारहा और मैंने वैसेही विरुद्ध लक्षण देखे धारक चुपहोगया और थोड़ीदेर पीछे मुझसे कहने लगा कि मैं किसीजगह में नहींहूं वरन वायु में हूं और फिर कहने लगा कि मैं एक और सृष्टि में हूं मुझ को पीछेसे विदितहुआ

कि और सृष्टिमे उसका केवल यह प्रयोजन था कि अन्यदेश और अन्य मनुष्योंमेंहूं पहलेसे उसकीदृष्टिभी तीक्ष्णतर होगई उससमय उसकी शयनकी दशावृद्धिपरथी और उसको उसजागने के वताने की शक्ति इस वातसे पहले प्राप्त होगई थी कि उसकी दृष्टि साफ़ हो यह विरुद्ध उसकी दशा में उससमय से जो उसने जागने के लिये नियतकियाथा सात या आठमिनट पहले पैदाहुआ इस नई दशामें वह १५ मिनटतक जो कुछवह देखता था उसका वर्णन करतारहा मैं उसके वर्णनके लिखनेमें लगाथा क्योंकि मुझकोवहसमय १५ मिनटसे कम मालूमहुआ फिर अकस्मात् वहचुपहोगया और फिरउनवातोंकावर्णन करने लगा जिसकावर्णन इसविरुद्धदशाकेहोनेसेपहलेकररहाथा फिर मैंनेउससेपूछा कि अवकितनीदेर सोनावाक़ीहै उसनेकहा सात मिनट औरवास्तवमेंसात मिनटकेपीछेजगगया।इसधारककीदशा वृद्धिपरथी और अपनेआप उसकी नईदशा होगईथी और इस दशा में जो पन्द्रहमिनट वीते वह प्रथम दशा में गिने नहींगये वहुधा वहुत दशाओं में जिनमें नियमित समयसे वृद्धिहोगई है खोजनेपर यही या ऐसाही समय के वढ़ने का कारण मालूम होगा और मैं इसवात का निश्चय रखताहूं कि तीसरे मनुष्य के संयोगसे समय के वढ़नेका परिणाम उत्पन्न होसक्ताहै मुख्य करके उसदशा में कि वह मनुष्य धारक को छूलेवे परिणाम यहहोता है कि यातो धारक का मन दुःखी होजाता है या एक और नई दशा उसमें उत्पन्न होआती है ॥

दूसरा स्वरूप भविष्यत् ज्ञान का यहहै कि धारक अपने स्वभाव जो विरुद्धता होनेवाली है वह पहले से वतादेता है निस्संदेह यहवात उनमें वहुधा पाई जाती है जो रोगी रहते हैं धारक वहुधा आप ठीक २ वतादेते हैं कि अमुक समय पर अ-

लुक रोगहोगा यहभी बतादेते हैं कि रोग का वेग इसतुल्यदशा तक होगा और कितने समयतक रोग स्थिररहेगा और बहुधा उनका यह भविष्यत् वाक्य इस रोगके उपजनेसे पहले होता है इसलिये जो रक्षाकी बातें हैं उनका ध्यान रखसक्ते हैं ॥

धारक बहुधा यहभी बतादेते हैं कि रोग एक दो तीनबेर और इसीतरह अमुक समय और अमुक घंटे होगा और कौन समय उसका अन्तहोगा अर्थात् उसकेपीछे वह बीमारीनहोगी परन्तु यहबात मुख्यकरके उसदशा में होती है कि जबरोगी की चिकित्सा आकर्षण की क्रियासे कीजाती है और यह सर्व भविष्यद्वाक्य सत्यहोते हैं इस बातकाभी ध्यान रखनाचाहिये कि धारक जो इसप्रकार के भविष्यद्वचन कहतेहैं उनकोअपना कहाहुआ वाक्य यादनहींरहता क्योंकि जोकुछ स्वप्नमें होताहै उनको याद नहींरहता ऐसे दृष्टांत बहुतसेहैं परन्तु मुझको अपने आप परीक्षा नहींहुईहै क्योंकि जब मैंने क्रियाकीहै तोवह आरोग्य मनुष्यथे ॥

धारक बहुधा बतादेता है कि मुझको प्रकाशमान दशा कब प्राप्तहोगी और वह प्रकाशयुक्तदशा अन्तको कब पहुंचेगी वह बतादेता है कि अमुक दिवस में अमुक मनुष्य या अमुक स्थान को देख सकूंगा या इसतरह पर कहता है कि अमुक समय में बतासकूंगा कि मुझको यह निपुणता प्राप्तहोगी और यहबता देता है कि अमुक समय में अमुक दशा मेरे ऊपरहोगी बहुधा सोनेवाला यहभी बतादेताहै कि कौनसे क्रियाकी युक्ति मुझपर बहुत प्रभाव करेगी कि यहयुक्ति कि कारक उसकी ओर दृष्टि करता है या यह उपाय कि उसके शिरपर हाथरक्खे या हाथ उसके शरीरके नीचेकीओर या उसकीपीठकेपीछे या शिरके गिर्द लेजावे या यहयुक्ति उसके शिर या माथे या मन या मेदेपरफूंकदे

या यहउपाय कि उसके हाथोंको पकड़कर क्रियाकरे सोनेवाला यहभी बतादेताहै कि कितनीवेर और कब२ कितनी कितनीदेर तक उसपर क्रियाकी युक्ति करनी चाहिये और जब वह युक्ति क्रिया के पहिले बतादेताहै और यहभी बतादेताहै कि उसक्रिया का क्या परिणामहोगा तोउसका वर्णन सर्वदा ठीकहोताहै॥

इस धारक अर्थात् (क) की दशा जब कुछ २ प्रकाशमान होनी शुरूहुई तो मैंने उससेपूछा कि तुमको अत्यन्त प्रकाशमान दशा प्राप्तहोगी कि नहीं उसने उत्तरदिया कि होगी परन्तु बहुत वेर क्रियाकरना मुझपर अवश्य होगा तब मैं ने उससे पूछा कि कितनीवेर तो वह शोचनेलगा और कहा कि मैं ठीक२ नहीं बतासक्ताहूं क्योंकि मैं दोअरबी अंक धुंधले देखताहूं और यह अंकसदा घूमते रहतेहैं इसलिये मैं यहबात नियतनहीं करसक्ता हूं कि कितनीवेर क्रिया करनी अवश्य होगी दूसरीवेरजो मैंने पूछा तो उसने कहा कि मैं दोअंक देखताहूं परन्तु अब धुंधले दिखाईनहींदेते वरन लालरंगके दिखाईदेतेहैं और ऐसेतेज फिर रहेहैं कि एक उनमें से ६ या ६ है और दूसराभी ६ या ६ है या शायद विन्दु है —इससे मैं अपनेजी में समझगया कि या तो ६० या ६६ या ६६ या ६० या ६६ या ६६ होंगे परन्तु जो इतने वेर यह क्रिया होती तो धारकको अति प्रकाशमान दशा प्राप्त होती परन्तु मैंनेदेखा किधारकको प्रकाशमानदशा के प्राप्तहोनेमें वृद्धिहोतीजातीथी और जिनबड़ी दशाओंका वह वर्णनकरताथा वह ऐसीथीं जो उससे कमवेरके क्रिया करने में प्राप्त न होती जिसका मैं वर्णन करताहूं उस धारकका नाम मैं पहिले (क) बताचुकाहूं उसका अधिक विस्तार द्वितीय भाग में किया जावेगा बहुत से दृष्टांत इस प्रकार के लिखेहुये वर्त्तमान हैं और मैं उत्तर लिख रहाहूं मुझको (क) की एक ऐसी

प्रतिज्ञा के पूर्ण करने का ध्यानहै कि जिसमें उसने इन्द्रिय वैकल्य दशा के उपजने की प्रतिज्ञाकी है॥

यहबात कहनी अवश्य है कि (ख) को अपनी मुख्य दशा अर्थात् साधारण जागने में कुछ इसबात का विचार भी नहीं है कि उसने प्रकाशमान दशाके प्राप्त होनेकेलिये कुछ भविष्यद्वाक्य कहा है न उसको अपने समयके अनुमान कियेहुये यंत्र का कुछ विचारहै और उसको इसहालकी ख़बर पहिलेही इस क़िताब के पढ़ने से होगी मुझको निश्चय है कि (क) ने जो इन्द्रिय वैकल्य दशाके लिये भविष्यद्वाक्य कहा है उसका भी उसको कुछ विचार नहीं है और यह बात बहुधा होतीहै कि धारक जो कुछ कहतेहैं उनको क्रियाके अन्तर्गत वर्णनका कुछभी विचार नहीं होताहै॥

सोने वाला बहुधा उन मनुष्यों का जिन के साथ उस को संयोग दिलाया गयाहै रोगके उपजने और उसके अंतहोनेका समय वर्णन करताहै ऐसे वर्णनके लेख बहुतहैं परन्तु मुझ को आप परीक्षा का अवसर नहीं मिला है परन्तु एक मनुष्य का वर्णन अवश्यहै कि एक कारककी धारकने अपनी मृत्युके होने का समय छःबरस पहले बतादिया था और मुझको ठीकख़बर पहुंचीहै कि जोसमय उसनेबतादियाथा उसीसमय वह मनुष्य दैवी मृत्युसेमरा — एक और भविष्य कहनेवालेका लेखविद्यमान है कि बिन्स शहर में एक जादूगरनी थी तीनमनुष्य जो परस्परमित्रथे उससे अपनाहालपूछनेगये उसने तीनोंमनुष्यों के मरनेकासमय बतायाथा तथाच जो जोसमय उसने बताया था उसीसमयमें तीनोंमनुष्यमरे एकतो आकस्मिक मृत्युसेमरा दूसराकिसी कठिन रोगसे कालवश हुआ और तीसरा ज्वरसे परलोक गया इसतीसरे मनुष्य की यहदशा थी कि उसको

उक्तजादूगरनी के भविष्य कहने में कुछ भी विश्वास नहीं था बरन मरनेके समय तक उसको अपने अच्छे होजानेकी आशा थी और कुछ तमाशा जो थोड़े दिनों में होनेवाला था उसके देखने के प्रबन्ध की बातें करता रहा इस वृत्तान्तका वर्णन मैं इसलिये करताहूं कि मुझको ठीक ख़बर इस वृत्तान्त के होने की पहुंची है नहीं तो जो मुझको कुछभी सन्देह होता तो मैं इस जगह उसका वर्णन न करता अवश्य है कि उस समय उक्त जादूगरनी पर यातो बे बनावट या बनावट से गुप्तदर्शन की दशा हुई थी ॥

एक और धारकने ऐसा भविष्यद्वाक्य कहा जिससे सूचित होता है कि धारकों को इस बातकी भविष्यत् भाषण की शक्ति प्राप्त है कि किस मनुष्यके स्वभाव में कब हानि होगी ऐसा भविष्यद्भाषण उसदशामें करतेहैं कि जिसमनुष्यकेलिये वहवर्णन करतेहैं उसको आप ख़बर नहींहोतीहै तथाच एकमनुष्य अतिप्रतिष्ठित विद्वान् अकस्मात् ऐसे समयपर आगया कि जहां एक धारकपर उससमय गुप्तदर्शनकीदशा प्रबलथी यहमनुष्य समझता था कि मैं बहुत आरोग्यहूं परन्तु गुप्तदर्शक ने उससे कहा कि तुम्हारे हाथपांवको सरदी मालूम होतीहै और तुम्हारे पहलू में बड़ी पीड़ा है जोकि इस मनुष्य को इन दोनों लक्षणों में से कोईभी उससमय नहीं मालूम होता था तो उसने यह बिचार किया कि गुप्तदर्शक ने भूल की है परन्तु थोड़ेही अवसर में जिस पहलू में गुप्तदर्शक ने पीड़ा बताई थी उसपहलू में बड़ी पीड़ा होनेलगी और उसके हाथ पांव को सरदी मालूम होनेलगी तब उस मनुष्यको यादआया कि सर्व दर्शक के पास आनेसे पहलेमें बहुत सरदहुआ मैं बहुत पतला पाजामा पहिन कर फिराथा और उससमय मुझको सरदी मालूम हुईथी परंतु

फिर मुझको वह बात भूलगई और उसीसमय वह बात याद आई कि जब रोग शरीरपर पहुंच गया इस दशा में मुझे यह बात स्पष्टता पूर्वक सूचित होती है कि सर्वदर्शक ने उक्तजोड़ों में उससमय कुछ हानि देखली कि जब उस मनुष्यको कुछभी ख़बर उस रोगकी न थी और दो बातों से यहबात खाली नहीं अर्थात् यातो यह कि सर्व्व दर्शक ने जो भवितव्य बात थी वह पहले बतादी अर्थात् भविष्य वृत्तान्त कहा या यह कि कि जोबात आगे होनेवालीथी उसको वर्त्तमान देखलिया तो इसदशामेंभविष्यत्भाषणनहीं वरन भविष्यत्अवलोकनहुआ॥

बहुधा ऐसे दृष्टान्त लिखेहुये हैं कि सर्व्वदर्शकने जो दुःख चाहे मूर्च्छा वा मिर्गी का रोग होनेवालाथा वह पहलेसेबता-दियाहै मैंने आप ऐसे भविष्यत् कथनकी परीक्षा नहींकी परंतु मुझको इसविषयमें विश्वासपूर्वकनिश्चयहै और यहबातहोना बड़ेआश्चर्य्यकी बातहै क्योंकि सर्वदर्शकको वहवृत्तान्त मालूम होजाताहै कि जो उसकेशरीरसे भिन्नहै और जिसकेसाथ उस को किसीप्रकारकासंयोगनहीं और न कोईमालूमकरनेकामार्ग प्रकटहोताहै सर्व्वदर्शक बहुधा यहतो नहींबतासक्ताहै कि वह दुःखठीकर किसप्रकारकाहोगा परन्तुयहबातठीकर बतासक्ता है कि कब वह पीड़ाहोगी और उसके परिणाम क्याहोंगे॥

और दृष्टांतऐसेहैं कि सर्व दर्शकबहुधा ऐसे वृत्तान्तोंके लिये भविष्य भाषण करताहै कि जो उससे संबन्धनहीं रखते तथाच कारकसे सर्बदर्शक कहदेताहै कि तुम्हारे पासकल या कईदिन या कई सप्ताहके पश्चात् एक पत्रआवेगा और भेजनेवाले का नाम और पत्रका विषयभी बतादेताहै मैंने एक सर्बदर्शकका हालसुनाहै कि उसने अपने कारकको बताया कि अमुकदिवस तुम्हारेपास इतनी दूरसे पत्रआवेगा और उस पत्रका विषय

जो कुछ घरके व्यवहारोंसे संबंधितथा बतादिया और जोकुछ उसने बतायाथा वास्तवमें सब बातें ठीकनिकलीं मैंने इससर्व दर्शकको आपभी देखाहै परन्तु जब मैंने उसे देखाथा उससे पहले वह वृत्तान्त बताचुकाथा॥

सर्व्वदर्शकको इसप्रकार के भविष्य भाषणकी शक्ति केवल पत्रोंके लियेही नहींहोतीहै बरन अन्यविषयोंकी भी प्राप्तहोती है अबहम देखचुके हैं कि सर्वदर्शक अपने शयनकेसमय और अपनी वीमारी और इसबातकी भीकि उसको कब सर्व दर्शित्व और प्रकाशमान दशा अच्छीतरहप्राप्तहोगी और किस २ दरजे में कब २ पायेगा भविष्य कहसक्ता है और इसप्रकार के भविष्य भाषण वा भविष्य अवलोकन के होने में सन्देह नहीं है सो उचित है कि हम बेसोचे समझे यहबात न कहबैठें कि सर्वदर्शक को मनुष्य और अन्यविषयों के लिये भविष्यत्कथन वा भविष्य अवलोकन कीशक्ति प्राप्त नहींहोती ऐसे भविष्यत्कथन और भविष्य अवलोकन के वास्ते विश्वास योग्य साक्षीप्राप्तहैं और हमको साक्षी को वृथा और विनाशोचे समझे अविश्वसित न समझना चाहिये मुझ को इससमय मुख्य विषय के खोजने का अवसर प्राप्त नहीं है जिसको अवकाशमिले उसको उचित है कि इसविषय को खोजेऔर जोकि इसप्रकार के व्यवहार बहुधा होते हैं तो इसबातकी दृढ़आशा है कि इस बात का खोज अच्छी तरह होजावेगा॥

अब एकबात प्रश्नोतर योग्य है कि सर्व दर्शित्व अपने आप भी होतीहै या नहीं जब हमयह विचार करते हैं कि शयन जागरण जो अपने आप होता है निस्संदेह उस शयन जागरण से मिलता हुआ है जो बनावट की आकर्षण क्रिया के द्वारा उत्पन्न होताहै और जब हम जानते हैं कि आकर्षण क्रियाके कारण

विचार संयोग और सर्व दर्शित्व दशा होती है तो हम को अवश्य इसबातकी आशाहोनी चाहिये कि जो शयन जागरण अपने आप होता है उसमें भी सर्व दर्शित्व और बिचार संयोग अपने आप होताहै और इसके सिवाय जबहम यह बिचार करते हैं किबनावटी आकर्षण की क्रिया में विचार संयोग और सर्व दर्शित्व उप दशामें उत्पन्न होजाताहै कि जब धारक को निद्रा की दशाप्राप्त न हो वरन चैतन्य दशाहोतो हमको यहभीआशा होनी चाहिये कि सर्वदर्शित्व दशा और विचार संयोग ऐसी दशामें कई लोगों पर होजावेगी कि जब वह अपनी साधारण और मुख्य दशामें हों वास्तव में विचार संयोग का ऐसीदशा में होना एक प्रसिद्ध बातहै परन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि जब कोई मनुष्य चिन्तामेंहो तो वह दशा ऐसी है कि यह विचार संयोग की दशा उसपर सुगमतासे होजावे जब हम खोजकरतेहैं तो मालूम होताहै कि बहुत दृष्टान्त ऐसे लिखेहुये हैं कि जिसमें सर्व दर्शित्वगत और वर्त्तमानसेअपने आप हुईहै हरएक मनुष्यने ऐसे२ वर्णन सुनेहोंगे परन्तुबहुधा लोग कहदेते हैं कि यह बातें विचित्र संयोग या विचारसे होगई हैं ॥

मुझको नीचे लिखीहुई विश्वसित साक्षीसे समाचार पहुँचा है कि एकस्त्रीकी किसीसमय ऐसीदशा होजातीथी कि उसको मालूम होता था कि अमुक मनुष्य जो उससे बहुत दूरहोते थे उससमय क्या कर रहेहैं इस स्त्रीको इसबात का कारण नहीं मालूमहोता था कि मैं यहबात किसतरह जानलेतीहूं एकबेर सन्ध्याकेसमय वहबैठीहुई थी और अच्छीतरह चैतन्यअवस्था में थी उससमय वह स्त्री शहर से बाहर दूरीपर बाहरथी उस समय उसने अपनेपुत्र का मकान शहरमेंदेखा उसनेदेखा कि एकनौकर उस के पुत्र का एकहाथ में प्रकाश और एकहाथ में

चाकूलेकर उसकेपुत्र के शयनस्थान में चलागया उसनौकर ने धीरे २ जाकर देखा कि उसकास्वामी सोयाहुआथा उससमय उसनौकर ने अपनेस्वामी के कपड़ोंमें से कुंजियांनिकालीं और कमरेमें एकओर जाकर एक अलमारी खोली और एककिताब मेंसे एकनोट पांचसौ रुपये का निकाल लिया फिर वह चोर अपनेस्वामी के पलंग के पासआया और जहां से कुंजियांलींथीं वहीं फिर रखदीं और फिर यह समझकर कि उसका स्वामी सोयाहुआहै अपने कमरे में चलागया यह हालदेखकर वहस्त्री अतिचिन्तितहुई और दूसरेदिन शहर में गई और अपनेपुत्रसे मिली उसने अपनेपुत्र से जो हाल ऊपर लिखागया वर्णननहीं किया परन्तु बुद्धिमानी से मालूम करलिया कि उसके सन्दूक में एकनोट पांचसौरुपये का था और फिर उससे कहा कि वह नोट सन्दूक में है या नहीं जब देखागया तो कुफल ज्योंका त्यों था परन्तु नोट न था उससमय उस स्त्री ने सर्व वृत्तान्त वर्णन किया परन्तु वह और उसका पुत्र इसबातमें एक मति हुये कि इस साक्षी पर किसी को चोरीका अपराधदेना वृथा होगा उस नोटकावह नंबर जानतेथे उन्होंने बंकघरमें वर्णन किया कि अमुकनोट चुरायागया है उसकारुपिया किसी को न दियाजाय और उसनोट के चुरायेजानेका इश्तिहारदे दिया उस चोर ने कभी उसनोट को बंक घर में रुपया लेनेके लिये न दिया थोड़ेसमयके उपरांत वहनौकर उसमनुष्यकी नौकरी छोड़कर चलागया और इस चोरीका हाल कुछभीमालूम नहीं हुआ परन्तु थोड़े दिनों के उपरान्त यही नौकर किसी चोरी के अपराधमें पकड़ा गया और जब उस के घरकी तलासी हुई तो वही नोट उसकी रुपयेकी थैलीकीतहमें मोड़ा तोड़ाहुआमिला यह हाल मुझको एक बड़े भलेमानस प्रतिष्ठित और बड़ीपदवी

के मनुष्यने बतायाथा और इस मनुष्यने आपउस स्त्रीके मुखसे सुनाथा इस वर्णनके देखनेसे प्रकटहै कि इसस्त्री को यह चोरी का वृत्तान्त स्वप्नमें नहीं मालूम हुआ बरन उसने जागने और चैतन्य दशामें प्रत्यक्षदेखाथा यदिमानाजावेकियहस्त्री यह चोरी स्वप्नावस्था में देखती तो यही बात सूचित होसक्तीथी कि जो बहुधा उसको सर्वदर्शत्वकीदशा जागने और चैतन्य अवस्थामें होती थी वह इस मुख्य स्वप्न की दशामें हुई परन्तु ऐसे सर्व्व-दर्शनकी दशाकेहोनेमें संदेह नहीं होसक्ताथा ॥

मुझको कभी संदेह नहींहै कि बहुतसे ऐसेस्वप्न जो होते हैं कि जो पीछे ठीक निकलते हैं उनका होनाभी किसी ऐसेहीं कारणपरघटितहै परन्तुसाधारण देखनेमेंयह बातप्रबलमालूम होतीहै किबहुधा परोक्षदर्शित्वदशा स्वप्नमेंहोती है और चैतन्य अवस्थामें कमहोतीहै हमसबजानतेहैं कि बहुधा स्वप्नअसंयोग और इच्छा बिना होतेहैं परन्तु अवश्यहै कि सर्व प्रकारकेस्वप्न गुप्तदर्शित्वके कारण होतेहैं रोशनबेकसाहबको ठीकमालूमहुआ है कि जोलोग स्वप्नमें चलतेहैं और स्वप्नमें बातें करते हैं उन पर आकर्षण की क्रिया अति सुगमता से होतीहै स्विटज़रलेंड में एक बहुत प्रसिद्ध योकनामी थे उन्होंने अपने निर्माणमें ब-हुधा लिखाहै कि उनको यह शक्ति अन्य २ समयमें होजाती थी कि जो मनुष्य उनकेपास बैठताथा उसका सब गतवृत्तान्त उनको मालूम होजाता था एकबेर एक संदेही मनुष्य को उन्होंने ऐसा अचम्भितकिया कि जो उसका व्यतीत वृत्तान्त था सब वर्णन करदिया और ऐसे वृत्तान्त बर्णन करदिये कि केवल उसीको मालूमथे और उसका मनोरथथा कि कोईअन्य मनुष्यउनकोन जाने और यह हाल उन्होंने एक बड़ी सभामें वर्णन किया था इससे सिद्धहै कि परोक्षदर्शित्व दशा और

पिछले वृत्तान्तों के देखने की शक्ति अपनेआपभी होजाती है ॥

मैंने विन्सशहरकी जादूगरनीकावर्णन कियाथा कि प्रायः उसको भविष्यद्भाषणकी शक्ति कृत्रिमाकर्षण क्रियासे प्राप्तथी इसबातका प्रमाण मेरेपास कुछनहींहै संभवहै कि उसकोअपने आप यह दशा उत्पन्नहोगईहो परन्तु बहुत दृष्टांत ऐसेभविष्यद्भाषणकी लिखीहुई मौजूदहैं जो अपने आप प्राप्तहोजाती हैं तथाच दूसरे भागमें कज़वटसाहब का भविष्यत्कथन और भविष्यत् अवलोकन का वर्णन कियाजावेगा कज़वटसाहबको और उस स्त्रीको जिसका मैंने नोटकी चोरी में वर्णन कियाथा ऐसीदशा बहुधा पैदाहोजातीथी ॥

कहते हैं कि जब कज़वटसाहब को यहदशा उपजतीथी तो वह एकमुख्यस्वप्नकी दशामें कि वह साधारण निद्रासे अलग होताथा हुआकरतेथे अवश्य है कि कज़वटसाहबको कोई अन्य ज्ञानप्राप्तथा बहुतलोग थोड़ा समयहुआ जीतेथे और कई अभी जीतेहैं जिनको कज़वटसाहबके भविष्यत्कथनकाहालमालूमथा वरन वह यहभी जानतेथे कि कुछदिनउसबात के होनेसे पहिले भविष्यत्भाषणसे लोग हँसाकरतेथे और दुर्वाक्यकहतेथे ॥

बहुधादेशोंमें अच्छे विश्वसित लेख इसबातकेहैं कि किसी२ मनुष्यको हार्ददृष्टिप्राप्तथी और चाहे इससे यहबातसिद्धनहो कि भविष्यत् अवलोकन वास्तव में कोई मुख्यवस्तु है तो यह बात तोवास्तवमें सूचितहैकि लोगोंके जीमें ऐसेभविष्यत् अवलोकन का निश्चयबहुतथा मेरीमति यहहै कि जबतक कुछ मूल ऐसे विश्वास का नहींथा तबतक वृथा लोगोंको ऐसा निश्चय नहीं होसक्ता था मैंयहां इसबात को छोड़देता हूं क्योंकि ऐसे भविष्यद्भाषण का कारण खोजनेपर मालूम होसक्ता है आगे ऐसे भविष्यत्कथनों का वर्णन कियाजावेगा जो लोकमें प्रसिद्ध हैं ॥

अबमैं कईऐसेआकर्षणक्रिया के लक्षणों का वर्णन करूंगा जिनका मैंनेअबतक यातो वर्णन नहींकियाहै यातो वर्णनकिया है तो संक्षेपरीतिसे क्योंकि वहलक्षण बहुधाप्रकट नहींहोते हैं अवश्यहै कि जबअच्छीतरह खोजकियाजावेगा तोमालूमहोगा कि यह लक्षण धारक में बहुधा विदित होते हैं और बहुधा दृष्टि गोचरहोते हैं परीक्षकों को उचितहै कि इसबात के खोज करनेमें ध्यानकरें पहलालक्षण इसप्रकार का यहहै कि धारक कभीकिसी मनुष्य या स्थान या चीज़का नहींबताना चाहताहै सोनेवालेकी यहदशाहोतीहै कि एक दो मिनट इसमेंखर्च करता है कि उसचीज़का पताबतावे परन्तु नामनहीं बताना चाहता है बहुधा तो ऐसा मालूम होता है कि उसको नामके ढूंढ़ने में श्रमपड़ता है परन्तु उसके डौलसे यहबात अधिक मालूम होती है कि वह नामका मुखपर लेनानहीं चाहता है तथाच जो धारक पर बहुत ताक़ीद कीजावे तो वह अपना नाम अशुद्ध बताता है और बहुधा कारक के नामसे अपना नाम बताता है और जबवह आप कारकसे वार्त्ता करना चाहता है तोभीउसका नामलेकर बातनहीं करता है बरन कोई पेंचदार वार्त्ता करता है बहुधा धारक अपने विषय में यह बात नहीं कहता है कि सर्वदर्शित्व या प्रकाशमान दशामेंहूं परन्तु यहकहता है कि मैं प्रकाशमान हूं या गरम हूं या यह कहेगा कि मुझको अमुक स्थान भेजदिया है या लेगये हैं और इसीतरह की बात चीत करता है और बहुत सर्व्व दर्शक ऐसे हैं कि वह मौत का नाम नहीं लेते हैं बरन बहुत पेंचदार वार्त्ता करते हैं इस इच्छा से कि मौतका नाम नहीं लेना पड़े— इस बात का यातो यह कारणहै किउनको मराहुआ मनुष्य मराहुआ दिखाई नहींदेता या यह कि उनको मृत्युके विचार से ग्लानि होती है मुझको

ऐसाअवसरनहींमिला है कि मैं इस विषय में परीक्षा करता॥

जब परोक्षदर्शक किसीमनुष्य के विषय में कोई मुख्यशब्द काममें लाते हैं तो उस मनुष्य के लिये वहीशब्द सदा कहतेहैं और प्रायः कोई धारक जिसको प्रकाशमान दशा प्राप्तहोती है ऐसा होताहोगा जो मुख्य शब्द काममें नहींलाता तथाच (क) जिसका मैंने वर्णनकिया है कि मुरदे आदमियोंके लिये (ढका हुआ) शब्द और आकर्षण क्रिया के लिये (गरमी) का शब्द काममें लाता है और भी मैंने बहुतसे ऐसे शब्दसुनेहैं और विषयों में सर्व्वदर्शकों की वार्त्ता अतिउत्तम स्पष्ट और बलवान् होतीहै यहबात खोजनेकेयोग्यहै बहुतसे ऐसेभी रूपहोतेहैं कि यातो सर्व्वदर्शकोंकीवार्त्तामें कोईसंबंध मुख्यवृत्तांतोंमेंनहींहोता या जो होताहै तो मालूमनहीं होता और दृष्टिसेगिरजाता है॥

मैंने ऊपर वर्णन किया है कि यहबात कठिनता से मालूम होती है कि सर्व्व दर्शक किस गतवृत्तांत का वर्णन कररहा है या वर्त्तमान विषय को कहता है मालूम होता है कि सर्व्वदर्शक के मनपर दोनों समयों का हाल ऐसा प्रकट होजाता है कि सुनने वालेको विवेक नहींहोसक्ता है मैं फिर यहां लिखता हूं कि इस सबब से बहुधा सर्व्वदर्शक के वर्णनपर सन्देह उत्पन्न होजाता है बरन लोग समझते हैं कि सर्व्वदर्शक वर्णन में भूलकरता है परन्तु जो मुख्य विषय का खोजहोसके तो सूचित होगा कि बास्तव में उसके वर्णन में कुछभी भूलनहीं है बहुधा ऐसाहोता है कि जो धारक को इस ओर ध्यान दिलाया जावे तो वह किसी के द्वारा गत और वर्त्तमान वृत्तांत में विवेककर सक्ता है परन्तु सदा यहबात प्राप्तनहीं होती है॥

यद्यपि आकर्षण की क्रियाका मुख्यगुण यहहै कि जो कुछ आकर्षण की निद्रा में हो उसको धारक यादनहीं रखसक्ता है

परन्तु यहबात होसक्ती है कि जो कारक चाहे और धारक को आज्ञा दे तो चाहे सर्व्व वृत्तान्त या कुछ उसमें से धारक को साधारण जाग्रत अवस्था में याद रहेगा जिनरूपों में इसकी परीक्षानहींहुई उनमें मुझेविश्वासहै कि इसबातकी परीक्षानहीं कीगई थी परन्तु मैंने आप धारकों को कहाहै कि तुम जाग्रत अवस्था में यादरखना कि आकर्षणकी निद्रामें क्या२ हुआथा और जबवह जागेगा तो यातो उसको सम्पूर्ण यादरहा है या थोड़ासा यादरहाहै इसबातमें कुछ आश्चर्य नहींहै क्योंकि हम सबकोकभी निद्राकासंपूर्णवृत्तांत स्मरणरहताहै कभी थोड़ासा यादरहताहै और कभी केवल इतनीही बात याद रहती है कि हमने स्वप्नदेखाथा और कुछ हाल याद नहींरहताहै चाहे जब स्वप्नआयाथा उससमय वहस्वप्न अच्छीतरहमालूमहोताथा ॥

धारक के ऊपर कारक का इतनाबड़ा प्रभाव होता है कि जो कारक धारक को स्वप्नकी दशा में कुछ आज्ञादे तो उसके मनपर जागने के समय विचित्र लक्षण प्रकट होतेहैं तथा जो धारक निद्रावस्था में सुस्त और मुर्झाया हुआ मालूमहोताहो जो कारकआज्ञादेदे तो वह प्रसन्न और चैतन्यतापूर्वकजगता है इसी तरह जो आज्ञादीजावे तो जब धारक जगेगा सुस्त और चिंतितउठेगा—परहां मुझको ऐसी परीक्षालेनी स्वीकार नहीं है मैं पहले वर्णन करचुका हूं कि कारक को धारक के मनपर ऐसा निश्चय करदेने का अधिकार है कि धारक को लाचार कोई बात जिसकी धारकने आज्ञादीहो कहनी पड़तीहै चाहे उसका परिणाम ऐसा भी हो कि लोग उसको हँसें और उसका ठट्ठाकरें परन्तु यहबात मैं फिर वर्णन करताहूं कि यदि धारकजाने कि यहबात अनुचित है तो उससे आज्ञाका पालन कराना सुगम नहीं है ॥

अब मैं एक और बात का वर्णन करता हूं जो बहुधा मैंने देखी है और मेरे विचार में वह बहुधा हुई है चाहे सब लोग जानते हैं कि कभीहोती है वह यहबातहै कि सिवाय मनुष्यके मुख्यज्ञान और उसज्ञानके जो आकर्षण की क्रिया में होता धारक को एक दूसरे प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है कि वह दोनों ज्ञानोंसे जुदाहोताहै कदाचित् यह तीसरा ज्ञान बराबर पैदाहोतो मैंने देखा है कि धारक अपने तीनों ज्ञानोंको मिला नहींदेता है परन्तु जैसाज्ञान आकर्षण की दशा में उसकोअपने मुख्यज्ञान का चेतनहीं होता है वैसेही इस तीसरे ज्ञानकीदशा में उसको दूसरे दरजे के ज्ञान अर्थात् आकर्षण की दशा के साधारण ज्ञानका चेतनहीं होताहै और जैसा मुख्यज्ञान और आकर्षण के नियमित ज्ञान में कुछ संयोग नहींहोता है वैसाही मुख्यज्ञान और इस तीसरे ज्ञान में कुछ संयोग नहींहोता है जिस प्रकार का ज्ञान उसको किसी सयय प्राप्तहो उस समय उसको उसीप्रकार के ज्ञान की दशा यादआजाती है एकधारक की मैंने यहदशादेखी कि सोनेवाले का ढंग और डौलबिल्कुल बदलगया और कहने लगा कि मुझको नई चीज़ें दिखाईदेतीहैं और उसकीदशा पहलेसे अधिकप्रकाशमानहोगई और इसनई दृष्टिसेपहले जो उसको यात्राकरनीपड़ी वह पहलेसे बहुतबड़ी थी जो कुछ वह देखताथा उसके साफ२ देखनेसे वह बहुत प्रसन्नहोताथा और यद्यपि वह अपनीमुख्यदशामेंकभीउसजगह के हज़ारोंमीलके अन्दरभी नहीं गयाथा परन्तु हरएक बस्तुका विस्तृत और जरा२हाल वर्णनकरताथा इसतरह से कि मानों वह उसजगह विद्यमानथा और जो२ सुंदर बस्तु वहां वर्त्तमान थीं उनको देखकर अतिप्रसन्नहोताथा वह धारक यहांतक उस जगहसे प्रीतिकरनेलगा कि वह हरएकवृक्ष मकान मनुष्य और

पशुओंका इसतरह से वर्णनकरताथा कि मानों समयसे उनसे परिचयथा और कहने लगा कि जब मैं लड़काथा तो मैं समय तक यहां रहाहूं मुझको इस धारक को देखकर यह विचार हुआ कि यह नईदशा उसमें स्थिररहेगी और मैं सदाइसदशा में उसको देखसकूंगा परन्तु यह समझ झूठथी क्योंकि जब मैंने उससे पूछा कि अबतुम कितनी देरतक और सोवोगे चाहे उसका नियमित समय बीतगयाथा तो उसने कहा कि मैं सोता नहींहूं मैंने कहा कि तुम्हारी आंखें बंद हैं उसने उत्तर दिया कि नहीं बिल्कुल खुली हैं और यद्यपि मेरे कहने पर उसने अपनीआंखोंको टटोला और वास्तवमें वह बंदथीं तबभी वह यही कहतारहा कि नहीं मेरी आंखें बिल्कुल खुली हैं जो कि यह दशा उसकी कभी नहीं थी मैंने समझा कि यह धारक नयेरूपमेंहै और मैं इसीबिचारमेंथा कि यह दशादृढ़थी कि इतनेमें उसकी दशा बदलनेलगी और जब मैंने उससे फिर बातकी तो मालूम हुआ कि इस दशासे पहले जो उसकी दशाथी अब फिर उसमें प्रवेश करगयाहै अब उसने केवलयही प्रतिज्ञा नहींकी कि मैं सोताहूं बरन अपने जागने का समय नियत करदिया और दूसरी दशा उसपर पंद्रह मिनटतकरही थी यह दशामानों ऐसी थी कि अपनेआप आगई और जितना समय उसमें बीताथा वह पहली दशाके समयमें गिनानहीं जाताथा अबउसको इसनईदशाका जराभीध्यान नहींहोताथा न उसको यह विचारथा कि इस देशमें जिसका उसने उस नवीनदशामें वर्णनकियाथा पैदाहुआहूं और जब वहजागा तो आकर्षणक्रियाकी दोनों दशाओंका उसको कुछभीध्यान न था॥

प्रायः बहुत मनुष्यों को यह विचार होगा कि यह नवीन दशा जो इस धारक पर हुई केवल एक प्रकाशमान स्वप्नथा

मैं नामकेलिये अनुबादनहीं करताहूं परन्तु कहिये स्वप्न किसको कहतेहैं बास्तवमें यहहै कि हमको इनविषयोंका मूल ऐसाकम मालूमहै संभवहै कि जितने स्वप्न होते हैं सब बास्तवमें सर्व्व दर्शित्वको बदलतेहैं केवल इतना अंतरहै तो श्रेष्ठ और पतला मूलऐसाहै जिसके कारण सर्व्वदर्शित्व दशा उत्पन्न होती है इसका प्रभाव निद्राकी दशामें हमपर अधिक होताहै क्योंकि जो कुछहानि बाह्येन्द्रियके कारण होताहै वह उन बाह्येन्द्रियों केवृथाहोनेके कारण निद्रावस्थामें क्रिया नहींकरता और इस मूलका प्रभाव साधारण निद्राकी दशा और आकर्षणकी निद्रा दोनोंमें अधिकहोताहै और जब हम देखते हैं कि स्वप्न देखने वालाकेवल स्थानोंकाही बर्णनही नहीं बरन लोगोंका वृत्तान्त और ऐसा वृत्तान्त कि वह उस समय क्या कररहेहैं शुद्धता-पूर्वक बर्णन करताहै तो हमको इसबातके समझनेमें बहुतसुग-मताहोतीहै कि स्वप्न बहुधा सच्चेक्योंहोतेहैं और यहभी समझमें आजाताहै कि किसी समय हमको स्वप्न क्यों यादरहताहै और किसी समय क्यों भूलजाताहै जब हमारे स्वप्नऐसेहोतेहैं कि अपनी कुछ २ बातेंदेखीजातीहैं और ऐसा स्वप्नविचारीहोता है तो उसका स्पष्ट उत्तर यहहै कि बहुतसे विचार जमाहोजाते हैं या अन्यमनुष्यों के कर्म या विचारों के साथ संयोग होजाताहै औरआकर्षण क्रियाकी दशामें अकस्मात् स्वप्नका चलाजाना एक ऐसीबातहै जो रोज देखीजाती है ॥

कभी २ ऐसाहोताहै और यह बात अतिविचित्रहै कि एक धारक पर एकही समय दोपृथक् २ दशायेंहोतीहैं और एकही समयमें उसको दोप्रकारका ज्ञानप्राप्तहोताहै जैसे जबकिधारक तुमसे योग्यताकेसाथ बातचीतकर रहाहै और जो कुछ उसके

चीतके सिलसिलेमें कुछ विघ्नहो धारक अकस्मात् ऐसी बस्तु और मनुष्यों को देखने लगताहै जिसका उसको कुछ विचार भी नहींथा परन्तु कारक उसके वर्णनसे उनको तुरन्त पहिचानलेताहै—तथाच (क) पर जिसका ऊपर कईबार वर्णन होचुकाहै ऐसी दशाहोजातीहै कि यद्यपि वह जागता होताहै और हर प्रकारसे उसका मन प्रसन्न होताहै अकस्मात ऐसे मनुष्य देखने लगताहै जिनको उसने पहिले स्वप्नमें देखाथा और स्वप्नावस्थामें जिनका वर्णनकियाथा परन्तु उसकोअपनी आकर्षणकी दशाका उस समयतक चेतनहींहोताहै क्योंकिजो उसका निजका ज्ञानहोताहै वह प्रबलहोता है यदि (क) ऐसे समयमें बिल्कुल सोजावे तो उसको आकर्षणकी दशाकी सब बातेंयाद आजावें जब उससे कहते हैं कि जिन लोगोंको तुम देखतेहो वास्तवमें विद्यमान नहींहैं वरन केवल तुम्हारे संकल्पमें दृष्टआतेहैं तो (क) आश्चर्यकरताहै और घबड़ाजाताहै॥

मेरी यह प्रकृति नहींहै कि हठकरके हर विषयके प्रकटहोने का कारण वर्णन करने लगूं मुख्य ऐसी दशा में कि जब मुझे अच्छीतहर उसका हाल मालूम न हो परन्तु मैं इसबातकेकहने सेयहां नहीं रहसक्ताहूं कि जो खोज कियाजावे तो निस्संदेह इसपृथक् और एकही समयके ज्ञानका उत्पन्नहोना कुछ बहुत आश्चर्य देनेवाली बात मालूम न होगी इसका कारण यह मालूम होताहै कि हमारे ब्रह्मांडके जो दोभागहैं जैसे दोहाथ और दोआंखें हैं वह दोनोंभाग एकसमय अपना कर्म नहींकरतेहैं और जब कि एकभाग अपनी मुख्य जातिमेंहै और अपना कामकरताहै दूसराभाग किसी कारण से आकर्षण की दशामें अपने आपपड़जाताहै प्रकटहै जैसे कि एक आंखदोनों आंखोंका कामदेती है इसी तरह ब्रह्मांडके एकभागका कामभी सर्वप्रकार

से सबबातोंकेलिये पूराहै जिसभागपर आकर्षणकी दशाप्रबल होगईहै उसके पहिले आकर्षणकी क्रियाकी दशोंके गुणदिखाई देतेहैं या यह होताहै कि जो सर्व्वदर्शित्व क्रियाका कार्य उन चीज़ोंके लियेहोताथा जो पहिले दिखाईदेतीथीं उसदशामें उस कामकी तक़रार होजातीहै ॥

हर मनुष्य को मालूम है कि कभी २ उसपर ऐसी दशा होजातीहै कि जो दो मनुष्य एक जगहबैठेहों तो मालूम होजाताहै कि अमुक मनुष्य अमुक बातकहेगातथाच बहुधामेरेऊपर भीऐसी दशाहुईहै अर्थात् मेरेमनमें ऐसीबात आगई है कि मैं कहबैठाहूं कि फलाने तुमयहबात कहने लगेथे और उसने फिर कुछ उत्तर दिया है और मैंने फिर उसका कुछ उत्तर दिया है परन्तु इतना हाल अवश्य मुझको मालूम होता रहाहै किमैंने यहबात सदादेरमेंकही है और मेरेविचारमें हर मनुष्यकेकहनेमें इस तरह देर होजातीहै मेरीमतियहहै कि इसतरह के बिचार काभी निस्संदेह यहीकारणहै कि ब्रह्मांडके दोनोंभागोंका काम भी बराबर नहीं होता है अर्थात् हमारी यह दशाहोती है कि ब्रह्मांडकेएकभागसे किसीशोचमेंहैं कि यहदशाआकर्षणकीदशा से कुछ मिलतीहुई होतीहै और दूसरे भागकेकामसे जो कुछ होरहा है उसको सुनते तो जाते हैं परन्तु कुछबिचार उसपर उससमय नहीं होता और जब वह दशा चिंताकी होती है तो जोकुछहुआ है उसका अकस्मात् बिचार आजाता है और दो प्रकारके ज्ञानके इकट्ठाहोजाने के कारण गत वृत्तान्त को भविष्य समझलेते हैं यहभी होसक्ताहै कि ब्रह्मांडके एकभागके द्वाराहमपर गुप्तदर्शन और भविष्य अवलोकनकी दशाहुईहो॥ मुझको यह अहङ्कारनहींहै कि इसविषयके उपजने का कारण मैंने बिल्कुल वर्णन करदियाहै मैं एक अनुमान बताताहूं कि

होसक्ताहै कि यह बात ब्रह्मांडके दोनोंभागोंके कामके बराबर न होने के कारण होती हो और अवश्य है कि जो आकर्षण के लक्षणोंका खोज अच्छी तरह कियाजावे तो यह बात अच्छी तरह साफ़होजावे ॥

मैंनेअबतक एकलक्षणकाहाल अच्छीतरह वर्णननहींकियाहै और वहयहहै कि शरीरके एकजोड़काचेत किसीदूसरे जोड़को बदलजाता है यहबाततो मैंकहचुकाहूंकिगुप्त दर्शककीआंखेंचाहे बंदहोतीहैं परन्तु और किसीमार्गसेउसके ब्रह्मांडतक रोशनीकी लपटें पहुंचतीहैं मैंने यहभी वर्णनकिया है कि बहुधा गुप्तदर्शक किसीचीज़को अच्छीतरहदेखनेकेलियेअपने शिरपर रखलेताहै परन्तु बहुधा यह भी होताहै कि उसकी मुख्य अवलोकन की शक्ति नेत्रज्योति से भिन्न किसी मुख्यजोड़ में उत्पन्न होजाती है बहुधा ऐसा देखागया है कि अवलोकन शक्ति पक्काशय या उँगलियों के सिरों या शिरकीपीठ या माथे या शिरकीचांदमें उत्पन्नहोजातीहैं और मैंने एकविद्वान् से सुनाहै कि एकधारक की अवलोकनशक्ति उसके पांव के तलुवेमें प्रकटहुई जो पुस्तकें आकर्षण की विद्या के विषयमें हैं उनमें ऐसे वर्णन भरेहुये हैं औरशिर और हाथ और पक्काशयमें बहुधा यहशक्ति पाईजाती है कारण इसका यह मालूमहोताहै कि शिर ब्रह्माण्ड के अति निकटहै और हाथमें इसकारण यहशक्ति प्रकटहोतीहै कि जिन रगोंसे त्वचा का चेतहोताहै उनका काम बहुत तेज होजाता है और कोष्ठमें इसकारण कि वहां एकगुच्छा ऐसीरगोंकाहै जिन के सबबसे चैतैकत्व प्राप्त होती है इसमें किसीतरह का संदेह नहींहै कि यह लक्षण अवश्य प्रकटहोते हैं और बहुत दृष्टान्त देने कुछ अवश्यनहीं हर धारक में यह बात देखी जातीहै कि किसी न किसीतरह चाहे उसकी आंखेंबन्दहोतीहैं परन्तु चीज़ों

का रंग उसको दिखाई देताहै सुनने के चेत के बदलने का मैं पहिले वर्णन करचुकाहूं तथाच मैंने वर्णनकियाहै कि जब (क) से दीखता है तो वह कोई शब्दनहीं सुनता है जबतक कि उस की उँगलियों के शिरों से मुंह न लगाया जाय यह बात मैंने आप देखी है और मुझे विश्वास है कि जो उसदशा में उसके कानके अन्दर पिस्तौल छोड़ाजावे तो वह उसका शब्द कभी नहीं सुनेगा॥

ऐसे वृत्तान्तों का लेख वर्त्तमान है कि स्वाद की चेत बरन सूंघने की शक्ति पक्काशय में बदलगई है बाक़ी स्पर्श शक्ति की यहदशा है कि जो शरीर के हरजोड़ में यह चेत वर्त्तमान है इसलिये कभी नहीं बदलसक्ती॥

इस चैतन्यशक्ति के बदलने का यह कारण नहींहै कि उक्त बाह्य चैतन्यता अपने निजजोड़ से दूसरे जोड़में बदलजातीहै परन्तु यह कारणहै कि जिसजोड़में यह चेतना उत्पन्नहोती है उसजोड़कीरगें मानों इसबात का द्वाराहोजातीहैं कि वह मूल जिसके द्वारा यह लक्षण होता है ब्रह्माण्ड तक पहुंचे सो उंग-लियां यहकाम नहीं करती हैं कि प्रकाश की लपटों को इकट्ठा करके उनको गर्भाशय पर्य्यन्त जमावें और इल्म मनाज़िर वसराया * के अनुसार ब्रह्मांड तक उसको पहुंचावें बरन उँग-लियों की रगें उसमूल को सीधा भेजेतक पहुंचा देती हैं और भेजेमें नक्श बनजाताहै हरतरहसे जहांतक मेरी मति पहुंचती है मुझको यहीरीति मालूम होतीहै॥

एकविचित्र लक्षणयहहै कि जो धारकको प्रकटमें दुःखहो वह कारकको मालूमहोतीहै जैसे जो धारकके शिरमें या दांत में पीड़ाहो या उसको जोड़ोंकीपीड़ा हो तो बहुधा ऐसाहोताहै

* वह विद्या जिसमें दृश्यमान पदार्थों का वर्णन हो॥

कि कारकको अपनेशरीरपर यहदुःख मालूमहोतेहैं चाहे उसके पहिलेसे यहबात मालूम न हो कि धारकको इसतरहका दुःख है और कभी २ ऐसाहोताहै कि जब कारकको यहदुःखमालूम होताहै तो उसीसमय धारकको आरामहोजाताहै मुझको यह विश्वास अच्छीतरहनहींहै कि येदोनों लक्षण इसतरह आपस में संयोगरखतेहैं जैसारोग और रोगीसे संयोगहोताहै क्योंकि आकर्षण क्रिया के कारण इसतरह भी धारक को दुःख जाता रहताहै कि कारक को वह दुःख मालूम न हो और ऐसा भी होताहै कि कारकको दुःख मालूमहो और धारक को आराम कुछ भी मालूम न हो परन्तु यह बात बहुधा होती है कि जब कारक इच्छापूर्वक इसलिये क्रिया न करे कि धारक का दुःख दूरहोवेतो मानो वह पीड़ा कारकको उड़कर लगजातीहै और बहुधा ऐसा भी होताहै कि धारक का दुःख दूर भी होजाताहै परन्तु इसकारण नहीं कि कारकके शरीरपर बदलजाती बरन केवल इसकारण कि धारकपर आकर्षण की क्रियाकीजातीहै॥

मुझको आप एकबेर इसबातकी परीक्षाहुईहै कि कारकको दुःखहोसक्ताहै उसपरीक्षा में मैं आप धारकथा मुझको कईवर्ष से यह रोग था कि निर्बलता बहुत थी और जोड़ शोथ करके पीड़ाकरते थे थोड़े समय से यहपीड़ा बहुत दूर होगई है अब केवल उसदशामेंही प्रकटहोतीहै कि जब मैं बहुतचलूं या बहुत देरतक खड़ारहूं एकबेर ल्यूससाहब ने मेरेऊपर इस प्रयोजन से क्रियाकी कि लोगों को दिखावें कि वह अपने अधिकार से धारक के शरीर के पट्ठोंको बेकार करसक्तेथे उस समयतक मेरे ऊपर कभी ऐसीपरीक्षा नहींहुई थी और मेरा शरीर आकर्षण की क्रिया का कुछ थोड़ाही प्रभाव अंगीकार करता था और ल्यूससाहबको अपने स्वभावकी सम्पूर्णशक्ति लगानीपड़ी और

तब यहबात प्राप्तहुई कि मैं अपनीटांग फर्शपरसे नहींउठासका और उससमय उन्होंने मेरीटांग हाथों के हिलानेसे भी क्रिया की परन्तु इस इच्छासेनहीं कि मेरी पीड़ा दूरहो क्योंकि उस समय मैंने कुछ पीड़ाका हाल न कहा दूसरे दिन ल्यूस साहबको ऐसी निर्ब्बलता और शोथ और टांग और टखने में हुआ कि उनको लाचार पट्टीबांधनेपड़ी उन्होंने मुझसेकहा कि बहुधा उनकी ऐसीदशा होजाती है क्योंकि उनका स्वभावबहुत हलकाहै और आकर्षणक्रिया का प्रभाव जल्दी अंगीकार कर लेताहै परन्तु जो उनको मालूमहोता कि मेरे जोड़में ऐसारोग है तो वह ऐसाउपाय करलेते कि उनपर कुछदुःख न होता जो कुछ मैंने देखाहै उससे मुझे निश्चयहै कि यहसबबातें सचहैं॥

एकलक्षण यह भी होताहै कि जो किसीमनुष्यके किसीजोड़ में दुःखहो तो जो एक रूमाल या दस्ताना उस जोड़पर रख दियाजावे और कारक के पास भेज दियाजावे तो कारक को वह दुःखहोने लगता है मुझको इसकी परीक्षा आपनहींहुई है परन्तु ऐसे मनुष्य से यह हाल सुना है जिसके वर्णन का मुझे पूरा निश्चयहै इसकावृत्तान्त और अधिक उसअध्यायमें वर्णन कियाजावेगा जहां निर्ज्जीव वस्तुओंपर आकर्षण की क्रिया के कियेजाने का वर्णन होगा॥

कभी २ यहभी होताहै कि जो कारकको कुछरोग या दुःख हो और आरोग्य मनुष्यपर क्रियाकरे तो उसकी पीड़ा धारक पर बदलजातीहै हां यहबात बहुधा नहींहोतीहै क्योंकि सर्ब्ब प्रकार से यहरीति बँधीहुई है कि जबतक कारक आरोग्यनहो तबतक वह क्रिया नहींकिया करताहै परन्तु मैंने एकबेर देखा है कि कारकके शिरकीपीड़ा धारकपर बदलगई और दिनभर धारक के शिरमेंपीड़ारही और कारक के शिरकीपीड़ा बिल्कुल

दूरहोगई बहुत से दृष्टान्त ऐसेलिखेहुये वर्त्तमान हैं और इसी कारण यहरीति बांधीगई है कि जबतक कारक आरोग्य न हो तबतक वह क्रिया नहींकरता ॥

आगेकेपत्रमें मैं उनलक्षणों का वर्णन करूंगा जो ऐसीदशा में उपजसक्तेहैं कि निद्रा की दशा धारकपर न पहुंचे बरन वह जागतारहे कईलोग समझते हैं कि यह अवस्था आकर्षण की दशासे भिन्नहोतीहै इनक्रियाओंके नाम भी अलग २ रक्खेहुये हैं उसपत्रमें मैं वह युक्ति भी वर्णनकरूंगा जिससे ब्रीडसाहब एकआकर्षण के निद्राकी मुख्यदशा उपजातेहैं ॥
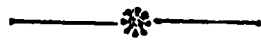
नवां पत्र ॥

मैं ऊपर कहचुकाहूं कि बहुतसे विचित्र लक्षण मनुष्यों पर उनकी मुख्यदशा और जागरनमें दिन २ इसतरह पैदाहोसक्ते हैं और दिन २ उपजायेजातेहैं कि उनपर आकर्षणकी प्रसिद्ध क्रिया इसतरह पर कीजावे कि उनकीओर दृष्टि जमाकर देखा जावे या हाथोंसे इसतरह पर क्रिया कीजावे कि निद्रा न आवे या कारक निद्राका उपजाना न चाहे बरन धारक को जाग्रत अवस्थामेंरहनेदे यहलक्षण बहुधाइसतरहकेहोते हैंकि कारकको धारक के चलने ठहरने और इन्द्रियों और चेतों और इच्छा पर अधिकारहोताहै यहां उनकीतक़रार की आवश्यकता नहींहै क्योंकि पहिले तो हरएकका उचितस्थानपर पृथक२ वर्णनहो-चुका हो और दूसरे इसलिये कि अबमैं एकऔर युक्तिका वर्णन करताहूं जिससेवह उत्पन्नहोसक्ते हैं केवलआपकोइतनीबातयाद दिलानीअवश्य हैकि यहलक्षण दोनों दशाओंमें प्रसिद्धयुक्तिसे उत्पन्न होसक्ते हैं अर्थात् निद्रावस्था में भी और जाग्रतअवस्था

मेंभीऔर मैंनेदो अवस्थाओं में इमप्रसिद्ध युक्तिसे यह लक्षण उपजाये हैंपरन्तु यहलक्षण इसतरह से भी उपजसक्ते हैं कि कारक के स्वभाव का प्रभाव धारकपर नहो धारक का अपने स्वभाव की अमल उसपरहो पहिले यहबात वर्णन करूंगा कि जो लक्षण डाक्टर जटलिंगसाहब जाग्रत अवस्था में उत्पन्न करते हैं उन लक्षणों में और उन लक्षणोंमें जोल्यूससाहब इसी दशामें उपजाते हैं कुछ भी अन्तर नहीं है यह बात निस्सन्देह होतीहै कि डाक्टर डारलिंगसाहब किसीसमय कोईऐसे लक्षण उत्पन्नकरते हैं कि किसीसमय ल्यूसस ाहब उनको नहींउपजा सक्तेहैं परन्तु वह अजमावें तो अवश्य उत्पन्न करसक्ते हैं और इसी तरह कईलक्षण ल्यूससाहब किसी समय ऐसे उत्पन्नकर-सक्ते हैं कि उनकी परीक्षा डाक्टर डारलिंगसाहब नहीं करते हैं जो वह अजमाते तो पैदाकरसक्ते और वास्तव में कईदशाओं में उन्होंने उत्पन्नकिये हैं सो अबतक मुझ को इतनाही अन्तर मालूम हुआहै और इसअन्तर का कारण यह मालूम होता है कि समय निबंधित होताहै और कईबेर एक मुख्यलक्षण ऐसी सुन्दरता के साथ प्रकट होताहै कि उसकी दिखाई बहुतदेरतक कीजातीहै और अन्यपरीक्षाओं के लिये समय नहींरहता परंतु मैं ने कभी कोईलक्षण ऐसाहोते नहींदेखाहै जो किसी नकिसी समय धारक की जाग्रत अवस्था में दोनों नहीं उत्पन्नकरसक्ते हैं—डाक्टर डारलिंगसाहब की यह युक्तिहै कि एक मनुष्य के बायेंहाथ की हथेलीपर एक झूठा सिक्का या एकजस्त की चीज़ या दोनों ओरसे कुबकी हुईहो और उसके बीच में एक तांबेका चक्कर छोटासा जमाहुआ हो रखदेतेहैं और जोमनुष्यपरीक्षापर प्रसन्नहो उसको कहतेहैं कि दश या पन्द्रह मिनट तक उसकी ओर देखतारहै परन्तु वहमनुष्य मन को जमाकर देखता रहे

और बिल्कुल् चुपरहे और क्रियाके होनेको अपने मनसे नरोके-
डाक्टर डारलिंगसाहब कहते हैं कि यहयुक्ति हमने छिपानहीं
रक्खीहै डाक्टर डारलिंगसाहब यहबात नहींकहते हैं कि जो
मनुष्य इच्छापूर्वक क्रियाकेहोने को रोकतेहैं उनपर हम प्रभाव
करसक्ते हैं या उनपर जो सिक्केकी तरफ़ नहींदेखते हैं बरनजो
उनके चहूंओर मनुष्य बैठेहैं उनको देखतेहैं न उनपर जोसिक्के
की ओर देखनेके बदले अपनी आंखें बंदकरलेते हैं वास्तव में
ऐसे मनुष्योंपर क्रिया नहीं होती है ॥

जो मनुष्य सिक्केकी ओर दिल लगाकर और दृष्टिजमाकर
देखतेहैं और बाक़ी सबनियमों का भी ध्यानरखते हैं उनमें से
बहुधा डाक्टर डारलिंगसाहबकी इच्छाके अनुकूल होजाते हैं
पहिले उक्त डाक्टरसाहब इसबात को पूछते हैं कि उन मनुष्यों
मेंसेकिसपर प्रभावहुआहै और इसबातकेमालूमकरनेकी युक्ति
यहहै कि एक २ मनुष्य से वह कहते हैं कि अपनी आंखें बंद
करलो और वह उसके चालको अपनी उँगली से छूतेहैं और
आंखोंकेऊपर हाथलेजातेहैं पलकों को थोड़ाएकतरफको हाथको
तेज़हिलाकर दबादेते हैं और फिर उसमनुष्य से कहते हैं कि
तुम अपनी आंखोंको खोलनहींसक्के हो कदाचित् उनकी आज्ञा
होने पर भी वह मनुष्य आंखखोलसके तो वह उसका एकहाथ
पकड़कर कहते हैं कि हमारी ओर देखो और आपभी उसकी
ओर दृष्टिजमाकर देखते हैं और फिर वहीक्रिया करते हैं जो
पहिलेकीथी यदि दूसरीबेरमें भी धारक नेत्र खोलसके तो उस
समय उसपर फिर क्रिया नहीं करते और दूसरे मनुष्य को
अजमाते हैं मेरेऊपर उनका अधिकार दूसरीबेर में होगयाथा
अर्थात् मुझको नेत्रोंके खोलने की शक्ति नहीं रही थी यह बात
देखकर उन्होंने मुझसेकहा कि अब तुमआंख खोलसकोगे और

तुरन्त मुझको आंखके खोलनेकी शक्ति होगई मैंने मुख्य करके एकान्त में देखाहै कि बहुत मनुष्योंपर ऐसाप्रभाव होजाता है और जो थोड़े आदमी भी इकट्ठेहों तो उनमें से अवश्य एक न एक पर क्रिया होजातीहै जिनके ऊपर क्रियाका होना मालूम होताहै उनसे डाक्टरसाहब कहतेहैं कि ठहरेरहो और अपनी आंखें बन्दकियेरहो बाक़ियों को बिदाकरदेते हैं॥

आप एक मनुष्यको लेकर वह परीक्षाकरते हैं कि वहप्रभाव उसस्थान पर स्थिर है या नहीं और यह आज़मायश इसतरह होजातीहै कि उसको आंखोंके खोलनेका बल नहीं रहता जब उन्होंने देखलिया कि आंखें नहीं खोलसक्ताहै तो अपने हाथों से उसके दोनोंहोंठ दबादेत हैं और कल्लेके नीच कुछ हाथ को चलाकर कहते हैं कि अब तुम मुख नहीं खोलसकोगे बहुधा ऐसाही होताहै कि वहमनुष्य मुखनहीं खोलसक्ता है फिर वहां कहते हैं कि अपना हाथ फैलादो और उसके दोनों हाथों की हथेलियां मिलादेते हैं और थोड़ा २ दबाकर कहते हैं कि अब तुम हथलियां अलग नहीं करसक्तेहो सो उनके अलगकरने की शक्ति उसमनुष्य को नहींरहतीहै या वह यहकरते हैं कि धारक से कहते हैं कि अपने शिर पर अपने हाथ रखदो और फिर कहदेत हैं कि अब तुम अपनेहाथ शिरपर से नहीं उठासक्तेहो तथाच वहमनुष्य उनको नहींउठासक्ता इन सब रूपों में जब उक्त डाक्टरसाहब कहते हैं कि अब तुम यहबात करसकोगे याकेवल (अच्छा) कहते हैं तो फिर उसका अलग करने की शक्ति होजाती है॥

इसीप्रकार डाक्टर डारलिंगसाहब यह प्रभाव दिखाते हैं कि धारकको चैतन्यशक्ति में अन्तर आजाताहै जैसे जो वहकहें कि तुम हाथ या पावँ नहीं हिलासक्तेहो तो धारक नहींहिला

सक्ताहै और उसकी चैतन्यता में इतना अन्तर आजाता है कि जो उसको बहुत पीड़ाभी दोजावे तो उसको मालूम नहींहोती या जो ठंढी चीज हो तो डाक्टरसाहब के कहने से धारक को बहुत गरम मालूम होती है या उनके कहनेसे धारकको शीत बहुत मालूम होतीहै वा उसको पानीका स्वाद दूधका या बरांडी शराबका सा मालूम होताहै दूसरे भागमें इसके कुछ दृष्टान्त लिखे जावेंगे ॥

डाक्टर डारलिंगसाहब को धारक के उद्योगपर भी अधिकार होता है अर्थात् जो वहकहें कि एक मिनट में सोजाओ या गाओ तो सोजाताहै या गानेलगता है और एक रूमाल फर्श पर रखदें और उसको कहें कि इसपरसे तुम कूदनहीं सक्तेहो तो कभी नहीं कूदसक्ताहै उक्त डाक्टरसाहब को धारकके स्मरणपर भी अधिकार होता है तथाच धारक उनकी आज्ञा से अपना नाम या और किसी मनुष्यका नाम भूलजाताहै बरन वर्णमाला का एक एक अक्षर बिस्मरण होजाताहै ॥

इसके सिवा उक्त डाक्टरसाहब को यह अधिकार होताहै कि जिसवस्तु को चाहें वैसाही धारक समझलो जैसे घड़ी को नासदान या एक कुरसी को कुत्ता समझले या जहां कुछ भी वस्तु नहींहो वहां जो वहचाहें वहचीज़ धारकदेखले जैसेखाली मकानमें जहां चिड़िया नहींहैं बहां चिड़िया देखनेलगे यहपूरा धोखा होजाताहै इसके सिवा डाक्टरसाहब को यह अधिकार है कि धारक आपको उनकी इच्छानुसार कोई और अन्यमनुष्य समझले जैसे कोई नव्वाब या वज़ीर या महाराजा और वैसीही उनलोगों की नक़ल करता है और डाक्टरसाहब चाहें तो किसी विद्याके विषय को पढ़ाने लगताहै या किसी का अधिपति बनजाताहै और कल्पित सेनासेक़वायदलेनेलगताहै ॥

इन सबबातों के सिवा उक्त डाक्टरसाहब को धारक की खिँचावटों पर अधिकार होताहै जैसे जो धारक हँसता हो तो उसकी हँसी तुरन्त बंदकरदेते हैं और उसको मौनी याचिंतित बनादेते हैं अथवा उसको अतिप्रसन्न करदेतेहैं और बेतिहाशा हँसताजाताहै और जो उससे पूछाजावे तो बिल्कुल् हँसने का कारण नहीं बतासक्ताहै॥

मैंने इन सब अधिकारों की क्रिया सैकरोंतौरपर होतेदेखा है बहुधा यहप्रभाव तुरन्त होजाताहै और केवल कारककेकहने से तुरन्त जातारहताहै और इसक्रिया में कोई बात छिपीनहीं यहलक्षण इसतरह उत्पन्न होतेहैं कि मानों दैविकहैं और जो मनुष्य चाहे अज मासक्ता है और करसक्ता है प्रायः हरमनुष्य प्रारम्भ में डाक्टर डारलिंगसाहब के बराबर क्रिया न करसके परन्तु धीर्य और सन्तोपके साथहर धारकको अच्छी तरह यह अधिकार प्राप्त होसक्ताहै और मुझको आप ऐसे लक्षणोंके उप जाने में कुछ कठिनता नहीं हुई है यदि ढूंढ़ें तो अच्छे धारक बहुत मिलते हैं अर्थात् ऐसे धारक जिनपर क्रिया का प्रभाव अच्छी तरहहो मेरेमकान-पर डाक्टर डारलिंग साहबने अपनी क्रियाके लक्षण तीनबेर बहुत अच्छी तरह से दिखाये एक तो ऐसा मनुष्यथा कि जिसको उन्होंने कभी पहिले नहीं देखा था और उसपर उनकी क्रिया बहुत अच्छी तरहसे हुई दूसरे मनुष्य पर भी उनकी क्रिया अच्छी हुई और तीसरे मनुष्य पर भी अच्छीक्रिया हुई इस तीसरे मनुष्यपर कभी पहिले किसी ने क्रिया नहींकी थी इन मनुष्योंका विस्तृत वृत्तान्त दूसरे भाग में वर्णन किया जावेगा मैं क्रिया के हरएक खण्डकी साक्षी दे सक्ता हूं और मैं असंख्य दृष्टान्त वर्णन कर सक्ता हूं परन्तु अधिक दृष्टांतों का लिखना वृथाहै जिस २ ने क्रिया को होते

देखा है उन को उसके सच होनेमें कुछ भी सन्देह नहीं रहा ॥
यदि इन लक्षणों के उपजने का कारण पूछा जावे तोपहिले यह बात ध्यान रखनी चाहिये कि क्रिया के चल जाने के लिये यह बात पहिले अवश्यहै कि धारकका मनक्रिया का अंगीकार करने वालाहो दूसरे यह कि एक मुख्य दशा धारक पर होनी चाहिये कि क्रिया का प्रभाव हो डाक्टरडारलिंग साहब की क्रियामें धारक पर धारक केही कामसे प्राप्तहोतीहै परन्तु ध्यान रखना चाहिये किधारकका अपना प्रभावउसके शरीरपर केवल इतनाही होताहै कि उसकी प्रकृतिइकट्ठी होजातीहै और प्रकृति के जमने के कारण एक ऐसी दशा होजाती है कि फिर जो क्रिया की जातीहै तो उसके चल जानेमें सहायता होजातीहै ॥
ल्यूस साहबकी क्रिया इसतरह होतीहै कि उक्तसाहब केवल पांच मिनट तक मनको जमाकर धारककी ओर देखते हैं और धारक यातो उनकी ओर देखताहै या किसी और चीज़को देखताहै जो उनकी ओरहै बाकी नियम वही हैं जो डाक्टरडारलिंग साहबकी क्रियामें होते हैं देखने के पीछे ल्यूस साहब कई और बातें करते हैं जिनसे धारकपर अच्छीतरह प्रभाव होजाता है ॥
मैंनेऊपर वर्णन कियाहै कि दोनों युक्तियोंसे एकसीही दशा होतीहै इस वर्णनसे यहसमझना चाहिये कि एकसी दशा केवल इस कारण होतीहै कि धारक को कारक पर अधिकार होता है परन्तु मेरे ध्यान में यह बातहै कि दोनों अवस्थाओं में वास्तव करके कुछअंतरअवश्य होगा क्योंकि एकदशामेंधारककी अपनी जिनकी क्रिया अधिक होतीहै और दूसरी दशामें एक अन्यमनुष्यका अर्थात् कारकका ज़ोर उसपर पहुंचताहै मुझको इसबात की परीक्षा नहीं हुई है कि धारक पर इन दोनोंमें से किसी एक युक्तिसे दूसरी युक्तिसेअधिक प्रभाव होताहै यानहीं किसीसमय

एक युक्तिका अधिक प्रभाव मालूम होताहै किसी समय दूसरी युक्ति का परन्तु जहां तक मुझ को परीक्षा हुई है अधिक प्रभाव हानेका यह कारण मालूम होताहै कि जब नियम अच्छी तरह पूरे होतेहैं तो प्रबल प्रभाव होताहै मुझको अच्छी तरह विश्वास है कि जो आठ दश मनुष्य कारकके सामने बैठें और शुद्धमनसे नियम पूरे करें तो दानों युक्तियों से सात या आठ मनुष्यों पर उनमें से प्रभाव हो जायेगा और जो अधिक समय व्यय किया जावे तो सम्पूर्ण मनुष्यों पर कुछ न कुछ प्रभावहोता जावेगा॥

जो मनुष्य वैद्यक जानतेहैं उनको प्रकट होगा कि यहमनुष्य लक्षण जिनका वर्णन होरहा है और जो जाग्रत अवस्था में उपजतेहैं शिक्षापर घटितहैं शिक्षाके प्रभावको बहुत मनुष्योंने देखाहै परन्तु इस बातका सूचित करना कि शिक्षा का प्रभाव सुगमतासे और बहुत मनुष्यों पर होसक्ता है यहांतक कि लोगों को उसपर विश्वास होजावे वर्त्तमान समय प्राण आकर्षणक्रिया की विद्याके अभ्यासियों के लिये बाकीथा॥

यदि हमशिक्षाकेजोरसे आकर्षणकाप्रभाव उपजाना चाहें तो अवश्यहै कि जबतक एक ऐसेमनुष्यपर क्रिया नकीजावे कि जिस का मन प्रभाव बहुत स्वीकार करताहै पूरा प्रभाव न होगा कई मनुष्य ऐसे होते हैं कि जो उनपर एक बेर क्रिया कीजावे तो फिर पीछभी उस क्रियाका प्रभाव उनपर किसी सामग्री बिना होसक्ता है मुझको इस बात की परीक्षा नहीं हुई है कि किसी मनुष्य पर पहलेही बेर प्रारम्भ की प्रसिद्ध रीति विना केवल शिक्षा का अमल होसक्ता है या नहीं परन्तु मेरीमति यहहै कि अवश्य है कि कई मनुष्यों पर इसतरहकी क्रिया होजावे परन्तु बहुधा प्रारंभकी प्रसिद्ध युक्तिकी पहलीबेर आवश्यकता होती है चाहे फिर उसको आवश्यकता नहीं रहती॥

जिस कारण वह दशा उत्पन्न होजातीहै कि जिसमें शिक्षा का प्रभाव होताहै उसका मूल और आकर्षणका मूल जिसका प्रभाव प्रसिद्ध युक्तिसे है एक मूल है क्योंकि जो शिक्षाका जोर अधिक देरतक कियाजावे तो आकर्षणका स्वप्न उपजताहै और उस निद्राके सम्पूर्ण लक्षण प्रतीत होतेहैं इस बातका विस्तार आगे लिखा जावेगा॥

डाक्टर डारलिंग साहबकी युक्तिमें यह बातहै कि धारकका अपने शरीरपर इस रीतिसे कि एक वस्तुकीओर दृष्टि जमाकर देखताहै अधिक बेग होता है--हम जानते हैं कि ब्रीडसाहब की युक्तिमें यदि धारक एक वस्तुकी ओर इस तरहदेखे कि उसकी आंखोंसे ऊपर और थोड़ा सामने रक्खी हुईहो तोनिद्रा भी पैदा होजातीहै सो जो कि इस तरह देखनेस अधिक प्रभाव होताहै तो प्रकट है कि कम प्रभाव भी होताहै तो मालूम कि डाक्टर डारलिंग साहबकी वास्तव में प्रसिद्ध युक्तिसे भिन्न नहींहै परन्तु अंतरइतनाहै किडाक्टरडारलिंगसाहब और ब्रीडसाहबकीयुक्ति में कारकका अपनाजीवका बल धारकपर नहीं पहुंचता है और अन्य साधारण युक्तिमें कारकका बल धारकपर पड़ताहै परन्तु युक्तिमें वहींतक अंतरहै कि जबतक धारक के मन को क्रिया के स्वीकार होनेकेयोग्य बनाया जावेगा क्योंकि डाक्टर डारलिंग साहबभी अपनी युक्तिके प्रभावको अधिक करनेकेलिये धारक को छूतेभीहैं और उसकीओर दृष्टि जमाकर देखते भी हैं बरन हाथोंमेंसे भी प्रसिद्ध युक्तिके सदृश क्रियाकरते हैं॥

अनुमान से आकर्षण क्रिया के प्रभाव होनेका कारण यह मालूम होताहै कि जो मनुष्योंके नाड़ियोंके निबंध या आकर्षण या जीवकी दशा होतीहै उसदशा में क्रिया करनेके कारण अंतर आजाताहै सो जब यह बात ठहरे तो यह बात ध्यानके योग्यहै

कि यह अंतर किस तौरपर होताहै यदि मनुष्यकी मुख्य शक्ति में इस तरह पर अंतर जावे तो उसको अपने कामसे वह शक्ति बटकर चाहे शिरकी ओर वा त्वचा पर या ब्रह्माण्डमें या किसी और जोड़में अधिकहोजावे और उसीकेअनुसार कहींकमहोजावे तो वज़नकीबराबरीमें तो अवश्य अंतरआजाताहै परन्तु पूर्णबल अधिकनहीं होताहै परन्तु जोअन्य मनुष्यकाबल किसी मनुष्यके ब्रह्मांडपरडालाजावे या किसी और जोड़पर डालाजावे तो वज़न की बराबरीमें तो अंतर अवश्यआताहै परन्तु जो औरजोड़ोंसे उस मुख्य जोड़में अधिक बल होताहै नहींतो अन्य जोड़ोंमें जितना बल पहलेथा वहस्थिर रहताहै इससे मालूमहुआ कि इन दोनों युक्तियोंसे एकसी अवस्था नहींउपजतीहै सिवाय इसके कि दोनों अवस्थाओंमें शिक्षाका प्रभाव मूलके बदलेहोताहै औरआगेदेखा जावेगा कि जो निद्रा धारक पर अपनी क्रियासे ब्रीडसाहबकी युक्तिसे होताहै उसके लक्षण और आकर्षणकी निद्रा के लक्षण में बड़ा अंतर होताहै ॥

जो लक्षण शिक्षाकेबलसे और प्रसिद्ध आकर्षण की युक्तिसे प्रतीत होतेहैं वह वास्तवमें एकहोते हैं परन्तु अवश्यहै कि जो धारककी दशा एक युक्तिके कारण होती है वह अवस्था उससे पृथक्होतीहै जो दूसरी युक्तिसे उत्पन्न होतीहै और वह अंतर निद्रावस्था और बड़े दरजोंमें अधिकप्रकटहोताहै जबधारकपर वह अवस्था बीते जिसका ऊपर वर्णन किया गया तो उसपर कारक का अधिकार होता है कारक की सैनका उस पर ऐसा बलहोता है कि उस सैनका रोकना उसकेलिये असंभवित होताहै तो जो उससे कारक कहे कि अबतुम अमुक कार्यनहीं करसक्तेहो तो तुरंत वह अपने शरीर में उस कामके करने की शक्ति नहीं पाता है उसके शरीर के पट्ठे इतने निरर्थ होते हैं

कि जहांतक उस मुख्यकामके करनेका बल नरहे उससेअधिक ओला मारेहुये नहींहोते यदि धारककी मुट्ठी बन्दहो और कोई वस्तुहाथमेंहो और उससे कहाजावे कि तुममुट्ठी खोलनहींसक्के हो और उसचीज़कोहाथसे गिरानहींसक्केहो तोवह अपनीभुजा को तो उठासकेगा और जिसतरफ़चाहे हिलासकेगा परन्तुके-वल इतनाबल उसकी उंगुलियोंकी रगोंमें न होगा कि वहमुट्ठी खोलसके या जो उससे कहाजावे कि तुमअपनानाम नहींबता सको तो केवल इसीविषयमें उसकास्मरण नष्टहोजाताहै कुछ यहबात नहींहोती है कि वह बिल्कुल बोलसके या किसी और मनुष्यका नाम बता न सके जब वह जल पीताहै और उसको बहुततेज़ बरांडीशराब का स्वाद मालूमहोताहै तो कारणयह है कि उसकास्वादमुख्यशिक्षित स्वादसे दबजाताहै जिसतरह कि उस अवस्थामें कि मुखमें कुछ न हो और मनुष्यको बरांडीश-राब या और किसी चीज़का स्वाद याद आजाताहै इसीतरह से जबधारकको बरांडीशराब के स्वादकी शिक्षाकीजावे तो वह अपने मुख्यस्वादकोभूलकर बरांडीकास्वाद लेनेलगता है जैसा कि मैं ऊपर वर्णन करचुकाहूं शिक्षाके प्रभावका हाल समय से लोगोंको मालूमहै परन्तु अबतक लोगजानतेथे कि कभी२ ऐसा होताहै और निस्सन्देह उससमयमें ऐसाप्रभाव प्रकट होताथा कि जब कोईमनुष्य अपनेआप प्रभाव की स्वीकृत अवस्था में पड़ जाताथा॥

परन्तु यहबात कईदिनसे मालूमहुई है कि शिक्षाका प्रभाव बहुत मनुष्यों पर कई मिनट में जब कारक चाहे होजाता है और अवश्य है कि सन्तोष और धैर्य्य के द्वारा सर्व्व मनुष्यों पर यह दशापैदाहोसक्तीहै इसकेहोने से एक और प्रमाण इस बातका है जो मैं ऊपर वर्णन करचुका हूं कि जो बड़े२ आक-

षणक्रिया के लक्षण हैं वह अपने आप पैदा होजाते हैं क्योंकि सम्पूर्णलक्षण दैविक कारणों पर घटित हैं ऐसा मालूमहोताहै कि बहुत ऐसे मनुष्यों पर आकर्षण क्रियाके अंगीकार करने वाली दशा जाग्रत अवस्थामें उत्पन्न होजाती है जिनपर आकर्षण की निद्रा बिना परिश्रम नहीं उत्पन्न हो सक्ती है जो यह बात ठीक हो डाक्टर डारलिंग साहब और अन्य कारकों की युक्ति जो उनकी युक्तिसे मिलती हुई है बहुत प्रतिष्ठा के योग्य है क्योंकि यह बात बहुत प्रबल है कि आकर्षण की क्रिया का प्रभाव रोगके दूरहोने के लिये इसबात पर घटितहै कि धारक का मन क्रियाके लक्षणों का अंगीकार करने वाला होजाता है और यह उसके मनकी अवस्था निद्रा की दशा में होसक्ती है औरउस दशामें भी कि वह मनुष्य चैतन्य अवस्था में हो और जागता हो इस अनुमानसे यहबात स्पष्ट होसक्ती है कि आकर्षण के बहुत से इलाज उस दशा में होसक्ते हैं कि धारक पर निद्रावस्थानहो और न कुछक्रियाके और चिह्न प्रकटहों रोगी पर केवल इतनाही प्रभाव होताहै कि उसका मनप्रभाव अंगीकारकरनेलगताहै और कुछप्रभावनहीं होताहै जबहम देखते हैं कि एक मिनट के समय में ऐसे मनुष्य अच्छी तरह सोजाते हैं जो एकमिनट पहिले हस रहेथे और जो हरतरह नींदके आने को रोकतेथे जबहम देखते हैं कि एक मनुष्य इतने होशमें है कि हर युक्ति से परीक्षाओं का करना आप बताता है और थोड़ी देरमें एक उसका भुजा ऐसा झोला मारा हुआहोजाता है कि जो उसको बहुत पीड़ाभी दीजावे तो उसको मालूम नहीं होती जबहम आप ऐसे लक्षण प्रकट कर सक्ते हैं तथा च मैंने आप कियेहैं तो इसमें संदेह नहीं हो सक्ता कि आकर्षण की क्रिया अति लाभ दायक है ॥

अबमैं ब्रीडसाहब की युक्तिका बर्णन करताहूं मैंनेइनसाहब को क्रिया करते आप देखाहै और जो कुछ वह बर्णन करतेहैं मैं उसको आप सच्चा कर सक्ताहूं ब्रीड साहब की युक्ति यह है कि वहएक मनुष्यकी आंखोंकी कुछ ऊपरकी ओर और माथे के कुछऊंचे तरफ़ एकचीज़ रखदेतेहैं जैसेएक सलाई रखदेते हैं और उसको कहते हैं कि उसकी ओर देखतारहै मालूम होता है कि इसतरह की तनीहुई दृष्टिके देखनेसे जो आकर्षण की शक्ति उस मनुष्य में होती है उसकी वज़नकी बराबरीमें अन्तर अवश्य होता है थोड़ेसे समयमें बहुधा उनमनुष्यों मेंसे जिनपर क्रिया कीजाती है सो जाते हैं मुझको अपने पर परीक्षा हुई है कि इस युक्ति से उत्तम और कोईयुक्ति इसबात की नहींहै कि जब हमें नींद नहीं आतीहै तो नींद आजावे कई मनुष्यों के लिये किसी पुस्तकका पढ़ना मुख्यकरके ऐसी पुस्तकका पाठ करना जिसका विषय मनरंजन नहीं है एक निद्राका प्रभाव रखता है और निद्राके सिवाय ऐसे पुस्तकों के अधिक गूढ़ शब्दों के अर्थ निकालने में जो बिचार करना अवश्य है और मनको जमाना पड़ता है उसका प्रभाव यह होता है कि एक प्रकार की निद्रा जैसे आकर्षण की निद्रा उत्पन्न होजाती है परन्तु जिन मनुष्योंका ऐसे पुस्तकों के पढ़नेसे यह हालहोताहै उनको उचितहै कि एक कमरे में रोशनी थोड़ी दूरीपर रखकर एक रोशन चीज़ अपने आंखोंके ऊपरकीओरइसतरहरक्खें कि उसके देखनेकेलिये आंखोंको ऐसा मानना अवश्यहै जैसे कोई हाल देखता हो तो अवश्यहै कि उसको नींदलानेके लिये ऐसे विषयों के निर्मित ग्रन्थों के पढ़नेकी आवश्यकता न होगी इस युक्तिसे एकआनन्ददायी और मीठी निद्राआने लगतीहै वास्तव में निद्राका प्रभाव ऐसी दशामें अति उत्तम होताहै और निद्रा

भी पूरी और आनन्द देनेवाली और निर्विघ्न होती है इसस्वप्न का यह उदाहरण है कि जैसे कोई मनुष्य बहुत परिश्रमकरके और थककर कहीं बैठजावे औरउसपर बलवान् निद्रा आजावे और वह सो रहे॥

ब्रीड साहब के धारक निस्सन्देह होजाते हैं परन्तु जो एक परीक्षा कीजावे तो मालूम होता है कि वह आकर्षणकी निद्रा में हैं अवश्यहै कि जब हम आप इसयुक्तिसे सोरहैं जो ऊपर र्णन हुये अर्थात् किसी रौशनचीज को अपनी आंखोंके ऊपर की ओर रखकर देखकर सोजावें तो जोकोई मनुष्य आज़मावे तो हम पर आकर्षण स्वप्न की अवस्था मालूम हो आकर्षण निद्रा और मनुष्य की साधारण निद्रामें कुछ यहअन्तर नहीं होता कि शरीरको आकर्षणकी निद्रासे कुछ और आरामहोता है और साधारण निद्रासे कुछ और आनन्दहोता है वास्तव में अन्तरयहहै कि आकर्षणकी निद्रामें अन्तरेन्द्रिय जागती हैं और शरीर और बाह्येंद्रिय सोजाती हैं और भूलमें डूबजाती हैं ब्रीड-साहबकी युक्तिसे जो निद्रा उपजतीहै और उसनिद्रा में लक्षण प्रतीतहोते हैं उनलक्षणोंका फ़िर वर्णन करना कुछ अवश्यनहीं है एकमुख्य नियमतक यहलक्षण ऐसेहीहोते हैं तो प्रसिद्धआक-र्षणकी क्रियामें प्रगटहोते हैं अर्थात् भिन्नज्ञानकी अवस्थाहोती है कई इन्द्रियां बन्दहोजातीं और सबसे अधिक यहकि कारक का अधिकार धारकपर होता है और वह दशाहोती है जिस में कारककी शिक्षा बिल्कुल अधिकार और ज़ोरहोता है प्रश्नोंका उत्तर बिना इसके कि सोनेवाला जागे तुरन्त दियाजाता है और अन्तकीबात यह है कि रोगकी आरोग्यताके लक्षण बहुत प्रतीतहोतेहैं—ब्रीडसाहबका यहांतक बलचलता है कि निर्बल स्त्रियोंको जिनके किसी जोड़में भी पीड़ाहोती है निद्रावस्था में

अच्छीतरहचलादेतेहैं औरकईबारबराबरक्रियाकरनेसे निरर्थहुये जोड़में फिर शक्तिप्राप्तहोतीहै कई दशाओंमें जोक्रिया पहिलेही कीजाती है उसका प्रभाव ब्रीडसाहब के जोर और स्वभाव के कारण निद्रावस्था होनेपर और जाग्रत अवस्थामें भी स्थिर रहताहै किसीसमय ऐसाहोता है कि दुबले पतले और निर्बल मनुष्य ब्रीडसाहबकी आज्ञासे ऐसेबलकेकामकरतेहैं जोबलवान् मनुष्योंसे नहीं होसक्ते हैं और एकउंगलीसे इतनाभारी बोझ उठातेहैं कि जाग्रतअवस्थामें दोनोंहाथोंसे कभी न उठासकें॥

परन्तु बड़े आश्चर्य की यह बात है कि ब्रीडसाहब अपने धारकों में गुरु लक्षण मुख्य करके जैसे गुप्तदर्शन उपजा नहीं सक्ते चाहे जो कारक प्रसिद्ध युक्ति से क्रिया करते हैं और यह लक्षण बहुधा उत्पन्न करसक्ते हैं इसबात में दो अनुमान होसक्ते हैं एक यह कि प्रायः ब्रीडसाहब उन मनुष्यों में से हों जो ऐसे लक्षणों के उपजाने की शक्ति नहीं रखतेहैं बहुतसे कारक ऐसे हैं जो अपनी क्रिया से बीमारी का इलाज करसक्ते हैं और निद्रावस्था उपजासक्ते हैं परन्तु अपने धारकों में सर्व दर्शन की शक्ति नहीं उत्पन्न करसक्ते मैंने कई कारकोंका हाल सुना है कि जो अन्य गुरु लक्षण उपजासक्ते हैं परन्तु सर्व्व दर्शन का लक्षण नहीं उपजासक्तेहैं औरजो अन्य २ कारकोंका प्रभाव धारक पर होता है वह नानाप्रकार का प्रभाव होताहै तथाच मैं ऊपर वर्णन कर चुकाहूं कि कई कारक ऐसे होते हैं कि उनकी क्रिया को धारक को सहन नहीं होता और धारक को दुःख होता है औरकई ऐसे होतेहैं कि उनकी क्रियासे धारक को आनन्द और हर्ष होताहै इसीतरह ऐसाभी होताहै कि कई कारक कई लक्षण उपजासक्ते हैं और कई नहीं उपजासक्ते दूसरा अनुमान यह है कि जो ब्रीड साहबकी युक्ति में धारक

अपने शरीर का काम उसपर प्रभाव करनेवाला होता है इस लिये कई मुख्य लक्षण प्रकट नहीं होते चाहे जो ब्रीडसाहब आप और युक्ति से उनपर क्रिया करें तो प्रायः वह लक्षण भी विदित हो जावें यह बात स्पष्टता पूर्वक बराबर परीक्षा करनेसे मालूम हो सक्ती है ॥

जोकि ब्रीड साहब ने सर्वदर्शित्वदशा धारक पर नहीं देखी है और न उन्होंने आप उपजाईहै इसलिये उनको स लक्षण के विद्यमान होने में यहां तक बिश्वास नहीं कि सर्व दर्शन के होने से इन्कार करते हैं मुझ को ब्रीडसाहब का अति संकोच है परन्तु इस स्थान में मुझे निरुपाय कहना पड़ताहै कि उन्होंने यह परिणाम बहुत जल्दी और उचित गुणके विना निकाल लियाहै मैंने भी आपबड़े लक्षण पहले२ होते नहीं देखे थे तथा इन पत्रोंमें मैंने बहुधा यह वर्णन किया है परन्तु केवल न देखनेके कारण जो बहुत विश्वास योग्य सर्वदर्शनकी गवाही मुझ को मिलीथी मैंउसको खण्डन नहीं करदेताथा हालयहहै कि जिस शहरमें मैं बहुत रहताहूं वहां मुझको बहुत अवकाश ऐसी क्रियाओंके होते देखनेका नहीं मिला सिवाय इसके मेरी समझमें यह बातथी कि मुझ में आकर्षण की पूर्ण शक्ति नहींहै चाहे ऐसा मैं कर सक्ताथा कि जिन मनुष्यों पर और कारकोंने पहले क्रियायें कीथीं वरन जिनपर क्रियानहीं हुईथी उनपर विचारै क्यता और आकर्षण स्वापके लक्षण और यहदशा कि उनको दुःखका चेतन हो मैं उपजा सक्ताथा उस समयमें मैं यहबात नहीं जानता था कि इस विद्याकी क्रियामें मनकी दृढ़ता और धीर्य अति अवश्य है और जो कि मुझे इकबारगी बड़े लक्षणोंके उपजानेका संयोग नहीं हुआ क्योंकि मैं यहबात समझ गयाथा कि मुझमें उन के उपजानेकी शक्ति नहीं है परन्तु मुझे अच्छी तरह विश्वास है।

जो दृढ़ता पूर्वक क्रिया को जाती तो अवश्य गुरु लक्षण उत्पन्न करसक्ता और मुझको पश्चात्तापहै कि केवल अज्ञानतासे ऐसा अच्छा अवकाश मेरे हाथसे जातारहा इनदिनों मैंने केवल गुरु लक्षणोंको होताही नहीं देखाहै बरन मैंने आप उपजायेहैं और मुझको अवश्य इस विद्याके खोजने वालोंकोसमझाना पड़ताहै कि इस विद्या में पूर्ण होनेके लिये केवल धीर्य्य और दृढ़ता अवश्यहै जो यहबातें न होंतो थोड़े मनुष्यही पूर्ण होंगे यदि वह जौहर मनमें न होंतो कोई ऐसा मनुष्य सामान्यबलका नहीं है जो अति विचित्र लक्षण नहीं उपजा सक्ता सिवाय थोड़े मनुष्यों के कि जिनका मन दैविक बनाहुआहै कि वह कई लक्षण नहीं उपजा सक्ते हैं॥

पश्चात्तापहै कि ब्रीडसाहब सर्वदर्शनकी अवस्थानहींउपजा सक्ते हैं परन्तु मुझकोदृढ़आशाहै कि जो वह आपपैदा न करसकें तोउनको ऐसाअवकाश मिलजावेगा कि जबऔर कारकोंनेऐसी दशा उप जाईहो उसको अपनी आंखों देखलें मुझे स्मरण है कि ब्रीडसाहबने मूर्च्छा और इन्द्रिय वैवल्यदशाउपजाईहैयह अवस्था सर्व्वदर्शनकी दशासे भी बहुत बड़ीहै और ऐसी कभी होतीहै कि बहुधा कारकोंको इस दशाकी परीक्षा नहींहुईहै परन्तु संभवहै कि ब्रीडसाहबकी युक्तिसे सर्व्वदर्शित्वअवस्था पैदाहोसके परन्तु इस व्यवहारमें अच्छी तरह परीक्षा करनी चाहिये और तब पक्कापरिणाम निकालना चाहिये मेरेविचारमें यहबात कठिनतासे आसक्तीहै किजो एक मनुष्यपर आकर्षण क्रियाकी प्रसिद्धयुक्तिसे सर्व्वदर्शित्वकी दशा उपजसक्ती दूसरी युक्तिसे अर्थात् ब्रीडसाहबकी युक्तिसे यह दशा उसपर न हो परन्तु इसबातकी परीक्षा किसी ऐसे मनुष्य पर जिसपर पहले प्रसिद्ध युक्तिसे क्रियाहुईहो ठीकनहींहै क्योंकि बहुत धारकऐसे

होतेहैं कि जब कारक उनसे केवल इतनी बात कहदे कि सोजाओ तो किसी अन्यक्रिया बिना सोजातेहैं केवल धारक को इतनी बातकहनी बहुत है कि अमुक रीतिपर और अमुक समयतक सोरहो और धारक तुरन्त सो जाताहै सो आश्चर्य नहीं कि जब हम ब्रीडसाहबकी युक्तिसे क्रियाकाहोना चाहते हों वास्तव में वह दशा पैदाहोजावै जो प्रसिद्ध युक्ति से होतीहै आकर्षण क्रियाके लक्षणोंमें यह बिचित्र लक्षणहैं कि जबधारक पर कारक की अच्छीतरह क्रिया चलजाती है तो कारक परि-पूर्ण और गहरीनींद बहुत सुगमतासे पैदा करसक्ताहै॥

निदान जोकुछ ऊपर वर्णन कियागया उससे मालूमहोताहै कि आकर्षणकी प्रसिद्ध क्रिया और ब्रीडसाहबकी और डाक्टर डार्लिंग साहबकी युक्तिबास्तव में एक हैं यह दोनों युक्तियां वास्तवमें प्रसिद्ध आकर्षणक्रियाके दरजेहैं परन्तु अवश्यहै कि हरएक युक्तिमें कई मुख्यलाभ और मुख्य हानियांहों अबसब काखोज अतिरक्षा और परिश्रमसे करना चाहिये और इसबात पर निश्चयहोना चाहिये कि जैसे और दैविक मूलोंके मालूम करनेसे अतिलाभ निकले हैं वैसेही इससे लाभ प्रकट होंगे और जितनी उनकी विद्या अधिकहोगी उतनाही अधिकलाभ होगा और सचबात यहहै कि जो भयकुछभीहै तो मूर्खता में है विद्यामें नहीं प्रसिद्धहै कि थोड़ी विद्या भयकी चीज़ है परन्तु भय उसकेथोड़े होने में है और इलाज यहहै कि उसको अधिक करलेंयदि विद्या पूर्णहोसक्ती हो तो भयका होनहींसक्ता॥

यदि आप यहसमझें कि जो बातें मैंने वर्णनकी हैं ऐसी है कि उनके लिये अच्छीतरह खोज होचुका है और अच्छीतरह समझ में आती है और मैं इनबातों को इसतरह वर्णन करता हूं कि उनके लिये विशेष पूरीगवाही है और हम यहनहीं कह

सक्ते हैं कि उनके होनेका विश्वास नहीं है और जबतक अन्य विद्याओं के सदृश इसकापूराखोज न हो और वहखोजभी विद्या कीयुक्तिसे नहो तबतक यहबातें अच्छीतरहसमझ में न आवेंगी जब अच्छीतरह से खोज होगा तो हम को मालूम होगा कि जितनी हमारीविद्या इनकीहोतीजावेगी उतनाहीं उनकानयापन जातारहेगा और जिसतरह मूर्खोंको अब यहबात मालूम होती है कि इनलक्षणों में कुछबात ऐसी है जो दैविक शक्तिसे बढ़कर हैं तो यह विचार नष्टहोजावेगा जब अच्छीतरह खोज होगा तो दैविकरीतें जिनसे यहलक्षण प्रतीतहोते हैं मालूमहो जावेंगी चाहेतो यह कि जो प्रसिद्धरीतें हैं उनकेनीचे यहलक्षण आजावेंगे या कोई नवीनरीति जो अबतक मालूम नहीं है मालूम हो जावेगी प्रकट है कि जबसे नईदुनियां पैदाहुई है तबसे मूलवस्तुओं का आकर्षण विद्यमानथा परन्तु कोई नहींजानता था जबतक कि न्यूटनसाहबने दोसौबर्षहुये उसकोमालूमकिया और जब अच्छीतरह खोजहोगा तो मालूमहोगा कि इसजीवाकर्षण विद्याकेभी अन्य विद्याओं के सदृश बहुतलाभ हैं जैसा और विद्याओंसे मनुष्य को लाभनिकला है इसीतरह इसविद्या से उसको लाभहोगा परन्तु अबतक इसविद्या में अच्छी तरह प्रवेश नहींहै अबतक इतना ज्ञान है कि जैसे अँधेरे में कोईवस्तु कोई टटोलता है और अबतक इतना विदित नहीं कि जो उस पूर्णसृष्टिकर्त्ता ईश्वरने इस आत्मिक शक्ति को मनुष्य को कृपा करनेसे प्रयोजन रक्खा है अर्थात् इस शक्तिसेमतलब रक्खाहै कि एक मनुष्य का प्रभाव दूसरे मनुष्य पर हो उस इच्छा को न तो हम जानते हैं और न उसकी प्रतिष्ठा करसक्ते हैं ॥

मेरा प्रयोजन केवल यह है कि जो लोग अबतक आत्माकर्षण विद्या की क्रियापर संदेह करते हैं उनको विश्वासहोजावे

कि यह बिद्या बहुत खोजऔर ध्यान करने के योग्यहै मैंने केवल इस बि । में इतना यत्न कियाहै कि कईमूल जोहैं वहमैंनेखोज कर मालूम किये हैं परन्तु उन मूलों के प्रकट होने का कारण मुझे मालूम नहीं हुआ और मैं वहरीतें खोलनहींसक्ता जिन से यहबातें होतीहैं मेराप्रयोजनयहहै कि इसविद्याका खोजकिया जावे और जोकोई कारक और निपुण मनुष्य मेरी पुस्तक को देखकर इसबातपर ध्यान करे कि आत्माकर्षण बिद्या के लिये बिद्या की रीतों से खोजकरे तो जो कुछ परिश्रम मैंने इनपत्रों के लिखने में कियाहै उसका श्रम फल मुझको अच्छी तरह से मिल जावेगा॥

अभी मैंनेउस आत्माकर्षण के लक्षणका बर्णन नहींकियाहै जिस धारककोइन्द्रियवैकल्य औरइन्द्रियवैकल्यबदलनेध्यान संयुक्तप्राप्तिहोतीहै यहलक्षणकभी होतेहैं इसबातकेबर्णनकरने काहेतु यहहै किमुझको आपसेइसअवस्थाके उपजानेकीपरीक्षा नहीं हुईहै और मुझको अंगीकारथा कि मैं पहिले उन लक्षणों का बर्णन रूं जो मैंने आप खेहैं या आप उपजाये हैं परन्तु बहुत लक्षण ऐसे हैं कि जो मैंने अबतक नहीं देखे हैं और विद्या ऐसी अथाह बस्तु है कि अवश्य है कि खोजने पर असंख्य लक्षण मालूम होंगे जो अबतक किसीको मालूम नहीं हुयेहैं और अति प्रसन्नताकी बात यहहै कि बहुधा ऐसे मनुष्य जोबिद्यामें निपुणता रखतेहैं औरबड़े बिद्वानहैं अबइसआत्माकर्षण विद्याके खोजमें गेहैं और निश्चयहै कि उनके खोजने से बहुत अच परिणाम प्राप्त ह गे॥

——※——

दसवां पत्र॥

अबमें आकर्षणक्रियाके उसप्रभावका वर्णनकरताहूं कि जिससे इन्द्रिय- वैकल्य और इन्द्रिय वैकल्य और इन्द्रिय वैकल्य समेत स्तब्धदशा उत्पन्न होतीहै इस दशाके विस्तारसे वर्णन करनेका मैं उद्योग नहींकरूंगा क्यों- कि जैसा और लक्षणोंके मालूम करनेका मुझे अवसर मिलाहै वैसासमय मुझको ऐसी अवस्थाकी परीक्षाका नहीं मिलाहै न मैंने कभीयहदशा आप उपजाई है और इसी कारण जो वर्णन इस दशा के लिये लोगोंने किये हैं उनकी परीक्षा अपने ज्ञानसे नहीं करसक्ताहूं परन्तु जोकि जिन लक्षणोंके परीक्षाका समय मुझको मिलाहै उनकेलिये कारकोंके वर्णनोंको मैंनेठीक पायाहै क्योंकि जबतक इस मुख्य अवस्थाके लिये जो कारकों के वर्णनहैं उनका अशुद्ध होना सूचित नहो मैं उनको ठीक समझताहूं ॥

पहले यहबात याद रखनीचाहिये कि इनदोनों अवस्थाओंमें अन्तरहै एकतो इन्द्रियवैकल्य ऐसी है कि मृत्युके सम्पूर्ण बाह्य लक्षण प्रकट होतेहैं दूसरी अवस्था ऐसीहै कि प्रकटमें धारक जीनेकी बहुत बड़ी अवस्था में होताहै और ऐसे२ आनन्ददेने वाले प्रफुल्लित अवलोकन और विचारोंमें मग्न होताहै कि इस सम्पूर्णके आनन्द उसके सामने तुच्छ और बेमूल मालूमहोतेहैं कई कारकोंको इन दोनों अवस्थाओंमें विवेक नहीं हुआहै और दोनों दशाओंका नाम उन्होंने इन्द्रियवैकल्य अवस्था रक्खाहै यह बात अवश्यहै कि इन दोनों दशाओंमें एकत्वहै और एक अर्थमें दोनोंको इन्द्रिय वैकल्प अवस्थाकहसक्तेहैं क्योंकि दोनों अवस्थाओं में धारककी यह दशाहोतीहै कि मानों एक समय के लिये इस संसारको बरन इस जीवनको छोड़देना है परन्तु मैं एक दशा को इन्द्रियवैकल्य कहूंगा और दूसरी को इन्द्रिय वैकल्य समेत स्तब्ध दशा कहूंगा ॥

इंद्रियवैकल्यदशा अपनेआपभी उपजतीहै एकपुस्तकमें एक

मज़दूर का वर्णन लिखा है कि वहकई सप्ताहतक इसअवस्था में रहा इस समय में उसने केवल एक या दो बेर भोजनकिया और खाना भी इस तरह खाया कि मानों उसका स्वाभाविक धर्म्मथा नहींतो वह अपनी अन्य अवस्थासे नहीं जागा इसी तरह उसको एक दो बार मलमूत्रभी हुआ निदान उसकीदशा ऐसीथी जैसे कईजानवर शरदी में सन्नपड़े रहतेहैं इससमयमें इनजानवरोंको खानेपीनेकी कुछआवश्यकता नहींरहतीहै और उनमें इसतरह मुख्यउष्णता स्थिररहती है कि जो वहजानवर चैतन्य जाग्रत अवस्था में चरबी अपनेशरीर में इकट्ठी करताहै वहचरबी वैकल्यदशा में उसके जीवन के स्थिर रहने के लिये उस के शरीर में ख़र्च होती जाती है —यहमनुष्य इस सम्पूर्ण समय में कोईशब्दनहीं सुनताथा और कभीउसने बातनहींकी और जबवह जागा तो उसको बिल्कुल इसबातका होशनहींथा कि मैं कितने समयतक सोयाहूं बरनवह समझता था कि जितनेसमयतक रोजसोताथा उतनेही समयपर्य्यंत अबभी सोया था और उसको समयतक सोने का तब विश्वासहुआ कि जब उसनेदेखा कि सोनेके समय जो खेतीहरी थी उसके जागने के समय पक्कीहोकर काटनेकेलायक होगईथी फ़ांसदेश में भी कि थोड़ा समयहुआ एकमनुष्यपर ऐसीदशाहुईथी ॥

बहुतसे ऐसेदृष्टांत लिखेहुये वर्त्तमान हैं परन्तु थोड़ेही वर्ष हुयेकि जबइस मज़दूर का जिसका ऊपर वर्णनकियागया और उसके वर्णन करने में यह विस्तार कियागया कि इसअवस्था का प्राप्तहोना इसबातका प्रमाण है कि इन्द्रियवैकल्य का इस तरहहोना दुःखका चेतनहोसक्ता है तो कई मनुष्यों ने जिन्होंने अपनेजीमें ठानलियाहै करलियाथा कि इसबातको न मानना चाहिये कि आकर्षणस्वापावस्था में जर्राही का काम दुःख

विना होसक्ता है साफ़कहा कि वहमज़दूर धोखादेनेवालाहोगा परन्तु उसको —लीकहने का हेतु भी कोईनहीं था बड़े विद्वान् और बुद्धिमान् मनुष्योंने इस मज़दूरकी दशाको देखाथा और किसीतरहका धोखा उनको मालूमनहींहुआथा औरइसमजदर का यह वृत्तान्त अति प्रसिद्ध होगयाथा और जगह २ उसका चरचाथा॥

यहदशा आकस्मिक चोटहोनेसेभी प्राप्त होजातीहै तथाच एक मनुष्य जहाज के मस्तौलंपर से गिरपड़ा और उसका शिरफटगया और कईमास पर्य्यन्त मूर्च्छाकी दशामें पड़ारहा कभी २ बिह्वलतामें खाना कुछ खालिया करताथा कईमहीने के पीछे वह लंदनकोगया और वहां उसका इलाजहुआ और उसको चेतहुआ तो उसको तुरन्त उसी समयकी यादआई कि जब वह गिरपड़ाथा और उसको इसबातका कुछभीहोश न था कि उस चोटके लगने का कितना समय बीता॥

यह इन्द्रियवैकल्य दशाके चाहे वह किसी दैविक हेतु वा किसी आकस्मिक दुःखके होनेके दृष्टांत वर्णन कियेगये उनसे सिद्धहोताहै कि जो कोई मनुष्य अपने शरीरमें यह दैवीगति प्रकट करे कि समय तक खानेपीने बिना रहसके तो उसको छलीनहीं समझना चाहिये—सत्यबात यह मालूम होती है कि कभी जो ऐसी दशा उत्पन्नहुई और लोगोंको उसके देखने से आश्चर्य हुआ और जब सभा में यह हाल देखागया तो कुछ रुपयेका भी लाभहुआ तो इस हेतुसे किसी समय कई मनुष्यों नेधोखेसे अपने ऊपर इस अवस्थाके उपज—ा प्रकट किया हो॥

ऐसेहीमूलोंपर पूर्वदेशोंमें दोकहावतेंबनी—ईहैं कि कई मनुष्य किसी पहाड़की खोहमें सोरहे और जब वह जागे तो उन्होंने अपनेगिर्द एकनईदुनियांदेखी अर्थात् संसारका रूप उससमय

से कि वह सोतेथे बिल्कुल बदलाहुआथा—प्रकट है एक सप्ताह या एक महीनेतक सोयाहो तो पूर्वदेशोंके लोगोंमें बहुतहैं इस कारण उन्होंने सप्ताह और मासकीजगह वर्ष और सैकड़ों वर्ष बनालिये इतनीवात इससेसिद्धहै कि जहां अति विचित्र बातें अतिप्रसिद्ध होजातीहैं उनकाकुछ न कुछमूल अवश्य होताहै ॥

ऐसी दशा आकर्षण क्रिया से भी अर्थात् कृत्रिम भी पैदा होजातीहै और जब कि अपने आप उत्पन्न होतीहै तो कृत्रिम का उपजना सुगमता से अनुमान में आताहै कृत्रिम अवस्थाके खंडोंके विस्तारकी कुछ आवश्यकता नहीं है क्योंकि जो दैवी इन्द्रिय वैकल्यकेलक्षण होतेहैं वही कृत्रिम दशामें होतेहैं जिन जिनलोगोंने यह कृत्रिम अवस्थादेखीहै उनका वर्णनयहहै कि जब आकर्षणस्वाप की गुरुदशा होतीहै और नींद बहुत गहरी होतीहै तब यहदशा उपजतीहै आकर्षणकी इन्द्रियवैकल्य दशा और आकर्षणस्वापावस्था में विवेक करना अवश्यहै आकर्षण-स्वापकी अवस्था थोड़ीहोती है और धारक को एक प्रकार का होश होताहै चाहे यहचेत उससंज्ञासे अलगहोताहै जो सम्पूर्ण मनुष्योंको साधारण दशामें होताहै और धारकबोलताहै और शोचताहै और कुछ काम भी करता है जैसा उसको कहाजावे परन्तु इन्द्रियवैकल्यदशा में प्रकटमें धारक बेहोशरहताहै और इन्द्रियवैकल्यदशा निद्रासे बहुत समयतक स्थिररहती है कई धारकोंका मन ऐसाहोताहै कि उनकाचित्त वैकल्यदशाकेप्रवेश होनेको अतिअंगीकार करताहै और कइयोंका बहुतकमकिसी प्रकारका सन्देह नहींहोसक्ता कि ऐसी इन्द्रिय वैकल्यअवस्था बास्तव में उपजतीहै परन्तु ऊपर वर्णनकियेहुये के अनुसार मैं इसके खंडोंका नहीं वर्णन करताहूं ॥

लोगोंको समय से यहबात मालूमहै कि चाहे इसबात पर

अच्छीतरह ध्यान नहींहोताहै कि कईमनुष्योंको जबचाहें अपने ऊपर इन्द्रियवैकल्य अवस्था के उपजाने की शक्ति प्राप्त नहीं होतीहै और यहभी अधिकार होताहै कि थोड़े समय के लिये जीवकार्य को रोकदेते हैं मिस्टर ब्रीडसाहब ने एक पुस्तक में इसबातकी बहुतसाक्षी इकट्ठीकीहैं तथाच एकउदाहरण उन्होंने करनैल टोज़ंडसाहबका लिखाहै कि उक्तकरनैलसाहब बहुधा अपनेऊपर मृत्युकी प्रकटअवस्था उत्पन्न करलेतेथे बरन वैद्यों के विचारमें ऐसी दशा उपजाते थे और जब उक्त वैद्य उनकी नाड़ीदेखतेथे तो भयहोताथा कि ऐसानहो कि उनको दैवी मृत्यु प्राप्त हो परन्तु उक्त करनैलसाहब थोड़ीदेर पीछे इस अवस्थासे जागजातेथे मन धड़कने लगताथा फेफड़े में फिर श्वास आजाताथा और जीनेकी सबबातें फिर प्रकट होतीथीं ब्रीडसाहबने करनैल डैडसाहब और अन्यअँगरेज़ी साहबोंकीसाक्षी पर कि जिन्होंने हिन्दुस्तानमें इसबातको देखाथा लिखाहै कि कई तपस्वी अपने ऊपर इन्द्रियवैकल्य दशा उपजातेथे और ऐसाभी हुआ कि इन तपस्वियों को एकसन्दूक के अन्दर बंद करके पृथ्वी के अन्दर कई दिनों बरन कई सप्ताहों तक गाड़ दिया और इसहालके सत्यहोने में किसीप्रकारका सन्देहनहीं है जब उन तपस्वियों को धरती से निकाला तो उनके शरीर को मलने और नहलाने से फिर जीने के चिह्न प्रतीत हुये॥

यहबात तो मालूम होचुकीहै कि मनुष्य अपने ऊपर आप ऐसीदशा उपजासक्ता है कि जिनसे शिक्षा का प्रभाव उसपर होजावे बरन आकर्षण स्वाप भी इसतरह उपजता है तथाच ब्रीडसाहब और डाक्टर डारलिंगसाहब की युक्ति से यह बात धारक को प्राप्तहोतीहै और इसकाहेतु यह वर्णन कियागयाहै कि धारक अपने चित्तको अच्छीतरह जमाकर जब किसी चीज़

को देखताहै तो चित्तलगने के कारण यहबात होती है सो जो थोड़ाविचार कियाजावे तो प्रकटहोगा कि जो चित्त का जमाव और धारक का ध्यान बहुतही एक तरफ हो तो इन्द्रियवैकल्य दशाका उपजना कुछ आश्चर्य नहीं जैसा कि करनैल टोज़ंड-साहब और हिन्दुस्तान के योगी ऐसी अवस्था उपजालेते हैं और ऐसा होसक्ताहै कि कईरूपोंमें कईमनुष्य करनैल टोज़ंड-साहब के मनकेवेगको थमादेने का एकमुख्य अभ्यास रखतेहैं चाहे ऐसीशक्ति का प्राप्तहोना विचित्रताहै ॥

यद्यपि हिन्दुस्तान के योगियों के शरीर में फिर प्राणों के कर्म्म प्रतीतहोते हैं परन्तु ऐसी परीक्षायें भयदायकहैं क्योंकि चाहे मैं इसबातको पसन्दकरताहूं कि जो आकर्षणकीक्रिया में कभी ऐसीदशा अपनेआप उपजआवे तो उसके सम्पूर्णलक्षणों को अच्छीतरह देखें परन्तु मैं इसबातको उचितनहीं समझताहूं कि ऐसी अवस्थाके उत्पन्नकरने में प्रयत्न कियाजावे ॥

मैंने अपनी आंखों से देखाहै कि कई सन्देही मनुष्य एक जगह थे और उनको इसक्रिया के प्रभावमें विश्वास नहींहोता था तो धारकके हुज्जत करने से कारकने धारकपर ऐसी अव-स्था उपजाईकि उसकीनाड़ी एकमिनटमें दोसौबेर फड़कनेलगी बरन यहांतक उसमें वेगहोगया कि फड़क गिनी नहींजातीथी चाहे नाड़ीमें इतनी निर्बलता होगई कि उसका चलना कठि-नतासे मालूमहोता था मैंने देखाहै कि इसतरहसे मूर्च्छावस्था पैदा होगई कि संभवहै कि यह मूर्च्छादशा इन्द्रियवैकल्याव-स्थाहो परन्तु जब मैंने ऐसा लक्षण एकबार देखा तो मेरा जी फिरकभी न चाहा कि चाहे आप ऐसी अवस्थाके उत्पन्न करने में परिश्रमकरूं अथवा किसीको ऐसीदशा पैदाकरते देखूं ॥

इंद्रियवैकल्य समेतस्तब्धावस्था की यहदशाहै कि यहदशा

कभी २ उपजतीहै इसका हेतु यहहै कि यातो आकर्षण क्रिया के कर्त्ताओं को ऐसीदशा के होनेकी आशा नहीं होतीहै या यह कि वह ऐसीदशा के उपजानेकी इच्छा नहींरखते यह दशाऐसी है कि धारक अपने मुख्य प्राणोंसे भिन्न होजाता है यदि इस दशामें अधिकताहो तो प्राणोंके जानेका भयहै कहनेटसाहव ने लिखाहै कि उन्होंने कईदशा ऐसी देखीहैं जो ऐसी दशा बहुत देरतक रहती तो मृत्यु आजाती मैंने कभी यह अवस्था नहीं देखीहै न कभी उसके उपजाने में परिश्रम कियाहै परन्तु जैसा कि ऊपर वर्णन हुआहै मैंने आकर्षणस्वाप की साधारण दशा में एक मुख्य प्रकारकी ऐसीनिद्रा अपनेआप पैदाहोजातेदेखी है कि धारक अतिप्रसन्नतामेंथा और जबवहअवस्था दूरहोगई तोइसवात कोकहताथाकिइसदृष्टरूप संसारमें जहांएकसी दशा वीततीहै क्यों लौटआया यहबड़ीदशा इन्द्रियवैकल्यका एकस्वरूपहै इसलिये अवश्यहै कि जिस धारकपर यहदशा बीतती है तोजो प्रयत्नकियाजावे तोगुरु इन्द्रियवैकल्यदशा भी उसपर हो जावेगी तौभी मुझको ऐसीपरीक्षाकेकरनेमेंसंदेहहै क्योंकि मेरी समझ में यहबात जमीहुईहै कि ऐसीपरीक्षा भयदायक है॥

लिखा है कि दोनों कि यह अवस्था अर्थात् लघु और गुरु इन्द्रिय वैकल्य स्त्रियोंको कभी २ अपनेआप उपजती हैं परन्तु जो स्त्रियां हलके मनकी हों या कोई उनको नाड़ियों के संबंधी रोगहों लोग बहुधा ऐसे हाल सुनकर कहदेते हैं कि धोखे की वातें हैं परन्तु जो कि ऐसी स्त्रियां ऐसे मनुष्यों के हाथोंमें भी पड़जावें जो उनकी अवस्था दिखाकर कुछ रुपये के पैदाकरने का लोभरक्खें या कईधर्म्मके विषयों की वृद्धिकरना चाहें तब भी इसबात के समझलेनेमें कि यह सबबातें धोखेकीहैं विचार और रक्षा चाहिये॥

जिन पर यह अवस्था उपजती है उनको सिद्धदेवता बरन स्वर्ग दिखाई देताहै और जो कुछ वह देखते हैं उसका हाल अति सुन्दरता से वर्णन करते हैं जो यहमानों कि यह अवलोकन केवल विचार ही हों अर्थात् स्वप्न की रीति पर और ऐसे स्वप्नका यहहेतु होसक्ताहै कि यातो धर्म्मवान् पुरुषों की शिक्षा हो या जो कुछ वृत्तान्त उन्होंने पढ़ाहुआ है वह स्वप्न में दृष्टिगोचर होताहै तब भी ऐसे अवलोकनों के लिये धोखेका कहना उचितनहीं होसक्ता जिसधारकका मन आकर्षणक्रिया को बहुत अंगीकार करताहो उसके लिये यहबात होसक्ती है कि चाहेवह आकर्षणस्वापमें हो चाहे नहो जो कुछ कारक चाहे और आज्ञा दे वही धारक को दिखाईदेताहै बहुत सिद्धलोग आत्माकर्षण विद्याको कहावतों से या कई पुस्तकों से जो बहुधा प्रसिद्ध नहीं हैं जानतेहैं और इसक्रियाको छिपाया करते हैं यहबातहोसक्ती है कि इन सिद्धोंके जोबहुधानिश्चय धर्म्म के विषयोंमें दृढ़होते हैं तो वह सिद्ध धारकको ऐसीचीज़ों के देखनेकाउपदेशकरताहै जिसमें कारकको आपनिश्चयहै यदि कारकऐसाकरे तोवास्तव में कोईबुराई यापापनहीं औरकारककीइच्छासेधारक को देवता यासिद्ध इसीतरह दिखाई देते हैं जैसाल्यूससाहब और डाक्टर डारलिंग साहबके धारक बहुतसी ऐसीचीजें देखते हैं जो वास्तव में शरीर नहीं रखते परन्तु कारकोंके निश्चय के कारण उनको दिखाई देती हैं यदि कोई सिद्ध कारक इसबात की इच्छाकरे कि धारक स्वर्ग या नरकदेखे तो धारक स्वर्ग वा नरक देखताहै जो कारक की समझ में है और स्वर्ग में पुनीतजन और नरक में पापी मनुष्य उसी प्रकार के देखता है जिस को सिद्धकारक पुण्यवान् और पापी समझताहै ॥

और यह सब बातें बरन इनसे अधिक धोखे बिना होसक्तीं

हैं कई सिद्ध जो मूर्ख अबिचारी हैं तो चाहे धर्मके भेदोंके लिये कुछ अनुबाद होरहा है ऐसाकरें कि अपने धारकपर जो शक्ति उनको प्राप्तहै उससेलाभ उठावें और ऐसीबातें उससेकहला लें जिनसे सिद्धकारककी अभिलाषा औरइच्छा पाईजावे और सत्यता न पाई जाय ॥

न हो धारक बहुधा सच्चा होताहै और इसबात का प्रमाण कि यह अवस्था अपने आप उपजती है तो उसका हेतु वही है जिससे साधारण आकर्षण क्रिया की पैदाहोती है यह है कि इन धारकों को स्वप्न जागरण प्राप्त होता है और उनमें अपने आप आकर्षण के लघु लक्षण प्रतीतहोतेहैं अवश्यहै कि धारक दैवी बस्तु वा मनुष्य देखते हैं इस कारण देखतेहैं कि उनको गुप्त बस्तु ज्ञानावस्था प्राप्त होती है ॥

ऐसे मनुष्यों की अवस्था के लिये बहुधा यह वर्णन किया गया है कि जो बस्तु या मनुष्य स्थानपर वर्त्तमानहोतेहैं बरन किसी समय आप इन धारकों के शिरके गिर्द एक प्रकाश का चक्कर मालूम होताहै मैं इसबातको केवल कल्पना नहींसमझ- ताहूं रीशनबेक साहब ने सिद्ध किया है कि सर्ब वस्तुओं मेंसे और मुख्य करके मनुष्यों के शिर और हाथोंमें से प्रकाश की ज्योतें निकलती हैं और जो हलके स्वभाव के मनुष्य होते हैं उनको अंधेरे में वह प्रकाश की ज्योतें दिखाई देती हैं कई मनुष्य ऐसे हलके स्वभाव के होते हैं कि उनको जाग्रत अवस्था में भी प्रकाश मान दिवस में यहलाटें दिखाई दे हैं औरजिन मनुष्योंपर शयन जागरण अवस्था होतीहै वहबहुधा बरन सदा ऐसी लाटें देखते हैं कल्पना करो कि धारकों के नाड़ियों की दशा ऐसीहै कि यह प्रकाशकी लपटें इकट्ठी होकर तेज़ होजावें तो जो हलके स्वभावके मनुष्य उनधारकों के निकट

जावेंतो बिश्वासहै कि किसी २ को प्रकाशमान दिवसमें धारक के शरीर मेंसे यह प्रकाश की लपटें निकलती हुई दिखाई देंगी और अंधेरे में अधिक मनुष्यों को दिखाई देंगे यदि यह प्रकाश की लपटें एक बेर देखी जावें तो अवश्य है कि देखने वालों को ऐसा आश्चर्य होगाकि वहइसबिषयको एक करामातसमझेंगे और बुद्धिको छोड़ कर उसके बर्णन में हुज्जत करेंगे ॥

सरहिनरीमारीस साहब और २ लोगों ने लिखा है कि बहुधा ऐसेप्रकाश कुंडल उन मनुष्यों के शिरके चहुंओर दिखाई देतेहैं जो मरनेकी दशामें होतेहैं और इसबातमें सम्पूर्ण संसार को बिश्वास है किमृत्युकी दशामें मनुष्य बहुतसेस्वरूप देखते हैं अवश्य है कि यह स्वरूप उनको गुप्त वस्तु दर्शनकी दशाके प्राप्त होनेके कारण दृष्टि आतेहैं ॥

हमको उचित है कि गुरु इन्द्रिय वैकल्य दशा के लक्षणों को बुद्धिकी हीनता से धोखा न समझें बरन इस बिषयमें अच्छी तरह खोज करें बर्णनहै कि कई दशाओं में खिंचावटका काम निरर्थ होजाता है और धारक थोड़े समय पर्यन्त बायुमें किसी तरहके सहारे बिनालटका रहताहै तथाच एकस्त्रीका इसतरह लटका रहना प्रसिद्धहै यह बात आश्चर्यदायक मालूम होती हैपरन्तु इसकेलिये भी मैं यहबातनहींकह सक्ताहूं कि यहबर्णन झूठहै आकर्षणक्रियाकी कृत्रिम दशामेंबहुतलक्षण इसप्रकारके हैं जिनसे बायुमें धारकका लटका रहना संभवितमालूम होताहै तथाच कारकको धारकके लियेऐसी खिंचावटका बलप्राप्तहोताहै कि कईअति बलयुत कारकअपने खिंचावटकेबलसे यहअवस्था उपजा देते हैं कि धारक बिछौने परसे ऊंचे होजाता है और धरतीके आकर्षण के सामने ऐसे पवन स्थान में लटकरहताहै कि जिसस्थान में एक पल तक कारक की शक्ति के प्रभाव के

सिवाय नहीं ठहरसक्ताथा और पृथ्वी परगिर नहींसक्ताथा॥

गुरु इन्द्रिय वैकल्यदशा जो आकर्षणीयक्रियामें उपजती है इस लिये कृत्रिम अवस्था कही जाती है कि आकर्षण क्रिया का एक परिणाम होती है और अवश्य है कि बहुधा आकर्षण की क्रिया उत्पन्न न हो यह अवस्था उन मनुष्यों पर जो आरोग्य होने पर अधिकतर आकर्षण के मूलके प्रभाव के अंगीकार कर्त्ता होते हैं अपने आप भी उपजती है और आकर्षण क्रिया की दशा में यह गुरु इन्द्रिय वैकल्य अवस्था इस तरह होतीहै कि उसके पैदा करने का खोज नहीं होता और प्रायः पहली वेरही उपज आतीहै नहीं तो किसीसमय धारक इच्छा पूर्वक आप उपजा सक्ताहै॥

जब यह दशा किसी धारक पर इस तरह उपजती है कि कारक बुद्धिमान् हो और अपने विचारों की शिक्षा नकरे वरन धारक को बिल्कुल इस तरह पर छोड़दे कि जो वह आप देखे अपनी इच्छासे उसका वर्णनकरे तो अति विचित्र बातेंमालूम होतीहैं और उस वृत्तान्तको लिखलें॥

बहुधा ऐसा होता है कि धारक चाहे वह रोगी हो चाहे आरोग्य गुरु इन्द्रिय वैकल्यावस्था के उपजनेके पहले उत्पन्न होनेका ठीक २ दिन घंटा और मिनट बता देताहै तथाच (क) ने जिसका वर्णन पहले होचुकाहै दो वर्ष हुये ऐसी अवस्था के उपजने का हाल बतादिया था और उसके पीछे कई छोटी २ दशाओं के होनेका समय बताया है तथाच अब जो मैं यह पत्र लिख रहाहूं तो (क) की गुरु इन्द्रिय वैकल्यावस्था के देखनेकी बाट देख रहाहूं क्योंकि उसने समय हुआ उसका आठवीं जनवरीको उपजना बताया हुआहै निश्चयहै कि उसका वर्णन दूसरेभागमें विस्तारसे किया जावेगा॥

जब (क) जाग्रत अवस्थामें होताहै तो उसको अपने भवि-ष्यद्भाषण की कुछ सुधि नहीं होती न कोई उससे उसका हाल कहता है वरन सिवाय मेरे और दो तीन मनुष्यों के इस हाल को कोई जानता भी नहींहै ॥

कैहंटसाहबकी पुस्तकमें जिसका वर्णन पहले होचुकाहै एक गुप्तपदार्थ ज्ञानीस्त्रीका इसीतरह वर्णनहै कि वह अपने कारक की आज्ञा और सहायता से बहुतबड़ी इन्द्रिय वैकल्यावस्था में प्राप्त होतीथी ऐसीदशामें वह वर्णन कियाकरतीथी कि मैं ऐसी प्रसन्नहूं कि वर्णन नहीं होसक्ता और कहतीथी कि मैं देवतों से वार्त्ता करतीहूं और इससंसार अर्त्यात् पृथ्वीसे बिल्कुल भिन्नहूं और कुछ भी मुझको संसार में लौट आने की इच्छा नहीं वरन जब वह जागती थी तो कैहंटसाहब को बहुत बुरा भला कहती थी कि फिर इससंसारमें मुझको क्यों लेआयेएकवेर जो इसस्त्री की यह अवस्था थी तो कैहंटसाहबने उसकी हुज्जत के कारण उसे थोड़ी देरतक उस दशा में रहने दिया परन्तु उक्त साहबने इतनी रक्षाकी कि एक लड़केको जो उत्तम गुप्तपदार्त्थ ज्ञानीथा उस स्त्रीकेसाथ संयोगकरके उसकोआज्ञादी कि बहुतहोशियारीसे उसको देखतारहे थोड़ीदेरपीछे प्रारम्भमें वहस्त्रीअचेतरही परन्तु थोड़ीदेरकेपीछे उसकेशरीरकाहाल ऐसा बदलगया कि भयहुआ अर्त्थात् प्रकट में बिल्कुल मुरदा मालूमहुई नाड़ी थमगई और शरीर ठंढाहोगया दमचलता बन्दहोगया वह गुप्तपदार्थ ज्ञानी लड़का जो उससे संयोगरखताथा कहनेलगा कि वह स्त्री चली गई अब मुझको दिखाई नहींदेती कैहंटसाहब को भयहुआ और बड़ीकठिनता और परिश्रमसे वरन ईश्वरकीप्रार्थनासे उनको यह बात प्राप्तहुई कि उक्त स्त्रीके शरीरपर उष्णता प्रकटहुई और श्वासाचलनेलगी वह स्त्री जगी तो उसने कैहंटसाहब को बहुत

बुराभला कहा कि क्यों मुझे फिर संसार में लाये और जो दुःख उसको फिर संसार में आनेकाहुआ केवल इसतरह से दूरहुआ कि वह बड़ी सौभाग्यवती पापरहित स्त्रीथी और केहेंटसाहब ने यह बात उसको समझाई कि जो उसकी इच्छा पूरी होती तो आत्महत्या होती और आत्महत्यापाप है और ईश्वर के सामने उसको उत्तर देना पड़ेगा ॥

बहुतउदाहरण ऐसे केहेंटसाहबकी पुस्तकमें हैं केहेंटसाहब अब जीते नहीं हैं वरन मैं इस बात में प्रयत्न करता कि उनकी परीक्षाओंको देखता यह साहब ऐसे कारकथे कि उनको बहुत अच्छीशक्ति प्राप्तथी और बड़ी चैतन्यतासे परीक्षायें कियाकरते थे इनसाहब के धारकों को गुप्तपदार्थकी अच्छी शक्ति प्राप्तथी और बहुधा उनके धारकों पर गुरु इन्द्रिय वैकल्य दशाप्राप्त होजाती थी और उस दशा में भूतयोनि का वर्णन किया करते थे वास्तव में यहहै कि भूत योनिकादेखना इन्द्रिय वैकल्यदशा का एक मुख्य प्रभावहै और इस अवस्था का बहुत बड़ापद कि जिसमें धारकमानों मृत्युके निकटपहुंचताहै और कभीउपजती है साधारण यह बातहै कि जिनमनुष्योंमें यहअवस्था उपजती है वह जो कुछ देखते हैं उसका हालविस्तारसे वर्णनकरतेहैं ॥

इसमें तो संदेह नहीं कि केहेंट साहबको इसक्रिया में बड़ी प्रीतिथी परन्तु उनकी किताबकेपढ़नेसे कभी यहबात नहींपाई जाती कि उस व्यसनकेकारण कुछउनकी बुद्धिमें हानिहुई हो बहुत मनुष्य वह भेजाने विना यह बात समझते हैं कि केहेंट साहब के धारकों को जो हाल दिखाईदेते थे वह स्वप्नके सदृश थे और जैसे विचार उक्तसाहबके भूतयोनिके विषयमेंथे वैसाही वर्णनउनकेधारकोंकाहो तथा तथाच मुझको भी ऐसाहीविचार पहले पहल हुआथा परन्तु अच्छी तरह निश्चय कियेविना मैं

किसी की अनुमति पर स्थिर नहीं होता हूं और जब अधिक ध्यान और खोज कियागया तो मुझको मालूम हुआ कि ऐसा विचारकरना सबबातें जिनका वर्णन लिखा है ठीक नहींआता वास्तव में यहबातहै कि चाहै कईबातोंमें कैहंटसाहबके धारकों के विचार उक्त साहब के विचारों के सदृशहोतेथे परन्तु बहुधा व्यवहारों में उनकी मति उक्तसाहबकी अनुमतिके विरुद्धहोती थी और वह अपनी अनुमति पर स्थिररहते थे और अंत यह हुआ कि उक्तसाहबने माना कि मैंने अपने विचारोंको जो भूत योनि के विषय में मेरी समझ में थे लाचार होकर बदलदिया वरन निरुपाय उन विचारों को बदलनापड़ा ॥

मेरीइच्छा ऐसीबातों को विस्तारसे वर्णन करने की नहींहै जिनकी मुझआप परीक्षा नहींहुई परन्तु मुझे उचितमालूमहुआ कि कैहंटसाहब की परीक्षाओं का वर्णनकरूं इसलिये उनका वृत्तांत वर्णन करदिया है यदि वास्तव में भूतयोनि कुछवस्तुहै और सम्पूर्ण प्रकार के मनुष्यों के भूतयोनि के होने में निश्चय अवश्य है तो होसक्ता है कि ऐसेधारकों का वर्णन जिनपरगुरु इन्द्रियवैकल्यावस्थाहोतीहै भूतयोनिके विषयमेंन्यून वा अधिक सत्यहोगा क्योंकि अन्य २ प्रकार के धारकों के वर्णन परस्पर सम्मतिरखते हैं मेरीमति यहनहीं है कि भूतयोनि का दिखाई देना केवल एकस्वप्न है तथाच कैहंटसाहब के धारकोंका और (क) का वर्णनबहुधा मिलता है और (क) को मैंनेदेखाहै और उसकेवर्णनको हरतरह विश्वसित और यथार्थ समझताहूं यदि ऐसे धारकों के वर्णन केवल स्वप्नसमझे जावें तो यह स्वप्नभी अतिविचित्रहोंगे और अधिक आश्चर्य्य की यहबात है कि जो बातें मुख्य हैं उनके लिये जो धारकों के नानाप्रकार के वर्णन होते हैं वह परस्पर बहुत मिलतेहुयेहोते हैं सम्पूर्णधारक भूत

योनिसे बातें करते हैं बहुधा उनकेनाम बताते हैं और बहुधा उनकेलिये इसतरह वर्णन करते हैं कि अमुक मित्र या बन्धुके प्राण हैं आश्चर्य्य की यहबात है कि इसतरह का संयोग भूत-योनिसे ऐसीदशा में प्राप्तहोता है कि चाहेधारक पढ़ा या कुपढ़ हो और वरन कारक को इसभूतयोनि के होने में विश्वास नहीं होता और धारक को उससृष्टि के मनुष्योंसे संयोग हो-जाता है जो कुछउत्तर या बातें इनभूतों मेंसे कोई भूत करताहै उसकाहाल धारक विस्तारसेबताते हैं कईउनमेंसे कहते हैं कि हरमनुष्यके साथ एक अच्छा और एक बड़ा देवताहोता है कई धारक चाहे अपनीशक्तिसे या अपने साथी देवताकी सहायता से जब चाहतेहैं कि अपने मरेहुये मित्र या बांधव के प्राण को बुलालेते हैं और चाहेकभी धारकने या कारकने या वर्त्तमान मनुष्यों में से किसीने उसमनुष्य को न देखाहो तबभी उसके जीव को बुलालेते हैं जो विस्तार पूर्वक वृत्तांत उसका धारक वर्णन करते हैं निश्चय करनेपर यथार्थ पायाजाताहै और और भी विचित्र बातें इसप्रकार की लिखीहुई हैं प्रकट है कि ऐसे रूपों का दिखाईदेना केवल स्वप्ननहीं होसक्ता यदि केवल दु-र्विचार कहाजावे तो ठीकहै कि निश्चय किये विना उनको दु-र्विचार बताना बुद्धि के विरुद्ध है और इसमें संदेह नहीं कि जिन मनुष्यों को भूतयोनिके होनेमें विश्वासहै उनकी समझमें यहबात अवश्य जमेगी कि इनधारकों के वर्णनसे कुछहालउस भूतयोनि का प्रकट होता है ॥

जबसे मनुष्य का मूल है तबसे संसार के मनुष्यों को भूत-योनि के होने में है और इसबात का विश्वास तबहींसे है कि कई देशाओं में मनुष्य और भूतयोनि में संयोग हो सक्ता है हर समय में बुद्धिमान् और कविजन और धर्म्मवालों ने इस

विषय में बहुत कुछ लिखा है तो अपनी मति तो कुछनहींदेता परन्तु इतना अवश्य कहता हूं कि जबतक कि अच्छी तरहसे विचार और खोज न किया जावे तबतक किसी बात को झूंठ नहीं कहना चाहिये ॥ ——*——

ग्यारहवां पत्र

जब कईधारकोंपर आकर्षण स्वापावस्था प्राप्तहोती है तो जो उनके शिर के कई स्थान छुयेजावें तो मुख्य २ स्थानों के छूने से मुख्य २ अन्तरेन्द्रिय कार्य्य प्रकट होते हैं और यह बातभी पाईजाती है कि इन इन्द्रियों के कर्म्मों का प्रकटहोना [१]इल्मक़याफ़ेके अनुकूल होता है कइयोंने तो इन परीक्षाओंके कारण इस वचन को प्रसिद्ध किया है कि इल्म क़याफ़ा के मूलठीक हैं और कइयोंने इन आकर्षण के लक्षणों के होनेको बिल्कुल नहीं माना है क्योंकि उनके माननेसे इल्मक़याफ़े की सत्यता माननी पड़ती है मेरी मति यहहै कि दोनों समूहोंने अच्छी तरह ध्यान किये बिना अपनी २ मतिदी है क्योंकि किसी समय तो यह लक्षण इसतरह प्रतीत होते हैं कि उनसे अवश्य करके इल्मक़याफ़े की सत्यता नहीं माननीपड़ती और किसी समय इसतरह कि जबतक [२]गालसाहब के इल्मक़याफ़ेके मूलोंको न मानें तबतक इनलक्षणोंके उत्पन्नहोनेकाहेतु मालूमनहींहोता और गालसाहब का वचन यह है कि हरएक अन्तरेन्द्रियके कर्मकाप्रकटहोना जो ब्रह्माण्डसे संबंधितहै इस जीवन में मुख्य २ स्थान ब्रह्माण्डसे संबंधित है इसस्थान पर

१इल्मक़याफ़ा वहविद्याहै किशकुन देखनेवाले अंगों से शुभाशुभ लक्षणबताते हैं यहसामुद्रिक है और यहां केवल अंग वर्णन के अर्थ लिये गयेहैं ॥

२गालसाहब और सपर्ज़िमसाहब फरंगिस्तानमें दोबुद्धिमान्थे जिन्हों ने प्रारंभमें इल्म क़याफ़े के मूलोंको प्रकटकिया और पहलेहीयह विद्याबनाई ॥

इसविद्या के ठीक या ठीक न होने के विषय में अनुबाद करना कुछ अवश्य नहीं प्रारंभ में गालसाहब और सपरज़म साहब पर लोगोंने बहुत व्यंग बचन कहे और उनको धोखेबाज और मूर्ख कहते थे इससमयमेंउनके कथित ब्रह्माण्ड के विबर्ण को सत्य मानतेहैं औरजिस तरहसे वह ब्रह्माण्डको वांटतेथे केवल वही उनकी बांट सत्य मानी जातीहै उनकी युक्ति और अन्त- रेन्द्रियोंकाभागकरना ठीक माना जाताहै अबलोगोंको निश्चय होताहै कि जिनलोगोंको मुख्य बिद्याओंमें अच्छा बोध था और जो बुद्धिमानी में अच्छी निपुणता रखते थे वहमूर्ख और धोखा देनेवाले नहीं होसक्ते थे ॥

अब इल्म क़याफा (सामुद्रिक) के दोनों समय बीत चुके हैं अर्थात् एकतो वह समय जिसमें लोग कहतेथे कि यह एकनई चीज़है और ऐसी प्रचारित है कि उसमें दोष निकलतेहैं दूसरा वह समय जिसमें लोग कहते थे कि सब इस बिद्या को जानते हैं औरयह पुरानी विद्या है कुछ नबीन नहीं और लोग इस बिद्यापर व्यंग बचन कहतेथे निश्चय है कि थोड़े समयमें इस बिद्याकी अच्छी वृद्धि होजावे गी और लोग इसविद्या से अन्य बिद्याओं के सदृश अच्छा ज्ञान प्राप्तकरेंगे एकबड़े विद्वान ने एक पुस्तकमें यहबचन लिखाथा कि ब्रह्माण्डको अन्तरेन्द्रिय से कुछ संबंध नहीं परन्तु यहबचन असत्य है हरदिन यहबात देखी जातीहै कि जो शिरपर बड़ी चोटपहुंचे वा रुधिरका बहाव शिरकी ओर होजावे तो पांचों ज्ञानेन्द्रियों में अन्तर आजाताहै और यहबात तो सूचितहै कि जिन लोगों के शिरकाघेरा चौदह इंचसे कमहोता है उनको मनुष्यों की बुद्धि नहींहोती अबप्रायः कोईमनुष्य ऐसाहै जिसको इसबातमें संदेहहै कि शिरके अच्छे डौल और रूपपर बुद्धिका होना सत्यहै औरजो ऊंचाऔर चौड़ा

भालहोतोबुद्धिभीअधिक होतीहै यदिशिरकी पीठबड़ी औरचौड़ी होतोजीवकी इच्छा अधिक होतीहै यदिशिरकीचांद चौड़ी और ऊंचीहोतो अच्छे सुन्दर और धर्म्म के विचार प्राप्तहोते हैं बहुत मनुष्योंको इसब्रह्मांडकेतीनों प्रकारोंमें निश्चयहै परन्तु खंडोंमें उनको अन्तर मालूम होताहै उनकेध्यानमें यहबातहै कि गाल साहब ने इन तीनों भागों में अनुमान किये हुये छोटे २ भाग नियत करदिये थे आजकल इस विद्या के लिये सर्वजनों की ऐसीमतिहै जैसी ऊपर वर्णनकी गई परन्तु यह मति न केवल वे मूलहै बरन सत्यता के विपरीत है गालसाहब के समय से पहले फरंगिस्तान में ब्रह्मांडके भागोंमें किसीको निश्चय नहीं था इनसाहबसे पहले लोगोंने एक केवल अनुमान से शिरकी मूर्त्तिबनाई हुईथी और गालसाहब को भी पहले २ इन तीनों भागों में विश्वास नहींथा फिर अति परिश्रम और खोजने से उन्होंने इसके बहुतसे भाग मालूमकिये और उन्होंने एकनक्शा शिरका बहुत प्रमाणों समेत विस्तार से बनाया और इन खंडों के प्रमाणों से ब्रह्मांड में तीन भागों का होना सिद्धकिया अब यहबात है कि लोगखंडों को नहींमानते और तीनों बड़े भागों को मानतेहैं अब आशाहै कि एकपीढ़ी के पीछे लोगोंको क़याफे नामी विद्यामें विश्वास होजावेगा॥

जो कि मैं क़याफेनामी विद्या के मूलको मानताहूं चाहे इस सबबसे कि यहविद्या फरंगिस्तान में बनी है मैं यह नहीं समझता कि इसविद्याकी सर्वशाखा परिपूर्णहैं क्योंकि मुझको इसबात की सदा आशाथी कि जो बातें क़यافेविद्याकी जाग्रत अवस्था में मनुष्यमें सिद्धहोतीहैं वहीबातें आकर्षणकीक्रिया के अन्तर्गत भी सूचितहोंगी अब मैं उनबातों का वर्णन करता हूं जो वास्तव में आकर्षण के अवस्थान्तर्गत देखीजातीहैं॥

जो कई धारकों के शिरके कईस्थानों को छुवाजावे तो उस
थानकेअनुकूल लक्षणप्रकट होतेहैं इसक्रियाके लक्षणइसतरह
प्रकट होते हैं कि जैसे सितारके किसी मुख्यपरदे के दबाने से
और तारपर मिज़राब लगाने से एक मुख्य शब्दहोता है यदि
धारक के शिरकेरागके स्थानको उँगलीसे छुवाजावे तो धारक
तुरंत गानेलगताहै यदि अहंकारके स्थानको छुवाजावे तो धा-
रक तुरन्त अकड़ने लगताहै और उसके डोलसे अहंकार प्रकट
होताहै और वह कहताहै कि मेरेबराबर संसारमें कोई मनुष्य
नहीं कदाचित् सन्तान की प्रीति स्थलको स्पर्श कियाजावे तो
धारक तुरन्त एक कल्पित बालकको प्रीतिपूर्वक प्यार करता है
यदि उदारता का स्थान छुवाजावे तो उसके मुखसे दया प्रकट
होतीहै और धारकतुरंत अपनीजेबमें हाथडालकर जोकुछउसमें
है निकालकर देनेके लिये हाथ बढ़ाता है यदि लोभ का स्थल
छुवाजावे तो धारकके डोलमें तुरन्त कृपणताके चिह्न प्रतीतहोते
हैं जो हाथजेबमेंसे निकालाथा फिर जेबके अन्दर डाललेता है
और रुपया जेबमें रखदेता है वरन यहांतक कि जो कोई चीज़
उसकेहाथलगे तो उसको उठाकर जेबमें डाललेता है कदाचित्
रक्षाकास्थान छुवाजावे तो धारक के मुखसे भयविदित होताहै
यदि आशा के स्थान को स्पर्श न किया जावे तो मुखसे चिन्ता
दूर होतीहै और हरएक अंगसे प्रसन्नताके लक्षण प्रकटहोते हैं
ऐसे लक्षण प्रकट होतेहैं परन्तु जितने लक्षण मैंने देखे हैं या
आप उपजाये हैं उतने लक्षणों का मैंने वर्णनकिया है यहबात
कहनीवृथा है कि मैंने उन अवस्थाओं में ऐसेलक्षण उपजाये हैं
कि जिनमें धोखे या छल का विचार भी नहीं होसक्ता था अब
पूंछनेके लायक़ यहबातहै कि यहलक्षण क्योंउपजते हैं यहबात
कहनी अवश्यहै कि यह सब बातें उस दशा में उपजती हैं कि

कारक की ओरसे कुछसैन या शिक्षा धारकको नहींहोती ॥

इसबात में दो अनुमान कियेजाते हैं एकयह कि यहलक्षण, केवल कारक की इच्छा और इस हेतु से उत्पन्न होजाते हैं कि धारक को कारक के साथ अच्छी तरह ऐक्यता होती है और दूसरा यह कि वास्तव में यह सर्व्वलक्षण केवल शिरके मुख्य स्थानोंके स्पर्शसे विदित होतेहैं मेरी अनुमति यहहै कि दोनों अनुमानठीकहैं अर्थात् कई कई लक्षणों का प्रतीतहोना पहिले अनुमान पर समझ में आसक्ता है परन्तु कई ऐसे हैं कि उन के उपजने का हेतु अनुमान से स्पष्ट नहीं होसक्ता और केवल दूसरे अनुमान पर स्पष्ट होसक्ताहै इसमें तो संदेह नहींहै कि कई रूपों में कारककी इच्छा पूर्णतासे प्रबलहोती है क्योंकि जब ल्यूससाहब और डाक्टर डारलिंग साहबकी क्रिया इस तरह पर कीजाती है कि धारकको चेतरहे तो केवल शिक्षाके कारण यह लक्षण उपजतेहैं यदि धारकको कहेंकि तुमपादरीहो तो वह तुरन्त बिस्तार से उपदेश या धर्मका व्याख्यान कहने लगताहै यदि उससे गाने या मुहचढ़ाने के लिये कहाजावे तो यही करने लगताहै यदि उसको कहें तो तुम बिल्कुल बरबाद होगये तो उसके मुख और डौलसे बहुतही नैराश्य प्रकट होताहै यह बातें मैंने बहुधा अपनी आंखों होते देखीहैं औरजो कि मैंने यहसर्व्व लक्षण इसतरह पर भी होतेदेखेहैं कि धारक की इच्छा हो पर वह न कहे तो मुझको कुछ संदेह नहीं है कि कारक का जीहीजीमें इच्छाकरना शिक्षाके बदले प्रभावकरताहै सिवा इसके यह बात भी समझमें आसक्ती है कि जो धारक कयाफे की विद्या को जानता हो उसको केवल शिरके छुये जानेहीसेशिक्षाका प्रभाव होजावे परन्तु इतनीबात प्रकट है कि जो इस पिछली तरह प्रभाव होताहो तो ऐसे मनुष्य बहुतकम

हैं जिनपर ऐसा प्रभाव होताहोगा क्योंकि जो परीक्षा कीजावे तो उनलोगों में सेभी जो कयाफेकी विद्या में निश्चय रखते हैं और इस विद्याको जानते हैं ऐसे मनुष्य वहुत कमहैं जो अन्तरीय मुख्य २ इन्द्रियां मुख्य २ स्थानों की वतासके हैं॥

सिवायइसके ऐसेही लक्षण इस तरह भी उपजतेहैं कि शिर के स्थानोंको न छुवाजावे वरन ओर जोड़ोंके स्थानों को छुवा जावे यहांतक कि कई रूपोंमें जोशिरके स्थानों को छुवाजावे तो ऐसे लक्षण प्रकट नहींहोते कईकई मनुष्यों ने इसबातका सिद्ध करना चाहा है कि जब किसीमुख्य जोड़के मुख्य स्थलको छुवा जावे तो सर्वदा एकहीसे लक्षण विदित होते हैं परन्तु जहांतक मुझको परीक्षा हुईहै इसबात का प्रमाण मेरी समझ में अच्छा नहीं मिलताहै ल्यूससाहब ने मुझसे वर्णन किया कि जब वह केवल अपनी इच्छा के बेगसे क़याफे लक्षण धारक पर प्रकट करतेहैं तो उनको अधिकार होताहै कि जिसजोड़को चाहैंछुवें वह लक्षण उपजेंगे बरन एकही मुख्य लक्षण अन्य२ जोड़ों के स्पर्शसे उपज सक्ता है॥

विचार संयोग वा विचारैक्यता की यह दशाहै कि इसबात काहोना इतना अवश्यहै कि कारककी इच्छाके पालन के लिये विचार संयोगका नियम अवश्य उचितहै परन्तु जिनलोगों को आकर्षण क्रिया लक्षणों की अच्छी परीक्षा प्राप्त है वह अच्छी तरह जानते हैं कि धारक की दशा कुछ भी कारकके प्रतिकूल नहींहोती है अर्थात् ऐसा नहीं होता कि जो कुछ कारकके मन में विचारहो या जो कुछ कारकका बचनहो सदा धारकका वही विचार ओर कर्म्मभीहो॥

बहुधा ऐसा होता है कि धारक के मनमें किसी प्रकार का वेगहो ओर कारकका मन बिल्कुल ठहरा हो ओर मैं पहिले

वर्णन कर चुकाहूं कि जो कारक के मन पर किसी प्रकार का आकस्मिक विपर्यय होजावे तो धारक पर उसका प्रभाव सर्वदा नहींहोताहै जैसे ऐसाहोताहै कि कारक बहुत हँसरहाहो और धारक किसी और कार्य और विचारमें मग्नहो तो उसके विचार और कर्ममें कुछभी विपर्यय नहींहोताहै ऊपर लिखेहुये हेतुओं में मेरी यह अनुमति है कि कई रूप तो ऐसे हैं कि क़याफे के लक्षणों का उपजना कारक की शिक्षा के अनुमान पर या इसअनुमान पर कि धारक को कारक के साथध्यान और कर्मै-क्यताहोतीहै स्पष्टहोताहै परन्तु बहुत लक्षण ऐसेहैं कि उनके उपजनेपर यह अनुमानठीक नहींआता औरमैं फिर लिखताहूं कि मैंने इसबातमें बहुत रक्षाकी है कि किसी तरहका धोखा और छलनहो ॥

पहिले तो यह बात विचारनेके योग्यहै कि जो धारक ऐसा हो कि वह क़याफेकी विद्या न जानताहो और वहकुछभीअन्त-रेन्द्रियों का स्थान न जानताहो तब भी उसके शिर के किसी आशय को छुआ जाय तो जो उस स्थान के अनुकूल होगा वह प्रकटहोगा और यह लक्षण इसी तरह विदित होतेहैं किजैसे कारककी इच्छासे प्रतीत होतेहैं ॥

दूसरे यह किजब कारक आपही क़याफेकी विद्यासे अज्ञान होताहै तो जो लक्षण उपजतेहैं उनको देखकर वह अचम्भा क-रता है क्योंकि जब वह किसी शिर के स्थान को छूताहै उस को यह बात नहीं मालूम होतीहै कि क्या लक्षण उदय होगा इससे मालूम हुआ कि उसकीइच्छा इस अवस्था में कुछ काम नहीं करती है बरन यहां तक होता है कि जो शिर का कोई स्थान किसी वस्तु जैसे कुरसी या मेज़से अकस्मात् छुआजाय या अकस्मात् कारक या और किसीमनुष्यका हाथशिरकेकिसी

मुख्य स्थान पर लग जाय तो ऐसे चिहन उत्पन्न होते हैं जो क़याफ़ेनामी विद्या के नियमों के अनुकूल होते हैं वास्तव में ऐसा प्रभाव बहुधा होताहै कि जब कारक क़याफ़ेकी विद्याको जानता है और वह शिरके किसी मुख्य स्थल को छूकर एक मुख्य प्रभाव उपजानाचाहताहै और इतनेमें वह किसी से बात करने लगताहै और जिसमुख्यस्थानको छूनाचाहताथा उसको न छुये वरन उसके बदले किसी और स्थानको छुये या उसका हाथफिसलकर किसी ऐसेस्थानपर जालगे जिसको वह इच्छा-पूर्वक स्पर्श नहीं करना चाहता था तो ऐसा प्रभाव होता है कि जो वह उपजानानहीं चाहताथा और अचम्भेमें होताहै और अन्तको विचार और ध्यानसे उसको अपनी भूल मालूम होतीहै और प्रभावका ठीक होना सूचितहोताहै और यहबातें ऐसी दशाओं में होतीहैं कि धारक क़याफ़ेकी विद्याको कुछ भी नहीं जानता है॥

तीसरे यह कि बहुधा ऐसाभीहोताहै किजब कारक शीशके किसी मुख्यस्थान को छूता होताहै तोउसको मालूमनहींहोता कि क्या प्रभाव होगा या प्रायः किसी मुख्य प्रभावकेउपजने की उसे आशाहोतीहै और वास्तवमें विरुद्धलक्षण प्रतीतहोताहै तथाच मैंने एक बेर बहुतसे स्थानोंको छूते २ बोझके जगहको छूलिया बहुधा इस जगहके छूनेसे सामनेके लक्षण के उपजने की आशा हुआकरतीहै और मैंने दोधारकोंपर इस जगह की परीक्षाली दोनों बैठे हुयेथे और मैंने कुछभीनहीं शोचा किक्या प्रभाव होगा एक धारक कुछ झुका हुआबैठाथा उसने तुरन्त अपनेशरीरको सीधाकिया और एकठंढा सांस खैंचा इसप्रभाव को अपने मनमें बिचार करके दूसरे को आज़माया यहमनुष्य तुरंतआगेको झुकगया और उसकेमुखसे अत्यन्त भय प्रकट था

और कहनेलगा कि मैं बहुत गहरे कुएं में जिसकी थाह नहीं गिराजाताहूं यह दोनों लक्षण धारकके स्थानसे सम्बन्धित हैं परन्तु जब मैंने परीक्षा लीथी उसमें मुझे इन दोनों में से एक की भी आशा न थी ॥

जब मैंने इन धारकोंमेंसे एकके क़द अर्थात् डील के स्थान को छुआ तो उसने तुरन्त कहा कि मैं एक बड़ा काला जानवर देखताहूं जो चालीस फ़ुट ऊंचाहै यह मनुष्य कुपढ़ था एक बेर पहिले जब मैंने इसस्थानकी परीक्षाली तो धारकको बड़ाचौड़ा मैदान और दूरीमालूमहोतीथी मुझको इसबेर भी दूरीकेदिखाई देनेकीआशाथी जानवरकी आशा न थी और बहुतसे उदाहरण वर्णनहोसक्तेहैं परंतु कुछ विस्तारकरनेकोहेतु मालूमनहींहोता ॥

चौथे यह कि जब मैंने दो स्थानोंको एकबेर छुआ तोएकही से लक्षण ऐसे जल्दी प्रकटहुये जैसे विपरीत प्रतीतहोतेथे और ऐसी जल्दी उपजतेथे कि मुझे विचारभी नहींहोताथा कि क्या लक्षण उपजेगा तथाच जब मैंने लोभ और उदारताके स्थान दोनों छुये तो धारकने अपनाहाथ जेबमें डालदिया और जेबमें सेफिर निकासा एककल्पिततपस्वीसे इसबातके माननेकेविषय में कि निर्धनमनुष्योंकी उपदेशसे सहायताकरनीचाहिये रुपया न देना चाहिये यह अनुवाद करनेलगा एकबेर विचित्र लक्षण अकस्मात् और उपजा और उस अभ्यास से यह भी मालूम होता है कि जो एक बेर शिरके किसी मुख्य स्थान को छुआ जाय तो छूने का प्रभाव कुछ समय तक रहता है चाहे इतना अन्तरहै कि किसी धारकपर अधिक और किसीपरकम देरतक रहताहै जब मैंनेउसकेशिरका धर्मस्थान छुआ तोधारकने ईश्वर को दण्डवत्की और उसकेमुखसे ऐसाधर्म और तपसित्व प्रकट हुआथा किवर्णननहींहोसक्ता उसके सबडीलसे दीनता प्रकटथी

जब मैंने अहंकारके स्थानकोछुआ तो अहंकार गर्व प्रतीतहुआ और थोड़ीदेरतक यह प्रभाव स्थिरहुआ इतने में मेरे एकमित्र उसस्थानपर आगये और उन्होंने तक़रार करके यहबातकही कि हम धर्मके लक्षण देखा चाहतेहैं उनके कहने से मैंने धर्मके स्थानकोछुआ और यहआशा मुझकोथी कि धर्म और दीनताके लक्षण विदितहोंगे परन्तु जो लक्षण उपजा वहऐसाथा जिसकी मुझे आशानथी धर्म तो अवश्य प्रकटहुआ परन्तु एकविरुद्धरूप में कि दण्डवत्के बदले धारक सीधा खड़ाहोगया और इसतरह निमाज़ पढ़नेलगा ॥

वाक्य—हे परमेश्वर मैं तेरा बहुत गुणमानताहूं कि तूनेमुझ को और सब मनुष्योंसे बहुत अच्छा इसबातमें बनायाहै कि मैं तुझको और मनुष्योंसे उत्तमपहचानताहूं इसमनुष्यकी आवाज़ दीनताकी नथी बरन अहंकार और धर्ममिलाहुआथा और बहुत से उदाहरण ऐसेसंयुक्तलक्षणोंके प्रकटहोनेके लिखेजासक्तेहैं ॥

जो बातें ऊपर वर्णन कीगईं उनसे सिद्धहोगा कि बहुत से लक्षण ऐसेप्रकटहोतेहैं कि उनके उपजनेकाहेतु कारककी इच्छा या शिक्षाके माननेके अनुमानपर स्पष्ट नहींहोसक्ता और इन लक्षणोंके उपजनेका कारण केवल क़याफ़ेकी विद्याके नियमों और इसबातसे कि शिरके मुख्य२ स्थान छूनेसे यहपरिणाम निकलतेहैं स्पष्ट होसक्ता है ॥

मैंने ऐसीदशा भी देखीहैं कि जिनमें शिरके मुख्यस्थानको छूनेसे कोई मुख्यलक्षणउपजानाचाहा वहउत्पन्न न हुआ और स्थानकेछूनेसे और लक्षणप्रकटहोगये तथाच मैंने एक धारक के शिरके रक्षाके स्थानकोछुआ परन्तु कुछ प्रभावप्रकट न हुआ संयोगसे मेरा हाथ गोप्य स्थानपर लग गया मैं इसस्थानको पहिचानता भी नथा तुरन्त एक मनुष्य ने जो पास खड़ाथा

कहा कि देखो यहमनुष्य क्याकर रहाहै और जब मैंने धारक की ओर दृष्टिकी तो देखा कि वह एक छोटी सी चीज़ मेज़पर से उठाकर अपने कपड़ों के नीचे छिपारहा था जबयह लक्षण प्रकटहुआ तो मुझ को यह विचार और इच्छा थी कि भयका प्रभाव उत्पन्न हो ॥

मुझको इस बातकी परीक्षा हुईहै कि कईमनुष्योंकी अन्त-रेंद्रिय जाग्रत और चैतन्य अवस्था में बहुत तेज़ होतीहैं बरन उनके शिरके उचित स्थानोंके छूनेसे सर्व चिह्न प्रतीत होते हैं एक स्त्रीने मुझसे वर्णन किया कि मुझको बहुत कल्पित स्वरूप दिखाई देतेहैं इससे मालूम हुआकि जिन इन्द्रियों से रंग और शक्ल मालूम होतीहै वह इन्द्रियां इस स्त्रीकी कष्टित थीं तथाच मैंने स्वरूप रंग शक्ति और शिक्षाकेस्थानोंको छुआ औरबहुतसी चीज़ें उसस्त्रीको कभी विश्वास औरकभीकईसम औरकभीरीति-पूर्वक और कभी बे डौल कभी सपेद कभी और रंगोंकी और कभी बड़ेडील और छोटेडीलकी और कभी अथाह दूरीतकनज़र आनेलगीं जबभारके स्थानको छुआ तो उसस्त्रीको ऐसा मालूम हुआ कि मानोंबड़ा स्वप्नदेखतीहूं और ऐसामालूम होता था कि बहुतऊंचेसेनीचे गिरतीहूं याधरती पैरोंके नीचेसेनिकलतीजातीहै एक बुद्धिमानोंका यह अनुमान है कि भूत और प्रेतआदि बुद्धि की चैतन्यता के कष्टितहोनेसे दिखाई देतेहैं यह उदाहरण जो ऊपर वर्णन कियागया इससे इस अनुमानका सत्यहोनामालूम होताहै परन्तु भूतप्रेतोंके सम्पूर्ण स्वरूपके दिखाईदेने को इस अनुमानसे स्पष्टनहीं होसक्ती और भी कुछ हेतुहैं ॥

यह वृत्तान्त जो कुछ ऊपर वर्णन कियागया उससे प्रकटहै कि क़याफ़ाके लक्षणोंके प्रकटहोनेका एक यहकारण कि शिरके मुख्य २ स्थान छूनेसे वह लक्षण प्रतीतहोतेहैं और दूसरायह

कारणभीहै कि कारककी शिक्षा और इच्छा से भी यह चिह्न प्रतीतहोते हैं ॥

अबमैं इसबातका वर्णन करताहूं कि आकर्षणकी क्रियाका प्रभाव पशुवों पर भीहोताहै इससे यह बात सिद्धहोगी किउक्त क्रियाका प्रभाव होना कुछ ध्यानपर घटितनहीं है और इस में धोखेका संदेह नहीं होसक्ता है और यह बात सिद्धहोगी कि बास्तव में कारकका प्रभाव धारक पर होता है इङ्गलिस्तान में एक मनुष्य ऐसाथा कि कैसाही शरीर घोड़ा उस के पासआवे वह उसको तुरन्त सीधाकर देताथा अवश्य है कि यह मनुष्य कुछआकर्षणीय क्रियाका कर्त्ताहोगा प्रायः उसको मालूम न हो कि यह क्रिया आकर्षणीयहै बहुत मनुष्य ऐसे हैं कि वहजंगली औ दुःखदायी जानवरको आधीन करलेतेहैं आयरलैण्डमें एक प्रसिद्ध घोड़ेका हिलानेवालाथा उसकी दशा यहथी कि थोड़ी देरतक घोड़ेकेसाथ उसको एक जगह बन्दकरदेते थे और जब वह बाहर निकलताथा तो घोड़ा बकरीहुआ होता था मालूम होताहै कि यहशख़्स कुछ परोक्ष में क्रिया करताथा और यह भी प्रकटहै कि यहक्रिया बहुत सीधी और आसान होगी नहीं तो उसके खुलनेका उसको बहुत भय न होता कहतेहैं कि यह मनुष्य और और मनुष्य भी जो इसतरह जंगली जानवरों को हिलातेहैं उन जानवरों के नथनों में फूंका करते थे और जिन मनुष्योंने इसक्रिया की परीक्षाकीहै उन को मालूमहुआ है कि इस विद्यामें बहुत प्रभावहै अब यह बात ध्यान करने के योग्य है कि आकर्षण में फूंककरनेकी क्रिया बहुतकाम में लाईजाती है और फूंकनेका प्रभाव बहुत होताहै और एक मनुष्य हमब्रग नामी और कई मनुष्य शेरोंको केवल आंख के ज़ोरसे आधीन करलिया करतेथे यह मनुष्य बास्तवमें कभी अपनी जमीहुई

और तेज़नजरको जानवरोंकी आंख से अलग नहीं करतेथेऔर जब तक उनजानवरोंकी आंख उनकी दृष्टिसे दबीहुई रहतीथी तब तक वहजानवर उनपर कभी लपक नहीं सकेथे यह बात प्रसिद्ध है कि जो आंख हटालीजावे तो भय होताहै यह बात प्रसिद्ध है कि दृष्टि जमाकर देखनेसे आकर्षणीय क्रिया अति-सुगम और बलवान् होती है यहां तक कि जबमैं किसी मनुष्य पर क्रिया किया चाहताहूं तो प्रारम्भ में मैं यही युक्तिकरताहूं कि उसकी आंखों की ओर पांच या दश मिनट तक नज़र गाड़ कर देखा करता हूं ल्यूससाहब क्रिया करते हैं तो दृष्टिसेही क्रिया करते हैं और जो लोग उनको क्रिया करते देखते हैं उनको निश्चय होता है कि आंखमें बड़ाबल है ल्यूससाहब ने कई मनुष्योंके सामने एकबिल्लीपर आकर्षणीय पूर्णक्रिया केवल उसकेओर दृष्टि जमाकर देखने से करदी और बल्बकमालेराने इसतरह एक कुत्तेपर पूर्ण आकर्षणीय क्रियाकरदी एकस्त्री ने एकगायपर जो बीमारथी इसीतरह क्रियाकी और उसकी बी-मारी केवल इसक्रिया से दूरकरदी मालूम होता है कि जो कि पशु क्रिया और विद्या से अलग होते हैं इसलिये उन पर आकर्षणीय क्रियाका प्रभाव बहुत जल्दी होताहै अवश्यहै कि यदि मनुष्य भी अज्ञान अवस्थामें होतो उसपर यह भी क्रिया बहुत जल्दी होजाय ॥

केवल यहीबात नहींहै कि मनुष्यहीका प्रभाव पशुपर होताहै वरन एक पशुकाप्रभाव दूसरेपशुपरहोताहै सर्पमें जो यहशक्ति होतीहै कि चिड़ियाको बिल्कुल अपने वश में करलेता है यह बलआकर्षणकी शक्तिसेमिलताहै यहबात बहुधादेखीजातीहै कि सांप बिल्लीको बिल्कुल बेबश करदेताहै ल्यूससाहबकहते हैं कि हमनेयहबात बहुधा देखीहै कि बहुधा ऐसाहोताहै किसांप और

बिल्लीमें बहुत दूरी होतीहै हाल यह होताहै कि बिल्लीअधीर होने लगतीहै और आदमी पहिले २ कहीं सर्पको नहीं देखते परन्तु जब ढूंढ़ाजाताहै तो अवश्य देखा जाताहै कि एक सर्प कहींछिपा हुआ बिल्लीके ऊपरदृष्टि जमाये बैठाहै बिल्ली सांपकी ओर खिची चलीजातीहै और बिल्कुल बेबशऔर अचेष्टितहोजातीहै औरजो कोई मनुष्य बचानेवाला नहो तो सुगमता से भुजंगका शिकार होजातीहै यह भी परीक्षा हुई है कि जब सर्प्पको अकस्मात् मारडाले या हटादें तो केवलइसकारण कि सर्प्पकीदृष्टि बिल्ली सेअकस्मात् अलगहोजातीहै बिल्ली तुरन्तमरजातीहै ल्यूससाहबने यहबात आंखोंसेदेखीहै इससे हमको यहबात यादआती है जो पहिले वर्णन होचुकी थी कि आकर्षण की स्तब्धावस्था से मृत्युके होनेका भयहै और कारकको बहुधा जीवकर्म्मके फिर उत्पन्न करने में कठिनता होती है ॥

मालूम होताहै कि पशुओं में परस्पर बातें करने की कई ऐसी रीतिहैं जो हमको मालूम नहीं कईलोग कहते हैं कि यह बात पशुओं को हार्दज्ञान से प्राप्तहोतीहै परन्तु मैं आपसेकहताहूं कि ज्ञान किसको कहते हैं इस कथन से केवल एक नाम मालूमहोताहै परन्तु मुख्य मूल उसका मालूम नहीं होता कि वास्तव में ज्ञान क्याहै लोग कहते हैं कि यहज्ञान कुत्तेमें बहुत है परन्तु इसवचन का कारण यहमालूम होताहै कि कुत्ता मनुष्योंके पास बहुत रहताहै और लोग बहुधा उसको देखतेरहते हैं परन्तु और पशुओं के ज्ञान का वर्णन बहुत जगह लिखाहै कव्वों की सभा और कई प्रकारके जानवरों का किसी २ ऋतु में यात्रा करना किसी ऐसे ही कारण पर घटितहै यह बात क्योंकर होतीहै कि कुत्ता अपनेमालिक को ढूंढ़लेताहै बरनयहां तक कि कोईचीज जो उसके मालिकने छुईहो और छिपाई गई

हो उसको ढूंढ़लाताहै यहवात क्योंकर होतीहै कि एककुत्ते को जहाज़पर चढ़ाकर किन्तु एक थैले में बंदकर लेजावें और फिर उसे छोड़दें तो सीधी राह से घरको चलाजाता है एक वर्णन लिखाहुआहै कि एक जगह एक कुत्ता था वहां एक कुत्तेने उसे घायलकिया घायल कुत्ता अपने घर को जो कई सौ कोसकी दूरीपर था और वहां से एक और कुत्ता अपने साथ लेकर उसी जगह आया जहां वह घायल हुआथा और अपने मित्र कुत्ते की सहायता से उस कुत्ते को जिसने उसे पहिले घायल किया था आकर घायल किया और अपना बदलालिया तो कहिये कौन वतासक्ताहै कि यहवुद्धि उसमें कहांसेआई यदि यहवात कही जाय कि कुत्ता अपनी घ्राण शक्ति के कारण अपने स्वामी को ढूंढ़लेताहै तो सूंघने का वल ऐसातीक्ष्ण होनाचाहिये किमानों एक विचित्र चेत उसको कहसक्ते हैं वहुधा ऐसा होता है कि जिस जगह कुत्ता अन्तकी वेर अपने स्वामी से अलग हुआ था और जो वहां उसका मालिक न मिले तो और वहुत जगह ढूंढ़ते २ अन्तमें उसको पालेताहै--यहवात विचार में नहीं आसक्तीहै कि साधारण घ्राणशक्तिसे यहवात प्राप्तहोसक्ती है मेरी यह अनुमतिहै कि पशुओं में परस्पर आकर्षणसे योग्य वहुतहै हम सवजानते हैं कि नानाप्रकार के पशुओं में परस्पर ऐसी प्रीति और ऐसी ग्लानि पाई जातीहै जैसा मनुष्यों में कारक धारक में होताहै॥

दो मनुष्य दशवर्ष से एक फ्रांस में और एक नईदुनिया में परीक्षा कररहे हैं उनको मालूम होताहै कि घोंघों में परस्पर अति प्रीति है यदि वहुत से यह जानवर इकट्ठे रक्खेजावें तो समय तक उनमें प्रीति रहतीहै चाहे वह कितनी ही दूरी पर हों और इसके द्वारा यह विचारहुआ कि दूरके स्थानोंमें ख़बर

पहुंचानेकीरीति निकालीजावे तथाच जिन दोमनुष्योंका वर्णन हुआ उन्होंने इसमार्ग से परस्परके लेख के विस्तार की युक्ति मुझको मालूमनहींहै ऊपर लिखाहुआ विचार संक्षेपसेयहहै कि एकघोंघेकानाम (क)रक्खा और एक और कानामभी(अ) रक्खा इनदोनोंकोपरस्पर थोड़ेसमयतक साथरक्खा और फिर उनको अलग करलिया और इसीतरह दोघोंघोंका नाम (ब)रक्खा और दो का नाम (त) रक्खा और जितने वर्णमाला केअक्षर हैं दोदो घोंघों के नाम अक्षरोंके अनुसार रखलिये और उनको थोड़ीदेर तक इकट्ठाकरके फिर अलग करदिया रक्षा के लिये कई २ घोंघे एकहो अक्षरकेनामके रखतेहैं यदि एकबर्षतक इन जानवरोंको कुछ खानेकोनहींमिले तो जीतेरहते हैं अब संकल्प करो कि शामका शब्द लिखाहै एक मनुष्य कलकत्ते में और एक मनुष्य लाहौर में है लाहौर वालेने एकबिजलीके औज़ार से उस घोंघे को छुवा जिसका नाम (श) है कलकत्ते वाला बैठाहुआ अपने घोंघेको देखरहाहै और एक औज़ारसे हरएक को छूकर देखताहै आजमाते २ जो घोंघा उसके पास (श) के नामका है वह लाहौर के (श) की तरह तड़पने लगता है सो कलकत्ते वालेने (श) लिखलिया इसीतरह (अ) और (म) लिखलिया तो उन को मिलाकर शामका शब्द बनगया॥

पहलेही इस वर्णन को सुनकर हँसीआतीहै और एक निर्बुद्धिकी बात मालूम होतीहै तथाच मुझको भी पहली बेर ऐसाही विचार हुआ था परन्तु जब मैंने विचारकिया तो मनुष्यमें परस्पर बहुतही प्रीति और ग्लानि होती है और पशुओं पर आकर्षणका प्रभाव बहुत होताहै तो मैंने शोचा कि इसमें केवल कठिन यह बातहै कि इन जानवरों में परस्पर बहुतही प्रीति को मानना जब यहबातमानलीतो फिरसब और बातें सुगमता

से विचार में आजाती हैं मुझे घोंघों के स्वभाव अच्छीतरह मालूम नहीं हैं और जबतक परीक्षा और खोज के पीछे कोई झूठबात मालूम नहो तबतक उसको अविश्वसित नहींसमझ-ताहूं मैं यहनहीं कहसक्ताहूं कि इतनी प्रीति नहीं होसक्ती दो बड़े विद्वान् मनुष्य इसपरीक्षा पर दशवर्ष से लगेहैं और निश्चयहै कि वह सबहाल प्रसिद्ध करेंगे जबतक वह यह हाल प्रसिद्ध नहींकरते तबतक निस्सन्देह संशयरहेगा परन्तु जबयह हाल प्रसिद्ध होजावेगा तो सर्वमनुष्य अपनी २ जगह परीक्षा करसकेंगे यदि यह पत्रों के आवागमन की रीति परीक्षा पर ठीकनिकले तो तारबर्क्की से जो इनदिनों चली हुईहै उसकी पदवी बढ़कर होगी क्योंकि इसमें कम भय है कोई तार नहीं जिसके काटडालने का शत्रु की ओर से भय हो और इसमें खर्च भी कम पड़ेगा क्योंकि थोड़े घोंघे और दो औज़ार दो स्थानों में जहांसे परस्पर बात करनी चाहें दरकार होंगे॥

मालूम होताहै कि यह युक्ति भी नई नहींहै क्योंकि समय से एकगढ़ में सेना का घेरा कियागया था और गढ़वालों को किसी जगह कुछ लिखनास्वीकार था तो उन्होंने पशुओं के संयोग से वार्त्ता की थी॥

——*——

बारहवांपत्र॥

इस पत्रमें मैं यह वर्णन करूंगा कि मनुष्य के शरीरपर निर्जीव वस्तु जैसे कृत्रिम चुम्बक आदिका क्या गुणहोताहै रीशनबेकसाहब ने इसव्य-वहार में खोजकियाहै और उन्होंने अपने खोजके परिणाम एक पुस्तक में प्रसिद्धकिये हैं उक्तसाहब ने पांचवर्ष तक सौ मनुष्योंपर परीक्षाकी हैं और इसमें अति परिश्रम और प्रयत्न किया है॥

प्रारम्भ में आत्माकर्षणीय क्रिया मिसमिरसाहब के समय

से शुरूहै उक्त साहब को मालूम हुआ था कि कृत्रिम चुम्बक और अन्य निर्जीव वस्तु मनुष्यके शरीरपर कुछप्रभाव करते हैं परन्तु उक्तसाहब और उनके चेलोंने इसविद्याको लाभकीदृष्टि से काममें लानेमें बहुत जल्दी की जैसे कि इसक्रिया को रोगों की चिकित्सा में वर्ताया और इस जल्दी के सबब से उन्हों ने जैसी अन्य विद्याओं के लिये कीजाती है पूराखोज नहीं किया और इसकारण यह क्रिया कुछ समयपर्य्यंत अविश्वसित समझीगई परन्तु अब यहबात मालूम होतीहै कि मिसमिरसबकी मूलबातें ठीकथीं कृत्रिम चुम्बकका मनुष्य के शरीरपर अवश्य प्रभाव होताहै यदि चुम्बक को हाथमें लेकर वहीयुक्ति कीजावे जैसे हाथों से कीजाती है और जिसका वर्णन इस पुस्तक के प्रारम्भ में कियागया तो उसका प्रभाव भी ऐसाही होता है जैसे हाथकी क्रियाका होताहै--निस्सन्देह इसयुक्तिसे हाथका प्रभाव और चुम्बक का प्रभाव दोनों इकट्ठे होजाते हैं परन्तु इसतरह पर भी प्रभाव हुआहै कि चुम्बक बिना क्रिया के काम में लायागया है या एक ऐसे मनुष्य के हाथ में चुम्बक देकर क्रिया कीगईहै कि जिसके हाथका प्रभाव कुछभी नहीं मालूम होता था और तब भी कृत्रिम चुम्बक का प्रभाव मनुष्य के शरीरमें ऐसा प्रकटहुआ है जैसा कारकके हाथका प्रभावप्रकट होताहै यहांतक होताहै कि जो धारक दूरीपर हो तो कृत्रिम चुम्बक का यह प्रभाव होताहै कि धारकपर आकर्षण उपजताहैबरनहाथपैर अकड़जाते हैं और ऐंठनउत्पन्नहोतीहैकृत्रिम चुम्बकका प्रभाव आरोग्य मनुष्योंपर होताहै और रीशनबेक साहबकेखोजसे सूचितहुआहै कि हरतीनमनुष्योंमेंसेएकपर यह प्रभाव होजाता है यह आकर्षणीय प्रभाव मूलके सम्पूर्णवस्तुओं में पैठजाता है इसदशामें यह प्रभाव अलक्टरसिटी अर्थात्

बिजलीसे अलग है क्योंकि बिजलीका प्रभाव शीशे और राल मेंसे नहीं जासक्ता परन्तु धातुओं में से जाताहै ॥

अलक्टरसिटी और पृथ्वी आकर्षण के गुणके सदृश यहगुण जिसका कर्म्म मनुष्य के शरीर पर प्रभाव करता है ध्रुवों में फैलताहै इसगुण का नाम रीशनबेकसाहबने उडायल रक्खा है कृत्रिम चुम्बक में यह गुण उस गुण के साथ मिला है जिसके प्रभाव से लोहे की सूची अर्थात् ध्रुवमत्स्य यंत्र जब लटकाई जातीहै तो दक्षिण की ओर मुड़जातीहै और जिसके प्रभाव से कृत्रिम चुम्बक पत्थर लोहेके टुकड़ोंको खींचताहै परन्तु मनुष्य के शरीरमें जो यहदशा होती है कृत्रिम चुम्वकसे मिलीहुईनहीं होती परन्तु जहांकहीं यहगुण वर्त्तमान होताहै कृत्रिम चुम्बक में चाहे मनुष्य के शरीर में चाहे बिल्लौरमें हरजगह उसकाप्राकट्यध्रुवों के अनुसार होता है अर्थात् जैसा प्राकट्य शरीर के एक सिरेपर होता है उस से दूसरे सिरेपर नाना प्रकारका प्राकट्य होताहै ॥

इस उडायल का यह गुण है कि रोशनी और बिजली की गर्म्मीके गुण के सदृश एकशरीर से दूसरे शरीरकी ओर जारी होजातीहै और जोलोग हलके चित्तके होतेहैं उनको प्रकाशकी जोतें अँधेरे में दिखाई देतीहैं यह रोशनी बहुत निर्बल होती है और जो थोड़ीसीभी रोशनी सूर्य या दीपककी होतो यहप्रकाश दबजाता है परन्तु जिनलोगों का स्वभाव बहुतही हलका होताहै उनको यहप्रकाश दिनमें भी दिखाई देता है उडायल की रोशनी का रंग राम धनुष के रंगसे मिलता हुआ होता है परन्तु कृत्रिम चुम्बक के दक्षिणीय ध्रुवकी ओर रंगऊदा और उत्तर की ओर सुर्खरंग बहुत दिखाई देता है ॥

उडायल का गुण केवल कृत्रिम चुम्बकही में नहीं होता

वरन जिसवस्तुका स्वरूपकृस्टलकी तरहहो उसमें भी विद्य-
मान होता है जिसवस्तुका ऐसास्वरूपहो उसमें यहगुण प्रकट
होता है अहलके स्वभावके मनुष्यों को कृस्टलकी चीज़ों मेंसे
अति सुन्दर प्रकाशनिकलता हुआ दिखाई देताहै१ कृस्टलोंका
प्रभावभी ध्रुओं के अनुसार होताहै और उनका कर्म्म चाहे
कृत्रिम चुम्बक और मनुष्य शरीर के हाथ के कार्य्यसे निर्बल
होताहै परन्तु उस कर्म्मसे मिलताहुआ होता है॥

हलके स्वभाव के मनुष्योंपरआदमियोंकेशरीरकाभी ऐसाही
प्रभाव होता है जैसा जैसा कृत्रिम चुम्बक का गुण होताहै मैं
ऊपर वर्णन करचुका हूं कि जबधारक आकर्षण स्वापमेंहोताहै
तो उसको कारक की उंगलियों के सिरेसे रोशनी निकलतीहुई
दिखाई देती है यह रोशनी उडायल का प्रकाश होता है और
यहप्रकाश हलके स्वभावके मनुष्योंको अँधेरे में आकर्षणस्वाप
की अवस्था के बिना भी दिखाई देता है दोनोंहाथों के सिरे दो
ध्रुवहोते हैं और शिर और आंखें और मुह टेढ़े बिन्दु होते हैं
जहां यह प्रकाश इकट्ठा होकर भराहोता है यही कारण है कि
हाथों के लेजाने और दृष्टिजमाकर देखनेसे आकर्षणीय क्रिया
का बहुत बलवान् प्रभाव होता है॥

इन सबवस्तुओंके सिवाय जिनका ऊपर वर्णन होचुका रेश-
नबेकसाहब ने सिद्धकिया है कि इस उडायल का गुणसम्पूर्ण
वस्तुओं में होता है चाहे यहबात अवश्य होवे कि कृत्रिमचुम्बक
और कृस्टलों से उन वस्तुओं में कमतर होती है तथाच गर्मी
रोशनी अलेक ट्रिसिटी और रगड़ और हरप्रकार के रसायन
कर्म्मसेअग्निके ज्योतिके सदृश और किसी मद्यमें किसीधाव

कृस्टल उसको कहते हैं जो चमकती हुई और रोशन पहलूदार चीज़हो बहुधा
यों शेकी चीज़ जो ऐसीहो उसको कृस्टल कहते हैं।

याखारके गलजानेसे और श्वासेचलनेसेऔर हरएक विपर्य्यय से जो हरएक मनुष्य के शरीर में होता है यहगुण प्रकट होता है इससे इसबातका हेतु मालूम होता है कि मनुष्य या पशुके शरीर में इतना उडायल क्यों इकट्ठा रहता है रीशन बेक साहबने इस गुणका होना बज्रों और सूर्य्य और चन्द्रमा के प्रकाश होना मालूम किया है॥

एक और बड़ीबात ध्यानकरने के लायक़ यहहै कि मनुष्यके शरीरपर धराकर्षण शक्तिका बहुत प्रभावहोता है बहुत मनुष्य ऐसे होते हैं कि जब तक उनका पलँग धराकर्षण के शिरकी ओर नहो और उनका शिर उत्तर की ओर नहो तबतकउनको निद्रा नहींआती मैंने ऐसे आदमी आप बहुत देखे और सुने हैं रेशनबीकसाहबके खोज करनेसे पहिले बहुत लोगोंकी परीक्षा हुईथी परन्तु उसका हेतुकोई मालूम नहीं करसक्ता था यहबात बहुत प्रबल मालूम होती है कि कदाचित् रोगी का पलँग इस डौलसे बिछायाजावे तो रोगोंसे जल्दी आराम होसकेगा कई रोगी ऐसे होते हैं कि जो उनका पलँग आढ़ा न बिछायाजावे तो उनको बहुत दुःखहोता है और वहउसको भी नहींसहसके समयहुआ कि लोगोंको इसबातकी परीक्षा हुई है परन्तु लोग कहतेथे कि यह केवल कल्पितबात है—इसबात का भी अभ्यास हुआ है कि जिस मनुष्यपर आकर्षणीय क्रिया करना चाहेंजो उसको इसतरहपर बिठायाजाय कि उसकाशिर उत्तरकीओर हो और उसका मुख दक्षिण की ओर और उसके पावँ दक्षिण की ओर फैलेहुये हों तो और डौल की बैठकसे इसडौल में उस पर क्रिया बहुत जल्दी होजाती है मुझको बहुधा इसबात की परीक्षा हुई है और जो खोज कियाजावे तो अवश्य है कि यह बात सर्व्व प्रकारसे ठीक मालूमहोगी परन्तु बहुत आदमीऐसे

हैं कि किसी तरफ उनको बिठाओ उनपर क्रिया होजाती है रीशनवेक साहब को यह भी मालूम हुआ है कि उडायल की रोशनी को अच्छीतरह देखने के वास्ते यहबात उत्तम है कि धारक उत्तर दक्षिण बैठे और उसका शिर उत्तर की ओरहो॥

रीशनबेक साहबने बहुतसी विचित्र बातें इस विषय में कि उडायल मनुष्य के शरीर में नानाप्रकार के समय भोजन करनेकेपीछे या पहिले क्योंकर फैलती है मालूम की हैं सुबह के समय सोकर उठने से पीछे वरन सूर्य्य उदयसे यह बढ़तीजातीहै प्रभात के भोजन करने से पहिले भूखके सबब कम होने लगती है फिर उसकी वृद्धि होती जाती है और सन्ध्या के भोजनकरनेके समय से पहिले अकस्मात् बहुतबढ़जातीहै फिर संध्यातक अर्थात् सूर्य्यास्त पर्यंत बढ़तीजाती है और रातभर कमहोती रहती है तथाच सूर्य्य उदयसे पहिले कमतर होतीहै इनमूलों का ध्यान रखनेसे मनुष्य की आरोग्यता अच्छीतरह रक्षापूर्वक रहसक्ती है॥

जितना खोज किया गया है उससे मालूम होता है कि उडायल का कर्म्म ध्रुवोंकेअनुसार होता है अर्थात् जिसवस्तुमें मनुष्य के शरीर व कृत्रिम चुम्बक अथवा कृस्टल के सदृशवस्तु में उडायल का गुण होता है उसके दोनों ध्रुवों का अलग २ कार्य्यहोता है उत्तरीय ध्रुवमें से जो रोशनी निकलतीहै उसका प्रभाव ठंढाहोता है और रंगऊदाहोता है और दक्षणीयध्रुव के प्रकाश का प्रभाव असह्य उष्ण होता है और उसका लालरंग होता है मनुष्य के दहने हाथ का उत्तरीय ध्रुव और ठंढाहोता है और बायें हाथ दक्षिणीय ध्रुव और गर्म्महोता है सूर्य्य का प्रकाश उत्तरीय ध्रुवहै और हलके सुभावके मनुष्यों पर ठण्ढक का प्रसन्नकर्त्ता प्रभाव करता है एकगरम अंगीठीका एक बहुत

हलके सुभाव के मनुष्य पर जब तक कि वह अँगीठी के बहुत पास न आया ऐसा प्रभावहुआ कि जैसा किसीको जाड़ा मालूम होताहै जब वह अंगीठीके पास आया तो आगकी गर्मीका उष्ण प्रभाव हुआ इस ठंढकका यह कारण था कि अंगीठीमेंसे उडायलके दक्षणीय ध्रुवकी जोतें निकलतीहैं और कई मनुष्यों पर गिरजाघर के बहुतसे दीपकों को प्रकाश का प्रभाव बहुत ठंढा होताहै यहांतक कि मूर्च्छाकी दशा होजातीहै चन्द्रमाका उडायल दक्षिणीयध्रुवहै और हलके स्वभावके मनुष्यों पर चन्द्रमा के प्रकाशका प्रभाव गरम होताहै जितने ग्रह सूर्य्य से प्रकाशमान होकर चमकते हैं उनका उडायल दक्षिणीय ध्रुव होता है और गरम प्रभाव रखताहै ॥

निदान उडायल सम्पूर्ण संसार में फैला हुआहै और इस बात में उष्णता प्रकाश और इलेकट्रिसिटी से मिलता हुआ है मेरी समझ में रीशनबेकसाहब ने अतिपरिश्रम और प्रयत्न से खोज करके सिद्ध कियाहै कि एक पतली चीज़ जिसका नाम जोचाहेरखलो और जिसकाभार कुछनहीं संसारमेंऐसीवर्त्तमान है जो उष्णता प्रकाश अलेकट्रिसिटी और पृथ्वीकी शोषन शक्ति पृथ्वीसेजुदाहै परन्तु इनसबगुणोंसे यहगुणमिलताहुआहै और उसकेसाथसंयुक्तहै संभवहै कि कुछसमयकेबीतनेके पीछे प्रायः कोई एकगुण ऐसामालूमहो जो इनसबगुणोंकासमूह हो परन्तु जबतक कोई ऐसागुण मालूम न हो तबतक उडायलको प्रसिद्ध गुणों से बिल्कुलअलग समझनाचाहिये जैसा कि इनदिनों अलेकट्रिसिटी उष्णता और प्रकाश को परस्पर प्रथक्समझतेहैं ॥

यद्यपि रिशनबेक साहब ने ऐसे मनुष्यों पर परीक्षा नहीं कीहैं जिनपर आकर्षणीय क्रियाकी गईहै या जिनको आकर्षण स्वापावस्था प्राप्त है या जिनपर कृत्रिम शयन जागरण

दशा हुईहै परन्तु उक्त साहब को इसबात की परीक्षाहुई है कि जिन मनुष्यों की जाग्रत अवस्था अपने आप होती है उनकी प्रकृति मुख्य दशा में बहुत अंगीकार करनेवाली होती है और जब उन पर शयन जागरण की दशा होती है तो प्रभाव को अति स्वीकार करती है हम जानते हैं कि जिनलोगोंपर कृत्रिम जागरण दशा होती है और जिनपर आकर्षण स्वाप होता है उनका मन बहुत अंगीकार करताहै यहांतक कि उनको प्रकाश मानदिवसमें कारकके हाथ और वस्तुओंमेंसे उडायलका प्रकाश निकलताहुआ दिखाईदेता है ॥

सो यहबात संदेहके योग्यनहीं है कि उडायल का गुण जो मनुष्य के हाथ और कृत्रिमचुम्बक होताहै और जिसके सबबसे चुम्बकका ऐसा कर्म होताहै जिसका ऊपर वर्णन किया गया वरन कृत्रिम चुम्बक के द्वारा आकर्षण स्वाप उत्पन्न होता है मनुष्य के हाथके उस सार से मिलता हुआ है जिससे आत्मा आकर्षणीय क्रिया का प्रभाव होताहै ॥

निदान यह कहसक्तेहैं कि वहगुण या सार जिससे आत्मा आकर्षणीय क्रियाके लक्षण उपजते हैं वास्तवमें वही उडायल है जिसको रिशनबेकसाहब ने मालूमकिया है और अब यहबात समझमें आसक्तीहै कि हलके स्वभावके मनुष्यपर दूसरामनुष्य इसबात के सिवाय कि उसको छुवे शयन जागरण की अवस्था उपजासक्ताहै यदि कृत्रिम चुम्बकसे यह दशा उत्पन्न होसक्तीहै तो मनुष्य के हाथसे क्यों न होसके वाकि हमजानतेहैं कि जो कृत्रिम चुम्बकमें सारहै वही सारमनुष्य के हाथमेंहै मेरीमतिमें रिशनबेक साहबको यहबात अच्छीतरह सिद्ध होगईहै कि एक प्रकारका गुण संसारमें फैलाहुआ है जिससे आकर्षण क्रिया का प्रभाव उत्पन्न होताहै रिशनबेक साहबने जो कृत्रिम चम्बक

कृस्टल और मनुष्यके हाथसे परीक्षा कीहैं उनपर मैंने परिश्रम कियाहै और उनको ठीक पायाहै मेरे सिवाय और लोगोंने भी रिशनवेक साहबकी परीक्षा पर परिश्रम कियाहै और सबका यह वर्णनहै कि उक्त साहबकी परीक्षायें ठीक पाईहैं ॥

यदिहम ढूंढ़ें तो प्रभाव के स्वीकार करनेवाले मनुष्य बहुत सुगमतासे मिलजातेहैं और हम सब परीक्षा करसकेहैं परन्तुजो मनुष्य ऐसी परीक्षा करनीचाहैं उनकेलिये यह बात अवश्य है कि रिशनवेक साहब ने जो नियम लिखेहैं उनका ध्यान रक्खे उडायलकी रोशनीके लिये यहबात अवश्य है कि जिस मनुष्य पर परीक्षाहो उसकास्वभाव अतिस्वीकारकर्त्ता और हलकाहो और मकानमें सम्पूर्णअंधकारहो और धारक एकघंटे या दे। घंटे उसअँधेरे मकानमेंरहै जब यह नियमपूरेहों तब मनुष्यके हाथ और कृत्रिम चुम्बक और कृस्टलमेंसेभी सुन्दरतापूर्वक प्रकाश की लपटें निकलती हुई दिखाई देती हैं और जब धारक और कारक दोनोंकमरेमें जावें तो बहुत निर्बलप्रकाशभी उस कमरे में भी जाना नहींचाहिये अर्थात् दरवाजे के छिद्रमेंसे हलके से हलकीरोशनी दिनकी या दीपककी कमरे के अन्दर नहीं पहुंच सक्ती कोईआदमी न तो कमरे के अन्दरजावे न कमरेमें से बाहर आवे क्योंकि जो दरवाजा खोलाजावे तो थोड़ीसी रोशनी भी दूसरे मकानमें से आवे धारक के तुरन्त को अन्धा कर देती है अर्थात् कभी आधेघंटे और कभीएकघंटेतक फिर उसको उडायल की रोशनीके देखनेकीशक्ति नहींरहतीहै जबतक कि धारकका मन बहुतही प्रभाव स्वीकारकर्त्ता नहो और ऐसेधारक कोई २ होते हैं और एक और आवश्यक रक्षा यह है कि कोई मनुष्य धारक के निकट न हो यदि कृत्रिम चुम्बकसे धारकको रोशनी दिखाईदेरहीहो तो देखनेवाला उसके पासचलाजावे तो तुरन्त

उस प्रकाशका दिखाईदेना बन्द होजाताहै क्योंकि धारक की उडायल और चुम्बकीय दशामें विपर्यय पैदा होजाता है यदि यह सर्वरक्षायें कीजावें तो परीक्षामें चूक न होगी ॥

अबमें दोबातोंका वर्णन करताहूं जिनके कारण रीशनबेक साहब की परीक्षाओं से लाभ निकलता है पहले यह कि जो रसायनी कर्म होताहै उसमेंसे उडायलका प्रकाश निकलताहै और उडायल उपजता है क्योंकि मुरदे शरीरों में से जब वह गलजाते हैं उडायलकीरोशनी निकलती है क्योंकि शरीर का गलजाना एक रसायनी कर्म है और श्वास चलने और भोजन के पचनेमेंभी रसायन कर्महै इससे हलके सुभावके मनुष्यों को मुरदोंपर और मुख्य करके क़बरोंपर से रोशनी निकलतीहुई दिखाईदेतीहै रीशनबेकसाहबने अपनीपुस्तकमेंबहुतसेउदाहरण लिखे हैं और विचासे यहलाभहोताहै कि दुर्विचारनष्टहोजाते हैं यहरोशनी जो मालूमहोतीहै उससे वास्तव में कुछभय नहीं और जोलोग उनकोदेखते हैं केवल इसकारणदेखते हैं कि उनका स्वभाव हलका और स्वीकारकर्त्ताहोताहै मैंने भी ऐसे वर्णन बहुतसुने हैं और क़बरिस्तानमें ऐसीरोशनी निकलतीहुई बहुत मनुष्योंको दिखाईदेतीहै और उससमयके वर्णन सुने हैं कि जो रीशनबेकसाहबके खोजसे पहले समयथा ॥

दूसरे यह कि जिसतरह कृत्रिम चुम्बक में से उडायल की रोशनी निकलती है उसीतरह पृथ्वीमें से कि बड़ी आकर्षण है उडायल को रोशनी निकलती है और यह रोशनी ज़मीन की पृथ्वी के बड़ाहोने के कारण सबलोगों को दिखाईदेतीहै अवश्य है कि जो लोग हलके स्वभावके होते हैं उनको यह रोशनी पृथ्वीकी अधिक दिखाई देतीहै परन्तु यह बात ठीक मालूम नहीं हुईहै यह बात कि धरतीमेंसे रोशनी निकलतीहुई दिखाई

देती है केवल अनुमान कीहुई बात नहीं है यह बात बहुत परीक्षासे सूचितहै रोशनबेक साहबने एक लोहेका गोलाइतना वड़ा बनाया कि उसका अर्ज दो यातीन फीटका था और एक दोहरा उसका बनायाथा एक ध्रुव से दूसरे ध्रुवतक यहदोहरा था इस दोहरेके गिर्द उन्होंने एक तारलपेटा और एक कलसे एक बिजलीकी लहर इसतारमें पहुंचादी इस युक्तिसेयहआकर्षणका गोला बनगया फिर उन्होंने इस गोलेको एक अँधेरे कमरेमें हवामें लटकादिया जिनहलके स्वभावके मनुष्योंनेइस गोले की ओर दृष्टिकी उनको उसमेंसे एक ऐसी रोशनीनिकलतीहुई दिखाईदेताथा जैसे देवी [1] ओरोराबोरीऐलस औरओरोरा अस्ट्रेलस पृथ्वीके ध्रुवोंपर दिखाई देतेहैं हरध्रुवेपर एक चौड़ा घेरा रोशनीका दिखाईदेताथा उत्तरीयओर रोशनीकारंगऊदाथा और दक्षिणकी ओर सुर्खरंग अधिकथा परन्तु सबरंग इन्द्रधनुष केरंगोंकी तरह मिलेहुये थे मध्यरेखापर एक रोशनीका टुकड़ा प्रकटथा और ध्रुवोंकी ओरसे रोशनीकीलहरें मध्यरेखाकीओर दौड़तीहुई दिखाई देतीथीं ध्रुवों के ओरके घेरोंमें और प्रकाश की लहरोंमें रंगोंकी ऐसी बनावटेंथीं कि दक्षिणकी ओरसुर्खी कीअधिकताथी और उसके साम्हने ऊदारंग अधिकथा पश्चिम की ओर पीलारंग बहुत था और उसके साम्हने भूरारंगथा अर्थात् कुछभी रंगनहींथा और भूरेरंगकेपासएक धारीलालरंग की दिखाई देतीथी और जिस जगह सुर्खरंगकी अधिकताथी उस जगहसे दूरीपर यह धारी दिखाई देती थी यह सबधारियां रंगकी आपुसमें बहुत हलकी तरह मिलीहुईथीं और एककेपीछे एक रंगप्रतीत होताथा अर्थात् किसी जगह दोरंग एक मालूम

---

[1] पृथ्वीके उत्तर और दक्षिणके ध्रुवोंपर बहुततेज रोशनी दिखाई देती है उत्तरीय प्रकाशको ओरोराबोरीऐलस और दक्षिणीय प्रकाशको ओरोराअस्ट्रेलस कहतेहैं ॥

होतेथे फिर आगे बढ़कर जुदा २ होजातेथे निदान जैसे इन्द्र-धनुषके रंगोंकी बनावट होतीहै वैसीही बनावट दिखाईदेती थी अर्थात् सुर्ख नारंजी ज़र्द सब्ज़ ऊदा नीला और सबके पीछे सुर्ख और भूरा और सुर्ख और नारंजी ज़र्दरंग में जो अन्तर था वह प्रकट होताथा और इस कारण जितने बीचके रंगथे सब दिखाई देतेथे परन्तु केवल इतनीही बातनहींथी बरन वायुमें ध्रुवोंसे ऊपर एक प्रकाशका समूह दिखाई देताथा और दक्षिणकी ओर ऊदापन अधिक और दक्षिणकी ओर सुर्खीबहुत दिखाई देतीथी परन्तु जितने रंगथे सब दिखाई देतेथे और मध्यरेखाकी ओर प्रकाशकी लहरें नाना प्रकारके रंगोंकीकूदती और दौड़तीथीं कभी लहर छोटी और कभी लंबीहोतीथी जैसी दैविक अरोराजमीन के ध्रुवे के ऊपर दिखाई देती है और देखनेवाले उसको अवलोकन करके अचम्भा करते हैं वैसेही इसलोहे के कृत्रिम गोलेके ध्रुवेपर अरोरा दिखाई देती थी यह कृत्रिम अरोरा संसारमें पहिलीही बेर तय्यार कियागयाथा और उसके उपजनेसे इस अनुमानको जिससे धरतीकी दैविक अरोराको उडायलकी रोशनी का प्रकट होना गिनते हैं एक प्रबलताहोतीहै इतनी बातकहनी उचितहै कि अरोरामें आक-र्षणका सारहोता है और अवश्य है कि चुम्बकीय सूचीको यह अरोरा खींचे क्योंकि कृत्रिम चुम्बकमें उडायलका गुण और आकर्षण शक्ति मिलीहोतीहै अभीतक मैंने एक प्रकारकीक्रिया कावर्णन नहीं किया और वह क्रिया यह है कि तारकको यह शक्ति है कि कई चीज़ों में आकर्षणका गुण उपजादे मिसमिर साहबने वर्णन कियाथा कि जलमें आकर्षणकी क्रिया उपजा सक्ते हैं परन्तु लोग इसबात पर हँसते थे परन्तु अब हरमनुष्य जिसको आकर्षणीय क्रिया का हाल मालूम होताहै यह बात

जानता है कि पानीमें इसतरह उडायल भराजासक्ता है कि जो धारक आकर्षण स्वाप में हो उसको इसवात के जानने के विना किपानीपर क्रियाकोगईहै तुरन्त मालूमहोजाताहै कि इसजलमें आकर्षणका प्रभावहै इसपानीकावर्णन इसतरहपरहै कि इसका स्वाद एकमुख्य प्रकारका होताहै जिसकावर्णन अच्छीतरह नहीं होसक्ता और जबवह पानीपिया जाता है तोपीने वालेके शरीर में एकप्रकार की गरमी उपजतीहै कई धारक कहते हैं कि यह पानी बिल्कुल बेस्वादहोताहै ऐसाहोताहै जैसा वर्षाकेपानी या खिंचे हुये पानीमें कुछस्वाद नहीं होता और जोपानीपर आकर्षणीयक्रिया नकीजावे तो जैसे मुख्यजलकेस्वादमें एकप्रकारकी तेजी पाई जाती है वैसेही धारक कोभी मालूम होती है आकर्षण किये हुये जलकी मुझकोभी परीक्षा हुईहै और जो बात मैंने ऊपर वर्णनकी उसमें कुछसंदेह नहींहै जलमेंआकर्षणकागुण दो तरह उपजसक्ता है एक युक्ति तो यहहै कि एकबर्त्तनमें जलको रखके उस बरतनको बायेंहाथकी हथेली पर रखकर उसको उंगलियों से पकड़लें और दाहने हाथको बरतनके ऊपर चक्कर देतेरहें या दाहने हाथकी उंगलियों को पानीके पास परन्तु कुछ ऊपर सीधारक्खें था इसी तरह कृत्रिम चुम्बक या क्रस्टलको पानी के ऊपर रक्खें रीशनबेकसाहब ने सूचित कियाहै कि जो मनुष्य हलके स्वभावके होते हैं जो उनपर आकर्षण स्वापकी अवस्था न भीहो तबभी वह आकर्षण किये जल और साधारण जलको पहिचानसक्के हैं आकर्षणीय प्रभाव बहुधा थोड़ीदेरतक रखता है जो उडायलपानी में बहुत भरागया हो तो कई घंटों तक प्रभाव रहसक्ताहै ॥

मैंने अपनी आंखों देखाहै किजिन मनुष्योंपर कारकने प्रसिद्ध युक्तिसे आकर्षणस्वाप उपजायाहै उनपर बहुधा आकर्षणनिद्रा

आकर्षण कियेहुये जलकेद्वारा उपजती है मैंने यह भी देखाहै कि जिनलोगों पर पहिले कभी आकर्षणीय क्रियानहीं कीगई है परन्तु उनकास्वभाव क्रियाका अंगीकार कर्त्ता मालूमहोताहै उनको आकर्षण कियेहुये जलके पीतेही साधारण निद्रा जैसी हररोज़ मनुष्यको आतीहै आजातीहै और नींद बहुत आनंद और आरामसे आतीहै—संभवहै किकई उनमनुष्योंको जिनको मैंने देखाहै आकर्षण स्वापावस्थाहो परन्तु जो कि वह मनुष्य बीमारथे और उनको नींदनहीं आतीथी और जलके पिलानेसे यह प्रयोजनथा कि उनको नींद आजावे और उनको नींदवास्तव में आगई तो किसी प्रकार की परीक्षा उनके ऊपर नहीं कीगई कि जिससे आकर्षण स्वाप न होनेका हालप्रकटहोता ॥

यहआकर्षणका गुण केवल जलहीमेंनहीं वरनऔर वस्तुओंमें भी उपजसक्ताहै और बहुधा ऐसाहोताहै कि जब कारक आप नहीं जासक्ता तो धारकके पास कोई वस्तु आकर्षण के गुणसे भरकर भेजदेताहै और इस वस्तुके पहुंचनेसे धारकको आकर्षण स्वाप प्राप्तहोता है यदिधारक को कोई धोखा देना चाहे अर्थात् कोईवस्तु उसको ऐसीजिसमें आकर्षणका गुणभरानहीं है तो जिस तरह उसको आकर्षणीय और साधारण जलका विवेकहोताहै उसीतरह उसको इसबातकाभी विवेकहोजाताहै कि इसमें आकर्षण का गुणनहींहै और धोखानहीं खाताहै ॥

अब मैं यह वर्णन करताहूं कि यह जितनी बातें आकर्षण की क्रिया के विषय में ऊपर लिखीगईं उनसे लाभ क्याहै — पहिलेयह बात कहनी अवश्य है कि किसी विद्याके लिये यह संदेहकरना कि संकल्पकिया कि यह सब बातें ठीक हैं इनसे लाभ क्या है वृथा है ऐसी कोई ईश्वरीय सृष्टि में नहीं है कि जिसका किसी न किसी समय कुछ लाभ नहो—होसक्ता है

कि यह विद्या किसी अन्य विद्या के खोजमें या जीनेके दिनों के व्यवहारों में काम आवे यह बात हम नहीं कहसक्ते हैं कि काम न आवेगी इसपुस्तकके प्रारम्भमें मैंने कई उदाहरणइस बातकेलिखे हैं तथाच एकवस्तु क्लोर्डफोर्मका भी वर्णन किया है किप्रारम्भमें इसवस्तु का मुख्यलाभ नहीं मालूमथा अबउसका लाभ दिन २ होता है कि उसको सुँघाकर जर्राही कर्म्म इस तरह होसक्ता है कि उसको कुछभी दुःखनहीं होता है सबमनुष्य जानते हैं कि वैद्यक में इल्म तशरीह (शरीर के अंगोंके वर्णन की विद्या) केवल इसतरह वृद्धिहुई है कि पशुओंको मार कर उसके शरीर को चीरफाड़ कर देखा तो इसविद्या के मूल सिद्धहुये परन्तु इनजानवरों के मारने में लोगों को ऐसीग्लानि होतीथी कि कईदृढ़मन के मनुष्यही इसविद्या की परीक्षाकिया करतेथे अबबातयहहै कि क्लोर्डफोर्म के जरीयेसे इनजानवरोंको इस तरह मारसक्ते हैं कि उनको थोड़ासा भी दुःख नहीं होता और जो केवल यह बिचारहो कि उनके प्राण जाते हैं तो ध्यान करना चाहिये कि विद्या के खोज के वास्ते जिससे सहस्त्रोंलाभनिकलते हैं उनके प्राणलने इसबात से बहुतही उत्तम हैं कि केवलखानेकेवास्ते या शिकारकी शैरकेवास्ते उनको प्राणसेमारें अब उनलोगों को जो विद्याकी खोज करनी चाहें जानवरों के मारने में ग्लानि नहीं होनी चाहिये इस वास्ते कि क्लोर्डफोर्म के जरीयेसे यहजानवर इसतरह से मारेजाते हैं कि न तड़पते हैं न चिल्लाते हैं न उनको दुःखहोता है इसलिये विद्या के खोजनेवालों के जीमें भरोसा होता है कि मैं अन्याय नहींकरताहूं और जबमनको भरोसा होता है तो ठीकबात सुगमता से मालूम होसक्ती हैं यहएक दूसरा लाभ क्लोर्डफोर्म के काममें लाने काहै इसकेसिवाय औरभी बहुत लाभ हैं॥

इसीतरह जो जीवाकर्षण विद्याका आजतक कुछलाभनहीं मालूमहुआ तो हमको एक उपदेश होनाचाहिये कि खोजकरके उसके लाभोंको ढूंढ़ें और मालूम करें क्योंकि जबतक पूरी सब बातेंऔर एकविद्या की सम्पूर्ण शाखा मालूम नहींहोतीं तबतक उसकेलाभ मालूमनहींहोते तथाच जबतक लोगों ने क्लोरोफ़ोर्म को सुंघाकर नहीं देखा था तबतक उसका लाभ नहीं मालूम हुआथा कि उसकेसूंघनेसे बहुतही अचैतन्य दशा उपजतीहै॥

परन्तु आकर्षणीयविद्या वास्तव में बहुत गुणरखतीहै और उसके बहुतसेलाभ मालूमहैं बहुतसेरोग जो नाड़ियों से संबंध रखतेहैं आकर्षणीयक्रिया से नष्ट होजातेहैं जो लोग जागरण की बीमारी रखतेहैं अर्थात् जिनको अच्छीतरह नींद नहींआती उनको आकर्षण की क्रियासे अच्छीतरह निद्राआजातीहै और आनन्द प्राप्तहोताहै और यह क्रिया हरदिन शिरपीड़ाके दूर करनेके लिये काममें आतीहै और अन्यरोगभी अर्द्धांग मिरगी के सदृश आकर्षणीयक्रिया से बहुधा दूरहोतेहैं--परन्तु इसक्रिया का लाभ केवल यहीनहींहै आरोग्यताकी रक्षाकेलिये इसक्रिया का बहुत लाभहै यदि इसक्रिया का संयोग कियाजावे तो प्राचीन रोगोंमें जो मनुष्यों के शरीर में जगह पकड़ते हैं उससे बिल्कुल दूरहोजातेहैं बरन किसीसमय ऐसाहोता है कि केवल एकबर की क्रियाकरनेसे मुख्यकरके उस स्वरूप में कि आकर्षण स्वाप उत्पन्नहोजावे रोग बिल्कुल दूरहोजाता है यहबात तो सचहै कि सदा ऐसी आरोग्यता एकहीबेर नहींहोजाती है पर धीर्यसे सदा अवश्यकरके रोगदूरहोजातेहैं परन्तु इसप्रकार के रोगनहीं कि जिनके असाध्यहोने की हमको आशाहोगईहो आकर्षणीय क्रिया के द्वारा रोग की शान्ति के बहुत से दृष्टान्त लिखे हैं-तथाच डाक्टर ऐलससाहब ने एक नासूर का इलाज

केवल इसक्रिया से क्रिया और वह नासूर बिल्कुल अच्छाहो-
गया और इन सब बातों का ध्यान रखकर कि बहुधा मनुष्य
अपनीक्रिया में झूठा बर्त्तावकरते हैं और ऐसीबातें लिखतेहैं जो
प्रायः सदा वास्तवमेंनहीं उपजतीं इसमें किसीप्रकारका संदेह
कि इस क्रियामें रोगों के दूरकरने का लाभ अवश्य है और हर
बैद्यको इसका अभ्यास रखना चाहिये मैंयह नहींकहताहूं कि
आकर्षणीयक्रिया सम्पूर्णरोगोंके लिये गुणदायकहै जो सम्पूर्ण
रोगों के लिये उपयोगी न होतो बहुत रोगों को भी अवश्यही
लाभ दायक है हर दशामें जितने रोगों के लिये उपयोगी हो
उनके लिये तो इसको काम में लाना चाहिये मुख्य करके इस
रूपमें कि जो कुछ लाभ न करे तो यहबात तो अवश्य है कि
किसी प्रकार की हानि नहीं करती है॥

मैंने बहुधा देखा है कि चाहे कारक को क्रिया के लक्षणोंके
देखनेके सिवाय और कुछ इच्छा नहों परन्तु क्रियाके अन्तर्गत
इसका लाभ धारक को होगया है बहुधा ऐसा होता है किजब
कारक केवल लक्षणोंके देखनेके लिये क्रिया करताहै तो धारक
उससे कहता है कि जब से यहक्रिया मुझपर हुईहै तबसे मेरा
अमुक रोग दूर होगया है चाहे कारक ने इस इच्छासे क्रिया
नहींकी और कारक यहबात सुनकर आश्चर्य करता औरप्रसन्न
होताहै जो कोई यहबात कहै कि यहप्रभाव केवल इससबबसे
होता है कि धारक के विचार पर कुछ क्रियाका कार्य होता है
तो मैंयह उत्तर देताहूं किजो वास्तव में यह प्रभावहोता उक्त
प्रभाव कल्पित नहीं बरन वास्तव करके होता है और हम को
उचितहै कि विचार के कार्य्य का खोजकरें और जो कुछ खोज
करने से प्राप्त हो उससे लाभ उठावें और कुछ भलाकरें इस
दशामें यहबात मालूम होतीहै कि आकर्षण की क्रियाका विचार

पर बहुत प्रभाव होता है और प्रायः इसक्रिया से और किसी वस्तुका विचार पर प्रभाव नहीं होता है परन्तु वास्तव में यह है कि बहुतदशाओं में बिचारपर कुछ प्रभाव नहींहोता क्योंकि कारकका विचार पर प्रभाव उपजानेकी ओर ध्यान नहींहोता कभी ऐसाहोता है कि न कारक को न धारक को किसी रोग के दूर करने का विचार नहीं होता है और जब उनको मालूम होताहै कि क्रियाके अन्तर्गत अमुक रोग नष्टहोगया तो दोनों अचम्भा करते और प्रसन्न होते हैं मैं चाहताहूं कि वैद्य लोग उन्माद रोग में आकर्षणकी क्रियाका बर्त्ताव करें और न केवल इसलिये कि इस क्रियासे इसरोगकी चिकित्सा हो बरन और कई हेतुहैं इसमें सन्देह नहीं कि जो लोग पागलहोतेहैं उनका स्वभाव आकर्षणकी क्रियाको बहुत स्वीकार करताहै इस सबब से इसबातके मालूमहोनेसे कुछ आश्चर्य नहीं होताहै कि क्रिया केद्वारा उन्मादरोग को पूराआराम होजाता है इनदिनों केवल उन्माद रोगके इलाजमेंही वृद्धि नहींहुई है बरन उन्मादरोगके रोगियों की प्रतिष्ठा पहिले से अधिक होती है इसका कारण यह है कि जबसे क़याफ़े की विद्या में वृद्धि हुईहै तबसे पागलों के साथ अच्छीतरह बरताव कियाजाता है अब पागलख़ाने में पागलों पर सख़्ती और ज़बरदस्ती नहींकीजाती और जो कुछ उसमें चेतरहताहै उसका ध्यानकरके उनकेसाथ उपकारकिया जाता है उसका परिणाम यहहै कि यद्यपि पागलख़ानोंमेंजा-कर मुर्झाये हुये और चिन्ताभरेविचार उत्पन्नहोतेहैं परंतुइतनी प्रसन्नता भी होती है कि बहुतसे पागलों को पागलख़ानों में इतनी प्रसन्नता होती है जिसके वह योग्य हैं और किसी समय उनको इतना हर्षहोताहै जो सचेत मनुष्योंको नहींहोता मैं इस बातको देखकर प्रसन्नहूं जो पागलख़ानोंके प्रबन्धमें यह वृद्धि

है और उसको दिन २ चमत्कारहै परन्तुमुझेविश्वासहै किजब तक आकर्षणकी क्रिया पागलखानों में न वर्त्तीजायेगी तब तक ऐसा अच्छा इलाज और ऐसा अच्छासलूक उनकेसाथ न होगा जैसाअवश्यहै और उचितहै और वास्तवमें इसबातमें कुछसंदेह नहीं कि कई वैद्योंको जो कई धारकों पर अधिकार प्राप्तहोताहै उसका कारण यहीहै कि इन पागलोंका स्वभाव आकर्षण की क्रियाका अंगीकार कर्त्ता होता है और वैद्यकी शिक्षा और आज्ञा उनपर जादूका प्रभाव रखतीहै यदि मनुष्य इसबातको बहुधा जानें और इसबात का ध्यान रक्खें तो निश्चय है कि बहुत लाभहो और अवश्यहै कि जिस पागलका स्वभाव वैद्यकी शिक्षा और आज्ञाको मानताहै जो उसपर आकर्षणकी क्रिया कीजावे तो उसके रोगको बहुत लाभ होगा जितना चैतन्य मनुष्यों पर आकर्षणकी क्रियाका प्रभावहोताहै उतनाही बरन उससे अधिक इस क्रियाका पागलों पर प्रभाव होताहै और पागलों पर अधिक प्रभाव होनेका अवश्य करके यह हेतुमालूम होताहै कि जो उनके मन और स्वभाव में उडायलका गुणहै उसके बोझ और बटावमें कुछ अन्तर आजाताहै इसअनुमानके ठीकहोनेका एक यह प्रमाण है कि चन्द्रमाका प्रभाव जिसमें उडायलका गुण बहुत भराहुआहै पागलों पर बहुतहोताहै ॥

परन्तु इस बातका एक और भी हेतुहै कि उन्माद रोग के इलाजमें आकर्षण की क्रिया का बर्त्ताव क्यों अवश्य है इसका यह कारणहै कि जब वैद्योंके वर्णन कियेहुये लक्षणोंका खोज किया जाताहै तो मालूम होताहै कि बहुत पागल आदमीकेवल आकर्षणकी एकमुख्यदशामें होतेहैं मेरा यह मतलबहै कि जिस तरह आकर्षणकीदशामें साधारण ज्ञानके सिवाय एकपृथक्ज्ञान धारकको प्राप्तहोताहै उसी तरह एक अलग ज्ञान पागल आद-

मियोंकोहोताहै—संकल्पकरोकि एकरोग अपनेआप आकर्षणीय दशामें अकस्मात् उपजे ऐसीदशामें चाहे उसकी आंखें खुलीहुई हों उसको अपनी साधारणदशाका कुछचेतनहींहोता प्रायः उस रोगीकोप्रकाशमान दशाप्राप्तहै और वहअपनी एकभिन्नअवस्था में रहताहै और सबतरहकाचेत उसदुनियामें रहता है परन्तु जो लोगउसकेनिकट और ओरपासहैं उनकीसमझमें ऐसी दशानहीं आती उनकीबुद्धि चैतन्यता उसको ठीक मालूमहोती है परन्तु और मनुष्योंको केवल स्वप्न की बातें मालूमहोतीहैं उक्त रोगी छिपेहुये या मरेहुये मित्रोंकोदेखताहै या ऐसीवस्तुओंको देखता है जो वास्तवमें तो मौजूदहैं परन्तु दूरहैं जो वस्तु उसकेनिकट हैं उनका उसकोबिल्कुल या थोड़ाचेत होताहै और केवल उन मनुष्यों या वस्तुओं के देखनेमें जो उसको प्रकाशमान दशाके देखने में दिखाई देते हैं डूबा हुआ है वरन प्रायः बहुत प्रसन्न है और प्रायःअन्तमें उसको स्तब्ध दशा इन्द्रिय विपर्यय समेत प्राप्त होजातीहै और भूत योनि के मुखियाओं से बातें करता है उसकी तो इधर यह दशाहै और जो लोग उसको देखते हैं उसके हर एक वचनको पागलोंका वचन समझतेहैं जब उनका पागलपन समझा गया तोउनको एक मकानमें बन्दकर देते हैं और मुख्यदशा का जिसका संदेह भी किसीको नहीं होता तो उसकी अवस्था दृढ़ होजातीहै और प्रायः ऐसी दशामें वह मर जाताहै परन्तु मैं पूछताहूं कि क्यावास्तवमें यहमनुष्य पागलहै उसका उत्तर यहहै कि हां पागल है क्योंकि यह दुनिया जो है उसके योग्य वह नहींहै परन्तु मैं और अर्थमें कहताहूं कि वह पागल नहीं है क्योंकि उसके जीव के बलों में कुछ हानि नहीं और यहमनुष्य केवल एकस्वप्न की दशामें है परन्तु इस स्वप्न में मूल वस्तुओं को देखता है और उन वस्तुओं के देखने का

कारण यहहै कि उसकाउडायल तेज़होताहै अबजो संकल्पकिया
जावे कि यह दशा किसी मनुष्यपर उपजे तो बुद्धि यह चाहती
है कि आकर्षण की चिकित्सासे मुख्य चेतना उसको फिर प्राप्त
होगी बड़ालक्षण यहहै कि ब्रह्माण्डपर उडायलकेगुणका ऐसा
प्रभाव होताहै कि जो प्रकटेन्द्रियों के लक्षण होतेहैं वह दबजाते
हैं आगेके पत्रमें मैं उडायल के गुणका विस्तार से वर्णनकरूंगा
अब खोजनेके लायक यह बातहै कि क्या यह उडायलकीतेज़ी
आत्माकर्षण क्रिया से दूर नहीं होसक्ती यह बात उस समयतक
नहींहोसक्ती है जबतक किमूल मालूम न हो और आकर्षण की
क्रिया की परीक्षा न कीजावे यह बात जो मैंने लिखी कि बहुत
मनुष्य उन्माद रोग के मूलके पूंछे बिना पागल समझे जाकर
मकानमें बन्दकियेजाते हैं और अच्छीतरहसे आकर्षण की क्रिया
केद्वारा उनकाइलाज नहींहोता मैंने एक स्त्रीका वर्णनसुनाहै कि
उसके बांधव उसको पागल समझते थे परन्तु संयोग से उसके
रोगका मूलमालूमहोगया और जिसमकानमें उसे बन्दकियाथा
वहांसेनिकालकर उसकोउसकेघरभेजदिया और लोगोंने समझा
किवह अच्छीहोगई जबतक वह बीमार रही तोउसकेवचन ठीक
थे और उसकी समझ अच्छी मालूम होतीथी केवल थोड़ीबातों
में कुछ अंतरथा जबवह घरपहुंची तोजोकुछबातें बीमारीमेंहुईथीं
उनका उसको कुछचेत था और एकमनुष्यसे जिस से बीमारी
में उससे भेंट हुई थी विवाह की प्रतिज्ञा की फिर उसको एक
ज्वरके एकप्रकारका रोगउपजा और जब उस बीमारीसे उसको
आराम हुआ तो न उसको अपने पागलपने का होशरहा न उस
मनुष्यका होश रहा जिससे उसने विवाहकी प्रतिज्ञाकी थी जब
यह मनुष्य उसके पासगया तो उससे इस तरहसे मिली जैसा
बेगानेसे बर्त्ताव करतेहैं मुख्य बात यहहै किअबबिल्कुलवह अच्छी

थी और जैसी वह पागल पनकी दशासे पहलेथी वैसीहीहोगई थी मुझको अवश्य यह बिचार होताहै कि जब वह मकानमेंबंद थी तोवह आकर्षणकी एक मुख्यदशामें थी अर्थात् ऐसीअवस्था में जिसका मैंने ऊपर वर्णनकिया और पहले जोउसकोआराम हुआथा वह पूरा आराम न हुआथा क्योंकि उस आकर्षण की दशाका उसकोकुछचेत नथा परन्तु जबउसको एकऔर बीमारी हुई जिससे उसकी नाड़ियोंपर एकचोटपहुंची और उसबीमारी से उसको आराम हुआ तो वास्तव में उसको पूरा आरामहुआ क्या कुछ अचम्भेकीबातहै कि जोउससमय जबउसको मकान में बन्द किया था उसका इलाज आकर्षण की क्रिया के द्वारा कियाजाता तो ऐसाही आराम उसको होता ॥

मैं एक प्रतिष्ठित मनुष्य को जानताहूं जिसकास्वभाव कई वर्ष हुये कि उडायल और आकर्षण का अंगीकार करताथा एकबेर निकटथा कि यह मनुष्य पागल समझा जाकर बंदकर दियाजाता—परन्तु सुभाग्यता से उसके बांधव औरमित्र बुद्धिमानथे उसकी चिकित्सा आकर्षण की क्रिया से की गई और उसको बहुत लाभहुआ आजकल उसको स्वभावकी कुछ ऐसी दृढ़ता होग ई है कि उसके बांधवों और मित्रों को उसकी ओरसे कुछभय नहींहै जो वह मकानमें बन्दकियाजाता और उसकी चिकित्सा आकर्षणकीक्रियासे नहींकीजाती तो अवश्यहैकि अब तक वह किसी पागलखानेमें होता सिवाय इसबात के कि उस की प्रकृति पर आकर्षण या उडायल का बहुत तेज प्रभावथा और किसी तरहसे पागल पनके लक्षण उसमें न थे एक और मनुष्य को भी जानताहूं जिसका सबभाव उडायल के गुणका इतना अंगीकार करताहै कि जो कोई मनुष्य उसकेपास जावे उसको बहुत दुःख होताहै परन्तु वह पागलपन से इतना दूर

है कि उसकीबुद्धिबड़ीहै और वह अच्छीतरह जानताहै कि यह लक्षण जो उसपर प्रकटहो हैं किससबबसे होतेहैं इसमनुष्यने मुझसे बहुधाकहाहै कि जो मैं हालअपने सबभावका न जानता त मैं किसीसमय अपनेआपको आप दीवानासमझता ॥

जोबर्णन मैंनेपागल आदमियों के सुनेहैं उनमें यहबात मैंने बहुधा सुनी है कि देखिये वहगुप्त और मरेहुये मनुष्योंसे बातें करता है और क्या लक्षण पागलपन का होता है प्रायः कई रूपों में यह बात पागलपन की लक्षण हो परन्तु बहुधा मेरे मतमें यहबातहै कि जिसतरह स्तब्ध दशा इन्द्रिय विपर्यय समेत आकर्षणकीअवस्थामें उत्पन्नहोतीहै और घारक भूतयोनि से बातें करताहै इसीतरह ऐसी स्तब्धदशा इन्द्रिय विपर्ययसमेत उत्पन्नहोजातीहै और समयतक स्थिररहती है परन्तु ऐसे मनुष्यकी अन्तरेन्द्रियों में कुछ अन्तर नहींपड़ता है सो यहबात बहुत अवश्यहै कि वैद्यलोग आकर्षणक्रियाकी सम्पूर्णशाखाओं को जाने मेरा उपदेश वैद्यों के वास्ते यहीहै कि जो और किसी इच्छासे नहीं जहांतक होसके केवल जानेकी इच्छासे आकर्षणीयविद्या को सीखें और विश्वासहै कि चाहे उनको ऐसीआशा न हो मालूम होगा कि किसी न किसी रोगी को इस क्रिया से लाभहुआहै यदि ऐसाहो तो वहरोगों के चिकित्सा के वास्ते इस अमल का बरताव करेंगे और जबतक कि इसविद्या के सम्पूर्ण कौतुक मालूम नहों तबतक सम्पूर्ण लाभों के मालूम होनेकी आशा नहीं होसक्ती परन्तु जहां और इलाज से लाभनहो वहां इसक्रिया का बरताव अवश्य करना चाहिये जितना इसका अमल ज़ियादा होगा उतनाहीं इसविद्या से अधिक ज्ञानहोगा उतनेही इसके लाभ मालूम होंगे ॥

और जो लाभ इसबिद्या के हैं उनके लिये मैं बहुतकुछनहीं

कहसक्ता हूं परन्तु मेरे ध्यानमें यह बात आतीहै कि यह विद्या इसलिये बहुतकामआसकेगी कि जो बोलते जीव और शरीरमें सम्बन्धहै उसको मालूम करें और जिन नियमों पर बलकरने वाली शक्तिका कर्म्म होताहै उन रीतों के बरनं बोलते जीव के मूलके खोजने में कामआवेगा कई बुद्धिमानों का यह वचन है कि संकल्पकरने की शक्ति ब्रह्माण्ड के कार्य्यका एक आवश्यक परिणामहै और कइयोंका यह वचनहै कि बोलता जीव एकभिन्न पदार्थहै जो ब्रह्माण्ड को औजार की तरह अपनेकार्य के काममें लाताहै कोई वचन उनमें से ठीकहो मुझको सन्देह नहीं है कि जो लक्षण ब्रह्माण्डके आकर्षणकी क्रियाके कारण प्रकट होतेहैं उनकेदेखनेसे संकल्पविचार और अन्य अन्दरकी चैतन्यशक्तियों के नियम अच्छीतरह मालूम होंगे जैसे कई धारक ऐसे होते हैं कि जो ब्रह्माण्ड या भीतर की चैतन्यता जैसे विचारकरने की शक्ति या स्मरणशक्ति और समझनेका बल किसीसमय अपना कामकरे किन्तु पट्ठोंका कार्य और ब्रह्माण्डका प्रत्येक कर्मठीक२ बतादेते हैं कि ब्रह्माण्ड का अमुकखण्ड चलरहा है कई धारक ऐसे होते हैं कि जो विपर्यय ब्रह्माण्ड में होताहै वह बतादेते हैं सो इसबातमें संदेह नहींहोसक्ताहै कि आकर्षण क्रिया के द्वारा इस बोलते जीवकी बहुतसी बातें मालूम होसक्ती हैं में पहिले लिखचुकाहूं कि बोलते जीव और मूल का खोजकरना ऐसा है कि मनुष्यकी बुद्धिसे बाहर है परन्तु जो मूल मालूम न होसके जोनियम ऐसेहैं जिनसे परस्पर आत्मा और मूलमें सम्बन्ध है वह तो खोजने के लायक ज़रूर हैं तो हम मानते हैं कि हमको बोलते जीवका मूल मालूम नहीं है और न कभी मालूम होगा पर हमको चाहिये कि जोरीतें हमारे अधिकारमें हैं उनके द्वारा इस बोलतेजीवके कर्मोंको मालूम करें ॥

परोक्षदर्शन और विचार संयोगके लाभोंका जानना बहुत सुगम बातहै यह आकर्षण क्रिया के दूर और गुप्त मित्रों और बांधवों के खबरके मालूमकरने के लिये काममें आसक्तेहैं वरन रोज २ इसतरह काम में आतेहैं इन लक्षणोंसे यह भी लाभ निकलसक्ता है वरन हरदिन निकलता है कि चोरी माल या गुप्तहुये कागजोंकी खबर मालूमकरें दूसरे भाग में इसहाल के कुछ उदाहरणलिखे जावेंगे मैंऊपर कहचुकाहूं कि धारककोजो परोक्षदर्शित्व की शक्ति प्राप्त होती है उसके द्वारा ऐतिहासिक संदिग्ध वृत्तान्त स्पष्ट होसक्तेहैं घोंघोंके द्वारा जो खबर पहुंचाने का वर्णन ऊपर किया गयाहै उससे चैतन्य शक्तिकी ऐक्यताका लाभ प्रकटहै और मैं यहभी वर्णन करचुकाहू कि जबधारकपर प्रकाशमान दशा होतीहै तो वहलोगोंके शरीरके अन्दरकाहाल बतासक्ताहै और इससेवैद्योंको रोगोंकी चिकित्सामें बहुतलाभ होताहै अभी इस विद्याकी फरंगिस्तान में अच्छी वृद्धि नहींहै क्योंकि जो उसके लाभहैं वहभी अच्छीतरह प्रसिद्ध नहीं हुयेहैं परन्तु ज्यों २ इस विद्याकी वृद्धि होती जावेगी उतनेही इसके लाभ मालूमहोते जावेंगे औरसंसारभरमें इसका लाभ होगा ॥

अभी मैंने इस विद्या के बड़े लाभका वर्णन नहीं किया है इस विद्या से बहुत सी ऐसी बातें स्पष्ट होसक्ती हैं जिनको मूर्ख लोग सिद्धि और इससंसारकी बातोंसे बाहर समझते थे और जो कि उनका मुख्य वृत्तान्त मुख्य २ मनुष्यों जैसे जादूगरों और ज्योतिषियों और वैद्योंको मालूमथा और यहलोग अपनी विद्याको प्रकटनहीं करतेथे वरनकई उनमेंसे प्रायःयह समझते थे कि हमको ऐसी शक्तियां मिली हैं जो इससंसार के नियमों से बाहरहैं इसलिये उनका नाम जादू रक्खागया बहुत प्रकार का जादू और शकुनका देखना इसमें समझागया और जितना

हमको आत्माकर्षण विद्या में बोध होता जावेगा उतनाही हम को मालूम होता जावेगा कि वह सब बातें जो जादूमें गिनी जाती हैं वास्तव में उनके होनेका दैविक हेतु है और किसी न किसी आकर्षणकी क्रियाके लक्षणमें प्रकट होतेहैं शिला पूजकों के शिवालोंमें रोगोंकी चिकित्सा और शकुनके अवलोकन करने और कथनसे मिला हुआथा और इनदोनों बातोंके मिलेहोनेका सम्पूर्ण संसार को निश्चय था मैंने ऊपर आकर्षणकी क्रियाका यह लक्षण वर्णन किया है कि परोक्षदर्शित्व और भविष्यत् कथनका अभ्यास प्राप्त होताहै तो यह बात सुगमतासे विचार में आतीहै कि मन्दिरोंके पूजक इस क्रियाके लक्षण को जानते थे और यह क्रिया स्त्रियों पर किया करते थे क्योंकि आकर्षण की क्रिया स्त्रियों पर जल्दी होजाती है और जबयह क्रिया यों होजाती थी तो उनपर परोक्षदर्शित्व और प्रकाशमान दशा उपजती थी जिसस्त्री पर क्रिया करते थे उसको चौकी पर बिठा देतेथे प्रायः इस चौकीमें कुछ आकर्षणकी वस्तु भरदेतेहों और उसको धूनी देकर और प्रायः हाथोंसे और दृष्टिसे क्रियाकरके जब उसपर आकर्षणकीदशा बलवान् होजातीथी तोउससेहाल पूछते थे और उससमय यह स्त्री रोगियों की बीमारी का हाल और जो बातें आगे होने वाली हैं उनकाहालबता देतेथे परजो प्रकाशमानदशा उत्पन्ननहींहोतीथी तो छलक्रियाकरतेथे परन्तु यहबात अनुमानमें नहींआती कि जबतक कुछ मूल न था तब तकएकसंसारको ऐसे शकुन कहने और भविष्यत्कथन में क्यों कर निश्चय होसक्ता था॥

इसमें सन्देह नहीं कि यूनान मिसर और हिन्दुस्तान के शिवलों के पण्डोंको इस विद्यासे ज्ञान था और यह लोग और लोगोंसेइस विद्याकोछिपारखतेथे और उसकीबहुतरक्षा करतेथे

यह बात तो ठीकहै कि मिसिरके पण्डों को पदार्थ विद्या जैसे ज्योतिष वैद्यक आदिमें अच्छा बोधथा और प्रारंभमें यूनानके लोग उनसे जाकर यह विद्या सीखा करतेथे और आत्मा आकर्षण विद्या के लक्षण अपने आप बहुधा उपजते हैं ऐसे बुद्धिमान् मनुष्य जैसे मिसरके पण्डेथे इस विद्यासे अज्ञान न होंगे प्रकटहै कि जब कभी किसी मनुष्य पर ऐसी परोक्ष दर्शन की अवस्था अपने आपप्रकट होजातीथी और यहमनुष्य इसशक्ति से गुप्त मनुष्य और वस्तुका हाल बताता था और जो बातें आगे होनेवाली थीं उनका होना पहलेही बता देता था तो सर्वजन अवश्य समझते थे कि उसको देवताओं का इष्टहै चाहे पण्डोंको जो विद्या बुद्धि में अच्छा बोध रखतेथे मुख्य वृत्तान्त मालूमहो जाताथा और मुख्यवृत्तान्तके मालूम होनेके कारणऐसी कृत्रिम अवस्था उपजालेते थे और फिर उससे लाभ उठातेथे और इस क्रियाका करलेना सुगम था क्योंकि अच्छी तरहसे सिद्धहै कि कोई मनुष्य ऐसानहीं कि जिसपर आकर्षणकी क्रिया न होसके इन पण्डोंनेचालाकी यह रक्खीथी किअपनी जातिकेसिवा और किसी जातिको यह विद्या नहीं सिखातेथे न सीखने देतेथे वरन जोकोई इस विद्याके सीखनेके लिये प्रयत्न करनी चाहता था तोउसको अपराधी ठहराते थे ॥

मैंने एक पुस्तकके लिखनेकी सामग्री इकट्ठीकी थी जिसमें प्राचीन समय के सम्पूर्ण जादूगरों के हाल को लिखना चाहा था उस पुस्तकमें मैं सिद्ध करदेता कि जितना जादू पुराने लोग किया करते थे सब आकर्षणकी क्रियाके लक्षणों मेंसेथा परन्तु अभी मुझको उस पुस्तक के लिखने का अच्छा अवकाश नहीं मिला है और अब मैंने सुना है कि एक और मनुष्य जिसको इस विद्यामें मुझसे बहुत जियादह बोधहै ऐसी पुस्तक लिखते

हैं क्योंकि मैंने उस पुस्तक के लिखने का उद्योग छोड़ दिया अबमैं फिर लिखताहूं कि जितनी बातें जादू और शकुन कहने कीहैं वह उन आकर्षण विद्याके मूलोंसे स्पष्ट होसक्तीहैं जिनका मैंने इस पुस्तकमें क्रम पूर्वक वर्णनकियाहै तथाच मैं ऊपरलिख चुकाहूं कि भविष्यद्वाक्य और शकुन कथन जो मिसर और हिन्दुस्तान के शवलोंमें होते थे वह सबपरोक्ष दर्शनपरघटितथे मिसरमें अबतक इस प्रकारकी शकुन कथन और भविष्यद्वाक्य होताहै और रोगीके रोगका हाल बताया जाता है॥

आईनाजादू और कुस्टलजादूकेविषयमें जोकुछ लिखाहुआ है उन सब बातोंका भी यही कारणहै एक साहबने एकपुस्तक लिखीहै जिसमें उन्होंने पुराने जादुओं का सब भेद लिखा है इस पुस्तकके निकलने का फरंगिस्तानभर बाटदेखताहै उसमें उक्त साहब ने आइनै जादू का भी हाल लिखा है बहुत से कुस्टल जादू अब वर्त्तमान हैं और उनके लिये खोज होरहाहै और पूर्ण विश्वासहै कि इस खोजसे विद्याके मूलप्रकट होंगे॥

संसारमें लोगोंको जादूका विश्वासहै और यहविश्वासहै कि कई मनुष्यबिल्कुल गुप्त होजाते हैं या जिस जानवरकी शकल चाहें बनजातेहैंयाहवामेंचाहें सफरकरसक्ते हैं या चाहेंतो भूतोंसे बातें करसक्ते हैं यह सब बातें आकर्षणकी क्रियासे उपज सक्ती हैं तथाच ल्यूससाहब और डाक्टर डारलिंगसाहब को अधिकारहै कि सामने खड़ेहुयेहैं परन्तु जिस मनुष्य पर वह क्रिया करतेहैं चाहे वहचैतन्य अवस्थामेंहो परन्तुउसको कभी दिखाई नहीं देते या उनकी इच्छा के अनुसार धारक को कोई जानवर दिखाई देतेहैं भूत योनिसे बातें करना गुरु इन्द्रिय वैकल्यदशा में प्राप्त होता है यह बात प्रसिद्ध है कि बहुत से जादूगरों पर प्राचीन समयमें जादूगरीका अपराध लगायागया और उन्होंने

जादूगरीसे इन्कार किया और चाहे उनके प्राण नष्टहुये परन्तु वह जादूसे इन्कार करतेथे परन्तु जो२हालउनकेवर्णन किये जाते थे उनको मानतेथे परन्तु वह यहकहतेथे कि यहबातेंजादूकी नहीं हैं और उन हालों को वह इसलिये मानते थे कि वास्तव में वह हालठीक होतेथे जो कुछ मूर्खता इसव्यवहारमें है वह आत्माकर्षणविद्यासे बिल्कुल दूरहोजावेगा और जब लोगदेखेंगे कि जोकुछ बातें होतीहैं वास्तवमें उनके होने के दैविक कारण हैं तो दुर्विचार और मूर्खता अवश्य नष्टहोगी॥

आकर्षणकी विद्यासे एक और व्यवहारमें मूर्खता दूरहोगई है लोगोंको जो सूरतें और भयदिखाई देते हैं उनका कारण मालूम होगया हैं इनदिनों इसबातमें संदेह नहीं है कि किसी समय परोक्ष दर्शन की अवस्थामें अपने आप भय दायकचीजें मालूम होती हैं प्रकाशमान दशाके कारण गुप्त मनुष्य शरीर सहित दिखाई देते हैं वरन जो कुछ उससमय काम करतेहों वह काम करतेहुये दीखतेहैं कभी ऐसाहोताहै कि जीमेंविचार आजानेके कारण मुर्दा आदमी ऐसाही दिखाई देता है कि मानों शरीर समेत जीताहै एक और प्रकारकी हवाई सूरतें केवल क़बरोंकी उडायलकी रोशनीके कारण दिखाई देती हैं बहुधा एक प्रकाश का बनाहुआ शरीर मनुष्यके डीलके बराबर दिखाई देता है परन्तु कुछ उसमें जोड़ोंकी शकल नहीं होती परन्तु यह बात सुगमता से ध्यानमें आसक्ती है कि जब कोई मनुष्य उस प्रकाश को देखकर भय खाजावे तो भयसे उस प्रकाश में आदमीकीसी शकल दिखाई देती है और रीशनबेक साहबका यह वचन है कि भूतोंके दिखाई देनेका यही कारण है और भूतोंकी सूरत बहुधा सपेद रंगकी दिखाईदेतीहै रीशनबेक साहब ने लिखाहै कि एक बागमें एक लड़कने एकजगह

एकस्त्रीका स्वरूप देखा कि एक हाथ उसका उसकी छातीपर रक्खा हुआथा और दूसरा हाथ एक पसली की ओर लटक रहाथा जब उस जगह को खोदा तो एक लाशका चिह्न वहांसे पायागया जो पृथ्वीमें दबीहुई थी और पूछने पर मालूम हुआ कि एक महामारीमें कई वर्ष पहिले एक स्त्रीमरगईथी औरउस जगह गाड़ीहुई थी जब वह लड़का उस शकल को देखरहाथा तो उससे एक दफे दो दफे पूंछागया और वह कहताथा कि मैं अपने साम्हने उस शकल को देखरहाहूं मेरी समझ में इस शकलका मनुष्यके स्वरूपका देखना उस लड़केका कुछ संकल्प ही नहीं था निश्चयहै कि आकर्षण विद्याके अधिक खोजकरने से यहसिद्धहो कि जो उडायलकी रोशनी आदमीकी लाशमेंसे निकलतीहै उस रोशनीकी शकल बिल्कुल उस शरीरके स्वरूप कीसी होतीहै॥

परन्तु जो कि कई शकलोंका दिखाई देना ऊपरके वर्णनसे स्पष्टहोसक्ता है परन्तु सम्पूर्ण स्वरूपोंके दिखाईदेनेकी यहहेतु ठीकनहीं बहुत वर्णन ऐसेहैं कि एक दो मूर्ख आदमियोंने नहीं वरन दो या तीन पढ़ेहुये और शिक्षा पायेहुये लोगों ने किसी मरते हुये या मुरदे आदमी की मनुष्यका स्वरूप शरीरसहित और मुख्य बनावट और सजावट में देखा है कि केवल एक थोड़ीसी रोशनी दिखाई दी हो बरन किसीसमय इन शकलों ने किसी मुख्य प्रयोजनसे बातभी की है इसके दृष्टान्त दूसरे भागमें लिखे जावेंगे मैंने दूसरे भागमें यहभी वर्णन किया है कि बहुतसे जवान आदमी एक मेज़के पास बैठेहुयेथे उन सब को एक आदमीकी शकल दिखाई थी और एक मनुष्य इनमें से जो बैठेहुयेथे ऐसाथा कि उसने कभी उस मनुष्यको जिसका स्वरूप दिखाई दियाथा नहीं देखाथा ऐसे अवलोकनोंके कारण

केवल उस दशामें स्पष्टहो सकेंगे कि जब जीवाकर्षण विद्या की अधिक वृद्धिहो और इस विद्याकी प्रतिशाखामें पूर्ण बोधहो मेरी मति इसओर झुकीहै कि आकर्षणकी विद्यासे एक कुंजी ऐसी शकलोंके दिखाईदेनेके सबबों केखोलनेके लिये मिलजावे-गी किसी समय नेत्र ज्योतिकी नाड़ियोंके कुंठित होनेके कारण हवाई सूरतें दिखने लगतीहैं ॥

इसमें संदेह नहीं मालूम होता कि आकर्षणीय क्रियासे दूनीदृष्टि उत्पन्न होतीहै अर्थात् कभी अपने आप प्रकाशमान दशाहोतीहै इस कारण इसप्रकारकी दृष्टि उपजती है दूनीनेत्र ज्योतिके यह अर्थहैं कि एक आदमी बैठाहुआ होशमें बातेंकर रहाहै और जगारहै जैसेबैठे २ वह कहने लगता है किअमुक मनुष्य अमुकदिन आवेगा कारण यह मालूम होताहै कि जब वह चैतन्य अवस्थामेंहै तो उसमें एक अन्य प्रकाशमान दशा उपजती है और इस प्रकाशमान दशाके कारण वह मुसाफिर कोमार्गमें कहीं दूरीपर सफर करतेहुये देखताहै और भविष्य-त्कथनानुसार उसका स्वरूप और आनेका दिन बतादेता है मुझको इसबातकी परीक्षाहुईहै कि कईमनुष्योंमें अधिकशोचके कारणइसतरहकी प्रकाशमानदशा उपजती हैं औरऐसे मनुष्य उसको दिखाई देनेलगतेहैं जिनको वह जानताभी नहीं तथाच एकमनुष्यने जिसपर ऐसीदशा बहुधाउत्पन्नहोती मुझको बहुत दूरीसे इस तरह देखताथा चाहे उसने मुझे पहिले कभी नहीं देखाथा वरन केवल एक मनुष्यसे कि उसमनुष्यनेभी मुझे उस समय तक कभी नहीं देखाथा मेरावर्णनसुनाया मैंतो यह कह चुकाहूं कि आकर्षण स्वापमें इसप्रकारकी परोक्ष दर्शित्व प्राप्त होजातीहै और आश्चर्यके लायकयहबातहै कि आकर्षणस्वाप बिना चैतन्यावस्था मेंभी कई मनुष्योंकोऐसी दृष्टिप्राप्तहोतीहै ॥

जहां पर मैंने प्रकाशमान दशाका वर्णन कियाथा वहां मैंने यह हाल विस्तार से नहीं लिखाथा कि मेजर विकली साहब अपने धारकों से इसके विना कि उनपर आकर्षण स्वापउपजे जाग्रत चैतन्यावस्थामें उनसे सन्दूकमें कुफ़लसे बंद किये हुये क़ागज़ ऐसे पढ़वा देते हैं कि जिन कागज़ोंके विषयों को कोई निकटवर्त्ती मनुष्यों में से नहीं जानता मेज़र बिकली साहबने पढ़ेहुये नवासी आदमियों पर इस प्रकारकी क्रियाकीहै मेज़र विकली साहब के कई धारकोंका दूसरे भागमें वर्णन किया जावेगा और आगेबढ़कर क्रियाकी उस युक्तिक़ाभी वर्णनकिया जावेगा जिससे मेज़र विकली साहब यह लक्षण उपजाते हैं॥

इस दूनी दृष्टिका कर्म भविष्य वृत्तातों के लिये भीहोताहै इस्काटलैंड के पहाड़ी देशमें एक भविष्यद्वाक्य समयसे चला आताथा और सबकोउसमें निश्चयथा कि रईस सफ़ैरैनियाकी पीढ़ी ज़रूर एकऐसे मनुष्य पर आकर पूर्ण होजावेगी जोबहरा और गूंगाहोगा जो सबसे पिछला रईस था उसको मैंने देखा कि अच्छी तरह बातनहीं करसक्ताथा और अर्द्धाङ्गरोगीथा चाहे लड़कपन में यह मनुष्य बहुत योग्यथा और किसी प्रकारका रोग उसको न था इस रईसके कई बेटेथे परन्तु सब उसके जीतेजीमरगये और अब वह घराना बिल्कुल नष्ट होगया है मुझको यह मालूम नहींहै कि यह भविष्यद्वाक्य कितने समय से प्रसिद्धथा परन्तु मैं इतनी बात जानता हूं कि जब यह बात हुई उससे बहुत पहिले प्रसिद्ध थी और तमाशा यह कि जिस मनुष्यने यह भविष्य वचन कहा था उसका यह भी वाक्यथा कि कई और घरानों के रईसोंके स्वभाव में भी उसीसमय में मुख्य लक्षण उपजेंगे तथाच यह भी जिस तरह वर्णन किया गयाथा उसी तरह पर हुआ एक मेरे मित्रने वर्णन कियाहै कि

एकबेरमें जब उसस्थान को गया जहां सैफेरेनियाका क़िलाथा तो यह भविष्यद्वाक्य मैंने विस्तार से सुनाथा उस समय तक उक्त रईसके कई पुत्र जीते और आरोग्यथे ॥

एक फ़ज़वट साहबका भविष्य बचन फ़्रांसके देशमें प्रसिद्ध है फ़्रांसदेश के राज्य में विपर्यय होने से पहिले इन साहबने विस्तार पूर्वक वृत्तान्त वर्णन कियेथे और जो २ बातें बहुत से अमीर और स्त्रियों बरन बादशाह आदिको होने वाली थीं वहसब कईवर्ष पहिले बतादीथीं जब यहभविष्य वचनहुआथा तब फ़्रांसके राज्यमें उत्तमताकी आशाथी इसकाचरचा इंगलिस्तानमें जगह २ अमीरोंमें उससमय तक हुआथा परंतुकिसी को सन्देह भी नहींहोता था कि यहबात वास्तवमें जैसीवर्णन कीगईहै वैसीही होगी अबतक बहुत आदमी जीते हैं जिन्होंने उससमय इस भविष्य बचनका वर्णन कियाथा यहवाक्य बहुधा छपकर प्रसिद्ध हुआहै और उसका विस्तारपूर्वक वृत्तान्त दूसरे भागमें लिखाजावेगा इसवृत्तांत में केवल भविष्यकथन काही वर्णन नहींहै बिरन भविष्यवक्ता काभी वर्णनहै कहते हैं कि फ़ज़वटसाहब बहुधा भबिष्यवाक्य कियाकरते थे और जब कहाकरते थे तब उनपर निद्राकी दशा ऐसीहोती थी जो साधारण निद्रासे भिन्नहोतीथी यह अवस्था या तो आकर्षणस्वाप होताहोगा या ऐसे गहरेध्यानकी दशाहोगी जिसमेंप्रकाशमान दशा उपजती थी जरमनी के देश में एक परगना दस्तकैलिया नामी है वहां बहुत मनुष्य भविष्यद्वक्ता हुये हैं उनके होनेवाले बचन ऐसेहैं कि मानों इसतरह पर बर्णन कियागयाहै कि जैसे कोई किसी व्यवहार को अपनी आंखों से साफ़ २ देखरहाहो उस देशमें इनलोगों को भूतदेखनेवाले कहतेहैं जरमनीमें यह भविष्यवाक्यहै कि जब लोहे की सड़कें तय्यारहोंगी तो बड़ा

विपर्य्यंयहोगा और अकस्मात् एक जवानआदमी पैदाहोगा जो अन्तको विजय करके बादशाह होगा वर्णन है कि लड़ाई भी ऐसेसमय में होगी कि जबचारोंओर आनन्दहोगा और किसी को युद्धकासन्देहभी न होगा और अधिक विस्तारपूर्वक वृत्तान्त इसका लिखना भी अवश्य नहीं है केवल इतनी बात मैं कहताहूं कि जब यह भविष्यबचन का कागज प्रसिद्धहुआ उस समय से अबतक फरंगिस्तान में ऐसीदशाहै जिससे इसभविष्य वचन के पूरा होने का भय होताहै परन्तु समयके बीतने से सूचितहोगा कि यहवाक्यसत्यथा या असत्यपरंतुयहबाततो आश्चर्यकीहै कि यह भविष्यद्वाक्यसमयसेप्रसिद्धहै और लोगों को उसपर विश्वास है--मैं इसबात को मानताहूं कि क भविष्यद्वाक्य ऐसे होतेहैं कि समयकी दशा देखकर और ऐतिहासिक लेखसे ऐसेलोग जिनकी बुद्धि अति उत्तम होतीहै मनुष्य मुख्य परिणाम निकाललेते हैं परन्तुजोभविष्य बचन सैफेरैनियारईसके घरानेके विषयमें था या जो भविष्यकज़वट साहबने कहा या दस्तकेलियाके भूत देखनेवालोंने होनेवाली बातेंबखानीहैं उनपर यह बचन ठीकनहींआता॥

ऐसे आदमी जैसे निपोलियन बोनापार्टथा इसप्रकार का एक एक भविष्यत्कथन कहगये हैं कि एकसमयमें सम्पूर्णफरंगिस्तान में एकबड़ा युद्धहोगा और उसका परिणाम यहहोगा कि संपूर्ण फरंगिस्तान में बहुत मनुष्यों के समूहका राज्य होजावेगा या बादशाहोंको पूर्ण अधिकार होजावेगा परन्तु इस प्रकारके भविष्यवाक्य चाहे ऐतिहासिक लेख और देशी व्यवहारों की बुद्धिमानी के द्वारा परिणाम निकालकरली हैं तौभी ऐसे बचन मुख्य २ विषयों के लिये और बिस्तार से नहींहोते हैं बहुधा एक बात कहीजाती है और साफ २ नहीं कहीजाती

परन्तु भविष्यवाक्योंका ऊपर वर्णन किया गया वह विस्तार पूर्वकहै और उनकेलियेयहवर्णनहै कि वहवाक्यस्वप्नयाध्याना-वस्थामें कहेगये थे या भविष्यवक्ता आगेके वृत्तान्तोंकोप्रत्यक्ष अपने सामने देखता था और किसी दूसरी परीक्षा से नहींथीं होसक्ताहै कि जो ऐसे भविष्य अवलोकन वास्तव में भी होंतो प्रायः कल्पितवार्त्ताओंसे मिलेहोंय जो भविष्यदर्शी को पहिले विचार समझमें आवें या उसकी समझमें विचार उपजायेगये हों वह विचार मिलकर ऐसे भविष्यदर्शन को बिगाड़ देते हैं परन्तु जिनवचनों का मैंने ऊपर वर्णनकिया उनपर यह सन्देह नहीं होसक्ताहै सोमेरीअनुमतिहै कि झूठेभविष्य वचनभीहोतेहैं परन्तु दूर्नीदृष्टि और सत्य भविष्य कथनभीअवश्यहोताहै और इसके होनेका कारण आत्माकर्षण विद्यासे स्पष्टहोसक्ता है ॥

मैं आपको आगेके पत्र में बताऊंगा कि आकर्षणविद्या के होनेके हेतु कुछ न कुछ स्पष्टहोसक्ते हैं यह तो मैं आपको पहले बताचुकाहूं कि किसीपदार्थ का मुख्यहेतु और मूल कभी नहीं मालूम होसक्ताहै परन्तु इतनीबात होसक्तीहै कि जिन नियमों के अनुसार वह होते हैं उनरीतों को मालूम करसक्ते हैं तिसी प्रकार पृथ्वी और अन्य वस्तुओं की खिँचावटका हेतु औरमूल कोई नहींजानता यहबात हम जानते हैं कि सूर्य पृथ्वी और पृथ्वी सूर्यको खींचतेहैं और आकर्षणशक्ति वस्तुकी मुटाई और दूरीके अनुसार होती है परन्तु इससे अधिक हम कुछ नहीं जानते न जानसक्ते हैं हम यहबात नहींकहसक्ते कि सूर्य और पृथ्वी एक दूसरेको क्यों खींचतेहैं न हमको उसआकर्षण बल का मूल मालूमहोताहै न यहजानते हैं कि किन वसीलों से इस आकर्षण का कर्म्महोताहै केवल इतनी बात जानते हैं कि यह कार्य अवश्य होताहै किसी विद्या में हमारा बोध इससे अधिक

नहीं और आगेके पत्र में मैं आपको बताऊंगा कि जितनी बातें और विद्या जैसे बिजली और चुम्बक आदिमें मालूम होसक्ती हैं उतनीही आत्माकर्षण विद्या में होसक्तीहै ॥

—*—

तेरहवांपत्र ॥

अब आत्माकर्षण के मूलोंके हेतु जो ऊपर वर्णन कियेगये आपुसमें मिलाकर आपको उनमूलों के होनेके हेतुके समझाने में प्रयत्न करताहूं सबजानते हैं कि मिस्मिरसाहब ने इन मूलों के होनेके कारण यहठाने हैं कि एक पतलीचीज़ के गुणसे यह बातें होतीहैं इसकानाम मिस्मिरसाहब ने मिकनातीसी अर्थात् आकर्षणशक्ति रक्खाथा परन्तु उक्तसाहब ने इसमें और दूर्णा-कर्षणशक्तिमें जिससे कृत्रिम चुम्बक लोहेके रेज़ों को खींचताहै और आकर्षणीय सूचीको जब लटकावें तो दक्षिणोत्तर होजाती है कुछ अन्तर नहीं कियाथा जोकि लोगोंने देखा कि मनुष्य का हाथ लोहेके रेज़ोंको नहीं खींचसक्ताहै न किसी सुईमें यह गुण उपजासक्ता है कि ध्रुव मत्स्ययन्त्रानुसार उसका मुख दक्षिण उत्तर होजावे इसलिये लोगोंने उचितशोच बिना यह परिणाम निकाललिया कि मनुष्यके शरीरमें आकर्षणशक्ति का गुणनहीं होता और मिस्मिरसाहब का वचन बिल्कुल झूठथा और जब यहबात हुई तो जो मूल मिस्मिरसाहबने मालूमकिये थे उनको लोगोंने नहींमाना और उनसे इन्कारकिया इसमें सन्देहनहीं है कि इसपरिणाम के निकलने में मिस्मिरसाहब और उनके शिष्योंकीबड़ीभूलहै उन्होंने अपनीविद्याको छिपारक्खाथा और अनुमानकीहुई बातोंको जिनकाअभीतक अच्छीतरहखोज नहीं हुआथा अतिनिश्चय पूर्वक प्रकटकिया था और मिस्मिरसाहब

केलिये यहभी अपराधहै कि उन्होंने अपनेनिजलाभ की ओर अधिक ध्यानकिया और विद्या की शाखा की ओर इतनाध्यान नहीं किया जितना उचितथा अन्त यहहुआ कि लोगोंको उनके बयनकी ओर शत्रुताहोगई और मुख्य वृत्तांत के मालूम होने में ढीलहुई फिर फ्रांसकेदेश में एकसम्मति इसविद्याके विषय मेंहुई चाहेथोड़ी २बातें उसवार्त्तामें ठीकमालूम हुईं पर जो कि सभ्यों को आकर्षणक्रिया के हरएक लक्षण के अवलोकन का समय नहीं मिला इसलिये उन्होंने जो रिपोर्ट की वह इसविद्या के लिये अच्छीनहींथी परन्तु कईमनुष्योंने उसरिपोर्ट की हानियां सूचितकी हैं और अब उसरिपोर्टका कोईध्यान नहीं करता॥

फिर मारकोसऔफसाईगर जो एक बड़ारईस था मिस्मिर-साहब की रीतिपर परीक्षा करतारहा और उन्होंने प्रकाशमान दशा उपजाई और इसक्रियासे रोगोंकी चिकित्साभी करतेरहे और डाक्टरसाहब की परीक्षासे भी यहबात सूचितहुई किकई बाह्येंद्रियों मेंसे इन्द्रियां अपने आप कभी२ पक्वाशय में बदल जाती हैं और सबदेशों के वैद्य गुप्तरीतिसे इसविद्या के खोजमें लगेरहे परन्तु उन्होंने केवल उसका वर्त्ताव रोगोंको चिकित्सा मेंकिया किसीने भी विद्याका खोज न किया अन्तको पैरनरी-शनवेक साहब जो आस्टरिया के रईस हैं सन् १८४३ और ४४ ई० में अकस्मात् इसविद्या के खोजमें लगे इन साहब में कई गुणथे एकतो यहकि वह बड़े विद्वान्थे दूसरे यहकि उनको परीक्षा करने का अच्छा अभ्यासथा तीसरे यहकि उनकी बुद्धि स्थिर थी चौथे यहकि उनके स्वभाव में धैर्य्य और संतोष बहुत था और जो बातें उनको मालूम होतीथीं उनसे परिणाम निकालने में बहुतरक्षा करतेथे और पांचवें यह किजो कुछहाल उनको मालूमहोताथा उसको ठीक और सचाई से वर्णनकरते

थे इसविद्या का सुभाग्य था कि ऐसे मनुष्य को उसकी ओर ध्यानहोगया जो परीक्षायें उक्तसाहबने कीं इसप्रकारकीथीं कि कृत्रिमचुम्बक और क्रिस्टल और मनुष्यकेहाथका प्रभावलोगों पर चैतन्यावस्था और जाग्रतदशा में देखते थे कि क्याहोताहै उनकी इच्छा यहथी कि प्रारम्भसे खोज करना शुरूकरें और जिस तरहपर विद्या के व्यवहारों में क्रमपूर्वक खोज करना उचित है उसी तरह करें॥

जरमनी में उससमय में मिस्मिर साहबके विचारों के विरुद्ध सर्व्व विद्वानों को शत्रुताथी तथाच रीशनबेकसाहबने जब खोजकरना शुरूकिया तो उनको भी ऐसीही शत्रुताथी परन्तु थोड़ाही खोज करने के उपरांत उनकोकई वहीबातें माननीपड़ीं जिनके लिये उनको दुश्मनी थी वहबातें इस प्रकार की हैं कि कृत्रिमाकर्षण शक्तिका मनुष्य के शरीरपर प्रभाव होताहै—कि पानी पर आकर्षण की क्रिया होसक्ती है और इस पानी और साधारण जलको धारक पहिचानता है—कि मनुष्य के हाथ में आकर्षण का गुण है और उसका प्रभाव होता है और हाथ से आकर्षण का गुण पानी में ऐसाही पैदाहोताहै जैसे कृत्रिमचुम्बक के द्वाराहोता है और यहबात कि कारक की उंगलियोंमें से रोशनी निकलतीहुई दिखाईदेती है उसकेपीछे उक्तसाहबने पांचसातवर्षतक खोजकिया और सौमनुष्योंपर परीक्षाकी और बड़ीबात साबित की कि जो रोशनी हलके स्वभाव के लगेहुये मनुष्योंको अँधेरे में दिखाई देती है केवल हाथहीसे नहीं निकलतीहै बरन कृत्रिमचुम्बक और क्रिस्टलसे और न्यून अधिक सम्पूर्ण वस्तुओं मेंसे निकलती है रीशनबेक साहबको यहबात भी मालूम हुईहै कि जब किसी मनुष्यपर अपने आप शयन जागरण अवस्था प्रबल होजातीहै तो यहरोशनी पहिलेसे और

भी अधिक दिखाई देती है उक्तसाहब को यहभी मालूम हुआ कि उष्णता और साधारण प्रकाश और अलक्टरसिटी और रसायनकेगुण और स्थावरपदार्थ और प्राणीमात्रोंमेंसे सबमेंसे एकसी रोशनीनिकलतीहै जैसीकृत्रिमचुम्बक औरमनुष्यकेहाथ में से निकलतीहै और यहबात भी उन्होंने मालूमकी कि इसरो- शनी से प्रभाव अंगीकार करना कुछ उपद्रव पहुंचीहुई अवस्था पर घटितनहींहै बरन आरोग्य मनुष्योंमेंभी यहबात पाईजाती है और तीन मनुष्योंमें से एक मनुष्य का स्वभाव अंगीकार करता अवश्यहोता है सदारोशनी तो सबको दिखाईनहीं देती परन्तु आकर्षण का गुण अवश्य होता है पूरे खोज के पीछे रीशनबेक साहब ने यह परिणाम निकाला कि एक मुख्यगुण संसारमें फैलाहुआ है और इससत्ताका नाम उक्तसाहबने उडा- यल रक्खा और उन्होंने इसबातको कि यह उडायलकी सत्ता मिस्मिर साहब के आकर्षण की सत्तासेमिलती है अन्तर इतना है कि उन्होंने इससत्ता और पूर्णाकर्षण की सत्ता में फर्क समझा और मिस्मिर साहबने कुछ फर्कनहीं समझा कृत्रिमचुम्बक में उडायल सत्ता पूर्णाकर्षणसत्ता से मिली है साधारण रोशनीमें रोशनीसे उष्णता में उष्णतासे अलक्टरसिटीसे विद्युत् सत्तामें मिली है परन्तु क्रिस्टलों में यह सत्ता अकेली है और जो अल- क्टरसिटीआदिहैं चाहे उनसेमिलतीहैं परन्तु वास्तवमेंभिन्न हैं॥

इससत्ता का नाम रखना कुछ ध्यान की बात नहींहै जो नाम चाहे रखलीजिये मैंने इससत्ता का नाम मिकनातीस रक्खा है बाणी अर्थात् जीवाकर्षण या आत्माकर्षण इसलिये रक्खा कि फरंगिस्तान में यहनाम प्रसिद्ध है और रीशनबेकसाहब ने जो उडायलका नाम रक्खा है तो यह नाम बहुत अच्छा है और कभी सन्देहयोग्य नहींहै क्योंकि इस नाम में किसीप्रकार की

अनुमति उसकेमूलके विषय में संबंध नहींरखती बाक़ीरहामूल सो उसकाहाल कुछ मालूम नहीं है इसीप्रकार उष्णता या अलक्टरसिटी या पूर्ण आकर्षण या रसायन कर्म्म या आकर्षण बल या वस्तुओं के बलकामूल हमको मालूम नहींहै चाहेआप इस सत्ता को कोईशक्ति समझिये जैसेहम खिंचावटकी शक्ति या संयोग का बल कहते हैं चाहिये आप इसको अलक्टरसिटी सत्तादि के सदृश कोई पतलीचीज़ समझें अथवा उसको कोई गुण जैसे उष्णता या रोशनी समझें—कई बुद्धिमानों का अनुमानहै कि उष्णता वास्तव में यह चीज़ है कि मूलके भागों में हिलनेकागुणहोताहै आपका जीचाहेतो उडायलकी सत्ताकोभी आप ऐसाही समझें सूर्य्यकेप्रकाशकोयह समझतेहैंकि एक अति श्रेष्ठसत्ता उस पतलीचीज़ के खंडोंमें हिलने से उपजता है जो आपकाजीचाहे तो उडायलको भी ऐसासमझलें होसक्ता है कि वास्तव में उसगुणका यहीमूलहो या नहो इनदिनोंहम केवल इतनीबातजानतेहैं किकईलक्षण उपजतेहैं औरमनुष्यका स्वभाव ऐसाबना है कि हम इन लक्षणों के प्रकट होनेका कारण किसी न किसी गुण ओर झुकातेहैं औरजबखोज कियागयातोजोगुण प्रसिद्धहैंजैसेउष्णता आदि उनसे इसउष्णताको अलगमानना पड़ता है और इसलियेउसका नाम अलग रक्खा गया संभव है कि आगे एकजड़ या मुख्यमूल मालूमहो जिससे यहसर्व्वसत्तायें प्रकटहोतीहों परन्तु जबतक कोई ऐसी जड़मालूमहो उत्तम है कि उडायलको सत्त को अलक्टरसिटी आदिकी सत्ताओं में नमिलावें नहीं तो खोजकरनेमें पेचपड़जावेगा इससत्ताको इसलिये अलग समझना चाहिये कि जो सर्व्व सत्ताओंका एकभी मूलहो तोभीइतनीबात तो अवश्य करनीपड़ेगी कि इनसत्ताओं को अलग २ उसमूल की शाखा मानना पड़ेगा॥

अब मैं आगे आत्माकर्षण के बदले उडायल का शब्द लिखा करूंगा औ आप अच्छीतरह समझलें कि इसउडायल और आत्माकर्षण सत्ताको मैं एक समझताहूं ॥

उष्णता और साधारण और अलक्टरसिटी के सदृश उडायलकी सत्ता सम्पूर्ण संसारमें फैली हुई है—पूर्णाकर्षण सत्ताको लोग समझतेथे कि केवलचुंबक और धातुओंमेंसे होतीहै परन्तु उस समय मेंभी पृथ्वीको एकबड़ा चुंबक मानना पड़ताथा फेरेही साहब एक नामीबुद्धिमान इंगलिस्तानमें हैं उन्होंने मालूम कियाहै कि एक आकर्षणशक्ति और है जिसकेकारण जो किसी बस्तुकोलटकावें तो आकर्षणक शिरकीओर सीधीरेखाबनजाती है इससे मालूम होता है कि पूर्णाकर्षण सत्ता सब बस्तुओं में होती है इनदिनों उक्त साहबने मालूमकियाहै कि आक्सजनगासको कृत्रिमचुंबक खैंचताहै तो ओक्सजनगास बायुकेगोले का एकखड है इससे सिद्ध है कि अभी असंख्य बातें पूर्णाकर्षण बिद्या में ऐसी हैं जो हमको मालूम नहीं हैं और आगे मालूम होंगी फेरेडीसाहब का खोज रीशनबेक साहब के खोज से मिलता है तथ च रीशनबेकसाहबको मालूमहुआ है कि हलके स्वभाव के मनुष्यों पर सम्पूर्ण बस्तुओंका प्रभाव होताहै और जिस तरह कृत्रिम चुंबक में से रोशनी निकलतीहुई दिखाई देती है उसीतरह सम्पूर्ण बस्तुओं में से रोशनी निकलती हुई दिखाई देती है ॥

जोकि उडायलकी सत्ता संसार भरमें फैलीहुई है इसलिये यह बिचार अवश्य होताहै कि उष्णता और साधारण रोशनी केसदृश यह सत्ताभी मनुष्यके शरीर पर प्रभाव करती है और इसबातका प्रमाण कि इसतरहका प्रभाव अवश्यहोताहै यहहै कि क्रिस्टलोंकाप्रभाव हलकेस्वभाववाले मनुष्योंपर होता है ॥

यह सत्ता जैसे उष्णता और रोशनी प्रकाशके सदृश संसार भरमें घूमतीहै और सम्पूर्ण पदार्थोंक अंदरभी जलती है प्रकाश से उडायलकीकमचालहै परन्तु मूलपदार्थोंमें उष्णतासेअधिक प्रवेश करतीहै,प्रसिद्ध सम्पूर्ण पदार्थोंके अन्दर उडायलसुगमता से जाताहै परन्तु रेशेदार चीजों के जाने में इतनी सुगमता नहींहोती जैसी बे रेशे पदार्थों से निकल जाने में होती है जैसे कपड़े और काग़ज़में उडायल सुगमता से नहीं जासक्तापरन्तु यह पदार्थ देरतक उमके प्रवेश होनेको नहीं रोकसक्ते उष्णता धातुओंके सिवाय और पदार्थोंमेंधीरे २ प्रवेशकरतीहै और अलक्टरसिटीकाभी उनवस्तुओंमेंजोधातुकी न हों कमहोताहै बरन धातु और कोयला और कई अन्य पदार्थोंमेंउसकाप्रवेशहोताहै॥

उडायल एक मुख्य अनुमानतक किसी वस्तुमें इकट्ठा किया जासक्ताहै परन्तु धीरे२ फिर निकलजाताहै जिसवस्तुमें उडायल भराजाताहै उसमें यहसत्ता अलक्टरसिटीसे अधिकदेरतक रहतीहै अलक्टरसिटीके गुणकीतरह उडायलभी ध्रुवोंकी ओर झुकताहै और सामने के ध्रुवोंमें उसका प्रभाव विपर्यय होताहै और उष्णता रोशनी और अलक्टरसिटी और पूर्णाकर्षण के सदृश उडायल बोझ पैदा करना चाहता है और प्रकट है कि इस सत्त के लक्षण इस बराबरकी दशाके विघ्न होनेपर घटित हैं नियम है कि जब कोई गरम चीज कहीं रक्खी जावे और गरमी उसमें न आवे ता गरमीकोदूरकरके जैसीदशा आसपास के चीजोंकी होतीहै वैसीही पैदाकरलेतीहै इसीतरह जिसचीज़ में उडायल भरा जाताहै उसकी निकटवर्त्ती वस्तुओं के सदृश दशा होजातीहै और जिस तरह पूर्णाकर्षणमें आकर्षणीय सत्ता उक्त सत्ताके फैलने के विपर्ययके कारण ध्रुवोंकी ओर झुकती है इसी तरह उडायलकी सत्ता भी ध्रुवोंके ओर झुकतीहै॥

निदान मैंने ऊपर उस सत्ताका मूल और मुख्य वृत्तान्त संक्षेपमें वर्णन करदिया जिसपर मेरीमतिमें आत्माकर्षण क्रिया केलक्षणोंका प्राकट्य घटितहै परन्तु जोकि मैंने यहबातभीकहीहै कि उडायलकीसत्ता अन्य प्रसिद्ध सत्ताओं जैसे अलकटरसिटी आदिमें समझनीचाहिये परन्तुहमकोवहरीतिंमालूमनहींहैं जिनके अनुसार उडायलकी सत्ताका कार्यहुआ करताहै जोपरीक्षायें उनलोगोंपरकीगईहैं जिनपरआकर्षणकी क्रियाकीजाती हैं वह परीक्षायेंविद्या के खोज को क्रमके साथ नहींकीगई हैं और जो परीक्षायें उनलोगोंपरहुईं जिनपर आकर्षणीय अवस्था अपनेआप उत्पन्नहोजातीहैं वहपरीक्षायें आकस्मिकऔर बुरीहोती हैं और जोकुछथोड़ासाहाल हमको मालूमहै तो केवल रीशनवेकसाहब केखोज से मालूम हुआ है कि उक्त साहब अपनी परीक्षायें ऐसे मनुष्योंपरकी हैं जो मुख्य और साधारण दशामें थे उक्तसाहब के खोज से पूरा खोज आगेकी जड़ रक्खी गईहै और चाहे यह बातहै कि इसविद्या के खोज में अति कठिनता है पहिले तो यह कठिनता है कि कारक को कुछ अभ्यास होताहै अपने शरीर के अभ्यास से अर्थात् अपने चेतकी सहायता से नहीं होताहै वरन धारक के चेतके द्वारा होताहै परन्तु जो ध्यान किया जावे तो मालूम होगा कि यह कोई परीक्षाके बेमूल होने का प्रमाण वास्तवमें नहींहै मुख्य करके उसदशामेंकि उक्त परीक्षायें रक्षा पूर्वक बहुत मनुष्यों परकीजावें ॥

सम्पूर्ण विद्याओं में बहुत बातें जिनसे खोज किया जाताहै अन्य मनुष्यों के वर्णन पर घटित होतीहैं और जो भूगोल और अन्यविद्याओंमें अन्य मनुष्योंके वर्णन पर परीक्षाहोसक्ती है तो कोई इसबातका हेतु नहींहै कि जीवाकर्षण विद्यामें ऐसाखोजन होसके वैद्यकविद्यामें बहुतबातें केवल रोगी के वर्णनपरघटितहैं

और वैद्यरोगीके वर्णनकी और किसीतरह परीक्षा नहींकरसक्ता सिवायइसकेकि औररोगी वर्णनों से या उसी रोगी के वर्णन से अन्यदशा का मिलान करे वैद्यकविद्या और आत्माकर्षणविद्या में हरचीज़ कारक या वैद्यकीबुद्धि और विद्या और अभ्यास और सच्चाई पर घटितहै जो कारक या वैद्यको सच या झूठ वर्णन में विवेक न होसके तो वह मनुष्य परीक्षा करने के योग्य नहीं है जिस मनुष्य को ऐसी योग्यता प्राप्त है उसको कुछ कठिनता नहीं होसक्ती और कुछ कठिनता हो भी तो ऐसीहै जिससे अधिकरक्षा और परिश्रम खोज के करने में करना उचित है जब अभ्यासहोजता है और धोखसे बचनेकी रक्षायें मालूमहोजाती हैं तो कमतर कठिनता होतीहै और जितनी विद्या बढ़तीजाती है भूलें और बुराइयां दूर होती जाती हैं॥

दूसरी कठिनता यह है कि अभीतक हमको उडायल की शक्ति के एकजगह इकट्ठाकरने और बढ़ानेकी रीति नहीं मिली है यहबात तो अवश्य है कि जो उडायल की सत्ता चुम्बकपाश सत्ता के साथ मिलीहोती है उसकीशक्तिका न्यूनाधिक्य कृत्रिम चुम्बक के बल के न्यूनाधिक्यपरघटित है परन्तुअभीतक सबसे अधिक कृत्रिम चुम्बक में यह उडायल की सत्ता उतनी नहीं पाईगईहै कि उसके गुणागुण सुगमतापूर्वक और मन की रुचि के अनुसार मालूम होसकें अभी एक ऐसीचीज़की आवश्यकता है जैसे अलक्टरसिटी की क्रिया में एक कल अलक्टरसिटी के इकट्ठाकरने की है जो कि रसायनी कर्म्म से उडायल की सत्ता उत्पन्नहोतीहै तो अवश्यहै कि इसकर्म्म के द्वारा ऐसी कोईकल बनजावे और जब ऐसी कल बनजावेगी तो हर मनुष्यपर उडायल का कार्य हो सकेगा॥

तीसरी कठिनता यह है कि अभीतक उडायल की शक्ति के

नापने का कोई औजार नहीं बना है अर्थात् कोई ऐसी वस्तु हमको मालूम नहींहै कि जिसकी दशा में उडायल के प्रभाव से ऐसाविपर्य्यय प्रकटहो कि जिससे उक्तप्रभावका कि मुख्य पैमाने के अनुसार अनुमान होसके परन्तु जो हम इस बातको शोचें कि जिन विद्याओं में ऐसे औजारभीहैं वह थोड़े दिनोंसेही बनेहैं और सिवाय इसके उनकी बनावट और वर्त्ताव में दिन २ वृद्धि होती जाती है तो बड़ी आशाहै कि उडायल की शक्तिके नापनेका औजार भी थोड़ही दिनोंके पीछेबन जावेगा और जो कि उडायल का प्रभाव नाड़ियों पर बहुत होता है अवश्य है कि इससे लाभ बहुत होगा और जब कभी ऐसा औजार बन जावेगा तोउसमेंआकर्षणकीविद्याकाइतना चमत्कारहोगा कि और रीतों से सौवर्षमें भी न होसकेगा हमको आशा करनी चाहिये कि ऐसा औज़ार जल्दी बनजावे॥

जबतक कोई ऐसा औज़ार बने हमको चाहिये कि जो ज्ञान हमको उडायल और उसके लक्षणोंका प्राप्तहै उसज्ञानके द्वारा कुछ२ मालूमकरें कि यहलक्षण किसमार्गसे प्रकटहोतेहैं अबमैं उनके प्रकट होनेका जो कुछ मेरीमतिमें आताहैवर्णनकरताहूं॥

पहले यह कि जो यह बात मानीजावे कि मनुष्यका शरीर उडायलकी सत्ताकासोताहै अर्थात् भोजनकेपचने दमलेने और पट्ठों नाड़ियोंके कार्य और मलोंकेनिकलने आदिसे यहसत्ता मनुष्यके शरीरमें उपजती रहतीहै और जो यह बातमानीजावे कि जिसशरीरमेंउडायलहोताहै वह शरीर इस सत्ताको चारों ओर दूर करतारहताहै तो यहबात सुगमतासे समझमें आती है कि आरोग्य और पुष्ट मनुष्य का ऐसे मनुष्य पर जिसका स्वभाव उडायल का अंगीकार करता हो बहुत प्रभावहोजावेगा॥

दूसरे यह कि जो यह बात मानीजावे कि मनुष्यके शरीरमें

जो उडायल की सत्ता है उसका यह गुणहै कि ध्रुवों की ओर इकट्ठी होतीहै और जो रीशनबेक साहब के अनुकूल यह बात मानी जावे कि मनुष्यके शरीरमें दोनोंहाथ दो ध्रुव हैं तोयहबात सुगमतासे समझमेंआती है कि हाथसे इतना प्रभाव आकर्षण की क्रियाका जैसा हम देखते हैं क्यों होताहै सिवाय इसके इस बातमें यह और सिद्ध प्रमाणहै कि क्षीण स्वभावके मनुष्य केवल मुख्य जाग्रतावस्थामेंही नहीं बरन आकर्षण स्वाप में तेज रोशनी दिखाई देती है॥

तीसरे यह कि हलके स्वभावके आदमी कारककी आंखों में से और मुंहमेंसे रोशनी निकलतीहुई देखते हैं क्योंकि यहदोनों जोड़ उडायल के छूटे गोलविन्दु हैं और दोनों आंखोंमें जैसा कि दोनोंहाथोंमें दोनोंध्रुवोंका प्रभावहोताहै बरन आधे शरीर के ओरमें एकध्रुवका और दूसरी ओर सम्पूर्ण शरीर में दूसरे ध्रुवका प्रभावहोता है इसीकारण यहबातहै कि दृष्टिजमाकर देखने और धारकके शिर और भालपर उनजोड़ोंके निकट मुंह रखकर फूंकनेसे बहुत प्रभावहोता है क्योंकि मनुष्यको फूंकमें उडायलकी सत्ता बहुत भरीहोती है॥

अलक्टरसिटी की क्रिया में नियम है कि दक्षिणीय ध्रुव के उत्तरीय ध्रुवकीओर बिजलीकी लहरजाती है और जो कोई बस्तु इन दोनों ध्रुवों के बीचमें ऐसी हो जिस में अलक्टरसिटी पैठ सक्तीहै तो लहरकाघेरा पूराहोजाता है इसीतरह आत्माकर्षण क्रियामें दाहिनाहाथ मनुष्यकातो उडायलकीलहर दाहिनेहाथ से उसबस्तुके द्वारा जो हाथोंमें पकड़ेहो दाहिने हाथमेंजाना चाहेगी और बायेंहाथसे बाईंभुजापर चढ़कर छातीमें से होकर दाहिनेहाथमें उतर जावेगी और उक्तलहरका घेरा पूराहोजावेगा जो घेरा पूरा न हो तो उडायल की लहर पैदानहींहोती

और घेरा तबतक पूरा नहींहोता जबतक कि दोनोंहाथ न मिलायेजावें या कोई चीज दोनों हाथों के बीच में ऐसी न हो जो उडायल खींचनेवाली हो जो घेरा पूरा न हो तो उडायल की सत्ता तनावकी दशामेंरहती है और दोनों ध्रुवोंपर इससत्ता का ज़ोरहोताहै जो कारक जिसके शरीरसे उडायलकी सत्ता धारक के शरीरकीदशाके सदृश तनावकी दशामें होतीहै धारकके हाथ अपनेहाथोंसे पकड़ले इसतरह कि अपने दाहिने हाथमें उसका बायेंहाथमें उसका दाहिनाहाथ हो तो कारकके दाहिनेहाथ से उडायलकीलहर धारकके दाहिनेहाथमें जाकर उसके बायेंबाजू परचढ़कर और छातीमें उतरकर और दाहिनीभुजामें उतरकर और फिर कारकके दाहिने हाथमें होकर उसकी बाईंभुजा पर चढ़कर और फिरकारककी छातीमें से होकर उसकेदाहिनेबाजू में उतर आवेगी और घेरा पूराहोजावेगा इसदशामें कारकका शरीर उडायलके खींचने के बदले होताहै ॥

जिन लोगों की प्रकृति उडायल की अति अंगी कर्त्ता होती है उनपर इसलहरका प्रभाव बहुततेजहोताहै और जब कारक के सत्ताकी लहर धारकके निज सत्ता की लहरके अनुसारहोती हैं तो उसका प्रभाव आनन्ददायी होता है परन्तु किसी समय प्रभाव तेज होते हैं यहां तक कि जो देरतक यह दशा रहे तो मूर्च्छा या अकड़न की अवस्था पहुंच जातीहै रीशनबेकसाहब का इस हाल की परीक्षा बहुत मनुष्यों पर उनकी जाग्रत अवस्थामें हुईहै और मैंने जो परीक्षाकी तो उनकावर्णनठीकपाया गया और खोजनेपर धारककेवर्णनसे मालूमहुआकि कोईवस्तु शरीरमें चलतीहुई मालूम होतीहै और उसके चलनेकीराह इस तरहत बताते हैं जैसा मैंने उडायलका ऊपर बर्णन किया ॥

तुपरं जो कारकके हाथ नीचे ऊंचहो और वह धारकके हाथ

पकड़ले तो कारक और धारक की उडायल की लहरें अनुकूल होनेकेबदले दूरीहोजाती हैं परिणाम यह होताहै कि इन दोनों लहरों में एक प्रकारकी लड़ाई होजातीहै और धारक एक मिनट तकभी इस क्रियाको सहनहींसक्ता और उसको अतिदुःख होताहै रीशनबेक साहब को पहले इस बातकी परीक्षा हुई थी उसके पीछे मैंने एक स्त्रीके हाथ इसीतरह पकड़े इसस्त्रीकी प्रकृति उडायलकी क्रियाका प्रभाव अति स्वीकार करतीथी कई पलोंके पीछे उसने ज़ोर करके अपने हाथमेरे हाथोंसे छुड़ालिये औरकहा कि जो दोचार पलतक औरभी हाथ न छुड़ा लेती तो अकड़न या मूर्च्छाकीदशाहोजाती फिर मैंने बहुतविनयकी और उसको बहुत लोभदिया परन्तु फिर वहऐसीक्रियापर प्रसन्ननहीं हुई वास्तवमें इसका वर्णन प्रत्यक्षर ऐसाही था जैसा रीशनबेकसाहबकेधारकका वर्णनथा और उसस्त्रीने कभी उक्त साहब की पुस्तकका हालभीनहींसुनाथा सिवाय इसस्त्रीके और लोगों पर भीमैंने कुछ२ इसप्रकारका प्रभावदेखाहै॥

कृत्रिमचुम्बक और क्रस्टलों का कार्य भी इसी अनुमानपर समझमें आसक्ताहै कृत्रिमचुम्बक और क्रस्टलों में से भी लहरें निकलती हैं और इसलहर में इसध्रुवके अनुसार जो मनुष्यके हाथमें या मनुष्यके हाथके अनुकूल जिसमें ध्रुवहो अन्तरहोता है अर्थात् जिसध्रुवका दाहने हाथमें होनेसे ठंढाप्रभाव होता है उस ध्रुवका दाहिनेहाथ में होनेसे गरम प्रभाव होता है मुझको इसकी परीक्षा सौबेरसे अधिक हुईहै॥

जिन शरीरोंमें उडायलकी सत्ता ध्रुवकी तरहपर नहींहोती है तो वह बिलकुल अपने मूलके अनुकूल या बिलकुल गरम या ठण्ढाप्रभावरखते हैं जिनशरीरों में *आक्सजन और तेज़ाबों के

* ओक्सजन और हैं इड्रजन वायुके दोभाग हैं॥

अनुसार उडायलका साफ़करनेवाला होताहै वह बहुधा ठण्ढा प्रभावरखतेहैं और जिनशरीरोंमें हैंडरूजन और खारके सदृश उडायलहोताहै उसका गरमप्रभावहोताहै बाक़ीरही आकर्षण कीअवस्था सो यहदशा चाहे आकर्षण स्वापकीदशापहुँचे या न पहुँचे इसतरहपर पैदाहोजातीहै रीशनबेकसाहब ने सिद्धकिया है कि साधारण निद्रा जो मनुष्योंको आतीहै उसका उपजना मनुष्य के शरीरसें उडायल की सत्ताके मुख्य विपर्यय होनेपर घटितहै नींदमें शरीरके अन्यजोड़ोंसे शिरमें उडायल की सत्ता कमहोतीहै इसीतरह जब कारक चाहे हाथोंकेद्वारा चाहे दृष्टि जमाकर देखनेसे क्रिया करताहै तो जितनीसत्ता उडायल की शरीर के अन्यर जोड़ों में होतीहै उनमें अन्तर आजाता है जो मुख्य विपर्यय होताहै वह तो हमनहींजानते हैं परन्तु यहबात समझमेंआसक्तीहै कि मुख्ययुक्तिसे एकमुख्य बिपर्यय ऐसा हो-जाताहै कि साधारण निद्रासे ऐसी विपरीत निद्रावस्था उत्प-न्न होजातीहै कि चेत और बुद्धि स्थिररहती है परन्तु प्रकटकी इन्द्रियां रुकजातीहैं और जोकि प्रकट की इन्द्रियां सोजातीहैं अन्तरेंद्रिय पहलेसे अधिक जागती रहतीहैं यहबातठीकहै कि जिन मनुष्योंपर आकर्षण स्वापकी अवस्थाहोतीहै और वहरोग जो शयन जागरण दशामें अपने आपचाहे आकर्षण के द्वारा होतेहैं वहलोग उडायल सत्ताके अतिस्वीकारकर्त्ता होतेहैं अ-र्थात् उनपर गरमी या सरदी के बहुत लक्षण प्रतीत होतेहैं और उनको उड़ायलकी रौशनी दिखाई देतीहै जिन लोगोंकी प्रकृति मुख्य जाग्रत दशामें कम स्वीकार करनेवाली होतीहै उनकीप्रकृतिशयनजागरणअवस्थामेंबहुतहीस्वीकारकरतीहै॥

मेरीमतिमें अपने आप शयन जागरण की अवस्था का अ-पनेआप उपजना इसहेतुसेहै किजोमुख्य बिपर्यय उडायल की

सत्ताकी अवस्थामें आकर्षणकीक्रियाके द्वाराहोताहै वह विपर्यय ऐसी दशामें अपने आपहोजाता है परन्तु अन्तरयह है कि आकर्षण की क्रियाके द्वारा उससत्ताके अनुमान में वृद्धि होती है और जब अपने आप ऐसीदशा होतीहै तो वृद्धि नहीं होती और यही अनुमान डाक्टर डारलिंग साहब और मिस्टरब्रीड साहब की युक्तियों परभी ठीक आताहै क्योंकि अन्यवस्तुमेंसे और अधिक उडायल धारकके शरीरमें नहीं पहुंचताहै॥

कारकको जोधारककी बुद्धि इन्द्रियों स्मरण और ध्यानपर उडायल के स्वप्नमें अधिकार होताहै उसकाहेतुयहहै कि कारककी उडायल सत्ता धारक से बड़ी और बलवान् होतीहै और इसबातके कारण कि उडायल जगह २ वर्त्तमान होताहै और उसमें यहगुणहै कि वह चलता रहताहै कारकको अपनी सत्ताके उस अनुमानके साथ जो धारकके शरीरमें चलीगई है संयोगरहताहै जो उडायलकी सत्ता कोई नाड़ीकाबल या जीव की शक्तिहै तो संभवहै कि कारककी उडायलकीसत्ता जो प्रबल होतीहै धारकके पट्टोंकी चेष्टा और इन्द्रियोंपर कार्य करतीहै॥

और धारकको जो आत्मा और शरीरकी खिंचावट कारक की ओर होतीहै उसकाभी ऐसाही हेतुहै और इस अनुमानको इसबात से सहायता पहुंचतीहै कि धारक बहुधा वर्णन किया करताहै कि कारकके गिर्दएक रोशनीसी होतीहै किवहरौशनी धारककोभी घेरलेतीहै जितनीबातें उड़ायलको क्रियाकीमालूम हुईहैं उनसे सिद्धहोताहै कि कोई वस्तु या सत्ता एक शरीरमें से दूसरे शरीर में प्रवेश करतीहै तथाच सत्यहै कि धारकको एक प्रकारकी सत्ता न केवल कारक की उंगलियोंमें से वरन उसके सम्पूर्ण शरीरमें से निकलती हुई और धारक के शरीर में जाती हुई दिखाई देती है॥

आकर्षण की बुरीक्रियाकाजो असह्य प्रभाव होताहै उसका यन्कारण मालूम होताहै कि सत्तायें परस्पर बुरीहोती हैं और कुछ यह कारण मलूम होता है किजब सिवाय कारकके और लोग धारकके हाथपकड़लेतेहैं तो उडायलकी लहरोंमें विपर्यय होजाताहै जिन लोगोंने इसक्रियाकाप्रभावहोते देखाहै वहसब जानते हैं कि इसतरह की छेड़छांड़से असह्यलक्षण उपजते हैं॥

धारकको जो कईवस्तुओंसे ग्लानि होतीहै उसकाकारणयह मलूमहोताहै किजैसी उनकीउडायलकीसत्ता दक्षिणीय या उत्तरीय होतीहै वैसाही उसका असह्यप्रभाव धारकपर होताहै॥

इसीप्रकार चैतन्यताकी प्रीति या संयोग इसतरह उपजती है किकारककी सत्ताकाकार्य उसदशामें किजबधारकीयउडायल दशा बढ़ीहुईथी धारक पर आनन्ददायी होतीहै और दोनों की सत्ताओंमें मेलहोताहै और यह बात अति सुगमता से समझ में आसक्तीहै कि इस प्रीति और चैतन्यशक्तिके लक्षण उपजानेका द्वारा उडायलहोताहै चैतन्य शक्तिकेसंयोग होनेके लिये किसी को संदेह नहींहै यह बात बहुधा अपने आप होतीहै बरन बहुत मनुष्यजो परोक्षदर्शित्वके योग्यनहीं होना चाहतेहैं कहते हैं कि परोक्षदर्शित्वका प्राकट्य विचार संयोग और कर्मसंयोग आदि के कारणहोताहै यहआदमी इसबातकेमाननेकेबदले कि परोक्ष-दर्शकको प्रकटकी इन्द्रियोंकी सहायता बिना वस्तुओं के अव-लोकनकी शक्ति होतीहे कारककेसाथ धारकको इतना संयोग होना मानते हैं जिससे धारकको कारकके सम्पूर्ण विचारों को सत्यता पूर्वक मालूम करलेनेकी शक्ति प्राप्त होतीहै यह लोग जराभी नहीं शोचते कि विना किसी वसीलेके परोक्षदर्शनमें इ-तनी शक्तिका होना थोड़ेआश्चर्यकी बातहै और जरानहींशोचते कि जोइस प्रकारका संयोगहो तो एक नया चेतहोना चाहिये

परन्तु सब मनुष्यजानते हैं कि उक्त संयोग वास्तवमें हररोज उपजताहै और जोकि इसके उपजनेके हेतु वर्णन नहीं करसक्ते हैं क्योंकि प्रायः उन्होंने कभी इसबातपर ध्यानभी नहींकिया परन्तु इसलियेउसके उपजनेका निश्चय करलेते हैं कि उनके विचारमें परोक्षदर्शित्व अवस्थाविना किसी वसीले के मानने से इस संयोगका मानना एकछोटी सी बुराई है॥

यहबात आपको याद दिलानी वृथाहै कि जो हम मानभी लें कि बहुतसे परोक्ष दर्शित्व के रूप ध्यानैक्यता और विचार के मालूम करने की अवस्था के कारण उपजते हैं तौभी बहुत बातें ऐसीहैं कि उनमें गुप्तदर्शित्व का प्रमाण संयोग के अनुमान से नहीं होसक्ता है मैं आपके यहबात बतानी चाहता हूं कि जो विचार संयोग और कार्यका होना मानाजावे तो अवश्य करके उडायल उसके उपजने का हेतु है जोकि कारक धारककी उडायल सत्तायें आपस में मिली होती हैं और कारक की सत्ता धारक की सत्तापर प्रबल होती है इसलिये यहबात होती है कि धारक कारक के विचारों को पढ़लेता है इसयुक्ति के खण्ड जिससे यहबात धारक को प्राप्तहोती है हमको मालूम नहींहै निदान जब विचार संयोग होता है उसके उपजने का कारण इस तरहपर मालूम होता है जैसा मैंने वर्णनकिया और यही कारण दोनों दशाओं में ठीक आताहै अर्थात् उसदशामेंभी कि जब विचारसंयोग अपनेआपहोजावे और इसदशामेंभी जब आकर्षणीय क्रियाके द्वारा विदितहोप्रकट है किएकऐसीसत्ताकेलिये जैसीउडायल है दूरीकुछमूल नहीं रखती यदिउडायल वास्तव में कोई वस्तुहै तोवह सत्तारोशनी की तरह सम्पूर्ण संसार को लांघजातीहै चाहे रीशनबेकसाहबकी परीक्षासेसिद्धहैकि रोशनीसे उसकी चालकमहै मैंऊपरवर्णनकरचुकाहूं किपरोक्षदर्शित्व

अवस्था विना किसी वसीले के निश्चय करके उत्पन्न होती है चाहे हम उसके उपजनेका कारण वर्णन करसकें अबमैं समझता हूं कि मेरे विचार में उसके उपजनेका प्रबल हेतुक्या है यह परोक्षदर्शित्व अवस्था आकर्षण की क्रियाका एक ऐसा प्रभाव हैकि उसपर पहुंचकर बहुत आदमी ठोकरखाते हैं कई आदमी अति साहस पूर्वक कहते हैं कि हम कभी इस प्रभावको नहीं मानेंगे और भूलजाते हैं कि मानना कुछ अपने अधिकार की बात नहीं है और जो उसके उपजनेका पूरा प्रमाण होगा तो सिवायइसके किउसकोमाने और कोई इलाज नहीं है जहांतक मुझको इसका लिखाहुआ प्रमाण मिलाहै उसके पढ़नेसे मुझको निश्चयहै कि परोक्षदर्शित्व अवस्था बास्तवमें उपजतीहै परन्तु मैंने इस बिषयमें अपने निश्चयको उस समय तक वर्णन और प्रकट नहीं कियाहै जब तक मैंने उस परोक्ष दर्शित्वके लक्षण को उपजते नहीं देखा तोलोगइस लक्षणको नहीं मानते उनमें दो या तीनबातें मैंने पाई हैं—पहिले तो यह है कि जो लिखा हुआ प्रमाण इसबातका है उसको यह लोग नहीं जानते औ दूसरे यह कि जब उनके संदेहोंको अच्छी तरह छानागयातो उनके संशयों का संक्षेप यही पायागया है कि ऐसी बात का उपजना असंभवित है और दूसरे यह कि इसके उपजने का कारण कोई वर्णन नहीं करसक्ता क्योंकि उनका उपजना नहीं मानना चाहिये ॥

तीसरे यह बात भी है कि इनलोगों ने कभी इस बिषय में खोज नहीं किया जो लोग बुद्धिमानीसे इस बातकी रक्षाकरतेहैं कि किसी नये और आश्चर्य देनेवाले विषयको पूरे प्रमाणबिना और बिना उसके कि अपनी आंखसे देखलें नहीं मानते उनसे मैं कुछ झगड़ा नहीं करताहूं परन्तु जब बहुतसे आदमीगवाही

दें जिनकी सच्चाई और बड़प्पनमें कुछ संदेह नहीं और वह बातभी ऐसीहो कि न पदार्थविद्या और अंकोंके गणितसे उसको असम्भवित कहसकें तो वहरक्षाकेवल यहांतक उचितहै कि यह बातकहें कि हमारा अच्छीतरहबोधनहींहोता और हमको अ-पही खोजकरना उचित मालूमहोताहै बड़े२ बुद्धिमानोंको यह उचित नहींहै कि जिनविषयोंके लिये इसप्रकारकी गवाही हो उनको अपनी आंखों देखेबिना असम्भवितकहें और सबसे अ-धिक यहबात है कि जबतक कि वहखोज अच्छी तरह और रक्षापूर्वक न करलें तबतक उनको कभी यह उचित नहीं कि गवाहों को धोखा देनेवाले कहें जो उनका जी खोजकरने को नहीं चाहता या उनको अच्छीतरह खोज करने का अवकाश नहीं मिलता तो आदमियत यहबातचाहती है कि वह चुप हो-रहें कुछ नईबात जारीनहीं करताहूं जोबातें रोज़ होती हैं वही कहताहूं और मैं बेधके यहबात कहताहूं कि जिन लोगोंने खोज नहींकिया और खोजन करनेपर जिन्होंने अच्छी तरह से खोज किया झूंठ बोलने और धोखादेने का अपराध धरते हैं उनकी रीति बुद्धिसे दूर और वह न्याय रहितहैं॥

परन्तु मैं ऐसे लोगोंकेलिये जिनको विद्यामेंबोधहै ऐसीबातें कहताहूं जैसी ऊपर कहीगई और उनलोगोंके लिये जो विद्या नहीं रखते उनका उचितपक्ष करताहूं प्रकटहै कि जबतक कोई न कोई विषयका रुचि उपजानेवाला हेतु न कहाजावे तबतक ऐसे आदमियोंकी समझमें वहबात नहीं आसक्ती है मैं कईबार कहचुकाहूं कि जोसदैवकाल इसनियमका निबन्ध कियाजावे कि जबतक कोई कारण किसी विषय का न कहाजावे तबतक उसको न मानें तो प्रायः किसीबातको भी न मानाजावेगा अन्त को जो ध्यान कियाजावे तो जिसबातका हेतु वर्णन होताहै तो

केवल यहीबात सिद्ध होती है कि उस विषय को किसी दैविक नियम पर वर्णनकरदेते हैं चाहे उस नियमके लिये हम इसके सिवाय और कुछ नहींकहसक्तेहैं कि यह नियम प्रकट में मालूम होताहै परन्तु जो इतनीबातभी वर्णन कीजावे तो विद्याकेखोज में बहुतकाम आतीहै इसलिये जो मुझकोपरोक्षदर्शित्व अवस्था के होनेके हेतु मालूमहोते हैं मैं वर्णन करदेता हूं परन्तु आपको ध्यान रहे कि जो कुछ मैं वर्णन करताहूं केवल अनुमान किया हुआही नहींहै बरन यह कहताहूं कि प्रायः यह अनुमान ठीक मालूमहोताहैऔर जबतककि कोई और उत्तम अनुमान न हो उसको मानना चाहिये जो मेरी समझमें यह बात आती है कि परोक्षदर्शित्व के उपजने का कारण उडायल की सत्ता है॥

आपको यादरहे कि धारक को पहिलीही बात प्रकाशमान दशामें यह मालूम होती है कि चाहे उसकी आंखें बंद होती हैं परन्तु कारक के हाथ और शरीर मेंसे और अन्य वस्तुओं मेंसे भीरोशनी निकलती हुई दिखाई देतीहै और उसको सब चीजें प्रकाशित दिखाई देतीहैं औरउस धारक को हरचीज़ के गिर्द एक प्रकाशका घेरा दिखाई देताहै औरयह रोशनी अपने आप धारक को भी घेरलेती है और उसकी सत्त के साथ मिलजाती है मेरी मतिमें यहलक्षण उडायलके कारण उपजताहै जोवस्तु धारक देखता है उडायल की रोशनीमें देखताहै और प्रकाशमान धारक पर सदा इस रोशनी का प्रभाव बहुत होता है

दूसरे यहकि इन वस्तुओं के देखने में धारककी आंखें नहीं काम आती हैं बरन जो अच्छी तरह से दिखाई न दें तोधारक उनकोअपने शिरकेऊपर यामाथेपर रखलेताहै मैंने एकपरोक्षदर्शक को देखा है कि जब कभी वह लिखना चाहता था वह कागज़कीओर अपने शिरकी चांदसे देखताथा औरआंखें उसकी

बिल्कुल बन्द और ऐसीजगहपर होतीथीं कि जो खुलीभीहोतीं तौभी उसकी आंखें काम न आतीं उसके लेख का जो कुछऐसी दशामें उसनेलिखाथा मेरेपास एकनमूना रक्खाहुआहै यह वही धारक है जिसका मैंने पहिले वर्णन कियाहै कि जो वह अपनी आंखोंके साम्हने किसी वस्तु को रखना चाहताहै तो उसवस्तु को अपनी खोपड़ी पर रखलेता है यदि उडायल ऐसी दृष्टिका कारणहो तो मालूमहोताहै कि मनुष्यकी खोपड़ी उसकेपैठनेको नहींरोकसक्तीहै और वास्तवमें उडायल हरवस्तुमें पैठजाताहै॥

तीसरे यह कि जब परोक्षदर्शक कोई वस्तु दूरसे देखता है और उससे पूछाजाता है कि उस वस्तुको क्योंकर देखतेहो तो वह बहुधा कहता है कि उसवस्तुमें से एक प्रकाशमान बादल सा उठकर मेरीओरआताहै और एकऐसाही प्रकाशमान बादल मेरे शरीर में से उठकर यहदोनों बादल मिलजातेहैं और उन दोनों मिलेहुये बादलोंमेंसे उसवस्तुको देखताहूं पहिले तो कुछ धुंधली मालूम होती है परन्तु फिर रोशनी दिखाईदेती है और जैसा उसका दैविकबरण है वैसाही रंग दिखाई देता है यह वर्णन भी हमारे उस अनुमान के अनुसार है कि उडायल की सत्ता संसारभर में फैलीहुई है और बुद्धिके प्रकाश का द्वारा है जो धारक प्रकाश के भरे बुद्धिमान् और समझदार होते हैं वह सब इसतरह के हाल आप वर्णन करते हैं रीशनबेक साहब ने जो बहुत मनुष्यों पर उनकी जाग्रत अवस्था में परीक्षा की हैं उनकेवर्णन भी इसवर्णन के अनुकूल हैं॥

अब जो और खोज करके ढूंढ़ाजावे कि प्रकाशमान बुद्धि क्योंकर पैदाहोती है तो मुझे आपको फिर वह अनुमान याद दिलानापड़ेगा कि जो सत्ता किसीवस्तुमें होती है उसका कर्म अन्य वस्तुओंपर होताहै और उष्णता, प्रकाश, अलक्टरसिटी

और शब्द जो किसीवस्तुमें से निकलतेहैं और अन्यवस्तुओंपर आकर गिरते हैं और इसीतरह जो चैतन्यता के जोड़ हमारे शरीर में हैं उनपर गिरते हैं परन्तु पहले ऐसी निर्ब्बलता से गिरतेहैं कि जो वस्तु अतिनिकटहोतीहैं और उनको हम्देखते हैं या मालूम करतेहैं उनके प्रभावसे दबजाते हैं—अबकल्पना करो कि जो शरीर में उडायल के प्रकाश शरीरों में से निकल कर हमारी चेतना पर गिरतेहैं वह प्रकाश ऐसे निर्ब्बल होकर गिरतेहैं कि जिनलोगोंके स्वभावपर मध्यम प्रभाव होताहै उन पर उनप्रकाशोंका कर्म प्रकटेन्द्रिय अर्थात् नेत्र कर्ण नासिका मुख और त्वचा निर्ब्बलतासेहोताहै और जिनलोगोंकी प्रकृति प्रभाव को अंगीकार करनेवाली होती है उनपर प्रकाशों का प्रभाव उसदशामें कि उनकास्वभाव उनकीतरफ झुकाया जावे अधिकहोता है और जिनलोगों के स्वभाव प्रकाशमान दशा में बलवान्होंउनकीप्रकृति उनप्रकाशोंकोअधिकस्वीकारकरती है॥

अब देखनाचाहिये कि आकर्षण स्वापमें क्या स्वरूपहोता है ऐसीदशा में यहबात बहुधा पाई जाती है कि दोप्रकटेन्द्रियों में जिनपर प्रतिसमय बाहरसे प्रभाव पहुंचता रहताहै अर्थात् देखने की इन्द्री और सुनने की इन्द्री बन्दहोजातीहैं परिणाम यहहोताहै कि अन्तरेन्द्रियों में इनदोनों बाह्येन्द्रियों के प्रबल कर्म्म से खराबी नहींहोती और उडायल के प्रकाश का कर्म्म श्रेष्ठहोता है और उसका प्रभाव अन्तरेन्द्रिय पर अच्छीतरह होताहै और उनप्रकाशके कर्मकेलिये प्रकटइन्द्रियोंका वसीला दरकार नहीं होता है और जो उडायल की सत्ता का गोला है उसकेद्वारा एक नयामार्ग्ग उसकी अन्तरेन्द्रियोंतक पहुँचनेका प्राप्तहोजाताहै यदि धारक का स्वभाव अति स्वीकारकर्त्ता हो और उनकी प्रकट की इन्द्रियां बिल्कुल बन्दहों तो ऐसी दशा

इसबातके पैदाहोनेमें सबसे अधिकअनुकूलहै कि उसपर प्रकाश मान दशा पैदाहोजावे परन्तु जो कुछ लक्षण अब उसको मालूम होताहै वास्तव में नया नहींहोता पहले वह इसप्रभावको इसलिये नहींमालूम करसक्ताथा कि वह प्रभाव बिल्कुल निर्बल था अब उसपर इसलिये ध्यान होता है कि वह प्रभाव तेज होजाताहै अर्थात् जो लक्षण ब्रह्माण्डतक पहुंचते हैं उन सबमें इसप्रकारका प्रभाव अतिप्रबलहोताहै एकप्रबलप्रमाण इस अनुमान की सहायतामें यहहै कि प्रकाशमान दशा अपने आप भी उपजतीहै और जब कभी ऐसीदशा उत्पन्न होतीहै तो उसके उपजनेसे पहले नींद या स्वप्न जागरण या गहराध्यान होताहै और निद्रा और स्वप्न जागरण औरगहरे ध्यानसे सदा यहबात होतीहै कि प्रकट कर्म इन्द्रियों का प्रभाव हमारे ऊपर नहींहोता और इससे अन्दर की इन्द्रियोंपर उडायलकी सत्ता का अधिक प्रभाव होताहै ॥

कई मनुष्य अपनेऊपर होशकीहालतमें केवल बहुत शोचने और केवल ध्यान को एकतरफ करने से प्रकाशमान दशा उपजादेते हैं और मेजर बिकलीसाहब ऐसी अवस्था और मनुष्यों पर भी सदा चैतन्यावस्था में उपजादेते हैं मेरे ध्यान में यह बातहै कि बहुतशोचना उनकी युक्ति का एकखंड है परन्तु बहुत आश्चर्य्य की बात यह है कि जब प्रकाशमान दशा प्रकटहोने लगती है तो उनकी युक्ति का बड़ा खंड यहहै कि धार-- के बदले वह अपने मुखपर या उनवस्तुओंपर जिनके दिखाने की इच्छाहोतीहै हाथोंसे क्रियाकरतेहैं धारक कहतेहैं कि इनदोनों युक्तियोंसे एकप्रकारकी ऊदी रोशनी उसचीज़पर पड़तीहै यदि हाथोंसे बहुत बेर क्रियाकीजावे तो यह रोशनी गहरी होजाती है और फिर वह चीज अच्छी रोशन दिखाई नहीं देती परन्तु

जे फिर उल्टीक्रिया कीजावे ते गहरापन दूरहोजाता है और वह चीज अच्छी दिखाईदेती है ॥

जे परोक्षदर्शक अपने और अन्यमनुष्यों के शरीरोंकी अंदर की वनावट देखते हैं वह वर्णन करते हैं कि सबजोड़ रोशनी से ढँकेहुये मालूमहोते हैं और बिल्कुल साफ़ दिखाई देते हैं और रीशनवेकसाहव के धारकों के साम्हने जब एकमोटी लोहे की सलाख रक्खीगई तो उनको वहसलाख शीशेकीतरह चमकती हुई दिखाई दी॥

जब परोक्षदर्शक के हाथमें एक खत या बाल की लट दी जातीहे तो उसके वर्णनसे मालूम होता है कि जो उडायल के प्रकाश इनचीज़ों से मिलेहोते हैं उनके द्वारा उनको यह बात मालूमहोती है कि यहखत और वाल किस मनुष्य के हैं क्या यहबात होसक्ती है कि जिस मनुष्य का पत्र या बाल होता है वह बिल्कुल उसमनुष्य से जुदा नहीं होजाते बरन उनमें और उस मनुष्य में एक प्रकार के उडायल के एक प्रकार का सम्बन्ध दृढ़ रहता है ॥

हरतरह से यहवात तो ठीक है कि न केवल परोक्ष दर्शक उसमनुष्य को मालूम करलेता है बरन उस समयान्तर में वह बाल और ख़त कई मनुष्योंके हाथोंमें से फिरचुकेहों तो परोक्षदर्शकको उसमुख्य मनुष्यके मालूमकरने में जिसके वह वास्तव मेंहैं परिश्रम पड़ता है किसी समय गुप्तदर्शक उस मनुष्य को देखताहै जिसके हाथमें अन्तके समय वहचीज़ें थीं परन्तु किसी न किसी निजज्ञान से वह पहिंचान जाता है कि यहचीज़ें उस आदमी की नहींहैं बहुधा गुप्तदर्शक कारकसे कहता है कि यह छेड़छाड़ जो कुछ उसकी इन्द्रियों के कर्म्म के साथहोती है वह दूरकरदे तथाच कारक एकछोटीयुक्तिसे यहवात करदेता है और

जबकभी ठीक आदमी धारक को मालूम होजाता है तो फिर उसको जरा भी उसके पहिंचानलेने में ढील नहींहोती॥

एक मनुष्य को मैं जानताहूं जिसको यहबात है कि वह अपने ऊपर प्रकाशमानदशा उपजालेता है और उस दशा में ऐसे मनुष्योंको जिनको वह नहीं जानता और दूरकी चीजोंको देखसक्ता है जब उससे पूंछागया कि तुम क्योंकर देखलेते हो तो उसने कहा कि मैं कुछ युक्ति नहीं बतासक्ताहूं केवलउदाहरण देसक्ताहूं कि जिसतरह कोई कुत्ता कैदसे छूटकर अपने मालिकको ढूंढ़कर पालेताहै उस तरह मैंभी आदमियोंकोदूरसे देखलेताहूं और वर्णन यह है कि जब किसी मनुष्यने उससे किसी आदमीके देखनेकेलियेकहा तो वह उसआदमीकी उडायलसत्ताका पता पूंछनेवाले के दिलमें देखलेता है फिर उस चीज़का खोज उस समय तक लेजाता है कि जब तक वह आदमी और पूंछने वाला अन्तके समय पर इकट्ठेथे उससमय के आगे फिर वह केवल उस मनुष्य का पता लगाता है और थोड़ी देरके पीछे उसको ढूंढ़कर देखलेता है जब गुप्तदर्शक गतवृत्तान्तों को देखता है तो हम बिचार करसक्ते हैं कि नीचे की तरफ पता लगानेके बदले वह उडायलकी सत्ताका ऊपर की तरफ पता लगाता है यह अनुमान हमारा उस अनुमानके अनुकूलहै कि जो कुछ संसारमें होताहै एक ऐसाचिह्न संसार में छोड़जाता है कि जब तक यह संसार रहेगा कभी वह नष्ट न होगा और ठीक यह है कि परीक्षायें आकर्षणीय क्रिया में जो लेख या बालोंके द्वारा कियेजाने में गतवृत्तान्त इस तरह पर वर्णन किये जाते हैं कि मानों अब वर्तमान हैं और यह वर्णन भी उस दशा में होता है कि कारक या पूंछनेवाले से धारकको विचार संयोग नहीं होताहै और इस दशाके उपजने

का यह हालहै कि कभी न इसकाग्ल मालूम होजावेगा यदि मालूम न होतो जो कुछ रोज़ होते देखते हैं उसके होजानेमें कुछ संदेह किसी तरह नहीं होसक्ताहै॥

इस अनुमान पर जो जादू और मंत्र प्राचीनसे सब देशोंमें होतारहा है समझमें आसक्ता है यह बात प्रकट है कि मिसर यूनान और हिन्दुस्तानके शिवालोंके पंडे आत्माकर्षण क्रिया और विद्याको अच्छीतरह जानतेथे और उनको परोक्षदर्शित्व अवस्था के उपजानेकी युक्तियां विदितथीं तसवीरों के देखने से सिद्ध होता है कि जो आकर्षणीय क्रिया की युक्ति इनदिनों प्रचलित है इसप्रकार की युक्ति मिसर में कीजातीथी और यह बात सबको अच्छी तरह मालूम है कि हलका राग और थोड़ी धुंधली रोशनी और धूनीदेनी सबदेशोंमें सबजादूगरोंके काममें आतीथी शिला पूजकोंकी कथाओंमें आकर्षणीय क्रियाके बहुतसे चिह्न हैं तथाच देवताओं के आदमियों और पशुओंकी सूरतोंके बनालेनेका जो लोगोंको निश्चयथा वह इस बातपर घटितहै कि आकर्षणीय क्रियाके कारकको अपने धारककी चैतन्य शक्तिपर चैतन्यावस्थामें अधिकारथा मैंनेएक धारक पर जो अच्छी चैतन्यावस्थामेंथा ऐसा प्रभाव होतेहुये देखाहै कि कारककी इच्छासे उसने कारक को और सिवाय कारकके और मनुष्य को आदमीसे कोई अन्य या कोई पशु वरन कोई निर्जीव बस्तु समझ लिया॥

हमको जो आत्माकर्षणीय क्रियामें इनदिनों बोधप्राप्त है वह अभी कमहै और जो आगे हमको मालूमहो किसी मनुष्य ने ऐसी युक्ति मालूम करली है कि जिससे एक समयमें बहुत मनुष्यों पर एकबारगी इसका अमल चलाजाताहै तो कुछ आश्चर्यकी बात न होगी इस युक्तिसे संभव है कि कोई मनुष्य

अपने रक्षककी दृष्टिसे वचाजावे और बरन जिस मनुष्य को यह भेद मालूमहो एक ऐसे मकान मेंसे दृष्टि वचाकर निकल सक्ताहै कि जहां बहुत आदमी इकट्ठहों इस युक्तिसे कि अपना रूप इन मनुष्योंकी समझसेबदलले पहिली जो कहावते हैं कि मनुष्य गुप्त होजाते थे अब ऐसी बातें रोज़ होती हैं कारक को अधिकार है कि धारक पर ऐसी दशा उपजावे कि आप या कोई और मनुष्य धारकको न दीखे अभी तक यह वात तो मालूम नहींहुई है कि यकबारगी बहुत मनुष्यों पर कारक को ऐसा अधिकार प्राप्तहो परन्तु निश्चय है कि ढूंढ़ने से यह बात भी जल्दी मालूम होगी मैंने अपनी आंखोंदेखा है कि दोदिन हुये एक मनुष्य डाक्टर डारलिंग साहव के मकान में आया और दरवाज़ेके अंदर पैठतेही डारलिंग साहबने उसपर यह दशाउपजाई कि उसने एक घड़ीको शलजम और एक अपने मित्रको शमादान समझ लिया और देखा कि फर्श पर है एक आतशबाज़ीका बुर्ज हवाके ऊपर चढ़ताहै इस क्रियासे यहबात थोड़ीही दूरपरहै कि किसी जादूगरनी को या चुड़ैलको झाड़ू पर आकाश पर चढ़ते हुयेदेखलें या कोई किसी बकरी की पीठ पर सवारहोकर चढ़ता हुआ दिखाईदे॥

यह बात सुगमतासे समझमें आती है कि मूर्खताके समयमें जिस मनुष्यकोइसविद्यामें बोधथाउसकोलोगसमझतेथेकि यह शैतानका ताबेदार है और उसनेशैतानसे यह विद्यासीखी है॥

भूतप्रेतयोनिका होना भी जिसमें लोगोंको बहुत बिश्वास या प्रत्यक्ष रीतिसे आकर्षणकी दशाके अपने आप उपजने का प्रभावथा जिसको भूतावेश होताथा उसको ऐसी चीज़ें दिखाई देतीथीं जो उसके आसपासके आदमियों को मालूम नहींहोती थीं और जो कि मुख्य वृत्तान्तकी किसी को खबर नहीं थी तो

वह आपभी और दूसरे लोगभी समझतेथे कि इसको भूतावेश है यदि इसपर गुरुइन्द्रिय वैकल्य दशा उत्पन्न होतीथी तो वह इस भूतको भी जिसने उसको पकड़ रक्खा था देखलेता था॥

इसमें संदेह नहीं कि परोक्षदर्शित्व प्रभाव इसलिये काम में लायाजाताथा कि जादूगरीकी क्रिया में अधिक बिश्वासहो जब कारक में यह बात देखीजातीथी तो वर्त्तमान और गत वृत्तान्त बतादेताथा बरन जोमनुष्य उससे कुछ पूंछते थे उसकी समझमें जो कुछ उस समय होताथा वह सब हाल बतादेताथा तो लोग उसको प्रश्न कहने वाला और तन्त्री समझ लेतेथे और थोड़ीसी बुद्धिमानी से कारक अपनी विद्या को और भी अधिक चमत्कृत करताथा॥

इस समयमें जो जादूमिसरके देशमें बरताजाता है तो वह परोक्षदर्शित्वकी दशापर घटितहै जिनलड़कों के द्वारा परोक्ष-दर्शित्व अवस्था प्रकट कीजाती है उनको इस वास्ते वसीला बनायाजाता है कि उनकी छोटी उमर के सबब उनपर आकर्षणीय क्रिया का जल्दी प्रभाव होजाता है यह लोग एक और युक्तिभी ऐसी करते हैं कि थोड़ी धूनीकी सहायता से आकर्षणीय क्रिया का प्रभाव होजाता है जब क्रिया करलेते हैं तो लड़कोंके हाथपर सियाही का बिन्दु डालदेते हैं और उनसे कहते हैं कि उसको ओर ध्यान से देखतेरहैं हम जानते हैं कि डाक्टरडारलिंगसाहबकी युक्तिभी यहीहै कि धारकसे कहते हैं कि किसीचीज़की तरफ़ देखतारहै उक्त डाक्टरसाहब सियाही का बिन्दु काममें नहींलाते हैं और मेजर बिकली साहब भी एक ऐसी युक्तिसे परोक्षदर्शित्वका लक्षण धारकपर सुगमता से उपजादेते हैं प्रायः मिसरके जादूगर हाथोंसे भी क्रियाकरते हैं और जब उन लड़कों पर प्रकाशमान दशा उपजती है तो

उनसे कहते हैं कि अमुक मनुष्यों को देखो और कारकके विचारके पढ़लेनेके कारण वह लड़के उन मनुष्यों को देखने लगते हैं यह बात सच है कि कभी २ भूलभी होजाती है सो इस बातका कुछ आश्चर्य्य नहीं वरन जो वास्तव में क्रिया सच्चीहो तो भूलका होजाना प्रकटहै क्योंकि सबधारकोंकी शक्तियां एकसी नहींहोतीं न हर समय एकसी रहती हैं परन्तु इस बातमें सन्देह करना कि बहुधा इन पर क्रियाका प्रभाव अच्छी तरह होजाताहै संभवनहीं है चाहे यहबात होसक्ती है कि कईजादूगर और कई धारक भी झूठेहोते हैं और सियाही का बिन्दु शीशेका काम देताहै औरयह भी अनुमान चाहता है कि उडायल की सत्ताके कारण आकर्षण की अवस्था उपजा देते हैं॥

क्रिस्टल जादूभी इसीमेंसे है जोलोगपिछले समयमेंआकर्षण की क्रिया को जानतेथे उनको मालूम था कि बिल्लौर का प्रभाव आकर्षण की क्रिया के अनुसार होता है तथाच वह बिल्लौरकोगोल औरअंडेकी शकलकाछीलकर बनालेतेथे इस प्रयोजन से कि वह शीशेका कामदे इंगलिस्तान में बहुतऐसे क्रिस्टल जिसकोजादूका क्रिस्टलकहते हैं मौजूदहैं तथाच एक ऐसा क्रिस्टल एक अमीर के घराने में से एक स्त्री के असबाबमें उसकेमरने के पीछे नीलामहुआ और एक मनुष्यने उसे मोल लिया एकदिन वह क्रिस्टल मेजपर रक्खा था और उसकेगिर्द बहुतसे लड़के इकट्ठेथे मकान का मालिक भी उस कमरे में जो यकबारगी आया तो उन लड़कोंने कहाकि इसचीज में आदमी हैं और जब उनसे पूछागया तो उन्हें ने कहा कि अमुक २ मनुष्य इसमें दिखाई देते हैं उन मनुष्यों में से कई आदमियों को उन लड़कों ने कभी देखा भी नही था मेरीमति यहहै कि जब लड़कोंने उस क्रिस्टल की ओर देखा तो जो उडायलकी

सत्ता उसमें थी उसकीओर दृष्टिजमाकर देखनेसे चैतन्यावस्था में आकर्षणीय दशा उन लड़कों में उपज आई और उन पर प्रकाशमानदशाप्रबलहुई और क्रिस्टलकेअन्दर मनुष्यइसलिये दिखाईदिये कि वहउसकेअन्दरदेखरहेथे मैंने और दोक्रिस्टलों काभी हालसुना है कि उनकी ओर देखनेसे लड़कोंपर ऐसाही प्रभावहोता है तथाच मैं उसक्रिस्टलकेद्वारा लड़कोंपर परीक्षा कररहा हूं और जो लक्षण उपजेगा दूसरेभाग में उसकावर्णन किया जावेगा परन्तु मैंने इतनी परीक्षा तो करली है कि उस क्रिस्टल को एकबेर एक धारक के बायेंहाथ में रख दिया जो प्रकाशमान दशा में था मैंने उससे कुछभी नहीं कहा कि यह क्या चीज़ है थोड़ी देरकेपीछे उसने कहा कि इस चीज में बहुत तेजरोशनी ऐसी दिखाईदेतीहै जिसके देखनेसे बहुत दुःखहोता है और उसके हाथ में एकचोटसी पहुंची इसलिये उसने कहा कि यहवस्तु मुझको असह्य है दूसरीबेर जबमैंनेउसक्रिस्टलको दाहिने हाथ में रक्खा तो उसनेकहा कि बहुत सुन्दर प्रकाश मालूम होता है उसकी आंखें बन्दथीं परन्तु वह कहताथा कि इसमें प्रकाश के कुण्डल मालूम होते हैं और इन्द्र धनुष केसे रंग इसमें दिखाई देते हैं और यहप्रकाश अति सुन्दर है फिर मैंने उससे कुछभी नहींपूछा और वह अपने आप कहने लगा कि विचित्र स्वरूप दिखाईदेते हैं वहस्वरूप उनसूरतों से अन्य मालूम होतेथे जो उसको अपनी अलग आकर्षण की दशा में दिखाईदेतेथे और उसको यहस्वरूप उसक्रिस्टलके अन्दरनहीं दिखाई देते थे बरन वह आप उनस्थानों में मानों चलागयाथा जहांवह स्वरूपथे मेरे पूछेविना उसने वर्णन किया कि मुझको एक आदमी दिखाई देता है और उसकासंबंध उस क्रिस्टलसे वर्णन करनेलगा इस मनुष्य की वार्त्ता का वर्णन दूसरेभाग में

विस्तार से लिखाजावेगा क्योंकि मेरे धारकने उस मनुष्य को कईबार देखा मुझको बीमारी के सबब फ़िर उसपर क्रिया के करने का अवसर न मिला पर इसी क्रिस्टल का मैंने और धारकोंपरभी प्रभाव होतेदेखाहै कि उनकोभी उसमेंसे प्रकाश निकलताहुआ दिखाई देताथा चाहे उनकी आंखेंबन्द थीं॥

बहुत कारकोंने इनदिनों वर्णन किया है कि जब हलकेस्व-भाव के आदमी आकर्षणीय जलकीओर देखते हैं तो उसपानी मेंसे उनको शकलें दिखाईदेती हैं मैंने सुनाहै कि इंगलिस्तान में गोल अण्डे के स्वरूपके शीशे बनायेजाते हैं और मूर्खलोगों के हाथ बड़ेमोलसे बेचेजाते हैं क्योंकि बेचनेवाले कहते हैं कि उनकेद्वारा परोक्षदर्शित्व और प्रश्नकहनेकी शक्ति प्राप्तहोतीहै कहते हैं कि जो लोगउनको बेचते हैं कुछक्रिया उनपरकरतेहैं और बेचने वालों का वर्णन है कि जब तक यह क्रिया उनपर न कीजावे तबतक उनमें प्रश्नदेखने की शक्ति प्राप्त नहींहोती-अवश्य है कि वह आकर्षण की क्रिया होगी जब उस शीशे को कोईमोल लेनाचाहता है और स्त्रियां बहुधाउनको मोललेतीहैं तो बेचनेवाला उनसे कहता है कि जिस मनुष्य को तुमदेखना चाहतेहो उसका ध्यान करके उसशीशे की ओरदेखो और जब वह देखती हैं तो वही आदमी उसशीशे में दिखाईदेताहै इस-काहेतु यह मालूम होता है कि ध्यान के जमाने के सबब और जो उडायल की सत्ता उस शीशे में होती है उसकेद्वारा स्त्रीपर आकर्षण की प्रकाशमान दशा प्राप्त होजाती है इससे वहगुप्त मनुष्यको देखलेती हैं निदान जो लोग इस शीशे को बेचते हैं धोखा देनेवाले नहीं हैं बरन ठीक चीज़ बेचते हैं चाहे उसशीशे के प्रभाव का मूल हमको अच्छीतरह मालूमनहीं है॥

आईना जादूकाभी यही हालहै जैसा क्रिस्टल जादूका व०

र्णन कियागया यहशीशा भी इसयुक्तिसे बनाया जाता था कि उसकेद्वारा प्रकाशमान दशा उपजे एकसाहब ने ऐसे दर्पणों के बनाने की युक्ति अबफिर मालूम की है यहदर्पण शीशेका नहीं होता है बरन किसी कालीचीज़ का होता है जिसको साफकर लेते हैं और इसमें स्वरूप दिखाईदेते हैं मेरीमति यहहै किजो खोज कियाजावेगा तो मालूम होगा कि यहदर्पण किसीऐसी चीज़का बनायाजाताहै कि यातो उसमें उडायलकी सत्ता बहुतहोती है या उस में यहसत्ता भरीजासक्ती है इसदर्पणकोइस तौरपर दिखादेतेहैं कि जो मनुष्य देखनेवाला होता है उसको एक जगह बिठादेते हैं और उस जगह कुछभी शोर नहींहोता और उस जगह सुगन्धें बहुतहोती हैं फिर उससे कहतेहैं कि अच्छीतरह ध्यानसे उसदर्पणकीओरदेखो और जबवह देखता है तो जिसमनुष्यको वहढूंढ़ना चाहताहै वह आदमीदिखाईदेता है पहले पहल तो एकबादलसा दर्पणमें दिखाईदेताहै फिर यह बादल दूर होजाताहै और वह आदमी दिखाई देने लगता है बरन जो काम वह कररहाहो वह कामकरतेहुये दिखाईदेता है इसदशा में वह सबबातें वर्त्तमान होती हैं जिनके द्वारा सुगमतासे प्रकाशमानदशा उत्पन्नहोती है जो मनुष्य देखना चाहता है उसको अभिलाषा बहुत होती है और चीजें उस मकान में ऐसीहोती हैं जिनसे ध्यान अच्छी तरह जमजाता है और निस्सन्देह धूनी और सुगन्ध और उडायल की सत्ता के कारण जो दर्पण में होती हैं उसके ध्यान के जमनेकी सहायक होतीहैं फिर कारक जिसको लक्षणोंसे मालूम होजाता है कि अब आकर्षण की अवस्था उपजआई अपने जीमें उसको शिक्षादेता है कि अमुक मनुष्य को देखो या उसको उसमनुष्य के देखनेकी आज्ञा देताहै और जोकि धारक बिल्कुल कारक के अधिकार

में होता है इस कारण वही मनुष्य उसको दिखाई देता है या प्रायः यह बात हो कि देखनेवाले को शीशे में देखनेके सबबसे परोक्षदर्शन की शक्तिप्राप्त होजातीहो मिसर के जादू में बहुधा यह वर्णन होता है कि परोक्षदर्शक को पहिले एक बादल सा दिखाई देता है तथाच आकर्षण की अवस्था में जो गुप्त दर्शन की दशा उपजती है तो प्रारम्भ में ऐसाही बादल दिखाईदेता है इससे एक प्रमाण इस बात का मिलता है कि मिसर का जादू और आकर्षण की क्रिया मिलती है॥

निदान मेरेविचार जादूके विषय में ऐसे हैं जैसे मैंने ऊपर वर्णनकिये और उनसे मालूमहोताहै कि जादू वास्तवमें सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि दैविकनियमोंसे कईप्रकारके लक्षण उत्पन्न होते हैं॥

इसवर्णन से आपको प्रकट होगा कि यद्यपि हरदशामें वह विचार और कर्म्म संयोग अवश्य नहीं है जो धारक को कारक के साथहोता है परन्तु एक प्रकार का सर्व्व संयोग अवश्य है जिसकाहेतु उडायलकीसत्ताहै मैं अपनीमति अधिकतरबेधड़क इसलिये प्रकट करताहूं कि मेरे विचार में रीशनबेक साहब के खोज और परीक्षा से सिद्ध होचुकाहै कि एक प्रकार की सत्ता सम्पूर्ण संसार में वर्त्तमान है आपका जी चाहे आप उसका नाम उडायल ही स्वीकार करलें चाहे आप और कोई नाम उसका रखलें॥

मैंने इसबात के वर्णन करने में प्रयत्न कियाहै कि जो वर्णन रीशनबेकसाहब के उनधारकोंके हैं जिनपर चैतन्यदशा में उक्त साहबने क्रिया की थी वह वर्णन आकर्षणक्रिया के धारकों के वर्णनों के अनुकूलहैं इसलिये मुझे आशाहै कि मैंने जो कारण आकर्षणकीक्रिया के लक्षणोंके उडायल की सत्ताके अनुमान पर

बताये हैं आपकृपापूर्वक उनकोध्यानकरनेके लायक़समझेंगे ॥
मुझे आशाहै कि आप मेरेस्वभाव को अच्छीतरह जानतेहैं और आपको ध्यानहोगा कि जो आकर्षणकी क्रियाके लक्षणों के हेतु मैंने वर्णन कियेहैं केवल अनुमान कियेहुये हैं मेरी यह मति नहीं है कि आप उनको मूल हेतु समझें अभीतक हमको इसक्रिया की विद्या इतनी थोड़ी है कि मैंने इस अनुमान का वर्णन उचित समझाहै लक्षणों के प्रकटहोने के मुख्यमूल अवश्य करके समयतक मालूम न होंगे पर जो मेरे इसअनुमानके प्रसिद्ध होनेसे यहबात होजावे कि और लोग जो मुझसेअधिक विद्या और बोध रखते हैं इस विद्या में खोजकरना शुरू करें और अच्छे परिणाम उपजावें तो जो कुछ मैंने इनपत्रोंके लिखनेमें परिश्रम और प्रयत्न कियाहै उसका फल मुझको मिलजावेगा और मुझको आशा है कि कभी न कभी ऐसा योग्य मनुष्य उत्पन्नहोगाजोइनसबबातोंको अच्छीतरहस्पष्टकरेगा ॥
आपको ध्यान होगा कि भविष्य वृत्तान्त अवलोकन का कारण वर्णन नहींकिया इसका हेतुयहहै कि यह बात कहनी कि जब गत वृत्तान्तों का चिह्न उनके पीछे बाक़ी रहता है उसीतरह भविष्य वृत्तान्त अपनी छाया आगे डालते आते हैं निरी कल्पित बात है क्या यह होसक्ता है कि कोईचीज़ जो होनेवाली हो अपना चमत्कार अपने आगे डालती आतीहो यहबात तो सच है कि हम इस अनुमान पर ध्यान करसक्ते हैं जो समय से संसार में लोगों को है कि वर्त्तमान वृत्तान्तों में भविष्य वृत्तान्तोंका बीज वर्त्तमानहै और हम इसी अनुमान से ऐसीधरती पर मानों खड़ेहुये हैं जो हमारे पावँके नीचेहिलतीहै और पावँकेनीचेसे निकलीजातीहै इसीतरह इसीविचारसे मैंने गुरुइन्द्रिय वैकल्यदशाके उपजनेकाहेतु जिसको इसपुस्तक

का आत्माऽध्याय कहना चाहिये नहीं वर्णन कियाहै चाहे मैं मानताहूं कि मुझको भविष्य अवलोकन या गुरुस्तब्धदशा के उपजने के वर्णन की निपुणता प्राप्तनहीं परन्तु मैं इसबात पर स्थिर हूं कि यह लक्षण अवश्य उपजते हैं मैंने अपनी आंखों ऐसी दशायें उपजतेदेखीहैं सिवाय इसके बहुत अच्छीगवाही मौजूदहै जिससे हमको इसका होना मानना पड़ता है मुझको अच्छीतरह विश्वासहै कि जो सच्चीबातको अच्छीतरहसे ढूंढ़ा जावेगा तो कभी न कभी इन कठिन लक्षणों के उपजने का हेतु भी मालूमहोसकेगा॥
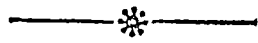
चौदहवां पत्र॥

आपकी इच्छाके अनुसार जो मैंने प्रतिज्ञाकी थी कि जोकुछ वृत्तान्त मुझको आत्माकर्षण विद्याके विषयमें मालूमहैं वह सब लिखूंगा सो अब ईश्वर की कृपासे वह प्रतिज्ञा पूरीहुई जो २ ठीकबातें मुझको मालूम थीं उनको मैंने वर्णन करदिया है उन पत्रों में सदा यह इच्छा लिखतारहाहूं कि लोग इसविद्या का अच्छीतरह खोजकरते रहें और खोज करने के पीछे जो उचित अनुमति हो वह प्रकटकरें मैंने जो आकर्षणकी क्रिया के हेतुके प्रकटहोने का उद्योग कियाहै इस उद्योगकेकारण पहले वर्णन करचुका हूं और यह भी कारणहै कि हरमनुष्य जिससे मैं इस व्यवहार में बात करता हूं यही कहता है कि कुछ न कुछ उक्त लक्षणोंके होनेका अनुमान अवश्यकरनाचाहिये चाहे वह अनुमान ऐसाही होकि जब पक्काहेतु मालूम होजावे तो खंडन कर दियाजावे लोगकहते हैं बरन वह लोग जो आकर्षण के मूलोंके होनेको मानतेहैं कहतेहैं कि जबतक कि कोई न कोई अनुमान

सिद्ध न कियाजावे उक्तमूल अच्छीतरह समझ में नहीं आते ॥

यहबात कहनी कि मैंने यहपत्र प्रसिद्ध करने की इच्छा से नहींलिखे हैं वृथाहै सच यह है कि मेरे बहुत से मित्र बहुधा इस बातकी इच्छा करतेरहे हैं कि मैं इसविद्यामें पुस्तकलिख-कर प्रसिद्ध करूं परन्तु कई कारणों से यहबात नहुई बरन जो आप बड़ातक़ाज़ा न करते तो अवश्यथा कि अबभी मैं नलिखता और अवकाश से ऐसाभी हुआ कि जब मैंने इनपत्रोंके लिखने की इच्छा की उस समय मेरे बहुत से मित्र इसविद्या की ओर चित्तलगाये हुयेथे और सन् १८४९ ई० और सन् १८५० ई० में ल्यूससाहब और डाक्टर डारलिंगसाहब इस शहर में आये और लोगों ने उनकी परीक्षा अवलोकन की तो बहुतों को इस विद्याके खोज की अधिक अभिलाषा होगई ॥

जो कि मुझे कईबर्ष से इसविद्या की ओर ध्यानरहाहै इस-लिये मुझे बहुधा उनलोगों से वार्त्ताकरने का अवसर मिलता रहाहै जिनको इसविद्याकाव्यसनहै सिवाय इसके फरंगिस्तान के बहुत से लोगोंसे इसविद्या के विषय में पत्रके लिखने का सिलसिला जारीरखता रहाहूं मेरे खोज और परीक्षा का यह परिणाम निकलाहै कि मुझे अच्छीतरह निश्चय होगयाहै कि इस विद्या के विषय में बहुत लोगों की भूल इसकारण है कि एकतो उनको अपने आप इसमें ज्ञान नहींहै--दूसरे यह कि अबतक कोई ऐसी पुस्तक नहीं बनीहै जिसमें इस विद्या का वृत्तान्त विस्तार और उचितरीति के साथ लिखाहुआ हो यह कारण उनलोगों की नासमझीके हैं जिनको भरोसा भी है कि आकर्षणीय क्रिया के मूल वास्तवमें ठीकहैं और जो लोग इन मूलोंको मानते नहीं हैं उनकीसमझमें बहुतभूलहै और उनको अति पक्ष होगयाहै इसनिश्चय से मैंने एक किताब लिखने की

इच्छा करली और ईश्वर से उसके पूरेहोने की आशा की कि जिसके देखने से खोज करनेवाले आदमी को मालूम हो कि क्यामूल देखेगये हैं और किन २ मूलोंके देखनेकी आगेआशा होसक्तीहै और किसमार्ग्ग से यहआशा पूर्णहोसक्तीहै मैं कितने ही वर्षसे प्रवृत्तहूं और मैं आपभी क्रिया करता रहाहूं और इसकेसिवाय रीशनबेकसाहब की परीक्षा जो प्रसिद्ध हुई और बहुत लोगोंने उनकीकिताब पढ़कर उसको स्वीकारकिया और उसके पढ़ने से राज़ीहुये इससे मुझे अपने उद्योगके पूरेकरनेमें अधिकतर रुचि हुई परन्तु जो हानियां इसपुस्तकमें हैं मुझसे उत्तम और कोई उनको नहींजानताहै मुझे अवकाश बहुत कम है और बहुत से कार्य ऐसे संबंधितहैं कि उनमें बहुतध्यानरहताहै मैं यहबात भी इसप्रयोजन से वर्णन नहीं करताहूं कि जो हानियां इस पुस्तक में हैं इस बहाने से आप उनको छिपावें वरन इस प्रयोजनसे लिखताहूं कि आपको प्रकट रहे कि यह कारण है कि मैंने इस विद्या के वर्णन करने का उस तौर पर उद्योग नहींकिया कि जिसतरह उचितथा और वास्तव में मुझे ऐसे पूर्ण वर्णन करने की आशाभी ऐसीदशा में नहीं होसक्तीहै मेरेमन का मनोरथ यहहै कि जो मनुष्य अति निपुण हैं वहइस विद्याके विषय में कुछ लिखें और जो इनपत्रों के देखने से यह ज्ञातहो कि निपुण मनुष्य इसतरह के परिश्रम को उठाकरकुछ लिखें तो मुझको अपने परिश्रम का बदला मिलजावेगा॥

मैं अति प्रसन्नता पूर्वक यहबात कहताहूं कि अब बहुतविद्वान् मनुष्य कई उन मूलों के सच होने का जिनका मैंने ऊपर वर्णनकिया निश्चय रखते हैं कभी सन्देह नहीं होसक्ताथा कि जल्दी या देर में यह परिणाम होता और कई जो मूल अभी ऐसे हैं कि अभीतक इन मनुष्योंने नहींदेखे हैं और इससे उन

को निश्चय नहीं है तो सन्देह नहीं है कि धीरे २ उनका भी-
निश्चय होजावेगा बरन मुझे ऐसे भविष्य कहनेका साहस है
कि मैं कहताहूं कि जिन लोगों ने डाक्टर डारलिंगसाहब और
बूसस्साहब को शिक्षा के लक्षण उत्पन्न करते देखा है और जि-
नको अब मालूम हुआ है कि यह क्रिया कुछ न उनको पहले
मालूम करने की हानि है तो जो यह मनुष्य अपनी तौर पर
खोज और परीक्षा करेंगे और निश्चय है कि ऐसा अवश्य
करेंगे तो उनको अवश्य आकर्षणस्वापके उपजने का और एक
बाहरकी शक्ति से इस स्वप्न के उत्पन्न होनेका बटेहुये ज्ञान की
शक्तिविना कारकके कहे इच्छाके समझनेकी शक्ति और विचार
संयोग—गुप्तदर्शन—और अपनी शक्तिपूर्बक इन्द्रिय बैकल्य और
गुरुइंद्रिय बैकल्यका और भविष्यअवलोकनकाभी निश्चयहो-
जावेगा बरन उनको मालूम होगा कि वास्तव में उन्होंने इन
मूलों को ऐसे कल्पित और बुरेबस्त्रों से सजारक्खा था कि इस
से उनको निश्चय नहींहोताथा और उक्तमूल तो आपऐसेनहीं
हैं कि उनको खंडन करते उनको मालूम होगा कि एकभीमूल
इनमेंसे नथानहींहै तथाच कारककी शिक्षा समझनेकी शक्तिभी
नई नहीं है नईबात केवल इतनी है कि अबतक उनको ख़बर
नहीं है कि शिक्षा और आकर्षण की क्रिया का लक्षण इच्छा
पर उपजसक्ता है यह मैं भरोससे भविष्य कथन करताहूं इस
नियमपर कि यहमनुष्य अपने भरोसेके लिये खोजकरें क्योंकि
मैंऐसे किसी मनुष्य को नहीं जानताहूं जिसने खोज किया हो
और यह परिणाम उसको अपनी परीक्षासे यथाशक्ति प्राप्त न
हो और मैं इन मनुष्यों को यह कहताहूं और सम्पूर्ण विद्या के
मूलों के ढूंढ़ने वालोंकी सेवा में विनय करता हूं कि जबतकवह
आप खोज न करें किसीतरह की मति इसविद्याके लिये प्रकट

नकरें और ऐसीमति तो कभी न दें जिससे पहलेके खोज करने वालों में दागलगे—हां हर मनुष्य को यह याद है कि जबतक उसको आप परीक्षा न हो चाहे तो किसी आश्चर्य्यदायक विषय के लिये अंगीकार करने की मति प्रकट न करें परन्तु जो आश्चर्य्यदायक विषय में उचित साक्षी प्राप्त हो तो परीक्षा न करनेपरभी उनके मानलेने में निर्बुद्धि या विश्वास की निर्बलता नहींहोती है जैसे जब पहलेही यह बात प्रकट की गई थी कि क्लोर्डफोर्म में यहशक्ति है कि उसके सूंघनेसे ऐसीमूर्च्छा उपजतीहै कि जर्राहीकाकाम विनादुःखके होसक्ता है और इसवाक्य के लिये बड़ेआदमियोंकी गवाहीथी चाहेहम उनलोगोंको नहीं जानतेथे तो यहबात तुरन्त मानीगई थी और आजतक बहुत ऐसे लोग उसकोमानते हैं जिन्होंने न आप क्लोर्डफोर्मके बलकी परीक्षा कीहै न उनको परीक्षा करते देखाहै इसमें विश्वास की निर्बलता कुछनहीं है बरन केवल बुद्धिमान् मनुष्योंकी साक्षी के लिये जिनको हम नहीं जानते हैं कि जिनको अनुचित अपराध न लगाना चाहिये एक उचित संकोच पायाजाता है परन्तु जबयहबात प्रकटकीगई कि आकर्षणकी क्रियासे ऐसाहीलक्षण विदित होजाता है बरन क्लोर्ड से इसक्रिया में अधिक विश्वास योग्य साक्षीप्राप्तथी क्योंकि हम गवाही देनेवालोंको जानतेथे परलोगों ने बिल्कुल इसबात को न माना परन्तु प्रकट है कि उन लोगों के लिये जिनको न क्लोर्डफोर्म की क्रिया का न आकर्षण की क्रिया की कुछ परीक्षा हुईहै इनदोनों मूलोंमेंसे एक का विश्वास करने और दूसरे को न मानने के लिये कुछकारण नहीं आश्चर्य्य यह है कि उस समय तक बहुत मनुष्य आकर्षणीय क्रिया का सत्य होनाही नहीं मानते हैं और चाहे इस क्रिया में परीक्षा भी हुई है उनपर भी ध्यान नहीं करते बहुत

मनुष्य * डाक्टरइस्डील साहब की किताब को भी ग्लानि से फेंकदेते हैं और जो बातें उसमें लिखी हैं उनको नहींमानते हैं परन्तु सिवाय इसबात के और कोई हेतु मालूम नहीं होता है कि सिवाय जर्राही काम के वर्णन के उक्तडाक्टर साहबने खोजकरने के समय में जो और मूल उनको मालूमहुये उनकाभी वर्णन करदिया है जिन लोगों को निश्चय है कि शिक्षाके द्वारा दुःखका चेत जाता रहता है उनको डाक्टर डारलिंगसाहबकी परीक्षाके देखनेसे पहले डाक्टर इस्डीलसाहब के खोजके परिणाम विश्वासथा कि नहीं बरन उनको अबभी विश्वास है कि नहीं कि शिक्षा बिना भी यहीप्रभाव आकर्षणीय क्रियाकेद्वारा अर्थात् हाथों के हिलानेसे उत्पन्न होसक्ता है यदि निश्चयनहीं तो क्यों नहीं निश्चय करके सैकड़ों बेर जब जर्राही का काम इसतरहपर किया गया है कि धारक को दुःखनहींहुआ तो यह गवाही पूरी है क्लोरोफोर्म की शक्तिका विश्वास तो योंहींहोगया था कि लोगोंको आप परीक्षा उसकी नहींहुईथी और आजतक लाखों आदमी उसको मानते हैं मेरा मुख्यप्रयोजन वर्णनकरनेका यहहै कि विद्वान् और अन्य मनुष्य बरन वह लोग जो उतने मूलको मानते हैं जो उन्होंने अपनी आंखों देखलिये हैं डाक्टर इस्डील साहब की किताब और रीशनबेक साहब की किताब से इसतरह से बर्ताव करते हैं जो उचित रक्षासेबाहर है चाहे इनदोनोंसाहबोंने अतिरक्षापूर्बक सच्चाईसे और प्रमाण और बुद्धिसे खोजकियाहै इसीरीतिसे बहुत लोग और किताबों सेभी जिसमें परीक्षा किये आकर्षण के मूलों का वर्णन लिखा

* डाक्टरइस्डील साहब ने कलकत्ते में एक हस्पताल बनाया था कि आकर्षण की क्रियाके द्वारा जोड़ों को स्तम्भित और रोगीको मूर्च्छित करके जर्राही का काम कियाकरते थे ॥

हुआ है यहीबर्त्तावकरते हैं जो मनुष्य डाक्टर इस्डीलसाहब की पुस्तक को पढ़कर न मानें जिनका ऊपर वर्णन है तो मैं अति नम्रतासे यहबात कहता हूं कि कोई न कोई कठिन पक्ष और शत्रुता उनके जीमें बैठी हुईहोगी और संभव है कि उनकोआप भी उस शत्रुता के होने से ख़बर न हो बास्तव में जो मुरदे भी क़बर से उठकर गवाहीदें तो ऐसा मनुष्य न मानेगा इसबात से प्रयोजनयहहै कि खोज करनेवालेसमझलें कि डाक्टरइस्डील साहब और रीशनबेक साहब के वर्णन कई ऐसे आकर्षण के मूलों के लिये ठीक माने जाते हैं जिनके लिये प्रथम समय के कारकों का वर्णन उनके अनुकूलहै तो अवश्यहै कि उनकेवर्णन उन मूलों केलिये भी ठीक साबित होंगे जिनकी हमको अबतक परीक्षा नहीं हुई है मैं जीसे इच्छा करताहूं कि खोजके करने वाले अपने खोज में परिपूर्ण हों परन्तु मेरी यहभी इच्छाहै कि उनके मनोंमेंसे वह अनिश्चय जातारहे जिससेकेवल इसबिचार से कि वहकई परिणाम अपनी समझमें न उपजनेके योग्यसमझ लेते हैं उन परिणामों को नहीं मानना चाहते हैं मेरीयह इच्छा है कि जिस तरह क्लोर्ड फोर्म के विषय में लोगों की रीति रही है वहीरीति हर तरह आकर्षणके मूलों के लिये भी जारीरहे अर्थात् यातो विश्वास योग्य मनुष्यों की गवाहीको मानाजावे कि रोज़ २ हज़ारों विषय में यहबात होती है या लोग आप परीक्षा करके देखलेंपरन्तु मेरीजिज्ञा उनलोगों की रीतिके लिये कभी हटी न रहेगी जोवर्णनकियेहुये मूलों को उचितखोज बरन किसीप्रकारकोढूंढ़ करने के खंडन करदेतेहैं॥

इसपत्र के पूर्णकरनेसे पहिलेमें कईविषयोंका वर्णन करता हूं जिनका उनलोगोंको ध्यान रखनाचाहिये जो आकर्षणक्रिया की परीक्षा करनी चाहैं॥

पहिला नियम तो यह है कि खोज करनेवाले को ठीकबात के खोजकरनेकेलिये मनसे इच्छाहो और फिर यहबात अवश्य है कि कारकको धीर्य और उसके स्वभाव में दृढ़ताहो यदि य रत्न प्रकृतिमें न हों तो कुछभी लाभ न होगा यदि कईबेर क्रिय च्युताहोजावे अर्थात् क्रियाके करनेसे वह परिणाम प्राप्त न हं जिनके उपजाने की इच्छाहो तो ऐसे चूक जाने से कारक को हिम्मत हारनी न चाहिये या जो परिणामों में विपर्य्यय प्रकट हों तब भी अपना साहस तोड़ना न चाहिये बरन याद रखना चाहिये कि ऐसे लक्षणोंसे जिनको हम थोड़ाही जानते हैं और जिनको हम अच्छीतरह नहीं समझते हैं उनमें बोध उपजाने के लिये भलोंसे सम्भवकर कामकरें आशा होसक्ती है कि यह लक्षण ऐसेहैं कि बहुतसे छोटेकारण उनके चूकजाने के हैं और धीर्य की आवश्यकताहोने का पूरा निश्चय होना चाहिये मुझे आप समयसे इसबात का विश्वास था कि इस क्रिया में धीर्य एकबड़ाखंडहै परन्तु मैं इसनिश्चय पर कामनहीं करताथा सो जब मैंने अपनीजगह क्रियाकरनी शुरू की और प्रकट लक्षण नहींउपजे तो मैंने बुद्धिकी हीनतासे समझलिया कि मेरे शरीर में आकर्षण की शक्ति पूरीनहींहै और उससमयसे मैं सदा इस बातपर सन्तोषकरतारहा कि और कारकोंको जिनको मैं अपने विचार में बलवान् कारक समझता था क्रियाकरते देखता था आप अमलकरना छोड़दिया फिर जब मैंने अच्छीतरहसे ध्यान किया तो मालूमहुआ कि जो कारक पूरीपरीक्षाकरलेतेथे प्रकट में उनके शरीर मेरे शरीर से अधिक बलवान् न थे और यहभी कि जब मैंने सबकारकों का यहबचन सुना कि धीर्य से अवश्य सिद्धिहोतीहै तो मुझे कुछ साहसहुआ और फिर मैं क्रियाकरने लगा और जोकि मुझसे यकबारगी पूरी न हुई परन्तु धीर्यरखने

से यहबातहोगई तथाच अब मुझेनिश्चयहै कि हरमनुष्य चाहे स्त्री या पुरुष जिसकेशरीरमें मध्यमबलहो और जो आरोग्यहो इतनी आकर्षणकी शक्ति रखताहै कि हरमनुष्यपर जिसकीप्रकृति आकर्षणकीसत्ता मध्यमदशापर अंगीकार करनेवाली हो धीर्य और दृढ़तासे अच्छीतरह क्रिया करसकाहै और आकर्षणीय शक्ति तो प्रतिसमय और हरमनुष्यके शरीरमें रसायनी कर्म अर्थात् भोजनके पचने आदि शरीर कर्मों से उत्पन्न होती रहती है परन्तु इससे अधिक मुझे यहांतक निश्चयहै कि हर मनुष्यपर मुख्यकरके उसदशामें कि कारक बलवान् हो और कुछसमयतक क्रिया बराबरकीजावे अच्छीतरह अमलहोसक्ता है परन्तु उनमनुष्योंपर कि जिनकी प्रकृति बहुतही आकर्षण की क्रिया के अंगीकार करनेवालीहो पहलीबेर या कईपलोंमें अमल होजाताहै मेरेशरीरमें आकर्षणकीशक्ति मध्यमसे अधिक नहींहै परन्तु थोड़ासमयहुआ जब मैंने तीन जवान आदमियों पर अमलकरके आजमाया जिनपर कभी किसी ने पहले अमल नहींकियाथा तो तीनोंपर अमल पूराहुआ एकपर तो पहलीहीबेर थोड़ाप्रभावहुआ परन्तु दूसरी और तीसरीबेर क्रिया का प्रभाव अधिकतर प्रकटहुआ फिर हरदिन क्रियाकाप्रभाव बढ़तारहा परन्तु आठवेरकी क्रियामेंभी कि बहुतलक्षण प्रतीत हुये निद्रा अर्थात् पूर्णाकर्षणस्वाप नहींउपजा मुझे अच्छीतरह निश्चय है कि कईबेर और क्रियाकरनेसे इसधारकपर पूर्णाकर्षणस्वापउपजेगा दूसरेमनुष्यपर पहलीहीबेरकी क्रियाकरनेमें कुछप्रभावहुआ औ तीसरेबेरकेअमलमें गहरीनींदआगई तीसरे मनुष्यको कईबेरके अमलमें निद्रा आगई परन्तु कुछ समयतक गहरीनींद नहीं आई वरन जो उससे बातकीजाती थी तो उस की नींदमें विघ्नपड़जाताथा जब उसपर नौबेर क्रियाकीगई तो

उसको गहरीनींद आई फिर उसको अच्छीतरह सुलादेनेमेंकुछ श्रम नहीं होताथा ॥

दूसरी बात मैं यह कहनी चाहताहूं कि जो नींद बिल्कुल पैदा न होसके तो यह न समझना चाहिये कि अमलपूरा नहीं हुआ है क्रिया के बहुतलक्षण मुख्यकरके यह प्रभाव कि रोग दूर होजावे निद्रा या बटेहुये ज्ञान के होने बिना उपजसक्ते हैं बरन मैं ऊपर वर्णनकरचुका हूं कि साधारण चैतन्यावस्था में परोक्षदर्शित्व लक्षण उपजसक्ताहै ॥

तीसरे आकर्षणकीक्रिया के लक्षणोंके खंडों में इतना विपर्यय है कि दोधारकों पर एक तरह लक्षण प्रकट नहींहोते हैं तथाच इसपरिणाम की आशा इसबातसे होसक्तीहै कि संसार में कोई दोआदमी ऐसेनहीं हैं जिनका स्वरूप या स्वभाव एकसाहो सो जो एकवेर हम किसी धारक पर कोई मुख्य लक्षण प्रकट होतेहुये देखें और उनलक्षणोंको देखकर हमकिसी और मनुष्य पर क्रियाकरें और वह लक्षण प्रतीत न हों तो हमको यह न समझना चाहिये कि जो लक्षण हमने पहले मनुष्यपर देखेथे वह झूठेथे या जो क्रियाहमनेकी वह पूरीनहींहुई हमारा कामहै कि जोक्रिया हमकरते हैं उसमें जो दैविक लक्षणप्रकट हों उनकी ओर ध्यानरक्खें और परीक्षा के अन्तर्गत हमको ज़रूर मालूमहोगा कि चाहे खंडोंमें विपर्य्ययहो बड़ी २ बातें और मुख्य लक्षण सर्वदशाओं में मिलतेहुये होंगे ॥

चौथेयह कि एकहीधारक पर जो लक्षण उपजतेहैं समय २ पर तो उनमें एकविचित्रतासे अन्तर होताहै मुख्यकरके उनके पदमें बहुत बिपर्य्यय होताहै--सम्भव है कि जो धारक आज अच्छीतरह से रोशनहो और जिसपर विचारसंयोग के लक्षण अच्छीतरहप्रकटहों कल अन्धकारमेंहों और जब उसपर क्रिया

कीजावे क्रिया पूरी न हो ऐसीदशा में हमको चाहिये कि उस समय क्रिया न करें क्योंकि जो धारकको ताकीद कीजावे तो उसकी प्रकाशमानदशा कम होतीजावेगी और वह प्रायःपूछने वाले आदमी की खशी के लिये कल्पित बातें कहने लगे और जब उसकी कल्पना में भूल होती है तो क्रिया के देखनेवाले कहतेहैं कि गुप्तदर्शन दशा बिल्कुल धोखेकी चीज़ है ॥

पांचवें चाहिये कि जबहम परीक्षा करें तो एकान्तमेंकरें धारक और कारकके सिवाय और कोई न होनाचाहिये परंतु जोक्रिया इस इच्छासे कीजावे कि उससे अधिक खोजकेलिये परिणाम निकालकर इकट्ठे कियेजावें तो एक या दो सहायक या गवाह रखने चाहियें कईकारक इसइच्छासे कि क्रियाके मूलोंको सिद्ध करें हर परीक्षा का तमाशा देखते हैं और अपने सब मित्रोंको बुलाते हैं परन्तु यहबात यादरखनी चाहिये कि जो २ आदमी अधिक होता जाताहै यह होसक्ता है कि हलके स्वभाव के धारक पर क्रियाके प्रभाव होनेमें अधिकबिघ्न हो जब एकान्तमें हमको किसी लक्षणके उपजने का भरोसा अच्छीतरहहोचुके तो उचित है कि हम औरों के भरोसा देने का उद्योग करें परन्तु हमको उचित है कि थोड़ेही आदमी अपने साथ लेजावें और उनको धारकसे दूरीपर रक्खें कि उनका आकर्षणीय प्रभाव यथाशक्ति उसपर कमहो ॥

यहरक्षा मुख्यकरके उसदशा में अधिकअवश्यहै जबहम री-शनबेकसाहब की परीक्षासे लौटनाचाहैं अर्थात् कृत्रिम चुम्बक या कृस्टलया मनुष्यकेशरीरमेंसेरोशनीनिकलती हुईदिखानी चाहैं वास्तवमें इतनी रक्षा अवश्यहै कि जबतक कोई परीक्षित और अभ्यासवान् मनुष्य परीक्षा के समय देखने और उपदेश करने को वर्त्तमान हो अवश्य है कि क्रियामें चूकहोगी ॥

जो उडायल की रोशनी दिखाना चाहें और यह इच्छा हो कि जो मनुष्य उसको देखे हमसे उसका हाल बर्णनकरे तो नीचे लिखे नियमों का ध्यान रखना चाहिये यदिकोई नियम भूल जावे तो परीक्षाके पूरे होनेकी आशानहीं होसक्ती है ॥

पहिला नियम यहहै कि धारक बहुत हलके स्वभाव का होना चाहिये जैसे ऐसा मनुष्य जिसको रात्रिके समय अंधेरेमें बस्तुओंमेंसे या मनुष्यके शरीरमेंसे रोशनी निकलतीहुई देखाई देती है यहबात पूरी नहीं है कि धारक कौनसे निर्बल हों या खफकानी हो या उसको बहुत ऐंठन की बीमारी होती रहतीहो यद्यपि यहबातें ऐसीहैं कि स्वभाव के हलके होनेको बतातीहैं चाहिये कि कृत्रिम चुम्बक का उसपर बलवान् प्रभावहो परन्तु हर दशामें पहिल उसपर रोशनी का प्रभाव आज़माना चाहिये और फिरकहना चाहिये कि उसकास्वभाव हलका औरअच्छी तरह से प्रभाव के अंगीकार करने वालाहै या नहीं ॥

दूसरा नियम यहहैकि पूरा अंधेरा होना चाहिये साधारण मकानों में और दिनके समय यह नियम पूरा नहीं होसक्ता है परन्तु रक्षा पूर्वक रात्रि के समय यहबात होसक्ती है ॥

तीसरानियमयहहै कि धारक एकया डेढ़ बरन दोघंटेके अनुमान उसपूरे अंधेरेमेंरहे कि उसकीआंख अच्छीतरह अंगीकार करने वाली होजावे औरपरीक्षा से पहिले पतली बहुतही फैल जावे अन्य २ धारकोंके लिये अन्य २ प्रकारकासमय चाहिये ॥

चौथा नियम यह है कि सूर्य या दीपक की एक किरन भी धारक के मकानमें जासे जानेके पीछे उसके अंदर नहीं पहुंचनी चाहिये जब परीक्षाकरने की इच्छाहोतो सबतरह का सामान पहिले करलेना चाहिये और जबतक परीक्षा करनाचाहें उतने समयतक किसीमनुष्य को मकान के अंदर न आनेदेना चाहिये

न उसमेंसे बाहर जानेदेना चाहिये क्योंकि दरवाज़े मेंसे थोड़ी रोशनी भी आवेगी चाहेवह थोड़ी होगी पर इसबात के वास्ते पूरीहोगी कि धारककी दृष्टिकोखराबकरदे और आधघंटे बरन अधिक समयतक उसको उडायलकीरोशनी दिखाई न देगी॥

पांचवां नियम यहहै कि चुम्बक बलवान् होनाचाहिये यदि चुम्बक भारी ऐसा न होकि २० सेर या एकमन बोझा उठासके तो बहुतसी परीक्षाओं के लिये काम आयेगा और ऐसा चुंबक बिजली की सत्ता बरन इससे अधिक बलवान् चुम्बक बनालेना सुगमहै जो लोग बहुत हलके स्वभावके हैं वह साधारण चुम्बक मेंसे भी पूर्ण अंधकारमें रोशनी निकलती हुईदेख सक्ते हैं इस शर्तपर उक्त चुम्बक बलवान्हो पर रोशनी थोड़ी दिखाई देगी॥

छठा नियम यहहै कि जबधारक चुम्बक की ओर देखरहा हो कोई मनुष्य उक्त चुम्बक को अपने हाथमें रक्खे नउसको छूवे जबरोशनी देखीजातीहैतो कारक या अन्य मनुष्यके चुंबक के पास जानेसे वह रोशनी बुझजाती है क्योंकि उसके शरीर की उडायल सत्ता चुम्बक की सत्ताको नष्ट करदेती है और जो फैलाव उडायलका चुम्बकमें ध्रुवों के अनुसार है उसको उलट देतीहै यदि सीधा चुम्बक को दाहिने हाथमें उसकेउत्तरी ध्रुव से पकड़ रक्खेंया दक्षिणी ध्रुव से पकड़कर बायें हाथ में रक्खें तो पहिले से दूरशिरे पर अधिक रोशनी देगा क्योंकि दोनों सत्तायें मिलजातीहैं परन्तु भारी चुम्बकों को मेज़पर सीधारख देना चाहिये और फिर कारक को दूरहोजाना चाहिये॥

सातवां नियम यहहै कि किसी मनुष्य को धारक के पास खड़ारहना या बैठनानहींचाहिये क्योंकि इसदशामें ऐसे मनुष्य का प्रभाव धारक की प्रकृति के प्रभाव अंगीकार करनेमें न्यून

अधिक बिघ्न उपजाता है जब उसके पाससे लोग हटजातेहैं तो धारक को रोशनी दिखाई देने लगती है॥

आठवां नियम यहहै कि रोशनी देखने के लिये धारकको एक मुख्य दूरी पर चुम्बक से होना चाहिये क्योंकि जो दूरी उचितहै धारक न्यूनवा अधिक दूरीपरहो या तो रोशनी दिखाई नदेगी या साफ़ न दिखाई देगी नाना प्रकार के धारकों के लिये यह दूरी नाना प्रकार की होतीहै कइयोंकोश यह आकर्षण का प्रकाश ४० इंच की दूरीपर दिखाई देताहै कइयोंको जबतक कि वह दो या तीन इंचपर चुम्बकसे दूर न हों रोशनी दिखाई नहीं देती कइयों को इन दूरियों मेंसे मध्यम दूरीपर रोशनी दीखती है ऐसे धारक कमहैं जिनको चुम्बकसे चारफुट से अधिक दूरीपर रोशनी दिखाईदेतीहै हर परीक्षामें मुख्यदूरी जो उचित हो पूछलेनी चाहिये और जब उसीधारक परफिर परीक्षा कीजावे तो उस दूरीका रक्षा पूर्वक ध्यान रखनाचाहिये कम दृष्टिके धारकों को ऐनक के द्वारा जिनके काममें लानेका उनको अभ्यास है उडायल की रोशनी के दिखाई देनेमें सुगमता और उनकी दृष्टिमें वृद्धि होतीहै यह दूरीके उचितहोने का नियमबहुत आवश्यकहै यहांतक कि जो और सबनियम अच्छी तरहपूरेहों और यहनियमपूरा न हो तो रोशनीदिखाई नदेगी॥

नवां नियम यहहै कि धारक को इसतरह बिठाना चाहिये कि उसकी पीठ उत्तर की ओर हो और पांव दक्षिण को ओर हों शिर उत्तरकी ओर और धारक कीदृष्टि दक्षिणकी ओरहो॥

इननौमें से एक नियम भी ऐसा नहीं है कि जो वह पूरान हो तो जिन धारकों का स्वभाव सामान्य प्रभाव के अंगीकार करने वालाहै उनको चैतन्य अवस्था में रोशनी दिखाई दे जो धारक प्रभाव के अति अंगीकार कर्त्ताहैं उनपर निस्संदेह किसी

नियमके पूरा होनेसे थोड़ाप्रभाव होता है जब धारकपरआक-र्षण की दशा बलवान् हो तो उसका स्वभाव इतना अंगीकार कर्त्ता है कि दिनमें उसको उडायलकी रोशनी दिखाईदेतीहै॥

आकर्षण की परीक्षा और गुप्त दर्शन के लक्षण उपजानेकी परीक्षा बहुत तमाशा देखने वाले और इच्छा के भरेलोगोंके सामने नहींकरनी चाहियें क्योंकि उनका आकर्षणका प्रभाव धारकको दुःखीकरदेता है सिवायइसके हरएकआदमी अपना संदेह दूरकरने के लिये धारकको छूवेगा या उससे बातेंकरनी चाहेगा औरकुछभी इसबात का बिचार न करेगा कि यहबातें हानि दायक हैं अर्थात् धारक की प्रकृति को दुःखी करदेतीहैं ऐसे समूह में परीक्षा करनेका अन्त यहहोताहै कि अमलचूक जाता है और वह तमाशा देखने वाले अज्ञान इसबात कि उनकी अपनी चेष्टाओंसे अमल नहींहुआ हँसतेहैं और कारक ने जो बुद्धि की हीनतासे इस आशापर बुलायेथे कि पूरीपरीक्षा होगी लज्जा उठाता है और देखने वालों के मनपर यह बात जमजाती है कि आकर्षण के मूल जिनकी कारकने प्रतिज्ञाकी थी वास्तवमें नहीं उपजते चाहेयहबातहै कि परीक्षाही अच्छी तरह नहीं की गई थी जबकोई धारक अच्छा मिलजावे और मालूम हो कि आकस्मिक कारणोंसे उसके स्वभाव में विघ्न नहीं उपजता तो आकर्षण क्रिया के लक्षण बहुत आदमियों में दिखाये जा सक्ते हैं परन्तु जो तमाशा देखने वाले धारक से उचित दूरीपर रहें और कारक की इच्छाके अनुसार बर्त्ताव करें परन्तु सर्व रीतिसे दो तीन देखने वालों से अधिक एक समय में इकट्ठे न होने चाहियें तमाशा देखनेवालों को इतना धारक के निकट होना चाहिये कि उसके मुखके हरडौल के विपर्यय को देखसकें और उसके शब्द के हरपलटे को सुनसकें इनबातों

से धारक के सच्चा होनेका अच्छी तरह निश्चयहोसक्ताहै और बहुधा इस बात को समझ सक्ते हैं कि धारकको परोक्ष दर्शन की शक्तिप्राप्तहै या नहीं यदि तमाशा देखनेवाले धारकसेबहुत दूरीपरहों तो यहबात होनी असंभवितहै जो बिघ्नदेखनेवालों के धारकके अति निकट होनेसे उपज सक्ताहै उसके दूरकरने की यह रीति है कि उसको धारक के साथ संयोग करादिया जावे इसरीति से धारक उस मनुष्य के प्रभाव का अभ्यासी हो जाता है और उसको दुःख नहीं होता परन्तु एक समय में एक मनुष्य से अधिक धारकके साथ संयोग नहींकरसक्ता है॥

किसी समय संदेही जन ऐसे धारकों के लिये जिनकी ओर छल छिद्र और धोखे का संदेह भी नहीं होसक्ता है ऐसे वर्त्ताव करते हैं कि मनको अति दुःख होता है अर्थात् जब धारक के हाथ अकड़ जाते हैं तो हाथों के साथ भारी बोझ बांध देते हैं हाथ को मरोड़ते हैं और जोर से चुटकियां लेते हैं और दुःख देते हैं प्रयोजन उनका यह होता है कि मालूम करलें कि वास्तव में धारक अचेत होजाता है या नहीं और उसके हाथ अकड़ जाते हैं कि नहीं परन्तु ध्यान करने की ब त है कि अचेत होजाना और हाथों का अकड़जाना और चीज़ है और हाथोंका टूटने के लायक़होना और यहबात कहांसे सिद्ध होसक्ती है कि एकनाथ में जो दोमनबोझ बांधदें और भार को लटके हुयेहाथ के सहारेपर रक्खें तो हाथ टूटने का नहीं जब धारक पर आकर्षणकी दशाहोती है तो शिक्षा या खिँचावट के द्वारा तीनचार आदमियों के सामने कि उनमेंसेहर एक उससेअधिक बलवान्होता है धारकसे ज़ोरकराते हैं मानों पट्ठों के बलको सिद्धकरने के लिये यहबात अवश्य है कि धारक की मुख्यशक्तिसे अधिक बल प्रकटहो कभी दोआदमी मि-

लकर उसकी नाड़ी देखते हैं और जो उसको मूर्च्छा आजावे या अकड़न पैदा होजावे तो आश्चर्य्य करते हैं चाहे आकर्षण की क्रिया में जिसको कुछभी बोध है वह अच्छीतरह जानता है कि यह आकर्षणशक्तिका बुरा प्रभावहोताहै कभी तेज़२ छींक लानेवाली चीज़ें धारक की नाक में भरदेतेहैं कि मालूमहो कि बास्तव में अचेत है या नहीं यहनहीं समझते कि आकर्षण की दशा के दूरहोजाने के पीछे इन बस्तुओं का क्या प्रभाव होगा कभी तेजाब हाथों में मलदेते हैं या त्वचा में सुईयां चुभोदेते हैं क्या ऐसेही वर्त्ताव से अचेत होना सिद्ध होसक्ता है और कोई वसीला इसबातका नहीं होता बास्तव में ऐसे २ वर्त्ताव मूर्खता और बुद्धिकी हीनता के होते हैं पट्ठों का अकड़जाना और दुःख का चेतन होना इसके विना कि ऐसे दुःख धारक को न दिये जावें सुगमतासे मालूम होसक्ताहै यहदुःखचाहे आकर्षणस्वाप में कुछ प्रभाव नहीं रखते हैं परन्तु जब धारक जागता है तो अवश्य करके उनका प्रभाव उसपर होताहै अभ्यास वा बुद्धिमान् कारक कभी ऐसे व्यवहारनहीं करते हैं क्योंकि वह समझते हैं कि यह बातें वृथा हैं और जो कुछ मालूम करना है इनके विना सूचित होसक्ता है ॥

समझाने के प्रश्न और अन्य सम्पूर्ण प्रकारकी सैनें सिवाय उसदशा के कि शिक्षा का प्रभाव सूचित करना चाहें न करने चाहियें परन्तु जो कि यह प्रत्यक्ष लाभहै बहुतसी अच्छी परीक्षायें इस नियम के छोड़नेसे बिगड़ जातीहैं चाहिये कि सोने वालेको अपनेआपही जो कुछकहेकहनेदें और जोप्रश्न कियेजावें तो केवल उससमय कि जब वह अपना वर्णन पूरा करचुकाहो और जो कुछ उसने वर्णन किया हो प्रश्न किये बिना अच्छी तरह समझमें आसके ॥

तमाशा देखनेवाले को चाहिये कि कोईबात ऐसी न करे न कोईबात ऐसी कहे जिससे म लूम हो कि उसको निश्चय हैकि धारक धोखा देनेवाला या मक्कार है जितना दुःख और शोच धारक का इससे होता है उसका वर्णन से बाहर है वास्तव में यहबात है कि हमको ऐसादुःखउसे न देनाचाहिये और सिवाय इसके यहभी परिणाम होता है कि बहुत सीधे और सुगम परीक्षायें च्युत होजाती हैं बहुत धारक ऐसे प्रश्नों का जो ऐसी इच्छा से पूछे जाते हैं उत्तर देनेसे इन्कार करते हैं और ठीक इन्कार करते हैं और जो ऐसा मनुष्य प्रश्न करे जिसको धारकों के सच्चेहोने में भरोसा है तो वह उसका उत्तर प्रसन्नता से पूरा देते हैं आकर्षण की क्रिया की परीक्षा में यहबात बहुत प्रकटहै कि धारक तुरन्त तमाशा देखनों के मनका हाल इसके बिनाकि यह प्रकटहो मालूम करलेते हैं और बतादेते हैं और जो लोग दिल के साफ़ होते हैं उनके निकट आनेसे धारक प्रसन्नहोते हैं और उनकी आकर्षण शक्ति बढ़ जाती है और धारक को एक प्रकार की उनसे प्रीति और खिंचावट होजाती है इसके विरुद्ध जब बेईमान सन्देही मनुष्य धारक के निकट पहुंचते हैं तो उसको अतिग्लानिहोती है और उसकी प्रकाशमानदशा में कमी होजाती है ॥

मैं यहां फिर कहता हूं कि आकर्षण की क्रिया कुछ खेलने की चीज़ नहींहै कि खाली समय में उससे मनको बहलालिया जावे या नये विचित्र परीक्षाओं के मालूम करने के मनोरथको पूरा करलियाजावे इसतरहपर इसका वर्त्तावकरना बुरावर्त्तावहै और कभी न करना चाहिये और यहक्रिया ऐसीभी नहींहै कि रुपये के लोभ से तमाशा देखने वालों को दिखाई जावे और मुख्यकरके ऐसे तमाशादेखनेवालों को जो देखते हैं और हँस

देतेहैं और यह कहकर चले जाते हैं कि यह बिचित्र क्रिया है वास्तव में यहअमल साफ़ है और ऐसा है कि बड़ीरक्षासे उस पर ध्यानकरना चाहिये यदि यहक्रिया इसलिये कीजावे कि देखनेवालों को कुछहँसी का अवसर मिले तो बड़े रंजकीबातहै और मुझे इससे इतना दुःखहोता है कि मैं तनुसे यह मति देताहूं कि चाहेसभा में या एकान्त में यह क्रिया तमाशा देखने वालों को नहींदिखानी चाहिये पर जो देखनेवाले थोड़ेहों और ऐसेहोंकि उनकोवास्तवमें सत्यविषयके मालूमकरनेका मनोरथ हो और उनको आकर्षणके मलमालूम करनेकी इच्छासे देखने स्वीकार हों तो कोईहानिनहीं—जो दिखाव इसलिये कियाजावे कि केवल देखनेवालों का मन बहल जावे उससे इसविद्याकी अप्रतिष्ठा होती है और उसकी वृद्धि में बिघ्नपड़ता है॥

एक और अर्थमेंभी आकर्षण खेलनेकी चीज नहीं है मेरा प्रयोजनयहहै किजोलोग अभ्यास न रखतेहों और परीक्षितनहों उनकी बुद्धिकी हीनतासे क्रिया नकर बैठनी चाहिये क्योंकि अवश्य है कि अप्रसन्न करनेवाले परिणाम उत्पन्नहोंगे मैंनेइस बात का वर्णन विस्तार से करदिया है यहां केवल इतना कहताहूं जोकि बुद्धिहीन कारक की क्रिया करनेसे बुरे परिणाम उपजसक्ते हैं परन्तु जबकभी अभ्यासवान् बुद्धिमान कारकने क्रियाकी है ऐसेबुरे परिणाम कभीनहीं उपजे हैं—इसविद्या के विद्यार्थी को किसी अभ्यासवान् कारक के वर्त्तमान होने बिना क्रिया न करनी चाहिये परन्तु मैं चाहताहूं कि मनुष्य कोक्रिया के करने का ज्ञानप्राप्तहो क्योंकि इसक्रियाका ज्ञानहोना अति लाभदायक है यहतो प्रकट है कि यह ज्ञान इस तरह प्राप्त न करनाचाहिये कि जिसतरह कोईमनुष्य अँधेरेमें किसीवस्तुको टटोले वरन अभ्यासकरनेवाले कारकोंकी क्रियाकोदेखकर और

उनसेबर्त्ताव के नियमों को सीखकर बोधप्राप्त करनाचाहिये ॥

जो उपदेश ऊपर लिखे हुये हैं जो उनका ध्यान रक्खें तो सब आदमी जो परीक्षा करेंगे पूरे परिणाम प्राप्त करेंगे मैं यह नहीं कहताहूं कि सर्व कारक मुख्य लक्षणों को मुख्य रूपोंमें अवश्य देखेंगे क्योंकि न केवल धारकों के स्वभाव में बहुतही विपर्य्यय है बरन कारकों की प्रकृति में भी बहुतही अन्तर है सो इसका सम्भव है कि कोई कारक अपने अभ्यास और परीक्षा में गुप्त दर्शन का लक्षण कभी न देखे कोई कभी इन्द्रिय वैकल्य दशा न उपजासके परन्तु जो ऐसा होगा भी तो कमहोगा कि किसीसे क्रियापूरी न हो और सबसे अधिक यह बातहै कि जो कारक आरोग्य हैं वह आकर्षण क्रिया के द्वारा धारकका दुःख कमकर सकेंगे और रोग दूर कर सकेंगे ॥

मेरी मतिमें संदेह नहीं होसक्ताहै कि लोगअब आत्याकर्षण विद्याको इसी तरह पढ़ेंगे जैसे और विद्याओं को पढ़ते हैं और वैसेही पूरे परिणाम प्राप्तहोंगे चाहिये कि हमसब मिलकर इस विषयमें परिश्रमकरें कि इसविद्याके पढ़ने में वृद्धिहो ॥

विद्वान बहुत समय तक इस विद्याको भूलेरहे हैं तो जो वह अब इस विद्याकी ओर ध्यानकरेंगे तो उनको कोई यहनहीं कह सक्ताहै कि उनका विश्वास निर्बलहै जिस तरह पर किसी नये मूलका हाल होताहै इस विद्याका भी वही हाल होचुकाहै कि कहीं लोगोंने इसकी ओर ध्यान नहीं किया परन्तु इस बातका कुछ आश्चर्यनहीं और न इसका खेदकरना चाहिये नईबातोंमें संदेह करना मनुष्य की स्वभाव सता है परन्तु हां ऐसा हो सक्ताहै कि यह संदेह बहुत करना चाहिये और इससे लाभ भी होताहै और वह यहहै कि नई बातें अच्छी तरह छानीजाती हैं और उनको जितनी ठीक होतीहैं वह जानी जातीहैं जो अशुद्ध

होतीहैं वह खण्डनकी जातीहैं सो जो लोग आत्मा कर्षण विद्या को पढ़ना चाहैं जो उनको मनुष्यके स्वभावकी ख़बर है तो उन को समझनाचाहिये कि लोग उनकासामना करैंगे और लोगों को इसविद्या से पक्षनेगा और जब ऐसाहो तो उनको धैर्य्य रखना चाहिये क्रोध न करना चाहिये क्योंकि क्रोधसे ठीकबात के खोज करने में हानि होती है यह बात सच्चै कि जब कोई प्रतिष्ठित मनुष्य सत्यता पूर्वक कोई बातकहैं और उनके सामने न केवल झूठा प्रमाण निवेदन कियाजावे वरन उन को धोखे और छल छिद्र होनेका अपराध लगाया जाय और प्रमाण के बदले लोग उनको गालियां दें तोमन सह नहीं सक्ता परन्तु क्या हर समयमें नई बातोंके खोजकरनेवालोंको ऐसेकष्ट उठाने नहीं पड़तेहैं क्या गालीके बदले गालीदेनेसे और असत्यता के अपराधकेबदले संदेहीजनोंको असत्य कहनेसे कुछमिल जाताहै मेरी मतिमें तो कुछ भी लाभनहींहै मेरी अनुमति तो यहहै कि जो लोग नई बातोंकेलिये अपराध लगाते हैं और उनकी कम समझीहै तो मुझे इसबातसे बड़ाही अचंभाहोताहै कि वहमालूम किये बिना बेशोचे हज़ारोंप्रतिष्ठित मनुष्योंपर अपराधलगाते हैं परन्तु जोमनुष्यकिसी ठीकबात के खोजकामनोरथ रखते हैं तो जोवह लोगोंकेपक्ष और शत्रुताकी ओरसेदृष्टि न हटावेंतो जैसी अभिलाषा उनको अपनेखोज में उचितहै मेरी समझ में उसमें कमीहोतीहै जिनको पूर्ण अभिलाषाहै उनको उचितहै कि समय की राहदेखें और धैर्यपूर्वक अवलोकन करतेरहें कि कबउनकी परीक्षा में सिद्धिहोगी आत्माकर्षण विद्यामें झगड़ा और तक़रार समयसे बहुतही होतारहाहै अब चाहिये कि झगड़ा और तक़रार से दृष्टि बचाकर विद्वानोंके सदृश सुगमतासे खोजकरें और जो मनुष्य इस उत्तमोत्तम विद्या की सहायता करने को

आज राज़ीहों तो चाहेवह कल हमारे शत्रुता उसका आदर करें और उसके संयुक्त होने में प्रसन्नहों ॥

पंद्रहवां पत्र ॥

दृष्टांत और परीक्षायें ॥

जिन लक्षणों का मैंने पहिले के पत्रों में वर्णन कियाहै अब मैं उनको विस्तार से वर्णन करताहूं यदि यह विस्तार उनपत्रों में लिखाजाता तो वर्णनकी श्रेणीमें विघनपड़ता और जो कि कईदृष्टान्तोंका कईबेर वर्णनहै इसलिये उनका विस्तार लिखना उचित मालूमहुआ इसके सिवाय कई उदाहरण ऐसे वर्णन कियेजावेंगे कि जिनकी मुझको परीक्षा नहीं बरन अन्य कारकों को हुईहै और वहपरीक्षा प्रसिद्ध होचुकीहै केवल आवश्यकतासे उनका वर्णन करूंगा ॥

बहुधा दृष्टान्तों के ढूंढ़ने में कठिनता नहीं है बरन उनके चुनने में कठिनता है मैं केवल उतने हीं दृष्टांत वर्णन करूंगा जितने पिछले पत्रोंके विस्तार के लिये अवश्यहैं ॥

अब जो विस्तार मैं वर्णन करूंगा तो उनके वर्णन में नीचे कीयुक्तिका ध्यान रहेगा ॥

पहिले उन लक्षणों का वर्णन होगा जो चैतन्यावस्था में प्रतीतहोतेहैं यह चैतन्यावस्था साधारणचेतसे इतनीहीं अलग है कि उसमें आकर्षण के लक्षण प्रकटहोते हैं यद्यपि साधारण होशहोताहै वह स्थिररहता है इसमें शिक्षा के लक्षण का वर्णन किया जावेगा चाहे वहलक्षण आकर्षणक्रिया की प्रसिद्ध युक्ति से उत्पन्न हों या डाक्टर डारलिंगसाहब की युक्ति से उत्पन्न कियेजावें ॥

दूसरे उन लक्षणों का वर्णन होगा जो आकर्षणस्वाप में उत्पन्नहोते हैं और जब धारक का होश अर्थात् चेत घटाहुआ

होता है इसमें निद्रा के उपजाने और निद्रा में शिक्षाकेप्रभाव और विचार संयोग और बिना किसी वसीलें के परोक्षदर्शित्व और लघु गुरुइन्द्रियवैकल्य दशाओंका वर्णन होगा ॥

तीसरे इनलक्षणों के किसी मनुष्य पर अपने आप उपजने का वर्णन कियाजावेगा ॥

और चौथे आकर्षणक्रिया के वैद्यकीय लाभों का वर्णन किया जावेगा ॥

सो पहिले मैं उनलक्षणोंका वर्णन करताहूं जो ऐसीदशा में प्रकटहोते हैं कि धारक की मुख्य चेतना स्थिर रहती है और केवल यहीबात नहीं होतीहै कि जो कुछ बीताहो उसका धारक को चेतरहता है और उसके लिये बात चीत करसक्ता है वरन जब क्रियाका प्रभाव दूरहोजावे तो सर्व लक्षण उसको यादरहतेहैं जो प्रारम्भ के लक्षण होते हैं उनका वर्णन करना यहां कुछ अवश्यनहीं यह लक्षण बहुत छोटेहोते हैं और दो धारकों पर एकसेनहींहोते बहुधा यहलक्षणहोतेहैं कि धारकका स्वभाव भारी मालूमहोताहै या उसको तन्द्रा अर्थात् औंघाई मालूम होतीहै या गुदगुदी सी होतीहै या कुछगरमी या शरदी मालूम होतीहै या सुइयां सी चुभतीहुई मालूम होती हैं या बदन सुन्न मालूम होताहै और जब धारक किसी मुख्य वस्तु की ओर देखताहै तो उसकी आंखोंपर भी कुछ प्रभावहोताहै आंखों पर एक परदा सा मालूम होताहै और जिस वस्तु की ओर धारक देखताहै वह काली या श्याम मालूम होतीहै या एककी जगह कई मालूमहोतीहैं या बिल्कुल आंखोंसे छिपजातीहैं यहलक्षण सर्व धारकों पर प्रकटहोते हैं यदि उसकामन प्रभाव का अंगीकार करताहो और यहलक्षण अधिक प्रकटहों तो अवश्यहैकि यदि परिश्रम कियाजावे तो आकर्षणस्वाप उपजेगा परन्तु

हमचाहें कि होसके लक्षणों को देखें तो चाहिये कि निद्रा न उ-पजावें और न शिक्षाके प्रभाव को देखें एक दो उदाहरण इस विषय के लिखताहूं ॥

शिक्षाका प्रभाव चैतन्य अवस्था में ॥

पहिला दृष्टांत मेरे मकान पर पचास स्त्री पुरुष इकट्ठे थे और ल्यूससाहब भी वहांथे उक्तसाहब मकान के एक कोने में खड़े होगये और सबआदिमियोंसे कहा कि उनकी तरफ़ या किसी चीज़की तरफ़ जो उनके तरफ़थे देखतेरहें और उनसे कहा कि जहांतक होसके अपने स्वभावको ढीला छोड़दें फिर ल्यूससा-हबने सबकी ओर दृष्टि जमाकर दूरसे देखना शुरूकिया पांच मिनट से कम समय में चाहे शोरभी होरहा था और बिल्कुल सन्नाटा न था कईमनुष्यों पर क्रियाका प्रभाव होनेलगा सब-से अधिक कि (लाम) पर जो वैद्यक विद्या का विद्यार्थी था प्रभाव हुआ ल्यूससाहबने इस बातको देखकर उसपर अपना ध्यानजमाया और दूरसे अपनेहाथोंको प्रसिद्धयुक्तिसे हिलाया और लाम के निकट आतेगये लामकी यहदशा हुई कि उसकी आंखोंसे कुछ दिखाईनहीं देताथा दमतेज़होगया और आगेको झुकगया और मालूम होताथा कि ल्यूससाहब की ओर खिंचा जाताथा और आगे बढ़ना चाहता था परन्तु जब उसने आगे चलने का उद्योगकिया तो मालूम हुआ कि वहनहीं हिलसक्ता था और अपनी जगह मानों जमगयाथा ल्यूससाहब तब उसके निकटआये और हाथोंको दो तीनदफ़ा हिलाने से ऊर्द्ध श्वास कोदूरकरदिया और अकड़को भी दूरकरदिया और जैसी आंखें साधारण होती हैं वैसीहोगईं फिर लामसे ल्यूससाहबने कहा कि अपनी आंखें बंदकरलो और जब उसने बंदकरलीं तो ल्यूससाहबने कहा कि अब तुम अपनी आंखें नहीं खोलसकोगे

तथाच आंखें न खुलसकीं फिर ल्यूससाहबनेकहा कि अपनामुख बंदकरो और जब बंदकरलिया तो उन्होंनेकहा कि न तुममुख खोलसकोगे न बात करसकोगे तथाच यहदोनों नहोसकीं फिर ल्यूससाहब ने कहा कि अपना हाथ ऊंचाकरो और जब ऊंचा किया तो उन्होंनेकहा कि तुमअब उसको नीचानहींकरसकोगे तथाच नीचा न करसका-इसमें ल्यूससाहबने लाम के शरीरको स्पर्श भी नहींकिया—एक समयतक हाथ अकड़ारहा निदान जिसजोड़को ल्यूससाहब चाहते थे अपने हाथों के एक दो बेर हिलाने से अकड़ादेते थे फिर ल्यूससाहबने लाम से कहा कि मेरीओर दोपलतक देखो और जब लामने देखा तो आंखोंका यह हाल हुआ कि पुतली ठहरगई और फैलगई और अचेत होगई यहांतक कि जब एकदीपक उसकीआंखोंके सामनेरक्खा तो पुतली कुछभी न सिमटी उससमय लामकीनाड़ी एकमिनट में ७६ बेर चलतीथी ल्यूससाहबने एकहाथ की दूरीसे उसके मनकी ओर सैनकी और एकवैद्यने उसकीनाड़ीपर हाथरक्खा मालूमहुआ कि नाड़ीकीगति७६बेरसे१५०बेरपर पहुंचगईथी औरऐसीनिर्बलहोगईथीकिकठिनतासेमालूमहोतीथीधारककी यहदशाहुई कि उसकारंग पीलापड़गया और एक मिनट तक और भी यह अमल रहता तो उसको अवश्य मूर्च्छा आजाती फिर ल्यूससाहबने यहलक्षण उपजाया कि जिस ओर वह चाहतेथे धारकके हाथपांवचलतेथे और वह बहुत प्रयत्न करताथा कि हाथपांवको किसीतरफ़ न हिलनेदूं पहिले एकनियम तक उसके हाथ पांव चले फिर अकड़गये और यहसब लक्षण उसदशा में प्रकटहुये कि ल्यूससाहब उसके शरीरको छूते भी नहीं थे एकबेर लामकाहाथ ल्यूससाहबके हाथपर रक्खागया और उक्त साहबने उससे कहा कि अब तुम अपने हाथ को मेरे

हाथ परसे उठा न सकोगे तथाच ऐसाही हुआ ॥

जब ल्यूससाहब अपना अधिकार लाम के पट्ठोंके हिलने पर दिखाचुके तो उन्होंने अपना अधिकार उसकी इन्द्रियों पर दिखाया और उसके हाथमें एक चाकू रखदिया और उससे कहा कि थोड़ीदेर में यहचाकू तुमको ऐसा गर्म्म मालूमहोगा कि उसको तुम अपने हाथमें न रखसकोगे दो मिनट में लाम उस चाकू को एक हाथ से दूसरे हाथ में बदलता रहा और थोड़ीदेर पीछे उसको हाथमेंसे इसतरह फेंकदिया मानोंगरमी से लालहोगयाथा फिर उन्होंने उसी चाकूको फिर उसकेहाथ पर रखदिया और कहा कि यह ऐसा भारी मालूम होगा कि तुम्हारा हाथ बोझसे पृथ्वीमें लगजावेगा थोड़ीदे पीछे लाम यत्न करनेलगा कि अपने हाथको संभाल रक्खे परन्तु तीन चार मिनटके पीछे चाहे उसने इतना बलकिया कि पसीनेमें डूबगया और श्वास चढ़गई पर उसका हाथ धरतीसे लगगया फिर ल्यूससाहबने यहक्रियाकी कि लाम अपनानाम भूलगया और उसके मुखसे मालूम होताथा कि नामके भूलजानेसेउसको अति चिन्ता होतीथी और वह बहुत यत्नकरताथा कि किसी तरह याद आजावे परन्तु याद न आताथा इनसब लक्षणोंकी यह दशाथी कि जब ल्यूस साहब कहतेथे कि (अच्छा) तो लक्षण नष्टहोजातेथे ॥

मैंने पहिलीबेर इसी मनुष्य पर चैतन्यावस्था में आकर्षण के लक्षण उपजते देखेथे और लाम की यह दशाथी कि उसको अच्छीतरहसे होशथा और जो लक्षण होतेजाते थे उनका यह विस्तारसे वर्णनकरता जाताथा सिवाय उससूरतके कि जबएक बेर उसकी जिह्वाअकड़गई और वह बोल न सका ॥

ल्यूससाहबने इस मनुष्य को पहिले कभी नहीं देखाथा न

कभीलामने पहिले आकर्षणकी क्रियाहोते देखीथी जबपहिलेही लामपर क्रियाका प्रभाव हुआ तो उसकी भुजाओंपर ऐसीचोट पहुंची जैसे बिजली की कलसे पहुंचती है फिर मुझको अच्छी तरह मालूमहुआ कि इसचोटका यह कारणथा कि बहुत लोग उसके चारोंओरथे और उनका बुराप्रभाव हुआथा क्योंकिएक बेर जो ल्यूस साहबने उसपर क्रियाकी और दो वैद्योंसे कहा कि एक दहिनेहाथ और दूसरा बायेंहाथकी ओर खड़ाहोकर उसकी नाड़ीदेखे तो धारकको बड़ा दुःखहुआ और पावघंटे के समयतक दुःखरहा फिर लामने हमसे कहा कि जैसा तमाशा देखने वालोंको दिखाई देताथा उतनी चोट वास्तवमें मुझे नहीं लगी पर हां जब दोनों वैद्योंने मेरे हाथ छोड़दिये तो जितनी धमक एकबलवान् बिजलीकी कलसेहोतीहै उतनीधमक मुझेहुई थी इसमें संदेह नहींहोसक्ता कि इस धमकका यह कारण था कि कई मनुष्यों की आकर्षणशक्ति का एक हलके स्वभाव के मनुष्यपर एकसमय में प्रभावहोताथा जब मैंने लामपरअकेले क्रियाकी तो इसप्रकारकी धमक उसको नहीं पहुंची और उस समय में लाम बहुतआरोग्य नहींथा और आरोग्य न होने का यहकारण था कि वह पढ़नेमें बहुत प्रवृत्त रहाकरताथा उसको थोड़ेही समयके पीछे हृदयका रोगहोगया और कईसप्ताह तक बीमाररहा इसमें संदेह नहीं है कि उसका मन बुझाहुआ था कि परीक्षा के समय और बीमारी में मैं उसपर अति सुगमता से क्रिया करसक्ताथा पर जब उसने बीमारी से आराम पाया तो चाहे उसपर क्रियाहोसक्ती थी परन्तु ऐसी सुगमतासे नहीं होसक्ती थी जैसी बीमारी से आरामपाने से पहले होतीथी जो लक्षण उसपर प्रतीत हुये वह पहिले लक्षणों से विपरीत थे ल्यूससाहबने लामपर कईबेर क्रिया की और कईबेर दिखाया

कि उनको उस धारककी इन्द्रियों बुद्धि और स्मरण पर पूर्ण अधिकार प्राप्तथा परन्तु अधिक विस्तार की कुछ आवश्यकता नहीं मुझको मालूमहुआ कि लांमपर आकर्षणस्वाप सुगमता से उपज सक्ताथा और जो उसमें निद्राकी दशामें प्रतीतहोते थे उनका वर्णन पीछे कियाजावेगा--दूसरा दृष्टान्तऔरतीसरा दृष्टान्त एकबार मैं और दो और आदमी ल्यूससाहबके मकान में उनकेपास बैठेथे कि दो लड़के कहींसे कुछसंदेशा लेकर उन के मकानपर आये दोनोंलड़के अच्छे आरोग्य और बलवान् थे और १६ और १७ वर्ष की उनकी आयुथी जब ल्यूससाहबने उसपर अमल आज़माया तो मालूम हुआ कि उनपर अच्छी-तरहसे क्रियाहोसक्तीहै तथाच जब उनपर क्रियाकीगई तो जो लक्षण पट्ठोंके कर्म्मसे संबन्ध रखते हैं वह सब प्रकटहुये जब ल्यूससाहब उनको आज्ञादेतेथे कि तुम फर्शपरसे सुई न उठा सकोगे या अपनाहाथ ऊंचा न करसकोगे या शिरपरसेअपना हाथ नीचे न उतारसकोगे तो उनसे कोईभी ऐसीचेष्टानहींहोस-क्तीथी ल्यूससाहबकी ओर यहदोनों लड़के जोरसे खिंचेआतेथे पहले उन्होंने इसखिँचावट पर प्रबलहोने के लिये बहुत जोर किया परन्तु जहां ल्यूससाहब जातेथे उनके पीछे चलेजाते थे यहांतक कि कईमनुष्योंने उनको पकड़लिया और उनसे कहा कि जहांतक तुमसे होसके इस खिँचावट का सामनाकरो परन्तु ल्यूससाहब की ओर खिँचेहीजाते थे ल्यूससाहब ने एक के हाथकी बीचकी उँगलीके सिरेको लड़केके हाथकी बीचकी उँग-लीके सिरेसे छुवादिया और दोबेर हाथोंसे उनकेऊपरहिलाया इसकापरिणाम यहहुआ कि जहांतक होसका वह दोनोंलड़के ज़ोरकरतेथे परन्तु उँगलियोंको अलग न करसके बरन जो एक लड़का उनमें से दूसरेसे अधिक बलिष्ठथा इसलिये वहउसको

केवल इसपकड़से मकानभर में खींचता लियेफिरता और दूस-
रा लड़का जहांतक उसका बश चलताथा जोरकरताथा परन्तु
कुछ उसका बश न चलता था ॥

ल्यूससाहबका उनकी इन्द्रियों और बुद्धिपरभी पूर्ण अधि-
कारथा तथाच जब उनको जल पिलाया और उनसे कहा कि
ब्रांडीशराब या दूध या कहवा पीतेहो उनको अच्छीतरह इन
वस्तुओंका स्वाद आताथा बरन जब वह पानी पीते थे और
उनसे कहा कि तुम ब्रांडीशराब पीतेहो और फिरकहा कि अब
तुम बिल्कुल मस्तहो तो वह हर तरह पर मस्तहोगये उनके
संपूर्ण मुखसे नशेके लक्षण विदितहोतेथे और एकपगभी बिना
गिरने के नहीं चलसक्तेथे ल्यूससाहबने अतिसुगमतासेउनको
यहबात समझादी कि वह कोईऔर मनुष्यथे अर्थात् जो वहथे
उनसे अन्यथे जो २ ल्यूससाहब कहतेरहे वह करतेरहे कभी
बंदूक छोड़नेलगे कभी मछलीकाशिकार करनेलगे कभी तैरने
लगे कभी पढ़ानेलगे ल्यूससाहबने अति सुगमतासे यहबात
पैदाकरदी कि एकछड़ीको उन्होंने बंदूक समझलिया या एक
तलवार बरन सर्प समझलिया और एककुरसी को जो उसम-
कानमें रक्खीहुईथी उन्होंने जाना कि शेर या रीछहै इनजान-
वरोंसे अति भयखाकर भागगये ल्यूससाहबकी सैनपर उनको
निश्चय होगया कि अति प्रचण्डआंधी आतीहै और आंधीकी
आवाज़ सुननेलगे और एकमेजकेनीचे जिसको उन्होंने मकान
समझलिया आंधीके दुःख के बचने के लिये छिपगये जब वह
मेजके नीचेथे तो सर्दके भयसे उसकेनीचे से निकलभागे और
थोड़ीदेर पीछे उनको मालूमहुआ कि पानी ज़ोरसे बहुत आता
है और अपनी जानबचाने को बहुतज़ोर से तैरनेलगे इसबेरसे
पहले उनपरकभी क्रियानहींकीगईथी और जोकि उनकीमुख्य

चेतना बिल्कुलस्थिरथी परन्तु ल्यूससाहब को उनकी इंद्रियों बुद्धि और विचारोंपर पूर्ण अधिकार था वह जानते थे कि यह सबबातें वास्तव में झूठ हैं परन्तु निरूपाय होकर उनको निश्चय करना पड़ताथा जो नहीं मानताथा एकबेर उनकेहाथ पर रूमाल रक्खागया और वह अच्छीतरह जानते थे और देखतेथे कि यहवस्तु वास्तवमें रूमालहै थोड़ीदेरके पीछे ल्यूस साहबने कहा कि तुम्हारे हाथमें चूहा है उस समय उनके मुख को देखनाचाहिये था कि कैसा आश्चर्य प्रकट होता था मुखसे मालूमहोताथा कि पहले उनको कुछ शोचहोताथा फिर उनको निश्चय होताथा और जब उनको विश्वास होगया तो उनको अतिग्लानि और क्रोधहुआ यह सबलक्षण उनके मुखपर ऐसे ठीक मालूमहोतेथे कि जो लोग देखनेवाले थे उनको उनलड़कोंके सत्यहोने में कुछभी संदेह नहींरहता था॥

चतुर्थ दृष्टान्त एकबेर मैं और दश बारह आदमी ल्यूस साहबके मकानपरबैठेथे और उन्होंने एकमनुष्यपर अमलकिया पहलेपहल तो उसमनुष्यको संदेहरहा परन्तु थोड़ी देर पीछे उसे निश्चयहोगया कि मेरी बुद्धि और इन्द्रियां बिल्कुल ल्यूस साहबके आधीन हैं जैसे एकसेव उसकेहाथ में दियागया और उससे कहा कि तुम्हारे हाथमें संगतरहहै पहले उसनेइन्कार किया और कहा कि संगतरह नहींहै फिर कुछ उसको संदेह होनेलगा फिर उसनेकहा कि हां इसकारंग तो बहुत पीलाहै और सेवका रंग बास्तव में थोड़ा काला था उससमय जितने लोगथे सबके हाथमें एक २ सेवथा घारकने सबकीओर कनखियोंदेखा और देखा कि जितनीचीज़ें और लोगोंके हाथमें हैं उनका भी पीलारंगहै फिर उसने उसका अपनेहाथ से एक टुकड़ा तोड़लिया और उसको अच्छीतरहदेखा और सूंघा और

फिर चक्खा और अन्त को कहा कि यह तो अवश्यही संगत-
रहहै परन्तु मैं जानताहूं कि मैंने हाथमें लेवलिया था मैं ऐसे
दृष्टान्त बीसों देखचुकाहूं परन्तु जिन दृष्टान्तों का वर्णन हुआहै
मेरीमतिमें इसबात के सूचितहोने के लिये पूरेहैं कि कारक को
धारककी इन्द्रियों और बुद्धिपर बिल्कुल अधिकार होता है अब
मैं केवल एक दृष्टान्त का और वर्णन करूंगा कि उसमें ल्यूस-
साहबने मेरे विचार में विचित्र लक्षण उपजाये ॥

पांचवां दृष्टान्त--एक मनुष्य (स) बहुत आरोग्य था परन्तु
उसपर क्रियाका ऐसाप्रभाव होता था कि केवल एक दृष्टि के
देखने या एकबेर हाथके हिलानेसे उसकेपट्ठे अकड़जातेथे यह
मनुष्य दशबारह मिनटतक ऐसे स्थानपर खड़ाहोसक्ता था कि
कोईमनुष्य मुख्यदशामें आधेमिनटतक नहींरहसकाथा तथाच
वह दशमिनट तक इसतरह पर अकड़ा खड़ारहा कि एक पावँ
उसका पृथ्वी पर था और दूसरा नीचे की ओर फैलाहुआ था
उसकी आंखोंपर बिल्कुल रोशनीका प्रभाव नहींहोता था उस-
का सम्पूर्ण शरीर आगेको फैलाहुआथा और शिरभी आगेबढ़ा
हुआथा निदान इसतरहपर खड़ाहुआथा जैसे पशुखड़े होते हैं
अन्तर केवल इतनाथा कि केवल एक टांगको जमीनका सहारा
था दूसरीटांग पृथ्वीसे ऊंची और नीचेको फैलीहुईथी औरदोनों
हाथ पृथ्वीसे ऊपर थे फिर उसके पावँमें से जूते निकाललिये-
गये और उसको एकदीवार से पीठलगाकर खड़ाकिया दोनों
पांव दीवारके सहारे से इसतरह लगाये कि एकपांव का पंजा
एकरुख और दूसरे पांवका पंजा दूसरीतरफ था एक काठ की
पीढ़ीपर जो केवल चौड़ी थी उसको खड़ाकरदिया फिर उसके
दोनोंहाथ सीधे फैलादिये अर्थात् दहनाहाथ दाहनीओर और
बायांहाथ बायेंतरफ यह मनुष्य पांचमिनट पर्यन्त इसतरह से

अकड़ाहुआ खड़ारहा फिर ल्यूससाहबने उसकेशरीरके ऊपरके भागपर से घुटनों तक क्रियाका प्रभाव दूरकरदिया तो धारक को भयहुआ कि मैं गिरजाऊंगा परन्तु उसकेपांव काठकीपीढ़ी पर इसतरह जमेहुयेथे कि वहपांव न हिलासक्ता था जब पांव परसे क्रियाका प्रभाव हटायागया तो हमारे हाथोंमें गिरगया फिर ल्यूससाहबने कहा कि पशु की तरह खड़ेहोजाओ और जब वह इसतरह खड़ाहोगया तो उससे कहा कि अब तुम फर्श पर पट नहीं लेटसकोगे तथाच उसने बहुत कोशिश की परन्तु उससे लेटा नहींगया फिर ल्यूससाहब ने उससे कहा कि खड़े होजाओ और आप कमरे से बाहर एक और आदमी को लेकर चलेगये जब ल्यूससाहब चलेगये तो मैंने देखा कि धारक अपने हाथ ऊपर नीचे हिलारहा है और जब ल्यूस साहब औरदूसरा मनुष्य लौटआये तो उसने कहा कि ऐसीही चेष्टा ल्यूस साहब ने दूसरे कमरे में की थी और अपने जी में आज्ञादी कि धारक ऐसीही चेष्टा अपने कमरे में करे तथाच धारक ने ऐसाहीकिया परन्तु अन्तर इतना था कि जो ल्यूस साहब का हाथ दो या तीनफुट चलताथा तो धारक का हाथ केवल एकही फुट या आधाफुट चलताथा परन्तु दोनोंकी चेष्टा-ओंका डौल एकहीथा धारक दरवाजे के सामने दश बारहफुट की दूरीपर खड़ा हुआ था और बहुत आदमी उससे बातेंकर रहेथे मैंने ल्यूससाहबसेकहा कि आपदरवाजेकेबाहरचलेजावें और ऐसा कीजिये कि धारक आपकी ओर खींच आवे तथाच ल्यूससाहब दरवाजे के बाहर चलेगये और धारक को मुखसे कुछभी नहीं कहा एक आधे मिनट के पीछे धारक दरवाजेकी ओर देखने लगा और फिर एक दो पग दरवाजे की ओरचला परन्तु जोकि जगहसे हिलनहीं सक्ता था तो वह आगेकी ओर

झुक गया अपने हाथ द्वारकी ओर फैलादिये एक पावँ ज़मीन पर था और दूसरा पीछे उठाहुआ और फैलाहुआ था इस दशामें शिर से पांवतक अकड़ा ठहरारहा परन्तु उसकी आंख बिल्कुल दरवाजेपर जमीथी और सम्पूर्ण लक्षण उसकेमुखपर ऐसे थे जिससे सूचित होता था कि दरवाजे तक पहुंचने की उसकी अतिइच्छा है निदान वह इसडौलमें था कि जो उसके हाथ पांव में मुड़ने की शक्ति होती तो निस्सन्देह गिर पड़ता जबवह न चलसका तो वह आगे को उछला परन्तु जैसी सब लोगों को आशा थी कि गिरपड़ेगा गिरा नहीं यहबात साफ प्रकटथी कि जो वहअकड़ा न होता तो निस्सन्देह द्वारतकजाता और जहां ल्यूस साहब थे उसी जगह पहुंचता इस धारक की यह दशा थी कि केवल एक शब्दके कहने से या सोजाता था या जागजाता था और जब उससे कहा कि तुम *शेक्सपियर हो तो उसने आपको वही समझलिया और काव्य पढ़ने लगा ल्यूससाहब की बेकही इच्छा के कारण जबवह औरोंसे बातें करता था ल्यूससाहब की ओर खिचताथा परन्तु अकड़ के सबब उनतक पहुंच नहीं सक्ता था जब ल्यूससाहब एक कुरसी के ऊपर चढ़गये और धारक को छूने बिना उसको उन्होंने खिंचना चाहा तो उंगलियोंके शिरोंपर खड़ाहोगया और ऊपर को उठना चाहा परन्तु अकड़ के सबब ऊपर न उठसका ल्यूस साहब कहते थे कि जो हम और अधिक ऊंचे होते तो उसको छूनेबिना ऊपर उठा लेते और थोड़े समय तक उसको मानों लटका रहने देते और उस समय कोई और कारक उसके पांव के नीचे अपने हाथ लेजाता चाहे मैंने उस समय यहमुख्यबात होते नहींदेखी परन्तु और कई लोगों ने कईबेर ऐसा प्रभाव

*इंगलिस्तानमें ऐसाकविहुआहै कि उसकीबराबरउसदेशमें दूसराकोईनहींहुआ ।

होतेदेखा और मुझको कुछ सन्देह नहीं है कि ऐसा प्रभाव बा-
स्तव में होगया था ईश्वर जाने वह शक्ति क्या है जिससे यह
लक्षण उपजता है परन्तु जो कुछबल है वहऐसा है कि धरती
पर खिंचावट प्रबलहोजाती है परन्तु मैंने इसलक्षण को अपनी
आंखसे होतेनहीं देखा है इसलिये निश्चय करके मैं इस विषय
में कुछनहीं कह सक्ता हूं परन्तु मैंने यहबात देखी है कि धारक
नीचे की ओर ऐसीदशा में झुकाहुआ खड़ारहा कि मुख्य सा-
धारण दशामें एक पलक भांजने तक नहीं रह सक्ता था और
जब ल्यूससाहबने अपनी क्रियाकाप्रभाव उसपरसे अलगकर
लिया तो वह तुरन्त गिरपड़ा ॥

मैंने यह दृष्टांत इसलिये वर्णन किये हैं कि उनसे मालूम
होता है कि ल्यूससाहबने चैतन्य अवस्था में धारकपर क्या २
लक्षण उपजा सक्ते हैं मैं ऐसे दृष्टांत बहुतसे बर्णन कर सक्ताहूं
परन्तु मेरे विचार में बिस्तार की कुछ आवश्यकता नहीं है
केवल उतनेही दृष्टांतोंसे सूचित होती है कि जितनेदृष्टान्त मैंने
लिखे हैं वह सब (स) के दृष्टांत के सिवाय विद्वानों और
पण्डितों के सामने हुये और जो कुछ उन्होंने देखा उसका
उनको अच्छी तरह से निश्चय होगया और उन्होंने बर्णन
किया कि बास्तवमें यहसर्व्व लक्षण ठीक२ उपजते हैं जितने
लक्षण वर्णन हुये बहुत उनमें शिक्षा के कारण उत्पन्न हुये
थे परन्तु कई उन में से ऐसे थे कि वह शिक्षा के अनुमान से
स्पष्ट नहीं होसक्ते जैसे नाड़ी का शीघ्रगामी होना और नि-
र्बल होजाना शिक्षाके कारण नहीं होसक्ता इसके सिवाय वह
अवस्था उपजनी कि जिससे वह लक्षण प्रतीत होते शिक्षा के
कारण नहीं हुयेथे परन्तु कुछ मुख्य प्रभाव किसी मुख्य सत्ता
का जो ल्यूस साहब के शरीर में से निकलती थी होता था

तथाच इस मुख्य लक्षण का होना इसबात से सूचित होताहै कि ल्यूससाहब धारक पर अपना प्रभाव ऐसी दशा में कर लेतेथे कि जबवह किसी और कमरे मेंथे और धारक जुदा कमरे में थे अब मैं कई डाक्टर डारलिंग साहब के उदाहरण जो चैतन्यावस्थामें उपजते थे लिखूंगा पहले वर्णन करचुका हूं कि डाक्टर डारलिंग साहब की युक्ति ऐसी है कि वह अपनेशरीर का प्रभाव धारक परनहीं करते वरन उससे कहते हैं कि किसी वस्तु की ओर जैसे सिक्के की तरफ देखता रहे॥

छठा दृष्टांत–एक मनुष्य (ब) नामी डाक्टरडारलिंगसाहब से मेरे मकानपर मिला करनैलगोरब्रूनसाहब ने कईदिन पहले मालूम किया था कि इस मनुष्य की प्रकृति आकर्षणकी क्रिया अंगीकार करनेवाली है परन्तु किसी प्रकार की क्रिया उस पर नहीं कीथी और डाक्टर डारलिंगसाहब ने उस समय से पहले कभी उससे बात भी नहीं कीथी दो मिनट के समय में डाक्टर डारलिंग साहब ने देख लिया कि उसका स्वभाव क्रियाका अंगीकारकरनेवालाहै और हरप्रकारसे उसकी चेष्टा-ओंपर उक्त डाक्टर साहब का अधिकार होगया जब उससे कहाकि तुम अपनाहाथ न उठासकोगे या हाथगिरा न सकोगे न वह हाथ उठा सका न गिरा सका जब उससे कहा कि तुम अमुक वस्तु हाथसे न उठा सकोगे या अमुक वस्तु हाथ में से न गिरा सकोगे तोनयहबात होसकी न वहहोसकी जबडाक्टर साहब ने चाहा तो उसके हाथको यादोनों हाथोंको या सम्पू-र्णशरीर को अचेत करदिया एक चाकू उसकेहाथ में रखदिया तो डाक्टर साहब की इच्छा से उसको वह चाकू बहुत गरम मालूम हुआ इसी तरह जिस कुरसी परवह बैठाथा वह उसको बहुत गर्ममालूमहुई जबवह कुरसी की गरमीके कारण उठकर

खड़ाहुआ तो पृथ्वी ऐसी गर्म मालूमहुई कि एकजगह न ठहर सका बरन कूदता फिरा और यह बात कहकर अपने पांव से मोजे निकालने चाहे कि मेरेपांव जले जाते हैं डाक्टरसाहबकी इच्छासे जिस कमरे में वह धारक था वहां उसको ऐसी गरमी मालूम हुई कि उसको पसीना आगया और थोड़ी देरके पीछे उसी मकान में ऐसी शरदी मालूम हुई कि उसने अपने कपड़ों के बटन लगालिये और हाथों को शरदी के सबब मलताफिरा पांच मिनट के समय में उसकाहाथ बास्तव में ऐसा शर्द होगया कि जैसा किसी को पालालगता है तथाच मैंने उसकेहाथ को हाथ में लेकर देखा यह धारक अपना नाम भूलगया और करनैलब्रूनसाहब का नाम भूलगया चाहे उनका बड़ा मित्रथा पर उनको बिल्कुल बेगाना समझ लिया एक समय में उसपर ऐसा प्रभावहुआ कि जोबात उससे पूछीजाती थी उसका झूठा उत्तर देताथा और एक समय ऐसा प्रभाव हुआ कि चाहे वह उत्तरदेना नहींचाहताथा और झूठे उत्तरके देनेमें यत्नकरताथा परन्तु लाचार सच्चा जवाबही देता था डाक्टरसाहब ने उससे कहा कि इससमय तुम सेना में नौकरीपरहो और क़वायदका समय है तथाच वह इसी तरह आज्ञा देनेलगा कि मानों वह बारगमें खड़ाथा चाहे उसकाजी नहींचाहताथा परन्तु डाक्टर साहब की आज्ञा से गाने लगा और सीटी बजानेलगा और बहुत हँसने लगा और थोड़ी देर के पीछे शोकवान् होगया बरन रोने लगा उसको डाक्टर साहब ने छड़ी हाथ में देकर कहा कि यह बंदूक है और डाक्टर साहबकी आज्ञा से उसने एक जानवर देखा और उसको शिकार करके अपने थैले में डाल लिया एक बाजा रक्खा हुआथा डाक्टर साहब ने कहा कि देखो यह घोड़ाहै धारकने उसकोहाथसे टटोला और उसके

गुण अवगुण वर्णन करनेलगा बरन उसका मोल आंकदिया कभी उसको पानी पिलाकर कहा कि दूधहै और कभी कहा कि ब्राण्डी शराबहै तथाच वैसाही स्वाद उसका विदित होता था डाक्टर साहबने अपना हाथ उसकी आंखों के सामने कर दिया और कहा कि यह दर्पण है तथाच उसने अपना मुख उसमें देखा और जैसा डाक्टर साहबने चाहाथा अपने मुखको उस दर्पणमें कालादेखा जब उसकी घड़ी निकाल कर उसके हाथ में दी जो समय वास्तव में था उसको न देख सका बरन अशुद्ध समय घड़ी में देखता था और वास्तव में जिस घंटेपर सुइयांथीं वहां उसको नहीं मालूम होती थीं बरन और जगह दिखाई देती थीं थोड़ी देर पीछे डाक्टर साहब की इच्छा के अनुसार उसने घड़ीको पहिले ब्रूनसाहबकी और फिर एक स्त्री की मूर्ति समझली यद्यपि डाक्टरसाहबकाहाथ खालीथाधारक ने उनके हाथमें एक नासदान देखा और उसमें से एक चुटकी नासकी लेकर सूंघी और पहिले उसको बहुत सी छींकें आईं और फिर खांसी आती रही मानो नास कण्ठ में उतर गई थी यह प्रभाव आधे घंटे के अनुमान तक रहा और एक मिनट में डाक्टर साहब ने उसको सुलादिया और उस निद्रा में बहुत ऊंची आवाज़ उसको नहीं सुनाई देती थी डाक्टर साहब का हाथ खाली था परन्तु उसमें उसने एक हुण्डी सौरुपयेकी देखी और उसको लेकर अपने जेब में डाल लिया और जब उससे फिर पूछा गया तो उसने कहा कि मैंने वास्तवमें सौरुपये की हुण्डीलेकर अपनेजेबमें डाललीथी परन्तु मैंअबनहीं जानता कि क्या हुई डाक्टर साहब ने एक रूमाल फ़र्श पर डालदी और उससे कहा कि तुम इसके ऊपरको नहींकूद सकोगे तथाच वह कूद न सका जब यह सब बातें होतीथीं तो (व) अर्थात् धारक

अच्छी तरहसे जानताथा कि यह सब बातें झूठी हैं और यह सब लक्षण झूठेहैं परन्तु लाचार वह लक्षण उसके स्वभाव पर प्रभाव कर जातेथे जब यह क्रिया हुई थी उस समयमेरे मकान पर पचास मनुष्यों के अनुमान जिनमें बड़े२ विद्वान् भी संयुक्त थे वर्त्तमानथे एकबेर डाक्टर डारलिंगसाहबकी इच्छासे किसी प्रथमकीयुक्ति बिना एक मनुष्यपर ऐसेहीलक्षण प्रतीतहुये एक साहब खड़े थे उसने उनको शमादान समझलिया और उनकी घड़ीको शलजम समझा और बिछौनेके ऊपर से एक गुब्बारह आकाशपर चढ़ताहुआदेखा जबडाक्टरसाहबकहतेथे कि अच्छा तो वह प्रभाव जाता रहता था और उससमय धारकके मुखसे अति लज्जा मालूम होती थी कि मैंने थोड़ी देरहुई ऐसा काम क्यों न किया या अमुक बात क्योंकही ॥

सातवां दृष्टांत एक और मनुष्य (ज) को डाक्टर डारलिंग साहब ने देखा कि आकर्षण की क्रिया के योग्य है तथाच वह मनुष्य मेरे मकान पर आया और डाक्टर साहब भी वहां वर्त्त-मान थे जैसे लक्षण मैंने ऊपर के दृष्टांतों में वर्णन किये वैसेही लक्षण इस मनुष्य पर उपजे अर्थात् उसकी इन्द्रियों बुद्धि और स्मरण पर अधिकार था तमाशेकी बातयहहै कि वह कह-ताथा कि मैं चाहताहूं कि यह प्रभाव मेरी प्रकृति पर न हो परन्तु मेरा कुछ वश नहीं वह अपनानाम भूल गया और और लोग जो वहां मौजूद थे उनके नाम भूल गया जिन लोगों को वह अच्छी तरह जानता था उनको बिलकुल नहीं पहिचाना और वर्णमाला के एक २ अक्षर को भूलगया वह कहताथा कि अक्षर मेरे सामने फिरते हुये मालूम होते हैं परन्तु मैं किसी को पकड़ नहीं सक्ताहूं ऐसी परीक्षासे उसको कष्ट होताथा और उसने मुझसे कहा कि जब डाक्टर साहबकी मर्जीसे मैं अपना

नाम भूल जाताहूं तो एक दो रोज़तक मैं बीमार रहताहूं ऐसा दुःख किसी २को होताहै इसमें संदेहनहीं है कि ऐसी २परीक्षा से कभी२धारकको अवश्यदुःखहुआकरताहै और ऐसीपरीक्षायें वृथा दुःखके लिये नहीं करनी चाहिये यह प्रभाव इस धारक पर यह हुआ कि एक हाथमें तो उसके चैतन्य शक्ति बिल्कुल नहीं रही और दूसरे हाथमें जैसीथी वैसी रही डाक्टर साहब ने यह प्रभाव उपजाना चाहा कि जो कोई धारक के हाथसेछुवे तौभी उसे मालूमन हो एक बेर जो कुछ चेत उसको रही उसके हाथमें सुइयां चुभाई गईं परन्तु उस को कुछ मालूम न हुआ केवल इतना तो होताथा कि जब किसीको सुई चुभातेहुयेदेखताथा तो वह जानताथा कि सुई चुभाई जातीहै परन्तु उसको कुछ भी कष्ट न होताथा उसने मुझसे कहा कि मुझे जब धीर्य हो कि मेरे हाथको काटडालो या जलादो और जो मुझे दुःखन हो तो मुझे क्रियाके होनेका निश्चयहो परन्तु मैंने यह बातनहीं मानी इतना किया कि उसके हाथ की पीठके अन्दर एक सुई पैठादी और उसको कुछ न हुआ परइस क्रियासे अति कष्टहोता है जब उस परसे क्रियाका प्रभाव हटाया गया तो मैंने धीरेसे सुई उसके हाथ में चुभानी चाही तो उसने हाथको हटालिया तब उसको निश्चय हुआ कि कष्टका न होना क्रियाके प्रभावके कारण था एक मिनट में डाक्टर साहबने उसको सुला दिया और उस समय कैसाही शोरकिया परन्तु उसने कुछ भी नहीं सुना जब डाक्टर साहब ने कहा कि अच्छातो वह जागउठा॥

आठवां दृष्टांत—डाक्टर डारलिंग साहबने एक मनुष्य (द) को देखा कि उसका स्वभाव क्रियाका अंगीकार कर्त्ताहै उसपर उन्होंने अमल किया तो सम्पूर्ण लक्षण अच्छी तरह प्रकट हुये सइ मनुष्य पर क्रिया करने में विचित्र यह बातथी कि यह

मनुष्य हर तरह चाहता था कि प्रभाव नहो परन्तु जब उससे कहा कि तुम अपनी कुरसी परसे न उठसकोगे तो उसने बहुत जोर करके उठना चाहा परन्तु उठते २ गिर पड़ा और भी कई तरह पर उसने ऐसी बातों के करनेका उद्योग किया जो उसको डाक्टर साहब ने कहा था कि तुम न करसकोगे परन्तु हर बेर चूकजाता था डाक्टर साहबने कई बेर यह लक्षण दिखाया कि धारकके सामने खड़े होगये और उससे कहा कि हमारे मुख पर मुक्का मारो परन्तु किसी से उनके मुखपर मुक्का न लगसका कई बेर ऐसा हुआ कि डाक्टर साहबने धरती पर एक रूमाल डाल दिया और कहा कि तुम इसको उठा न सकोगे जो कि धारक छूसक्ते थे परन्तु धरती परसे उठा न सक्तेथे कई बेरऐसा हुआ कि उनके हाथ में रूमाल देदिया और कहा कि इसको हाथमें से गिरा न सकोगे तथाच वह हाथमें से न गिरासके॥

बहुत दृष्टांत इस प्रकारके लिखे जासक्तेहैं परन्तु जितने मैंने वर्णन किये बहुत हैं बहुधा यह परीक्षायें मेरे मकान में बहुत आदमियोंके सामने जिनमें बड़े२ विद्वान् संयुक्तथेहुई और सबको उन लक्षणों के वास्तव में उपजने का निश्चय होगया यह जो लक्षण उपजे इन परीक्षाओं में डाक्टर डारलिंग साहब ने केवल यही युक्तिकी कि धारकके बायें हाथमें कोई चीजदेदी और उससेकहाकि उसकीओर देखतेरहो अपनाजोर किसीतरह उनपर नहीं डाला कभी २ ऐसाहोताथा कि धारक को कहतेथे कि मेरी ओर देखते रहो और आपभी धारक की ओर एक सायतके वास्ते देखतेथे और कभी अपनी उंगली उसके माथे पर रखदेतेथे सो उनका अपना ज़ोर धारकपर इतनाही होताथा डाक्टरडारलिंगसाहबके सिवाय और लोगोंनेभीतथाचमैंने भीऐसे लक्षण उपजाये हैं॥

यह जो परीक्षायेंहुईं इनसे सूचितहोता है कि कारककी शिक्षाका प्रभाव धारक पर होताहै अर्थात् इन लक्षणों के उपजनेके योग्य उसकी प्रकृति होजातीहै और यह लक्षण ल्यूस साहबकी युक्तिसे भी होतेहैं और डाक्टर डारलिंग साहबकी युक्तिसेभी उपजतेहैं मैंने ल्यूस साहबकी युक्तिसेभी ऐसेलक्षण उपजायेहैं परन्तु बहुधा मेरे बिचारसे डाक्टर डारलिंगसाहब की युक्ति अति सुगम मालूम होतीहै परन्तु यहबात समझनी चाहिये कि ल्यूस साहब की युक्ति से केवल चैतन्यावस्था में ही यह लक्षण उत्पन्न नहीं होते बरन आकर्षण स्वापमेंभीऔर बटेहुये ज्ञानकी दशामें भी उपजतेहैं ॥

प्रकटहै कि यह अधिकार जो कारकको धारक पर होता है इसका लाभ बैद्यक बिद्यामें बहुत है तथाच एक डाक्टर साहब इस अधिकारसे यहलाभ निकालते हैं कि जिसरोगीको कठिन रोगके कारण किसी मुख्य समयमें निद्रानहीं आती है उसको क्रियाकी दशामें कहदेतेहैं कि तुम अमुक समयमें सोजाना और वह सोजाता है एक साहबसे मैंने सुना है कि वह धुयेंकी गाड़ीमें सवार होजातेथे और एक बहिरी स्त्रीभी उसमें बैठीथी उक्त साहबने अपनी क्रियाके ज़ोरसे ऐसा प्रभावकिया कि जब दो आदमी कानमें इसतरह पर बातें करतेथे कि उन साहबको नहीं सुनाई देतीथीं और वहबातें वह स्त्रीसुनलेतीथी इससे यहबात सूचितहुई कि बहिरापन उसस्त्रीका ऐसा नहींथा कि जो असाध्यहो और यह वृद्धिजो उसकी श्रवण शक्तिमेंहुई कई घंटोंतक रही अवश्यहै कि जो उसस्त्री पर क्रियाकीजावेतो निस्संदेह उसकी श्रवण शक्तिमें वृद्धि होजावे और बहिरापन दूरहोजावे हर प्रकारसे यह बात परीक्षाके योग्य अवश्यहै ॥

चैतन्यावस्थामें प्रसिद्ध युक्ति अर्थात् हाथके हिलानेसे और केवल मनकेरोकने से परोक्षदर्शित्व उपजानेका वर्णन॥

बहुधा लोगोंको यहध्यानहै कि परोक्षदर्शन केवलगुरुआकर्षण स्वाप में प्रकटहोता है परन्तु अब यहबात सिद्धहुई कि परोक्षदर्शित्व निद्राबिना उपजसक्ती है और होशमेंभी उपजसक्ती है बास्तवमें जो परोक्षदर्शित्व के होनेके मुख्यमूलपर दृष्टिकीजावे अर्थात् यह ध्यान कियाजावे कि परोक्षदर्शित्व केवल इसतरह होताहै कि किसीमुख्यसत्ताकेद्वारा जिसकानाम हमनेउडायल रक्खाहै प्रकटेन्द्रियोंबिना ब्रह्माण्डपर बस्तुओंकेस्वरूपजमजाते हैं और प्रकटेन्द्रियोंके कर्मबन्दहोजातेहैं तो प्रकटहै कि परोक्षदर्शन उपजाने के लिये केवल यह बात अवश्यहै कि प्रकटेन्द्रियोंके कार्य बन्दहोजावें और अन्तरेन्द्रियोंका कर्म प्रकटहो यह प्रभाव निस्संदेह निद्रामें अच्छीतरह प्रकटहोते हैं परन्तु जाग्रत अवस्थामेंभी ध्यानको जमालेनेसे उपजसक्ताहै मैंने इस प्रभावको होतेहुये आपनहीं देखाहै परन्तु मेजरबिकलीसाहब ने बहुत परीक्षाकीहैं और मैं उनको परीक्षाओंका वर्णनकरताहूं पहले यह बात कहनी चाहिये कि मेजरबिकली साहब प्रारंभ में परोक्षदर्शित्व आकर्षणस्वापमें उपजातेथे परन्तु फिर उनको मालूमहुआकि निद्राका उपजना कुछ अवश्य नहीं और जाग्रत अवस्थामें भी यह लक्षण उत्पन्न होसक्ताहै॥

पहले मेजरबिकलीसाहब यह युक्ति करते हैं कि धारक के पहुंचेसे नीचेकी ओर अपने हाथोंको प्रसिद्ध युक्तिसेऊपर और नीचेकी ओर हाथ हिलाते हैं जो किसी के लक्षण धारक को मालूमहों अर्थात् गुदगुदी मालूमहो या सून्न मालूमहो या और प्रकारके लक्षण उपजें जैसे पहले वर्णन होचुकेहैं तो वहजानतेहैं कि हम इस धारक पर आकर्षणस्वाप उपजासकेंगे परन्तु

इस बातके मालूम करनेको कि परोक्षदर्शित्वभी उपजासकेंगे कि नहीं बिकलीसाहब अपने हाथोंको अपने भाल से अपनी छातीतक लेजातेहैं यदि उनके मुखपर धारकको एक ऊदीसी रोशनी दिखाईदे तो वह जानलेते हैं कि धारकको परोक्षदर्शित्व दशा उपजेगी यदि प्रकाश मालूम न हो अथवा पीला प्रकाश विदितहोतो वहसमझलेतेहैं कि पहिले धारकको स्वप्नकीदशामें परोक्षदर्शित्व अवस्था प्राप्तहोगी कदाचित् किसी धारक को उनके मुखपर ऊदीतेज रोशनीमालूमहो तो वह अपनेही मुख पर या किसी और वस्तु पर जैसे संदूक़ पर जिसमें कुछ लेख बंदहोताहै और जिसको वह धारकसे बंदहोनेकी दशामें पढ़ना चाहतेहैं अपने हाथोंको हिलाते रहतेहैं कई धारकोंकलिये तो केवल एक दो बेर हाथों का हिलाना बहुत होता है कइयोंके वास्ते बहुत बार हिलाना दरकार होताहै फिर धारक वर्णन करता है कि यह संदूक़ अच्छी तरहसे चमकताहुआ होगया और जो उसमें अंदर रक्खाहुआ है उसको मैं पढ़ सक्ताहूंइस वर्णनसे हमको रीशनबेक साहबकी बातयाद आतीहै किउनके धारकोंको लोहेया पोलादकी सलाखें शीशेकी तरह चमकती दिखाईदेतीथीं चाहे उनपरकुछ हाथ नहीं हिलाये जातेथे यदि मेजरबिकली साहब हाथोंको बहुत बेर हिलावेंतो रोशनीबहुत गहरीहोजातीहै और धारक फिर नहीं पढ़सक्ता है उस समय मेजरबिकली साहब उल्टाहाथ हिलाकर रोशनीको हलकाकर देतेहैं इसयुक्तिसे मेजरबिकली साहबने ८९ मनुष्यों परपरोक्ष-दर्शित्व उपजाया है और ४४ मनुष्य उनमेंसे ऐसेहैं कि बन्द कियेहुये लेख पढ़सके हैं कई धारक ऐसेहोते हैं कि एकलेख के पीछे दूसरा और दूसरेके पीछे तीसरा और इसी तरह चौथा और पांचवां भूल करनेके बिना बराबर पढ़सके हैं॥

चार हज़ार आठसौसाठ लेख मेजरबिकली साहबके धारकों नेपढ़े कइयोंने निद्राकी दशामें और कइयोंने होशमें सन्दूकों में ३६ हज़ार शब्दपढ़ेहैं और एक काग़ज़ इतना बड़ापढ़ागया कि उसमें३७१ शब्दथे निदान उनमनुष्योंको मिलाकर जिन्हों-ने निद्रादशामें सन्दूकोंमें बन्दलेख पढ़ेहैं १४८ मनुष्यों परयह परीक्षा होचुकीहै प्रायः यह बातभी होगी कि कई धारकों ने यह लेख केवल ध्यानके मालूम करने से पढ़ेहों अर्थात् जिन लोगोंने यह लेखसंदूकोंमें बंदकीथीं वह आतेथे और उनके ध्यानके मालूम करलेनेसे धारकोंको पढ़लेनेकी शक्तिप्राप्तहुई परन्तु बहुधा ऐसाहोताथा कि ऐसा आदमी कोई मौजूद नहोता था जो उनलेखों को जानताथा सो ऐसेलेख केवल परोक्षदर्शित्व अवस्थाके कारण पढ़ेगयेथे हर प्रकारकी रक्षाकीजातीथी इंग-लिस्तानमें नियमहै कि दूकानों पर किसी चीज़में बंदकियेहुये लेख बिकतेहैं तो लोग अन्य२ चालीस दूकानोंसे अलग२ऐसी चीज़ें मोललेआये और उनको पढ़वाया उन चवालीस मनुष्यों मेंसे जिन्होंने चैतन्यावस्थामें यह बंदलेखपढ़े ४२ मनुष्यबड़े लोगोंमेंसेथे और बहुत लोगोंके साम्हने यहपरीक्षा हुईथी इतने लेखोंका हाल वर्णन करना विस्तारका कारण होगा परन्तु उनमेंसे दो एक दृष्टांत इस जगह लिखूंगा॥

नवां दृष्टान्त सरटीवल्ट शाटरसाहबनेमेजर बिकलीसाहब के पाससे बहुत से संदूक़ लेजाकर एक संदूक़के अन्दर एक टुकड़े काग़ज़पर एकशब्द लिखकर सन्दूक़ को बन्द करदिया कई दिनपीछे वह सन्दूक़ लौटालाये और मेजर बिकलीसाहब के एक परोक्षदर्शक से कहा कि पढ़ो इसमें क्या लिखाहुआ है मेजर बिकली साहबने उस संदूक़के ऊपर अपने हाथोंकोचेष्टा की और उससमय परोक्षदर्शकनेकहा कि इसमें दरख़्तका शब्द

लिखाहै सरटोवल्ट शाटर साहबने कहा कि कुछ२ अक्षर इस ने ठीक बताये हैं परन्तु वास्तव में और शब्दहै और कहा कि दरख़्त का शब्द नहीं वरन दुरुस्त लिखाहुआहै परोक्षदर्शकने हुज्जत की कि नहीं वास्तवमें दरख़्त है दुरुस्त नहीं और जब सन्दूक़ खोलकर देखा तो वास्तव में दरख़्त लिखा हुआ था दुरुस्त नहींथा यह दृष्टान्त अति विचित्रहै और इससे सूचित होता है कि परोक्षदर्शक ने लेखकके बिचार मालूमकरलेनेसे नहीं बताया परन्तु वास्तव में परोक्षदर्शित्व के कारण पढ़ा क्योंकि जो विचार के मालूम करनेके सबबपढ़ता तो जो शब्द लेखक के विचार में था वहपढ़ता न कि लेखकके विचारमें जो शब्द था उससे कोई भिन्नशब्द पढ़ता या तो सरटोबिल्टशाटर साहब दुरुस्तका शब्द लिखना चाहते थे या उनको यह बात भूलगई थी कि हमने वृक्षका शब्द लिखाहै परन्तु इसमेंसंदेह नहीं कि उससमय उनको बिल्कुल यह निश्चय था कि हमने दुरुस्त शब्द लिखाहै॥

दशवां दृष्टान्त एक स्त्रीने जोमेजर बिकलीसाहबके घारकों मेंसेथी एकदिनमें एकसौतीन लेखक बन्दकियेहुये पढ़े उसदिन मेजर साहबने उन लेखोंपर अपने हाथों से कुछ चेष्टा नहींकी इसस्त्रीकी यहदशाथी कि एकबेरकी क्रियाकरनेसे एक महीने तक बन्द लेख पढ़लेतीथी और महीने के पीछे वह शक्ति जाती रहती थी तीनमहीने के पीछे यहवातहुई कि जबतक हाथोंसे उक्त लेखोंपर चेष्टा नहीं कीगई तबतक वह न पढ़सकी बरन जबपांचबेर क्रियाकीगई तब उसको पूर्वकी शक्ति फिर प्राप्तहुई परन्तु यहशक्ति दुबारह इसतरह सुगमतासे उपजसक्ती है कि आकर्षणस्वाप उपजा दियाजावे और निद्राकी दशामें परोक्ष-दर्शित्व तुरन्त उपजताहै और जब निद्राकीदशामें यह शक्ति एक

बेरउपजतीहै तोफिरतुरन्तहोशकी हालतमेंभी प्राप्तहोजातीहै॥

ग्यारहवां दृष्टान्त एक मनुष्य ने एक काग़ज़पर ये शब्द लिखदिये (तुम इसके अन्दर जो शब्द लिखेहैं देखसक्ते हो) और फिर उस काग़ज़ की ग्यारह तह करके उसको एक मोटे लिफाफे में बन्दकरके तीन जगह उसपर लाखलगाकर मोहर करदी निदान इसतरह उसको बन्दकिया था कि जो कोई उसको खोलता तो मालूम होजाता कि खोला है फिर उस मोहर किये लिफाफे को एक परोक्षदर्शक के पास भेजदिया और उसने उस लिफाफे को जैसा उसके पास गया था वैसाही लौटादिया और लिखभेजा कि इसमें यहशब्द लिखेहैं उक्त परोक्षदर्शकने जाग्रत अवस्थामें उस इबारतको पढ़लिया था जबवह लिफाफालौटआया तो बहुतलोगोंकोदिखलायागया और सबने एकमति होकर यहबात वर्णन की कि निस्सन्देह यह लिफाफा खोला नहीं गयाथा ऐसी परीक्षायें कईबार की गईहैं और एक लिफाफा उनमेंसे मेरे पास रक्खा है और मैंने देखा है कि इसतरह पर वह लिफाफा बन्दकिया हुआथा कि जिस मनुष्य ने उसके अन्दर का विषय पढ़ाहोगा तो केवल प्रकाशमान ब्रह्माण्डकेकारण पढ़ाहोगा मेजर बिकलीसाहबकी परीक्षासे सिद्धहोगया है कि जाग्रत और चैतन्यदशामें परोक्ष दर्शन की शक्ति प्राप्त होसकी है और पहिले भाग में मैं वर्णन करचुकाहूं कि ऐसीदशा अपनेआपभी आकर्षणकी क्रियाबिना कई लोगों को प्राप्त होती है तथाच बहुतसे ऐसेलिखेहुये विश्वसित दृष्टान्त वर्त्तमानहैं कि कई मनुष्य ऐसेथे कि उनको बहुत से वृत्तान्त जो दूरीपर होतेथे अपनेआप मालूम होजातेथे एक साहबने जिन्होंने इस विषयमें पुस्तक लिखीहै कि हमको यह दशा कभी अपने आप उपजती है और पहिलेभागमें मैं लिख

चुका हूं कि ल्यूससाहब को यहशक्ति है कि अपनेऊपर परोक्ष दर्शन दशाको उपजासक्ते हैं और उन्होंने इस अवस्था में आप मुझे एकबेर देखाया एक दृष्टान्त ल्यूससाहब पर ऐसोदशा के उपजनेका इसजगह लिखताहूं ॥

बारहवां दृष्टान्त—एकमनुष्य (स) ने एक और मनुष्यके साथ यह प्रबन्ध किया कि तुम अमुक समय मेरी मौसी के घरजाना और वहां मौजूद रहना एक स्त्री औरभी उसमकान में थी निदान तीनमनुष्य कुछ उसमकानमें थे उसीसमय (स) ने ल्यूससाहब से अपने मकानपर कहा कि आपमेरी मौसीपर इससमय क्रियाकरें उसमकानसे उसकी मौसीका मकान १८ मीलकी दूरीपरथा ल्यूससाहब ने इसदूरी से अपने ध्यानको उसस्त्रीकी ओर जमाना शुरूकिया और थोड़े समयकेपीछेउस स्त्रीको अपनी आंखोंके सामनेदेखा उसमकानकाहाल बिल्कुल बयान किया उसकेकमरे जैसेथे सबकाहाल बताया और उस घरमें जो कुत्ताथा उसका सबपता बताया परन्तु सम्पूर्ण तीन आदमियों के बदले उस मकान में उन्होंने दो और मनुष्य भी देखे वास्तव में उससमय दो और मनुष्य वहां पहुंचगये थे उस स्त्रीको ल्यूससाहब ने कभी पहिले नहीं देखाथा परंतु इसस्त्रीका स्वभाव आकर्षण की क्रियाका अंगीकार करता था और जब ल्यूससाहबने उसकादेखा तब उसपर अमलहोगया यह दृष्टान्त मैंने इसलिये लिखाहै कि इससे सूचितहोताहै कि ल्यूससाहबको केवल अपनेऊपर गुप्तदर्शित्व उपजानेका अधि॰ कारही नहींहै बरन ऐसीदशामें वहदूरसे क्रिया भी करसक्ते हैं पहल भागमें मैं लिखचुका हूं कि ल्यूससाहबने एकस्त्री पर जो लेरेमकानमें थी छःसौ गज़की दूरीसे परोक्षदर्शित्व द्वारा देख लियाथाऔर फिरजब उनसेपूछागया तोउन्होंने बतादिया कि

अमुक स्थानमें वहबैठीहै और जब उसपर अमल होगया और बैठा न गया और लेटनेकेलियेचली तोअमुकदिशा कोचलीथी॥

निदान केवल बिकलीसाहब कीही परीक्षा से यहबात सिद्ध होतीहै कि कृत्रिम परोक्षदर्शित्व अवस्था उपजसक्ती है क्योंकि यहभी अवश्यहै कि अपनेआपभी ऐसीदशा उत्पन्नहो सक्ती है तथाच ऐसी दशा के अपने आप उत्पन्न हो जाने के बहुत से लिखेहुये दृष्टान्त हैं मेरा प्रयोजन यह है कि बहुत बेर जो लोगों को स्वप्न आते हैं और उसस्वप्न में वह वर्तमान वृत्तान्त देखतेहैं और फिर वहस्वप्न सच्चे निकलते हैं केवल इसबातपर घटितहैं कि देखनेवालेको अपनेआप परोक्षदर्शित्व दशा प्राप्त होजातीहै यदि इसबात का अच्छीतरह से खोजकियाजावे तो बिचित्र परिणाम उत्पन्नहों परन्तु यहबात न बिचारनी चाहिये कि सब कारकों को मेजर बिकली साहब के बराबर जाग्रत अवस्था में परोक्ष दर्शित्व के उपजाने की शक्ति प्राप्त है परन्तु यहभी कुछबात नहीं है कि सिवाय उनके और किसीको प्राप्त नहो एक और यहभी युक्ति चैतन्य दशा में परोक्ष दर्शित्वउपजानेकीहै और वह युक्ति यह है कि धारक से आइनाजादू या क्रिस्टलजादूकी ओर दृष्टिजमवातेहैं जिसतरह धारकपरइस युक्तिसेकि उसकेशरीरपर प्रसिद्धयुक्तिसे हाथोंको हिलायाजावे या उससे किसी वस्तुकी ओर दृष्टिजमाने को कहाजावे आकर्षण स्वाप उपजताहै इसी तरह यहबातभी समझमें आतीहै कि इसीयुक्तिसे परोक्षदर्शित्वदशा भी चैतन्य और जाग्रतअवस्थामें उत्पन्नहोजावेतथाच मैं अबपरीक्षाओंकावर्णनकरताहूंजिनमें॥

एकवस्तुकी ओर दृष्टिजमाकर देखनेसे परोक्षदर्शित्व दशा चैतन्यावस्था में उपजतीहै॥

बहुत मनुष्य मुख्यकरके वह जिनकी आयु कमहो एकवस्तु

की ओर दृष्टिजमाकर देखनेसे ऐसीदशामें पड़ते हैं कि जो कि निद्राकी दशा नहीं होतीहै परन्तु ऐसे मनुष्य या वस्तुओं को देखते हैं जो वर्त्तमान नहींहोते॥

पहिले क्रिस्टलजादूकावर्णन—यहक्रिस्टल बहुधा एकगोल या अण्डाकार साफ़शीशा होताहै ऐसे क्रिस्टल बहुतहैं तथाच एक मेरेपासभी है जो मनुष्य क्रिस्टलकी ओर मनको जमाकर देखते हैं उनको उसकेअन्दर गुप्तमनुष्यों के स्वरूप दिखाईदेते हैं वरन ऐसेमनुष्य दीखते हैं जिनको उन्होंने कभीनहीं देखाहै एक क्रिस्टलडाक्टरडीसाहब का प्रसिद्धहै उसकीमुटाई पीरूके अंडेके बराबरहै एक मनुष्यने कई वर्षहुये उसको बेंचाथा और उसकेहाथ एककाग़ज़था जिसमें कुछनियम उसके वर्त्तनेकेभेद के लिखेथे परन्तु जो दृष्टांत मैं नीचे लिखूंगा उनमें जो लक्षण विदितहुये केवल उसक्रिस्टलकीओर जमकर देखनेसेउपजेथे॥

तेरहवां दृष्टान्त— एक लड़का इसक्रिस्टलकी ओर जमकर आधे घंटेतक देखतारहा उसको कभी कुछ नहीं बतायाथा कि उसकीओर देखनेसे क्याप्रभावहोगा पहिले उसने उसक्रिस्टल में एक कालाबादल देखा फिर वहबादल दूरहोगया और उसने अपनी माताको देखा कि अपने मकानमें बैठीहुईहै थोड़ीदेर पीछे उसकापिता उसकोदिखाईदिया फिर उससे मैंनेकहा कि अमुकस्त्रीकोदेखो तथाच उसनेदेखा कि एकगलीमें वहस्त्रीफिरतीहै जोकपड़े वहपहनेहुयेथी सबउसने ठीक२वर्णनकियेउसने उसस्त्रीको यहवस्त्र कभी पहनेहुये नहींदेखाथा परंतु उसस्त्री को प्रायः एकबेर देखा था फिर मैंने उससे कहा कि अमुकलड़के और अमुक नौकरकोदेखो उनको उसने पहले कभी नहींदेखा था तथा उसने दोनों को देखा और दोनों के वस्त्र ठीक२ बताये फिर उसने एकऔर नौकर को देखा कि एकस्त्रीके आने

के लिये एक दरवाज़ा खोलदिया था उससमय का मैंने पता लिखलिया था और जब पीछे मालूमकिया तो सूचितहुआ कि वह स्त्री कहीं बाहरगईहुई थी और उसीसमय अपनेस्थानपर आई थी और वह नौकर वास्तवमें दरवाज़ा खोलने खड़ाहुआ था यह जितनाप्रभावहुआ केवल इसकारणउपजा कि क्रिस्टल की ओर जमकर देखनसे उसलड़क पर गुप्तदर्शन की अवस्था प्रबलहुई उसक्रिस्टल में उसको स्वरूप इसलिये दिखाई दिये कि वह उसक्रिस्टल की ओर देखरहाथा कुछ सन्देह नहींमालूमहोताहै कि जो क्रिस्टल के बदले और किसीवस्तुकी ओर देखता तो उसवस्तुमें दिखाईदेती मैंने दोबेर और परीक्षा की और उनपरीक्षाओं में इसक्रिस्टलका भी औरऔर क्रिस्टलका भी वर्तावकिया एक क्रिस्टल उनमेंसे कईवर्षहुये बनाथा और एकऐसाथा कि कईसप्ताहही पहले बनाथा इसलड़केके सिवाय और लड़कांपर भी परीक्षाकी और परिणाम यह होता था कि जबवह थोड़े समय तक दृष्टि जमाकर क्रिस्टल की ओर देखते थे तो उसमें उनकोस्वरूप दिखाईदेते थे और कभी तो उनको अपने माता पिता की सूरतें दीखती थीं और कभी ऐसेमनुष्य सुझाईदेतेथे जिनको वह नहींजानते थे और यहसूरतें भी उस दशा में दिखाई देती थीं कि जब उन लड़कों से मैंने कहा भी नहींथा कि तुम किसीको देखो और मैं जानता भी नहींथा कि वह मनुष्य जो उनलड़कोंको दिखाईदेतेहैं कौनहैं परन्तु बहुधा ऐसा भी होता था कि उनकी दृष्टि क्रिस्टल से टलजाती थी और उससमय उनको कुछ दिखाईनहींदेताथा और उनलड़ कों कीओर मैंने बहुतख्यालरक्खा और कुछभी धोखादेनेका सन्देह मालूम नहींहोता था वरन मैं आश्चर्य करताथा कि वह कैसी दृढ़ता को देखतेथे और बहुत रक्षासे हाल बतातेथे बहुधा ऐसा

होताथा कि वह उसक्रिस्टलमें कुछभी नहींदेखते थे परन्तु जब कुछ देखते थे तो ठीक २ बतातेथे कि क्या २ देखते हैं मैंउनसे कुछ नहीं पूंछताथा बरन जो कुछ वह कहतेथे वह सुनलेताथा इन परीक्षाओंसेमेरी समझमें यह बातउपजी कि जबयहलड़के कि क्रिस्टलकी ओर देखतेथे तोदृष्टिजमाकर देखनेसेउनमें गुप्त दर्शनकी दशा उपजतीथी मैं चाहताहूं कि इसबिषयमें मैंअधिक खोजकरूं परन्तु मुझे अबभी निश्चयहै कि गुप्तदर्शनइसयुक्तिसे चैतन्यावस्था में उपजसक्ता है अबमैं कईऔरदृष्टान्तलिखताहूं॥

चौदहवांदृष्टान्त—एक गोल क्रिस्टल जिसकी मोटाईसंग- तरेके बराबर थी एकमेज़ पर रक्खाहुआ था अकस्मात् एक लड़कीआगई और उसकीओर देखनेलगी कि इसमें एकजहाज़ है और उसके बादवान फटेहुयेहैं और देखोअब यह जहाज़ गिररहाहै और एक स्त्री उसकी ओर अपने हाथपर शिरझुकाये देखरही है अकस्मात् उसकी माताभी वहां चली आई उसको किसीने नहींकहा कि उसकी लड़कीने क्यादेखाथा परन्तु उसने आप क्रिस्टलकी ओर देखकर कहा कि इसमें एक जहाज़और एकस्त्री देखाई देतीहै अकस्मात् लार्डस्ठोपको इसबातकोखबर हुई और उनसे मुझे खबर पहुंची उक्तलार्ड साहबने मुझसेवर्णन कियाहै कि उन्होंने पन्द्रहलड़कों और लड़कियोंपरतीनक्रिस्ट- लोंके द्वारा परीक्षाकी है बरन दो ऐसी स्त्रियोंपर परीक्षाकी जिनकी आयु साठ बर्षसे ऊंचीथी उक्तलार्ड साहब कहते हैं कि वहुत लक्षण ऐसेथे जो स्मरण शक्तिके कारण धारकोंके बिचार मेंनहीं आसक्तेथे जैसे एक धारकने एक कुत्तेकोदेखा कि उसके शिरपर मुकुटथा एकने एक मकान देखा कि उसमें १२६ खि- ड़कियां और ३३ दरवाज़ेथे जो चीज़ें वह देखतेथे परस्परकुछ संयोग नहीं रखते इसीतरह जैसे निद्रा में कुछचीज़ें अलग हे

दिखाई देतीहैं और जब वह क्रिस्टलमें चीज़ें देखतेथे तो जिस मकानमें वह थे वहां जो चीज़ेंथीं उनको दिखाई देतीथीं इससे सूचितहोताहै कि यह बातें केवल दृष्टि जमाकर देखनेसे होती थीं और देखनेवालोंको गुप्तदर्शन की दशा प्राप्तहोगईथी लार्ड साहबकहतेहैं कि बहुधाऐसाभीहोताथा कि एकसमयएकदेखने वालेको कुछ चीज़ें क्रिस्टलमें दिखाई देतीथी और दूसरेसमय में नहीं दिखाई देतीथीं इससे मालूम होतथा कि जो कुछवह देखतेथे वास्तवमें देखतेथे धोखानहीं देतेथे जो परीक्षायें मैंने कीहैं और उनमें कुछ २ बातें मुझेमालूम हुईहैं वह परीक्षायें लार्डस्ठोप साहबकी परीक्षाओंके अनुकूलहैं ॥

पन्द्रहवां दृष्टांत—मैं ऊपर वर्णन करचुकाहूं कि कभी २ ल्यूससाहबको केवल ध्यानजमानेसे होशकीहालतमें गुप्तदर्शन की दशाप्राप्त होजाती है परीक्षा से मालूमहुआहै कि जब कभी वह किसी क्रिस्टलकी ओर देखतेहैं तोयह दशा अधिकसुगमता से उनमें उपजातीहै एक बेर ल्यूससाहब एक मकानमें बैठेथे और उन्होंने एक क्रिस्टलके अन्दर देखना शुरूअकिया तोएक और मकानके आदमियोंको जो दूरीपरथा उन्होंने उस क्रिस्टल केअन्दरदेखा और बरन उनमनुष्योंके दो और मनुष्य बिल्कुल बेगानेदेखे जोलोग उनकेपास बैठेथे उनसे उन्होंने यहसबहाल वर्णन किया और फिर उठकर उस मकानमें चलेगयेऔर देखा कि वह दोनों मनुष्य वहांहैं ॥

* सोलहवां दृष्टान्त—एकबेर और ल्यूससाहब डडनबरा में थे उनसे किसी ने कहा कि अमुक घरके अमुक मनुष्यों को आप देखिये तथाच उन्होंने क्रिस्टल के अन्दर लंडन का घर और मनुष्य देखे और देखा कि एक आदमी बुड्ढा एक नये

---

* डडन बरादेश और लण्डन में कईसौमील की दूरी है ॥

डोलकी टोपी पहनेहुये मरनेके निकट है यह सब वर्णनउनका पीछे ठीक निकला एक मनुष्य उस समूहमें वर्त्तमानथे उनकी एक मुख्य घड़ीकी कुंजीकभी जातीरहीथी ल्यूससाहबने उनसे कहदिया कि तुम्हारी कुंजी इसप्रकारकी जातीरहीहै कि मुझको क्रिस्टल में दिखाई देतीहै वह मनुष्य और ल्यूससाहब आपुस में जान पहिचान नहीं रखतेथे उसने कुंजीके जातेरहने और उसके स्वरूप को मानलिया ल्यूससाहबकी यह अनुमतिहै कि क्रिस्टल गुप्तदर्शनके उपजनेकाद्वाराहै उसदशामें कि जबउसकी ओर दृष्टि जमाकर देखाजावे और जो कुछ मुझको परीक्षा हुईहै उसमें मेरीभी यहीमति है परन्तु यह भी होसक्ता है कि देखनेके सबब ऐसी अवस्था उपजे जो कुछ उडायलकी सत्ता क्रिस्टल अर्थात् शीशेमें होती है उससे ऐसी दशाके उपजने में सहायता होतीहै ल्यूससाहबने कई वेर मेरे कहेसे क्रिस्टलों में देखाहै और यद्यपि उन्होंने ऐसे २ मनुष्यदेखे और वर्णन किये कि जिनको मैं जानता नहींथा परन्तु मुझे संदेह नहीं कि जो कुछ यह वर्णन करतेथे कि हम देखते हैं वास्तव में वह देखतेहीथे प्रायः यह बात पीछे मालूम होसके कि जो चीज़ें वह देखतेथे केवल कल्पितथीं या वास्तव में कहींथीं परन्तु इसजगह इतनी बात कहनी उचित मालूमहोती है कि एक वेर जबउन्होंने एकबड़े क्रिस्टलकेअंदर देखा तोउनपरऐसा प्रभाव हुआ कि निकटथा कि आकर्षण स्वाप उपजआवेपर जब छोटे क्रिस्टल में देखतेथे तो यहदशा नहीं होतीथी इससे मालूम होताहै कि क्रिस्टलकी उडायलसत्ता कुछप्रभावकरती है॥

आईना जादू अर्थात् मोहन दर्पणकी मुझे परीक्षा नहीं हुई परन्तु मेरे ध्यानमें यहबात है कि उनका कार्यभी क्रिस्टलकेसदृश होता है इसतरह का शीशा धातुकाभी बनातेहैं और केवल

इसतरह परभी बनातेहैं कि कोयलेसे किसी बस्तुको कालाकर देतेहैं सो यह शीशा ऐसी चीज़होतीहै कि कुछ समयतकउसकी ओरदेखा जावेतो उसके अन्दर कुछ दिखाई देताहै यह बात हमको मालूमहै कि धातु और कोयलेका प्रभाव अंगीकारकरने वाले स्वभावों पर अति प्रभाव होताहै डोपोटेट साहबको इस बातकी परीक्षाहुईहै कि जब हलके स्वभावके आदमीकोयलेकी ओर देखते हैं तो उनपर बिचित्र प्रभाव होता है अर्थात् ऐसे स्वरूप देखतेहैं कि उनका हाल वर्णन करना नहीं चाहतेपरन्तु किसी समय जो कुछ वह देखतेहैं वर्णन करदेतेहैं एकबेर एक स्त्रीने ऐसे सुतह में एक जहाज़ बहाव में बहा हुआ देखा जब डोपोटेट साहब ऐसी परीक्षायें करते हैं तो देखनेवालों को केवल अधीरताही नहींहोती बरन उनको चेत नहीं रहता कि उनके पास क्याहो रहा है इन परीक्षाओंका विचित्र प्रभावहो-ताहै परन्तु ऐसीपरीक्षा करनेमेंबहुत रक्षाकरनी चाहियेक्योंकि किसी समय कठोर प्रभाव होता है डोपोटेट साहब कहते हैं कि इन परीक्षाओंके द्वारा हमको पुराने समयके जादूका हाल स्पष्टहोगयाहै मेरीमतिमें यह उनका वर्णन ठीकहै॥

पानी--जो एक गिलासमें पानीभर कर रक्खाजावे मुख्य ऐसाजल जिसपर आकर्षणकी क्रियाकीहोतो उसके अन्दरदेखने सेस्वरूप दिखाई देतेहैं॥

सत्रहवां दृष्टान्त--एकस्त्रीपर क्रिस्टलके अन्दर देखनेसेगुप्त दर्शनकी दशाप्राप्त होजातीथी मेजरबिकली साहबने एक बोत-लमें क्रियाकियाहुआभरदिया और उसस्त्रीसेउसकेअन्दर देखने कोकहा उस स्त्रीनेपानीके अन्दर एक मगरमच्छदेखा॥

अठारहवां दृष्टान्त--इसीप्रकार एक बोतल में पानी भरकर एक और स्त्री से उसके अन्दर देखने कहा उसने उसके अन्दर

एकसांप देखा और भयखाकर बोतल को हाथसे फेंकदिया ॥

इन सर्व्वपरीक्षाओं से सूचित होताहै कि नानाप्रकार की वस्तुओंकीओर मुख्यकरके क्रिस्टलों और धातोंकी तरफ और आकर्षणके जलकी ओर देखनेसे गुप्तदर्शनकी आब उपजतीहै परन्तु अवश्यहै कि परीक्षा पर यहबात सूचितहोगी कि और बहुत वस्तुओं की ओर देखने से भी ऐसाही प्रभाव होगा ॥

क्रिस्टलों के अन्दर दृष्टि करने से जिसप्रभाव का वर्णन प्रसिद्ध हुआ है तो बहुधा लोग कहते हैं कि यहबात बिल्कुल धोखेकीहै परन्तु इसबात के कहदेनेसे मन नहींभरता--हां यह बात होसक्तीहै कि कई देखनेवालोंने धोखादियाहो परन्तु सब आदमी धूर्त नहींहोसक्ते हैं यदि कई वर्णन झूठ मालूमहोते हैं तो यहबात यादरखनीचाहिये कि कभी इसविषयमें पूराखोज नहींहुआ औरदेखनेवाले भी बहुधा कम उमर के होते हैं और कारक भी बहुधा अनाभ्यासी होतेहैं प्रायः अपने विचार देखने वालोंके मनोंमें डालदेते हैं इसमें संदेह नहींहै कि बहुतकम उमर और बूढ़े आदमियों को क्रिस्टलों में स्वरूप दिखाई देतेहैं और केवल यहीबात नहीं है कि उनका वर्णन ठीक है वरन जो कुछ उन्होंने देखाहै उससे उनको भयउपजाहै सिवाय इसके उनकी देखीहुई चीज़ें उन अवलोकनों के अनुकूलहैं जो आकर्षणक्रिया के गुप्तदर्शना दशामें देखेजातेहैं और यह ऐसा विषयहै कि इसमें बहुतही खोजकरना अवश्य है--मैंने अभी तक यहवर्णन नहींकियाहै कि किसी समय क्रिस्टलों के अंदर ऐसे आदमियों के स्वरूप दिखाई देते हैं जो समय से पढ़ेहुये हैं और बुरे भले भूतयोनि के रूपभी मालूमहोते हैं वरन जो देखनेवालों से कुछ प्रश्नकियेजावें तो उनको उनके उत्तरलिखे हुये या छपेहुये दिखाई देतेहैं मुझको ऐसी परीक्षा करने का

आप समय नहींमिलाहै और मेरीसमझ में यह बात आती है कि बहुत से कारण ऐसे हैं कि जिनसे भूलहोजावे परन्तु इस विषय में भी वर्णनहुये हैं उनको मैं खोजने विना अविश्वसित नहीं समझता हूं इसबातका तो मुझे अच्छीतरह निश्चयहै कि क्रिस्टलों की ओर देखनेसे गुप्तदर्शन की दशा उपजतीहै परंतु मेरीमति यह भीहै कि अवश्यकरके स्तब्धदशा भी क्रिस्टलोंके देखनेसे उपजसकेगी और जो कि गुप्तदर्शन और स्तब्धदशाके लिये भी अभीतक अच्छीतरह से खोजनहीं हुआ है इसलिये मैं यहबात नहीं कहसक्ता हूं कि इनसे भी विचित्र लक्षणों का उपजना असंभवितहै तो जबतक मैंअच्छीतरहसे खोज न कर-लूं ऐसे विषयों के लिये मैं निश्चय करके कुछनहीं कहसक्ताहूं इस गुप्तदर्शन के पूर्णहोनेसे पहले जो क्रिस्टलों कीओर देखने के द्वारा उपजती हैं मैं यह वर्णनकरना उचित समझताहूं कि मिसिर में जो आजकल अरबकेलोग जादूकरतेहैं वह इसीसें सेहै युक्ति यहहै कि यह जादूगर एकलड़के से सियाहीकेबिंदु की ओर जो आईनेजादू के बदले काम देताहै दृष्टि कराते हैं और धूनीभी देतेहैं और कुछ हाथसे भी उसपर क्रियाकरते हैं सियाही का बिन्दु एकओर स्वरूप का क्रिस्टल होताहै और इसमें सन्देह नहींहै कि उसकी ओर देखनेसे लड़कों को ऐसे आदमी दिखाई देते हैं जिनको उन्होंने कभीदेखा नहींहोताहै बहुत बेर ऐसा भी होता है कि विचार संयोग से ऐसे स्वरूप दिखाई देतेहैं परन्तु जोध्यान कियाजावे कि विचार संयोगका भी इतना पैदा होना कुछ गुप्तदर्शन से कम आश्चर्य दायक लक्षण नहींहै विचार संयोग और गुप्तदर्शन दोनों आकर्षण स्वाप में उपजते हैं और यह सर्व नियम अनुकूल हो तो ये दोनों लक्षण अपनेआप भी उपजसक्ते हैं ॥

सोलहवांपत्र ॥

अब मैं आकर्षणस्वाप और उन लक्षणों का जो निद्राकी दशामें उपजते हैं वर्णन करताहूं ॥

आकर्षण स्वापके उपजाने का वर्णन ॥

यह बहुधा यह युक्ति कियाकरता हूं कि धारक को अपने सामने परन्तु निकट बैठालेताहूं और आप उससे कुछ ऊंचा बैठताहूं और उसके अंगूठों को अपने अंगूठों से धीरे२ दबाता हूं और उसकी ओर देखता रहताहूं और उससे कहताहूं कि मेरी ओर देखतारहै जब कुछप्रभाव होनेलगताहै तो मैं अपने हाथोंको उसके भालआदिसे मुख और हृदयकी ओर नीचकी तरफ हिलाताहूं इसयुक्तिसे कभी पावघंटे और कभी आधघंटे और कभी एकमें कुछ २ प्रभाव होनेलगताहै ॥

उन्नीसवां दृष्टान्त— लामपर जिसका वर्णन पहले भाग में होचुकाहै चैतन्य अवस्था में क्रिया का प्रभाव होजाता है मैंने इसबात की परीक्षा करनीचाही कि उसको निद्रा भी आसक्ती है कि नहीं पहली बेर २५ या ३० मिनट के पीछे देखने पर उसको नींद आगई पर गहरी नींद नहीं आई अर्थात् जबकोई उससे बात करताथा तो सुगमता से जागजाताथा नौबेर मैंने उसपरक्रियाकी तो फिर उसको थोड़ेसमयमें नींदआजाती थी आठवीं बेर १५ मिनट में नींदआगई मुझको मालूमहुआ कि गलीमें जो शोरहोता था इससे उसकी निद्रा में विघ्न पड़ता था मैंने अपने जी में यह इच्छा की कि उस शोर को वह न सुने तथाच इसयुक्ति से उसको गहरीनींद आगई-- नवीं बेर में उसको केवल १२ मिनट में नींद आई और अच्छी तरह अचेतसे गया और जब जागा तो उसको इसबातका चेत नहीं

था कि निद्रामें क्या २ हुआथा जब वह निद्रादशा में बोलता था तो उसकास्वर मुख्यशब्द से विपरीत था और जब उससे पूछागया तो उसनेकहा कि आगे मुझे औरभी गहरीनींद आवेगी बरन मैं गुप्त वस्तुओं को देखसकूंगा परन्तु अभी एक अँधेरासा मालूम होताहै और उस अँधरे के सबब से मैं नहीं देखसक्ता हूं मैंने उससे कहा कि तुम आधे घंटे तक सोरहो अकस्मात् जबमैंने उससे यहबात कहीथी तब साढ़ेचार बजेथे और जब वह जागा तो पांचकी आवाज़ घण्टेपर पड़रही थी उसके जागनेसे पहले मैंने उसे आज्ञादी कि दूसरी बेर केवल पांचमिनट में सोजाना उसने मानलिया और जब अमलकिया गया तो वह वास्तव में पांचमिनट में सोगया उसके पीछे उसका सुलादेना सुगमथा और तेरहवींबेर केवल एकमिनटमें मैंने उसको सुलादिया इसीपरीक्षा में नवींक्रियातक धारकको पूर्ण निद्रा नहीं आईथी परन्तु उसके पीछे धीरे २ सुगमता से आतीथी और विचित्र लक्षण उपजतेथे॥

बीसवांदृष्टान्त—एक और मनुष्यपर भी मैंने क्रियाकी उसकी आयु इक्कीसवर्षकी थी मैंने इस मनुष्य के हाथमें एकसिक्का उसको देकर कहाथा कि तुम इसकी ओर देखते रहो तथाच जब उसने देखा तो उसके ऊपर कुछ२ प्रभाव हुआथा दूसरे दिन मैंने उसको सुलानाचाहा तो अपनी दृष्टिओर और हाथों के हिलाने के द्वारा उसको बीस मिनट के समय में सुलादिया परन्तु बहुत गहरी नींद उसको नहींआई जिसतरह लामपर बेर२ क्रियाकीथी उसीतरह इसपर क्रिया करतारहा और अंत को दोमिनट के समय में उसको सुलासक्ता था इसमनुष्य को भी मैं जबतक चाहताथा सुलारखताथा जबवह जागताथा तो उसको निद्रावस्था की कोईबात याद नहीं रहतीथी परन्तु जो

मैं उसको निद्राकी दशामें आज्ञा देताथा कि तुम यहबात याद रखना तो उसको याद रहतीथी ॥

इक्कीसवां दृष्टान्त—एक मनुष्यअन्धाथा एकआंखतोउसकी बिल्कुल जातीरहीथी और दूसरी में पानी उतरआया था दोवर्षसे उसकी दृष्टिमें इतनाअन्तर होगयाहै कि केवलदिनकी रोशनी और रात्रिके अंधेरे में कुछ अन्तर मालूम होताहै और कुछ दिखाई नहींदेता बिल्कुल अन्धाहै उसकीआंखको अच्छी तरह देखने से मालूम हुआ कि अभी अच्छीतरह पानी नहीं उतरा है और मुझको आशाथी कि उसकी दृष्टि कुछ वृद्धिहो जावे दोमहीने के पीछे जो मैंने एक डाक्टरसाहब से कहकर उसकी आंखको दिखाया तो कुछ आराम मालूमहुआ डाक्टर साहब ने कहा कि इसकी आंखोंके ढेलोंके परदे तरीकी कमीके सबब जुदे२ होगये हैं इससमय में उसकी आंखमें आकर्षण की क्रिया के कारण इतना अन्तर पड़गया था कि जो उसकी आंखको हाथ से ढककर सूर्य के प्रकाश के सामने फिर हाथ उठालिया जाता तो उसकी पुतली सिमट जाती थी इस विचारसे कि देखूं तो अन्धेआदमीपर आकर्षणकी क्रियाका क्या प्रभावहोताहै मैं उसपर बराबर अमल करतारहा तथाच मैंने उसपर प्रसिद्ध युक्तिसे क्रियाकी प्रारम्भ में उसको नींद तो न आई परन्तु और और लक्षण उपजने रहे बारहवीं बेर उसको अच्छीतरह से नींद आगई फिर उसको सुगमता से नींदआती थी और दो तीनमिनटमें सोजाताथा इसपरीक्षासे मालूमहोता था कि धारक के अन्धे होनेसे क्रियाके ग्रहण करने में कुछविघ्न नहीं होताथा वरन जो लक्षण उसपर प्रकट होतेथे प्रारम्भही से औरों से उसपर अधिक प्रतीत होतेथे और थोड़े समय के पीछे मुझको मालूमहुआ कि उसकी कमरकी हड्डियोंमें से एक

मुख्य प्रभाव इसतरहका होताथा कि जिससे चाहे तन्द्राआती थी परन्तु अच्छीतरह नींद देरमें आतीथी मैंने इस प्रभावको हाथों की युक्ति से दूर करदिया और उसको अच्छीतरह नींद आनेलगी जब मैं इसपर क्रिया करनेलगा तो पांचवींबेर उस की आरोग्यता में बहुत वृद्धि होगई थी क्रियाहोने से पहिले उसकी आंख सूखी और लालथीं परन्तु जब क्रिया होनेलगी तो नींदआनेसे पहिले भी उसकी आंखमें तरी पैदाहोगई और रंग ऐसा होगया जैसा आरोग्यता में होता है इस मनुष्य की नाकमें से कई बर्ष से बहुत मल निकला करता था परन्तु जब क्रियाहोनी शुरूहोगई तो उसमलका निकलना बन्द होगया और जो साधारण मल निकला करताथा वह निकलने लगा और उसको नजलेकी भी बीमारीथी पर उससमय से अबतक कभी पहिला मल उसकी नाकमें से नहीं निकला है मैं समझ-ताहूं कि यहरोग उसका बिल्कुल दूर होगया और यहबात ध्यान करनेके योग्यहै कि क्रियाकरने के समय मुझको मालूम भी नहींथा कि आकर्षणकी क्रिया द्वारा इसका मल निकलना बन्द होजावेगा वह कहता है कि इसमल के निकलने से ऐसा कष्टहोताथा कि जीना उसकोभारहोगयाथा और जबसे उसका मल निकलना बन्द होगया है तब से प्रसन्न रहता है और यह मनुष्य मेरा बड़ागुण मानताहै और केवल उसकी आंखके रोगमेंही यह अन्तर नहींपड़ा वरन दिन२ ऐसा खुलता जाता है कि देखनेवालोंको उसकी आरोग्यता में वृद्धि मालूम होती है और उसे आपभी इतना लाभ मालूम होता है कि वह इस क्रियाकी अति इच्छा रखता है और चाहता है कि वह समय जल्दी आवे जब उसपर पन्द्रहबेर क्रियाहुई तो उसकी दृष्टिमें ऐसीवृद्धि होगई कि उसको पूरा चाँद भीअच्छीतरह सुझाई

देताथा और दूकानों के दीपकों की रोशनी गिन सक्ताथा यह बात उसको दोबर्ष से नहीं हुईथी जब उसने मुझ से यह बात वर्णन की तो मुझको आशाहुई कि उसकी दृष्टि में अच्छीतरह वृद्धि होजावेगी फिर मैं चालीसवेर रोज़ क्रिया करता रहाहूं तबसे दिन२ उसकी दृष्टि में वृद्धि होतीजाती है परन्तु हरएक ऐसा रोग है कि पूरे आराम होनेकेलिये समयतक क्रियाकरनी अवश्यहोगी मैंने इस मनुष्य के आराम पानेका विस्तारपूर्वक वृत्तान्त इस स्थानपर इसलिये लिखा है कि यह मनुष्य अंधा था और सब वृत्तान्त से विस्तार मालूम हुआ परन्तु आकर्षण क्रियाके वैद्यकीय लक्षणों का उचित स्थानपर वर्णन किया जावेगा इसजगह इसमनुष्यका हालसैनकी तरहपर लिखा॥

बाईसवां दृष्टान्त—एक और मनुष्यपर भी मैंने क्रिया की पहिलीवेर उसकी आंखें कुछ झुकनेलगीं परन्तु नींद नहीं आई दूसरीवेर जब मैं उसकीओर पन्द्रहमिनटतक देखतारहा तोवह पांच मिनटतक सोतारहा फिर मैं उसको तीनमिनट में सुला देताथा परन्तु अकस्मात् वह चारवेर क्रिया करने के उपरान्त शहर से चलागया इस मनुष्यको भी जब मैं चाहताथा सुला देताथा इनचार मनुष्यों को लाम के सिवाय आकर्षण क्रियाके द्वारा मुझसे पहिले किसीने नहीं सुलाया था पर हां लामको ल्यूस्साहब ने मेरे कहने से एकवेर सुलादियाथा परन्तु ल्यूस साहब की क्रिया से भी उसको अच्छीतरह नींद नहीं आईथी मैंने इन दृष्टान्तोंको चुनकर नहीं लिखाहै परन्तु जो प्रथम की मेरी क्रियाथीं उनको लिखदिया है यदि इनलोगोंपर मैं एकदो वेरही क्रिया करके बन्दकरदेता तो निद्राकीदशा कभी न उपजती परन्तु बराबर क्रिया करने से ऐसी दशा उत्पन्न होगई इससे सिद्धहोता है कि जो कारक दृढ़ता और धैर्य्य के साथ

क्रिया करताहूं तोबहुतमनुष्योंको सुलासक्ताहै मुझेकुछआक-
र्षणक्रियाका श्रेष्ठबल प्राप्तनहींहै वरन मध्यमबल से भी कम
होगा पहलेर जबमैंने ऐसेमनुष्यों पर क्रिया करनीचाही जिन
पर पहले किसी ने नहींकीथी तो दो तीन बेर क्रिया करने से
प्रभाव नहींहुआ और मुझको बिचारहुआ कि मुझसेप्रभावन हो
सकेगा इसबर्ष मैंने उनचारमनुष्यों के सिवाय जिनका ऊपर
वर्णन कियागया पांच और मनुष्योंपर क्रियाकी और उनमें से
चारपर अच्छाप्रभाव होगया सोमालूमहुआ कि नौमनुष्योंमेंसे
आठ आदमियों पर मेरीक्रियाका प्रभाव होगया अर्थात् आठ
मनुष्योंको मैं सुलासक्ता नवें मनुष्यपर केवल तीनबेर क्रियाकी
गई तो उससे मालूम होताहै कि जो उसपर अधिकक्रिया की
जाती तो अवश्यथा कि उसपर भी प्रभाव होजाता सो इतनी
थोड़ी परीक्षासे मैं यहनहीं कहसक्ताहूं कि उसपर यह प्रभाव
न होता इन नौ मनुष्यों में दो अन्धेआदमी थे ॥

अब इसविषयका अधिक विस्तार करना कुछ अवश्य नहीं
जो कुछमैंने वर्णनकिया इसबात के सूचितहोने के लिये बहुत
है कि बहुत मनुष्योंपर धैर्य्य और दृढ़तासे क्रिया का प्रभाव
होसक्ता है मैंने ल्यूससाहब को देखाहै कि वह धारकके हाथ
भी नहीं पकड़ते हैं और केवल उसकी ओर दृष्टि करने से
सुलादेते हैं परन्तु इनसाहबको मनके रोकनेकी बड़ीशक्तिप्राप्त
है और जहांतक मुझको परीक्षाहुई है उसे मुझे सूचित होगया
है कि प्रायः ऐसा मनुष्य कोई नहीं है कि जिसको ल्यूससाहब
सुला नहींसक्तेहैं यहबात तो अवश्यहै कि शायद पहली बेर न
सुलासकें परन्तु दो चार बेरकी क्रिया में अवश्य सुला देते हैं
प्रकट है कि एकान्तमें सब लोगोंके सामने से क्रियाका प्रभाव
बहुत सुगम शीघ्र और उत्तम होता है क्योंकि खलेमें लोगों के

वर्त्तमानहोने से धारक के स्वभावपर कछु हानि होजाती है॥

मैं लामपर इसतरह भी निद्रा उपजा सक्ताहूं कि उसके शरीरको कुछभी स्पर्श न करूं बरन उससे कहूंभी नहीं कि मैं तुझको सुलाया चाहता हूं यदि उसके शरीरको छुवाजावे तो मैं उसको पावमिनटमेंभी सुलासक्ताहूं एकबेर वहएक जगह बैठा हुआ बातें कररहाथा और अच्छीतरह से वार्त्तालाप करता था मैं उसकी बगलकी तरफ पांचफुटकी दूरीपर बैठाहुआ था मैंने उसकीओर दृष्टिजमाकर २५ पल अर्थात् आधे मिनटके निकट देखा उसकोकुछखबर नहींथी कि मैंइसइच्छासे उसकीओरदेख रहाहूं कि उसको नींद आजावे २५ पलके समयमें उसकी आंखें बन्दहोगईं और वह अच्छीतरह अचेतहोकर सोगया मैंनेउससे कहा कि एकघंटेतक सोरहो और जब वह एक घंटेकेपीछेजगा तो उसनेकहा कि आपनेमुझसे कहाभीनहीं कि हम तुमकोसुलाना चाहतेहैं यहप्रभाव देखकर मैंचाहताथा कि दूरसे क्रियाके करने कीपरीक्षाकरूं परन्तु संयोगवश यहमनुष्य ब^तबीमार होगया उसको बहुत पढ़ने से हृदयका रोग होगया था और वह अपने मकानसे बाहर न निकलसका जब वह अच्छाहोगया तो उस पर ऐसा अच्छा प्रभाव होना बन्द होगया उसके पीछे मुझको केवल दो वेर उसपर इसतरह क्रिया करनेका समय मिला एक वेर तो अच्छी तरह अमल होगया और दूसरी वेर मैंने आधे मीलकी दूरी से उस पर क्रिया करनी चाही परन्तु कुछ बात ऐसी होगई कि मेरा मन न जमसका परन्तु जब वह मुझे उस समय के पीछे मिला तो उसने उस समय का पता बता दिया कि उस समय मेरा मन वेबश सोने को चाहताथा और क्रिया के अन्य लक्षण भी प्रतीत होतेथे मुझको खेद है फिर मुझको फिर कभी उसपर दूरसे परीक्षा का अवकाश न मिला क्यों-

कि जब वह अच्छा होगया तो उस पर ऐसे लक्षण प्रतीत नहीं होते थे परन्तु तौभी उसको अच्छी तरह नींद आजाती थी ॥

निद्राकी दशा में शिक्षाके लक्षणका वर्णन ॥

जैसे लक्षण ऊपरवर्णन किये कि जाग्रत अवस्था में उपजते हैं ऐसेही लक्षणनिद्रामें भी शिक्षासे उपजते हैं ॥

तेईसवां दृष्टांत—जब लाम सोताथा तो मुझको अधिकारथा कि जो जोड़ उसका चाहता था वह अकड़ जाता था मैंने इस तरहकी परीक्षा बहुत नहींकी परन्तु केवल अपना बिश्वास कर लिया कि जिसतरह से शिक्षा का प्रभाव उस जाग्रत दशा में होता था वैसाही प्रभाव निद्रामें भी होजाता था यह बात भी मुझसे होसक्ती थी कि जितनी देरतक मैं आज्ञादेता था उतनी देरतक वह सोता था ॥

चौबीसवां दृष्टांत—मेरे सामने ल्यूस साहबने एक मनुष्यपर क्रियाकी जो ल्यूससाहब कहते थे वह मनुष्य वही करता था कभी वह मछलीका शिकार करने लगता था कभी बंदूक लगा ने लगता कभी अपने को समझ लेताथा कि मैं फौज का जर-नेलहूं कभी पढ़ाने लगता कभी यहहोताथा कि छड़ीको बन्दूक समझ लेता था कभी कुरसीको कोई दुःखदाई पशु—कभी उस को आंधी चलती हुई दीखती और कभी वह बिजलीका शब्द सुनता था कभी वह समझ लेता था कि मैं वर्षासे भीग गया हूं या पानी से अकड़गया हूं कभी वह दरियावमें तैरनेलगता था कभी पानी को दूध या शराब समझ लेता था और जब पानी को शराब समझकर पीता था तो ऐसा उन्मत्त होजाता था कि जबतक कोई मनुष्य उसे सहारा न दे तबतक खड़ा नहीं रहसक्ता था इस मनुष्य को वास्तव में ऐसा मदहोगया कि ल्यूससाहब ने पाव घंटे तक परिश्रम करके उसका मद

दूर करदिये इस मनुष्य पर एक प्रकार का विचित्र प्रभाव होता था कि जो प्रभाव एक बेर होगया वह समय तक स्थिर रहता था तथाच जो एकबातकी शिक्षा उसको हुईहो तो दूसरी शिक्षाका प्रभाव तुरन्त नहीं होजाता था जैसे जो वह सोता हो और उसको समझाया जावे कि अब जागजाओ तो तुरन्त नहीं जागता था परन्तु उस दशामें कि जब उससे प्रतिज्ञा लेलीजातीथी कि जब कहोगे जाग जाऊंगा एक बेर एक सभा में इस लक्षणका अच्छी तरह प्राकट्य हुआ ॥

केवल यही बात नहीं होतीहै कि जब तक धारक सोतारहे तबतकही उसपर शिक्षा का प्रभाव रहे बहुधा ऐसा होता है कि जो आज्ञा निद्रामें दीजावे उसका प्रभाव जागने के उपरांत जाग्रत अवस्था में रहता है ॥

पच्चीसवांदृष्टांत—लामपर मैं यहप्रभाव करसक्ताथा कि जब स्वप्नावस्था में उसको कहा कि अमुक बात स्मरण रखना और अमुक भूल जाना तो ऐसाही होता था जब वह सोया होता था तो मैं उससे कह देताथा कि अगली बेर तुम इतने समयमें सो जाना तथाच इसअधिकारसे यहदशा होगई थी कि मैं उसको दो मिनटसे कम भी समय में सुला देता था मैं यह भी प्रभाव करसक्ताथा कि जब वह निद्रासेजगे तो उसके स्वभावपर एक मुख्य लक्षण प्रकटहो मुझको मालूमहुआ कि लाम बहुधासुस्त रहताहै उससमय में वह कुछबीमारथा मुझको उसकी बीमारी का हालमालूम नहींथा जब वह सोयाहोताथा तो मैं उससेकहताथा कि जब तुम जागोगे उससमय प्रसन्न रहना तथाच ऐसा ही होताथा जब मैं यह आज्ञा देनी भूल जाताथा तो वह उदासही रहताथा मैंने सदा यहबात देखीहै कि आकर्षणको निद्रा से धारक जागताहै तो उसका खुला मन होजाता है ॥

मैंने इसप्रकार की परीक्षायें आप नहीं कीं क्योंकि मुझे निश्चयथा कि आकर्षणकी क्रियाकायहप्रभावहोताहै कि क्रिया की दशामें धारक पर ऐसा प्रभाव होजाताहै कि जाग्रतअवस्था में उसपर प्रभाव रहताहै और उसकी इन्द्रियां और कर्म्म उस प्रभावके अनुकूल होती हैं वास्तव में यह प्रभाव रोज़ होताहै मैं इस विषयका अधिक विस्तार नहीं करूंगा क्योंकि समय कम है और मुझे और लक्षणोंका भी हाल लिखनाहै॥

आकर्षणीयक्रिया के क़याफ़े के लक्षणों का वर्णन॥

मैं प्रथम भाग में लिख चुकाहूं कि इन लक्षणों के प्रकट होनेमें बहुत विपर्ययहै बहुधा ऐसा होताहै कि धारकको शिरके छूनेसे कुछ लक्षण भी प्रतीत नहीं होते हैं और कई धारक ऐसे हैं कि कारक उनके शिरके वरन शरीरके और किसी स्थान के छुवे तो जैसी कारककी इच्छा होगी वैसाही प्रभाव प्रकट हो जातहै परन्तु इसके विदित होने का यह कारण मालूम होता है कि जो कारक की बेकही इच्छा होतीहै तो कारक के साथ धारक को ध्यानैक्यता वा विचार संयोग होती है और जब कारक अपनी इच्छा प्रकट करदे तो शिक्षा का प्रभाव हो जावे जब इन कारणों से लक्षण प्रकटहो तो क़याफ़ेकी विद्याके नियमोंका प्रमाण उनसे प्राप्त नहीं होता कि शिरके किसीस्थान के छूनेसे ब्रह्माण्डके किसी मुख्य स्थानका कर्म्म प्रकट होता है॥

छब्बीसवां दृष्टांत—मैंने एकमनुष्य को आकर्षण की क्रियाके द्वारा पांच मिनट में सुलादिया जब वह सोगया तो जो उसके शिरका स्थान छुवाजाताथा एक मुख्य प्रभाव क़याफ़ेकी विद्या के अनुकूल प्रतीत होता था यह मनुष्य क़याफ़े की विद्या को कुछ भी नहीं जानता था और उसको यह कुछ मालूम न था कि शिरके कौनसे स्थानको छूनेसे कौनसाप्रभाव उपजेगा

कदाचित् उसको इस विद्या का थोड़ाभी ज्ञान होता तो यह लक्षण ऐसीजल्दी प्रकट होते कि वह जान बूझकर उनको प्रकट नहींकरसक्ताथा, उदारता, अनुकरण, युद्ध, गोप्य, लाभ, अहंकार मनोरथ, प्रशंसा, सिद्धो, मित्र, सन्तान की प्रीति और रागके स्थान जब बहुत जल्दी २ छुयेगये तो बराबर अनुकूल लक्षण प्रकटहुये और यहलक्षण ऐसे विदितहोतेथे किजिनकी मुझको आशा नहींथी और कईऐसेथे कि मैं जानताभीनहींथा कि क्या प्रभावप्रकटहोगा जबउदारताकास्थानछुवा तो उसनेमुझे तुरन्त दया योग्य समझकर अपनी जेब में से सबरुपये निकालकर देने शुरूकिये और तबभी जो मैं उसकेशरीरको छुवारहा तो उसने अपनेबदन परसे कपड़ा उतारकर देदेनेका उद्योगकिया उदारता इसीतरह प्रकटहोतीहै कि जिसकोनिर्धनसमझें उसकोदेना चाहिये—जब बचावकी जगहको छुवा तो उसकेमुखसे अतिस्पष्टता पूर्वक भय के लक्षण प्रतीत हुये वह कहने लगा कि एक गहरी खोह मेरे सामने है और मुझे भयहै कि मैं उसमें गिर जाऊंगा जबराग के स्थानको छुवा तो वह तुरन्त गानेलगा जब अनुकरण के स्थानको छुआ तो वह केवल हर आवाज़ही को जो वह सुनता था नकल नहीं करता था वरन चाहे उसकी आंखें बंद थीं जो मनुष्य मुख या आंख या हाथोंसे चेष्टा करता था वैसीही नकल करता था बहुत विस्तार लिखना कुछ अवश्य नहीं यह बात कहनी बहुतहै कि जो जो उसके शिरका भाग स्पर्श कियाजाताथा उसके अनुसार तुरन्त लक्षण प्रकट होतेथे अधिक परीक्षाके लियेमैंने दोस्थान एकहीसमयमें स्पर्शकियेतो उसका यहप्रभाव हुआ कि दोनों लक्षणइकट्ठे विदितहुयेजैसेजब मैंने उदारता और लोभके दोनोंस्थलोंको एकबेर छुवातो उसने अपनी जेबमेंरुपया निकालनेको हाथडाले परन्तुउसकेबदले कि

मुझे रुपया देदे मुझे उपदेश करनेलगा किमांगना बहुत बुराहै और रुपया देना एकबड़ा दान है जब धर्मस्थल को छुवा तो उसनेबहुत सच्चाई से निमाज़ पढ़नी शुरू की परन्तु जब मैंने धर्म्मऔर अहंकार के स्थानोंको एकहीसमय में छुवा तो उसने खड़ाहोकर कहना शुरूकिया कि हे परमेश्वर मैं तेरा अतिध- न्यबाद करताहूं कि तूने मुझे और मनुष्यों से इतनाबड़ाउप- जायाहै और धर्म्मशास्त्र औरोंसे मुझे अधिक कृपाकियाहै यह दोनोंइकट्ठे लक्षणोंका प्राकट्य हुआ अर्थात् पहले धर्म्मस्थल कोछुआथा तो उससमय धर्म्मके चिह्नअच्छीतरह प्रतीतहुयेथे परन्तु अभी उसजगहका काम पूरा न हुआथा कि अहंकार के स्थानको छुवागया तो वह लक्षण उपजा जो ऊपर वर्णनकिया गया यहबातभी सदाहुई कि जो मेरीइच्छा किसीऔर स्थानके छूनेकीथी और भूलसे और स्थानछुवागया या हाथफिसलकर और स्थानपर लगगया तो वह प्रभाव नहीं होता था जिसके उपजानेकी मेरीइच्छा थी बरन उसस्थान के अनुसार प्रभाव होताथा जो वास्तवमें छुवाजाताथा क्षुधाकेआशयमें मुझेथोड़ी सी जगह में तीन अलग२ स्थान मालूमहुये एकजगह भोजन का भूखकाथा दूसरेमें पानीपीनेकी इच्छा और तीसरे आशय में सूंघनेकी इच्छा मालूमहोतीथी यह दोनोंस्थान इतनीजगह मेंथे जितनी जगह में एकअठन्नी आजावे और बहुत मनुष्योंको जो सामुद्रिक बिद्यामें बोधरखते थे इन आशयोंके भागमालूम भीनथे सो मालूमहुआ कि धारकतो उनस्थानोंका कुछभीज्ञान नहींरखताथा तो यहजितने लक्षणहोतेथे केवलउन आशयोंके स्पर्शसे प्रतीतहोतेथे और एकबात औरभीथी कि चाहे मैंधारक को कुछहीकहूं मेरेकहनेका कुछप्रभाव नहींहोता था केवलयह बातहोती थी कि जिसस्थान को मैं छूता था उसके अनुसार

प्रभाव होता था इससे स्पष्टहै कि बिचार संयोग या शिक्षाका प्रभाव धारक पर नहीं होता था बरन केवल मुख्य स्थानों के स्पर्शसे अनुकूलप्रभाव उपजताथा सिवाय इसमनुष्यके मैंनेतीन मनुष्यों पर औरभी ऐसीपरीक्षाकीं कि वह सामुद्रिकविद्या को कुछभी न जानतेथे और उनमें से एक लड़की दश बारह वर्षकी थी और छोटी जातिकीथी बरन बहुतही बुद्धिहीन थी जब इन धारकों पर क्रियाकीगई तो कईलक्षण प्रतीत होतेथे और कई नहीं होते थे इन सब परीक्षाओं से मुझे अच्छीतरह निश्चय होगया कि बिचारसंयोग या शिक्षाका कुछभीलगाव नथा अबमैं एक और दृष्टान्त वर्णनकरताहूं जिसकी परीक्षामुझेअभीहुईहै॥

सत्ताईसवां दृष्टान्त—एकमनुष्यपर चारवर्षहुये क्रियाकी-गईथी परन्तु चारवर्ष से कभी फिर उसपर अमल नहीं किया मैंने उसे एकमिनट भरमें सुलादिया इसमनुष्य पर सर्वलक्षण ऐसे जल्दी२ बिदितहोतेथे कि इधर किसीस्थानको स्पर्शकिया नहीं उधरलक्षण प्रकटहुआनहीं तथाच जब उदारताकाप्रभाव होरहाथा तो मैंने लोभकाआशय छुवा तो उसनेतुरन्त रावस्त्र पकड़लिया और कहा कि जोकुछ मैंनेदियाहै लौटादो फिर जो लड़ाई के स्थानको छुवा तो अभी उसजगह से हाथ उठायाभी न था कि उसने एकमुक्का मुझेमारा जब उदारता और लोभके स्थानोंको दोनों एकबेरछुवा तो उसने अपनीजेबमेंसे एकरुपया निकाला परन्तु जबमैंने रुपया लेना चाहा तो उसने अपना हाथ खींचलिया और तुमसे अधिक मुझे आप आवश्यकता है निदानजो कोईमुख्यप्रभावहोतारहाहो और मेराहाथअकस्मात् किसी और स्थान पर लगजाता था या केवल मेरा कपड़ाही उड़कर किसी और स्थान पर लगजाता था तो पहला प्रभाव बन्दहोकर दूसरा तुरन्त प्रकट होता था जब धर्म्मका प्रभाव

होरहाथा तो जो उससमय गर्बस्थलको छुवाजाता तो वहतुरन्त खड़ाहोजाताथा यदि युद्धकास्थान छुवा जो कोईउसके निकट था उसको मुक्का मारबैठता था निदान मेरे छूनेसे उसपरऐसाही प्रभाव होजाताथा कि जैसे किसी सितारके परदोंको अलगर छूनेसे उतारपर ज़खमा लगानेसे तुरन्तबिपरीतशब्द उपजता है मेरीशिक्षाका कुछभी प्रभाव उसपर नहींथा और धारकउस समय आकर्षणस्वाप में अचेत सोताथा इन लक्षणोंके उपजने कासिवायइसके और कोईहेतु मालूमनहींहोता कि शीषकेमुख्य स्थानों के छूने से मुख्य लक्षण उपजते हैं परन्तु कई बिचित्र लक्षण उपजते हैं जैसे जबमैंहँसीका स्थान छूताथा तो शिरके उसस्थान के स्पर्शसे वहहँसने लगताथा और जोमैं उसकेओष्ठों के शिरोंको छूताथा तबभी वह बहुत हँसताथा जो उससमय मैं ठोड़ीके बीचमें छूलेताथा तो हँसना तुरन्त बन्दहोजाताथा और उसकेमुखसे बहुतही रूखापन पायाजाताथा एक साहबने मुझे कहा कि जो तुम इसकी टांगको एक मुख्यस्थानकोछूलो तोयह मनुष्य नाचनेलगेगा परन्तु मैं उस स्थान को न छू सका जो छूना चाहिये था और स्थान छुवागया परिणाम यहहुआ कि इसने अति क्रोधितहोकर एकलात लगाई परन्तु मेरेभाग्य से वहमुझे न लगी एकमेज़में लगी जबमैंने आधे पलतक उसकी बामउरजपर अपनी उँगलीरक्खी तो वहबैठगया और उसकी ऐसी दशा होगई कि मानो उसको मूर्छाआगई परन्तु इसबात को देखकर मैंने उसके शिरके अहंकार और दृढ़ताकेस्थानोंको छुवा तो उठबैठा और साम्हनेहोगया मुझे अच्छीतरहनिश्चय है कि जो उसके मनपर मैं थोड़ेपलतक हाथरखता तो उसको मूर्च्छाआजाती बरन मैं निश्चय करके कहसकाहूं कि जो कुछ अधिकसमयतक उसकेमनपरहाथरक्खाजाता तो वहमरजाता

यह जो लक्षण कि शरीरके किसी२स्थानके स्पर्शसे उपजते हैं इसलिये होतेहैं कि शरीर भेजेमें रगोंकेद्वारा संयोग है ॥

अट्ठाईसवां दृष्टान्त—एकलड़का हकलाबोलता था मैंनेउसको दो मिनट में सुलादिया और जब उसके शीषके अन्य २ स्थानोंको छुवा तो सामुद्रिक विद्या के अनुकूल लक्षण उपजे उसका हकलापन उससमय कमहोगया इस लड़के में विशेष यहबात मालूमहुई कि जबमैंने उसकी कमर की तीसरी और चौथी अस्थिको छुवा तो वह बड़ा उन्मत्त होगया और उसको ऐसा नशा मालूमहुआ कि खड़ा न रहसका ॥

यह दृष्टान्त मैंने जितने वर्णन किये मेरे विचार में बहुतहैं इनसे मालूमहोताहै कि कुछसत्ता ऐसी अवश्यहै जो कारक के शरीर से निकलकर धारक के शरीर पर प्रभाव करतीहै कई धारक ऐसेहोतेहैं कि उनके शरीरको छूनेकी आवश्यकता नहीं होती केवल दूरसे उँगली की सैनसे सर्वलक्षण उपजते हैं पर जो शरीरके स्पर्शकी आवश्यकताभीहो तबभी यहबात सूचित है कि कुछ न कुछ ऐसीसत्ता कारक के शरीर में से निकलकर ऐसाप्रभाव करतीहै कि ऐसे२ लक्षण जैसे वर्णन कियेगये थोड़े समय में प्रकटहोते हैं तथाच जो ऊपर वर्णन किया गया कि एकधारक के तनपर हाथरखने से उसको मूर्च्छा प्राप्तहुई क्या इससे यहबात सूचितनहीं होती कि जो कोई यह कहे कि कई धारकोंपर क्यों इसप्रकार का प्रभाव होताहै और कई धारकों पर क्यों नहींहोता तो मैं यह उत्तरदेता हूं कि मैं कोई बात बनातानहींहूं जैसी मुझको परीक्षाहुईहै वैसाही वर्णनकरदिया है परन्तु प्रभाव न होनेका यह कारण मालूम होता है कि यह लक्षण एकमुख्य आकर्षण दशा की अवस्था में उपजते हैं और जिनपर यह लक्षण प्रकट नहींहोते उनको वह आकर्षण की

मुख्यदशा उससमय प्राप्तनहींहोतीहै हेतु ओंसे यहबात मालूम होती है कि यहदशा ऐसी गहरीनहींहोती जैसी विचार संयोग और गुप्त दर्शन के उपजने के लिये है परन्तु अभी तक हमको अधिकार प्राप्तनहीं है कि यह मुख्यदशा जब हमचाहें उपजालें कई धारकोंपर तो ऐसीदशा सुगमतासे उपजती है कि जिसमें गुप्तदर्शन और विचार संयोग प्रकटहोवे और कइयोंपर केवल ऐसीदशा प्रकटहोतीहै कि उसमेंशिरकेस्थानों या शरीरके और स्थानों के छूनेसे ऐसे लक्षण प्रतीत होतेहैं जो सामुद्रिक विद्या से सम्बन्ध रखते हैं ॥

अब मैं गुप्तदर्शनका वृत्तान्त जो आकर्षणक्रिया के विचार संयोग से होते हैं वर्णन करताहूं ॥

गुप्तदर्शनका प्रभाव कईतरहपर प्रकटहोता है एक यह कि धारक कारक के विचारों को मालूम करलेता है दूसरे यह कि जो लोग धारकके साथ संयोग कियेजावें उनके ठीक और बे ठीककाहाल बतादेताहै और तीसरे गुप्तदर्शन जो विचारसंयोग के द्वारा होती है जिन धारकोंपर मैंने क्रिया कीहै उनको यह शक्ति अभीतक प्राप्त नहीं हुई है परन्तु मैंने इसलक्षणको अन्य कारकोंको उपजाते देखाहै यहलक्षण तो अकेला प्रकटहोता है या गुप्तदर्शनकेसाथ इकट्ठउपजताहै (क) को जिसका मैंने पहले भागमें वर्णनकियाहै यह दोनोंशक्तियां अच्छीतरहप्राप्त ॱॱ और विशेषकरके उसको विचारसंयोग के द्वारा गुप्तदर्शन की शक्ति अच्छीतरह प्राप्त है जो लोग उसकेसाथ सम्बन्धकरते हैं उनके मनकाहाल वर्णनकरदेताहै चाहे वे आदमी वहांहों या उनकी कोईचीज़ जैसे हस्ताक्षर या केश उसके हाथमें रक्खेजावें इस जगह उसके कई दृष्टान्त लिखताहूं ॥

उन्तीसवां दृष्टान्त—अभी मैंने कारक को देखाभी नहींथा

कि मैंने एक स्त्रीका लेख उसके पास भेजा और केवल यहकह भेजा कि जो कुछ (क) कहे मुझे उससे खबर दीजियेगा मैंने यहभी नहीं लिखा था कि यह किसी स्त्रीका लेख है परन्तु वह लेख ऐसा प्रबल था कि कारक को भी यह बिचार हुआथा कि किसी पुरुष काहै जब (क) सोगया और वह लेख उसके हाथ में आया तो उसने थोड़ीदेर पीछे कहाकि मुझे एकस्त्री दिखाई देतीहै उसका डील कुछ छोटाहै और रंग कुछ सांवला है मुख पीलाहै वहस्त्री बीमार मालूम होती है फिर (क)उसस्त्रीका घर और वह कमरा जिसमें वह बैठीथी बताने लगा और जो उस घरमें सामग्री थी वहठीक बतादी उसने कहाकि उक्त स्त्री एक दीवार के पास मेज़के निकट बैठीहै और एकपत्र लिखरही है और उस मेज़पर बहुत सुन्दर शीशेकी चीजें रक्खीहैं कि ऐसी मैंने कभी नहीं देखी हैं फिर उसने उसस्त्री के रोगका विस्तार पूर्वक वर्णन किया और कई बातें ऐसी बताई कि वह केवल उस स्त्रीको ही मालूम थीं और जो चिकित्सा उस समयतक उसस्त्री की हुई थी सब उसने बताई और कहा कि यह स्त्री समुद्र के पार भी गई थी और किसी जगह जाकर बीमारी दूरहोने के लिये प्रातको रोज पानी पिया करती थी यह भी कहा कि जो पानी वह पिया करती थी उसका स्वाद कुछ विचित्र था परन्तु उसने उस स्त्रीको लाभ किया था वास्तव में यह स्त्री जर-मनी देशमें गई थी और वहां के जलने उसको गुण किया था और वह जल भी प्रभात को पिया करती थी और अधिक विस्तार करनेकी कुछ आवश्यकता नहीं यह बात कहनी बहुत है कि उस समय तक कारक उसस्त्री को नहीं जानता था और जो २ बातें (क)ने वर्णन कीं कारकको पहिले उसकी कुछ ख़बर न थी बरन कारक यह भी नहीं जानताथा कि वह लेख किसी

स्त्रीका था यहां तक कि जब (क) स्त्रीका हाल कहने लगा तो कारकको निश्चय हुआ कि धारकभूल करताहै जबतक कि (क) ने हुज्जतको पहलेख अवश्य स्त्रीकाहै मैंने उसकारककी ओरसे अपनी चिट्ठीका उत्तर ऊपर लिखनेके वर्णनसमेत डाकके लौटने परथा या और जब यह उत्तर मुझे मिला तो मुझे निश्चय हुआ कि (क) ने अवश्य उसस्त्री को परोक्षदर्शित्व द्वारा देखा था कई महीना पीछे मैं उस स्त्रीको लेकर (क) के देखनेको गया (क)ने भी उसका नाम नहीं सुनाथा और जबमैं और वहस्त्रीगये तोवह दोनों बिल्कुल बेगानेथे जब (क) सोगया तो कारकने उसे कहा कि उस स्त्रीका हाथ अपने हाथमें पकड़लो जबउसने हाथपकड़ लिया तो (क) नेकहाकि तुमवहीस्त्री हो जिसको मैं देखने गया था कारकने कहा कौनसी स्त्री (क) ने कहा कि क्या तुम्हें याद नहीं वही स्त्री जो एक मेज के पास बैठी थी और उस मेज़ पर सुन्दर शीशेकी चीजें रक्खी हुई थीं अब (क)ने कहा कि यहस्त्री फिर समुद्रपार सुबहको पानी पीने के लिये गईथी और उसकी बीमारी में आरामहै परन्तु बीचमेंदिनोंमें बहुतबीमार होगईथी और डाक्टर साहब ने कई बेर कोई ऐसी चीज उसके कण्ठ में डाली थी जिससे उसको अति कष्ट होताथा मुख्य यह बात थी कि डाक्टरसाहबने कास्टिकउसकेगलेमें डालाथाजोलक्षणरोग के शेषथे उन सबको (क) ने विस्तार से वर्णन किया और जो बातें पहली बेर बताईथीं वह बताने लगा कारक उनमेंसे बहुत बातेंभूलगयाथा परन्तुउसने उससमय निस्मरणरहनेके वास्ते लिखलिया था तो जब उसको देखा तो मालूम हुआ कि (क) का वर्णन ठीक है जब (क) पहली बात कोई भूलजाता था तो वह कहताथा कि ठहरो मैं अपनी पुस्तक में देखलूं और उसने अपने दहनेहाथ के कोहनी से नीचे पुस्तक बनारक्खी थी जब

वह सोयाहोताथा अपने हाथपर कुछ कल्पित चिह्न स्मरण रहने के लिये करलिया करताथा इस पुस्तककी स॰ायतासे उ-सने उडनबरा शहरकाहाल जोउसनेकभी पहिलेक्रियान्के समय देखाथा वर्णनकिया गली कूचे घर बाग़ सब बताये जब वह यह सैर देखताथा तो उसे पहिले एकबात यादआगई जोउसने पहिले अपने कारकसे नहींकहीथी और उसके वाक्यानुसार इसलिये नहींकहीथी कि उसको कुछ भय होगया था कारक ने अचंभा करकेपूछा कि वहक्या बातथी उसनेकहा किजब मैं अमुक घरकी ओर (आकर्षणकी क्रिया में)जाता था तोकिसी कारण मैं एक और घरमें चलागयाथा उस मकानमें मैंने एक स्त्री देखीथी वह एकनये डौलकेवस्त्र पहने हुयेथी और वस्त्रभी अति उत्तमथे जब मैंने उस स्त्रीको देखा तो मेरे जीमेंऐसा बि-चार हुआ कि उसस्त्रीको लोगोंके शिरकाटनेका व्यसनहै और मुझे यह बिचार होगया कि ऐसा न हो कहीं मेराभी शिरकाट डाले इसलिये मैं बहुत जल्दी उसमकान से निकलकर जहां जानाथा वहांचलागया मैं इसबातका वर्णन इसलिये करताहूं कि मेरीसमझमें यहबात स्वप्न नहींथी—हमजानतेहैं कि(क)को बिचार संयोग के कारण कोई पिच्छल वृत्तान्त बर्तमान समा-चार की तरह दिखाई दिया था मुझको इसबातके मालूमकरने का मनोरथ हुआ तो मैंने धारककी अनुमतिली कि जोआपकहैं तो (क) से कुछ प्रश्न करूं और (क) ने कहा कि जो कारकमुझे उस मकानमें पहुंचावे तो जो आपपूछेंगे मैं बताऊंगा तथाच कारकने कुछ युक्ति से (क)को सैरकरनेकी दशा में पहुंचाया(क) इसतरहसे मनहीमनमें बहुतदूरतक च॰लागया पर इतनी बात अवश्य ॰ोतीहै कि जो उस॰ी उँगलियों के शिरोंसे मुं॰ लगा-कर कुछबात कहीजावे तो वह सुनताहै बरन कोईशब्द नहीं

सुनता जब वह उसमकान में पहुंचगया तो उसने बर्णन किया कि मैंएक कमरेमेंहूं कि उसकी दीवारें पत्थरकीहैं और उस कमरे की दीवारोंपर कुछ परदेलटकेहैं और उन परदों पर पशुओं की मूरतें खिची हुइ हैं और वह स्त्री एक पलँगपर नई डौलकी उत्तमोत्तम पोशाक पहनेहुयेबैठीहै उसकादामन उसके गलेपर पड़ाहुआ है और एक टोपी ऐसीपहने हुये है कि माथे के बीचतक एकनोक उसकी झुकीहुईहै और कुछमुड़कर उसकी दोनों कर्ण लालोंपर पड़ीहुईहै यहस्त्री धनवती है और एकबच्चे को लियेहुये रोरही है उसके और उसके पतिमें सम्मति नहींहै उनकी धर्मकी रीतोंमें अन्तर है मेरी समझ में यह बात है कि यह स्त्री यहां क़ैदहै जब (क) से और हाल पूछागया तो उसने कहा कि मैंदेखताहूं किउस बच्चेको एक टोकड़ में रखकर एक खिड़कीसे लटकाते हैं और वही स्त्री या प्रायः कोई अन्य स्त्री उसी टोकड़ेमें लटकतीहै जब वह नीचे पहुंचगई तो वहांसे एक गाड़ीमें सवार होकर चलीगई अब मैं देखताहूं कि वह औरत एक और मकानमें क़ैदरक्खी गईहै उस मकान के गिर्द बहुत वृक्षहैं परन्तु मैं उन वृक्षोंसे आगे कुछनहीं देखसक्ताहूं एकबेर और उसस्त्रीको (क) ने एक घोड़ेपर सवारदेखा और देखा कि एकदरियाकोवहलांघगई औरफिरअपनेको उसने कुछलोगोंको जो दरियाके पारथे हवाले करदिया जब उससे मैंने पूछा कि मेरी*ने अपनेको क्योंहवाले करदिया तो (क) ने कहा कि तुम नहीं समझते कि उसने उनलोगों को अपना तरफ़दार समझा था परन्तु वास्तवमें वह उसके शत्रुथे मुझको कुछ२ संदेहहुआ कि प्रायः (क) ने मेरी नामक इस्काटलैंड की रानीको देखा है मैंने उससे और भी बातें पूछनी चाहीं (क) ने कहा कि

---

*मेरी नाम स्काटलैंडकी रानीथी जो इंगलिस्तान की रानीकी आज्ञासे बधकी गई॥

जिनलोगों को उस स्त्रीने अपनेको हवाले कर दियाथा उन्होंने उसको क़ैद करलिया जब मैंने (क) से पूछा कि यह स्त्री मरी किसतरह थी तोउसने कहा कि अबमैं थकगयाहूं इससमयनहीं बतासक्ताहूं परन्तु कल प्रभातको बताऊंगा दूसरेदिन जैसेही अवस्था (क) पर हुई और मैंने पूछा तो उसने अपनी गर्दन पर हाथफेरकर कहा कि इसतरह मरीहै और कुछमुसकराकर बोला कि वहजो और लोगोंके शिर काटने चाहतीथी तोलोगों ने उसकाही शिर काटलिया कि देखें कि उसको शिर कटाना कैसामालूम हंता है जब उसने पहिले उस स्त्रीको देखाथा तो (क) ने हम से कहदियाथा कि वह ढकीहुई अर्थात् मरीहुई है- मैं प्रथमभागमें लिखचुकाहूं कि (क) मरेहुये आदमियों को ढकाहुआ बताया करता है (क) ने कहा कि अब वहबड़ाकमरा ऐसा नहीं है जैसा मैंने उसे वर्णनकियाहै बरन दीवारें बीचमें बनगईहैं और अबएकके कईकमरे होगयेहैं और अब उसकमरे की सूरत बिल्कुल बदलगईहै मैं उसकाहाल उससमयका बर्णन करता हूं जैसा वहपहिलेथा ॥

अब आप ध्यान कीजिये कि जो यहबातें स्वप्नहीहों तबभी विचित्र बातहै (क) के डौल और प्रश्नोंके उत्तर से अच्छीतरह प्रकट था कि जो कुछ वह वर्णन करताथा आंखसे देखकर कहताथा और जैसा मैं सुनकर आश्चर्य करता था वैसाही वह आप देखकर अचंभा मानताथा मेरे बिचारमें यहबात है कि किसीतरह उसको गुप्त वृत्तान्तोंसे संयोग होगया और वहमुरदेलोग जो उसने देखे और कई मनुष्यों का हाल जो उसने मिलादिया मेरी समझमें यहबात है कि थोड़ासाहाल जोउसने वर्णनकिया वह मेरीसे सम्बन्ध रखताथा और और कुछ लोगों काहालथा ठीक समयका हालउसकोनहींमालूम होताथा वरन

कभी कोईहाल किसीसमयका और कोई किसी समयकावर्णन करता था परन्तु इतनी बात अवश्यथी कि उसे गत वृत्तान्त से संयोग था—अब यह प्रश्न उत्तर चाहताहै कि उसको संयोग क्योंकर होगया मेरी समझमें यहबात आती है कि उसकाकारक एकबेर उडनबराकी ओर आयाथा और उडनबरा में जो गढ़है उसने उसको देखाथा और कुछ सचझूठ कहावतें मेरीके विषय की सुनीथीं वह कारकके विचारके साथ संयोगकेकारण जब (क) आकर्षण की दशामें मेरे मकानकी ओर जाता था वह उस मकानमें चलागया जहां छठा जेम्स * उपजता था और वहां पहुंचकर उसको कुछ पिछले वृत्तान्तोंके चिह्नमिल गयेथे यहबात कहनी उचित मालूम होतीहै कि जिस समयमें (क) पर क्रिया होतीथी उससमय में उसको लिखना पढ़ना नहीं आताथा और जब उसपर क्रियाकी दशानहीं होतीथी तो उसकोइतिहास विद्याकं कुछबोध नहींथा और संकल्पकीजिये कि वह इतिहासको जानताभी था तो बहुत ब्योरे उसने ऐसे वर्णनकिये जो बहुधा इतिहासमें लिखेनहींहोते जैसे जबउसने उस स्त्रीको ऐसे मकानमें क़ैददेखा जिसकेगिर्द बहुत दरख्त थे तो मैंने उससे कईबेर पूछा पर उसने उसमकानके निकटकहीं पानी नहींदेखा अब ध्यान करनाचाहिये कि इतिहास में जिस क़िलेमें क़ैदहोनेका और जहांसे उसके भागनेका वर्णनहै उसके पास एकबड़े तलावयान झील कावर्णन लिखाहै यदि(क)कोई वृत्तान्त इतिहासमेंसे यादकरके कहता तोअवश्य जलकावर्णन करता सो मैं यह परिणाम निकालसक्ता हूं कि चाहे (क) ने स्वप्नकी तरह यहसब हाल देखाहो चाहे मानस दृष्टिसे देखा हो इसमें सन्देह नहीं है कि वहआप यह नहींजानता था कि मैं

मेरीकाहाल वर्णन करताहूं बरन उसको मेरीका ध्यानभी नहीं था उसने मेरीकाहाल कहींसुनकर नहीं बताया बरन कारकके साथ संयोग करनेसे उसको कुछ २ टूटाफूटा पिछलाहाल मालूम होगया था मैं फिर कहता हूं कि जितनी मुझको परीक्षा हुई उससे मुझे अच्छीतरह निश्चयहै कि जो वर्णन (क) करता था सच था और मुझे अच्छीतरह भरोसाहै कि (क) स्काटलैंड के देश या ऐतिहासिक वृत्तान्त को नहींजानता था कदाचित् मुझे मेरी का कोई लेख या कोई बाल या भूषण हाथ आजावे तो मैं निस्सन्देह उसके द्वारा (क) से बातें पूछूंगा और वह साफ़ २ हाल कहसकेगा ॥

मैंने (क) को एक और बेर एकपत्र दिया डाक्टर हेडिक साहब जो कारक थे उसपत्र को समझतेथे कि किसी स्त्री का लिखाहुआहै (क) ने उसकीओर देखानहीं बरन अपनेहाथमें लेकर और उसको टटोलकर उसको अपने शिरपर रखलिया उस समय उसने एक स्त्रीको अपने सामने देखा परन्तु कहा कि यह पत्र इसका लिखा हुआ नहीं है-- परंतु वास्तव में उस स्त्रीके सामने आने से (क) को लिखने वालेके पहिचाननेमें विघ्नपड़ताथा (क) ने डाक्टर हेडकसाहब से कहाकि इस स्त्री को दूरकर दीजिये तथाच उन्होंने पत्रपर फूंककर और उस पर हाथोंसे चेष्टा करके उस स्त्रीको अलग करदिया उससमय उसने फिर उस पत्रको अपने शिरपर रखलिया और कहा कि यह पत्र एक छोटेसे लड़के ने लिखा हैउस लड़केका हाल वर्णन करने लगा कि उसकास्वभाव और डौलबुड्ढे आदमियों कासाहै और उसको पढ़ने लिखने की अतिइच्छा है और (क) उसके वस्त्रों को देखकर बहुत अचंभा करनेलगा और उसने अति विस्तारसे उसके वस्त्रोंका हालवर्णन किया और उसके

वस्त्र ऐसे थे जो स्काटलैंड में पहाड़ के आदमी पहना करते थे वह लड़का वास्तवमें मेरा पुत्रथा और न डाक्टर हेडक साहब को और न (क) को यहबात मालूमथी कि मेरा कोई पुत्र है और वह पहाड़ी पोशाक पहना करता है फिर (क) ने कहा कि वह स्त्री जो मैंने देखीथी इस लड़के से अति प्रीति रखती है वह स्त्री उसकी दाईथी इस स्त्री के पत्र में मेरे पुत्र का पत्र लिपटा हुआथा और उस पत्रमें से निकाल कर वह पत्र मैंने (क) को दियाथा डाक्टर हेडिक साहबने कहा कि इसी कारण (क) ने उसस्त्री को देखाथा जब मैंने (क) से कहाकि तुम उस लड़केकी माताको भी देखसक्तेहो तो उसने कहा कि पहिले मैंने उस स्त्री को देखा तो मैंने समझा था कि उस लड़के की माता है परन्तु थोड़ी देर पीछे मुझको मालूम होगया कि वह स्त्री उसकी माता नहींहै फिर (क) ने कहा कि मैं उस लड़केसे पूछकर बताऊंगा कि उसकी माता कहांहै थोड़ी देर पीछे उसने कहा कि थोड़ा समयहुआ कि उस लड़केकी माता समुद्र के पारगई थी परन्तु अबतो मैं उसको नहीं देख सक्ताहूं कुछ चिह्न उसके देखताहूं यदि डाक्टर हेडिक साहब मुझे बोलटीन*में लेजायें तोमैं उसको देखसकूंगा थोड़ीसी युक्तिसे डाक्टर साहब उसको बोलटीनमें लेआये उस समय बोलटीन मेंही क्रिया होरही थी और लड़के की माता वहां वर्त्तमान थी जब उसने (क) को छुआतो उसने कहा कि तुम लड़केकीमाता हो (क) ने कहा कि मैं उस स्त्री को समुद्रपर ढूंढ़ रहाथा और वहांके लोगोंसे उसका पता पूछता था परन्तु वह ऐसी भाषा बोलतीथी जो मेरी समझ में नहीं आती थी परन्तु मुझे ऐसा ध्यान हुआकि जो बोलटीनको मैं लौट जाऊंगातो उसको ढूंढ़

*बोलटीन एक शहरका नामहै जहां इसप्रमय(क) पर क्रिया होरही थी॥

लूंगा--मैंने इसवृत्तान्तको इसलिये विस्तारसेलिखाहै किइससे सूचित होताहै कि जो कुछ (क) कहताथा सच कहता था और उसपर आकर्षण की दशा उपज सकी थी कि उसको विचार संयोगद्वारा पारोक्ष दर्शन की विचित्र शक्ति प्राप्त होजाती थी और जो कोई चीज़ऐसी होती थी जिससे संयोग होता था तो दूर की चीज़ों का हाल वह ऐसे विस्तार और सत्यतासे वर्णन करसक्ताथा जैसासमय कि वर्त्तमान वस्तुओंका हाल कहाजावे मैंनेयह बातभी देखी कि डाक्टर हेडक साहब अति बुद्धि और रक्षासे क्रियाकरते थे॥

जबमैं उडनबरा को लौट आया तो मैंने कई बेर डाक्टर हेडिक साहबके पास लेख और केश और और अचल वस्तु भेजकर(क)की परीक्षाकी और (क) सदासबहाल ठीक२बताता था और दूसरे ऐसाहुआ कि मैंने उन लोगोंके लेख और बाल भेजे जिनको मैं नहीं जानता था सो जो उनका हाल (क) ने सुनाया है उसको मैं अबतक मिलान नहीं कर सक्ताहूं परन्तु संभवहै कि जब तक यह पुस्तक पूर्णहो तबमैं मिला सकूं जो मिलासकूंगा तो उनका संक्षिप्तलिखदूंगा और जो मुझको(क) की परोक्षदर्शित्व शक्तिकी परीक्षा हुईहै उससे मुझे निश्चय है कि जो हाल उसने उनलोगोंका वर्णनकियाहैनिस्सन्देह सत्य होगा अबमैं एक और दृष्टांत लिखताहूं जिसमें (क)को परोक्ष दर्शित्वशक्ति प्राप्तिका पूराविश्वास होताहै॥

बीसवां दृष्टान्त— एक मनुष्यने जो बड़े अमीरथे अपने बाग़ में चलते२ एक जगह पत्थरोंमें एक पत्थरकी भालपाई प्राचीन समय में इंगलिस्तान और स्काट लैण्डमें ऐसेतीरों का बहुत प्रचार था मैंने उस भालको एक मोटे काग़ज़की कई तहों में बंद करके उस पर लाख लगाकर एक लिफाफे में लाख लगाकर

बंदकरदियाऔरउसलिफाफेकोएकऔर लिफाफेमें लाख लगा-
कर बंदकरदिया और डाक्टरहेडिकसाहबकेपास भेजदियाऔर
उनसे इच्छाकी कि आप (क) से उसका हाल मालूम करें जब
उसके हाथ में लिफाफा दिया गया तो वह लिफाफा दूसरे
लिफाफेमें बंदथा और लिफाफे के अंदर इस तरह की तहकी
हुई थी कि कई मनुष्यों ने उसको टटोला तो टटोलनेसे पत्थर
की भाल नहीं मालूम होतीथी (क)ने पहिले उसे अपने हाथमें
लिया और फिर अपने शिरपर रखकर कहा कि यह काग़ज़
की चीज़ कई तहोंमें लिपटीहुईहै और फिरउसकास्वरूप वर्णन
किया यह भाल केवल एकइंच लंबीथी और एकसिरा उसका
तेज़ था पहिले२ (क) ने कहा कि किसी जानवरका दांत है और
उसका रंग कुछ सफ़ेद और कुछ पिलाई लियेहै परन्तु और
अधिकदेखकर उसनेकहा कि नहीं यहचीज़ दांतनहींहै क्योंकि
यह पत्थर की बनीहुई है और लिफाफे को अपने मुखके पास
लेजाकर मानों ध्यानमें उसको दांतसे दबाया और कहा कि
यह अवश्य पत्थर है जब लिफाफा मुझे उलटा मिला तो जैसा
मैंने भेजा था वैसाही मिला इससे मालूम होता है कि उसने
परोक्ष दर्शित्व द्वारा उसे देखाथा (क) यह बात नहीं बतासका
कि यह चीज़ किसकाम आतीहै परन्तु संयोग के द्वारा उसने
कहा कि एक मनुष्यने उसे बाग़में पत्थरों के अन्दर पाया था
और अपनी जेबमें उसको रक्खाथा और वहमनुष्य अमीर है
और जब कई बेर उससे बराबर प्रश्न कियेगये तो जो पदवी
उस मनुष्यकी थी वह बताई-कारक ने (क) से कहा कि कुछ
और भी हाल बताओ तो उसने उस अमीर को उसके महल
में देखा और प्रतिष्ठाके लिये कारक से धीरे२ बातें करता था
और जैसा उस अमीरका स्वरूपथा सब बताया जब मैंने उस

पत्थरकी भालको डाक्टर हेडिक साहबके पास भेजा था उस समयसे और उस समयतक कि जब (क)नेउसका हालबताया कुछ भी इस बात की सैन नहीं कीथी कि वह क्या चीज़है और उसको किसने पाया था ॥

इकतीसवां दृष्टान्त--सरवाल्टरट्रयोलियनकेपास एकस्त्रीका पत्र लण्डनसेआयाथा उसमेंएकसुनहरी घड़ीके चुरायेजानेका वर्णन था उक्त साहबने उसपत्रको डाक्टरहेडिकसाहबके पास भेजदियाऔर कहभेजाकि आपपरीक्षाकरें कि (क) कुछचोरका पताबतासक्ताहै कि नहीं (क)नेउसस्त्रीकोदेखाजिसमकानमेंवह स्त्रीथी और उस मकानकी सर्व सामग्रीको देखा और बताया और कहा कि अमुक मेज़पर घड़ीका चिह्न मालूम होता है उसने बताया कि उसघड़ीकी तख़्ती सोनेकीथी और उसकेअक्षरभी स्वर्णकेथे और उसके साथ एकसुनहली ज़ंजीरथी फिर कहा कि यह घड़ी एक युवास्त्रीने चुराई है परन्तु उस स्त्रीका चोरीका स्वभाव नहींहै और उसको इसकर्म से भयहै परन्तु उसको इतना भरोसाहै कि जिसकी वह नोकरहै उसकोउसके ऊपर चोरीका संदेह न होगा और यह कहकर फिर (क) ने यह भी कहा कि मैं चोरका हस्ताक्षर बतासकूंगा फिर (क) उसचोरसे वार्त्ता करनेलगा और उसपर अतिक्रोधकिया सरवाल्टरट्रयोलियन साहबने उस स्त्रीको जिसकी घड़ी चोरीगई थी यह सब ख़बर भेजी और लिखभेजा कि अपने सबनोकरों से कुछ लिखवाकर भेजदो उसपत्रके उत्तरमें उसस्त्रीने लिखा कि (क) ने जिसचोरका पता बता दियाहै उसपर मुझे संदेह नहींहै दूसरे नोकर पर संदेहहै और उसस्त्रीने अपने कुछलिखवाकर उनका लेखभेजदिया(क) ने तुरंत उसनोकर का पत्रदेख कर कहदिया कि उसने घड़ीचुराई है और उसचोर से कहने

लगा कि अबतुम यह बहानाकरना चाहतेहो कि मैंने यह घड़ी रक्खीहुई पाईथी और यह कहकर तुम्हारीइच्छा उसके लौ॰टादेनेकी है परन्तु तुम अच्छीतरह जानतेहो कि तुमने वास्तव में घड़ीको चुरायाथा अभी ट्रयेलियन साहब यह ख़बरघड़ीके मालिकके पास भेजनहीं चुकेथे कि उनके पास एक पत्र इस विषयकाआया कि जिसको (क) ने चोर बतायाथा उसनेघड़ी यह कहकर लौटादीहै कि मुझको अमुक स्थानसे मिलीथी— सरवाल्टरट्रयेलियन साहबवालटीनसे जहां यहक्रिया हुईथी दूरीपरथे और सिवायइसके जो वहउसजगहहोते भीतो उनको न उसमकानका कुछहाल मालूमथा जहांसे घड़ी चुराईगईथी न उसको कुछभी इस बातका संदेह था कि घड़ी को किसने चुरायाथा उससे मालूम कि (क) कोयह हाल विचारसंयोग से मालूम नहीं हुआथा जो इस विषयमें पत्रों का आवागमन हुआहै मैंने वह सब देखाथा और मुझको अच्छीतरह निश्चय है कि (क) को यह हाल केवल परोक्षदर्शित्वसे मालूमहुआ कि इतना संयोग अवश्यथा कि जब घड़ीके मालिकका पत्र उसको मिला तो उसकेद्वारा उसको यह सर्ववृत्तान्त मालूमहुआ-- मैंने प्रथम भाग में इस प्रकारके कई वृत्तांत लिखे हैं कि जब कोई माल चुरायागया और मालमालिक के साथ उसको संयोग दिलायागया तो उसने चुरायेगये मालका पता बतादियाअब मैं ऐसे दृष्टान्त लिखूंगा जिससे ट्रयेलियनसाहबने इस बातकी परीक्षाकी कि (क) विचार मालूम करने विना भी ऐसे हाल मालूमकरसक्ता है या नहीं और उन दृष्टान्तों में यह भी वर्णन होगा कि जिस २ जगह (क) जोही जोमें यात्रा करके जाता है वहांकी घड़ियोंको देखकर समय बतादेताहै उनपरीक्षाओं से अच्छीतरह भरोसा होजाताहै ॥

वत्तीसवां दृष्टान्त--सरवाल्टर ट्र्योलियनसाहबने एकसमूह को जो भूगोल बिद्याके विषयमें खोज कररहाथा कहभेजाकि आपकई मनुष्योंके लेखभेजदीजिये तथाच उन्होंने तीनमनुष्यों केलेखभेजे इनतीनों में ट्र्योलियन किसीको भी नहीं जानतेथे श्रौर उससमय वह तीनों मनुष्य अन्य २ देशों मेंथे॥

पहले (क) ने एकको जल्दी देखलिया उसका स्वरूपवता-दिया श्रौर जिस शहरमेंथा उसकाचित्र श्रौर जिसदेश में वह शहरथा उसका हालभी बताया जब उससे पूंछागया कि उस शहरमें इस समय क्याबजाहै तो उसनेदेखा तो सही परबता न सका पीछे मालूम करनेपर प्रकटहुआ कि वह मनुष्य उस समय रूममेंथा श्रौर जैसा (क) ने उसशहरका चित्र बताया था विल्कुल ठीकथा जो कि (क) वहुधा दूरके शहरोंकासमय वहांकीघड़ीदेखकर बताताहै वो मालूमहोताहै कि (क) रूमकी घड़ियां देखकर अज्ञानता से आश्चर्यमें हुआ क्योंकि वहांकी घड़ियोंमें बारहघंटों के बदले चौबीस घंटोंका चिह्न होताहै॥

दूसरे--- द्वितीय पुरुषको भी (क) ने देखकर वताया कि कहांहै श्रौर उसजगहका समय भी वताया परन्तु आश्चर्यकी बात है कि उसमनुष्यको न देखसका--(क) ने सम्पूर्ण देशका हालबताया श्रौर जो कि अक्टूबरका महीना पूर्णहोने परथा उसने कहा कि फसल खड़ीहै उससमयके बतानेसे जो भूगोल के अनुसार गणित कियागया तो मालूम हुआ कि टस्कनीका देशथा श्रौर खोजनेके समय मालूमहुआ कि वह मनुष्य फ्लो-रंसके शहरमें जोटस्कनीमें है था परन्तु बहुधा यात्रा करतारह-ताथा टस्कनी में कई अन्न दोफसली होते हैं सो उस समय फसलखड़ी हुईथी॥

तीसरे—तृतीय मनुष्यको भी (क) ने देख लिया श्रौर

वर्णन किया कि एक बड़े शहरके बाज़ार में है और उस शहर का सम्पूर्ण वृत्तान्त बताया जो उस शहर का समय (क) ने बताया उससमय और उसीस्थानके समय में जहां (क) पर क्रियाहोरहीथी केवल ढाई या तीनमीलकाअंतरथा सोमालूम हुआ कि (क) ने लंडन शहरका वर्णन कियाथा खोजने पर मालूमहुआ कि जब इस तीसरेमनुष्यकालेख भेजागयाथा तो उससमय लेखके भेजनेवालोंको यहविचारथा कि वह मनुष्य कहींदूरहै परन्तु उससमयसेपहले कि जब (क) केपासउसका लेखपहुंचा तो वहअकस्मात् लंडनमें चलाआया इनपरीक्षाओं से सूचितहै कि (क)को यहहालविचारके मालूमकरनेसे विदित नहींहुआथा क्योंकि ट्रयोलियनसाहबको जोपूछनेवालेथे किसी का हालनहींमालूमथा और जो किसीको मालूमहोता तो वह बोलटिनमें जहां (क) था नहींथे वरन कईसौमीलकी दूरी पर उडनबरामेंथे डाक्टरहैडकसाहब को भी जो कारकथे इनतीनों मनुष्योंका हालकुछ मालूम नहींथा मैं इनपरीक्षाओंको किसी संयोग द्वारा परोक्षदर्शित्व नहीं समझताहूं क्योंकि इसमेंकिसी नकिसी प्रकारका संबन्ध जैसेकि लेखकेद्वाराउत्पन्न कियागया था परन्तु ऐसी बात मालूम होतीहै कि यह संयोग इतनीबात के लिये अवश्य है कि एक बेर (क) को कुछ वस्तु का चिह्न मालूम होजावे जिसको देखनाचाहते हैं और जब उसकाकुछ चिह्न मिलजाता है तो विना संयोग परोक्षदर्शित्व द्वारा वह और सबहाल पतादौड़ाकर मालूम करलेताहै तथाच जो हाल वर्णन करता है इस तरह बताता है कि कोई अपनी आंखों से देख रहाहो और जो परीक्षायें ट्रयोलियन साहब के द्वारा कीगईं उनमें वह परोक्षदर्शित्व का रूप कभी न था जिसको विचार मालूमकर लेनेके द्वारा कहतेहैं जब (क) ने मेरेलड़केका

पत्र देखाथा उससमय होसक्ताहै कि उसने मेराविचार मालूम करलियाहो परन्तु यह केवल संभवही संभवहै बास्तवमें ऐसा मालूमहोताहै कि उसको मेराविचार मालूम नहींहुआ क्योंकि जो कुछ मुझको विचारथा और उसमें और उसके वर्णनमें कुछ सम्बन्ध नहींथा और पत्रभी तो उसको डाक्टर हेडकसाहबने दिया था और डाक्टरसाहब को यह विचार था कि वह लेख किसी स्त्रीकाहै और उसके सिवाय (क) ऐसे ब्योरे वर्णनकरता था जिनका मुझे कुछ भी उस समय तक ध्यान न था पर जो मानलियाजावे कि (क) को विचार के मालूम करनेकी शक्तिहै तो उसशक्तिका वर्तमानहोना विनासंयोग परोक्षदर्शित्व शक्ति से कुछ कम आश्चर्य्य की बात नहींहै ॥

पहले भागमें मैं लिखचुकाहूं कि (क) ने लेखके द्वारा एक मनुष्य और उसके मित्रको कैलीफोरनियां में देखाथा जब यह लोग इंगलिस्तान से चले तो जिस २ मार्ग वहगये जो कुछ उनपर बीतरहा और जो कुछ वह करतेरहे सबकुछ(क)ने वर्णन कियाथा और वहहाल वर्णन किया कि उनके सम्बन्धियों को भी मालूम नहींथा जब वह मनुष्य इंगलिस्तान को लौटआये तो जो कुछ (क) ने कहाथा उसको उन्होंने माना यहबातध्यान करने के योग्यहै कि जिसदेशमें वेलोगथे वहांके घरोंकास्वरूप और लोगोंकी रीति सब ब्योरेवार वर्णनकी और (क) ने यहभी कहा कि यहलोग रेतखोदते हैं और इसरेतमें कुछ प्रकाशमान खंडहैं परन्तु उसने सुवर्णका नामनहींलिया और कहा कि इन लोगोंने रेतखोदने के लिये इतना सफर क्योंकिया जब कि वह अपनेही देशमें रेतखोदसक्ते हैं--(क) ने इनप्रकाशमान खंडोंका

कैलीफोरनियां नईदुनिया में एक देशहै कि वहां सोना खोदने को बहुत लोग जातेहैं क्योंकि वहां सोना बहुतमिलताहै ॥

उसको कैलीफोरनियांकास्वप्न आता तो जो कि उसकाहाल यह प्रसिद्धहै कि वहां सोना बहुत मिलताहै तो अवश्यकरके सुवर्ण का नामलेता तो मेरीसमझमें यहबात आतीहै कि जो कुछ वह देखताथा उसका हाल वर्णन करताथा परन्तु उसकी समझ में जोकुछ वह देखता था अच्छीतरह नहींआता था यह सबहाल जो (क) ने बताया कि सफरमें उनमनुष्योंपर क्या२दशायें हुईं और वह किस२ जगहगये और किस२स्थानमें क्या२हुआ तो इसमें संदेहनहीं कि यहवृत्तान्त परोक्षदर्शित्व द्वारा प्रकटहुआ था यहां शिक्षाका कुछप्रवेशनथा (क) ने यहहालभी बताया था कि इन दोनों मनुष्योंमेंसे एकको ज्वर आया था और ज्वरकी दशामें उसने स्वप्नमें देखाथा किउसकीस्त्री उसके देखनेकोआई है (क) ने यहभी बताया कि यह आदमी जहाज़मेंसे समुद्र में गिरपड़ाथा इसहालको कोईमनुष्यभी इङ्गलिस्तानमें नहीं जानताथा और जब वह दोनों आदमी लौट आये तो उन्होंने इस वृत्तांतको सचबताया (क) उस वृत्तान्तको इसतरहपर बताता था कि मानो वह उस मनुष्यसे पूछकर जोउत्तरवह देताथावह बताताथा मैं पहलेही कहचुकाहूं कि परोक्ष दर्शन दशामें (क) जिस मनुष्यको देखताहै उससे देरतक बातें करताहै ॥

तेंतीसवां दृष्टान्त—यह बात इङ्गलिस्तानमें प्रसिद्धहै कि(क) को*सरजान फ्रूङ्किनसाहब कालेखदेखकर उससे उनसाहबका हाल पूछागयाथा औरजोकुछ उसने उसका हाल बताया मैंने उसको अपनेकानोंसेनहींसुना और जोकिउसकावर्णन बहुतस्पष्ट नहीं था अर्थात् परस्पर नानाप्रकारकी बातें मिलीहुईथीं और वार्ताके क्रममें सम्बन्ध नहींथा परन्तु मुझे निश्चयहै किजोकुछ

---

*सरजानफ्रङ्किन साहब समुद्रमें जोउत्तरीयध्रुव के निकट देशहै उसकेहालके खोज में गयेथे वहां बहुतही सरदीहै और कई वर्षसे उसका कुछपता नहींमिला है ॥

कुछ मोलभी बताया और ऐसा मालूमहोता था कि उसदेशके लोगोंसे बातें करके उसको मोलका हाल मालूम हुआ था जो उसने कहाथा सब ठीक होगा परंतुप्रकटहै किजबतकसरजान फ्रूङ्किनसाहब लौट न आवें तबतक (क) के सच्चे होनेकाहाल मालूम नहीं होसक्ता मुझे यहभी मालूमहै किकई परोक्षदर्शकों ने भविष्य कथनकी तरहपर बर्णान कियाहै कि सरजन फ्रूङ्किन साहब अमुक ऋतुमें लौट आवेंगे मैं उन परोक्षदर्शकों को भी जानताहूं जोइस तरहका भविष्यवाक्य वास्तव में ऐसे परोक्ष दर्शकोंकाहै जोसच्चाथा तोमालूमहोताहै किउनलोगोंके मनोरथ के साथ जो उनके निकटथे बहुत संयोग होगया था औरमानों परोक्षदर्शकोंकेमनोंपरउनलोगोंके मनोरथोंका चमत्कारहोगया था(क)ने इन साहबके लिये कई भविष्य वाक्य नहींकहा केवल उनके लेखके द्वारा उनको दिखालिया है (क) को किसीने नहीं कहाथा किवहलेख किसका है और वह अबतकनहीं जानता है कि वहलेखओर सरजान फ्रूङ्किनसाहबकाहै(क)ने देखा कि जिस मनुष्यका लेखउसकेहाथमेंथा वह एकजहाज़है एकऔरभीजहाज़ उसकेसाथहै और दोनोंजहाज़ बरफ मेंजमगये हैं और उनजहाज़ोंकेचारोंओरबरफकी ऊंची २ दीवारेंखड़ीहैं (क) ने इनजहाज़ोंको पहलेही सरदीकेदिनों सन् १८५० ई० में देखाथा मैंने डाक्टरहेडक साहब के कईपत्र इस विषयमें फरवरी और मार्च सन् १८५० ई० पर देखेथे जोकि (क)ने और लोगोंके वर्णान दूरसे बतायेथे और वह ठीकमालूम हुयेथे इस लिये निश्चय है किसरजानफ्रूङ्किनसाहबका हालभी जोउसनेबताया वहभीठीक होगा और (क) ने जहाज़ के आदमियों के वस्त्र और उनके भोजनकाहालबताया और उसनेसरजान फ्रूङ्किन साहबकोभी देखा और कहाअभी उनको इसबरफमें से निकलनेकी आशाहै परन्तु

उनको बड़ाअचम्भाहै कि हमारी सहायताकेलिये कोई जहाज नहींआया—बहुधा (क) बताता था कि सरजान फ्रङ्किनसाहब लिखाकरते हैं और जब उससे समय पूछागया तो वह फ्रङ्किन साहब की घड़ी को देखकर बताता था सरदी के दिनों सन् १८५० ई० और उक्तबर्ष की बसन्तऋतु में भूगोलबिद्या के अनुसार सबकुछ बताताथा और वहांकेसयय और इङ्गलिस्तान केसमयमें सातघण्टोंका अन्तरथा जब उसपर क्रियाकीजातीथी और उससे समय पूछाजाता था तो वही सातघण्टे का अन्तर मालूम होताया बरन इससेअधिक यह कि जैसे बोल्टनमें जब शामके चार या पांचबजते थे और जहां फ्रङ्किनसाहब थे वहां वह बतातािथा कि नव या दश सुबह के बजे हैं तो वहकहताथा कि समय वहांकायहीहै परन्तु अभीवहां अन्धेराहै और चिरागों कीरोशनी होतीहै अब ध्यान करना चाहिये कि (क) बिल्कुल कुपढ़था और उसको भूगोलबिद्या के अनुसार लम्बाई चौड़ाई जो अन्य२ स्थानोंके समयों में होतीहै उस अन्तरका कुछहाल मालूमनहींथा जो और लोगफ्रङ्किनसाहब के साथगये थे उनके लेख (क) कोदिखाये गयेथे तो (क) ने उनकोदेखा और उनके स्वरूपभी वर्णनकिये जब उससे उनकाहाल पूछागया तोउसने कहाकि एकउनमेंसे ढकाहुआ या मराहुआहै एक और बेरउसने एकमनुष्यका यहहाल बतायाथा कि वह पाळे से माराहुआ है परन्तु अच्छा होगयाहै उसने यहभीकहा कि एकजहाज़में खाने पीनेकी चीज़ें बिल्कुल होचुकीहैं परन्तु दूसरे जहाज़ मेंहैं और (क)ने यह भी बताया कि लोग मछलियां और जानवर तेल निकालने और खाने के लिये मारतेहैं और एकमनुष्यका यह हाल बताया कि वह डाक्टरहै परन्तु डाक्टरों के से बस्त्र नहीं पहनेहै जैसे और लोगखालें पहनेहुयेहैं वहभी पहनेहुयेहैं और

यह आदमी बन्दूक अच्छीलगाता है और उसको जानवरों के मारने और उनमें मसाला भरकर रखछोड़ने का बहुत व्यसन है यहबात वास्तवमें ठीकहै औरभी बहुतसीबातें (क) ने बताईं कि उनके लिखने के लिये मेरीपुस्तक में जगह थोड़ी है परन्तु अवश्यहै कि डाक्टर हेडकसाहब सबहाल प्रसिद्ध करेंगे—एक दिन इतवारको(क) ने कहा कि जहां सरजान फ्रङ्किनसाहब हैं वह इससमय सुबहके दशबजेहैं और उक्तसाहब और साथियों समेत निमाज़पढ़ते हैं और सबके मुख आकाशकीओर हैं और सबकेमुखोंसे चिन्ता और शोकप्रकटहै और(क) इंजोलका यह स्थान कि जहां वह उससमयपढ़तेथे बताया एकबेर उसनेकहा कि सरजान फ्रङ्किन साहब पहले से बहुतही चिन्ता युक्त और मुरझाये हुये मालूम होते हैं और उनके साथी उनको भरोसा देतेहैं (क)ने यहभी कहा कि गरमी उपजानेकेलिये एक मुख्य प्रकार का तेल और मछलियों की छाल जलातेहैं और गरमी हीके लिये एक प्रकार का तेलमलते हैं (क) के वर्णनसे समय में एकही अन्तर मालूम होता था परन्तु फिर छः और सात घंटेके बीचमें समयबताया मालूमहोताहै कि जहाज़ उसजगह से पूर्वकीओरचलाथा फिर (क) समय एकसानहींबताया ऐसा मालूम होताथा कि उसको पहलेकी तरह उसजगहका समय साफ़२ दिखाई नहींदेताथा और वह बार२कहताथा कि सरजानफ्रङ्किनसाहब घरको मुड़े हैं जो हम साढ़ेछःघंटे के अन्तर पर ध्यानकरें तो मालूमहोताहै कि वह ७८ दरजेके अनुमान पहुँचगयेथे फिर उसनेकहा कि उक्तसाहबको सहायता मिली है और(क)सदाफिर तीनजहाज़ोंकोदेखतारहा परन्तु वहकहता है कि समयसे यहजहाज़ बरफमें जमकररहगयेहैं सन्१८५१ ई० में जो समयका अन्तर (क) केवर्णनसे मालूमहुआ उससे

जहाज़का स्थान भूगोलके दरजदरजे ऊंचेपर मालूमहै, ताहै(क)
यहबात नहींजानताहै कि जो जहाज़ फ्रङ्किनसाहबको मिलाहै
वह किसका जहाज़है परन्तु वह यहबात अबभी कहता है कि
तीनजहाज़इकट्ठे हैं जब(क)को ऐसेसमयउसस्थानकी ओरभेज-
तेथे कि जब वहां रातहोतीथी तो(क)वहां अरोराबोरी*ऐलसके
प्रकाशको देखताथा और उसका सर्वरूप वर्णनकरताथा (क)
इसप्रकाश को देखकर अतिप्रसन्नहोता था और पूछताथा कि
क्या वहदेशहै जहांसे रामधनुषआताहै (क) को किसी ने कभी
अरोराबोरी ऐलसकाहाल नहींबतायाथा और वह उसके हाल
को कुछ भी नहीं जानताथा ॥

जो वर्णन ऊपरविस्तारसे लिखेगयेहैं उनमें कोईबात ऐसी
नहीं है जो असम्भवितहो या जो खोजनेकेपीछे ठीकमालूमहो
डाक्टर हेडरूसाहब ने यहहाल बहुत मनुष्यों को लिखभेजा है
हरदशामें जब जहाज़ लौटआवे तो (क) के वर्णन की सत्यता
मालूम होसक्ती है मैंने कईदिनहुये कि सुनाहै कि(क)एक और
मनुष्यका जोफ्रङ्किनसाहबका साथीहै मरजाना बताताथा और
कहताहै कि उसको छःमहीने मरेहुयेहोंगे जो इसबातपर ध्यान
कियाजावे कि(क)ने बहुतसे वृत्तान्त ऐसेबतायेहैं कि खोजनेपर
ठीकमालूमहुयेहैं तो मुझे निश्चय है कि सरजान फ्रङ्किनसाहब
काभी जो हाल(क)ने बतायाहै वह ठीकहोगा इसमें तो संदेह
नहीं कि जो हाल उसने कैलोफोरनियांके जानेवालों का बता-
याथा उसकी सत्यताहुई तो जो उसकाहाल(क)ठीक बतासक्ता
था तो सरजान फ्रङ्किनसाहबके हाल ठीकबतानेमें क्याकठिन-
ताहै परन्तु अवश्यहै कि उसके सबवर्णन ठीकनहींहों और इस
का कारण एक तो यहहै कि जो कुछ वहकहता है अच्छीतरहसे

*पहले भागमें वर्णन होचुकाहै कि अरोराबोरीएेल्स किसको कहते हैं ॥

सब समझ में नहींआता कि मुख्य प्रयोजन क्याहै और दूसरे यह कि नानाप्रकार के मनुष्यों और समयोंका हाल वहसिला देताहै(क)के परोक्षदर्शित्व के बहुत दृष्टांत और देसक्ताहूं परंतु जो दृष्टांत लिखेगये मेरेविचारमें इसधारक को आकर्षणशक्तियों और गुप्तदर्शित्व के सूचितहोने के लिये बहुतहैं ॥

उन्तीसवें दृष्टांतमें मैंने लिखाथा कि (क) एकबेर एकमकान के मार्ग से एक और मकान में चलागया और वहां का कुछ उसने विचित्र वृत्तांत वर्णनकिया था अब मैं मेजरविकलीसाहब के धारकका एक और दृष्टांत उसीप्रकारका लिखताहूं ॥

चौंतीसवां दृष्टांत - मेजरविकलीसाहबने एकमनुष्यपर उसकी आरोग्यता को रक्षाकी इच्छासे क्रियाकी और पहलीबेरही उसपर प्रकाशमान दशा उपजी और धारक को तुरन्त दूरके स्थानोंके देखनेकी शक्ति प्राप्त होगई और यहभी वलहुआ कि अँधरीचीज़ोंमें से अन्दरकी चीज़ें देखलेताथा इस दृष्टांत में मैं धारकक्कानाम (ब) रखताहूं और कारक का नाम (अ) (ब) को आकर्षण की गहरीदशामें प्रवेशहोनेकी इच्छा थी क्योंकि उस दशामें विचित्रतमाशे दिखाईदेतेथे १५ नवंबर सन् १८५४ई० को मेजरविकलीसाहबने उसमनुष्यको गहरीदशामें दशमिनट तक रहनेदिया फिर वह उस दशासे निकलकर परोक्षदर्शनकी अवस्थामें चलागया और कारकसे अच्छीतरह वातें करनेलगा मेजर विकलीसाहब के हाथमें एकअंगूठीथी (ब) इसतरहवार्त्ता करने लगा कि तुम्हारी अंगूठीके लिये मैंने विचित्र स्वप्न देखा है यह अंगूठी बहुत मोलकीहै (अ) ने कहा हां इसकामोलसाठ अशरफी हैं (ब) ने कहा इसका मोल इससेभी अधिक है फिर मेजर विकलीसाहबने अंगूठीको धारकके हाथमें रखदिया और कहा कि तुम इसकाहाल कुछ बता सकेहो (ब) बोला अब मैं

इसका हाल देख सक्ताहूं कि यह अंगूठी बड़ेमोलकीहै यह अंगूठी एक बेर किसी महाराजा के पासथी (अ) ने पूछा किस देशके महाराजाके पास थी (ब) मैं स्काटलेंडकी मेरीनामराणी को देखताहूं उसराणीका यह अंगूठी एक पुरुषने जो अन्यदेश का मनुष्यथा दी थी वह आदमी इटालियाका रहने वालाथा और इसकेसिवाय और चीज़ंभी उसने उसराणीको दी थीं यह सोना जो आज इस अंगूठीमें है वह नहीं है जो पहले था उक्त राणी ने इसे एक बेर पहिनाथा जिस मनुष्यने उसे यह अंगूठी दीथी वह कलावन्त था—(अ) तुम उसका नाम वतासक्ते हो (ब) उसकानाम (र) से प्रारम्भ होता है उसके पीछे (ज़) का अक्षरहै परंतु (र)में इ लगीहुईहै (ज़) द्वित्व है और द्वित्व (ज़) को भी (इ) है फिर (य) है और फिर (व) है मैं उसकानाम लिख देता हूं और फिर धारक उठा और मेज़पर एक काग़ज़ जो रक्खाथा उसपर वह नाम लिखा फिर (ब) ने कहा इसके सिवाय औरभी है यह सब भेदकी बातथी फिर वह काग़ज़पर लिखतारहा उस काग़ज़की प्रतिनीचे लिखीजायगी मैंने एकबेर उसके कन्धोंके ऊपरसे देखा कि क्या लिखरहा है उसनेकहा कि तुम्हारे देखनेसे भूलहोगई उससमय धारक उस स्थान को लिखरहा था जहां २ का अंकहै (ब) जो मैं लिख रहाहूं और जिसकी मैं प्रतिउतार रहाहूं वह लेखचर्म्मके काग़ज़ पर है इस जगह मैं एक हीरा सूईके स्वरूपका देखताहूं यहकह कर (ब) ने काग़ज़के बीचमें उंगलीरक्खी एक हीरेको जो चार रत्तीभरथा बनाकर कहा कि जो हीरा मैं देखताहूं उसमें कई टुकड़े मिलेहुयेहैं और उसका सबसे छोटा टुकड़ा इसचाररत्ती के हीरेसे बड़ा है उसहीरे को मेरीछिपे हुये पहिना करती थी किन्तु अलिज़बथ के समयसे पहिले यह चर्मका काग़ज़ और

वह हीरा भी एक पत्थरकी दीवारमें रखदियागयाथा अब वह मकान खंडर होगया है और एकबुड्ढा ज़मींदार उसमें रहता है जिस जगह यह काग़ज़ और हीरा रक्खा हुआहै वह जगह छिपीहुईहै और एककमानीलोहेकीहै जिससे वह जगह खुलती है मैं जानताहूं जिसतरह वह खुलती है एक छोटासा पत्थर उसके निकट है कुछ उसको अंदरकी ओर ढकेलनेसे खुलताहै और वहां वहुतसी बहुमूल्य चीज़ें रक्खी हुईहैं सिवायमेरे और कोई इसहाल को नहीं जानता है एक मनुष्यने इस अंगूठी को मेरीकी उंगली मेंसे निकाललियाथा (अ) क्या उसने चुराया था (ब) नहीं उसने ईर्षा और क्रोधसे निकाललियाथा और उसको जलमें फेंकदियाथा जब उसने यह अंगूठी मेरीके हाथ मेंसे निकालीथी उससमय वह एक हवादारमें सवारथी अबमें उस मनुष्य को देखताहूं जिसने मेरीको यह अंगूठी दीथी वह एक कमरेमेंहै उसकेसिवाय में और कई आदमी देखताहूं एक गुप्तद्वारहै एक मनुष्यकोमैंतलवारलिये हुये देखताहूं उससमय (ब) कांपउठा और कहने लगा कि उस मनुष्यको लोगोंने मार डाला उसके गलेमें घावहै देखो मेरी बहुत शोरसे चिल्लाती है देखो उस मनुष्यने प्रायः वह मनुष्य जिसने मेरीके हाथमें से अंगूठी निकाललीथी मेरीके बालपकड़लियेऔर उसकोपकड़कर खींचताहै उससमय (ब) घबराताथा(अ) अबतुम इसकाबिचार न करो (ब) मैं तीनसौ वर्ष पहलेका हाल देखरहाहूं (अ) इस समय तुम कहांहो (ब) स्काटलेंड में हूं तीन सप्ताह पीछे फिर उसपर क्रिया की गई और जब मेजर बिकली साहबने उसअं- गूठीको उसके हाथमें दिया तो उसने कहाकि तुमयह बिचार न करो कि मैं इसको भूलगयाहूं उससमय मेजर बिकली साहब ने वह काग़ज़ उसके हाथमें देदिया और कहा कि नहींमुझे

यह विचार नहींहै परन्तु मैं यह चाहताहूं कि तुम बताओ कि जब तुमने इसे प्रतिकिया था तो कहां भूलकीथी (ब) देखोइस जगह भूल की थी तब उसने उसजगह जहां ३ काअंकहै कुछ शब्द बढ़ादियेऔरकहा कि पार Par और Amez के बीचमें काग़ज़ पर कुछ काहीसी आगईहै और काग़ज़गीला है फिर उसनेउस जगह बिन्दुकर दिये और नक्शों में उसजगह चारका अंक है (ब)उसके पास मुझेकुछ अक्षर दिखाई देतेहैं एक M मऔर एक F सहै और फिर एक छोटासा शब्दहै और फिर एक र R है और जो चित्रकारियां चमड़ेकेकाग़ज़के कोनोंपरहैं वहसुनहरीहैं मेजर बिकली साहब ने यह नहीं पूछा कि यह चित्रकारियां कैसीहैं और उनके क्या अर्थ हैं—दहने हाथको ओर वृक्षों के पत्ते से हैं और दाहिनीओर कुछ फूलोंके स्वरूपहैं मेजर बिकलीसाहब ने जो पत्र मुझको लिखाथा उसके साथ एक प्रति उसकाग़ज़ की जैसा (ब)ने प्रतिकीथी भेजदियाथा यहकाग़ज़ छोटासाथा पांचइंच लम्बाईमें और ढाईइंच चौड़ानमें—अब मैं अंकोंसे इस नक़्शोंको समझाताहूं अंक (अ) के पास हस्ताक्षर हैं (२) के पास बाईं ओर शब्दहै जैसे (ब) ने पहले प्रतिउतारेथे काग़ज़ केनीचे दूसरीबेरकी प्रति है जिसमेंउसने Par पारका शब्दबढ़ा-याथादेखो अंक(३)(४)वह जगहहै जहां काग़ज़गीलाथा कुछअ-क्षरउसकेनीचे छिपेहुयेहैं प्रायः वह यहजोआगे लिखाजाताहै॥

Yoris Amez aimed parceprie yoris etes bonne

मुझको यह हाल मालूम नहींहै कि मेजर बिकलीसाहबने छोटाही टुकड़ा चमड़े के काग़ज़ का देखाथा जैसा नक़्शों में है या उन्होंने केवल एकसिरा बड़े काग़ज़का देखाथाकि उस पर मेरीकेभी हस्ताक्षरथे मालूमहोता कि (ब) इस काग़ज़को ऐसा साफ़ देखता था कि उसकी प्रति उतार सकाथा परन्तु

मैंने मुख्य कागज़ नहीं देखाहै मैं केवल यहां उसका खाका लिखता हूं ॥

नंबर १ No. 1. RIZZIO

नंबर २ No. 2.

Vous aimez
तुमप्रेम पातेहो

Vous etes Dupine
तुम ठगेजाते हो

नंबर ३ No. 3.

Vous aimez par
कि तुम चाहते हो

उस विषय से
De-ia-pr

नंबर ४ No. 4.

Vous etes liann
तुमसे धोखाहै इसलिये

रज़्यू
तुम्हारा मित्र
Votre
Ami

यह वात अति विचित्र थी पहले यह कि यह दशा अपने आप उपजी और दूसरेइसलिये कि मेजर बिकलीसाहबकोइस अंगूठीका हाल सिवाय इसके कुछ मालूम नहीं था कि उनके पिताने एक मरेहुये मनुष्यके असबाबके नीलाम मेंसे मोल ली थी और यहअंगूठी उनकेपिताकेपास साठवर्षतकरहीथी इससे सूचित है कि (व) ने जोजे बातेंकहीं न तो उसमें मेजरविकली साहबके ध्यानके मालूम करनेसे कहीं न कुछ मेजर साहब की ओरसे उसको किसीप्रकार की शिक्षा हुई इसके सिवाय लेख का ब्योरा और रजयूको मरतेदेखकर उसकाघबराना यहसब

बातें ऐसीहैं कि वास्तवमें जो कुछ वह देखताथा उसकोआंखों के सामने दिखाई देताथा अवश्यहै कि जो अच्छीतरहसे खोज किया जावे तो वह मुख्यस्थान भी मालूमहोजावेगा जहां वह चमड़ेका काग़ज़ रक्खाहुआहै जो रजपूने कभी मेरीको हीरेका सलीब वास्तव में दियाथा तो अवश्यहै कि इंगलिस्तानमें सर्कारको दिखायागया हो और फिर छिपादियागयाहोगा खेदहै कि मेजर बिकलीसाहबको (ब)के शहरमेंसे चलेजानेके कारण फिर उसपर क्रिया करनेका समय नहींमिला परन्तु और परोक्षदर्शकों पर जब क्रिया कीगई तो चाहे उनको (बे)के वर्णनका हाल मालूम नहींथा परन्तु उन्होंने बहुत से (ब) के वर्णनोंको सत्यक्रिया अर्थात् जो (बे) का वर्णनथा वैसाही उन्होंने भी कहा यह बात संभवित है जोकि मेजरबिकली साहब कारकथे तो अब जो उनको उस अंगूठी का हाल मालूम होगया इसलिये वह धारक उनके बिचारोंको मालूमकरके हाल बतातेथे परन्तु इसबातका प्रमाण कि वास्तवमें यह गुप्तदर्शक इसकारणहालनहींबतातेथे यहहै कि उन्होंने केवल उतनीहीबातेंनहीं बताईं थीं और जो मेजर विकली साहबको मालूम थीं बरन औरभी बातें बताईं तथाच एक गुप्तदर्शकको उस अंगूठी का पता उस समयसे मिला कि जब वह पानीमेंफेंकीगईथी और उससमयकेपीछेका हाल उसने इसतरह पर बताया कि एक आदमी ने उसको किश्तीमें बैठकर निकालाथा कईवर्षतक अंगूठी उसके पासरही और जब वह एकबेर मार्गमेंचलताथा तो उसके हाथसे गिरपड़ी कई बरस तक उसकाकुछ पता नहीं मिला फिर एकमनुष्यको जो दोकुत्ते अपनेसाथ रक्खाकरता था मिली उसने अंगूठीको किसीके हाथमें बेचदिया और फिर वह एक और आदमीके पासरही कि जिसने फिर अपने को मार

डाला आत्महत्या की दशा उक्त गुप्तदर्शकने देखी और इससे बहुत घबराया सब गुप्तदर्शकों की रीतिहै कि लहूको बहतेहुये देखकर घबराते हैं—फिर उस परोक्षदर्शक ने वर्णनकिया कि उसमनुष्य ने अपने कमरेमें अपने शरीरमें गोलीमारी थी जब इस मनुष्य का असबाब बिका तो गुप्तदर्शक के वचन के अनुसार मेजर बिकली साहबके पिताने उसअंगूठी को मोललिया और उनकेपास साठवर्ष पर्य्यन्तरही फिर मेजर बिकली साहब के पासआई और उनकेपास पन्द्रह वर्षसे है यह सारा हाल गुप्तदर्शक ने बताया अब इसमें कुछ सन्देहनहींरहा कि (ब) ने जो इसअंगूठी का हाल बतायाथा इसतरह का बतायाथा कि मानों गत वृत्तान्तों हृदय के नेत्रोंसे प्रत्यक्ष देखताथा जितना इस अंगूठी का हाल इस समय के खोज से मालूमहुआ उससे सूचितहै कि गुप्तदर्शकों का वर्णन ठीकथा जबतक गुप्तदर्शकों ने यह हाल नहीं बतायाथा तो मेजर बिकली साहब को यह बात नहीं मालूमथी कि उनके पिताने किस मनुष्य से नीलाम में उक्त अँगूठी को मोललियाथा और जब उन्होंने मालूमकिया तो यह भी निश्चयहुआ कि जिस मनुष्यके असबाब में से यह अँगूठी मोल लीगई थी उसने आत्महत्याकीथी और यद्यपि (ब) ने जो हाल रज़ियू के मारेजाने का वर्णन कियाथा वह इतिहासकी पुस्तकमेंलिखाहै परन्तु औरबातें तो अवश्य उसने ऐसीवर्णनकीं जिनका वर्णन इतिहास में नहींहै मुझको यहबात अतिप्रबल मालूमहोतीहै कि जो और कारकों को ऐसे धारक भाग्य से मिलजावें जैसा मेजरबिकली साहब को(ब)मिलाथा और वह परीक्षाकरें तो बहुतसीसन्देह उपजानेवालीबातें जो इतिहास की पुस्तकों में हैं वह स्पष्ट हो जावेंगी यदि ऐसेमनुष्योंका जिनका इतिहासकी पुस्तकमें हाललिखा

हुआहै वाल या लेख या भूषण या वस्त्र मिलजावें और उनके द्वारा परीक्षा कीजावे तो अवश्यहै कि बहुत से इतिहासिकपत्र जो अब खोगये हैं निकलआवेंगे तथाच (क) ने इसप्रकार के तीनकाग़ज़ जो समयसे नहींमिलते थे और लोग जिनकोबहुत ढूंढ़तेथे इसतरह निकाले हैं॥

——※——

सत्तरहवांपत्र॥

इसगुप्तदर्शनकी दूसरीशाखा के वर्णनकरनेके पहले मैं आपको बताया चाहताहूं कि जो गुप्तदर्शक दूरकी चीज़ों या गत वृत्तान्तको संयोगद्वारा देखतेहैं उनका अवलोकन हरतरह पर ठीकनहीं होताहै पहलेभाग में मैं लिखचुकाहूं कि बहुतकारण ऐसेहैं जिनसे भूलहोजाती है एकबड़ा भूलका यह कारणहै कि गुप्तदर्शक देखताहै तो किसी गतवृत्तान्तको है और समझताहै कि वर्त्तमान वृत्तान्त देखताहूं किसीसमय ऐसा होसक्ताहै कि धारक के वर्णनोंको अच्छीतरह परतालने से मालूम होताहै कि यहकुछ पुराने हालको नहींबताता बरन थोड़ेहीसमयकाहाल कहताहै यद्यपि भूलहोने के कारण बहुतहैं तोभी धारकको उस मनुष्यके साथ जिसको वहदेखता है इतना संयोग होजाता है कि वह निर्भयहोकर वृत्तान्त वर्णन करने लगता है इसलिये बहुधा यह नियम रखना चाहिये कि जहांतक उसके वर्णनकी परीक्षा कीजावे॥

आकर्षण स्वापावस्था में बिना संयोग
गुप्त दर्शनके उपजनेकावर्णन॥

यहां मैं उसपरोक्षदर्शन का वर्णन करूंगा कि धारक किसी

हुये मनुष्य और चीज़ोंको देखता है जिसतरह संयोग के द्वारा देखता है और उस शक्तिका भी वर्णन किया जावेगा जिससे परोक्ष दर्शक मोहर कियेहुये लेखों को चैतन्यावस्था अर्थात् होशमें पढ़सक्ताहै ॥

पैंतीसवां दृष्टान्त— मैंने एकमनुष्य के घरमें देखा कि एक आदमी ने जिसकीआयु सत्रहवर्षकी थी एकलड़के पर जिसकी नववर्षकी आयुथी क्रियाकी जोकि कारकने मुझसेकहा कि यह लड़का परोक्षदर्शकहै इसलिये मैंनेकारक के द्वाराकहा किंतुम इसदशा में मेरेमकान परजाओ और वहांकाहाल बताओ इस गुप्त दर्शकका यहहाल था कि कारकके सिवाय और किसीका शब्द नहीं सुनताथा न किसीसे बोलता था मेराघर उसजगह से एकमील की दूरीपर था उसने कहा बहुतअच्छा मैं जाताहूं और थोड़ीदेरपीछे उसघरमें चलागया और जो२ समान वहां रक्खाथा उसकाहाल वर्णनकरनेलगा और कहा कि अमुकमेज़ पर अमुकवस्तु रक्खीहै और अमुक मेज़पर एककल रक्खी है उसकलका उसने सबहाल बताया वास्तव में जो सामानउसने वहांबताया रक्खाथा और एकमेज़पर एककल सोड़ा के पानी (जिसको हिन्दोस्तान में विलायती पानी कहते हैं) बनानेकी रक्खीथी वह कलमें इनहीं दिनोंमें जर्मनी के देश से लायाथा और उससमयतक उसकोखबर में वहकल नहींआईथी मैंनेउससे कहा कि अबतुम अमुककमरेमें जाओ तथाच वह वहांगया और जो शीशे चीज़ें तसवीरें वहांथीं उनसबका हाल उसने बताया जब उससे मैंनेपूछा कि उसकमरे में कौनहै तो उसनेकहा कि केवलएकस्त्रीऔर एकलड़काहै उसस्त्रीकेवस्त्रभीउसनेबताये जब मैं घरपरगया और पूछा तो जो उसलड़केने वर्णनकियाथा वह सब ठीक मालूमहुआ मुझे कुछसन्देह होगया कि शायद उस

गुप्तदर्शक ने यहहाल मेरेविचार के साथसंयोग के कारणबतायाहो तो मैंने वहींएक मनुष्यसेकहा कि आप दूसरे कमरेमें चले जाइये और वहां जो आपकाजी चाहे वहकीजिये वहमनुष्यएक वच्चेको लेकर दूसरेकमरे में चलागया जब गुप्तदर्शक से पूछा तो उसनेकहा कि यहलड़का बड़े तमाशेकाहै और अपने हाथोंको तमाशे से हिलारहा है और उसका पिता उसके सामने खड़ा होकर देखरहा है फिर उसनेकहा कि वहलड़का उसकमरे से बाहर चलागया और थोड़ी देरपीछे कहाकि फिर कमरेमें आगयाहै और जब उसलड़के के पिताकाहालपूछा तो उसने पहले तो कहा कि आप यहबात न पूछिये परन्तु जब उससे तकरार करके पूछा तो उसनेकहा कि मैं बतानानहीं चाहता हूं परन्तु आप जो पूछतेहैं तो मैं लाचार कहताहूं कि वह मनुष्य कूदता फिरताहै फिर उस परोक्षदर्शक ने कहा कि वह मनुष्य अपने लड़केको माररहाहै परन्तु जो लकड़ीउस मकान में रक्खीहुईहै उससे नहींमारता बरन एककाग़ज़ से जो उसकेहाथ में लिपटा हुआहै माररहा है इनसबबातोंके कहनेमें केवल सात या आठ मिनट का समयलगा और जब वहमनुष्य उसकमरे में आया जहां गुप्तदर्शकथा और मैंने उससे गुप्तदर्शककी बातोंकावर्णन किया तो वहबड़ा आश्चर्य्य करनेलगा और कहाकि जो कुछ इसगुप्तदर्शक ने कहा सबसत्यहै इसपरीक्षासे प्रकटहै कि गुप्तदर्शकको विचार मालूम करने के कारण यहहाल नहीं मालूम हुआ था क्योंकि न मुझेही यहहाल मालूम था कि वह मनुष्य दूसरे कमरेमें जाकर क्याकरेगा न उसको आपही मालूमथा कि मैं वहां जाकर क्या करूंगा सो मुझे अच्छीतरह भरोसाहै कि गुप्तदर्शक ने जो कुछ वर्णन किया बास्तव में देखकर कहा था यह बात तो अनुमान में नहीं आसक्ती है कि उसने

अनुमान से यह बात मालूम करली थी और सिवाय इसके उसके वर्णनके डोलसे मालूम होताथा कि जो कुछ वह कहता है इस तरह कहताहै कि जैसे कोई देखकर कहताहो ॥

छत्तीसवां दृष्टान्त— जब मैंने लामपर क्रियाकी और उसको निद्रा आई तो मुझ को मालूम हुआ कि उसको गुप्तदर्शन की शक्ति भी प्राप्तहै जैसे जब उसकी आंखें बंद होतीहैं और मेरा हाथ उसके शिर पर होता था तो वह कहताथा कि मुझको तुम्हारी उंगलियोंमें से प्रकाश निकलता हुआ दिखाई देताहै और उसको क्रस्टल कृत्रिम चुम्बक और चुम्बक पत्थर में से इसीतरहकीरोशनी निकलतीहुई दिखाईदेतीथी परन्तु वहबहुत उसके गुप्तदर्शन की शक्ति अच्छी तरह इसतरह प्रकटहुई कि दूरके स्थानों को देखताथा और उनका हाल वर्णन करताथा न वह स्थान मुझे मालूमथे न वह उनको जानता था जब मैंने देखा कि वह अपने आप ऐसे स्थानोंको देखताहै जिनको वह कहताहै कि मैं नहीं जानताहूं तो मैंने उससे कहा कि तुम मेरे मकानमें जाओ पहिले २ उसको मेरा मकान साफ़नहीं मालूम हुआ परन्तु फिर साफ़ दिखाई देने लगा उसने मेरा मकान कई बार देखाथा क्योंकि मुझे विचार हुआ कि वह उसमकान का हाल यादसे कहता है परन्तु थोड़ी देर पीछे मुझे निश्चय होगया कि याद में नहीं कहताहै क्योंकि छोटी २ चीज़ें उसने पतेवार बताईं और सिवाय इसके वहकमरे भी बतायें जिनको उसने कभी पहिले नहीं देखा था फिर मैंने उससे कहा कि बताओ कोई आदमी भी वहां है या नहीं कभी वह कहता था कि हैं और कभी कहताथा कि कोई आदमी मुझे दिखाई नहीं देताहै और एक बेर तौ उसने कई मनुष्य बताये तो जब मैं पीछे घरको गया और मालूमकिया तो जितने मनुष्य उसने

बतायेथे वास्तवमें उतनेही उससमय उस मकानमें थे फिर मैंने उसे एक और घरमें जाने को कहा जो शहरसे दोमील की दूरी परथा उस मकानको उसने कभी नहीं देखा था और मैंने भी उस मकानका हाल उसे कुछ नहीं बतायाथा उसने उस मकान को ढूंढ़ लिया और उसका हाल वर्णन करने लगा उसकी छत की सूरत भी बताई कि वहछत नईडोलकी है और उसने कहा कि मैं उसको ऊपरसे देखरहाहूं और कहा कि यहमकान एक बाग़के अन्दरहै और उसके चारोंओर वृक्षहैं परन्तु इस समय में कोई आदमी उस मकानके आगे पीछे नहीं देखताहूं और न उसकेअन्दर का कुछहाल देखताहूं फिर उसे एक और शहरको भेजा जो कोई सौ मीलकी दूरी परहै मैं इस बातको देख कर अति आश्चर्यमें हुआ कि वह उस शहरमें थोड़ेसेदिनोंमें चला गया और वहांके घरों बाज़ारों और शहरोंका सब हाल बताया मैं उस शहरको जानता था परन्तु यह परीक्षदर्शक वहां कभी नहीं गयाथा जब मैंने उससे पूछा कि तुमको यहबात क्योंकर मालूम हुई कि यह शहर वहीहै जहां मैंने तुमको भेजा था तो उसने कहा कि जैसे मनुष्यको हृदयके ज्ञानसे बुरे भले में विवेक होताहै इसी तरह मुझे यह भी मालूम होगया कि यह शहर वहीहै जहां आप मुझे भेजते थे कभी२ ऐसा होताहै कि मार्गमें और नगर मिलतेहैं परन्तु मैं अपने मनसे जानजाताहूं कि यह वह शहर नहीं है फिर मैंने उससे कहा कि तुम इस शहर के अमुक स्थानको जाओ तथाच उसने जाकर उसका सब हाल ठीक २ बताया उसने बाज़ारमें चलतेहुये आदमी बताये परन्तु नाना भांतिके समयमें नानाप्रकार के मनुष्य बताता था उसने कहा कि मुझको सेनाके मनुष्य भी दिखाई देते हैं और कइयों के शिरों पर टोपियां हैं और कइयों के शिरों पर विचित्र रीतिकी

ज़िराबक़रहैं तथाच उसने जैसा ज़िराबक़र का स्वरूप था वह भी वर्णन किया यह पहिनाव ऐसा इस शकलका था जैसा उसके देशमें प्रचारहै उसने कहा कि कई मनुष्यों के मुख पर दाढ़ीहै और जैसी २ और मूछेंथीं सबका डौलवर्णन किया मैंने कई मनुष्यों के जिनको मैं जानता था नामलेकर उससे कहा कि उनको देखो तथाच कइयोंको तो उसने देखा और कईनहीं मिले एक मनुष्य के लिये मैंने अपने जीमें विचार किया कि गुप्तदर्शक उसको अपने मकान पर बैठाहुआ देखे परन्तु उसने उसको एक गलीमें एक और मनुष्य के साथ फिरते हुये देखा यह और इस बातका प्रमाणहै कि मेरे विचारके साथ उसको संयोग नहीं था उसने कहा कि इस मनुष्यके मुखपर न दाढ़ीहै न मूछेंहैं तथाच यहबात सत्यहै कि अपनेआप मुसाफ़िरख़ानेमें चलागया और कहा कि दो बजेका समयहै और लोग भोजन कर रहेहैं उस शहर में भोजन करने का यही समय है हमारे देशमें जो भोजन करनेका समय होताहै उस समय उसने उस मुसाफ़िर ख़ानेमें देखा कि मेज़पर कुछ भोजन नहीं रक्खा है और कोई मनुष्य भी नहीं बैठाहै फिर मैंने उसे एक और शहर में भेजा और उसने उसे इसतौरपर देखा कि जैसे चिड़िया हवा मेंसे या कोई आदमी वायुमेंसे गुब्बारे में बैठा हुआ देखता है मैंने उस शहरको इस तरह नहीं देखा था उसने नदीको और नदीपर पुलको देखा और देखा कि एक मकान मुनारे वाला सब मकानोंसे ऊंचाहै मैंनेउससे कहा कि अबतुम शहरमें जाओ तथाच वह एक बाज़ारमें गया और देखा कि एक बुड्ढामोटा आदमी अपनी दूकान के दरवाज़े पर खड़ा हुआहै और टोपी उसके शिर पर नहीं है मैंने उससे कहा कि तुम अमुक घर को देखो तथाच उसने देखा और जैसे उसमें दरवाज़े और खिड़-

क्रियां थीं सब बताईं इस घरके चारों ओर यह मनुष्य अर्थात्
गुप्त दर्शक फिरा और जो २ मकान और मुनारे थे सब बर्णन
किये परन्तु मनुष्यों को उसके अन्दर नहीं देखा और कहा कि
मैं इसकी छत नऊपरसे न अन्दरसे देख सकाहूं कुछ अँधेरासा
उसके ऊपर मालूम होताहै बाज़ारमें उसने बहुत सिपाही और
आदमी देखे फिर मैंनेउसे एक और शहरमें भेजा और कहा कि
उस शहरके पश्चिमकी ओर जो एक टीलाहै वहांसे उसे देखो
तथाच उसने उसी जगहसे देखा और जैसा स्वरूप उसस्थान
से शहर का दिखाई देता था वैसा ही बताया जब वह इन
शहरों को देखता था तो उनकी शकल देखकर अति प्रसन्न
होताथा परन्तु यहबात एक विचित्रथी कि दिशामें भूलकरता
था अर्थात् पूर्वको पश्चिम और दक्षिणकोउत्तर बताताथा जैसे
उसने कहा कि नदी अमुक शहरके दक्षिण की ओर चलती है
और अमुक शहर नदीके अमुक ओरहै परन्तु उनके मुख अन्य
ओर थे यदि मैं परीक्षा करना चाहता तो मुझे इस बातमें संदेह
नहीं मालूम होताहै कि वह दो पहरके समय दक्षिणकी ओरके
बदले उत्तरकी ओर बताता और सिवाय दिशाके वर्णनके और
जो कुछ हाल वह बताता था ठीकथा और बहुत ब्योरेवार था
और कोईबातभी ऐसी नहींकहताथा जिससे मुझेयहसंदेहहोता
किवह मेरेविचारों को मालूमकरके हालबताताथा बरन बहुधा
ऐसा होताथा किमैं किसी और शहरका या किसी और बातका
विचार करता था और वह किसी अन्य नगर वा किसी अन्य
वृत्तान्त का वर्णन करता था और जब कभी वह कोई ऐसा
मकान या बाज़ार देखताथा जोमेरे विचारमें होताथा या जिसको
उसे मैं आपभेजता तो अवश्य कोई न कोई उसकी ऐसी कह
ता था जिसका मुझे बिचारभी नहींहोताथा तथाच कि जिसमोटे

बुड्ढे आदमी को उसने एक शहर में देखा था वह अपने आप फिर लौटकर उसको देखता था और जबमैं कहता था कि अब तुम उसेदेखो तो वह कहताथा कि वह अब इस समय दिखाई नहींदेता और यह मनुष्य भी उसको प्रतिसमय एक जगह और एकदशा में दिखाई नहींदेता था कभी उस दरवाजे में दिखाई देताथा कभीकिसी और जगह कभी उसके शिरपर टोपी होती थी कभीनहीं होतीथी गुप्तदर्शकने यहभी कहा कि यह आदमी कहींहो मैंउसको पहिचान लूंगा और अपनेआप यहभी कहाकि जोकि उसका स्वरूप तमाशेकाहै परन्तु मुझे उससे ग्लानि है और मैं यहनहीं जानताहूं कि क्योंग्लानि है ॥

सिवाय इन शहरों के सामने और भी स्थान देखे जिनको जानता नहींथा उसका हाल मैंभी कुछ लिखताहूं मेरेपास एक क्रिस्टल जादूबहुत पुरानाहै परन्तु उसकाहाल मुझे अच्छीतरह मालूम नहीं है मैंने इसबात की परीक्षा करनी चाही कि निद्रा दशामें सामपर कुछ क्रिस्टलकाप्रभाव होगा या नहीं उस समय उसका स्वभाव अति अंगीकार कर्त्ताथा तथाच मैंने उस क्रिस्टल को उसके दहिने हाथमें रखदिया उस समय सम्पूर्ण उसकी भुजापर एक सरदीका प्रभाव मालूम हुआ जबमैंने उससे पूछा कितुम इसको देखतेहो तो चाहेउसकी आंखेंबंद थीं परन्तु उसने कहा कि उसकी रोशनी ऐसी तेज है कि मेरी आंखों को चौंध मालूम होतीहै और आप इसको हटालीजिये मैंने उसके हाथमेंसे क्रिस्टल को हटालिया और फिर उसके शिर पर रक्खा तबभी उसको दिखाई देताथा दूसरे दिन उसका स्वभाव इतना अंगीकार कर्त्तानथा परन्तु जोमैं क्रिस्टल को उसके हाथ में रख-ताथा वा उसके शिरकी पीठकीओर रखता था चाहे उसकी आंखें बंदहोती थीं परन्तु उक्त क्रिस्टल उसको दिखाई देताथा परन्तु

उससमय उसकी आंखोंको चकाचौंध नहींमालूम होतीथी बरन उसको अच्छी रोशनी मालूम होतीथी उसने वर्णन किया कि उसके अंदर प्रकाशके घेरेमालूम होतेहैं औरउस प्रकाशमें इन्द्र धनुष के रंग हैं जब क्रिस्टल को उसके बायें हाथ में रक्खा तो उसपर गरमी का अति प्रभाव हुआ और पहिले से अधिक उसे नींद आई अकस्मात् उसने कहा कि मुझे एक मनुष्य एकनये डौलके बस्त्र पहिनेहुये दिखाई देताहै मुझे यह बिचारहूआ कि लामकिसी ऐसेमनुष्यको देखताहो जो पहले इस क्रिस्टलकामालिक था या जिसको किसीप्रकारका सम्बंध इस क्रिस्टलके साथहो तो मैंने उससे कहा कि इसमनुष्य का सबहाल बताओ और जोकि मुझेमालूम हुआ कि उसमनुष्यके पीछे और क्रिया के समय में भी यहमनुष्य लामको दिखाईदेता था इसलिये मैं उसका हाल रोज़ पूछता था और उसके काम काजकाहाल भी पूछता था जो परिणाम मेरी परीक्षाका हुआ संक्षेप से नीचे लिखता हूं॥

जब क्रिस्टल लामके हाथ पर रक्खागया तो थोड़ेसमय में बहुतदूरतकचलकर उसने अपनेकोदेखा कि मैं एकसड़कपरहूं इस सड़क के एकओर एक दरिया बहुत जोरसे बहता है और दरिया के ऊपर सीधे औरऊंचे पहाड़ हैं और सड़ककी दूसरी ओरभी पहाड़ हैं परन्तु इतने ऊंच नहीं जितने दूसरी ओरऊंचे हैं इस सड़क पर उसने एक आदमी कुछ मध्यम डौलसे ऊंचा चलताहुआ देखा और उसकी आयु चालीस और पचास बरस केबीचमेंथी और उसकाशरीर अच्छाहृष्टपुष्टथा परंतु मुखउसका कुछ सांवलाथा बालकाले दाढ़ीलंबी औरकाली एककालाजा-कट और कालापाजामा घुटनों तक पहिनेहुये मोजे धारीदार औरपांवमेंबूट घुटनोंसेनीचे मोड़ेहुये औरउसका स्वरूप यहूदी

या इस्पेन या इटालिया के आदमियोंसा दिखाईदेताथा कमर में एक कमरबंदथा और कुछचीज़ लटक रहीथी परन्तु तलवार न थी व खांड़ाथा सब कपड़ोंकेऊपर एक चोगा पहिने हुयेथा परन्तु चोगेकीछाती खुली हुईथी औरअंदर के कपड़े दिखाईदेते थे टोपीकपड़ेकीथी और एकओरउसपरसमूरलगाहुआथा और एकपरभीटोपीमेंथा उसकेहाथमें उसकेडीलसे लांबीएक लकड़ी ऊपरसे टेढ़ीथी औ उसके आगे तीनचार बकरियां दौड़तीजाती थीं इस मनुष्यके ऐसेअच्छे बस्त्रथे कि लामको आश्चर्य होताथा किउस मनुष्यके बस्त्रतो ऐसेअच्छे हैं औरवह बकरियां हांकता जाता है इस मनुष्यके पीछे लामचलता गया जबतक कि वह मनुष्य एक सरायमें गया औरवहां भोजन किया उस सरायमें औरभी कई मनुष्य दहकानों की तरह बैठेहुयेथे औरइसमनुष्य का उन देहातियों ने और सराय के मालिक ने अच्छी तरह आदर किया वह सराय इस सूरत की नहींथी जैसी इंगलि॰ स्तान में होती हैं न वह देहाती इंगलिस्तान के देहातियों से थे उनके वस्त्र भी उस मनुष्य के सदृश थे जिसके पीछे लाम जाताथा और सबके शरीर के ऊपर पोस्तीन का चोगासा था दूसरे दिन जो लामने उस मनुष्य को देखा तो वह मनुष्य उसी सड़कपर चलताथा परन्तु बकरियां उसके साथ नहींथीं चोगा पहिनेहुये था अब यह सड़क जंगलमें थी और दरिया किनारे ठुंठठुंठ दिखाई देतेथे आगे चलकर पहाड़दूर२दिखाई देनेलगे और बहुत चौड़ीघाटी दिखाईदी और उसमें अच्छेखेत दीखतेथे यह सड़क एक छोटे शहरको ओर जातीथी और वह शहर पहाड़के नीचे बसताहै शहर तक पहुंचनेसे पहिले दरिया पर एक पुल कई दरोंका दीखा मार्ग में बहुत देहाती दिखाई देतेथे कोई टोकड़ों में अंडेलिये जातेथे कोईगाड़ियां हांकते थे

और शहर पहाड़की ढालपर बसताथा पहाड़की ओर चौड़ा है
और पुलकी ओर चौड़ान कमहै उस शहरके चारों ओर सीमा
नहींहै जो सड़क पर गाड़ियां चलतीथीं वह ऐसी नहींथींजैसी
इंगलिस्तान में होती हैं जो कि लाम उसका नाम नहीं जान॰
ताथा और उसकी यह इच्छाथी कि कुछ उसका नाम रक्खा-
जावे मैंने कहा कि इसका नाम (र) रखलो उसने कहा बहुत
अच्छा अब इसपुस्तकमें जहां उसमनुष्यका वर्णान होगा (र)
नाम लिखाजावेगा दूसरे दिन लामने (र)को शहरकेबाज़ार
में मकानमें देखा जब लाम पुलपरसे चलताथा तो उसनेपहले
तो यह देखा कि पानी बहुत मैलाहै दूसरे यह कि पुलकेसिरे
की ओर कुछ अँधेरी जगह छूटीहुई है कि वहां उसको कुछ
दिखाई नहींदेता और उसको उस समय साफदिखाईदेनेलगा
कि जब वह शहरके अंदर दूरतक चलागया मैं यह बातनहीं
बतासक्ताहूं कि यह क्याचीज़है परन्तु जब लामने उसशहरका
हाल वर्णान कियाहै इस अँधेरी जगहका हाल अवश्य वर्णान
कियाहै जिस घरमें (र) दिखाईदिया वह उसकी दूकानमालूम
होतीथी एक स्त्री जो उससे बहुत मिलती हुईथी उसदूकान में
थी लाम कहताथा कि मेरी समझमें उसकी बहिनहै (र)ने जो
कुछ हाल अपने सफरका उस स्त्री से वर्णान किया वह ध्यान
से सुनतीथी दूकान ऐसी थी जहां ज़ंजीरें और छोटी २ चीज़ें
बेचीजातीथीं जब उनचीज़ोंका लाम वर्णान करताथा तोउसको
अति आश्चर्य होताथा कि दरिया और पुलभी जो शहर के
बाहर हैं उसको दिखाई देताथा और उसी समयमें (र) की
दूकानभी उसी शहरमें दिखाई देतीथी और दूकानके अंदरकी
चीज़ें दिखाई देतीथीं परन्तु फिर उसका स्वभाव होगया और
कुछ आश्चर्य्य नहीं होताथा--फिर लामने देखा कि दूकान के

पीछे एक मकानमें (र) और वह स्त्री भोजन करतेथे और उस घरमें मोटेमेलका असबाबथा और भोजन भी कुछ उत्तमनहींथा खानेके साथ दोनों मद्यभी पीतेथे--भोजनके पहिले कुछ दोनोंने निमाज़ नहीं पढ़ी फिर उस स्त्रीने एक अलमारीमेंसे एक पीतल का कड़ा उतारकर (र) को दिखाया--अंगीठेमें आगजलती थी एक और दिन लामने (र) को देखा कि अपनी दूकान में है और एक मनुष्य कोई चीज़ बेचनेको उसके पासलायापरंतु(र)ने उसेमोलनहीं लिया पुलसे जो पहाड़कीओर बड़ा बाजारजाता है उसमें पक्काफ़र्श है आधीदूर पर एक और बाजार चौपड़ के बाजारकी तरह उसमें आ मिलाहै इसचौपड़के बाजार के एक ओर लाम ने एकसवारदेखा कि उसकी कुर्तीसब्ज रङ्ग की थी और पीछेएक दामन लटकता था पायजामा उसका नीला था और उसमें लालधारी थीं और एकलम्बी तलवार भी उसकी कमरमें थी और एककमरबन्दभी था और बूटमहमेज लगेहुये पहिनेहुये था उसनेदूकानोंपर बहुतसी तख्तियां लकड़ियों पर लगीहुई देखीं और उनपर कुछ अक्षर भी लिखे हुये थे परन्तु केवलएक मुसाफिरखाने की तख्ती पर जो अक्षर थे उनअक्षरों को लामपढ़सका और तख्तियोंपर ऐसे अक्षर लिखेहुये थे जो लाम नहीं पढ़सक्ताथा मुसाफिरखानेके तख्तेपर उसने शल्टनर नामपढ़ा एकऔरबेर जो लामउसशहरमेंगया तो उसने(र) को उसकीदूकान में नहींदेखा परन्तु जबउसको ढूंढ़ा तो एक पहाड़ के झोपड़ेमें था और कईमनुष्य उसकेपास बैठेथे कई मनुष्य तो उनमेंसे ऐसेबस्त्र पहिनेहुये थे कि शिरोंपर पगड़ियां थीं और चौड़ेपाजामे थे और उनकी दाढ़ियां लम्बी और कइयों के बस्त्र ऐसेथे कि जाकट पहिनेहुयेथे और बकरोंकी खालकेचोगे धारण कियेहुयेथे यह मिला जुलाहुआ डौलदेखकर लाम ने अपनेआप

कहा कि मेरी समझ में यह झोपड़ी दो देशों की सीमापर है ॥

यहलामका अवलोकन अति मनोरम है यदि संकल्प किया जावेकि यह अवलोकन स्वप्नकी तरहपर था तो वह स्वप्नभी विचित्रहोगा लामने (र) को नानाप्रकारसे देखा और कुछ२ हाल मैंने उसकेशहरका लिखाहै जो सब हाल ब्यौरेवार लिखाजाता तो कईपत्र भरजाते लामपर रोज़२बरन बहुधाएकदिनमें दोबेर क्रियाकीजाती थी परन्तु जब कभी वह (र) कोदेखताथा तो यह नहीं होताथा कि जोहालउसने पहिलीबेरदेखाथा वहीदूसरीबेर वर्णनकरे बरन जुदाहालहोताथा और तोभी यह बिचित्रबात है कि जो हालजुदा२ वर्णनकरता था उनमें सम्बन्धहोता था जैसे एकदिन उसने (र) को सड़क पर ऐसी जगह चलतेदेखा कि नदी के नीचेकी ओर जाता था दूसरे दिन उसघाटी और भी नीचेकी ओर उसको देखा कि वहां खेती बहुत थी तीसरे दिन उसकोएकशहरके निकटजातेहुयेदेखा और चौथेदिन उसकोशहर के अन्दर एकमकान में देखा तीनसप्ताह बरन एकमहीने तक लाम को (र) कभी राह में पैदल चलते हुये और कभी अपने घरमें दिखाईदेता था और लाम अन्य २ स्थानोंका हाल अति विस्तार से वर्णन करताथा--वास्तवमें उस शहरका हाल लाम ने इसतरह से वर्णन किया था कि जो मैं उसको कभी देखूं तो पहिचानलूं यह तो बात प्रकट है कि वह शहर इंगलिस्तान में नहींहै और जैसेवस्त्र लामने वहांकेलोगोंके बताये औरदूकानों की तख्तियोंके अक्षर बताये कि सिवाय एक तख्ती के जिसपर जरमनकी भाषा लिखी थी उससे वह पढ़ी नहींगई इसबात से मेरीसमझमें यह आताहै कि वहशहर रूस और रूमकीसीमा परहै प्रायः कोईमनुष्य जो इसपुस्तक को पढ़े जानसके कि वह कौनसा शहरहै इसबात का कारण मालूम नहींहोता कि लाम

ने रोज इस शहर को इस सफाई से क्यों देखा परन्तु मुझे यह ध्यान अवश्यहोताहै कि उसक्रिस्टलमें जिससे यहबातें दिखाई दीं और इसशहरमें या उसआदमी (र) में कुछ संबन्धहै (लाम) ने एकबेर सोते २ यहबात कहीथी कि एकबेर यह क्रिस्टल (र) के पास था जो यहबात सत्यहै तो जिसतरह किसी मनुष्यको लेखके द्वारा लिखनेवाला दीखनेलगताहै इसीतरह इसक्रिस्ट-ल के द्वारा (र) दिखाई देनेलगा यदि मानलेवें कि यह कारण इस अवलोकन का ठीकहै तो यह बात उत्तर चाहतीहै कि जो कुछ लामने देखाथा वह वर्त्तमान समय की बातें देखीथीं या गतसमय की यदि गतसमय का वृत्तान्त देखताहो तो यहबात अतिविचित्र और अचंभे कीहै जो एक महीने तक बराबर क्रम पूर्वक गत वृत्तान्त देखतारहा॥

परन्तु लामने केवल इसी अवलोकन मुझे आश्चर्य्य नहीं दिया एक दिन जब वह इस शहर की सैर कररहा था तो वह अकस्मात् चुपहोगया और थोड़ीदेर के पीछे कहा कि मैं वायु में बहुत दूरीकी यात्रा करताहूं मुझको जल्दी यह बात मालूम होगई कि लाम अपने आप एक बड़ीअवस्था में प्राप्त होगया था प्रायः इस गुरुदशामें प्राप्तहोने का यहकारण हो कि उस-के सामने उससमय वह क्रिस्टलथा जब वह अपनीयात्रा पूरी करचुका तोउसनेकहा किमैंएकसुन्दरबाग देखताहूं और उसमें अति सुन्दर पटरियां बनीहुईहैं लामने उसका नक्शा खींचकर बताया उसने कहा कि यह बाग शहर के पासहै एक पटरी के सिरेपर एकहौज़ बनाहुआ है उसमेंदो मुहोंसे पानी निकलता और एक बुड्ढा आदमी उसके पास खड़ाहुआ है शिर उसका नंगाहै दाढ़ीलंबीहै कपड़ेढीले और सफेदहैं और पांवमेंमोजेनहीं और खड़ाऊं पहिनेहुयेहै यह यूनानियोंकेसे नक्शे उस आदमी

के आगे पीछे बारह युवामनुष्य और खड़ेहुये थे और उनकी पोशाक भी उस बुड्ढे आदमी की सी थी एक आदमी उन जवान आदमियों को पढ़ाता मालूमहोता था और जब पढ़ाना या वार्त्ता पूर्णहोगई तो दो तीन मिलकर हौज़के पास अलग२ बागकी पटरियोंपर चलेगये और थोड़ीदृष्टि बढ़ाकर जो देखा तो लामको पहाड़ कुछ दूरीपर और एक शहर बाग़ के निकट दिखाईदिया इसबाग़ और शहरको भी लामने अपने आप दो तीनबेर देखा परन्तु हौज़ के पास वह आदमी नहीं देखे पर और आदमी पटरियों पर सैर करते हुये देखे और एकबेर दो औरतें यूनानी पोशाक पहिनेहुई देखीं पर आश्चर्य्य की बात यहहै कि यह अवलोकन एकमुख्यदशामें होते थे कि वहलाम की दशा साधारण आकर्षणकी अवस्था से भिन्न थी बरन जिस अवस्था में उसने (र) को देखा था और देखाकरता था उस दशासे भी यह दशा अलग थी यह अवस्था मानों साधारण जागरण से तीसरीदशाथी और आकर्षणकी दशा से दूसरीथी जो समय उसदशा में बीतता था वह उस समय से भिन्नहोता था जो उसके सोनेकेलिये आकर्षण की दशा में नियत किया जाताथा जबवह आप साधारण आकर्षणकी दशामें लौटआता था तो उसको इस तीसरीदशा का कुछ चेत नहींहोताथा और तब भी उसकी चेतनानहीं होतीथी कि जबवह फिर इसतीसरी दशामें प्राप्तहोता था पर हां यहबात मालूमहोती थी कि इस तीसरीदशा में वह पुराने वृत्तान्त देखताथा ॥

एकबेर वह आप एक और दशामें प्रवेशकरगया उससमय को ज्ञान पहली तीनों दशाओं के ज्ञानसे अलग मालूम होता था एकदिन उसने मुझसे कहा कि मैं वायुमें यात्रा कर रहाहूं परन्तु अकस्मात् वह घबराने और डरनेलगा और कहने लगा

कि मैं पानीमें गिरपड़ाहूं आप उसमें से मुझे निकाल लीजिये जो आप सहायता न करेंगे तो मैं डूबजाऊंगा मैंने उसे आज्ञा दी कि इसजलमेंसे निकलजाओ और वह बहुत परिश्रम और प्रयत्नकरके निकलगया और किनारेपर पहुंचगया उसने उस समयकहा कि मैं कफरीरयादेश*में जहांएकमेरामित्र उपजता था एकदरिया में गिरपड़ाथा परन्तु आश्चर्यकी बात यहहै कि वह उसदेशके आदमियों और मकानों और पशुओं और खेतों का इसतरह वर्णनकरताथा मानो उनको अच्छीतरह जानता था और उसने यहभी कहा कि जब मैं लड़काथा तो इसदेशमें बहुतरहाहूं चाहे वह कभी स्काटलेंड से बाहर भी न गयाथा सिवाय इसके चाहे उसकीआंखें बन्द थीं परन्तु वह कहताथा कि मैं जागताहूं और मेरी आंखें खुली हैं और जब मैंने कहा कि तुमसोतेहो तो उसने कहा कि आप मुझे बुद्धिहीन बनाते हैं वह इसबात के समझने से आश्चर्य्य करता था कि मैं तो उडनबरा में हूं और वह आप कफरीरया में था तो मैं उससे बात क्योंकर करसक्ता था और जब मैंने उससे कहा कि तुम आप मानतेहो कि तुम कभी जहाज़ में सवार नहींहुये तो तुम कफरीरया में क्योंकर पहुंच गये तो और भी आश्चर्य करने लगा परन्तु वह यह भी कहतारहा कि मैं कफरीरया में हूं और मैं इस देशमें समय तक रहाहूं और मैं यहां के मनुष्यों घरों पशुओं को अच्छी तरह जानताहूं यहबात प्रकट मालूम होतीहै कि इस मनुष्य ने अपने मित्र के मुखसे कफरीरया का हाल सुनाथा परन्तु जो कि वह बहुत बेर कहताथा कि मैं इस देशमें समयतक रहाहूं और यहांके मनुष्यों और सब चीज़ोंको अच्छी तरह जानताहूं तो मेरे विचारमें यह बातहै कि जो हाल

* कफरीरया हब्श के देशके दक्षिण में एकदेशकानाम है॥

उसने अपने मित्रके मुखसे सुनाथा उसके देखने का उसको व्यसन था और परोक्षदर्शित्व दशामें कभी २ वह वहां चला गया था परन्तु अपने जानेका हाल पहिले उसने मुझे कभी नहीं बताया था और इस अनुमानका निश्चय अधिकतर यों होताहै कि वह बहुधा घंटे २भर सोया करताथा और कुछबात नहीं किया करता था और उस समय वह उस देशमें जाया करताथा और इसबेर जो फिर उसदेशमें गया तो उसने केवल वहांके मनुष्यों को और चीज़ोंको केवल देखाही नहीं बरन उनको पहिचान लिया कि मैंने पहिले भी इस देशको देखाहै और उसके वर्णन ऐसे थे कि मुझे अच्छी तरह निश्चय होताथा कि जो कुछ वह कहताहै देखकर कहता है दोबेर और भी अपने आप ऐसीही दशामें प्रवेश कर गया और उस दशामें वैसाही हाल बर्णन किया जैसे पहिले कहाथा परन्तु इस देशका हाल उसको सिवाय उस चौथी दशाके और किसी दशा में याद न आताथा बरन जब उसको साधारण आकर्षणकी दशाहोतीथी और मैं उससे कफ़रीरयाका हाल पूछताथा तो उसको समझ में कुछ भी न आता था और जब मैं उससे कहता था कि तुम कभी हब्शके देशके दक्षिणकी ओर भी गये तो वह कहता था कि आप मुझसे ठट्ठा करतेहैं ॥

यहतीन अवलोकन जो हुये अर्थात् पहिले (र) का दूसरा यूनानके बाग़ और वैद्यका और तीसरा कफ़रीरया का इनकी सत्यता तो मालूम नहीं होसक्तीहै परन्तु जबमैं यह शोचताहू कि जब कभी लामको मैंने दूर देशोंमें भेजाथा तो उसने उनका ठीक २ हाल बताया चाहे वह उन शहरों को नहीं जानताथा तो मुझे निश्चय होताहै कि यह उसके अवलोकन भी सत्यहोंगे बड़ी तमाशेकी यह बात होती कि मुझको लामकी परीक्षा और

अधिक अवसर मिलता परन्तु पहिले कह चुकाहूं कि इस मनुष्यको बहुत पढ़नेसे हृदयका रोग होगया था और कई सप्ताह पर्यन्त वह बीमार रहा इससे अधिक परीक्षाकी अवसर न मिली और जबउससे आराम हुआ तो उसके स्वभावपर पहिलेकीतरह बहुत प्रभाव नहीं होताथा परन्तु इतनीबात अवश्यहै कि मैंउस पर क्रियाकर सक्ताहूं परन्तु उसके आराम होने के पीछे केवल दो बेरऐसा संयोगहुआ कि वह(र)कोदेखसका—कदाचित् परिश्रमऔर दृढ़ताकेसाथ फिरउसमें यह परोक्षदर्शित्वअवस्थाप्राप्त होजावे मुझसे लाम कईबेर कहतारहाहै कि तुमको एकप्रकाशमान मुख्यदशा प्राप्तहोगी और उसकी बीमारीसे पहिले जो मैं उसपर क्रिया करतारहा तो उसके प्रकाश में अवश्य वृद्धि होतीरही है ॥

सैंतीसवां दृष्टान्त—एक मनुष्यको कभी२ अपने आप परोक्षदर्शित्व अवस्था प्राप्तहोजातीथी मैं पाठशालामें पढ़ारहाथा कि एकबेर उसनेकहा कि आपकी गाड़ीआईहै मुझे निश्चय न हुआ क्योंकि मैंने एकघंटेपीछे गाड़ीके आनेकीआज्ञादीथी परंतु उसनेकहा कि मैं केवल गाड़ीहीका आईहुई नहींदेखताहूं बरन यहभी देखताहूं कि एक नौकर आपसे यह कहनेको आता है कि गाड़ीआगईहै दोमिनट पीछे वास्तवमें एकनौकरने आकर कहा कि गाड़ी आई है भूलसे एकघंटे पहिले गाड़ी आगईथी—एकदिन उसनेकहा कि मैं अपने चचाको अमुक स्थानमें देखताहूं और वह मेरेनाम पत्रभेजरहेहैं—उसने फिरकहा कि मुझे पत्रके आनेकी आशा नहींथी बरन मैं अपने चचाके नाम पत्र लिखना चाहताथा परन्तु जो पहिलेही डाक उस ओरसेआई तो पत्रआया उसने पाठशाला में बैठेहुये कईबेर मुझे बताया कि मेरेघर में क्या होरहाथा यद्यपि मैं सदा उसके दर्शन की

परीक्षा नहीं करसका परन्तु जितनी बेर मालूम किया तो जो कुछ इसने मनुष्योंके आने और उनकी संख्या और और बातें बर्णनकीथीं वह सबठीकपाईं एकबेर उसने अपने आप एकसमुद्रके तटका शहरदेखा और वहांके ओर पासका बर्णनकिया और जब मैंने खोजकिया तो उसका वर्णन ठीकपाया यहां तो पहिले वह डरनेलगा कि अबमैं घरको क्योंकरजाऊंगा क्योंकि वहां किश्ती नहींहै एकबेर और उसने अपने आप एक सड़क देखी कि उसके दोनोंओर बड़े२ वृक्ष हैं और सड़क के शिरेपर एक बाग़देखी कि उसके साम्हने रिसाले के सवार फिर रहे थे और सवारों के बस्त्र भी इंगलिस्तान के सेनासे नहीं बताये वरन प्रूसकेदेशसे बतलाये मुझको यहनहींमालूमहै कि उसने यह बाग़ क्योंकर देखी क्योंकि मुझको ऐसी बाग़ की खबर नहींथी सो उसने मेरे बिचारके मालूम करनेसे यह बाग़ नहीं देखी मुझको यह शक्ति नहींथी कि जब उसपर क्रिया करता था उसको परोक्षदर्शित्व दशा उपजआवे पर बहुधा उसमें यह दशा उपजती थी परन्तु किसी समय जहां मैं चाहता था उसको भेज देताथा और कईबेर जब मैंने उससे पूछा कि अमुक घरमें जो मेरे एक मित्रकाथा क्या होरहाहै तो उसने सबहाल ब्यौरेवार ठीक बताया इस मनुष्य ने मुझ से बहुधा कहा है कि मैं लोगोंको और चीजोंको साफ नहीं देखताहूं कुछ अंधेरा देखताहूं परन्तु मुझे निश्चय है कि जो उसपर परिश्रम किया जावे तो वह साफ देखने लगेगा॥

अड़तीसवां दृष्टान्त—अब जो दृष्टान्त मैं लिखताहूं उसका हाल मैंने एकस्त्री से सुनाथा और उसने मुख्य उन मनुष्यों से सुनाथा जिनको उसकी परीक्षा हुईथी एक साहब कलकत्ते में नौकर थे उनकी स्त्री इंगलिस्तानकोगईथी और मार्गमें जहाज

में थी उन्होंने कलकत्तेमें एकपरोक्षदर्शक से पूछा कि इससमय अमुक जहाज़ कहां है उसने बताया कि इस समय वह जहाज़ अमुकद्वीप के निकट है और कहा कि आज का दिन इसद्वीप के स्थानपर अच्छा प्रकाशमान नहीं है और वहां बादलसाहो रहाहै—साहब ने गुप्तदर्शकसे कहा कि तुम हमारी स्त्रीके कमरे में जाओ और देखो वहां क्याहोरहा है पहिले तो गुप्तदर्शकने न माना कि स्त्री के घरमें बेख़बर जाना अच्छानहीं परन्तु जब साहब ने ताकीद की तो वह कमरे के अन्दर गया और कहा कि असबाब उसकमरे में बिखरापड़ा है और उसके अन्दर दो स्त्रियां बैठीहुई बातें करती हैं जिसस्त्रीके देखने को वहगया था उसकास्वरूप डौल और वस्त्र सब ब्योरेवारबताये जो जहाज़ का कप्तान था उसने अपने रोजनामचे में जब इस गुप्तदर्शक के वर्णन का मिलान किया तो उसका वर्णन ठीक मालूमहुआ जहाज़ कलकत्ते से ३फरवरी सन् १८५० ई०को रवानाहुआ था और इंगलिस्तान में ६–जूलाई तक नहीं पहुँचा था किसी कारण जहाज़सुस्तचला और जिस समय में वह इसद्वीपतक पहुँचा जहां गुप्तदर्शक ने उसे देखा था उससमय उसको इंग-लिस्तानमें पहुँचना चाहिये था इस गुप्तदर्शक ने उस स्त्री को पहिले कभी नहींदेखाथा और एक औरस्त्रीके वर्णनसे जो उसी जहाज़ में सवार थी मालूमहुआ कि वास्तव में उस साहब की स्त्री थी कमरेमें असबाब सदा बिखरापड़ा रहताथा॥

उन्तालीसवां दृष्टान्त—मैं ऊपर लिखचुका हूं कि मेजरबि-कलीसाहब साधारण चैतन्यदशामें गुप्तदर्शन की दशा उपजा देतेहैं परन्तु अब यहबात भी लिखनी चाहिये कि उक्त साहब स्वप्नदशामें भी गुप्तदर्शन उपजादेते हैं मेजर बिकली साहब ने मुझेएकपत्र इसविषयमेंलिखाथा उसकासंक्षेप नीचेलिखाजाता

है ऊपर लिखा गया है कि इंगलिस्तान में रीति है कि मेवे के छिलके जैसे रीठेके अन्दर लेख बन्दकरके दूकानदार बेचते हैं मेजर बिकलीसाहब ने एकस्त्री परक्रियाकी और उसकी निद्रा दशा में गुप्तदर्शक की शक्ति प्राप्त होगई और जबयह स्त्री सो जातीथी तो कियेहुये लेख पढ़लियाकरती थी और दूरसेपढ़ती थी चाहे वह लेख मेजर बिकलीसाहब के पासहो चाहे न हो एक और स्त्रीने अपने मकानमें एकसन्दूक के अन्दर ऐसा लेख बन्दकरके मेजरबिकलीसाहब से कहा कि अबउसस्त्रीसे उसको पढ़वाइये उस स्त्रीने मेजर बिकलीसाहब की आज्ञा से उस लेखको इसतरहपर पढ़लिया कि वह आप अपनेघरमेंथी और वह लेख दूसरी स्त्री के घरमें और वह स्त्रीभी जिसकेघरमें वह लेख था अपनेघरमें न थी मेजर बिकलीसाहब को भी उसलेख का हाल कुछ मालूमनहीं था कि क्या थी फिर मेजर बिकली साहब ने गुप्तदर्शक से कहा कि एकदूकान में हमनेसुनाहै कि बन्दकियेहुये लेख बिकतेहैं तुम उसदूकानमें जाओ औरदेखो कि कोई नयालेख वहां मिलेगा कि नहीं उस दूकान में उस समय तक न कभी मेजर बिकलीसाहब गयेथे न परोक्षदर्शका गई थी परोक्षदर्शका ने कहा कि मैं वहां कई लेख देखतीहूं मेजर बिकलीसाहब ने कहा बहुतहैं कि थोड़े उसने उत्तरदिया नहीं छटांकरीठों में केवल तीन नयेलेख मिलेंगे मेजर बिकली साहब ने पूछा कि तुमको अच्छीतरह निश्चयहै कि वहनवीन लेखहैं धारकाने उत्तर दिया कि अच्छीतरह से निश्चयहै एक उनमेंसे वह लेखहै जो मैंने अभी उस स्त्री के घरमें रक्खाहुआ पढ़ाहै मेजर बिकलीसाहब ने कहा कि जो मैं छटांकरीठे मोल लूं तो उसमें तीन नवीनलेख अवश्यमिलेंगे उत्तरदिया अवश्य मिलेंगे और जिसका मैंने अभी वर्णनकिया है वहभी उनतीनों

में होगा मेजर बिकलीसाहब उसे सोताहुआ छोड़कर उस दूकान को गये और अठारह रीठे छटांकभर के मोल लाये और सबपर एकचाकू से चिह्नकर के परोक्षदर्शका के सामने किये गुप्तदर्शका ने एक की ओर सैनकी और कहा कि इसको खोल उसमें वही शब्द थे जो परोक्षदर्शका ने पहिले बताये थे और मेजरसाहब ने लिखलियेथे और केवल दो और नयेलेख उनमें निकले दूसरेदिन मेजर बिकलीसाहब उसस्त्रीके पासगये जिसने उसलेख को पढ़वाना चाहा था और उसको बताया कि परोक्षदर्शक ने यह इबारत पढ़ी है और फिर सन्दूक़ में से जो उसी स्त्री के सन्मुख बन्दकियाहुआ लेखनिकाला और उसको खोला तो वही विषय उसमें लिखाहुआ था॥

चालीसवां दृष्टान्त—एक स्त्री को यहशक्ति थी कि जब कोई लेख किसीसन्दूक़ में बन्दहोता था तो वह जागने की दशामें उसको पढ़लेती थी एकदिन वह मेजर बिकलीसाहब के साथ एकमनुष्य के घरमें पत्रदेने जातेथे यह मनुष्य गायनविद्या में अति बोध रखताथा मार्गमें उस स्त्री ने मेजरसाहब से कहा कि वह अपनाघर छोड़कर कहींचला गया है और उसके नाम का तख़्ता भी उसके दरवाज़ेपरसे हटालियागयाहै जब उसमकान पर पहुँचे तो यहसब हाल ठीकपाया उसघरमें जो और लोग रहते थेजब उनसे पूंछा तो उन्होंने कुछपता नहींबताया कि वह मनुष्य कहां उठकर जा रहाहै उससमय मेजर बिकली साहब ने उस स्त्रीका क्रिया के द्वारा सुलादिया और फिर उसने कहा कि अब उसमनुष्य ने शहरसे बाहररहनेका उद्योग करलियाहै और अपनेकाम के लिये रोज शहर में आयाजाया करेगा॥

इकतालीसवां दृष्टान्त--ल्यूस साहब ने एक स्त्री पर क्रिया की और दूसरी बेर की क्रियामें उसको परोक्षदर्शन की शक्ति

प्राप्त होगई इस दशा में उसने अपने कई सम्बन्धियों को
जो हिन्दुस्तान में यात्राकर रहे थे देखा और उनका बहुत सा
विस्तार पूर्वक वृत्तान्त वर्णनकिया अभी उसकेवर्णनकी सत्य-
ता नहीं हुई जब वह सोती थी ल्यूस साहब ने उससेकहा कि
कल दुपहर के एक बजे पर मैं तुमपर दूरसे क्रिया करूंगा
तुम उस समय मुझे देखना और जो चेष्टा मैं करूं वह मुझे
बताना जब वह जागउठी तो उसको ल्यूस साहबके उस वचन
की कुछ भी ख़बर नहीं रही और किसीने उससे कहाभी नहीं
कि साहब इस तरह कह गयेहैं दूसरे दिन जब एक बजने का
समय हुआ तो वह लिखरही थी उसीसमय उसको नींद आगई
ल्यूस साहब पहिले दिन एक मनुष्यको समझा गयेथे कि जब
एक बजेगा तबदेखते रहना कि उस स्त्रीपर क्या क्रिया होती
है तथाच वह उस समय वहीं था और जो कुछ हाल उस से
मुझे मालूम हुआ है वह मैं लिखता हूं यह मनुष्य उस स्त्रीसे
प्रश्न करता रहा तथाच उस स्त्री ने देखा कि ल्यूस साहब
एक कमरे में बैठेहैं जो असबाब उस मकानमें था वह भी सब
बताया और कहा कि पहिले तो साहब लिख रहेथे और उठकर
कमरेमें कूदते फिरते हैं और विचित्र स्वरूप बनाते हैं जोकुछ
स्त्रीने बताया सब ठीक बताया सिवाय इस बातके कि चमड़े के
सन्दूकको उसने किताब बताया ल्यूस साहब और उस स्त्री
में कई मीलकी दूरी थी और उक्त साहब ने कि जब उन्होंने
समझा कि उक्त स्त्री सोगई होगी स्वरूप बनाने लगे इस इच्छा
से कि वह स्त्री भी वैसेही स्वरूप बनावे परन्तु धारकने उनकी
नक़ल नहींकी परन्तु जो चेष्टा ल्यूससाहब करतेथे उनको यह
स्त्री देखतीथी और यह भी क्रिया होगईथी कि सोभी गई थी
मैं यह नहीं कह सक्ताहूं कि उस समय उस पर दूरसे कुछ

अमल होगया था ल्यूस साहब जो उसको एक दिन पहिले आज्ञा देगयेथे उससे यह प्रभाव होगयाथा इतनी बातमें जानता हूं कि जब वह जागतीथी तोल्यूससाहबके पहिले दिनको आज्ञा का उसको कुछ चेत नहीं था और यह प्रभाव जो उस स्त्री पर हुआ तो तीसरेही वेर उसपर क्रिया हुई थी॥

बयालीसवां दृष्टांत—एक मनुष्य (द) परल्यूस साहबने मेरे सामने और कई मनुष्यों के सम्मुख चौबीसवें दृष्टान्त में मैंलिख चुकाहूं कि शिक्षा कि उसपर कीगई उसका प्रभाव हुआ ल्यूस साहबने उसको मेरी ओर बदल दिया उस समय वह ल्यूस साहबका शब्द नहीं सुनताथा परन्तु जब मैंने उसेफिर उनकी ओर बदला तो उनका शब्द सुननेलगा मैं पहिले भागमें लिख चुकाहूं कि यद्यपि यह मनुष्य उडनबरामें कभी नहीं आयाथा और मुझको भी नहीं जानता परन्तु जब मैंने उसे कहा कितुम मेरे मकानको जाकर देखो तो वह गया और वर्णन किया कि इतने कमरे हैं और अमुक २ सामग्री उस कमरेमें है और एक स्त्री एक नयेसे डोलकी कुरसी परबैठी हुई एक नई किताब पढ़ रहीहै जब मैं अपने घरको लौटगया तो मालूम हुआ कि वह स्त्री वास्तवमें एक कुरसी पर बैठीथी कि उसपर वह कभी बैठतीहै और एक नई किताब उसके पास आई थी और उस किताबको पढ़रहीथी सिवायइसके मैंने यहभी देखा कि बहुतसी चीज़ें (द) ने ऐसी बताईं जिनकी ओर मेरा ध्यान भी नहीं था और बहुतसी ऐसी चीज़ें न बताईं जिनको मैं चाहताथा कि वह देखे और बतावे इससे सिद्ध होताहै कि मेरे विचारके साथ (द) को संयोगनहींथा जब (द) ने मुझसे कहा कि मैं आपके घरको ढूंढ़कर वहां जाऊंगा उससमय मैंने यहभी नहींबताया था कि मेरामकान कौनसे बाज़ारमें है थोड़ी देर पीछे उसनेकहा कि

मैं राजकीय चिकित्सालय मेंहूं मैंने कितनाही चाहा कि उसका ध्यान चिकित्सालय की ओर न लगे परन्तु जबतक उसने वहां का सब हाल वर्णन नहीं किया तबतक वह वहांसे अलग नहीं हुआ मैं इसका कारण नहीं बता सक्ताहूं कि उसको चिकित्सालयकी ओर ध्यान क्यों हुआ प्रायः यह कारणहो कि दिनके समय उसने कुछ उसका वर्णन न सुना हो परन्तु वह चैतन्य अवस्थामें कभी पहिले वहां नहीं गयाथा उसने उसचिकित्सालयका यह हाल वर्णन किया कि दोआदमी एकको नहलारहेहैं और फिर सीढ़ीपर चढ़गया और जितनीरोगियोंकी चारपाइयां वहांबिछी थीं सब गिनकर बताईं फिर वह चिकित्सालयमें से निकलकर मेरा मकान ढूंढ़कर वहांपहूंच गया इसबेर(द)परोक्षदर्शकबन गयाथा और उसकी दशा बहुत प्रकाशमान नहीं थी परंतु फिरल्यूस साहबने देखा कि उसको परोक्ष दर्शित्व शक्ति अच्छीतरह प्राप्तहुई थी यह परोक्षदर्शक ल्यूससाहबके कहने से जीही जी में उस जगह गया जहां उनकी माता रहती थी ल्यूस साहबके पास उनकी माताकी ख़बर कई वर्षसे नहीं पहुंची थी परोक्ष दर्शकने कहा कि तुम्हारी माता जीतीहै और उसी घरमें रहतीहै और उस ओरसे आपके पास थोड़े दिनोंमें एक पत्र आवेगा और वह पत्र मार्गमें है और वह पत्र एक मनुष्यकी ओरसे आवेगा जो बहुत बीमारहै और यहभी कहा कि ल्यूस साहबने एक पत्र अपनी माताको लिखाहै और वह पत्र जल्दी उनकी माताके पास पहूंचेगा और ल्यूस साहबको एक घरकी खबर ऐसी दी जो उनके मतलब कीथी जो कुछ गुप्तदर्शक ने बताया था ठीकथा ल्यूस साहबको वह पत्रमिला और खोजने पर सूचित हुआ कि उनकी माता भी जीतीहै और जहां परोक्षदर्शकने बताया था वहीं रहती है और जोकि ल्यूस

साहबको खबर नथी कि उनकी माता जीतीथी नहीं उनके रहने की जगहमालूमथी परंतु जो पत्र उन्होंने लिखाथा वह उनकी माताके पास पहुंचगयाथा ॥

तैंतालीसवां दृष्टांत--ल्यूससाहब ने एकस्त्री पर जिसकी आयु २५ वर्ष कीथी और जिसका नाम (म) था और डाक्टर मकलकसाहब की नौकरथी क्रियाकी यहस्त्री परोक्षदर्शक होगई छठी अक्टूबर सन् १८५० ई० के संध्याके समय उस स्त्री पर ल्यूस साहबने क्रियाकी और उससे कहा कि तुम विलवन को जो जर्मनी का एक नगर है जाओ उस नगर में डाक्टर मकलक साहबकी एक लड़की एक पाठशालामें पढ़ाकरतीथी परोक्षदर्शकने कहा कि इस समय उस जगह रात्रिके पौनेनववजे हैं और मैं देखती हूं कि वह लड़की सोनेलगी है और एककपड़ा जो शरदीकी ऋतुका था उसने उतार कर खूंटीपर रक्खाहै डाक्टर साहब को यह विचार हुआ कि परोक्ष दर्शक ने इस कपड़के विषयमें भूलकी है क्योंकि अभी उस कपड़े के पहनने की ऋतुनहींहै परोक्ष दर्शकने यहभी कहाकि यह लड़की जून या जुलाईके महीनेमें अपने घर लौट आवैगी और फिर विलवनको लौटजावेगी इसको डाक्टर साहबने समझा कि परोक्षदर्शकअशुद्ध कहताहै गुप्त दर्शकने उसस्त्री का स्वरूप भी जो उस पाठशालामें पढ़ाया करती थी ठीक २ वताया और कहा कि इस समय २५ लड़कियां उस पाठशालामें पढ़ती हैं उसने यहभी कहा कि पाठशालाकी लड़कियां दो पहर पीछे डेढ़बजे पर भोजन करती हैं और शराब नहींपीती हैं और एक मुख्य डौलका एक लोटा बताया कि उसमें कुछ पीने की चीज़है और वह पीतीहै गुप्तदर्शकने यहभी बताया कि उसलड़की के कमरे में क्या२ सामग्रीहै और कहाकि कालीन वहएक नये डौलका

बिछाहुआहै परंतु पुरानाहोगयाहै और उसकारंग बहुत लालहै यहभी कहा कि उसलड़की के पास उसकी माता का एक पत्र ४ तारीख को आयाथा और वहलड़की अपनी माताको ६ तारीख को पत्रलिखेगी गुप्तदर्शक ने कहा कि मुझे एक मोटी सी औरतभी दिखाई देतीहै कि उसके बालकाले हैं और एकटोपी कालेरंगकी औअतलसके वस्त्र पहनेहुयेहै और यहभीकहा कि डाक्टर मकलक साहब की लड़कीबहुधा अकेली सोयाकरती है परंतु कभी २ एक और लड़की भी उसकेपास सोयाकरती है कभी२ एक फ्रांसीसी स्त्री गायनविद्याभी सिखायाकरतीहैऔर यहभीकहा कि दोपहरसे पहले डाक्टरसाहब की बेटी गिरजा घरमें निमाज़ पढ़नेगईथी परन्तु वर्षाके कारणदोपहर के पीछे तीसरे पहर फिर गिरजा घरकोनहीं गईथी और यहभी कहा कि इंजीलका अमुक स्थान गिरजा घरमें उसने पढ़ाथा इस गुप्तदर्शक के खोजनेपर सम्पूर्ण वर्णन ठीक निकले पर दोएक जगह भूल की-भूल यह थी कि वह लड़की तीसरे पहर भी गिरजा घरमें गईथी और जो इंजील का स्थान गुप्तदर्शक ने बतायाथा वहींपढ़ा बरन और स्थान पढ़ाथा पर और सबबातें ठीकथीं अर्थात् उस लड़कीने वह कपड़ा जो सरदीकी ऋतुका था इसलिये ऋतु के पहिले पहन लियाथा कि उसदिन वहां सरदी अधिकथी और उसदिन रातको पौने नवबजेही सोये थे और वह गर्म कपड़ा उतारकर उसने खूंटीपर रक्खा और उस दिनसे एकहीदिन पहिले अकस्मात् पढ़ानेवाली ने उससे कहा था कि मुझे कुछकाम है और मैं कहीं बाहर जानेवालीहूं तुम को जून या जूलाई के महीने में अपने घरको लौटजाना होगा जो पढ़ानेवाली का स्वरूप परोक्षदर्शक ने बतायाथा ठीक था खानेका वर्णन जो था वह सब सत्यथा और पानी के बरतन

की सूरत भी वैसीहीथी—और जैसा गुप्तदर्शक ने कालीन की रंगत सूरत और सामग्री बताई थी वैसीहीथी उसलड़की को अवश्य इच्छाथी कि नवींतारीख़को अपनी माताको ख़तलिखे और एक फ़्रांसीसी स्त्री कभी२ गायन विद्या में सन्था देतीथी और उससमय पाठशाला में २५ लड़कियां भी थीं अबदेखना चाहिये कि इसस्त्रीको किसी के विचार के साथ कभी संयोग न था क्योंकि जोबातें उसने वर्णन कीं (जैसे उस लड़कीका जून या जूलाई में अपने घरको लौटआना कि न उस लड़की को एकदिन पहिलेतक ख़बरथी न उसके माता पिता को कुछ इसका विचारथा)ऐसीथी कि कोई भी उसजगह नहीं जानता था सिवाय इसके इस गुप्तदर्शकका वर्णन और(वर्णनका डौल ऐसाथा कि निस्संदेह मालूमहोताथा कि किसी न किसीद्वारा जो कुछ वह कहती है देखकर कहती है इस धारक के वर्णन में कुछ भविष्य दर्शन वा भविष्य कथन भी पायाजाताथा जैसे यहभविष्यअवलोकनथा कि वहलड़की६ तारीख़कोपत्रलिखेगी और अमुक मास में जो आनेवालाथा अपनेघर लौटआवेगी ॥

चवालीसवां दृष्टान्त—(क) जिसका वर्णन होचुका है किसी लेख या वस्तु बिना परोक्षदर्शक होजाता है और कभी२ उस को अपने आप आकर्षण की क्रिया बिना परोक्षदर्शनावस्था प्राप्त होजाती है एकदिन डाक्टर हेडिकसाहबके पास एकपत्र आया कि वह लिखनेवाले के हस्ताक्षर नहीं पहिचानतेथे (क) ने उनसे कहा कि आप अभी इस पत्रको न खोलिये पहिले मैं आपको इस पत्रकाहाल बताऊंगा जो मैंने स्वप्नमें (अर्थात् परोक्षदर्शित्व दशा अपने आप उपजतीथी) देखाहै उसने कहा कि इसमें दोकाग़ज़ हैं उसमें से एककाग़ज़ में एकटुकड़ा लिपटाहुआ है और वह टुकड़ा सादा उस लिफाफेमें है इसपत्र से

सम्बन्ध नहीं रखता एक आदमी औ एकरोना पीटना देखता हूं जब पत्रखोला तो जो (क)ने कहाथा वह सच निकला और पहिलेही फिकरे में एक मनुष्य के आनेका वर्णनथा (क) तो यहस्वप्न उससमय देखचुकाथा जब पत्रके लिखनेवाले ने पत्र का लिखना प्रारम्भ भी नहीं कियाथा तो जोकुछ लेखकलिखना चाहताथा वह उसकी समझमेंही था कि(क) को हाल मालूम होगया और पत्रका लेखक उसस्थानसे दोसौ मीलकी दूरीपरथा जहां (क)था ॥

(क)की यहदशा है कि जबवह आकर्षण स्वाप में होता है तो जो कुछ उसके आगे पीछेहो जिस घरमें वहहो उसके दरवाजे के बाहरहो बतादेता है तथाच एकबेर मैं भी उस घरमें था जहां उसपर क्रिया होरहीथी उसनेकहा कि अमुक२ इतने आदमी बाहर खड़ेहुयेहैं और उनको यह इच्छाहै कि हमसुनें कि मकान के अन्दर क्या२ बिचित्र बातें होरहीहैं जो काग़ज़ छपाहुआ या तसवीर संदूक़में बन्द रक्खी हैतो वह स्वप्न की दशामें उनको देखलेताहै सिवाय इसके मैंनेआप यहपरीक्षायें देखीहैं मुझे अच्छीतरह मालूमहै कि डाक्टर हेडिकसाहब जो परीक्षायें करते हैं वहुत रक्षा और बुद्धिमानी से करते हैं और जो मैं आप भी उन परीक्षाओं को देखता तो जो कुछ वहलिखने पर बर्णन करते मुझे उसमें कभी संदेह नहीं होसक्ता ॥

पैंतालीसवां दृष्टान्त-यह बिचित्र दृष्टान्तहै क्योंकि कारक ने कभो किसी आकर्षण की क्रिया होते नहीं देखीथी केवल पुस्तकें इस विषय की पढ़ीथीं और जब उसने आप परीक्षा करनीचाही तो पहिली बेरही केवल आकर्षण स्वाप उपजाया नहींगया वरन धारक के परोक्षदर्शन की शक्ति भी उपजआई इन पादरीसाहब का नाम गुलमोर साहब है यह साहब बड़े

बुद्धिमान् चैतन्य और प्रतिष्ठित मनुष्य हैं मेरी इच्छानुसार उन्होंने एकपत्र में अपनी परीक्षाका ब्योरेवार वृत्तान्तलिखा है कि वह पत्र उसीतरह नीचे लिखाजाता है इस दृष्टान्त में स्वप्न और गुप्तदर्शन के विशेष इन्द्रियोंका संयोग और संबन्ध भी पायाजाता है यदि जगहहोती तो और बहुत से दृष्टान्तभी मैं लिखसक्ता था कि मेरे बहुत से स्त्री पुरुष मित्रोंने परीक्षायें कीहैं और उनको परीक्षाओं में सिद्धिहोती है परन्तु इसपत्रको एक नमूना समझना चाहिये और इसीपर अनुमान करलेना चाहिये कि जो आकर्षण की क्रियाके वृत्तान्त लिखेगये हैं वह झूठ नहीं हैं ॥

पत्र सन् १८४३ ई० की बसन्तऋतु में मैंने बहुत कुछआत्माकर्षण विद्याके विषयमें पढ़ा परन्तु मैंने कभी किसी मनुष्य पर क्रिया होते नहींदेखी जोकिताबें मैं पढ़ताथा उनकोपढ़कर मुझे आश्चर्य होताथा और मैं कहा करताथा कि हे ईश्वर यह क्याभेद है परन्तु जो कि बहुत धर्मिष्ठ और प्रतिष्ठित मनुष्यों का यह वर्णन है इसलिये मैं अपनेजीमें जानताथा कि कुछ न कुछ बात अवश्यहोगी मेरे विचारमें यहबात नहीं आतीथी कि ऐसे अच्छे२ आदमी सबझूठे हैं मैंने आप परीक्षा करनीचाहा २७ मई सन् १८४३ ई० को मैंने एकस्त्री से जो मेरी नौकर थी कहा कि तुम इसबातपर प्रसन्न हो कि तुमपरक्रिया कीजावे उसने कहा कि राज़ीहूं उसकी आयु १८ वर्षकीथी और उसके बाल और आंखें कालीथीं और बदन पतला था इससे पहिले उसने कभी मिस्मरेज़म (इस क्रिया का नाम) भी नहीं सुनाथा मैंने अच्छे तरह दृष्टि जमाकर सात मिनट तक उसकी दाहनी आंखकी पुतलीकी ओरदेखा और उससे कहा कि तुम मेरीओर दृष्टि जमाकर देखती रहो चौदह मिनट तक

मैं इसतरह देखतारहा और इच्छा थी कि बस अब बंद करदूं कि उसने कि मुझे मेरास्वभाव इससमय कुछबिचित्रसामालूम होताहैइससे मेरेमनको कुछदहृताहुई औ मैं दशमिनटतक और भी उसकी ओर देखता रहा दशमिनटके उपरान्त उसकीआंखें धीरे२ बन्दहोगईं और थोड़ीहीदेरकेपीछे वहसोगई उसकेहाथ और पांव हिलने लगे और कुछ उसको बेचैनी मालूम हुई मैंने उलटी क्रियाकी तो उसने कहा कि अब मेरामन प्रसन्न मालूम होता है और वह बेचैनी भी दूरहोगई उसका शिर भी पहिले इसतरह हिलताथा जैसे कोईऊंघता हो मैंने उससेपूंछा कि अब तुम्हारा चित्तकैसामालूमहोताहै उसनेकहा कि तमाशेका चित्त मालूमहोताहै इसदशामें मैंने उसे४५मिनटतक रहनेदिया मैंने फिर चाहा कि उसपर कयाफ़ेकीविद्याके लक्षणप्रकट करूं परन्तु यहबातन होसकी फिर मैंने एकपरसे उसकीनाक और ओठोंको गुदगुदाया परन्तु उसेकुछभीखबर नहुई फिर मैंने एकभुजाको अकड़ादेनाचाहा परन्तु यहबातभी नहोसकी फिरमैंने उसपरसे क्रियाकाप्रभावउतारलिया औरजबवहजागी तो उसकोकुछभी चेतनहींथा कि निद्रामें क्या२हुआ फिर मैंने जाग्रत अवस्था में उसकेशरीरको थोड़ाही छुआ तो उसको गुदगुदीहोनेलगीयह प्रथमपरीक्षा मेरी इसतरहसिद्धहुई फिर मैं उसपर हररात्रि को क्रियाकरतारहाऔर दिन२उसपरप्रभाव और मेरी क्रियाशक्ति अधिक होतीगई अंतको मैं उसको ६०पल अर्थात् एक मिनट के दो तिहाईहिस्से के समय में सुनादेताथा जब उसपरक्रिया होती है तो जो मैं पानी या नमक या मिसिरी या दूध या और कुछ मुखमें रक्खूं तो चाहे वह और मकान में हो और मैं और मकानमेंहूं तब भी उसको वैसाही स्वाद मालूम होता है जोमैं अपने पांवमें सुई चुभाऊं या कोईबात अपनेशरीरमें से

उखाडूं या कोई मनुष्य कहीं मेरे शरीर में चुटकीले तो उसपर भी ऐसाही प्रभाव होताहै और ठीक२बता देतीहै कि अमुक बातभीहुई है ७ अगस्तको मैंने देखा कि उसमें परोक्षदर्शन की दशा उत्पन्न होगई जब मैंने उससे कहा तो वह वहां गई जहां मेरी माता रहतीथी और उस मकानका स्वरूप और मेरीमाता का रूप और उनके वस्त्र ठीक२ बताये जबवह इस दशामेंथी तो मैंउसेएककमरेमेंछोड़करआपकईकमरोंमेंफिरतारहा और अपने मनमें जब अच्छी तरहसे इच्छाकी कि वह अपने कमरे से मेरे पीछे२ फिरे तो वह सदा आई और मेरे पीछे २ फिरती रही फिरमैं अपने बाग़में गया और यह इच्छाकी कि वह यहांआवे तथाच थोड़ी देर पीछे वह वहां पहुंची मार्गमें सीधी चलतीथी परन्तु धीरे२ और चलनेमें कहीं नहींरुकी मैं यह देखताथा कि जब वह मेरे पास आती थी तो दोनों हाथ उसके आगे के फैले हुयेथे और जब वह मेरेहाथोंसे छूतीथी तो ऐसा छोटासा झिट-का होताथा जैसा कि कोई लोहेकी सुई चुम्बक पत्थरसे उचट कर चिमट जातीहै ८ मार्च सन् १८४४ ई० को मेरे मकान पर कई मित्रोंकी ज्यवनार थी और उस समय मेरे घरपर एक प्रसिद्ध डाक्टरसाहब और उनकी दोबहनें और दो और स्त्रियां और एक मजिस्ट्रेट साहब वर्त्तमान थे उस समय मैंने अपनी धारकापर क्रियाकी और उससे कहा कि अमुकस्त्री जो यहांबैठी है उसके घरमें जाओ उस घरकी दूरी मेरे घरसे एक मीलसे अधिक थी गुप्तदर्शका ने देखा कि उस स्त्रीकी चाकरी बावरची खानेमें बैठीहै और एकऔरस्त्री उसकेसाथहै और जबउससेकहा कि अच्छीतरहदेखकर उसस्त्रीकानामबताओ तो उसने नाम भी बताया तथाच उसकानामसचथा क्योंकि जिसकाघरथा उसने उसकेवचनकोमानाजबउससेकहा कि तुमसकानकेअन्दर जाकर

कमरेमेंजावो तो उसनेजाकर कहाकि वहां अमुक स्त्री बैठीहुईहै वहस्त्रीवास्तवमें उनघरमेंथी औरगुप्तदर्शकानेकहा कि उसस्त्रीके हाथमें एकपत्रहै और वह रोरहीहै जब हम भोजन करचुके तो उस मकान में उठकरगये इसप्रयोजनसे कि देखें गुप्तदर्शक का वर्णन सत्यहै या नहीं वहां जाकर देखा कि वास्तवमें उस स्त्री के पास एकपत्र उसीसमय आयाथा और उसमें लिखा था कि तुम्हारी माता बहुतबीमारहै यहांतक कि उसके जीनेकी आशा नहीं है और तुम जल्दी आजाओ इसलिये वह स्त्री रोरहीहै॥

दूसरी अगस्त को एक जहाज़ बंदरगाह से रवानाहुआ था और दूसरी सितम्बर को मैंने गुप्तदर्शक से कहा कि देखतेरहो कि यह जहाज़ कहांर जाता है उसने देखाकि दरियासे सात मील चलकर वह जहाज एक जगह ठहरा हुआ है एक जहाज़ छोटासा और इस जहाज के साथथा मैंने उससे कहा कि उस दूसरे जहाज़ का भी देखो तथाच उसने देखा कि वह जहाज कुछ औरनीचे दरिया में है और जहाज़ का कप्तान शराब पी॰ रहाहै और एकऔर मनुष्य उसके पास बैठा हुआहै थोड़ेदिनों के पीछे जहाज़का नाखुदाआया परोक्षदर्शका ने कहा यह वही मनुष्य है जो कप्तानके पास जहाज़ के कमरेमें बैठाथा नाखुदा ने कहाकि धुवेंके जहाज़ ने दूसरेजहाज़ को छोड़दियाथा परन्तु कप्तान साहब ने आज्ञादी थी कि इसको कुछदरियाके नीचेले॰ जाओ तथाच परोक्षदर्शकाने यहबात भी देखीथी दूसरी सितं॰ बरको फिर गुप्तदर्शक ने देखा कि उक्तजहाज़ अच्छी तरह चल रहाहै और कप्तान सोयाहुआ है अब उसने कहाकि जहाज़अ॰ मुकस्थानसे आगेनिकलगया परन्तुअबमैं केवल एककुत्ता जहा॰ जपर देखतीहूं यद्यपि जब पहिल जहाज़ चलाथा ता उसमें दो मैं न्तेथे जब कप्तानसाहब थोड़ेसमयमें लौटआये तो उनसे रोज़॰
है जे.

नामचे के अनुसार पूछागया तो उन्होंने कहा कि एककुत्ता ऐसा बीमार होगयाथा कि उसको हमने समुद्रमें फेंकदियाथा ॥

२५—दिसम्बर को एकमित्र (ल) मेरेघरपरथे उन्होंने इस गुप्तदर्शकाकी शक्तिकीपरीक्षा करनीचाही उनकी इच्छाके अनुकूलगुप्तदर्शका उनकेघरमेंगई और देखा कि उनकेपिता अंगोठी पास एक आराम चौकीमें बैठेहुये एक किताब पढ़रहा है यह धारकाकभी उसघरमें नहींगईथी उसने उसघरका स्वरूप और जो सामग्री उसमें थी ठीकर बतादी जितने चिराग़ वहां जलते थे और जो कुछ (ल) कीस्त्रीकर रही थी सब इसने बताया (ल) को निश्चय हुआ किकई बातें जो गुप्तदर्शक ने बर्णन कीं ठीक नहीं हैं परन्तु जबउन्होंने अपनेघरपर जाकर मालूम किया तो बिदित हुआकिजो कुछगुप्तदर्शकाने कहाथा सब सत्यथा उसी दिन (ल)नेमुझे लिखभेजा किपरोक्षदर्शकासे कहो कि अमुक मनुष्यके घरमें जावे तथाच वह वहां गई और वर्णनकिया कि बहुतस्त्रियां और बहुत लड़कियां वहां हैं और उनमें (ल) की बहनें भी हैं (ल) को मैंने कहभेजा कि गुप्तदर्शका यह बात कहतीहै उन्होंने उत्तरलिखा कि हां उसघरमें आजबड़ी ब्यवनारथी औरवहां अनुमान ६० स्त्रियों के थीं और मेरी बहनेंभी वहांथीं जब क्रिया होरही थी मेरे द्वारपर एक ताली बजी मैंने पूंछा कि दरवाज़े पर कोई है उसने कहा हां एक स्त्री आई थी उसको अमुक कमरे में लेगये हैं मैंने उससे कहा कि देखकर उसका नाम बताओ कि वह स्त्री कौनहै उसने ध्यानसे देखकर नामभी बताया जब मैं उस कमरे में गया तो देखा कि वास्तव में वही स्त्री बैठीथी जिसका नाम धारकाने बताया था ॥

एक दिन गरमी की ऋतुमें एक मेरेमित्र (म) और उनकी स्त्री और उनकी बेटियां मेरे मकान पर आये जब वह अपने

घर को लौटजाने लगे तो मैंने उनसे कहा कि आप अपने घर में देखतेरहिये किकल ११ बजे दोपहर से पहिलेवहां क्या २ होताहै और, मैं अपनीधारकाकेद्वारा आपकेघरमें आऊंगा तथाच मैंने ऐसाही किया और दूसरे दिन डाक में उनको लिख भेजा कि आप सब अमुक कमरेमें बैठे थे और वहां अमुकस्थान पर रोशनी जलरही थी और आपकी स्त्री अमुक स्थान में बैठी थी और एक पुस्तक उनके साम्हने रक्खीहुई थी और आपकी स्त्री के शिरपर एक पगड़ी बंधीहुईथी और एक नई डोऊकी पोशाक पहने हुई थी और आप अपने वस्त्रों का वर्णन अमुकस्थान में खड़ेहुये कररहे थे एक लड़की आपकी अमुकस्थान में थी और दूसरी उस जगहथी—और उसकेपास एक चेरीभी थी यहगुप्त दर्शका उसघरमें पहिले कभीनहींगईथी—डाककेलोटनेपर (म) ने उत्तर भेजा कि वास्तवमें हमारी स्त्री उससमय पगड़ी पहने हुईथी परन्तु हमउससमय बांसुरी बजारहेथे और उन्होंने लिख भेजा कि हमको निश्चय नहींहोता कि कोई मनुष्य इतनी दूर से कुछ हाल बतासके मैंने कुछ थोड़ासा हाल लिखाहै जो मैंने आपदेखा और आजमाया मुझको यहबात नहीं मालूम होती कि यह अवस्था क्योंकर उपजती है परन्तु इतनीबात तो मैं जानता हूं कि मैं अपनीआंख से जो कुछ होताहुआ देखूं उसका क्योंकर निश्चय न करूं सिवायइसके कुछमैंनेही यहलक्षण होतेहुयेनहीं देखे सैकड़ों बहुत धर्मिष्ठ और प्रतिष्ठित मनुष्यों ने ऐसे वृत्तान्तोंका वर्णन कियाहै और मेरे विचार में कभी यहबात नहीं आ सक्तीहै कि सबने झूठहीबोलाहै सिवायइसके संसार में जो बातें और चीज़ें देखता हूं सब भेद हैं बुद्धि के विरुद्ध तो नहीं परन्तु मनुष्यकी समझसे बाहरहैं मैं यहबात नहीं बतासक्ता हूं कि मैं बोलता किसतरहसे हूं—और किसतरह देखता और सुनताहूं

परन्तु यहबात तो अवश्य जानताहूं कि देखता भी हूं सुनता भी हूं और बोलताभी हूं इसीतरह मैं यहनहीं जानताहूं कि परोक्ष-दर्शक किसवसीले और किसढ़ किसेगुप्त और दूरकीचीज़ेंदेखता है परन्तु मैं यह जानता हूं कि वह देखता अवश्य है मैं यह बात भी नहींवतासक्ताहूं कि गुप्तदर्शक मेरीइच्छा के क्यों आधीन होताहै परन्तु निरूपायइतनीबातमाननी पड़तीहै कि वहअवश्य आधीन होजाताहै वहुतलोग आकर्षणीयक्रिया पर यह संदेह जमातेहैं कि जो युवास्त्रियों पर क्रियाकीजावे तो उनकेख़राब करदेने का बड़ाभय है मुझको इसबात की परीक्षा नहीं हुई है परन्तु मुझविश्वास है कि यहविचार उनलोगोंका असत्यहै जो युवास्त्रियां क्रियाकीदशामें ख़राबहोसक्तीहैं वह हरदशामेंख़राब होसक्तीहैं परन्तु जो स्त्रियांबास्तव में पतिव्रताहैं उनकीसमझमें कभीकोईबुराबिचार न आवेगा न क्रियाकीअवस्थामेंकभी किसी कारककी कोई वुरीबातमानेंगी जिनकी प्रकृति ख़राबहोगी वह हरदशामें उपद्रवउपजानेवाले बिचारोंको अपने जीमेंआनेदेंगी जो पतिव्रताहोंगी वहकिसीदशामेंभी ऐसेविचारोंकोअपनेमनमें जगह न देंगी इसविषयमें मैं अबआपकोदोबातें याददिलाताहूं जोमैं ऊपरलिखचुकाहूं कि क्रियाकीदशा में धारकको अच्छेर विचार प्रकटहाते हैं आकर्षणीय क्रियासेमनुष्यकी मुख्यप्रकृति तो बदलनहींजाती परन्तु साधारण अवस्थासे कईविचारबहुत बड़ेहोजाते हैं परन्तु जहांतक मुझको परीक्षाहुईहै मैंने यहदेखा है कि जो कुछ भी धारककी प्रकृति में विपर्ययहोताहै तो यह होताहै कि बुराई और झूठमे अधिकग्लानि और भलाई और सचाई की ओर अधिक इच्छाहोजातीहै मैंने क्षुद्रविचारों को कभी प्रकट होतेनहीं देखाहै बड़ेविचारोंको बड़ाहोते देखाहै ॥

छियालीसवां दृष्टान्त–अगलेपत्र में मालूमहोगया कि जो

मनुष्य प्रवीण और चतुरहैं तो जो उनको किसीविषयमेंसंदेहभी हो परन्तु अतिरक्षा और बुद्धिमानीसे परीक्षाकरलेते हैं आपके लिखनेकेअनुसार मैं यहपत्रलिखताहूं अगस्तकेमहीनेतकमुझको आकर्षणीयक्रियाकेवास्ते ग्लानिथी और मुख्यकरकेगुप्तदर्शना-वस्थाके विषयमें तो मुझको बहुतही सन्देहथा मैंने कभीपरीक्षा नहीं कीथी परन्तु तोभी मुझको अति ग्लानि और सन्देहथा॥

अगस्त के पीछे मैं कई मित्रों समेत शटलेंड को गया था और थोड़ेसमय के पीछे मैंने सुना कि वहां एकपरोक्षदर्शक है एक मनुष्यको मैं समय से जानताथा मैंने सुना कि इसमनुष्य पर आकर्षणकीक्रिया का प्रभाव अच्छा होताहै और वह मनुष्य गुप्तबातें अच्छीतरह बताताहै और देखताहै मैंने जब यहसुना तो मुझको निश्चयनहींहुआ परन्तु यह विश्वासहुआ कि गुप्त-दर्शक जो कुछ कहताहै सत्य नहीं कहता है जो जोमें आताहै कहदेताहै तथाच जिसने मुझसे यहबात कही थी उसको मैंने इसीतरह उत्तर दिया और मैंने कहा कि मुझे तब निश्चयहो कि जब मेरे साम्हने क्रिया कीजावे और मैं उसकी परीक्षा जिसतरह चाहूं आपकरूं कारकने कहा कि आपको अधिकार है कि आपहीपरीक्षाकरें मैंने कहा कि मैं ऐसेवर्णन का विश्वास न करूंगा जिसकी सत्यता मैं न करसकूं वरन ऐसीबातेंपूछूंगा जिसकीपरीक्षा उसीसमय होजावे और उस समयकीपरीक्षासे गुप्तदर्शक का सच झूंठ मालूम होजायेगा कारक ने उत्तरदिया कि मैं तो पहलेही कहचुकाहूं कि जिसतरह आप चाहें परीक्षा करलें मुझे भरोसाहुआ और मैंने अपने जीमें कहा कि अब मैं अभी गुप्तदर्शक का झूंठ सूचितकरूंगा उसी समय कारक ने परोक्षदर्शक को बुलाया और उसपर मेरे साम्हने क्रिया की और जब कारक ने कहा कि अब इसपर क्रिया का प्रभाव

होगया मैंने उसको अपनेही विषय में छः प्रश्न लिखकर दिये और आप वहां से चलागया और उससे कहा कि जबमैं लौट आऊंगा तो उनप्रश्नोंकेउत्तर मुझेदेना—प्रश्न यहथे—कि जबमैं वहांसे चलाजाऊंगा तो मैं कहांजाऊंगा मेरेवस्त्र क्या होंगे मैंने अपनेवस्त्रोंको एकमुख्यप्रकारपर उसघरमें से निकलकर बदल डाला एकप्रश्न यहथा कि कहां२ जाकर मैं क्या २करूंगा यह बातेंऐसीथीं कि परोक्षदर्शकसाधारण दशामें कभी न जानसक्ता थान अनुमानसे कुछबतासकाथा जब मैं लौटआया तो मैंनेकहा किउत्तरदीजिये औरजब उन्होंने उत्तरदियेतो मुझको अति आश्चर्य हुआ किसबकुछ परोक्षदर्शकने सत्यकहाथा और जिसपरीक्षासे मैं निश्चयकरके समझा था कि इस परोक्षदर्शक का छल प्रकट होगा उसीपरीक्षाका यहपरिणामहुआ कि मुझकोउसकी सच्चाई मेंविश्वास होगया निदान मैंने इसतरहपर परीक्षाकीथी और ऐसी २ बातेंपूछीथीं कि उनके बतादेने में जो संदेह मुझ पहले था वह बिल्कुल दूरहोगया परन्तु मुझे इतनी परीक्षा पर भी सन्तोष नहींहुआ और भी परीक्षायें मैंने बहुतकीं औरपरिणाम यह हुआ कि मुझको अच्छी तरह निश्चय होगया किवास्तव में धारकको परोक्षदर्शन की शक्तिप्राप्त होतीहै यहतो मैं नहीं जानताहूं कि यह शक्ति धारक को क्योंकर प्राप्त होजाती है परन्तु उसकी प्राप्तहोनेमें संदेह नहीं विस्तारसे लिखनेको तो कईपत्र चाहिये क्योंकि तीन दिन बराबर दो २ घंटेमें परीक्षा करतारहा परन्तु दो हालमें लिखताहूं यह धारक अति दरिद्रीहै परन्तु आरोग्यहै और शिक्षाभी उसकी अच्छी हुईहै यह मनुष्य कभी शटलेंडसे कभी बाहर नहीं गया और जो निकट वर्त्तिद्वीपहैं उनको कभी उसने नहीं देखा एक दिन संध्या को जब उस परोक्षदर्शक पर क्रिया हुई तो मेरे एक मित्रने एक

मुख्यस्थानका जोहीजीमें विचारकिया और परोक्षदर्शकसे कहा कि मेरेसाथ वहां चलो मेरेमित्रने परोक्षदर्शक को उसजगहका नाम बताया न और कुछ पता बताया परोक्षदर्शक ने उस जगह के एकघरका हालबताया और कहा कि उसकेगिर्द बड़े२दरख्त हैं और इतनेकमरे उसमकानमेंहैं जबउससेकहा कि तुम अमुक कमरेमें जाओ तब उसनेकहा कि उसमें एकपुरुष और दो स्त्रियां बैठी हैं और एक स्त्री अमुकस्थान में रक्खीहुई है जब उस मूर्त्ति का अधिक वृत्तान्त पूंछा तो उसने कहा कि यह मूर्त्ति एक पुरुष की है और उसके नीचे एक नाम भी लिखा है और जब उससे कहा कि नाम पढ़ो तो कुछ उसको इसलिये कठिनता हुई कि उसमें अक्षर अच्छे नहीं थे परन्तु उसने नामपढ़दिया यह घर उडनबरामें था जबहम वहांगये तो मालूमहुआ कि उससमय उसघर में अवश्य वही मनुष्य थे जो परोक्षदर्शक ने बताये थे और उस तसवीर पर भी वही नाम पाया था सिवाय घरके मैंने परोक्षदर्शक को और भी घरों और स्थानों में भेजा और उसने सब हाल ब्योरेवार बताया और मुझे निश्चय हुआ किजो कुछवह बताताहै सच कहता है जैसे मैंने उसे अपने घर भेजा और जो हाल उसने वहांका वर्णनकिया इसतरह बताया कि बहुत आदमी जो घंटों उसमकानमें बैठते हैं नहीं बतासक्ते थे जिस २ कमरे में ध्यानकरता था वहीं परोक्षदर्शक जाताथा और सबहाल ठीक २ और सत्य बताता था फिर मैंने उससे कहा कि सरजानफ्रेङ्क्लिनसाहब का हालबताओ उसने दोजहाज़ोंके नाम बताये मुझखेदहै कि जैसा आजकल सरजानफ्रेङ्क्लिनसाहबकी यात्राका लोगोंको ध्यान और चिन्ताहै वैसाही मैंने परोक्षदर्शक से बहुत चिन्ता से हाल नहींपूछा नहीं तो अच्छा होता कि और गुप्तदर्शकोंके वर्णनोंसे इसपरोक्षदर्शक के वर्णन

का मिलान करना जब कभी मैंने इस गुप्तदर्शककी परीक्षाकी तो ऐसीबातोंसे परीक्षाली जिनकी तुरन्त गवाही पहुंच सक्ता था निदान उसने बताया कि सरजानफ्राङ्किन साहब का अमुक जहाज़ अटकाहुआ है जो लोग जहाज़ में हैं जीते हैं परन्तु चिन्तित हैं और जो प्रश्न उनसे उसने किये तो परोक्षदर्शक ने कहा कि जहाज़ के लोग यह उत्तर देते हैं कि हमको बचने की आशा नहींहै परोक्षदर्शक ने कहा कि थोड़ीदूर तक तो जहाज़ के गिर्द पानीहै परन्तु आगेबरफहै और जहाज़ चल नहींसक्ता है—निस्सन्देह इनवर्णनों की सत्यताअभी मालूमनहींहोसक्ती जब कभी में उसओर परोक्षदर्शक को भेजताथा तो वह शीतके कारण कांपता मालूम होताथा और कहताथा कियहां बहुतही शरदी है और भी छोटे २ लक्षण ऐसे प्रकटहुये कि जो उसके शरीर में चुटकी लीजाती थी या कुछ चीज़ चुभाई जातीथी तो उसको कुछ खबर नहींहोतीथी और जब मेरेहाथमें उसकाहाथ होताथा और मेरेहाथ में किसीप्रकारकी चोटपहुंचतीथी तोवह चिल्लाताथा और शोरकरताथा औरजबपांचछःमनुष्योंनेपरस्पर हाथ पकड़लिये और जो सबसे दूरथा उसकेहाथमें कभीचुटकी ली तो उसको अति दुःख होताथा जोकोईमनुष्य कुछ गाताथा तो धारक तुरन्त उसी तरह गाने लगताथा और नक़लकी तरह ऐसी भाषायें अच्छी तरह बोलताथा कि कभी उसनेसुनी भी नहीं थी जब वह जागगया तोउसको उस स्वप्नकाकुछ भी हालमालूम न था एकबेर जब वहजागा तो कुछ उसे खेद मालूम हुआ परन्तु जब उसे पिलाया तोफिर वह चैतन्यहोगया उस समय कमरा गर्म था और जब वह सोया था तो उसपर सूरजकी गरमी और किरनें पड़तीथीं धारकने यहबातकही कि मुझे कभी कुछआकर्षणकी क्रियासे मालूम नहींहै परंतु कभी२

मेरी स्त्री यह बात कहा करती है कि जब तुम्हारे ऊपर क्रिया होतीहै और फिर तुम उसके उपरान्त जागतेहो तो जिस तरह पहले बहुत बातें किया करतेहो इस तरह नहीं कियाकरते हो यह बात कहनी उचितहै कि इसधारकने दोएक भूलेंभीकीं प-रंतु इनभूलोंके करनेहोसे यह बात सूचित होतीहै कि जो और बातें उसने कहीं उनमें कुछ छल न था ऐसा कौन मनुष्यहै जो भूल नहींकरताहै जैसे एकभूल उसनेयहकी कि जबमैंने उससे कहा कि तुम अमुकमनुष्यकोदेखो तो उसनेकहा किवह मज़-दूरोंसे अमुककार्यबनवारहेहैं यद्यपि दूसरामनुष्य मज़दूरोंका देखभाल कररहाथा परन्तु यह दोनों मनुष्य ऐसे मिलते हुयेथे किजोलोगउनको जानतेथे उनकोभीउनकेस्वरूपोंकीकठिनतासे अंतर मालूमहोताथा इसगुप्तदर्शकने एकऔरभूलभीकी कि उस भूलके होनेकाकारण मुझे मालूम नहींहोताहै २१ दिसम्बर को परोक्ष दर्शक ने मेरे मकान को देखा औरअपने कारक से कहा कि उसघरमें अमुकमनुष्य बैठे हैं औरयह २काम करते हैं भूल इतनी हुई जिस दिन परोक्षदर्शक ने उनको मेरे घरपर देखा उससमय वहां कोई नहींथा बरन एक और दिन जो उस समय से तीन सप्ताह पीछेआयाथा वह मित्र मेरे घरपर थे बाकी सब हालठीकथा मुझेयहकारण मालूमनहींहोता कि उसने औरसब बातें ठीक क्यों बताईं और समय में भूल क्यों की यह मनुष्य* अर्थात् धारकअमुकहै और उनकानाम अमुकहै जो किसीमनुष्य कीपरीक्षाकी आवश्यकताहै तोशटलैंडमेंजाकर परीक्षालेवे ॥

एक मनुष्य (न) नामी एक जगह से अपनी दोबेटियों के

*इसका कारण यहमालूम होताहै किपरोक्षदर्शकको उससमय भविष्यअवलोकन दशाथी गत्त वृत्तांत देखनेकी दशा इस लिये नहींथी कि कभी वह लोग पहिले उस घरमें नहींथे परन्तु आगे को आयेथे यह उनथोड़े हेतुओंमेंसे एक भूलका कारण है जिनका मैं ऊपर वर्णन करचुकाहूं ॥

लिये हुई दूसरी जगहको जातीथी और वहां उनको एक बेटा मिलनेवाला था एक स्त्री पर इनमें एक मनुष्यने क्रियाकी और जब वह सोगई तो उससेपूछा कि कोईमनुष्य यहांआनेवाला है कि नहीं उसने कहा कि मैं अपने भाई को आते देखती हूं परन्तु जिस भाई के आनेकी उसको आशा थी और जिसओर से उसके आने की आशा थी वहभाई और दिशा नहीं बताई बरन दूसरेभाई को दूसरीओर से आताबताया और कहा कि वह धुवें की गाड़ी में आ रहाहै और एककिताब गाड़ी में बैठा पढ़रहा है और जो वस्त्र उसके थे वह भी बताये यह हालसुन कर सर्वविद्यमान मनुष्य आश्चर्य्यमें हुये परन्तु उनको और भी अधिक आश्चर्य्य उससमयहुआ कि जब वहीभाई थोड़ीदेरपीछे आगया जिसको उसस्त्री ने आतेहुये देखाथा उसके आनेकाहेतु यहथा कि उसको बीमारीथी और जब उसनेसुना कि मेरीबहनें अमुकस्थान में आनेवाली हैं तो वह अकस्मात् उसजगह इस इच्छा से आगयाथा कि एकको अपनीबहनों में से खबरदारी के लियेलेजाऊंगा पहिले कुछभाई के आने के समाचार नहीं आये थे क्योंकि चलदेने से पहिले केवल एकघण्टा पहिले चलनेका उद्योग किया था सो इसमेंसन्देह नहीं है कि इसस्त्री ने अपने भ्राताको वास्तवमें मार्गमें चलताहुआ देखाथा ॥

जिस मनुष्य से मैंने यह हाल सुना था उसीने मुझसे एक और हालभी कहा और वह यह है कि दो स्त्रियां परस्पर अति प्रीति रखती थीं और दोनोंपर क्रियाहोती थी एक बेर एक स्त्री उनमें से अकस्मात् बहुतरोनेलगी और कहा कि मेरीमित्रापन अर्थात् दूसरी स्त्रीपर इससमय एकबड़ा सङ्कटपड़ाहै उससमय वह स्त्री सौमील की दूरीपर थी परन्तु खोजने के उपरान्त यह वर्णन इसस्त्रीकाठीकमालूम हुआ ॥

अड़तालीसवां दृष्टान्त—— मैं उनलोगों के नाम तो नहीं जानताहूं जिनका यहवर्णन है परन्तु इसहाल के ठीकहोने में कुछसन्देह नहींहै एकयुवा स्त्रीपर जब वहअपने घरसे बाहरथी क्रियाहुई और उससेकहा कि तुमअपने पिताकेघर को जाकर देखो तथाच उसनेदेखा कि डाकवाला एकपत्रदेरहाहै और यह पत्रमेरे नामकाहै और अमुकस्थान से मेरेभाईकी चिट्ठीआई है जब वहजागी तो उसकोउसपत्रका ध्यान भी नहींथा जबउससे पूछा कि तुम्हारा भ्राताकहां है तो उसनेकहा कि अपनेपुत्र के साथ अमुकस्थान में दशदिन हुये गयाहै तो यह बिचार किया गया कि यहस्त्री स्वप्न की तरह किसी पहिले खतकोदेखती है परन्तु जबवहघरगई तो मालूमहुआ कि वास्तवमें पत्रआयाथा और उसकाभाई ऋतुके तीक्ष्ण होनेसेफिर उसीजगह आगया था जहां से दशदिन हुये पहिले चलागया था और वहपत्र उस जगहसे लिखागयाथा ऐसे २वृत्तान्त बहुधाहोतेहैं परन्तु जितने दृष्टान्त मैंने लिखे हैं इस बातके सूचितहोनेके लिये बहुतहैं कि धारक आकर्षणकी क्रियामें बहुधा किसी न किसीद्वारा जिसको हम नहीं बतासक्ते हैं गुप्त मनुष्यों और परोक्षवस्तुओंको देखते हैं और जो काम वह लोग उस समयकरतेहैं ठीक२बतादेतेहैं॥

उनचासवां दृष्टान्त—एक युवा स्त्री पर जिसकी आयु सत्रह वर्ष की थी ल्यूस साहब ने क्रिया की और जब उसको गुप्त दर्शनकी अवस्था प्राप्त होगई तो उससे कहा कि तुम नई दुनिया को जाओ तथाच वह ल्यूस साहबकी आज्ञानुकूल न्यू-योर्कको जो नई दुनियामें एक शहर है गई और वहांसे* नयागारानदीपर गई नयागारा नदीपर जाकर पहिले तो वहबहुत

*नया गारा नईदुनियामें एकदरियाहै एक पहाड़ बहुत ऊंचाहै उसके ऊपरसे यह दरिया कई सौ फुट नीचे गिरताहै और उसके गिरनेकी आवाज़ कई कोसतक आतीहै॥

डरी परन्तु फिर वहांका पानी गिरता हुआ और उस स्थान की महिमा देखकर अति प्रसन्न हुई और सब हाल पानी के गिरनेका ठीक २ बताया और फिर जो पुल पानी के गिरनेपर था उसको देखा और बताया और पुलपर खड़ेहोकर जो बहार दिखाई देतीथी उसका सब हाल वर्णन किया फिरउसे बकलू शहरमें भेजा उस शहरको बहुत गन्दादेखकर अति ग्लानिकी वास्तवमें वह शहर बहुतगन्दाहै फिर उसे वोज़ोल के बाज़ारमें भेजा वहां पहुंच कर वह अति दुःखी हुई और उसको बहुत ग्लानिहुई इस शहरमें लोग गुलामकी तरह विकतेहैं इंगलिस्तानमें गुलामोंका वेचना बिल्कुल मनाहै इसलिये उस स्त्रीको गुलामोंके बिकनेका हाल देखकर ग्लानि हुई फिर उसने एक समाचार पत्रके सम्पादक को देखा कि एक समाचार पत्र पढ़ रहाहै जब इस स्त्री पर क्रिया होतीथी तब एक और स्त्रीपर भी क्रियाकीगईऔर उसनेपहिली स्त्रीके सर्ववर्णनोंकी सत्यताकी॥

पचासवां दृष्टान्त—इटकन्सन साहब ने एक स्त्री पर जो एक डाक्टरकी बेटी थी अमल किया और उसको परोक्ष दर्शन की शक्तिप्राप्तहोगई पर उसकेपिताको निश्चय न हुआ कि उसकी गुप्त दर्शनकी अवस्था प्राप्तहुई उस समय इटकन्सन साहबने उसके पितासेकहा कि जब आपअपने घरजावें तोअमुकसमयमें जोचाहें आपकरें यहस्त्री क्रियाकेसमय अपने घरमें नहींथी जो समय नियत हुआथा उससमय इसस्त्रीपर इटकन्सन साहब ने क्रियाकी और उससे कहा कि तुम अपनेपिताके अमुककमरे में जाओ तथाच जबवहांगई तोउसने अपनेपिता और और मनुष्यों को देखा परन्तु अकस्मात् हँसकर इसस्त्रीने कहा कि मेरापिता क्याकररहाहै एकमेज़पर उसने कुरसीबिछाई और उसकुरसी पर एककुत्ते को बिठादिया है इटकन्सन साहब ने उसी समय

डाक में लिखभेजा कि गुप्त दर्शक यह बात कहती है उत्तर में लिखाआया कि वास्तव में उसकावर्णन ठीकहै ॥

इक्कावनवां दृष्टान्त—इटकन्सनसाहव ने एक स्त्री पर क्रिया की और क्रिया के द्वारा एक ऐसीबीमारी को अच्छा किया जो अति कठिनथी और किसीउपाय से अच्छी नहींहोती थी उस स्त्रीको परोक्षदर्शित्वकी शक्ति प्राप्तहोगई उस अवस्थामें उसने आप अपने बांधवों को देखा कई दिन तक जब उसपर क्रिया होतीथी उसघरको देखाकरतीथी एकबेर उसनेकहा कि अमुक मनुष्य वहुत वीमार है और डाक्टर साहब को भी देखा और कहा कि डाक्टरसाहब अमुक उपाय करतेहैं और चाहे उसका जी उसरोगी के देखनेको नहीं चाहताथा परन्तु रोज़ उसेदेखा करतीथी जवतक कि वहरोगी मरगया मरने के पीछे वहलाश को देखतीरही और जब मुरदागाड़ागया तब तक जो कुछहोता रहा देखतीरही और वतातीरही कि यहहाल होरहाहै जबवह मुरदागड़ भी चुका तब भी लाश को क़ब्र में देखतीरही और जो क़ब्र के अन्दर लाशमें विपर्ययहोतेरहे उनको देखकर वहुत घवरातीरही समय के पीछे उस लाशसे उसका ध्यान हटा जो कुछ बात मालूम होसक्तीथी मालूम करनेपर ठीक सूचितहुई ॥

बावनवांदृष्टान्त—दोस्त्रियांफ्रांसदेशकी राजधानीमें थीं उन्हों नेअपनीएकबहिनकोजोइंगलिस्तानमेंथी लिखा कितुमकुछलि- खकरहमारेपासभेजदो तथाचउसने केवलयहइबारत लिखकर भेजदीकितुम्हारापत्र अतिबिलम्बमें पहुंचाएक परोक्षदर्शक को उन्होंने लिफाफादेदिया उसनेकहा कितुम यह नहींजानतेहो कि यह किसने लिखाहै यहइबारतअंगरेज़ीमेंलिखीहै परन्तु वहु- तमहीन लिखीहुईहै कुछथोड़ीसी इबारतपढ़सक्ताहूं और नहीं पढ़सक्ताहूंक्योंकिबहुतमहीन लिखाहुआहै यहइबारत एकस्त्रीने

लिख कर भेजीहै वह अपने घरमें नहीं है एकउसके पास रहती है वह तुम्हारी बहिनहै तुम्हारी बहिन एक स्त्रीकेपास जिसकी आयु पचास वर्षकीहै रहा करतीहै और समुद्रके किनारेपर एक शहरमें है उसकी आयु अधिकहै परन्तु शरीर क्षीणहै तुम्हारी बहिन बातें बहुत किया करतीहै और वह आरोग्यहै पर आज सुबह दिनचढ़े सोकर उठीथी अबवह कुछपढ़ रहीहै अब उसके पास इस समय दो स्त्रियां और एकपुरुष बैठा हुआहै यह पुरुष उसी मकानमें एक अलग कमरे में बैठा है परन्तु उसका घर नहींहै उस मकान की मालिक जो स्त्री है उसके गोड़ोंमें पीड़ा रहतीहै और मर्द्दन कराया करतीहै तुम्हारी बहिन को परोक्ष-दर्शित्वकीशक्तिकेउपजनेका निश्चयनहींहै तुम्हारीभगिनीफ्रांसी-सी भाषा कम बोलतीहै परन्तु समझलेतीहै उसको मेराप्रणाम कह भेजो और लिख दो कि जो फ्रांसीसी भाषा में कुछ लिख भेजोगी तो उसेमैं पढ़दूंगा ॥

एकबेर एकपत्र किसी मनुष्यके नाम लिखा एक लिफाफेमें बंद करके इन दोनों स्त्रियों ने इस परोक्ष दर्शकके हाथ में रख दिया जब उससे पूछा कि इसमें क्याहै तो उसने कहा कि तुम को इससे कुछ संबंध नहीं है यह पत्र एक स्त्री ने लिखा है जो तुम्हारी बहिनके घरमें रहतीहै और उस ख़तके सरनामे पर उसने एक नामदेखा और कहा कि यह नाम उस मनुष्यकाहै जो मैंने कहाथा कि उस घरमें रहता है जहां तुम्हारी भगिनी रहतीहै करनैल ब्रून साहबने मुझसे कहाहै कि इस परोक्षदर्शक ने बहुत सी घरकी बातें हमको बताई हैं तथाच एक दृष्टान्त उसका नीचे लिखताहूं ॥

तिरपनवां दृष्टान्त—एक मनुष्य एक परोक्षदर्शकसे कुछपूछने आया जब परोक्षदर्शक पर क्रिया होरही थी उसने कहा कि

तुम इसलिये आयेहो कि कुछ चीज़ तुम्हारी जाती रहीहै उसने कहा कि तुम सच कहते हो फिर गुप्तदर्शका ने कहा कि तुम अमुक स्थान में नौकर हो उसने कहा कि सत्य कहते हो फिर परोक्षदर्शकाने कहा कि तुम्हारा एक टोकरा जातारहाहै और उसमें कुछ जानवर थे और उस टोकरे में कुछ जोंकें थीं तुमने अमुक २ स्थान में उसे ढूंढ़ा भी परन्तु कुछ पता नहीं मिला एकमुसाफ़िर जो तुम्हारी गाड़ीमें सफरकरताथा अमुकस्थानमें पहुंचकर इसबातसे बहुत दुःखीहुआ कि जबवह पहले चलाथा तो दोटोकड़े थे और अमुक स्थानमें पहुंचकर एकही टोकड़ारह गया उस समय पूछनेवाले ने अचम्भा करके कहा कि यह विचित्रबात है कि यह परोक्षदर्शक यह सबहाल बताताहै फिर गुप्तदर्शक कहता रहा कि जब तुम्हारी गाड़ी अमुक स्थान में पहुंची तो कोई मुसाफ़िर अमुक २ स्थान पर उतर गये और गाड़ीवान् एक टोकड़ेको लेकर अमुक स्थानपर चलागया और आश्चर्य्यमें हुआ कि यह क्या बातहै कि कोई इस टोकड़े का दावा नहीं करताहै भयके कारण उसने समयतक किसीसे उस टोकड़ेका हाल नहीं कहा वरन तबेले में छिपारक्खा और जब तुमने अमुक स्थान में उसको पूछा तो तुमको पता मिला कि उस टोकड़े का पता नहीं मिलता है चाहे वह टोकड़ा तबेले में रक्खा था थोड़े दिनहुये कि गाड़ीवान्ने उस टोकड़े को अमुक स्थानमें उसदरीचेके नीचे रखदियाहै जोतुम वहां जाकरदेखोगे तो मिल जावेगा परन्तु दोसौजोंकें उसमें मरीहुई मिलेंगी दूसरे दिन वह मनुष्य वहांगया और उसको टोकड़ा मिला और दोसौ जोंकें मरीहुई पाई गाड़ीका मालिक कारक और धारक दोनों का कृतज्ञ हुआ क्योंकि जिस मनुष्य की जोंकें थीं जब पचीस

करदी थी और जितने मोल की वह जोंकें थीं उससे दूने का दावा किया था ॥

सन् १८२५ ई० में इस परोक्षदर्शका की परोक्षदर्शनशक्ति की एक सभा में परीक्षा हुई हरएक मनुष्य को अधिकार दिया गयाकि अपना एक २ मित्र लेआवे तथाच एक मनुष्य एकमित्र को लाया जो एकही दिन पहिले कैलोफोरनिया से आया था और उसको आकर्षण की क्रिया में अति सन्देह था कैलोफोर-नियाके मार्ग में एक जहाज़ जैपान के द्वीपका नष्ट होगया था उसमें से एक टुकड़ा बुतका समुद्र के किनारे पर उछाल से आ-गया था उस मनुष्यने समुद्रके किनारेपरसे उसटुकड़े को उठा लिया था अब उस टुकड़े को उसने अपनी जेबमें रखलिया जब परोक्षदर्शका से उसने पूछा कि मेरी जेबमें क्याहै तो गुप्तदर्शका ने उत्तर दिया कि जैपान के देशके बुतका एक टुकड़ा है और उसपर कुछ इबारतभी खुदी है तुम कैलोफोरनिया में समुद्र के तटपर चलरहेथे वहांसे तुमने उसे उठालियाथा पहिले तुमने उसे समझा कि पत्थर है परन्तु फिर तुम्हें मालूम हुआ कि कई दिन पहिले जो जहाज़ जैपान का उस जगह नष्ट होगया था उसमेंसेयह टुकड़ा एक बुतका किनारे पर आगया है ॥

एकदिन इस मनुष्य ने इस परोक्षदर्शका के हाथ में बहुत मनुष्योंके सभाके अन्तर्गत एकपत्ररखदिया और कहा कि जिस घरमें मेरापुत्र अमुकस्थानमें रहताहै उसमकानका हालबताओ परोक्षदर्शक ने कहा कि उस मकान के हाल बताने के बदले में आपको बताताहूं कि आपका लड़का बहुत बीमार है उसने कहाकि बीमारी क्याहै उसने कहा कि तुम्हारे हाथमें एकपत्र तुम्हारे पुत्रकाहै जिसमें वह लिखता है किमैं कुशल पूर्वकहूंकल तुम्हारे पास उसकी स्त्रीकापत्र आवेगा जिसमें वह लिखेगी कि

तुम्हारा पुत्र बहुत बीमार है मैं तुमको यह अनुमति देताहूं कि जब तुम्हारे पास वहपत्र आवे तो तुम तुरन्त अपने पुत्रके पास चलेजाना क्योंकि जैसा तुम उसके स्वभाव को जानतेहो वैसा कोईनहीं जानता और तुमहीं उसको बचासक्तेहो और कोईनहीं बचासक्ता क्योंकि वह बहुत बीमार है तथाच दूसरे दिन वह पत्रआया और वह मनुष्य अपने पुत्र के पास चलागया और पन्द्रह दिन के इलाज के पीछे उसको अच्छा किया जब यह मनुष्य लौटआया तो शहरमें इसबातका बहुतचरचाहुआ मैंने यह २ दृष्टांत परोक्षदर्शित्व शक्ति के लिखे हैं क्योंकि इनकी सत्यतामें कुछसंदेह नहींहै कभी २ यहधारकाभूलभी करजाती है पर प्रथम भागमें मैं लिख चुकाहूं कि जबभूल होती है तो केवल यहीसूचित होताहै कि उससमय यहशक्ति उसकोअच्छी तरह प्राप्तनहीं है परन्तु जिन वर्णनों के लिये अच्छी तरह से गवाही पहुंची हुईहै तो उनके लिये कुछ संदेहनहीं होसक्ताहै यह परोक्षदर्शका जो भूल करतीहै तो उसकाकारण यह मालूम होताहै कि बहुत लोग जो उसकेपास खड़ेहोतेहैं उनके प्रभाव से उसको परिश्रमभी अधिक होता है और इसी से भूल भी होजाती है ॥

आकर्षण स्वापावस्थामें अपने शरीर के अंदर के चीजों के देखने और भविष्य वृत्तान्त अवलोकन करने की शक्तिका वर्णन ॥

बहुधा आकर्षणस्वाप में यहप्रभाव प्रकटहोता है कि धारक अपने शरीर के अंदरका हाल बतादेता है जिनलोगों पर मैंने क्रियाकीहै उनमें यहशक्ति मैंने नहीं देखी इसका कारण यह मालूम होता है कि उनमें अभीयह गुरुदशा नहीं उपजी पर (क) को जिसका वर्णन बहुधा इस पुस्तकमें हुआ है यह शक्ति प्राप्तहै वह अपने शरीरके अंदर सम्पूर्ण अंग साफ चम-

कतेहुये और हिलतेहुये देखताहै प्रारंभ में तो जो वहदेखता है उसके देखनेसे वहुत घबराताथा पर पीछे २ भयऔर घबराना वन्द होगया मैंने उसको ऐसीदशा में नहीं देखा है परन्तु जो डाक्टर हैडकसाहब उसके कारक ने इस विषयमें वर्णनकिया है उसपर मुझे विश्वास है और भी कई धारकों का हाल इस तरह का लिखा है परन्तु मैं केवल (क) काहाल लिखता हूं क्योंकि इतने विस्तार की समाई नहीं है ॥

चौवनवां दृष्टांत--धारक को जोअपने शरीरकेअंदर का हाल देखने की शक्ति है उससे मिलीहुई वह शक्ति होती है जिससे धारक उन लोगों के शरीर के अन्दर का हाल बताता है जो उसकेसाथ संयोग कियेजातेहैं इसजगहमैं एकदृष्टांत लिखता हूं जिसमें (क) ने यहहाल दूरसे बताया – उन्तीसवें दृष्टांतमें मैं लिख चुकाहूं कि (क) ने मेरे पुत्रको बोलटिन से उडनबरा में देखाथा यहबात अक्टूबर के महीने में हुईथी और मेरे पुत्र के लेख के द्वारा (क) ने हाल बताया था जनवरी के महीने में उसको कुछ ब्रह्माण्ड की बीमारी होगईथी जब वह बीमारथा तो मैंने एकपत्र में जो डाक्टर हैडकसाहब के नामलिखा था यह वर्णन लिखदिया कि मेरापुत्र मांदा है परन्तु यह नहीं लिखाथा कि क्या बीमारी है जब (क) ने पहिली अक्टूबर में मेरे लड़के को देखाथा तो उसको एक प्रकार की प्रीति उसके साथ होगईथी डाक्टर हैडकसाहब ने (क) से कहाकि बताओ तो वह लड़का कैसाहै उससमय कोईलेख उस लड़के का (क) के पास न था परउसने उस लड़के को ढूंढ़कर देखलिया और चाहेडाक्टर हैडकसाहब ने उसको बीमारीका कुछवर्णन नहीं कियाथा परन्तु (क) ने कहाकि वहलड़का बहुत बीमारहैजो २ लक्षण बीमारी के थे सब उसने विस्तार से वर्णनकिये जैसे मैं

लड़के के पास बैठकर बताता और कहा कि उसने पढ़ा बहुत है इसलिये उसे यहरोग होगयाहै मैंनेरोगका प्रारंभ देखकर उसका पढ़ना लिखना कमकर दियाथा तो चाहे वह कमभी पढ़ताथा तौभी उसको यहरोगहोगया(क) ने बताया कि ब्रह्माण्ड के पट्ठों और नाड़ियों में अमुक २ उत्पातहैं औरजबउसके वर्णनको एक डाक्टर साहब के रूबरू वर्णनकिया तो उन्होंने कहा निस्संदेह यह उपद्रवठीक मालूमहोताहै॥

एकदिन गुप्तदर्शकने अपने शरीर के एक अंगकाहाल और उसअंगका स्वरूप और रोगकी दशा इसतरह पर वर्णन की कि आंखसे वह जोड़ दिखाई नहीं देता है और अवश्य है कि जो कुछ उसने वर्णनकिया सत्यहोगा॥

मैंने भविष्य अवलोकन का प्रभाव प्रकट होते बहुत बेर नहींदेखाहै यह लक्षण बहुत कम उपजताहै मैंने पहले भाग में इसशक्ति के लक्षणों के उपजने के रूपलिखेहैं परन्तु बहुधा यह शक्ति इस तरह उत्पन्न होती है कि धारक बतादेताहै कि किस समय उसपर क्या दशाहोगी और यह भी बता देताहै कि अमुक समय जो अमुक अवस्था उपजेगी तो उसके पीछे भी कभी फिर होगी या न होगी दूसरी सूरतयहहै कि धारक बता देताहै कि मैं अमुक समयतक सोऊंगा और यहभी बता देताहै कि कब प्रकाशमान दशा या और कोईशक्ति प्राप्तहोगी जामने मुझसे कहाथा कि जब इतनी बेर मुझपर क्रिया होगी तो मुझको अच्छी तरह प्रकाशमान दशा प्राप्त होगी मैं यह तो पहिले कह चुकाहूं कि वह ठीक २ नहीं बतासक्ता था कि कितनी बेरकी क्रिया में यहबात होजायेगी परन्तु ज्यों २ उस पर क्रिया होतीगई त्यों २ उसकी प्रकृति अधिक प्रकाशमान होतीगई मैंने उसपर अनुमान ४५ बेरके क्रिया की प्रायः जो

इससे आधी बेर और क्रियाकीजाती तो वह प्रकाशमान दशा प्राप्त होजाती और मुझे आशा थी कि धारक आगे ठीक २ बतावेगा कि कितनीबेर की और क्रिया में गुरु दशाउपजेगी परन्तु एकही बेर वह बहुत बीमार होगया और फिर क्रिया करनेका अवसर न रहा और जबवह बीमारी से अच्छाहोगया तो जैसा उसकास्वभाव पहिले अंगीकारकर्त्ता था वैसा न रहा सो अब फिर मुझे प्रारंभसे क्रिया करनी होगी॥

कई परोक्षदर्शकों को यह शक्ति प्राप्त होतीहै कि वह बता देतेहैं कि हमपर कब और क्यादुःख पहुंचेगा तथाच एकपरोक्ष-दर्शकने कईदिन पहिले दुःख पहुंचनेसे पहिले बता दियाथा कि अमुक दिन मैं गिरजा घरसे निकलते हुये सीढ़ियों परसे गिर-पडूंगा और जिन लोगों को अपने आप लघु वा गुरु इन्द्रिय वैकल्य दशा प्राप्त होजातीहै वह उस अवस्था के उपजने का समय पहिले बता देतेहैं जब मैं इन्द्रिय वैकल्य दशाका विषय लिखूंगा उसमें इस प्रकारका संक्षिप्त वृत्तान्त लिखूंगा और दूसरे मनुष्यों के वृत्तांतके विषय में भविष्य बहुत कम होताहै और जिनलोगों पर मैंनेआप क्रियाकीहै उनमें मैंने यहशक्ति प्र-कट होते नहीं देखीहै परन्तु ऐसी दशाके उपजनेके बहुतसे वर्णन लिखे हैं मेजर बिकली साहबने मुझेखबरदीहै हमने ऐसेप्रभाव बहुधाहोते देखे हैं और नीचेलिखे हुये दृष्टांत जो मैं लिखताहूं उनकेही बताये हुयेहैं॥

पचपनवांदृष्टान्त—एक युवा स्त्रीपर जब लण्डन में क्रियाहुई तो उसने शहरके बाहर अपने माता पिताके घरको देखा और कहा कि मेरेएक छोटे भाईको रक्तपित्त रोग उपजा है और जब उससे पूछागया कि तुम्हारी छोटी बहिनको तो यह रोग नहीं हुआ तो उसने कहा कि नहीं परन्तु उसको खानेवाले दूधको

होगा और मेरीबड़ी बहिनकोभी होगा परन्तु आगेके आगे जो बुधआवेगा उसदिनहोगा यहसबबातें ठीकनिकलीं॥

छप्पनवां दृष्टान्त—एकस्त्रीने जो कनैडाके देशमेंथी एकगुप्त-दर्शकसे कहा कि तुम कैबक शहर में जाओ उस समय परोक्ष दर्शकनेकहा कि इस समय मैं नहीं जासक्ताहूं एक और दिनउस पर क्रिया हुई तो वहगया और जिस मकानमें देखनेको उस ने कहाथा वहांके सब मनुष्योंको देखा और उनके सबस्वरूप बताये फिर उस परोक्ष दर्शकने कहा कि यहस्त्री जिसने उससे कैबक जानेको कहाथा बंदलिख पढ़ सकेगी परन्तु आजनहीं और मुझेउससे यह शक्ति पहिले प्राप्त होगई यह दोनों बातें ठीक निकलीं॥

सत्तावनवां दृष्टान्त—एक परोक्ष दर्शकने मेजरबिकलीसाहब से कहा कि जो आप अमुक स्त्री पर क्रिया करेंगे इस तरह पर कि उसके शिरके गिर्दतीनवेर अपने हाथोंको हिलावेंगे तोउस को यह शक्ति प्राप्त होजावेगी कि संदूक़में जो कोई लेख बन्द करके उसके सामनेरक्खाजावेतोवह तीनशब्दपढ़सकेगी तथाच जब उसपर इस तरह क्रियाकी गई तो ऐसाही हुआ और जो लेख उसके आगे रक्खा गयाथा उसमें चार शब्दथे परन्तु वह तीनही शब्द पढ़सकी इस स्त्रीपर पहिले कभी क्रिया नहीं हुईथी मेजर बिकलीसाहब कहतेहैं कि बहुधा उसके धारक ऐसेभवि-ष्यक थनकिया करते हैं अर्थात् पहलेसे बता देते हैं कि अमुक मनुष्य पर अमुक रीतिसे क्रियाकरनी चाहिये और अमुक२शक्ति उनको प्राप्तहोगी औरपरोक्ष दर्शकोंके बर्णनबहुधाठीकहोतेहैं॥

प्रकटहै किजो यहांतक वास्तवमें भविष्य बातेंदेखी जातीहैं तो इससे अधिक भीहोसक्तीहैं इसबातका देखलेना कि अमुक मनुष्यको अमुक समय रक्तपित्त (सुर्खबादप) रोग होगया अमुक

मनुष्यअमुक समयमें बंदलेख पढ़ सकेगा ऐसाही कठिनहै जैसा इससे अधिक और किसीबातका मालूमकरलेना कठिनहै ॥

पहले भागमें मैं लिख चुकाहूं किजो स्वप्न सच्चे होतेहैं वह भविष्य वृत्तांतों के देखनेसे होते हैं इसमें संदेह नहीं कि सच्चे स्वप्न हुआ करतेहैं और उनका कारण यही मालूम होताहै कि बहुधा तो स्वप्न की दशामें और कभी२जाग्रत अवस्थामें भविष्य अवलोकन इसतरहपर होजाताहै कि बाह्येंद्रियोंपरकिसीवस्तु का प्रभाव नहीं होताहै बाह्येंद्रियों का कर्म्म प्रकट होताहै जब मैं ऐसे भविष्य अवलोकनका वर्णन करूंगा जो अपने आपउपजतीहै तोकई दृष्टांत लिखूंगा परन्तु इसजगहमैंनेकेवल उसीभविष्यअवलोकनकावर्णन कियाहै जोआकर्षणस्वापमें उपजतीहै ॥

दोएक परोक्ष दर्शक मैंने ऐसे देखेहैं कि उन्हों ने आकर्षण स्वापमें दोएक व्यवहारोंके लिये भविष्य कथन कियाहै परन्तु वह बातें अभी होनेवाली हैं इस लिये मैं यह नहीं कहसक्ताहूं कि वह भविष्य ठीकहै या नहीं ॥

---*---

अठारहवां पत्र ॥

इन्द्रिय वैकल्य दशा वा स्तब्धदेशा॥

इन्द्रिय वैकल्यदशा जिसकावर्णन पहले भागमें हुआहै उपजतीहै मैंने आपहोते नहींदेखी परन्तु इसके उपजनेके बहुतसे लेख हैं पहिले भागमें मैं लिखचुका हूं कि एकमनुष्य पर यह अवस्था १७ सप्ताहतक बराबररही ब्रोडसाहब ने लिखाहै कि हमको ऐसीदशाके उपजनेकी परीक्षाहुईहै और पहिलेभाग में मैं करनैल टोन्सएड साहबका वर्णनलिखचुकाहूं कि उक्तसाहब जब चाहतेथे अपनेऊपर यहदशा उपजालेते थे हिन्दोस्तान में

बहुतसिद्ध ऐसेहुयेहैं कि अपनेऊपर जब चाहतेहैं यहदशा उप-
जालेते हैं बरन कहदेतेहैं कि हमकोधरतीमें गाड़दो और कई
सप्ताहों बरन कईमहीनोंपीछे उसमेंसे निकालेजाते हैं फ़ांस के
देशमें भी ऐसीदशा एकमनुष्य परहुईहै ॥

गुरु इन्द्रिय बैकल्यदशा ॥

इस दशा के उपजनेकी भी मुझे परीक्षा नहीं हुई है परन्तु
बहुतसे दृष्टान्त लिखे हुयेहैं और(क)पर जिसका वर्णन बहुधा
इस पुस्तकमें हुआहै दोबेर ऐसी दशा प्राप्तहुई इनदोनों दशा-
ओंके उपजनेका समय (क)ने भविष्य वाक्यकी तरह पहिलेसे
बता दिया था और दूसरी बेर जो उसपर यह दशा बीती थी
उसको केवल एक मासहुआ डाक्टर हेडिक साहबने जो (क)
के कारकहैं मुझे इस अवस्थाके उपजनेका हाल लिख भेजा था
उनके लेखसे संक्षेपमें नीचे हाल लिखा जाताहै ॥

अट्ठावनवां दृष्टान्त--सन् १८४८ ई०की गरमीकी ऋतुमें
(क)पर ऐसीगुरु इन्द्रिय वैकल्य अपनेआप होजातीथी पहिली
ही बेर उसपर जूलाई सन् १८४८ ई०में हुईथी फिरवह दशा
हुई कि आकर्षणकी साधारण अवस्थामें (क) बताने लगा कि
अमुक समय मेरे ऊपर यह दशाहोगी और एकबेर उसने उक्त
अवस्थाके उपजनेसे दो महीने पहिले उसके होने का प्रारंभ
बतादिया था जब कभी वह इस तरहसे भविष्य कहताथा तो
वास्तवमें जब वह बताताथा यहदशा उपजआतीथी परजबवह
आकर्षण स्वापसे जागजाताथा तो उसके अपने भविष्य कथन
का हाल कुछ भी याद नहीं रहताथा जब उसपर यह दशा उ-
पजतीथी तो उसको कभी २ उसजगहका चेतरहताथा जहांवह
होताथा औरजोलोग उसके पासहोतेथे वहभी उसेयादरहतेथे
परन्तु उसका मनऐसे अवलोकनों की ओर लगा रहताथा जो

प्रत्यक्ष इसजीवनसे अलगथे और प्रत्यक्षभूतोंको देखताथा जब वह इसअवस्थामें होताथा तो वह कहताथा कि मैं अमुकदशामें गयाहूं मुझेअमुक अवस्था में लेगये हैं और जब वहसाधारण आकर्षणस्वापमेंफिरआजाताथा तो उस इन्द्रियवैकल्य दशाका वृत्तान्तयाद रहताथा आंखें उसकी ऊपरकीतरफ़ फिरी होतीथीं और किसीप्रकारके दुःखकाचेत न होताथा पहले पहल उसके पावँ मुड़सक्ते थे परन्तु फिर उसका सम्पूर्ण शरीर अकड़जाता था जब उससे कोई पूछता था तो छिपीहुई चीज़ परोक्षदर्शन के कारण देखसक्ता था परन्तु ऐसीचीज़ोंपर उसको उससमय कमध्यान होताथा क्योंकि उसकाचित्त बड़ीचीज़ों के देखने की ओर लगारहता था एकबेर जब उसपर साधारण आकर्षण स्वापथा उसने डाक्टर हेडिकसाहब से कहा कि कलरात को एकमनुष्य जो समय से मरगयाहै मेरेपास आवेगा और मुझे एकपुस्तक में कुछ इबारत दिखावेगा और वह मैं आपकेपास लाऊंगा उसके वर्णनसे हेडकसाहब को मालूमहुआ कि (क) एक छोटीतरजी की इंजील का वर्णन करताहै जो हमारे घरमें नहीं है उन्होंने उसपुस्तक को मँगालिया और अपनी पुस्तकों में रखदिया दूसरेदिन रातको (क) मानों ऐसीदशामें जागा जिसे स्वप्नदशा की शयन जागरण कहनाचाहिये और अंधेरे में दोसीढ़ी उतरकर उसपुस्तक को ढूंढ़कर एक मुख्यस्थानपर खोलकर डाक्टर हेडिकसाहबके पासलाया अंधेरेमें वहपुस्तक उसके हाथसेगिरपड़ी परन्तु उसने उसे शिरकेऊपर रखलिया और वही जगह ढूंढ़कर और खोलकर डाक्टर हेडक साहब के साम्हने रखदिया (क) ने कहा कि स्थान मुझे उस मनुष्य ने दिखाया था जिसका मैंने वर्णनकिया था परन्तु जिस पुस्तक में मुझे उसने दिखायाथा वह इससे मुटाईमेंबड़ीथी और उसने

इसपुस्तक का ऐसाहाल वर्णन किया जो केवल डाक्टरहेडक साहबही को मालूमथा (क) को पढ़ना लिखनानहीं आताथा पर उसने कहा कि जब मैं वरक़ उलटकर उसस्थानको ढूंढ़ता हूं और वही स्थान निकलआताहै तो मेराजी यह साक्षी देता है कि बस आगे पत्रे उलटना नहींचाहिये यह परीक्षा बहुधा अन्धेरेमें बराबरहुई और कई महीनेतक यह दशारही कि जब उसपर क्रियाहोती थी तो वहीस्थान निकाल लेता था परन्तु कुछसमय के पीछे फिर यहशक्ति उसमें न रही इसपरीक्षा से प्रकटहै कि जब (क) पर गुरुइन्द्रिय वैकल्यदशा होतीथी तो चाहे उसको पढ़ना लिखना नहींआताथा पर कोईकारण ऐसा था जिससे वह ठीक और मुख्यस्थान मालूमकरलेता था और यहबात उसको अंधेरेमें भी प्राप्तथी जो रोशनी भी होती तब भी उसरोशनी को वहकाममें नहींलाता था बरन उसकी आंखें फिरीहुई और बन्द होतीथीं और वहस्थान केवल इसरीति से निकालताथा कि किताबको अपने शिरपररख कर वरक़ उलटता था यहअवलोकन प्रत्यक्ष उसके गुरुइन्द्रियवैकल्यदशासे सम्बंध रखतेथे जो उसको अपनेआप प्राप्त होजातीथी क्योंकि वही मनुष्य जो उसको उसदशा में दिखाई देताथा सदा उसको इन अवलोकनोंकी अवस्थामें दीखताथा॥

ग्यारहवींदिसम्बर सन् १८५० ई० को जब (क) पर आकर्षण स्वाप उपजती थी उसने भविष्य कहा कि आठवीं सन् १८५१ ई० को मेरे ऊपर इन्द्रिय वैकल्यदशाहोगी और फिर यहबातकही कि सुबहके दशबजेकेसमय यह दशाहोगीसमय से उसपर ऐसीदशाउपजी नथी परन्तु जबसमय निकट आतागया तो उसको कुछ २ गुरुइन्द्रिय वैकल्य दशाप्राप्त होनेलगी और जोकुछ उसघरमें होताथा जहां वहथा उसका कुछ होश नहीं

रहा ऐसा मालूम होताथा कि भूत उसके साम्हने आतेथे और वह उनके देखनेमें लगाथा आठवीं तारीखको १० बजे गुरु इन्द्रिय वैकल्य दशा उपजी और उसदशामें केवल यहीबातनहीं थी कि उसको भूतयोनि दिखाई देतीथी पर जो २ इन्द्रिय वैकल्य दशायें पहिले उसमेंउपजीथीं और उन दशाओंमें जोकुछ उसपर बीताथा वह सब उसको यादआया और दिखाई देता रहा इस बारसे पहिले दोवर्ष से उसपर यह अवस्था नहीं हुई थी इस धारकके वर्णनका विस्तार करना कुछ अवश्यनहीं डाक्टर हैडकसाहबने उसकाहाल व्योरेवार लिखाहै सोयहबात समझनेकेलायकहै कि (क) के अवलोकनअतिस्पष्टहोतेथे और एक अवलोकन दूसरेके अनुकूल होताथा इससे मालूम होताहै कि ऐसी अवस्थामें उसके चित्तको एक मुख्य दशा प्राप्तहोगी बहुधा यहहोताथा कि जोहाल वहभूतयोनिका वर्णन करताथा वह वर्णनके हैंटसाहब के धारकों के वर्णनों से जिनका वर्णन पहले भागमें हुआहै मिलताथा और आश्चर्यकी यहबातहै कि डाक्टर साहब उसको ऐसे व्यवहारोंमें कुछ शिक्षानहीं करतेथे तो यह ऐसीबातहै कि जबतक अच्छीतरहसेखोज न हो तबतक कुछ हालभी स्पष्ट रीतिसे वर्णन नहीं होसक्तापरन्तु इतनीबात तो प्रकटहै कि ऐसे अवलोकनोंका मूल कुछही हो उनके सत्य होने में तो कुछ संदेह नहीं होसक्ता और दूसरे यह बात प्रकट है कि जब ऐसे अवलोकन होते हैं तो परोक्ष दर्शन शक्ति अधिक बलवती होजातीहै तथाच जब (क) गुरुस्तब्ध दशासेसाधारण आकर्पण स्वापमें बदलआताथा तो उसको गुप्तदर्शन की शक्ति अधिक बलवान् होतीथी तो जो वास्तवमें भूतयोनि कुछहै तो सम्भवहै कि ऐसी अवस्थामें भूतयोनिके साथ संयोग होजावे जो कि मुझे आपऐसीअवस्थाके देखनीपरीक्षानहींहुई इसलिये

मैं अन्धकारकोंका वर्णनलिखताहूं पर यहबात प्रकटहै कि जब ऐसीदशावास्तवमेंकिसीमें उपजेतोउसकोध्यानसेदेखनाचाहिये इससे ऐसेप्रभाव का मुख्यमूल मालूम होसकेगा और कदाचित्त यहविचार कियाजावे कि यहबात केवल कल्पनाहै तो कुछ भी हाल मालूमनहोगा जहांतक मुझको परीक्षा हुईहै मुझे अच्छी तरहसे निश्चयहै कि जो २ बातें धारक देखताहै उनमें किसी की शिक्षानहीं है और अन्य २ धारकोंके वर्णनमें ऐसामिलान होता है कि उससे सूचित है कि यह धारकों की कहीहुई बातें वास्तवमें सत्यहोतीहैं धोखानहींहै प्रकटहै कि जब परोक्षदर्शक गुप्तवरन मुंदे आदमियों को देखता है कि उनको कोई विद्य-मान मनुष्योंमेंसे वरन धारकभी नहीं जानता और पीछेखो-जने पर उसका वर्णन ठीक सूचित होताहै तो यह बात कुछ धोखेकी नहीं होसक्तीहै चाहे हम यह नहीं बतासक्ते कि धारक वह बातें क्योंकर देखसक्ताहै ॥

उन आकर्षणके लक्षणोंका वर्णन
जो अपने आप उपजते हैं ॥

मैं पहिले लिखचुकाहूं कि बहुतसे आकर्षण क्रियाके लक्षण अपने आप उपजतेहैं बहुधा लोगोंको अपने आप शयनजाग-रणकी अवस्था उपजतीहै कि साधारण निद्रामें आकर्षणस्वाप उत्पन्न होजाताहै ऐसेलोगोंका जो हाललिखाहै उससे सूचित है कि वह लोगसोतेहुये अँधेरेमें रक्षापूर्वक चलते हैं और ऐसी जगह चलतेहैं जहां साधारण जाग्रत अवस्थामें नहीं चलसक्ते हैं और भयमान स्थान होते हैं और उस समय उनकी आंखें बंदहोतीहैं और प्रकाशका चेतनहीं होता कैसाही शब्द किया जावे उसको वह सुनते नहीं हैं और अपने कामकाज में लगे रहतेहैं और चाहे वह सोतेहैं और जागते नहीं परन्तु पढ़सक्ते

हैं और लिखसकेहैं निदान जिस तरह आकर्षणकी क्रिया में धारकको नयाचेत वा नई इन्द्रियां प्राप्तहोतीहैं उसी तरह इन लोगोंको भी प्राप्तहोती हैं जिनकी अपने आप यह अवस्था होजातीहै परन्तु मैंनेकभी ऐसे मनुष्यको नहीं देखाहै जिसपर अपनेआप ऐसीशयन जागरणकीदशा प्राप्तहो अकड़नया ऐंठनका पैदाहोना बहुधा नाड़ियों के रोगसे उपजता है पर जिन लोगोंका स्वभाव आकर्षण क्रियाका अतिअंगीकार कर्त्ताहोता है उनको अकड़न पैदाहोजाती है॥

वर्त्तमान वृत्तान्तोंको अपने आप देखनेका वर्णन॥

जोलोग मौजूद न हों वरनगुप्त अर्थात् परोक्षमें छिपेहुये हों उनकेसाथ बहुधा वाजेलोगोंको अपने आप संयोग होजाताहै और सबब यह मालूम होता है कि या आकर्षण की अवस्था देखनेवालेको अपने आप उपजती है या ध्यान जमाने से यह बातहोती है ऐसी अवस्थामें मनपर ऐसा लक्षण प्रकटहोता है जो और दशामें प्रकट नहींहोता है इसमें संदेहकरना असंभवितहै कि बहुधा ऐसाहुआ है कि दूरके बांधवों और मित्रोंकी बीमारी या मौतकाहाल मालूम होजाताहै सबआदमी जानते हैं कि ऐसाहोताहै और बहुधा यहबात प्रसिद्धहै कि जिनलोगों को ऐसी ख़बर होजातीहै वहलोग होतेहैं जिनकाध्यान बीमार या मरनेके निकट पहुंचेहुये मनुष्य को उससमय होता है मैंने इससे पहिले पत्रमें एकहाल लिखा है कि जिसमें इसतरहकी ख़बर सौमीलकी दूरीसे हुईथी और पहिलेभागमें मैंने एकस्त्री का हाललिखाहै कि उसको बहुधाइसतरहकी ख़बर सौमीलसे भी अधिक दूर से होजाया करतीथी और जो कुछ उसको मालूम होताथा वह ठीकहोताथा नीचे लिखेहुये दृष्टान्त बिश्वास के योग्यहैं और यह दृष्टान्त ध्यानके योग्य इसलिये है कि जो

उनको स्वप्न समझाजावे तो वहस्वप्न ऐसेथे कि एकही समयमें कई भिन्न२ मनुष्यों को हुये और वह मनुष्य उस समय अपने आपको जागता समझतेथे ॥

उनसठवां दृष्टान्त—एक रईसका लड़का जो स्काटलैंयड का रहनेवालाथा जवानीमें डैलविंक ओफयोर्कको फ़ौजकेसाथ ल्फैंडर्ज़ में नौकरथा जिसखीमे में यह मनुष्य रहता था उसमें दो औरअफ़सरभी रहतेथे और एक उनमेंसे कहींबाहर नौकरी पर गयाहुआथा एकरात को यह मनुष्य अपने पलँगपर लेटा हुआथा कि उसने अपने एकगुप्त मित्रका स्वरूप उसकेखाली पलँगपर देखा कि वह मित्र बैठाहुआ है उसने अपने दूसरे मित्रको बुलाया और उसने भी यह सूरतदेखी और उससूरत ने उनदोनोंसे बातेंकी और कहा कि मैं इससमय मारागया हूं और बताया कि अमुकस्थान में मुझेघाव लगाहै फिरइनदोनों मनुष्यों मेंसे उस स्वरूप ने कहाकि जब आप इंगलिस्तानजावें तो अमुक महाजन के पास जाइयेगा उसकेपास ऐसा काग़ज़ है जो मेरेघरवालों के बहुत कामका है जो वह महाजन मुकुर जावे और अवश्य है कि वह मुकर जावेगा तो उसके फलाने कमरे में जो फलानी अल्मारी होगी उसके फलाने खानेमेंवह काग़ज़ मिलेगा दूसरेदिन ख़बरपहुंची कि वहमित्र उनका उसी जगह और उसीसमय गोलीखाकर मरगयाथा जो जगह और समय उसके स्वरूप ने बताया था जब यहदोनों मनुष्य इंग- लिस्तानको गये तो फिरते२ उसबाजार में पहुंचे जहां वहमहा- जन रहता था उससमय उनको अपने मरेहुये मित्र का कहना यादआया उससमय तक अपनेमित्रकीबात भूलगयेथे वह उस महाजन के पासगये और जबउससे काग़ज़मांगा तो वह मुकर गया कि मेरेपास नहीं है पर उन्होंने बलात्कार से उससे वह

अल्मारीखुलाई जिसकापता उनकेमित्र के स्वरूप ने बतायाथा और जब उसअल्मारीको खोला तो वहीकाग़ज़ निकला तथाच उन्हों ने वहकाग़ज़ उससेलेकर अपने मरेहुये मित्र की स्त्री को देदिया— यहसंक्षेप वृत्तान्तहै जिससे सूचितहोताहै कि ऐसे समय में संयोग के कारण ऐसास्वरूप देखागया जब वह मर रहाथा जिसके जीमें आवे वह बिचारकरे कि यह किसी भूतकी कहानीहै पर जोकि पहिले मैंने इसहालको एकअपने बन्धु से सुनाथा कि यहबन्धु उसमनुष्यका पड़ोसीथा जिसपर यहहाल हुआथा और फिरमैंने आप उसमनुष्यसे भी सुना जिसको वह स्वरूप दिखाईदिया था और २ भी बहुत लोगों ने उसमनुष्य सेयहबात सुनीहै तो मुझेनिश्चयहै कि जोकुछहाल ऊपरलिखा गयाहै सबठीकहै जो हमयह भी समझलें कि जिनलोगोंने वह स्वरूप देखाथा उनको काग़ज़काहाल पहिले जीते जी उनके मरेहुये मित्रने बतादियाहोगा और उससमय तक उनकोभूला था तो इसका क्या कारणकोई बतासक्ता है कि एकहीसमय में दो मनुष्योंने उसस्वरूपको देखा एकबेर एकसभामें यहवर्णन होरहाथा और एकस्त्रीभी वहां बैठीथी उसने मुझसे कहा कि जब यह वर्णन हुआ तो एकमनुष्य उसी सभामें से कहनेलगा कि शायद इसबातको नहींजानते हैं कि जिसमनुष्यका स्वरूप दिखाई दियाथा वह मेरा पिताथा और उसके काग़ज़ के द्वारा मेरेपासअबतक अमुकथाती है ॥

साठवांदृष्टान्त—पश्चिमी हिन्दुस्तान में दो फ़ौजके नौकर एकही कमरेमें रहतेथे एकदिनरातको एकने दूसरेको जगाया और उससे पूछा कि तुमको कुछ कमरेमें दिखाई देताहै उसने उत्तरदिया कि फलाने कोनेमें मुझे एक बुड्ढा आदमी दिखाई देताहै जिसे मैं जानतानहींहूं दूसरेने कहा कि यह मनुष्य जो

दिखाईदेताहै मेरा पिताहै और मुझे अच्छीतरह निश्चयहै कि वह मरगया है कुछसमय पीछे इंगलिस्तान से ख़बर आई कि उसकापिता अमुकदिन और अमुक समयमें मरगया समय के पीछे यह मनुष्य अपने मित्रको अपने घर लेगया और वहां उसके मित्रने एकतसवीर को देखकरकहा कि इसी मनुष्यको मैंने उसदिन फलानी जगह देखाथा वास्तव में वह तसवीर उसके पिता की थी और उस मनुष्यने सिवाय उस रातके जब कोनेमें उसकी शकलदेखीथीकभी पहिले उसवुड्ढे आदमी को नहींदेखा था इसहाल की ख़बर मुझे सच्चो मिली है और सब जानते हैं कि ऐसे हाल बहुतहोते हैं यहबात बहुतसुगम है कि लोग ऐसीबातें सुनकर हँस दें और कहें कि यहबात मानने के लायक़ नहीं पर उस कहदेने से मन नहींभरता ऐसीबातों का कुछन कुछ मूल अवश्य है॥

इकसठवांदृष्टान्त—नईदुनियामें बहुतलोग मेज़पर बैठेहुये भोजन कररहेथे सबनेदेखा कि उसघरका एक दरवाज़ा खुल गया और एक आदमीकीसी सूरत उसकमरेमें से चलकर एक और कमरेके अन्दर चलीगई वहसूरत एक मित्रकीथी जो उस समय कहीं बाहरथा जोकि वहस्वरूप उसअन्दरके कमरेमें से बाहर नहीं निकला तो सब अचंभेमें हुये और कमरे के अंदर जाकर देखा तो वहां कुछभी दिखाई नदिया फिर मालूमहुआ किवह मनुष्य उससमय मरगयाथा बड़े आश्वर्य कीबात यह है कि एकही समयमें बहुत मनुष्यों को यह स्वरूप दिखाईदिया पर अधिक आश्चर्य्य की यहबातहै कि एकमनुष्य देखनेवालों में ऐसाथा जिसनेकभी उसमनुष्यको पहले नहीं देखाथा एक दिन यह मनुष्य और एक और देखनेवालोंमें से जो भोजन करतेथे बाजारमें चलेजाते थे उस नेकहा कि देखो यह मनुष्य

वहीहै जिसकी सूरतहमने फलानीजगह उसदिन देखीथी उस के साथीनेकहा नहीं यह वहमनुष्यनहीं है बरन उसका भाई है जो उस के साथ जुड़वां पैदाहुआथा सो मालूम हुआ कि यद्यपि उसने सिवायउसदिनके सूरतदेखनेके मुख्य मनुष्य को नहीं देखाथा पर उसकेभाईको जिसका स्वरूपउससे मिलता था पहिचान लिया ॥

बासठवांदृष्टान्त—एकस्त्री बैठीहुईथी कि उसने देखाकिमेरे सन्दूकमें से एक पहुँची निकाल रहाहै उसस्त्रीने हाथको ऐसा साफ देखा कि जो सौ हाथ होते तो उस हाथ को पहिचान लेती और यह भी पहिचाना कि यह हाथ मेरे अमुक सेवकका है जब सुबह हुई और संदूकको देखा कि पहुंची उसमें नहींथी पर यह बात मालूमनहीं हुई कि बास्तवमें पहुंची किसनेलीथी इसलिये यह मैं नहीं कहसकाहूं किउस स्त्रीका अवलोकनस- च्चाहै या झूठ औरभी इसस्त्रीपर विचित्र लक्षण उपजे पर जब उसपर आकर्षणकी क्रिया कीजातीथी तो उसको परोक्ष दर्शित्व शक्तिप्राप्त नहीं होतीथी एक बेर इसको इन्द्रिय बैकल्य दशा- प्राप्त हुई और उसके बांधवोंने समझा कि मरगई पर जो कुछ हाल बीतताथा उसको उसका हाल मालूमहोताथा पर न तो उसके शरीर में इतना बलथा कि हाथ या पांव हिलाये न मुंह से बात करसकीथी ॥

अपने आप पिछले वृत्तांतोंके देखनेकी शक्ति के प्राप्त होनेका वर्णन ॥

पिछले दृष्टान्त जो लिखे गये उनमें देखने वालों ने किसी मनुष्यको मरते हुये देखा जो दूरीपरथा औरउसका कारण मैं यह समझताहूं किदेखने वाले में और मरनेवाले मनुष्य में पर- स्पर एकप्रकार का संयोग बर्तमान वृत्तान्तोंके अनुसार उत्पन्न होजाताथा पर मालूमहोताहै किइसी प्रकारका संयोगगत वृ-

सातों के अनुसारभी उपजाकरताहै जिसतरहसे परोक्षदर्शित्व दशामें पिछले वृत्तान्तदेखनेकी शक्तिप्रकट होजाती है यहबात प्रसिद्धहै कि हरदेश और समयमें लोगोंकोइसबातका विश्वास रहाहै कि कई घरोंमें पहले रहनेवालोंकी सूरतें फिराकरती हैं और बहुत लोगोंके मनोंमें यह निश्चयहै कि यहसूरतें उनघरों में बहुधा फिरती हैं जहां कोई अपराध हुआ यहबात सुगमता से समझमें आसक्तीहै कि यह कहानियां प्रारम्भ में इस तरह उपजीं कि डरपोक या कुपढ़ या बुरेसंकल्पके मनुष्योंको कभी किसी प्रकार के स्वप्न आये या उनको जाग्रत अवस्था में कोई सूरत दिखाई दी और इस अवलोकन को उन्होंने जोचाहासमझ लिया पर कई दृष्टान्त ऐसेहैं किउनके उपजनेका कारण पूरानहींहै और नानाप्रकारके मनुष्योंको नानाप्रकारकेसमय में वही स्वरूप दिखाई देतेहैं और इन्हों ने कभी इसका हाल भी नहीं सुनाथा हरएक मनुष्यने ऐसे विश्वास योग्य वृत्तान्त बहुत सुनेंगे और मैं मानताहूं कि मुझेइसबातका निश्चयनहीं होता है किकुछ न कुछ ऐसे अवलोकनोंका ठीक मूलहोगारीसन बेक साहबने सूचित कियाहै कि एक प्रकारकी सूरतें इस सबबसे दिखाईदेतीहैं कि मुर्दालाशों में से या चीजोंमेंसे उडायल के प्रकाश निकलते हैं और मेरीसमझमें यहबात आतीहै कि जो आकर्षणकीविद्याकीओर अच्छीतरहध्यानकियाजावेगा तो ऐसे स्वरूपों के देखने का कारण स्पष्ट होजावेगा और जो लोक आकर्षण की अवस्थामें होतेहैं उनको गत वृत्तान्त साफ दिखाईदेते हैं इसलिये यहबातध्यानमें आसक्तीहै कि जो लोग आकर्षणकीदशा में नहों बरन ऐसीदशामेंहों जो आकर्षण की दशाके निकटतरहो और उनकास्वभाव आकर्षण की सत्ताओं का अति अंगीकारकर्त्ता हो तो उनको भी कभी२ यह बात

मालूम होतीहै कि उनकीदृष्टिके साम्हनेगत वृत्तान्तचित्रितहों बड़ीकठिनता स्पष्टकरनीयह हैकि मुख्य २ अवलोकन मुख्य २ स्थानों में क्योंहोते हैं पर जोकि ऐसेआदमी जिनका स्वभाव अति प्रकाशमान और बहुत प्रभावका अंगीकारकर्त्ताहोती है बहुतसेलक्षण कईस्थानोंमें उनलोगोंकेदेखतेहैं जोवहांविद्यमान नहींहोते तोअनुमानमें यहबातआतीहैकिवहचिह्न उनस्थानों में जमजाते हैं और उनकाकर्म बहुत समयके बीतनेपर भी उन लोगोंकी प्रकृतिपर प्रभावकरताहै नीचे लिखेहुये दृष्टान्त ऐसे प्रभावका उदाहरण है॥

तिरसठवां दृष्टान्त उडनबरा के शहर के निकट एक पुराने घरमें एक घराना रहता था और उसघर में एक हब्शी नौकर था यह नौकर उस घरके एक कोने में सोया करता था जब पहली बेर उस जगह सोया तो उसको एक स्वरूप दिखाई दिया औरवह भयखाकर अचेतहोगया यह बात याद रखनी चाहिये कि हब्शियों का स्वभाव आकर्षण की सत्ता का अति अंगीकारकर्त्ताहोताहै आधीरातके समय उसे न देखा एक स्त्री अतिउत्तम पहिने पर शिर बिना एकलड़केको गोद में लिये हुये उसमकान में फिरतीहै जब उसने यहहाल वर्णनकिया तो सब घरवालों ने जिन्होंने वह घर इन्हींदिनों किराये को लियाथा उसकी बहुत हँसीकी और कहा कि यहमनुष्य दीवानाहोगया नशेमें है पर उसनेकहा कि मैंने न शराबपीहै न मैं दीवानाहूंदू- सरेदिन उसको फिरवहीं जबरदस्ती सुलाया और उसने फिर वही शकल देखी और जबतक वहयहां सोतारहा बराबर उस शकलकोदेखतारहा जोकि उसकोबहुतदुःख होताथा तो उसने उसघरमें सोना बन्दकरदिया जब घरके मालिक से पूछागया तो उसने वर्णनकिया कि जो मनुष्यउस मुख्यघरमें सोताहैउ-

सको वह स्वरूप दिखाईदिया करता है और बहुत मनुष्यों ने देखाहै कईवर्षपीछे जववह घरढहायागया तो एकदीवारमें एक कगार निकला और उसमें एकसन्दूक़ था और उस सन्दूक़ में एक स्त्री और एकवच्चेकी हड्डियां निकलीं और एक स्त्रीका शिर एकओरको पड़ाहुआथा धड़केसाथ नहींलगा हुआथा एक स्त्रीने इससन्दूक़ के निकलनेकी ख़बरसुनी और उसकोयह भी मालूम था कि उसहब्शी समयतक उसघरमें एकस्वरूप दिखाई देता रहा यह हब्शी उससमयमें बुड्ढाहोगयाथा और कहींदूरी पर रहताथा उसको ढूंढ़करपूंछा कि अमुक घरमें तुमको क्या देखाई देता था सब हाल वैसाहीवर्णनकिया और उससमयभी उसको उसहालके वर्णन करनेमें बहुत भय लगता था मुझे केवल इस अवलोकनका यहकारण मालूमहोताहै कि कुछ न कुछ आकर्षण या उडायल की सत्ता का चिह्न बाक़ी बचाहुआ उक्त स्त्री की लाश में से निकलकर उन लोगों के स्वभावों पर प्रभाव करता है जिनका स्वभाव अति अंगीकार करताहोता है और उनको गतवृत्तान्त परोक्षदर्शित्व के कारण दिखाईदेता है नीचे लिखा हुआ दृष्टांत मुझसे एकमित्रने कहा था॥

चौंसठवांदृष्टान्त—एकअमीरकापुत्र एकदिन एक व्याख्यान जो वैद्यकविद्याके विषयमेंथा सुननेको गया और वहव्याख्यान भूतोंकेबिषयमेंथा उसनेदेखा किपढ़ाते वक्त पाठक वहुतघबराता था जववह व्याख्यान पूर्णहोगया तो उसने पाठकसे कहा कि आपअपनी घवराहटके सबब कृपाकरके वताइये उन्होंने कहा कि जवमैं इसव्याख्यान को पढ़ाताहूं तो मेरा सदायही हाल होताहै और कारण यह वर्णन किया मैंएकबेर अमुक स्थान में नौकर था औरमुझसे पहिले उस ओहदेपर एकपादरीसाहबथे कि उनकेजीतेजी लोग उनका बहुत संकोचकिया करतेथे जबमैं

पहिलीबेरउस घरमें सोया और सुबहको जागा तो मैंने देखाकि उक्तपादरीसाहब दो बच्चोंकाहाथ पकड़े हुये कमरेसे निकलकर अंगीठी के पीछे छिपगये जब मुझे निश्चयहुआ कियह स्वरूप केवल हवाईथा मुरूप नहींथा तो मैंनेलोगोंसे हालपूछा और मालूम हुआ कि पादरीसाहब के दो बच्चे जो उनकी विवाहिता स्त्री से नथे उसघरमें छिपगयेथे अर्थात् कुछ मालूम न हुआथा कि कहांगये कुछ समयतक मालूमनहींहुआ कि कहां गये पर जब सरदीमें उस अंगीठी में आग जलानेकी आवश्यकता हुई तो आग अच्छी तरह न जली और कुछ लौवहांसे आने लगी जब उस अंगीठी को वहांसे तोड़ातो दो बच्चों की हड्डियां वहां से निकलीं ॥

एक दृष्टांत नीचे और लिखाजाता है गत उदाहरणों में जो स्वरूपों के दिखाई देनेका कारण मालूम होगया अर्थात् उस जगह मुरदे आदमियों के कुछ २ चिह्न पायेगये जहांसे कोई सूरत निकलती हुई दिखाई देतीथी परनीचे के दृष्टांतमें कोईहेतु मालूम नहीं होताहै किक्याथा ॥

पैंसठवां दृष्टांत एकराजपुत्री किसी अपराध में पकड़ी गई थी और उसपर दोहरा पहरा नियतकिया गयाथा गारद का करनैल ऊपर एक मकान में रहता था एक दिन संध्या के समय अभी कुछ थोड़ीसी मौजूद थी करनैल साहब और उनकी स्त्री और उनका पुत्र और बेटी इकट्ठे बैठेहुयेथे और सन्तरियों के शब्द सुनतेथेकि वह अपनी २ जगह टहलते थे और कोई गाता था और कोई कुछ किसीसे कहता था उस समय गरमीथी और दरवाज़ा थोड़ासा खुलाहुआथा खुलेहुये दरवाज़े मेंसे कुछ धुंआसा अंदर गया करनैल साहबने पहिल तोसमझा कि धुंआहै पर कमरेके अंदर आकर यह धुंवा गोल शकल का

होगया और कुछ वह घूमा करनैल साहबकी स्त्री ने उसके अंदर एक स्वरूप देखा और उनकी बेटीको बहुत भय हुआ, बेटा जो था वह खिड़कीमें बैठाथा अपनी मावहिनको डरीहुई देखकर अचंभेमें था पर उसको कुछदिखाई नहीं दिया करनैल साहबकी स्त्रीनेअपनाशिर अपने हाथोंपर झुकादिया और मेज़ पर झुकके बैठगई और चिल्लाकर कहा कि या हज़रत मसीह इसने मुझे पकड़लिया करनैल साहबने एक कुरसीलेकर उस सूरत की ओर फेंकी और कुरसी उसके अन्दर होकर चलीगई और धुंवा कमरेमेंचक्कर खाकरजिस दरवाज़ेसे अन्दर आयाथा उसीमेंसे बाहर निकलगया अभी करनैलसाहब अपनी कुरसी परसे न उठने पायेथे और उनकी इच्छाथी कि उसधुंवे के पीछे२ जावें कि उन्होंने नीचेके मेंसे एक खीच और गिरने की आवाज़ सुनी करनैल साहब थोड़ीदेर ठहर गये और उन्होंने चाहा कि सुनूं कि क्या होताहै इतनेमें गारदके सिपाही नीचेके मकानमें आगये और जो सन्त्री थोड़ी देर पहिले गारहा था उसको आवाज़दी पर देखाकि मूर्च्छामें है गारदके सारजन ने उस सन्त्रीको खूब हिलाया और कहा कि यहमनुष्य पहरेपर सोगयाहै और उसको क़ैद करदिया दूसरेदिन सन्त्रीका कोर्ट हुआ करनैल साहबउसके पक्षमें उद्यतहुये और कहा कि संत्री नहीं सोयाथा क्योंकिदश मिनट पहिले वह गारहाथा औरमैं और सबमेरे घरकेआदमी सुनतेथे कि वहगारहाथा इससन्त्री ने वर्णनकिया कि जबमैं सीढ़ीके दरवाज़ेके पास टहलताथा एक भयानकरूप दरवाज़ेमें से निकलताहुआमालूम हुआ स्वरूप ऐसाथा कि जैसे कोईरीछ अपनी पिछली टांगोंपर खड़ाहो मेरे पाससे यह सूरत गई और मेरीओर वहगुर्राने लगी और मुझे ऐसा भयहुआ कि मेरीचेतनाजातीरही और फिर मुझेकुछहोश

नहीं रहा जो कोर्टके हाकिम थे उन्हों ने इस संत्री का बिचार नहींकिया परन्तु यहसमझे कि संत्रीको उससमय कुछरोग होगया था और करनैलसाहब की गवाहीसे उसको उन्होंनेछोड़ दिया संध्याके समय करनैल साहबउससे मिलने गये पर संत्रीकी सूरत ऐसी बदल गईथी कि पहिचाना नहीं जाता था. पहिला उसका मुख लाल और बहुत सुन्दरथा जबबहुतपीला औ मुरझागयाथा करनैल साहबने कहा तुमऐसेमुरझाये क्योंहो मैंने तुम्हारेसाथ बहुत उपकारकिया औ तुम छूटगये अबमैं तुम्हें यह उपदेश देताहूं कि तुम पहरेपर गाते रहाकरो संत्रीने उत्तरदिया कि करनैल साहब मैं आपकी कृपा का अति कृतज्ञ हूं कि आपने मेरी बदनामी नहीं होनेदी परन्तु इसकेसिवाय अब कुछ आशा नहीं है जब से मैंने उस स्वरूपको देखा है मैं आप को मुर्दा समझताहूं फिर उस संत्रीके मनका भय दूर न हुआ और उस सूरतके देखनेके पीछेदोदिन रातमें मरगयाकरनैल साहबने सारजनसे जब उसका वर्णनकिया तोउसने बेधड़क यहबातकही कि यह बात बुरीहुई परयहसंत्री नयानौकर था और और संत्रियोंकीतरह ऐसे स्वरूपोंके देखनेका अभ्यास नहीं रखताथा करनैल साहबनेकहा किक्यातुमने कुछ सुना है कि और मनुष्यों कोभी यह स्वरूप कभीदिखाई दियाहै सारजनने कहा किहांसाहब बहुत ऐसी २ चीज़ेंयहां दिखाई देतीहैं और बहुधानये नौकर संत्री एक दोबेरमूर्च्छा खाजाते हैं परन्तु फिर उनको आदत होजातीहै औरकुछहानि नहींपहुंचती करनैल साहबकी स्त्रीके मनसे कभी भयनहीं गया छः सप्ताह तक उनकी बुरीदशारही और फिरवहमरगई करनैलसाहबपर आप समयतक एक प्रकारका प्रभावरहा और उनका जी उस हाल के वर्णन करनेकोनहीं चाहता था परन्तु वह यह कहते थे कि

जो चीज़ मैंनेअपनी आंख से देखी उससे इनकार नहीं करूंगा प्रकट है कि यह दो मनुष्य जोमरगये वो भयसे मरगये परन्तु वो इतनी बात वास्तव में हुई कि नाना प्रकारके मनुष्योंने एक सूरत देखी और ऐसी सूरतें पहिले भी उसमकान में दिखाई देती थी यहबात भी ध्यान करनेकी है कि कई मनुष्यों को जो सूरत दिखाईदी और कइयोंको केवल धुंवा दिखाई दिया त-थाच उडायल की रोशनीका गुणहै कि कइयोंको बिल्कुल नहीं दिखाई देती औरकइयोंको और धुंवासा मालूमहोताहै किसीको अच्छीरोशनी प्रतीतहोती है और इसविपर्य्ययका यह कारण है कि नानाप्रकार के मनुष्योंका स्वभाव अन्य२प्रकार से प्रभाव अंगीकार करताहै और उसकी दूरी भी किसी मनुष्यसे अधिक और किसीसे कमहोतीहै और इस रोशनीकी तेजीमें भी अंतर होताहै अर्थात् किसीको अधिक किसीको कमतेज मालूम होती है जो कोई यह पूछे कि क्या केवल धुंवेमें मनके विचार से स्वरूप दिखाईदेसक्ता है तो मैं यह उत्तर देताहूं कि सूरत का दिखाईदेना संभवितहै पर यहभी तो बातहै कि हमक्या जानते हैं कि जो उडायलका प्रकाश उचित दूरीसे देखाजावे तो एक स्वरूपके दिखाई देंगे और यह शकल उसचीज़की सूरतसे उन को प्राप्त होजातीहै जिसमेंसे वह प्रकाश निकलतेहैं॥

अपनेआप भविष्य वृत्तांतोंकी शक्तिके प्राप्त होनेका वर्णन॥

अब मैं भविष्य अवलोकन की शक्तिका वर्णन करता हूं जो अपने आप उपजती है हर समय में ऐसे भविष्य कथन हुये हैं और कभी तो स्वप्नमें किसीको यह शक्ति प्राप्त हुईहै और कभी जाग्रतअवस्था इनदिनों अतिविचित्र कज़वट साहब के भविष्य वाक्यहैं जो उन्होंने फ्रांसदेशके प्रबंधके विषयमें कहेथे मैंउसका हाल विस्तारसे लिखूंगा पहिले केवल इतनीबात कहताहूं कि

जिस समयमें यह भविष्य हुआथा लण्डन और फ्रांसदेश की राजधानी पारस में बहुत प्रसिद्ध था और लोग उस पर हँसा करते थे और कहते थे कि कज़बट साहबको स्वप्न आयाहै मैंने कई ऐसे मनुष्य देखेहैं जिन्हों ने इस भविष्य वाक्यका हाल उसवक़ सुना था जब कज़बटसाहबने उसको अपनी जिह्वासे कहाथा और यह मनुष्यकहते हैं कि हमें यादहै कि सबआदमी हंसते थे और कहतेथे कि यहबात बिल्कुल झूंठहै और कज़बट साहबका स्वभाव एक ढंगपर था और वह भेदकी विद्याओं में बहुत लगेरहते थे और बहुधा उनमें स्वप्न या ध्यान की दशा उपजती थी कि जिसमें उनमें परोक्षदर्शित्वशक्ति प्राप्तहोजाती थी सो समझनाचाहिये कि कज़बट साहबको अपनेआप प्रकाशमान दशा और उस प्रकाशमान अवस्था में उनको आगेके हालके देखने की शक्ति उपजती थी लाहार्पसाहब के वर्णन से नीचे संक्षेप करके इस भविष्य कथनका हाल लिखताहूं ॥

लाहार्पदृष्टांत-यहबात कलकी मालूमहोती है पर१७८८ ई०कीहै हम एकघरमें अपने मित्रकेसाथ भोजन कररहेथे और यह हमारा मित्र अमीर और बड़ा बुद्धिमान् था उस सभा में नानाप्रकार की जातिके आदमीथे अर्थात् दरबारीक़ानूनीऔर हकीम थे और नियम के अनुसार भोजन अति उत्तमथाभोजन करनेके उपरान्त मद्य उड़ने लगी तो जितने जिवनारी थे सब प्रसन्न और रङ्गमें रँगेथे और उससमयसंकोचजातारहाऔरवह समय ऐसाथा किकैसीहोबुरी कोई बातहो जोउसके कारण हँसी हो तो वह बात उत्तम गिनीजाती थी चेम्फार्टसाहब ने अपने क़िस्से हमको पढ़करसुनाये थे कि उनमेंबहुतबातें बेलिहाजीकी थीं पर वहसमय ऐसाथा कि औरतें भी जो वहां बैठीथीं उन्होंने भी उन बातों को सुनकर अपने हाथोंके पंखे अपनेमुहँपर नहीं

रखलिये जब वह क़िस्से पूरेहुये तो धर्म्मके विषयमें हँसी और ठट्ठा होनेलगा एकने किसी कविका बचन कहा दूसरे ने किसी और का प्रहसन वाक्य पढ़ा तीसरेने एक शराबका प्यालाहाथ में लेकर उठकर कहा कि साहबो कि जैसा मुझे इस बात का निश्चयहै कि* होमर साहब बुद्धि हीनथा वैसाही इस बात का विश्वासहै कि संसारमें ईश्वर कोई नहीं है और वास्तवमें इस मनुष्यको निश्चय ऐसाही था अब यह निपुणता से बार्त्ता होने लगी और सब लोग प्रशंसा करनेलगे कि *विवलेटरसाहब ने जो समय में विपर्य्यय उपजाया है उसके सबब से वह प्रशंसा योग्यहैं एकने जिननारियों में से कहा कि मेरा नाई मेरे बाल ठीक करनेके समय कहनेलगा कि देखिये साहब चाहे मैं एक ग़रीब नाईहूं पर जैसा कुछ अमीर आदमियोंका धर्म्म नहींहै वैसाहीमैं भी कुछ धर्म्म नहीं रखताहूं अर्थात् विवलेटर साहब के वचनोंकी यहांतकवृद्धि होगईथी कि हम सबने यह परिणाम निकाला कि अब बड़ीहीजल्दी उलटपलट होनेवालाहै और यह बात अवश्य होनेवालीहै कि सारेदेशमेंसंकल्प और बुद्धिहीनता के बदले बुद्धिमानी और निपुणता फैल जावे और हम सब हिसाब करनेलगे कि इतने समयमें यह उलटपलट होजावेगा और हममेंसे फ़लानेर उसबुद्धिके समयको देखेंगे जिनकी आयु सबसे अधिक थी वह कहने लगे खेदहै कि हमको उस समयके देखने की आशा नहींहै जो युवाथे वह प्रसन्न हुये कि हम तो ज़रूर उस समयके देखनेकी आशा रखतेहैं और वह कहनेलगे कि विवलेटर साहबका सबको गुण मानना चाहिये कि उनके सबबसे यहबुद्धिका अच्छा विपर्य्यय होगा सब महमानों में से

*होमर यूनानमें एक कवियाथा कि संसार भरमें कोई ऐसा कवि नहीं हुआहै ॥

*विवलेटर फ्रांस देशमें एक बुद्धिमान् नास्तिक मनुष्य था ॥

केवल एकमनुष्य उससमयकी बात चीतमें संयुक्तनहींहुआ और न उसके मनपर कुछ रंगीनी प्रकटहुई इसमनुष्यका नाम कज़-वट साहबथा यहमनुष्य अति शीलवान् था और उसके विचार अति विचित्रथे और बहुधा किसी न किसी ध्यान में रहता था उसने अति निपुणतासे इस तरह कहा ॥

वाक्य ॥

भाइयो तुम सब भरोसा रक्खो कि तुम सब उस बड़े विपर्य्ययकोदेखोगे जिसकी तुम इतनी प्रशंसाकरतेहो तुमजानतेहो कि मेरेस्वभावकी कुछ अवश्यकथनकीओर झुकावटहै परन्तु मैं फिरकहताहूं कि आप सबलोग इसउलट पलटको देखेंगे सबने एकमतहोकर व्यंगकी रीतिसेउत्तर दिया कि इसबातकेसमझ-नेकेलिये कुछ जादू दरकार नहीं कज़वट साहबने कहा अच्छा पर जोमैं आगे कहताहूं उसकेजाननेके लियेजादूसे भी ज़िया-दा कुछचीज़ चाहिये तुमजानतेहो कि इसविपर्य्ययका परिणाम क्याहोगा या और तुम्हारा सबका जो यहां बैठेहो क्या हाल होगा यह सुनकर एक मनुष्य ने जिसका कण्डूरस्ट नाम था व्यंग पूर्वक कुछ मुसकरा कर कहा कहिये आप क्या कहते हैं मुझको तुम्हारे भविष्य कथनका कुछ भय नहीं कज़वट साहब ने कहा तुम अयकण्डूरस्ट क़ैदख़ाने की फर्शपरमरोगे और विष खाकरमरोगे कि गर्दनमारे जानेसे बचजाओ और उस विषको तुम सदैव काल अपने पास रक्खोगे क्यों कि वह समय ही ऐसा होगा कि तुमको लाचार अपने साथ विष रखना पड़ेगा यह बात सुनकर सबलोग अचंभा करनेलगे पर यह आश्चर्य्य थोड़ीदेरतकरहा क्योंकि सबको यादआगया कि चाहे कज़वट साहब जागते हैं परउनको ऐसीदशा में स्वप्न से आयाकरते हैं और यहबात समझकर सबलोग बहुत हँसने और कहनेलगे

कि क़ज़वटसाहब यह जो हाल तुम कहतेहो ऐसा मनोरम है जैसा तुम्हारा फलाना क़िस्साहै और यह तो कहिये कि आप की समझमें यह क़ैदखाना ज़हर और जल्लाद क्योंकर आगये हमतो बुद्धिके समय का वर्णन करतेहैं कज़वट साहब ने कहा यही तो बातहै जो मैं आपसे कहताहूं उसी आपकी बुद्धि और कुलेसमय में आपका अन्त यहहोगा और वह बुद्धिका समय अवश्य होगा पर चेम्फ़र्ट साहब तुम अपनी रगों पर २२ उ-स्तरे से घाव लगाओगे और फिर कई महीनेतक जीते रहोगे और कई महीने पीछे मरोगे सब आदमी एक दूसरे की ओर देखनेलगे और फिर सब हँसपड़े फिर कज़वट साहब ने एक और मनुष्य से कहा कि वकदाज़रू साहब तुम अंगों की पीड़ा के दुःख में पड़ोगे और आप तो तुम अपनी रगोंपर घावनहीं लगाओगे पर एकदिन में छःबेर फस्द कराओगे कि तुम्हारी जान जल्दी निकलजावे और रातको मरजावोगे फिर औरोंसे कहा कि तुम निकोलाईसाहब जल्लाद के हाथ से मारे जावोगे और तुम भी बेलीसाहब बधिक के हाथसेमरोगे और मलेशेर साहब तुम भी बधिकके हाथसेमारेजावोगे एकमनुष्य उनमेंसे जिसका नाम रोशरसाहब था बोला कि ईश्वर का धन्यवाद है अभी यह वचन पूरा नहीं होनेपाया था कि कज़वट साहब ने कहा कि तुम भी जल्लाद के हाथ से वधहोगे सब इकट्ठा होकर बोले देखो यह मनुष्य क्या अच्छा अनुमान कररहा है इसने हम सबके नाशकरने की शपथखाई है कज़वट साहब ने कहा कि नहीं मैंने सौगन्द नहींखाई है फिर सबने कहा यह तो क-हिये हमारे ऊपर कौन आज्ञा चलावेगा तुरुक या तातारी— क़ज़वटसाहब ने कहा कि नहीं यह तुम्हारा विचार अशुद्ध है कि तुमपर केवल बुद्धि आज्ञा चलावेगी केवल तुमपर बुद्धिही

अधिकार रक्खेगी जो लोग तुम्हारेसाथ यह उपकारकरेंगे वह सब बुद्धिमान् होंगे जो वचन तुम्हारे मुहँपर एक घण्टे से हैं वहीवचन सदा उनकी जिह्वापर होगा जो तुम्हारे वाक्यहैं वह भी अपनी जिह्वासेकहेंगे और जिसपर तुमनेअभी अमुककवियों के वचन मुंहसेपढ़ेहैं वह भी पढ़ेंगे उससमय जितनेमनुष्य उस सभामें थे परस्पर एकदूसरे के कानमें कहनेलगे कि देखो यह मनुष्य दीवाना होगयाहै उससमय तक कज़वटसाहब के मुख और ढौलसे बुद्धिमानी प्रकट थी फिर वहलोग कहनेलगे कि तुम देखते नहींहो कि कज़वट साहब ठट्ठा कररहे हैं और तुम जानतेहो कि उनकेठट्ठे मेंभी कुछ२ बातें विचित्रहोतीहैं चेम्फ़र्ट साहब ने कहा कि हां मैं समझता हूं कि कज़वटसाहब ठट्ठा करतेहैं और विचित्र ठट्ठा करते हैं पर उनका ठट्ठा मुझे पसंद नहीं कि उसमेंबिल्कुल सूलीकीगन्ध आतीहै फिर चेम्फ़र्टसाहब ने कज़वटसाहब से कहा कि यह बातें जोआपने कही हैं कब होंगी उन्होंने उत्तरदिया कि आजसे छः वर्ष न बीत चुकेंगे कि यह सबबातें जो मैंने कहीहैं होजावेंगी॥

उस समय मैं बोला कि आपने यह सिद्धता की बातें कहीं पर आपने मेरे लिये कुछ भी नहीं कहा कज़वट साहब बोले कि तुम आप उससमय में एकसिद्धहोगे क्योंकि तुम उससमय में ईसाई होगे उस समय सबने उमड़कर कुछ २ कहना शुरू किया और चेम्फ़र्ट साहब ने कहा कि अब मुझको भरोसाहो-गया कि जो हमसब उससमय मरेंगे कि जब लाहार्प अच्छा ईसाईरहेगा तो हम सब अमरहोंगे फिर डचिसऔफ़ग्रामेन्ट जो एकरईसथी बोली किहमतो प्रसन्नहोंगी हमस्त्रियांहैं हमारे लिये इस विपर्य्ययमें कुछभी नहींहोगा कज़वटसाहब ने कहा कि उससमय तुम्हारी स्त्रीकौमियोनितुमको नहींबचावेगी अच्छा

होगा कि तुम किसी बात में न बोलो क्योंकि उसवक्त तुम में
और मरदों में कुछ अन्तर नहीं किया जायगा फिर उस स्त्री ने
कहा आप कहिये तो कि आप क्या कहरहे हैं आप तो प्रलय
का हाल कहतेहैं कज़वटसाहब ने कहा कि मैं प्रलयका हाल
तो कुछ भी नहीं जानताहूं पर इतना जानता हूं कि तुम और
तुम्हारेसाथ कई और औरतोंको जल्लाद की गाड़ीपर बिठाकर
और मुश्कें कसकर जल्लादख़ाने में लेजायेंगे और तुमसेभी जो
बहुत अमीर औरतेंहोंगी उनकोभी इसीतरह लेजावेंगे उसने
कहा कि मुझसे भी अधिक धनवानस्त्रियां क्याशाहीघराने की
औरतों का यह हालहोगा कज़वटसाहबने कहा कि उनसे भी
ऊंची औरतों का यहहालहोगा तब सम्पूर्ण सभा में एकचिन्ता
सी फैलगई और जिसके घरमें सभाथी वह कुछ अप्रसन्नहुआ
सबको यहविचार उपजा कि अब यहठट्ठा बहुतबढ़गया डचिस
औफ़ग्रामेन्ट ने इसइच्छासे कि यहसभाको उदासी दूरहोवे
मानो कज़वटसाहब के उत्तर को ओर कुछ भी ध्यान न करके
कहा कि देखिये कज़वटसाहब मरने के समय मेरेपास पादरी
को भी नहीं आनेदेते कज़वटसाहब ने कहा कि नहीं जी न तु-
म्हारे पास न किसी और के पास उस समय पादरी आवेगा
केवल एकमनुष्यके साथ यहउपकार कियाजावेगा यहकहकर
कज़वटसाहब चुपहोगये फिर सबने पूछा कि वह कौनमनुष्य
होगा जिसके साथ आप यह कृपाकरेंगे उन्होंने कहा कि वह
मनुष्य जिसकेसाथ इतना उपकार होगा फ्रांस का राजाहोगा
और किसीके पास पादरी नहीं आनेपावेगा फिर मकान का
मालिक बहुत जल्दी से उठा और उसके साथके सब आदमी
उठखड़ेहुये फिर वह कज़वटसाहबकी ओरगया और अतिखेद-
वान होकर कहा कि कज़वटसाहब अब यहठट्ठा बहुत होचुका

और बहुतबढ़गया यहांतक कि आपअपने नाममें भी और इस सभा के नाममेंभी अन्तरलातेहैं कज़वटसाहबने कुछ उत्तर न दिया और वहांसे चलेजानेका इरादाकियाथा कि डचिसऑफ़ग्रामेन्ट ने जो सदा यहबातचाहती थी कि सभाके मनुष्यों की मनकी रंगीनीदूर न हो कहा कि कज़वटसाहब तुमने हमारा सबकाहाल तो बताया परन्तुअपनाहाल कुछ न बताया कज़वट साहब ने कहा कि आपने कभी जेरुसेलम के शहरके घेरे अर्थात् यहूदियों के मन्दिरका हाल कभी पढ़ाहै उन्होंने कहा कि वह हाल किसीने नहींपढ़ाहै मगर आप ज्ञान कीजिये कि मैंने नहींपढ़ाहै और वर्णनकीजिये फिर कज़वट साहबने कहा कि घेरेकेदिनों में एक आदमी सातदिन तक शहरकी फ़सील और घेराकियेहुये मनुष्यों और पैरवालोंको नज़रमें फिरतारहा और सदा कहतारहा कि इसनगरीका खेदहै और सातवेंदिन कहा कि इस नगरी का खेदहै और मेरा भी खेदहै और उस समय घेरेवालों की ओरसे एक चोट एककल में से निकलकर उसको लगी और उसनेप्राण तजदिये इसउत्तरके पीछे कज़वट साहब सबसभाके मनुष्योंको प्रणामकरकेचलेगये जब मैंने यहवर्णनलाहार्पसाहबका लिखाहुआपहिलेहीबेरपढ़ा तो मैंसमझताथा कि उन्होंने शिरसे बनाकर लिखदियाहोगा इसदृष्टिसे कि जो अमीर और बड़े आदमीथे उनके मनोंपर इस विपर्य्यय से कई वर्ष पहिले यह हाल सुन कर कि उनके नष्ट होने के लिये क्या२सामान होरहेहैं देखें क्याप्रभावहोकर फिरजो मैंने खोजकिया और जो हाल मुझे मालूम हुआ उससे वह मेरी मति बिल्कुल बदलगई एकबड़े अमीर ने मुझसे कहा कि मैंने अमुक स्त्रीसे यह बात बहुधा सुनीहै कि लाहार्प साहब बहुधा यह हाल कहा करते थे और मैंने उनसे कहकर उस स्त्री से

पुछवाया उन्हों ने नीचे लिखा हुआ पत्र लिखकर भेजा ॥

पत्र मैंने लाहार्प की जिह्वा से कई बेर कज़वट साहब के भविष्य कथन का वर्णन सुनाहै और जैसा यहहाल छपाहुआहै वैसाहीसुनाहै इतनी बातमैं जानतीहूं और लिखकर भेजतीहूं ॥

मैंने कज़वट साहबके बेटेको भी देखाहै और उन्होंने मुझसे कहाहै कि हमारे पिताको भविष्य कथनकी विचित्रशक्ति प्राप्त थी और उनके भविष्य कथनके बहुतसे प्रमाण हैं तथाच एक भविष्य वाक्य उनकायहहै किएकदिन उनको जल्लाद गर्दन मारनेको लेजातेथे किउनकी लड़कीनेकिसीयुक्तिसे उनकोजल्लादों से छुड़ा लिया सब घर के आदमी प्रसन्न हुये पर कज़वट साहब प्रसन्न नहुये और कहा कि चाहे आज मैं छूटगयाहूं पर तीनदिन के पीछे मैं फिर पकड़ा जाऊंगा और जल्लादके हाथसे मारा जाऊंगा और वास्तवमें यहीहुआ और कज़वटसाहब ७२ वर्षकी आयुमें २५ सितंबर सन् १७६२ ई०को वधिकके हाथ से मारे गये और लाहार्प साहब का जो वर्णनहै उसके लिये कज़वटसाहबके पुत्रका यहबर्णन है कि मैं यहतोनहीं कहसक्ता हूं कि जो शब्द लाहार्प साहब ने लिये हैं वही शब्द मेरे पुत्र के मुखसे निकले थे पर मुख्यबातें वहीहैं जो मेरे पिताने बताईं थीं और एक औरबातयहहै कि वकदाज़रसाहब के एकमित्र ने मुझसेयहबात कहीथी कि जबउक्त साहब समयके उलट पलटसे कई बर्ष पहले फ्रांसके देश में गये थे तो उन्होंने अपने घर में आकर कज़वट साहबके भविष्य कथनका हाल कहाथा और मालूम होताथा कि चाहे वकदाज़रसाहब को इस भविष्य कथन का निश्चय नहींथा पर वह इस भविष्य कथनके कारण सदा उदास रहतेथे एक और अमीर ने इस विषय का पत्रलिखा है कि आप मुझसे पूछते हैं कि मैं कजवटसाहब के भविष्यकथन

का हाल क्या जानताहूं तो मैं सौगन्दखाकर लिखता हूं कि मैंने अमुक स्त्री के मुख से बहुत वेर सुनाहै कि जिससमय यह भविष्य वाणी हुई थी उस समय वह उस सभामें विद्यमानथीं और जब वहवर्णन करतीथीं तो एकही तरहपरवहवर्णनकिया करतीथीं और उनका वर्णन सत्य मालूम होता था और उनके वर्णनसे लाहार्यसाहब के वर्णनकी सच्चाईहोतीहै और वह स्त्री यह हाल बहुधामनुष्योंके सामने वर्णनकियाकरतीथीं कि उनमें से बहुतमनुष्यजीतेहैं और इसवर्णनकीसत्यताप्रकटकरसक्ते हैं॥

पहिलेभाग में मैं एकस्त्री का हाल लिखचुकाहूं कि उसको अपने आप प्रकाशमानदशा प्राप्त होजाती थी उसकी भविष्य वाणीका दृष्टान्त नीचे लिखाजाता है ॥

सतसठवां दृष्टान्त—यह स्त्री अति बुद्धिमान है और जो मनुष्य उसको जानतेहैं उसका अति संकोच करतेहैं उसमें सदा यह बात गत और भविष्यदृत्तान्तों समेत उसको परोक्षदर्शित्व शक्ति प्राप्तहोजातीहै और बहुधा उसको यह बल उस समय प्राप्तहोजाता है जब वह अकेली संध्या को बैठाकरतीहै उसको अवलोकन सदा बड़े२ व्यवहारों से सम्बन्ध नहीं रखते बरन छोटी २ बातोंसे जो बाजारमें होतीहैं संयुक्तहोते हैं कभी२ ऐसा होताहै कि होने के कई वर्ष पहले उसको किसी अपने नातेदार की मृत्यु और उसस्थानपर जो मनुष्य और जितनेआदमी हों दिखाई देते हैं कभी उसको ऐसी चीजेंदृष्टिआतीहैं जिनको दृष्टि की भूल कहनाचाहिये जैसे जो कहींकोई कुरसी न हो तोकुरसी रक्खीहुई दिखाई देतीहै परहोसक्ताहै कि जोखोजकियाजावे तो कुछ मूल अवश्य होगा मुझको इसस्त्री की भविष्य वाणी के बहुत दृष्टान्त मालूम नहींहैं पर मुझे अच्छीतरह से मालूम है कि यह शक्ति उसमें अवश्यहै मैं भविष्यवाणीके होनेका कारण

नहीं बता सक्ताहूं पर ध्यानकीजिये कि गत वृत्तांतोंके मालूम होनेका हेतुभी तो बताया नहींजासक्ता है एकबात ध्यानके ला-यक है कि अपने आप इसस्त्री को यह भविष्य अवलोकन की शक्ति प्राप्त होतीहै औरजैसी आशाहोनी चाहियेथी उसपर आ-कर्षणकी सत्ताकाभी अच्छाप्रभावहोताहै तथाच एकबेरएकमनु-ष्य उसके घरमेंआया उसके गालपर एकदाग और एकघावथा इस मनुष्य को देखकर उसस्त्री को बहुत दुःखहुआ और जब तक वहरहा उस स्त्री का मन अति दुःखी और उदास रहा दोदिनकेपीछेउसस्त्रीके उसीगालपर और उसीजगह एकऐसाही दाग और घाव प्रकटहुआ प्रकटहै कि जिन लोगों की प्रकृति इतनीबहुत अंगीकार करनेवाली हो उनमें परोक्षदर्शित्व शक्ति बहुत प्रतीत होती है ॥

इटकन्सनसाहब ने मुझे एक मनुष्य के स्वप्नकाहाल बताया है इसस्वप्न भविष्य वाणीका प्राकट्यहै वहहाल मैंनीचे लिख-ताहूं स्वप्न देखने वालेकेही शब्द लिखेजाते हैं ॥

अड़सठवां दृष्टांत मेराभाई जिसके साथमुझे अतिप्रीति थी पश्चिमी हिन्दुस्तानमें पतझाड़की ऋतुपर मरगया उनकेमरने की ख़बर पहुंचने से एकमहीने पहिले मैं यहस्वप्न देखताहूंउस समय मैंडबलिनकी पाठशालामें पढ़ाकरताथा औरमेराएकमित्र वहांथा कि उसके घरमें मैं बहुधा संध्याको जायाकरताथा मैंने एकदिन यहस्वप्नदेखा कि अपने मित्रके घरसे अपनेघरमेंआता हूं और मेरे चचाके पाससे एक सन्देशा इसबात का आया कि तुमजल्दी मेरेपासआजाओ तथाच मैं गया और जहांवह बैठेथे वहां वहपहुंचाएककोनेमें मेरेचचासाहबबैठेथे उन्होंने मुझसेकहा कि फलानी कुरसीपर बैठजाओ फिर उन्होंने मुझसे कहा कि मैं अतिखेद और दुःखके साथ तुम्हेंयह समाचार कहताहूं कि

आपका भाई मरगया है मैंने उनसे उत्तर में कहाकि कोईबात ऐसीभीहै जिससे मालूमहो कि जब वहमरे उनके स्वभाव का क्या हालथा उन्होंने मुझे एकपत्र देदिया और वहपत्र लेकरमैं वहांसे चलाआया जब मैं जागा तो मेरामन बहुत बेचैन हुआ और उससमयकेपीछे जैसामेरा स्वभावथाकिमैं ईश्वरसे उसके लियेकल्याणमांगताथा कि मुझसे मांगा न गया कि जिसस्त्रीके साथ मेरा विवाह हुआ उससे मैंने इस स्वप्नका हाल कहदिया था और उसको अबतक अच्छी तरह यादहै थोड़ेसमयके पीछे यह विचार मेरेमनसे दूर होगयाथा कि एकदिन जब मैं अपने घरपर आया मेरेनौकरने मुझसे कहा कि आपका अमुकसंबंधी आयाथा और कह गया है कि बहुत जल्दी मेरे पिता के पास आजाओ तथाच मैं गया और देखा कि मेरेचचाउसजगहबैठे हैं जहां मैंने स्वप्नमें बैठा हुआ देखाथा बरन संदूक और काग़ज़ और दीपक भी उसीजगह रक्खे थे जहां मुझे स्वप्न में दिखाई देतेथे उन्होंने मुझे एक कुरसी पर बैठनेको कहा और अत्यक्षर वहीबात चीतकी जोमैंने स्वप्नमें सुनीथी वही शब्द उनके मुख से निकले और जो उत्तर मैंने स्वप्नमें दिया था वही उत्तर मैंने दिया फिर उन्होंने मुझे पत्रदेदिया और मैं वहांसेचला आया उस समय मनको ऐसी बे चैनीथी कि बहुत बातचीत करनेको जीनचाहा पर आश्चर्यकी बात यहहै कि जब मैं अपने चचासे बातचीत कररहाथा मुझेअपना स्वप्नयादनहीं आया बरन जबमैं अपने चचाके पाससे चला आया तब वह स्वप्न याद आया इटकन्सन साहबने जब यह हाल मेरे पास लिखकर भेजा था तो यही लिखभेजा कि जिस मनुष्यने यह स्वप्न देखा था एक पादरीहै और सबलोग उसका संकोच करतेहैं और मुझेउनकी सत्यतामें कभी संदेहनहीं मेरीमति यहहै कि इस स्वप्नके हाल

को हमयह नहीं कह सकेहैं कि केवल यहबात संयोगिकथी॥

उन्हत्तरवां दृष्टान्त—एक स्त्री अपने अकेलेबच्चेकोउडनवरामें छोड़कर आप जरमनी के देशको चलीगई थी उन्होंने मुझसे कहा कि एक वेर मैंने देखा कि मेरा बच्चा बहुत बीमारहै और उसकी दाई उस जगह उसके पलंग के पास खड़ीहुई है और उस बच्चेकी दवादारूमें लगी है जब वह अपने शहर को लौट आई तो उन्हों ने वह मुख्य स्थान बताया जहां दाई खड़ी थी उस वक्त उसदाईने उनसे कहा कि वास्तवमें बच्चा बहुत बीमार होगयाथा पर जो कि उसको जल्दी आराम होगयाथा इसलिये उसकी बीमारीका हाल लिख भेजना उचित मालूम न हुआथा पर जब वह जरमनीके देशमेंथी तो मुझसे सदा कहा करतीथी कि मुझे निश्चयहै कि मेरा बच्चा बहुत बीमारहै यद्यपि जो पत्र मेरे पासआतेहैं उनमें यहीलिखाहोताहै कि कुछ छोटासा रोगहै, मैं यह बात मालूम नहीं कर सक्ताहूं कि इस स्त्रीको अपने बच्चे की बीमारीका हाल उसी समय दिखाई देताथा जबवह बीमार था या उसके पहिले या पीछे दिखाई देताथा पर इतनी बात जानताहूं कि उसकी बीमारीके समयकेपासही मालूमहुआथा॥

सत्तरवां दृष्टान्त—३२वर्षहुये कि मेजरविकलीसाहब हिन्दुस्तानसे इंगलिस्तानको जहाज़में आतेथे उस समयतक उन्हों ने आकर्षणकीक्रियाका वर्णननहीं सुनाथा एक स्त्रीने जो जहाज़ में बैठीथी कहा कि समयसे कोई बादबान जहाज़ का दिखाई नहीं दियाहै उन्होंने कहा कि कल दोपहरकेसमय अमुक ओर से एक जहाज़का बादबान दिखाई देगा जब जहाजके चलाने वालों आदि ने पूछा कि आप क्यों कर यह बात जानतेहैं तो उन्होंने कहा कि मुझे बादबान आता हुआ दिखाई देता है जब समय आया तो जहाज़के कप्तानने व्यंग्य पर्वककहा कि देखिये

साहब बादवान दिखाई देताहै परवह अभी चुप न होने पाया था कि एकमनुष्यने पुकार करकहा कि बादवानदिखाईदेता है कप्तानने पूछा कि किसओर उत्तरसे मालूम हुआ किउसी ओर दिखाई देता था जिस तरफ मेजर बिकलीसाहब ने पहिले दिन बताया था यह दृष्टान्त विचित्र है क्योंकि उस से सूचित होताहै कि आकर्षण क्रियाकी शक्ति और उक्त क्रियाके प्रभाव अंगीकार होने में एक संबंध है अर्थात् मेजरबिकली साहब को इस क्रियामें अति शक्ति है और उनके स्वभावपर उसका प्रभाव भी बहुत जल्दी और प्रकट होजाताहै और यही दशा स्पूस साहब की भीहै ॥

इकहत्तरवां दृष्टान्त— एक सिपाही को जो एकपल्टनमें था पल्टनके हाकिमने इसबातकी जवाबदिही के लिये बुलाया कि तुमने फलाने अफ़सरकी झूठीख़बर मशहूर कीहै कि दूसरेदिन वह अफ़सर मारा जावेगा सिपाहीने उत्तर दिया कि मैंने उसे मरताहुआ देखाहै औरइसतरहदेखाकिजब सेनाकाधावाहुआ तो वह अफ़सरपहिलेही मारागया और उसकेभालपर गोली लगी पल्टन के हाकिमने उसको घुड़ककर कहाकि फिर ऐसी ख़बरप्रसिद्ध न करना दूसरे दिन लड़ाईहुई और पहिलेहीधावे में उसअफ़सर के भाल में गोली लगी और वह मर गया यह हाल जोलिखागया बिल्कुल ठीक और विश्वासके योग्य है ॥

जो दृष्टान्त ऊपर लिखे गयेहैं बहुत दृष्टान्त ऐसे और भी लिखे जासक्तेहैं पर इनसे ही यहबात सूचितहोती है कि किसी हेतुसे जो हमको मालूम नहींजब मनुष्यका मनएक मुख्य दशा में होताहै उसको आगे के हाल दिखाई देते हैं जो स्वप्न लोगों को ऐसे होतेहैं कि वह पूरे होते हैं उसका भी यही कारण है यह बात कहनी कि यह बात अकस्मात् होगई पूरी नहीं है

क्योंकि जो एकहीवेर स्वप्न की बात पूरीहो तौ भी पूरी न होने के लिये बहुत हानियां हैं पर जब बहुत बेरऐसे भविष्यवृत्तांतों के स्वप्नपूरेहों तो निस्सन्देह उनका पूराहोना कोई संयोगिक बात नहीं होसक्तीहै ॥

उन्नीसवां पत्र॥

आकर्षण क्रियाके वैद्यकीय लाभों का वर्णन ॥

आकर्षणीयक्रियाके वैद्यकीय लाभ कईप्रकारकेहैं एक यह कि इसक्रियासे खेद होताहै खेदऔर रोग शान्तहोजाताहै दूसरे यहकि इस क्रियाके द्वाराजर्राहीका कामविना दुःख होसक्ताहै तीसरेयह कि कृत्रिमचुम्बक और क्रिस्टल और आकर्षणीयजल और दूसरीचीज़ें जिनमें आकर्षणीय सत्ता उपजाई जातीहै वह रोगोंकीचिकित्सामें वहुतकामआतीहैं और चौथेयह कि परोक्ष- दर्शित्वशक्ति रोगोंके निदानमें बहुत काम आतीहैं मुझको आप आकर्षणीयक्रियाके लाभोंकीथोड़ीपरीक्षाहुईहै परजितनीपरीक्षा हुईहै इस बातके लिये पूरीहै कि मुझे अच्छी तरहसे निश्चय है किवैद्यके लिये आकर्षणीय क्रिया बहुत अच्छीसहायकहै मैं पहिले लिखचुका हूं कि जिन लोगोंपर मैंने क्रियाकीहै उनमें बहुतसे आरोग्य मनुष्य थे पर यह भी मैं वर्णन करचुकाहूं कि एक अन्धे मनुष्य परभी मैंने यह क्रियाकीहै और कईबेरक्रिया के उपरान्त एक हानिदायक मल जो उसकीनाकमें से निकल कर गिरताथा उसका निकलना बन्द होगया था जबसे अब तक उसपर तीनमहीनेके समयमें पचासबेर के अनुमानक्रिया की गई अबवह पहले से बहुत आरोग्यहै और उसकीनेत्रकी ज्योति और नेत्रके स्वरूपमें पहलेसे बहुतवृद्धि है यहबात तो कहनी असम्भवितहै कि उसकीज्योति बिल्कुल अच्छीहोजा-

वेगी पर अबतक क्रियाका यह प्रभावहुआहै कि दिन २ वृद्धि है जो मनुष्य परीक्षा करेगा उसको मालूमहोगा कि आकर्षण की क्रियाकेद्वारा बहुतसेरोगों मुरूयकरके वहरोग जो नाड़ियों से सम्बन्धरखतेहैं और और अंगोंकी पीड़ाकारोग दूरहोजाता है बहुत अखबारों में आजकल लिखाहुआ है कि अमुकमनुष्य का अमुकरोग आकर्षण की क्रियासे दूरहोगया और रोग भी ऐसा कि किसीइलाज से दूर नहींहोताथा ऐसा मालूमहोताहै कि कई मनुष्यों की क्रियामें रोगकेदूरहोने का अधिक प्रभाव है और किसीकी क्रिया में कमपर यहबात मालूम हुई है कि हर आरोग्य कारक की क्रिया में कुछ न कुछ ऐसाप्रभावहोता है ल्यूससाहब भी बहुधा आकर्षण की क्रिया के द्वारा बहुतसे रोगोंका इलाजकरतेहैं इटकन्सनसाहब को बहुतही आकर्षण क्रिया की शक्ति प्राप्तहै और उनको रोगोंकीचिकित्सा में बहुत परीक्षा है उनसे जो कुछहाल मालूमहुआहै वह नीचे लिखता हूं इसहाल के पढ़नेसे प्रकटहोगा कि कईबातें जैसे पीड़ाका बढ़ूबनाया इसकारोग आकर्षणकी चिकित्सा में ध्यानकरनेके योग्यहै जो परीक्षा इटकन्सनसाहब ने निर्जीववस्तुओंकोद्वारा दूरपर से रोगों की चिकित्सा में की उसका हाल उक्तसाहब नीचे लिखते हैं ॥

बहत्तरवां दृष्टान्त—एक स्त्री को कोटेसका रोग समय सेथा और उसको अतिक्लेश रहता था वैद्योंके इलाजसे उसको लाभ नहींहुआथा एकवैद्य ने मुझेकहा कि आकर्षण की क्रिया करके परीक्षा लीजिये तथाच मैंने परीक्षा की और बहुत लाभ हुआ पर अभी अच्छीतरह से इलाज नहींहोनेपाया था कि उसको अपने पति के साथ जानापड़ा तथाच मेरी क्रिया का उसपर ऐसाअच्छा प्रभावहुआथा तो विचार में यहबात आई कि जो

होसके तो उसपर क्रिया होती रहनी चाहिये जो कि मुझको इसबातकी परीक्षाथी कि यानी रुई और चमड़ेकेद्वारा क्रिया का प्रभाव दूरपर पहुंचसक्ता है इसलिये मैंने उससेकहा कि आपकेपास डाककेद्वारा दस्तानों आकर्षण की क्रिया भरकर भेजाकरूंगा जब यहपरीक्षा कीगई तो परीक्षा पूरीउतरी जब वह दस्ताने पहनतीथी तो उसको आकर्षणस्वाप उपजताथा और जो रोगका दुःखहोताथा वहदूर होजाताथा यह आकर्षण के दस्ताने तीनबेर के पहिनने से वृथा होजातेथे अर्थात् चौथीबेर जो उनको पहने भी तो नींदनहीं आतीथी तो मैं हर सप्ताहमें दोजोड़ियां आकर्षणकी सत्ताभरकर भेजदेताथा और जो पुराने दस्ताने अर्थात् पहनेहुयेहोतेथे वहमेरेपासइसलिये लौट आतेथे कि उनमें फिर वहसत्ताभर दीजावे इनलौटके आये हुये दस्तानोंमें विचित्र बातमालूमहुई कि पहनेहुये दस्तानोंके अन्दर रोगीके शरीरमेंसे रोगका प्रभाव होजाताथा और इस प्रभावको पहले दूरकरनापड़ताथा तब उसमें आकर्षणकी नई सत्ताभरीजातीथी जबपुरानेअर्थात्पहनेहुये दस्तानों के निकट मेराहाथ जाताथा तोमुझको उसीरोगका प्रभावहाथमें मालूम होताथा जिसतरहवत्तीकी टेमके पास हाथ लेजानेसे हाथको गर्मी पहुंचतीहुई मालूमहोती इसीतरह इन दस्तानों के निकट हाथ लेजानेसे हाथको दुःखहोताथा और जैसा क्लेश रोगी को होताथा उसीप्रकारका दुःख मुझेभी होताथा जब दोतीन मिनट उन दस्तानोंपर क्रिया कीजातीथी तो वह रोगका प्रभाव उनमेंसे दूरहोजाताथा और इससमय वैसाहीप्रभाव मेरे ऊपर होताथा जैसा उस समय होता है कि जब मैं किसी दुःख को क्रिया करके दूरकरताहूं और उस समय में मैं बतासक्ताहूं कि अब रोगीकादुःख दूरहोगया प्रायः कोई मनुष्ययह बातकहेगा

कि उस स्त्रीके मनमें कुछ ध्यान दस्तानों के प्रभावका होगया था इस सबबसे उसको लाभ होता था पर मैंने इसकी परीक्षा इस तरह परकी कि कभी सादेदस्ताने उसके पास आकर्षणकी सत्ताके भरनेके बिना भेजदिये परिणाम हुआ कि जो सादे थे उनकेपहने से उसेनींद आई और जो पहने हुयेथी उनकेपहिननेसेउसेअधिकदुःखहुआ मैंनेकईमनुष्योंपर इसतरहकीपरीक्षा कीहै और यही परिणाम प्राप्त हुआहै पहिले पहिल जो मुझे दुःख होताथा तो मैं अचंभा करताथा कि अमुक कारण है मेरे रोगी मुझको धोखा देतेथे और कह देतेथे कि अब हमें क्लेशनही है परमैं कभी उनके धोखेमें नहीं आता था और वह कहते थे कि आपका हमाराढुःख हमसेभी जियादह मालूमहै जिनरोगियोंको नाड़ियों की बीमारी होती थी उनपर क्रियाकरने से मेरेहाथ में सुइयांसी चुभाकरती थी पर जब उनको नींद आजातीथी तो मेरेहाथमें एकझिटकासा मालूम होताथाऔरफिर कुछदुःख नहींहोता था वरन आरामसा मालूमहोता था जब कोई बड़ाविपर्य्यय रोगीके शरीरमें होजाताथा जैसे जब उसपर शयन जाग्रतअवस्था यास्तब्धदशा उपजतीथी तो ऐसाही झिटका जैसा ऊपर वर्णनकियागया मेरेशरीरपर होताथा मैंने परीक्षासे मालूम कियाहै कि आकर्षणीयशक्ति एक मनुष्य से दूसरे मनुष्यमें कुछ२ बदलसक्तीहै और इसीतरहसे आकर्पण की दशा और आकर्षणव्यापावस्था एकधारक से दूसरेधारक में कुछ२ बदलजातीहै यहीकारणहै कि कईरोग एक रोगीसे दूसरे रोगीको लगजातेहैं जैसाप्रभाव दस्तानोंके पासआनेसे होता है वैसाही प्रभाव पत्रके हाथमें लेने से होता है मुख्य करके जो कागज़पर रोशन कियाहो और इसकारण मैं पत्र के पढ़ने से पहले रोगीके मनकाहाल जानलेताहूं किसी समय

पत्रोंमें से गरमी और सुइयोंके चुभने का सा ऐसा तेज़ प्रभाव होताहै कि मैं पत्रको मेज़पर रखदेताहूं और हाथके छूने बिना पढ़ताहूं यदि किसी मनुष्य का पत्र उसदशा का लिखाहो कि उसको ज्वरहो तो उसपत्रका प्रभाव मेरेऊपर ऐसा होताहै कि और लोगोंको भी वैसीही मेरेहाथमें तपकीगरमी मालूमहोती है एकबेर जब मैंने एकपत्रको पढ़ा तो मेरे मनपर आंसुओं का सा प्रभावहुआ और यह असर ऐसातेज़ था कि मुझे निश्चय हुआ कि लेखक लिखनेके वक्त ज़रूर रोताहोगा और उसपत्र में कोई विषय या चिह्न रोनेकानथा जब निश्चय किया तो मालूमहुआ कि पत्रका लेखक उसको लिखने के समय अवश्य रोताथा और कुछआंसु उसख़तपर भी पड़ेथे एक स्त्री को नींद नहीं आयाकरती थी पर उसकास्वभाव इतनाअंगीकारकरता था कि प्रसिद्ध युक्तिसे उसपर क्रियानहीं होसक्ती थी मैंने उसे आकर्षणका जलपिलाया वह तुरन्त सोगई एकबेर जब उसने ऐसापानीमँगाया तो मैं उसीसमय एकरोगीपर क्रियाकरचुका था इसलिये मुझे इतनासाहस न हुआ कि उसीसमय पानीपर अमलकरके भेजूं मैंने खालीपानी भेजदिया उसजलकाउसपर कुछ प्रभाव न हुआ कईदिनपीछे उसकाख़त मेरेपासआया कि अब पानीमें वहगुण नहींरहा और अब उसके पीने से नींदनहीं आतीहै एकबेर मैंने एक दस्ताने की जोड़ी फूंककर एक स्त्री के पास भेजी तथाच जबवह उसजोड़ी को पहनकर सोईतो वही स्वप्न उसकोआया एक स्त्री के मनका यहहाल है कि जो कहीं लोहा निकटहो तो उसपर प्रभाव होजाता है उस प्रभाव से यहबात होतीहै कि जहां धरतीके नीचे लोहाहोताहै या ज़मीन के नीचे पानीका चश्माहोताहै मालूमहोजाताहै यहभी मुझको परीक्षाहुईकि जब मैं किसीरोगीपर रोगकेदूरकरनेकी इच्छासे

अमलकरताहूं और मनमेरा उसीओर लगारहताहै तो मुझेकुछ रोगका प्रभाव नहींहोताहै इसतरहसे मुझे अधिकारहै कि चाहे रोगीपर अमलकीतासीर इसतरहकरदूं कि मुझेकुछमालूम नहो या उसके रोगका प्रभाव मेरे शरीर परहोजावे हर प्रकार से जब मेरी इच्छासे कार्यहोता है तो सिवाय उस हाथके जिससे क्रियाकीजावे और कहींमेरे शरीर पर कुछरोगका प्रभाव नहीं होताहै पर जो मेरा ध्यान और तरफ़ लगाहो तो मुझे रोगका प्रभाव इतना होजाताहै कि पीड़ाहोने लगतीहै और इसतरह मेरे ऊपर उसधारककी दशाहोजातीहै और आदमियों की बीमारीका हाल जानलेताहै एक संयोगका बिचित्र दृष्टान्तलिखताहूं एक स्त्री मेरेभाई और बहिनके घरमें बीसमीलकी दूरीपर रहतीथी मैंने उस पर अमलकिया उसको परोक्षदर्शित्व शक्ति अच्छीतरह प्राप्तहोगई एक दिन और एक स्त्री एक बाग़मेंफिर रहेथे हमने देखा कि एक उसीसमयके पैदाहुये बच्चे की लाश एक दीवारकेनीचे पड़ीहुईहै यह बच्चा किसीने दीवारके ऊपर से फेंकदियाहोगा दूसरेदिनमेरे पास मेरी बहिनका ख़तआया उसमें लिखाथा कि अमुक स्त्रीके अमुक दिवसके अमुकसमयमें यहबात कही कि मुझे फलाने बाग़मेंलेचलो कि वहां किसी बच्चे की लाशपड़ीहुईहै एक बेरजब मैं इसस्त्री पर बहुत आदमियों के साम्हने क्रिया कररहाथा औरउल्टाअमलउसकेजगानेकोकरता था तो एक स्त्री जो मेरेपास खड़ीथी ऐसा चीखकर भागी जैसे किसीको किसीभूतनेपकड़लियाहोउसदिनसे जबमैं उसस्त्री पर कभी अमलकरताथा तो इसदूसरीस्त्रीपर जो चारमीलकीदूरीपर होतीथी उसीवक्तअमलहोजाताथा औरवैसीहीपरोक्षदर्शित्व अवस्थाउसकोभी प्राप्तहोजातीथीदोधारकाओंपरजबमैंने क्रियाकी तो उनमें स्तब्धदशा उपजी ऐसी कि जो आपउनके टुकड़े २ भी

करडालते तो निश्चय है कि कभी उनको ख़बरनहींहोती किसी तरहसे भी वहजाग नहींसक्ते थे परजो उनपर पानीकी एकबूंद उनके कपड़ोंपर पड़जाती थी तो वह कांपनेलगते थे यदि कोई चांदीकाटुकड़ा उनके शरीर से छुवायाजाताथा तोवह बहुतहँसने लगती थीं और जबकभी और धातुका टुकड़ा छुवायाजाता था तो हँसी बन्दहोजाती थी और यहकांपना और हँसी इस तरह पर पैदाहोतीथी कि उनकोकुछ होश नहींहोताथा मानों मौतमें एकजीनेका लक्षण था यहकांपनी और हँसीफड़कनेकी तरहपर मालूमहोतीथी कई धारकोंको देखाहै कि चीखते हैं और रोतेहैं और उनकाबदन बलखाजाताहै और जबवहजागे हैं तो उन्होंने कहाहै कि हम बहुतअच्छा स्वप्नदेख रहेथे इससेमालूम होताहै कि उनमेंचैतन्य और जड़अवस्था मिलीहुई है और वास्तो में वहअपने आपेमें नहींहोते हैं मैं एकऔरतको जानताहूं कि धातुओं के छूनेसेउसे दुःखहोता है और उसके शरीर में सुइयां सी चुभनेलगतीहैं वरन बीमार होजाती है जो पीतलकी अँगूठियां पहनतीहै तो उसकीउँगलियों में सूजन चढ़जातीहै इससबबसे लाचारहोकर उसने अँगूठियों का पहनना छोड़दिया और यह औरत भोजनभी लकड़ीके चमचोंसेकरतीहै और जो दरवाज़ेमें किसीधातुकामुठा लगाहोतो रूमालको हाथमेंलेकर उसेछूतीहै ऐसेस्वभाव बहुतहोतेहैं और इसबातका ध्यानरखनाचाहिये कि नाहकदुःख न हो बहुतसेवैद्य इसबातका ध्याननहीं रखते और कहतेहैं कि यहबात ख़फक़ानकी है जो लोगआलसी होतेहैं वह सद इसतरहकाउत्तरदेतेहैं प्रमाणलीजिये कि यहबातख़फकान (उन्मादरोगकी है) तो उसके प्रभाव में तो कुछ सन्देहनहींहै॥

यहहाल जो ऊपर लिखेगये उनमें बहुतबातें ध्यानरखने के लायक़ हैं और उनसे मालूम होताहै कि इसबिद्या में बहुतबातें

भी सीखनेके लायकहैं और जो कोई इटकन्सन साहबकी तरह कोई मनुष्य परिश्रम और व्यसनसे खोजकरे तो इस बिद्याकी अति वृद्धिहो सक्ती है इटकन्सनसाहब बैद्यनहींहैं परवह आकर्षण की क्रियाके द्वारा चिकित्सा करने में बहुत लगे रहते हैं और इसअच्छे कामके उद्योगसे उनको इनबातों की परीक्षाहुई है जिनका मैंने ऊपर वर्णनकिया इस ऊपर के लिखेसे मालूम होगाकि बहुत बांते उसमें ऐसीलिखी हैं जिनसे सांसर्गिकरोगोंके फैलनेका कारण मालूम होताहै और जो अच्छी तरहसे खोजकियाजावेतो विचित्र परिणाम उपजसक्तेहैं और इसबात से कि धातुओं और निर्जीव वस्तुओंका ऐसाही प्रभाव कईस्वभावोंपर होताहै यहबात समझमें आतीहै किकई स्वभावों पर थोड़ी औषधी क्योंकर प्रभाव करजाती है इसमें संदेह नहींहै कि जो बहुत थोड़ी दवाकई जातिके बैद्य देतेहैं उसका प्रभाव बीमार पर अवश्य होताहै तो इसका प्रभाव कारण बैद्यककी साधारण बिद्यासे स्पष्टनहीं होसक्ता है पर यहबात समझ में आतीहै किजिन लोगोंका स्वभाव बहुत अंगीकार करनेवाला होताहै उनपर थोड़ीसी दवाईहीसे नहीवरन कईचीजोंकेपास आनेसेभी अति प्रभाव होताहै बहुत आदमी ऐसे हैंकि आकर्षण स्वापमें या उसकी मुख्य दशामें उनपर कईचीजों का बहुत प्रभाव होजाता है और रीशनबेकसाहब ने सिद्धकिया है किजो ऐसाहीप्रभावबहुतसेमनुष्योंपर होशमेंभीहोताहैयहांतक कि केवल उनकेछूनेसे वरन केवल उनबोतलोंके छूनेसे जिनमें वहचीजें रक्खी होतीहैं वहबता देतेहैं कि इनमें क्याचीज़ है॥

अब इसबातके सूचित करने के लिये बहुत बिस्तार से दृष्टांत लिखनेकाकुछ ज़रूरनहींहै कि पानी और२चीज़ोंपर आकर्षण की क्रिया इसतरह होसक्तीहै कि जिनलोगोंका स्वभाव

अंगीकार करने वाला होता है उनपर तेज प्रभाव उनका हो जावे रोशनबेकसाहब कहते हैं कि कोई और चीज़ इसबात के प्रमाण के लिये कि कारक के हाथमें से कुछ सत्ता निकलकर धारक पर या और किसी चीजपर प्रभाव करतीहै इससे उत्तम नहीं कि पानीपर परीक्षा कीजावे जब किसी मनुष्य को इतनी शक्ति प्राप्तहोजावे कि आकर्षणक्रिया के द्वारा आकर्षण स्वाप उपजावे तो इसबात की परीक्षा सुगमता से होसक्तीहै—और कृत्रिम चुम्बक कृस्टल और धातुओं की क्रियाकी यह बात है कि बहुत ऐसे मनुष्य रोज़ देखेजाते हैं जिनको ऐसो चीजों के निकट आनेसे बहुत दुःखहोता है या जो पहले दुःख होता है तो दूर होजाता है मैं एकस्त्रीको जानता हूं कि जब उसके शिरमें पीड़ाहोती है तो एक कृस्टल के हाथ में लेनेसे उसको नींद आजाती है और शिरपीड़ा जातीरहती है इस कृस्टलका ऐसा प्रभाव प्रकट है कि जब उस के शिरमें पीड़ाहोती है तो उसके बच्चे उससे कहतेहैं कि उस कृस्टलको हाथ में लेलो पर जो एक हाथमें से दूसरे हाथमें कृस्टल लियाजावे तो उसके ध्रुवोंकी बनावट उलटजातीहै बहुधा ऐसेछल्ले बिजली के प्रभाव के बनेहैं जिनके पहिनने से रगोंका दर्द दूरहोजाता है तो यह प्रभाव कुछ अनुमान कियाहुआही नहीं वैद्य तो इस प्रभावको नहीं मानते हैं क्योंकि वह कहते हैं कि इसप्रभावका कारण समझमें नहींआता है और वह कहते हैं कि जोकि बिजली के छल्लों में बिजली की लहर पैदा नहींहो क्योंकि उनका प्रभाव नहीं होसक्ता है तो यहबात कहनी ऐसी है कि जैसे कोई एक चीजको देखकर उसके होनेसे इन्कार करदे वास्तवमें यहबात है कि केवल वही छल्लेनहीं जो दोधातुओं के बने हैं वरन ऐसे

प्रेम चुम्बकसे भी पीड़ा दूरहोजाती है और रीशनबेक साहिबके बचनानुसार उनका प्रभाव आकर्षणकी विजलीकी सत्ता के सबबसे नहीं वरन उड़ायलकी सत्ता के कारण होती है सो इसके बदले कि इन सबमूलोंको इसलिये न मानें कि हम उस का हेतुनहींबतासक्तेहैं चाहिये यह कि परीक्षायें बहुतकरें और उनपरीक्षाओं से प्रभावकाहेतु मालूम करनेमें परिश्रमकरें॥

बाकीरहा यहलाम इसक्रियाका कि उससे रोगोंका अच्छा खोज होसक्ताहै इसकेदृष्टान्त में कई लिखचुकाहूं और मुझको भरोसा है कि जो धारक अच्छाहो तो यहलाम अच्छीतरह होसक्ताहै यदि समाईहोती तो मैं कईदृष्टांतइसप्रकारके लिख सक्ताथा कि चाहे रोगीके शरीरके छूनेसेचाहेउसकेबाल या लेख के द्वाराधारक रोगकेलक्षण औररोगके वहकारण जिनकासंदेह भी वैद्यकोनहींहै ठीक २ बतादेताहै पर जो कि यह पुस्तक पूर्णहोनेकोहै मैं इसजगह एक दृष्टांत लिखूंगा जोअभीहुआहै॥

तिहत्तरवां दृष्टांत—एकमनुष्य ने मुझे अपने रिश्तेदार स्त्री के हाथका एकलेखदिखायाथा वह दूसरे देशमें रहतीथी और मैंने कभी उसको नहींदेखाथा मेरेमित्रको केवल अपने रिश्ते- दारका यहहाल मालूमथा कि वह बीमारहै पर यहनहींमालू- म था कि क्याबीमारीहै मैंने डाक्टर हेडिकसाहबके पास वह लेख भेजदिया और उनसे इच्छाकी कि (क) से रोगीका हाल पूछिये (क) ने उसस्त्रीको देखकर कहा कि बीमारहै औरखान का पानी आरोग्यता के लिये पियाकरतीहै और जो२ लक्षण रोगके थे सब उसने ब्योरेसे वर्णनकिये जब यहहाललिखकर उसस्त्री के पास भेजागया तो उसने उत्तरमें लिखा कि जोकुछ धारकने वर्णनकिया सबठीकहै सिवाय इसबातके कि मैं इतनी निर्बलनहींहूं जैसीधारकको मालूमहुई—अवश्यहै कि जो कुछ

(क) ने वर्णनकियेथे वह अशुद्ध समझेगयेहों क्योंकि वह ग्रन्
कईमनुष्योंने लिखे और कईदूसरी २ भाषाओंमें उलथा होकर
स्त्रीकेपास पहुंचे पर जो (क) ने लक्षण वर्णनकियेथे उनके ठीक
होनेमें कुछसन्देह नहीं (क) ने यहभी बताया था कि किस स
बबसे उसस्त्रीको वह बीमारी हुईथी यदि वैद्य अच्छा हो औ
धारकभी विश्वासयोग्य होता. इसक्रियाके गुण प्रत्यक्षहैं अ
वहुत लिखने की समाई नहींहै और जनून अर्थात् पागलप
की बीमारी के लिये इतनीबात कहनी बहुतहै कि इसका हाल
पुस्तक के बीचमें लिखागयाहै ॥

मैंने बहुतसे दृष्टांतआकर्षणक्रियाके वैद्यकीय लाभों के सूचि
होनेके लिये इकट्ठेकियेथेपर अबमें उनकोनहींलिखताहूं क्योंकि
मैं अब इसपुस्तक को पूर्णकिया चाहताहूं और डाक्टर इस्डी
लसाहव और २ कारकों में इसका पूराप्रमाण है और सिवाय
इसके जो दृष्टान्त मैं लिखना चाहताथा उनकीमुझेआप परीक्षा
नहींहुईहै क्योंकि इसकिताव में उनको लिखकर बहुत बढ़ाने में
कुछलाभन समझागया जिसमनुष्य ने इसविद्याकी ओर ध्यान
कियाहै उसकोअच्छीतरहमालूमहै किआकर्षणक्रियाकेवैद्यकीय
लाभ बहुतहैं और आशाहै कि वैद्य अब इसक्रियाके प्राप्तकरने
और बर्तने में प्रयत्नकरेंगे डाक्टर इस्डीलसाहव ने जो हिन्दो-
स्तानमें परीक्षाकीहै उनसेसूचितहै कि इसक्रिया के द्वाराजर्राही
का काम इसतरह से होसका है कि धारक को दुःख न होता
और यहक्रिया इङ्गलिस्तान और फ्रांसके देशोंमेंइसकामके लिये
वरती जाती है ल्यूससाहव ने और डाक्टर डारलिङ्गसाहब ने
लोगोंको दिखायाहै कि चैतन्य अवस्था अर्थात् होशकीहालत
में भी आकर्षण की क्रिया के कारण धारकको कुछ दुःख नहीं

कि ऐसाप्रभाव इस क्रियाका नहीं होसक्ताहै और केवल सङ्कल्प के कारण कईमनुष्यों को इसप्रभाव का निश्चय है वह सन्देह अब जातारहेगा यह बात तो सचहै कि यहप्रभाव होशमें शिक्षा के कारणहोताहै पर स्वप्नमें यहप्रभाव शिक्षाकेबिना होजाताहै ठीकबात यहहै कि यहप्रभाव कईतरह पर पैदाहोसक्ता है मैंने आप यहप्रभाव चेतन्य और आकर्षण स्वापावस्था में उपजाया है और अन्यकारकों को उपजाते देखाहै बास्तव में यहप्रभाव उससमय से पहिले बहुतउपजाया जाताथा कि जब क्लोरोफोर्म का बर्ताव शुरूहुआ और जोकि उससमयमें इसक्रियाकेप्रभाव को लोग नहींमानतेथे और जब क्लोरोफोर्म का बर्त्ताव शुरूहुआ तो उसका प्रभाव माननेलगे पर बास्तव में इनदोनोंकी साक्षी एक सी थी अन्तर केवल इतना है कि क्लोरोफोर्म को तो लोग आंखसेदेखते हैं और वहकहतेहैं कि देखोयहचीज़ रक्खीहुई है इसका प्रभाव अवश्य होसक्ता है पर आकर्षण की सत्तादिखाई नहींदेती इसलिये वहइससत्ता के प्रभाव को नहींमानते सो यह बात बुद्धि के बिरुद्धहै क्लोरोफोर्म का हम यहीहाल जानते हैं कि उसमेंफलानी तासीर होतीहै पर यहनहीं जानते कि यहप्रभाव क्यों होता है इसी तरह से चाहे हम यह बात न कह सकें कि आकर्षणकी क्रिया का प्रभाव किसतरह होता है पर प्रभाव के होनेमें कुछ सन्देहनहींहै सिवाय इसके जो यहप्रभाव इसी बातपर घटितहै कि प्रभाव करनेवाली चीज़ दिखाईदे तो यह कृत्रिम चुम्बक या क्रिस्टल या पानीकेद्वारा जो दिखाईदेते हैं होसक्ताहै एक दृष्टान्त नीचे लिखाजाताहै जिससे सूचितहोता है कि जो धारकका मन बहुत अंगीकार करनेवालाहो तो क्लोरो-फोर्म के सुंघाने की कुछ ज़रूरत नहीं है और केवल शिक्षा के द्वारा अच्छीतरहसे जर्राही काम के लायक़ प्रभाव होसक्ता है

यह अमल मेरेघर में कई मनुष्यों के साम्हने कियागया है ॥

चौहत्तरवां दृष्टान्त । ल्यूससाहबको मालूम हुआ कि एक मनुष्य(व)पर आकर्षणस्वाप होशमें अतिसुगमतासे उपजसक्ता है और जब उसपर क्रियाहोगई तो ल्यूससाहब ने एकरूमाल खालीपानी में भिगोकर उसको देदी और कहा कि तुम क्लोरो-फोर्म सूंघतेहो और अबतुम बिल्कुल बेहोश होजाओ यहांतक कि तुमको कैसीही चोट पहुँचे तुमको कुछ उसका चेत न हो यद्यपि (व) चैतन्यदशा में था और वह जानता था कि ल्यूस साहब ने केवल पानी में रूमाल भिगोकर दी है पर उसपर बेधड़क ऐसा अमल होगया जैसा क्लोरोफोर्म्म का होताहै और जो कुछ उसको दुःखदियागया नहींमालूमहुआ जब वहजागा तो उसको कुछ चेत नहीं था कि उसपर क्या हुआ थोड़ीदेर उसने वह रूमाल अपनी जेब में रखलिया और जबतक वह रूमाल उसकी जेब में रहा तबतक वह सोतारहा फिर ल्यूस साहब ने वह रूमाल उसकेजेबमेंसे निकाललिया और घारल पर से उसकाप्रभाव जातारहा इससे और अधिक कोई शिक्षा का प्रमाणनहीं है उसीदिन शामको मैंने एक बात मालूम की कि कई हेतु हमारीक्रिया के ऐसे छूटजातेहैं कि उनका हमको सन्देह भी नहीं होताहै ॥

पचहत्तरवां दृष्टान्त—मेरे घरपर उस शाम को दश आदमी इकट्ठे थे छः पुरुष और चारस्त्रियां ल्यूससाहबभीथे वह अन्धा आदमी भी जिसपर मैं उनदिनों में क्रिया करता था उस जगह था उसने कमरे में आतेही कहा कि ल्यूस साहब का प्रभाव मेरे ऊपर बहुतहोताहै और जब ल्यूससाहब एक और कमरे में (व) पर क्रियाकरनेलगे तो उस अंधे आदमीपर अमल

होगया था जब यह सोगया तो (व) जाग उठा फिर ल्यूससाहब (ल) के पट्टोंपर अधिकार की परीक्षायें दिखाते रहे थोड़ी देरतक तो उनकी क्रिया पूरीहुई पर फिर (व) ने कहा कि अब आपका मेरेऊपर कुछ अधिकार नहींचलता है और उसीसमय उसअंधे को पहिले से भी ज़ियादह नींद आगई ल्यूससाहब को कुछ ख़बरनहींथी कि उस अंधे पर उनका प्रभाव हुआ है न उनको उसके सोजाने की ख़बर थी पर ऐसा मालूम होताहै कि जो कि इस अन्धे आदमी का स्वभाव अधिक अंगीकार करताथा इस लिये (व) परसे ल्यूससाहब का प्रभाव उड़ाकर अपने ऊपर लेगया था और सिवाय इसके यहभी मालूम हुआ कि चाहे ल्यूससाहब की कभी यह इच्छानहीं थी पर जो चार औरतेंउस मकानमें थीं उनपरभी थोड़ाबहुत उनकाप्रभाव होगया विचार यह हुआ कि ल्यूससाहब एक स्त्रीको अच्छी तरह सुलादें और फिर जगादेंकि जो बेचैनी उसको होतीथी वह न रहे उस स्त्रीने इसबीको नहींमाना पर मैंने ल्यूससाहबसेकहा कि आप जीमें इच्छत करके उसको सुलादीजिये अभी ल्यूससाहब का प्रभाव उसस्त्रीपर अच्छीतरह नहींहुआथा कि (व) ल्यूससाहबके निकट आगया और निकट पहुंचतेही सोगया फिर उस स्त्री ने ल्यूस-साहबसे कहा कि आप मुझे सुलादीजिये तथाच ल्यूससाहबने उसे सुलाकर फिर जगादिया और जो बेचैनी उसे पहलेथी वह दूर होगई पर उस स्त्रीके जागतेही (व) फिर सोगया फिर एक और स्त्रीको सुलाया पर जब मैंनेदेखा कि (व) भी सोताहै और जब मैंने उससे बात की तो उसने उत्तर नहींदिया मैंने उसका हाथ पकड़लिया और वह तुरंत जागगया उसकेजागनेकेसाथ ही वह औरतभी जो चौदहफुटकी दूरीपर सोतीथी तुरन्त जाग गई यह सबक्रिया उससमय से पहिले की गई जब रूमालकी

परीक्षा हुई और इससे सूचित होता है कि जहां एक ब
कारक होताहै और एक मनुष्य से अधिक कई मनुष्य ऐसे
हैं जिनका स्वभाव अतिअङ्गीकारकर्त्ताहोताहै तो जो कुछ
करने की इच्छा होती है उसमें कुछ हानि पड़ती है जो ए
आदमी ऐसाहो जिसका स्वभाव अङ्गीकार कर्त्ता हो तो कि
बहुत अच्छीहोती है ॥

अन्तिमविषय ॥

अबमें यहपुस्तक पूर्णकरताहूं और पूर्णकरनेसे पहिले
यहबात लिखताहूं कि मेरा प्रयोजन इसकिताब के लिखने
यह नहींथा कि आकर्षण की क्रियाकेहेतु बतायेजावें बरन
विश्वासयोग्य मूलहैं और मालूम होचुकेहैं उनको लिखदि
हैं उनके होने के कारण उससमयतक मालूम न होसकेंगे
जबतक अच्छीतरहसे खोज न कियाजावे जो इनमूलोंपर ध्य
रहे और जो कारण मैंने अनुमानसे बर्णनकिये हैं उनको
न माने तो मैं राज़ीहूं क्योंकि मैं जानताहूं कि अभी इस बि
की ऐसी वृद्धि नहींहुई है कि कोई अनुमान उसके प्रभाव
ठीक कियाजावे और अभी सबमूल भी तो मालूमनहींहुये है
पर मेरीमतिमें नीचेलिखेहूये मूलअच्छीतरह सिद्धहुये है
पहले यह कि एकमनुष्यका प्रभाव दूसरे मनुष्यपर दूरपर
भी होसक्ताहै—दूसरे यह कि एक मनुष्यको दूसरे मनुष्य
इच्छा इन्द्रियों स्मरण बुद्धि चलने फिरने और बिल्कुल ठ
जानेपर भी अधिकार होता है कि धारक चैतन्यअवस्था में
और कारक की शिक्षाका प्रभाव उस परहो और इसतरह
भी कि धारक आकर्षणस्वापमेंहो और कारककी ओरसे शि

शाहै और उसमें धारकको एकमुख्य प्रकारका ज्ञानहोता है–चौथे यह कि इसदशा में धारक को एक नई बुद्धिरूपणी शक्ति प्राप्तहोती है और इसबलके द्वारा निकट व दूरकी बस्तुओं को प्रकटकी इन्द्रियोंके बिना देखसक्ताहै पर हम इसबुद्धिका मूल नहींजानतेहैं–पंचवें यह कि बहुधा धारकको एक संयोग और मनुष्यों से ऐसा होजाता है कि उसकेद्वारा उनके बिचारउसको मालूम होजाते हैं–छठे यह कि इस संयोग और परोक्षदर्शित्व शक्ति के कारण धारक केवल बर्त्तमानही नहीं वरन गत और भविष्य वृत्तांतोंको मालूमकरलेताहै–सातवें यहकि धारकअपने शरीरके अन्दर का हाल अच्छीतरहसे जानलेता है और वर्णन करसक्ताहै–आठवें यहकि इसक्रियाकेद्वारा गुरुऔरलघुवैकल्य दशा उपजसक्ती है--नवें यह कि आकर्षणकी क्रियाके सम्पूर्ण लक्षण अपनेआपभी उपजसक्तेहैं और यह बातआकर्षणक्रिया के प्रभाव की मूल है--जैसे शयन, जागरण, परोक्षदर्शित्व, संयोग गुरु और लघु इन्द्रिय वैकल्य--भविष्य वृत्तांतदर्शन--और अचैन्यता के अपने आप होनेका हालखिाहै–दशवें यह कि केवल मनुष्यके शरीरके द्वाराही नहीं वरन निर्जीव बस्तुओंके द्वारा कृत्रिम चुम्बक और कृस्टल और धातुओं से आकर्षण का लक्षण उपजजाता है और यह सत्ता वास्तव में कुछ बस्तु है क्योंकि शिक्षाकी सहायता बिना उसका प्रभाव होजाता है और पानीऔर अन्यवस्तुओंमें यह सत्ता पैठसक्तीहै–ग्यारहवें कि बहुत ढूंढने पर इसविद्या की शाखा औ असंख्य प्रभाव मालूम होसक्ते हैं॥

जब तक इस विद्याका अच्छी तरहसे प्रकाश न हो हमको उचितहै कि परीक्षायें करते रहें और मूलोंको इकट्ठा करें और चाहे इन प्रभावों के उपजानेके कारण मालूम हों वा न हों तो

जो सच्चाई और ढूंढसे खोजकिया जायेगा तो यह मूल रि
रहेंगे और जब इस विद्या का अधिक प्रकाश होगा तोकुछ
कुछ उनके लिये अच्छा अनुमान होगा ॥

इस पुस्तकको पण्डित कृष्णाविहारी व पण्डित रामसेवक
व पण्डित बन्दीदीन ने शुद्धकिया ॥

इति ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब

रामायण शब्दार्थकोष
रामायण का इतिहास
रामायण मानसदीपिका
रामायण की नावली
तथा वैद्यनाथ जी की
भाषा टीका सहित
रामायण गीतावलीमूल
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण
कांडकांडभीमिलसक्तीहै
रामचन्द्रिका सटीक
अद्भुत रामायण
रामायण रामविलास
अध्यात्मरामायणसटीक
रामायणअध्यात्मविचार
विनयपत्रिका मूल
विनयपत्रिका सटीक
विजयदोहावली
व्रजविलास
व्रजविलास सारावली
गर्गसंहिता
अवतारकथाऽमृत
सीतावनवास
श्रीरामव्याहोत्सव
कृष्णबाललीला
नाममाहात्म्य
मिथिलामाहात्म्य
गोकर्ण माहात्म्य
कालिंजरमाहात्म्य
मिश्रितमाहात्म्य
विजयचन्द्रिका
रामकलेवा
अवतारसिद्धि

कृष्णसागर
विश्रामसागर
प्रेमसागर
भक्तमाल
शनिश्चर की कथा
बलिचरित्र
कथाश्रीगंगा जीकी
रासलीला
हनूनाटक
चौरासीवार्त्तीक
शिवविवाह व वंशावली
सुदामाचरित्र
दुर्गायन नवकांड
विजयमुक्तावली
शंकरदिग्विजय

भाषापुराण

देवीभागवतभाषा
लिंगपुराण
सुखसागर
गरुडपुराण
ब्रह्मोत्तरखण्ड
विष्णुपुराण
भविष्यपुराण
स्कन्दपुराण
श्रीवाराहपुराण
शिवपुराणभाषा
शंकरचरितसुधा

वेदान्त

योगवाशिष्ठभाषा
सांख्यतत्त्वकौमुदी

श्रीभगवद्गीतापंचरत्न
श्रीमद्भगवद्गीताभा-
षाटीकासहित
तथामूलउर्दू टीकासहित
रामगीता
कैवल्यकल्पद्रुम
बीजककबीरदास
पारसभाग
ब्रह्मप्रकाश
ज्ञानतरंग
आनन्दाऽमृतवर्षिणी
अद्वैतप्रकाश
युगलसंवाद
सुन्दरविलास
सत्यनामविहारवृंदावन
समरविहारवृन्दावन

काव्य

नानार्थनवसंग्रहावली
कृष्णप्रिया
छन्दोर्णव पिंगल
रसराज
कविकुलकल्पतरु
सतसईविहारीलाल
सभाविलास
तुलसीशब्दार्थप्रकाश
प्रेमरत्न
चित्रचंद्रिका
पीयूषलहरी
गंगालहरी
यमुनालहरी
जगद्विनोद